मार्च (प्रथम) 1990 रु. 6.00
युवा
पत्रिका
मुक्ता
1990
MAR-APR
11057
होली अंक
बेरोजगारी में काम का अध
रंग अबीर हैं क्या?
जीवन साथी का सही चुनाव कैसे करें?

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

"इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.

क़ीमती ही सही **झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.**

असली च्यवनप्राश

CLARION/B/ZP/24/183 HIN

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पाक्षिक पत्रि

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय:
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि.
साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

मार्च (प्रथम) 1990
अंक : 565

विविध

होली अंक

कविताएं

स्तंभ

न्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113. पार्क स्टीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कॉम्प्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. पटना : 111, आशियाना टावर, एक्जिविशन रोड, पटना-800001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116 पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'मुक्ता' के नाम से ई-3 झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.

मूल्य : यह प्रति
6.00 रु.
वार्षिक : 120 रु.
विदेशों में –
समुद्री डाक से :
225 रु. हवाई डाक
से : 550 रु.

होली आई
खुशियां लाई
आप के जीवन में
खुशियों के रंग
भर देने वाला
मार्च (प्रथम)
1990
सरिता
होली विशेषांक
इस विशेषांक में
आप पाएंगे :
• जीवन में सद्भाव और भाईचारे की भावना जगाने वाले लेख.
• संपूर्ण परिवार को खुशियों के रंग में भिगोने वाली कहानियां.
• होली पर घर पर ही बनाए जा सकने वाले पकवान.
• चुटीले हास्य व्यंग्य.
• होली के रंगीन त्योहार को मनाने के तरीके.
साथ ही राजनीतिक, सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं का समाधान करने वाले कई अन्य लेख, चुनी हुई रचनाएं, जो आप को गुदगुदाएंगी ही नहीं, घंटों, दिनों तक आप के मन पर छाई रहेंगी.
खरीदना न भूलें

मार्च 1990

किशोरों की सचेतक पत्रिका

गुदगुदी विशेषांक

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन

संपादकीय

मार्च (प्रथम) 1990

मुक्त विचार

दलबदल जनतादल को

जनता दल ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को दल में शामिल करना शुरू कर दिया है. हारे दल पर तरहतरह के आरोप लगा कर सत्तारूढ दल में प्रवेश करने की यह परंपरा अब भारतीय राजनीति का अंग बन गई है. अब कांग्रेसी नेताओं को दिव्य ज्ञान होने लगा है कि राजीव गांधी एक निकम्मे नेता हैं और वे दलीय लोकतंत्र में विश्वास नहीं रखते. इसलिए उन के पास दल छोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं है.

इस तरह कांग्रेस छोड़ कर आने वालों से जनता दल को लाभ है, इस में संदेह नहीं. पिछले चुनावों में जनतादल पूर्णबहुमत नहीं पा सका था. बहुत से स्थानों पर उसे मतों की मामूली बढ़त ही मिली थी. राज्य विधान सभा के चुनावों के लिए और बाद में कांग्रेसी आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए भी उसे नेताओं की आवश्यकता तो है पर ये नेता कांग्रेसी नहीं होने चाहिए.

कांग्रेस संस्कृति 'अब खाओ, पियो, मौज करो' की संस्कृति बन गई है. कांग्रेसी राजनीतिबाज सत्ता के आदी हो गए हैं व उन्हें उस का लाभ उठाने के अलावा कुछ सूझता ही नहीं है. जनता दल या अन्य दलों में भी कांग्रेस से आए ही लोग हैं पर उन्होंने वर्षों तक विपक्षी राजनीति तो की है. वे अभावों में पक कर और जनता के साथ [illegible] की चोटों से लोहे से फौलाद बन गए. वे अब सत्ता सुख भोगने के अधिकारी हैं.

जो नेता कल तक कांग्रेस में थे, आज फिर सत्तारूढ दल में आ गए हैं. किसी प्रकार का त्याग नहीं कर रहे, वे केवल स्वार्थी और सत्तालोलुप कहे जाएंगे. यदि कांग्रेस में रह कर उन्हें अपना प्रभाव जताना नहीं आता तो जनता दल पर भी वे केवल जोंक ही साबित होंगे.

इस प्रकार के दलबदलू नेताओं के लिए जनता दल को अपने दरवाजे बंद रखने चाहिए. यह सोचना कि इन राजनीतिबाजों के पास जन समर्थन है, गलत है. इन के पीछे तो मात्र पैसे से खरीदे समर्थन थे जो पैसा समाप्त होते ही स्वयं चले गए.

राजनीति में सफाई के लिए आवश्यक है कि राजनीतिबाज विरोधी दलों की राजनीति सीखें. विपक्ष में रहने पर ही वे जनता की समस्याओं को समझ पाते हैं. कांग्रेस में रह कर सत्ता सुख भोगने के बाद इन हारे नेताओं को जनता दल के दरवाजे के आगे भीख मांगने के स्थान पर कांग्रेस में ही या अन्यथा अपना विशिष्ट स्थान बनाने की कोशिश करनी चाहिए.

जनता दल इन लोगों को शामिल कर के जनता दल को कांग्रेसी दलदल में बदल रहा है क्योंकि ये लोग अपने साथ अनुभव व समर्थन नहीं, भ्रष्टाचार, भाईभतीजावाद, तानाशाही और मौजमस्ती की बू लाएंगे.

अपनों से डरे राजीव

कांग्रेसियों द्वारा राजीव गांधी की सुरक्षा के प्रश्न पर होहल्ला मचाना दर्शाता है कि उन का बहादुर नेता वास्तव में कितने कबूतर के दिल का है. राजीव गांधी ने प्रधान मंत्री काल के दौरान अपने इर्दगिर्द इस तरह का सुरक्षा घेरा खड़ा कर लिया था कि उस की मोटाई कम होते ही वह घबरा गए हैं.

कांग्रेसी एक सांस में तो यह कहते हैं कि उन का नेता अभी भी राष्ट्रीय नेता है तथा उस ने ही कशमीर और पंजाब जैसी समस्याओं का सही ढंग से मुकाबला किया था और दूसरी ओर वे उसे बंदूकों तोपों के साए में रखना चाहते हैं.

जब तक राजीव गांधी प्रधान मंत्री थे, उन्होंने अपनी सुरक्षा के नाम पर अपने पर बीसियों करोड़ खर्च डाले थे. उन्हें अपनी शक्ति का उतना गुमान था कि प्रधान मंत्री की सुरक्षा के लिए एक अलग कानून द्वारा एक विशेष सुरक्षा बल खड़ा कर लिया जिस का लाभ अन्य किसी व्यक्ति को नहीं मिल सकता था. अब कांग्रेसी खिसिया कर कहते हैं कि उस सुरक्षा बल की सेवा राजीव गांधी को मिले, इस के लिए कानून बदला जाए.
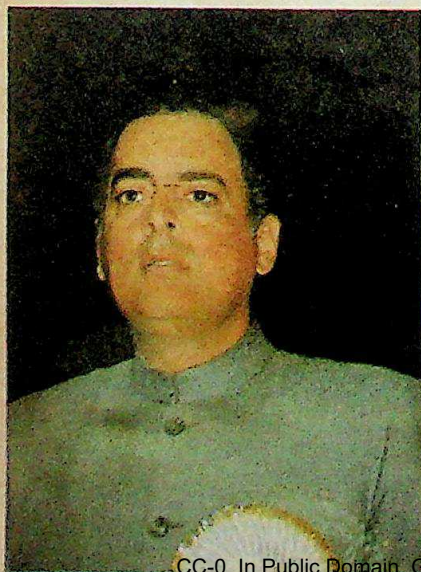
अगर राजीव गांधी को नेताओं की सुरक्षा का खयाल होता तो वे विशेष सुरक्षा बल को कम से कम कानूनी रूप से तो सब के लिए खुला रखते.

कांग्रेसी अब कहते हैं कि वे अपने सेवा दल के माध्यम से नेता की सुरक्षा करेंगे. कांग्रेस सेवा दल जो अनुशासनहीन बेकार युवाओं का गिरोह मात्र है, राजीव गांधी की सुरक्षा कर सकेगा, यह हास्यास्पद बात है. असल में राजीव गांधी को ऐसे ही लोगों से तो सुरक्षा चाहिए.

वैसे भी हर नेता को जान का जोखिम तो लेना ही होता है. नेतृत्व की चमकदमक के साथ यह खतरा दुनिया भर के नेताओं को उठाना पड़ता है. पर इस का अर्थ यह नहीं कि इन नेताओं को हर दम बख्तर बंद गाड़ियों में बंद रखा जाए.

राजीव गांधी तो अपने आप को 'भारत मां' का इकलौता पुत्र मानते हैं. उन्हें आखिर किस का डर है? और अब जब वह प्रधान मंत्री नहीं रहे, उन्हें मार कर किसी को क्या मिलेगा? जब जनता ही उन्हें सत्ता से उतार कर सजा दे चुकी है तो और किसी सजा की जरूरत ही क्या रह गई है.

जानलेवा दुर्घटना

विज्ञान के करिश्मों से जहां दुनिया सिमट कर एक जगह से दूसरी जगह कुछ घंटे दूर रह गई है, वहीं दुर्घटनाओं के कारण सैकड़ों जानें एक साथ भी जाने लगी हैं. बंगलौर हवाई अड्डे पर इंडियन एयर लाइंस के विमान के दुर्घटना ने लाखों यात्रियों का दिल दहला दिया है और उन की अगली कई यात्राएं सुखद न रह कर अति तनावपूर्ण जोखिम बन जाएंगी.

इंडियन एयरलाइंस का यह एयरबस ए.320 विमान अभी नया ही था. इसलिए यह तो नहीं कहा जा सकता कि यह घिस गया था. लगता है कुछ पायलट की भूल और कहीं कोई यंत्र की खराबी के कारण यह विमान उड़न पट्टी से थोड़ा पहले उतरने लगा और जमीन से टकराने पर उस में आग लग गई.

इंडियन एयरलाइंस के इस विमान की दुर्घटना पर रोष होना स्वाभाविक है क्योंकि अभी थोड़े दिन पहले ही एयरलाइंस के तकनीकी कर्मचारी हड़ताल पर आमादा थे और कई दिन तक एयरलाइंस ने काफी कम सावधानियों से हवाई जहाज उड़ाए थे. मंत्रालय ने जब सख्त रुख अपनाया तो कर्मचारी कुछ सुधरे थे.

देश में आम सेवाओं के अंधाधुंध सरकारीकरण और श्रमिक अनुशासनहीनता के मिलेजुले कारणों से सरकारी सेवाएं वैसे ही बहुत घटिया स्तर की हैं. इंडियन एयरलाइंस से शिकायतें तो लोगों को ढेर सी हैं. न केवल यह सेवा समय पर सही उड़ानें दे पाती है, इस के कर्मचारी भी आमतौर पर बेहद रूखे और लापरवाह होते जा रहे हैं.

अनुशासनहीन कर्मचारी को इंडियन एयरलाइंस तो क्या, अब नागरिक क्षेत्रों में भी निकाला नहीं जा सकता. इस से कार्यकुशलता में तो फर्क पड़ेगा ही. हवाई जहाजों की देखभाल एक बहुत पेचीदा काम है पर काहिली और गैरजिम्मेदारी के वातावरण में यह कहां तक ठीक ढंग से किया जा सकता है?

सरकार हर दुर्घटना के बाद सख्त कदम उठाने की घोषणा करती है पर इन कदमों में कर्मचारियों की कुशलता की कोई बात नहीं होती. समाजवाद के नाम पर समझा जाता है कि एक बार जिसे नौकरी मिल गई, वह मरने तक कंपनी का मेहमान है. जब कर्मचारी को मालूम है कि उस का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता तो वह क्यों मन लगा कर काम करेगा?

दूसरी ओर कर्मचारियों को भी मालूम है कि सरकारी कंपनी होने के नाते कितने ही आवश्यक फैसलों को टाल दिया जाता है और कितनों में फैसले अन्य कारणों से लिए जाते हैं. एयरबस ए–320 की खरीद में बेईमानी का शक लोगों को पहले ही दिन से है क्योंकि इस की खरीद अफरातफरी में की गई थी और संदेह है कि 2000 करोड़ रुपए के सौदे में कुछ रिश्वत ली गई है.

ऐसे में कर्मचारियों से ले कर प्रबंधकों में कार्यकुशलता में कमी होना स्वाभाविक है और इस की खामियाजा निर्दोष यात्रियों को भुगतना ही पड़ेगा. यह ठीक है कि हवाई जहाजों की दुर्घटनाएं विश्वभर में होती रहती हैं पर आमतौर पर कर्मचारियों की तत्परता देख कर भरोसा रहता है जिस का इंडियन एयरलाइंस में अभाव है.

सरकार जांच कमीशनों के माध्यम से यात्रियों को भरोसा दिला पाएगी, इस में संदेह है क्योंकि एक पूरे उद्योग की मनोवृत्ति बदलना काफी कठिन है. सरकारी वातावरण में तो यह हो ही नहीं सकता. हमारे यहां तो यह नागरिक क्षेत्र में करना भी कठिन है.

गोरों कालों के बीच भूरे

दक्षिणी अफ्रीका में गोरों के राज से मुक्ति दिलाने के लिए भारत सरकार हमेशा बढ़चढ़ कर बोलती रही है और काले नेताओं को व्यक्तिगत रूप से भी और उन की संस्थाओं को भी सहायता देती रही है. हाल में 27 वर्ष बाद छूटे काले नेता नेल्सन मंडेला ने भी इस बात का आभार माना है.

इस पर भी अगर भारत व विश्व के अन्य देशों की सहायता से यदि कभी दक्षिणी अफ्रीका को गोरों से मुक्ति मिली तो सब से ज्यादा हानि दक्षिणी अफ्रीका में बसे सात लाख से अधिक भारतीयों को ही होगी. गोरों के राज में तो भारतीय फलफूल रहे हैं, अच्छा व्यापार कर रहे हैं, सुख से रह रहे हैं पर नेल्सन मंडेला के काले राज में उन्हें मारमार कर भगाया जाएगा.

इस का अंदेशा अभी से मिलना शुरू हो गया है. अभी गोरों का शासन कायम है पर काले जानते हैं कि आज नहीं तो कल गोरों का शासन ढीला होगा और उन्होंने भारतीय मूल के लोगों को परेशान करना शुरू कर दिया है.

अफ्रीका के नटाल प्रांत में भारतीय मूल के लोगों पर आक्रमण आरंभ हो गए हैं. नेल्सन मंडेला ने इस की आलोचना की है और विश्वास दिलाया है कि ऐसा नहीं होगा लेकिन कबायली संस्कृति वाले दक्षिणी अफ्रीका में

सभी गुट नेल्सन मंडेला की सुनेंगे भी नहीं.

भारतीय लोगों ने दक्षिणी अफ्रीका में छोटे व्यापारों पर एकाधिकार जमा रखा है. वे हर जगह की तरह महाजनी का काम भी करते हैं. और ब्याज पर दिए रुपए से खासा कमाते हैं. इस से मौजमस्ती में डूबे कालों की जेबें खाली रहती है और भारतीयों की भरी. गुस्सा उतारा जाता है बहुमत के आधार पर.

असल में भारत सरकार का यह कर्तव्य है कि वह अफ्रीकी नेताओं को सहायता तभी दे जब भारतीयों की सुरक्षा की गांरटी मिले. भारत को चाहिए कि वह उन्हें मजबूर करे कि दक्षिणी अफ्रीका गोरों से आजादी के बाद भारतीय मूल के लोगों को संवैधानिक, कानूनी व प्रशासनिक सुरक्षा देगी तभी उसे भारत का समर्थन मिलेगा.

ऐसा भारत सरकार करेगी, इस का भरोसा नहीं क्योंकि चाहे फीजी हो, सिंगापुर हो या सूरीनाम, अब तक भारत सरकार सब से ज्यादा उदासीन भारतीय मूल के लोगों के प्रति ही रही है हमारे दूतावासों के कर्मचारी इन देशों में रह रहे भारतीय मूल के लोगों से जलते ही नहीं, घृणा तक करते हैं और उन्हें किसी तरह की सहायता नहीं देना चाहते.

ऐसे वातावरण में दक्षिणी अफ्रीका में भारतीय लोग भारत की ओर आशा की निगाह से देख सकेंगे, इस का भरोसा नहीं है. उन के लिए गोरों से मुक्ति का मतलब होगा कई पीढ़ियों से बने अपने घर को छोड़ना. विडंबना यह है कि उन्हें अब न तो पश्चिमी देशों में पनाह मिलेगी, न भारत में.

इस प्रवृत्ति का कारण है कि हमारे नेता दूसरों के मुंह से वाहवाही सुनना चाहते हैं चाहे इस के लिए अपनी टांग ही क्यों न कटानी पड़े. अफ्रीकी देशों की वाहवाही सुनने के लिए हम अफ्रीका के काले नेताओं को भला कैसे नाराज कर सकते हैं?

शांति के दौर

रूस और अमरिका दोनों ही अब यूरोप में अपनी फौजें घटाने को तैयार हो गए हैं. दोनों ने पहले ही कई किस्म के आणविक हथियारों को नष्ट करने का काम शुरू कर दिया था. टैंकों के कई डिवीजन भी दोनों पक्ष समाप्त कर रहे हैं. दोनों पक्षों के बीच 45 वर्ष से चली आ रही कटुता अब शांति व सद्भाव के एक अद्भुत मोड़ पर आ पहुंची है.

इस परिवर्तन का मुख्य कारण दोनों पक्षों का आम आदमी रहा है. आम आदमी हमेशा शांति व समृद्धि चाहता रहा है जब से मानव पेड़ों पर उतर कर कृषि जनित सभ्यता में आया है, अधिकांश लोग अपना खाना स्वयं पैदा कर जीने में खुश रहे हैं. लेकिन हर युग में कुछ ऐसे व्यक्ति भी रहे हैं जो दूसरों का कमाया छीन कर खाने में ही महानता समझते रहे हैं. इसी कारण युद्ध होते रहे हैं जिन में एक क्षेत्र, जाति, धर्म या देश के लोग दूसरे पर आक्रमण कर के लूटखसोट करते रहे हैं.

1945 के बाद, विश्व युद्ध की विभीषिका के बावजूद, रूस और अमरीका दोनों ने अपने देश की अधिकांश शक्ति युद्ध की तैयारी में झोंक दी. नतीजा यह हुआ कि कम कुशल रूस और उस के पूर्वी यूरोप के साथी आर्थिक प्रगति में पिछड़ गए और जापान व जरमनी जैसे देश अमरीका को भी

आर्थिक चुनौती देते आगे निकल गए.

यह रूसी नेता मिखाइल गौर्बाचौफ की दूरदृष्टि व साहस था कि उस ने देश की जनता के लिए युद्ध के दलदल से निकलने का फैसला किया चाहे इस की वजह से नीचा ही क्यों न देखना पड़े. गौर्बाचौफ जानते हैं कि जब तक सेना पर किया जा रहा बेमतलब का खर्च न काटा जाएगा, आम आदमी को सुख न मिल पाएगा.

पश्चिमी देशों को संतुष्ट करने के लिए उन्होंने न केवल अपनी सेनाएं कम की, पूर्वी यूरोप पर अपना फौलादी नियंत्रण भी छोड़ दिया तथा स्वयं रूस में ऐसे परिवर्तन कर डाले जिस से तानाशाह ही नहीं तानाशाही मनोवृत्ति भी सदा के लिए दफन कर दी जाए. युद्धों में मजा तानाशाहों को आता है क्योंकि उसी के सहारे वे अपनी शक्ति का इजहार कर पाते हैं.

रूस और अमरीका के ये परिवर्तन विश्व भर में आर्थिक प्रगति की एक आंधी ला सकते हैं. शांति की गारंटी होने पर हर व्यक्ति अपने मन का भारी बोझ उतार कर सामाजिक हित के कार्यों में लग सकेगा. जो पैसा अब तक सामरिक शोध में लगाया जाता था अब प्रकृति को विनाश से बचाने में लगाया जा सकेगा.

यूरोप के एकीकरण का सपना भी अब आसानी से पूरा हो सकेगा. यूरोप के एक होने पर इस क्षेत्र की आर्थिक उन्नति बहुत तेजी से होगी क्योंकि तब उत्पादकों को बड़े बाजार मिलेंगे. और बहुत बड़े क्षेत्र से योग्य व्यक्ति सुलभ होंगे.

युद्ध के माहौल के कारण जो देश दशकों से अपनी ही बनाई जेलों में घुट रहे थे, अब असली स्वतंत्रता की नई सांस ले सकेंगे.

पत्नी पीड़ित

अगर पति के अत्याचारों से तंग आ कर पत्नी जल कर आत्महत्या कर ले तो आजकल पुलिस पति को ही नहीं, उस के मातापिता, भाइयों, बहनों, बहनोइयों, भाभियों, भतीजों आदि सब को पकड़ कर बंद कर देती है. पुलिस का प्रयास रहता है कि हर उस शख्स को बंद कर दिया जाए जो पैरवी कर सके, अदालत के दरवाजे खटखटा सके और जमानत दे सके.

एक तो इस से महिला संगठनों से वाहवाही मिलती है, दूसरे जब सब बंद हों और अदालत से छूटने का आसार न हो तो लेदे कर छूटना ही अकेला तरीका बच जाता है. ऐसे मामलों में पुलिस को मोटी रकम मिलती है. साथ ही मृत पत्नी के मातापिता भी बचीखुची संपत्ति में स्त्रीधन, दहेज आदि सूद सहित वसूल कर लेते हैं.

लेकिन अगर पति पत्नी के अत्याचारों से तंग आ कर जल कर मर जाए तो क्या हो?

दिल्ली में एक पति ने पत्नी से झगड़ा होने पर गुसलखाने में स्वयं को बंद कर मिट्टी का तेल डाल कर आत्महत्या कर ली. पुलिस ने उस के इस काम को गुस्से और शराब के दबाव में की गई आत्महत्या माना और केस दाखिल दफ्तर कर दिया. क्या अब पत्नी और उस के मातापिता को बंद करने का फर्ज नहीं बनता ? या अब कानून केवल एक तरफा रह गए हैं.

होली के रंग आखिर हैं क्या?

लेख • कुंदा डहाके

रंग है तो जीवन है, रंगहीन जीवन में खुशियों की कल्पना करना व्यर्थ है. होली रंगों का त्योहार है. यह एक ऐसा त्योहार है, जिस में सभी का मन रंगों में रंग जाने को होता है. इस दिन सभी लोग सारे भेदभाव भुला कर मस्ती के रंग में डूब जाते

होली के दिन आप जिन रंगों की मस्ती में डूब कर अपनी खुशियों का इजहार करते हैं, उन की असलियत से नावाकिफ हो कर एक तरह से सारा मजा ही किरकिरा कर देते हैं. होली को जरूर रंगीन बनाइए, पर पहले यह भी जान लीजिए कि होली के रंग आखिर हैं क्या?

क्योंकि रंग भावनात्मक एकता के प्रतीक हैं.

बहरहाल, क्या आप ने कभी सोचा है कि रंग आखिर है क्या? वैसे तो तरहतरह के रंग देखने को मिलते हैं पर तीन ही होते हैं— लाल, पीला और नीला, जो एकदूसरे से मिल कर काला, बैंगनी, हरा आदि अन्य रंग बनाते हैं.

रंगों का इतिहास बहुत पुराना है. मानव को रंग प्रकृति से ही मिले हैं. लाख के कीड़ों से लाल और महावर रंग बनाए जाते हैं. पला और केसर के फूलों से केसरिया तथा समुद्री घोंघे से बैंगनी रंग बनाया जाता है. वैसे घोंघे से निकलने वाला द्रव्य गाढ़ा सफेद होता है.

जो धीरेधीरे प्रकाश में आने पर हरा व नीला पड़ जाता है.

आजकल प्राकृतिक रंगों के अलावा कृत्रिम रंगों का चलन भी खूब हो रहा है, जो प्रयोगशालाओं में रसायनिक विधियों द्वारा बनाए जाते हैं. होली के अवसर पर हम इन का भरपूर इस्तेमाल करते हैं, किंतु इन के रसायनिक कुप्रभावों के प्रति उतने ही असावधान भी रहते हैं. ये सचमुच हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर डालते हैं.

सूखा रंग चेहरे या सिर के बालों पर डालने से नाकमुंह के जरिए शरीर के भीतर पहुंच कर हानि पहुंचाता है. रंगों में पाया जाने वाला सीसा शरीर के भीतर जा कर सीधे पेट में पहुंचता है और पेट की बीमारियां पैदा कर देता है. कुछ रंगों में जिंक क्लोराइड पाया जाता है, जो चमड़ी में खुजली पैदा करता है. गुलाल में पाए जाने वाले पोटेशियम डाइक्रोमेट से त्वचा के रोग होते हैं.

इन दिनों होली पर घातक रंगों का इस्तेमाल आम हो गया है. इन से शरीर व सौंदर्य दोनों को खतरा बना रहता है. क्या आप चाहेंगे कि इस वर्ष खेली गई होली कोई इसलिए याद रखें कि आप ने अपने साथियों को पेंट, कीचड़ आदि से पोत कर होली की बधाई दी थी. इस से तो प्रेम के स्थान पर घृणा ही पैदा होगी. कुछ रंगों में तो ऐसे तत्व मिलाए जाते हैं, जिन से त्वचा पर न केवल सूजन आती है, वरन छोटेछोटे दाने भी उभर आते हैं. कीचड़, कालिख, खिजाब मिले पक्के रंग व पेंट आदि से त्वचा को नुकसान पहुंचता है और रंगों को छुड़ाने में बहुत समय लगता है.

यदि आप होली का भरपूर आनंद उठाना चाहते हैं तो इन गंदे रंगों के स्थान पर चंदन, हलदी व मैदे में कोई अच्छा सा रंग

किसी को रंग गुलाल मलने से पहले इस बात का भी ध्यान रखें कि इस से उस व्यक्ति की त्वचा को नुकसान भी पहुंच सकता है.

मिला कर होली खेलें, ये वस्तुएं आप की त्वचा को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगी. सस्ते गुलाल का प्रयोग होली पर न करें. सस्ते गुलाल में डाले गए पदार्थ त्वचा को हानि पहुंचाते हैं.

यदि आप होली खेलने से पूर्व या घर से बाहर निकलने से पहले सारे बदन और चेहरे पर वैसलीन अथवा नारियल का तेल लगा लें तो आप के शरीर पर रंगों का दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा. होली खेलने के लिए टेसू के फूलों का रंग व हलदी का रंग या पाउडर गुलाल की तरह इस्तेमाल करें. हलदी आप को उबटन जैसा फायदा करेगी और उसे मलमल कर छुड़ाते समय आप की त्वचा का मैल भी साफ हो जाएगा. होली में गीले रंग, गुलाल या पेंट की जगह चंदन का लेप भी किया जा सकता है. प्राचीनकाल में टेसू के फूलों को सूखा लिया जाता था, तत्पश्चात उन्हें उबाल कर केसरिया रंग बनाया जाता था जिसे पिचकारियों या कटोरों में भर कर होली खेली जाती थी.

होली खेलने में सदा साफसुथरे व अच्छे रंगों का ही प्रयोग करें. प्रत्येक रंग की अपनी अलग छटा होती है. हर रंग का अपना महत्त्व होता है. लाल रंग वधू की मांग संवारता है. उस के माथे की शोभा बढ़ाता है. नीला रंग आकाश की उंचाइयों की ओर इशारा करता है. वह हृदय को आसमान की तरह ऊंचा व समुद्र की तरह गहरा बनाने का संदेश देता है.

सफेद शांति का प्रतीक है. यह रंग हमेशा ऐसे कार्य करने को प्रेरित करता हैं, जो स्वयं को तो सुकून दे, साथ ही दूसरों को भी सुखशांति प्रदान करे. हरा रंग जीवन में हरियाली और पतझड़, उतारचढ़ाव की याद दिलाता है.

इसी तरह टेसू के फूलों से बनने वाला पीला रंग तो होली का खास रंग है. लेकिन अब यह बहुत कम दिखाई देता है. यह बसंती रंग हमें त्याग व बलिदान की याद दिलाता है. इन सभी रंगों में तब और निखार आ जाता है जब होली में इन का उपयोग सुंदर भावना व अच्छे विचारों के साथ किया जाए. ●

होलिका दहन और

लेख ● जगमोहन सिंह रौतेला

होली के दिन लकड़ियां और कंडे जला कर 'होलिका दहन' करने का प्रचलन हमारे यहां सदियों से चला आ रहा है. पहले इस से पर्यावरण खराब नहीं होता था क्योंकि उस समय जनसंख्या के अनुपात में पेड़पौधे अधिक थे. लेकिन जिस तरह जंगलों की अंधाधुंध कटाई से ईंधन की समस्या गंभीर होती जा रही है, उसी प्रकार 'होलिका दहन' के नाम पर उपयोगी ईंधन को जला कर वनसंपदा को बरबाद करने से पर्यावरण भी बिगड़ता जा रहा है और प्रदूषण फैल रहा है.

एक अनुमान के अनुसार देश में लगभग 40-45 हजार पेड़ों की लकड़ी हर साल होली में जला दी जाती है.

देश में बढ़ती जनसंख्या के साथसाथ ईंधन की मांग भी बढ़ती जा रही है. देश में लगभग साढ़े पांच लाख गांव हैं. गांवों के लोग हर वर्ष करीब 2.35 करोड़ टन लकड़ी ईंधन के रूप में जलाते हैं. गांवों में लकड़ियों के अत्यधिक इस्तेमाल के कारण आसपास के वन धीरेधीरे समाप्त होते जा रहे हैं. जिस रफ्तार से जंगलों की अंधाधुंध कटाई हो रही है उस रफ्तार से नए पेड़ नहीं लगाए जा रहे हैं.

ईंधन की लकड़ी के पर्याप्त मात्रा में न मिलने के कारण पहाड़ी क्षेत्रों के लोग अपने पूर्वजों के पुराने स्थानों को छोड़ कर मैदानी

होलिका दहन में पर्याप्त मात्रा में लकड़ियों और कंडों को जला कर हम ईंधन की गंभीर समस्या पैदा करते हैं.

हमारा पर्यावरण

जंगलों की अंधाधुंध कटाई से न सिर्फ हमारा पर्यावरण असंतुलित होता जा रहा है, वरन ईंधन की भी गंभीर समस्या पैदा होती जा रही है. इस हालत में 'होलिका दहन' के नाम पर लकड़ियों और कंडों को जला कर धार्मिक संतुष्टि प्राप्त करना कहां की बुद्धिमानी है?

इलाकों में जा कर बसने लगे हैं. जलाऊ लकड़ी की कमी के कारण मवेशियों के गोबर का उपयोग ईंधन के रूप में अधिक होने लगा है. नतीजा यह है कि सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही हर साल पांच करोड़ टन गोबर, जो खाद के काम आता. उपलों और कंडों के रूप में जला दिया जाता है.

मध्य प्रदेश में भी जलाऊ लकड़ी की समस्या के कारण 45 में से 26 जिले ऐसे हैं, जहां वार्षिक मांग की तुलना में लकड़ी और ईंधन की कमी है. सन 2000 तक प्रदेश में प्रतिवर्ष लगभग दो करोड़ घन मीटर लकड़ी और ईंधन की आवश्यकता होगी. यदि इस कमी को पूरा करने के लिए समय रहते कोई सुनियोजित और ठोस योजना शुरू नहीं की गई तो भविष्य में इस के परिणाम गंभीर हो सकते हैं.

वन विशेषज्ञों के अनुसार प्रदेश में इस कमी को पूरा करने के लिए सन 2000 तक लगभग 20 हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में वन लगाए जाने चाहिए.

देश में हर वर्ष 700 अरब टन गोबर प्राप्त होता है जो कि 35 अरब टन कोयला तथा 27 अरब टन मिट्टी के तेल के बराबर ऊर्जा उत्पन्न करता है. यदि इस पूरे गोबर का प्रयोग खेतों में खाद के रूप में किया जाए तो जमीन की उर्वरक शक्ति बढ़ेगी और साथ ही उत्पादन भी. रासायनिक खादों के प्रयोग से लगातार फैल रहा जल और भूमि प्रदूषण भी गोबर के प्रयोग से घट जाएगा. ईंधन के रूप में गोबर का प्रयोग होने के कारण खेतों में रासायनिक खादों का प्रयोग बढ़ा, जिस से भूमि की उर्वरक शक्ति में दिनोंदिन कमी तो आई ही, साथ ही खाद्य पदार्थों की पौष्टिकता भी कम हुई है.

अतः होली में कंडे जलाने का मतलब भूमि की उर्वरता और पैदावार को कम करना तथा भूमि और जल प्रदूषण को बढ़ाना है.

संसार में जलाऊ लकड़ी की मांग में प्रतिवर्ष 25-30 लाख टन की वृद्धि हो रही है. जो मांग 1970-71 में 11 करोड़ 70 लाख टन थी, 1976-77 में लगभग 13 करोड़ 20 लाख टन आंकी गई. 1978 में लगभग साढ़े नौ करोड़ टन लकड़ी ईंधन के लिए उपलब्ध थी. शेष मांग की पूर्ति अवैध कटाई द्वारा की गई.

इस बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए होली पर लकड़ी एवं कंडे जलाना कहां तक उचित है यह सोचना होगा. एक तरफ तो हमारे देश में कुछ त्योहारों पर वृक्षों की पूजा की जाती है, दूसरी तफ होली जैसे त्योहारों पर प्रतिवर्ष 40-45 हजार पेड़ों को जला दिया जाता है. अगर त्योहार के नाम पर इस रिवाज को बरकरार ही रखना है तो हम गांवमहल्लों के कूड़े को इकट्ठा कर के क्यों नहीं जलाते? या ऐसे फालतू घासफूस और बेकार पौधों को क्यों नहीं जलाते जो हमारे लिए अनुपयोगी हैं.

यदि धर्म के नाम पर इस प्रकार बेवजह ईंधन की बरबादी होती रही तो भविष्य में यह बहुत बड़ी समस्या बन सकती है और तब इस से निबटना काफी मुशकिल होगा. ●

होली का अनूठा आनंद

लेख • रमेश चंद्र छबीला

राजेश तथा विनोद ने बाहर स्कूटर खड़ा किया और मुकेश के घर में होली खेलने के लिए जा घुसे.

मुकेश ने प्रसन्न मुद्रा में उन लोगों से होली खेली और एक प्लेट में पकौड़े ला कर बोला, ''लो यार पकौड़े खाओ. बहुत बढ़िया बने हैं.''

एक पकौड़ा खा कर राजेश ने कहा, ''ये तो बहुत मजेदार हैं.''

''हां, भांग के बने हैं.'' मुकेश ने कहा.

विनोद और राजेश दोनों ने डट कर पकौड़े खाए.

''मैं तो होली पर भांग के पकौड़े ही बनवा लेता हूं. भांग के नशे में होली खेलने का मज़ा कुछ और ही होता है. बिना नशे के क्या होली,'' मुकेश बोला.

''और बिना जुए के क्या दीवाली?'' राजेश ने कहा और हंस दिया.

होली सिर्फ रंग भरा त्योहार ही नहीं है, यह प्रेम, मित्रता, भाई चारे और सौहार्द का प्रतीक भी है. इस त्योहार का भरपूर आनंद उठाने के लिए गलत परंपराओं को छोड़ कर इस प्रकार मनाएं कि दूसरे लोग आप से प्रेरणा प्राप्त कर सकें.

वे दोनों भी हंसने लगे. पागलों की तरह हंसते रहे. भांग का नशा जो चढ़ रहा था.

राजेश ने स्कूटर स्टार्ट किया. विनोद पीछे बैठ गया. दोनों पूरे नशे में थे. चलाते हुए कभी लगता कि स्कूटर उड़ रहा है, कभी लगता कि खुद उड़ रहे हैं, गति इतनी तेज कर दी कि स्कूटर नियंत्रण से बाहर हो गया और सामने से आते हुए ट्रक से जा टकराया. दोनों बेहोश हो गए. खून बह रहा था. ड्राइवर ट्रक ले कर भाग गया. महीनों हस्पताल में इलाज चला. तब जा कर कहीं दोनों ठीक हुए.

वीरेन बाबू नएनए इस शहर में आए थे. होली के दिन घर में अकेले बोरियत से बचने के लिए वह चौक में जा पहुंचे जहां कई युवक मस्ती और हुड़दंग करते हुए आपस में रंग खेल रहे थे.

वीरेन बाबू जब उन के निकट पहुंचे तो कुछ युवकों ने उन को दबोच लिया. दो युवकों ने उन का कुरता व पाजामा फाड़ना शुरू कर दिया.

"अरे यह क्या कर रहे हो? मैं तो तुम्हारे पास होली खेलने आया हूं. मेरे कपड़े क्यों फाड़ रहे हो?" वीरेन बाबू ने हैरानी से पूछा.

"होली मौजमस्ती और हुड़दंग का त्योहार है. आज के दिन सब छूट है." एक युवक ने कहा और कपड़े फाड़ता ही रहा.

जब वीरेन बाबू के शरीर पर कच्छाबनियान ही रह गया तो एक युवक बोला, "फिलहाल इन के लिए इतना ही बहुत है. अब बाबूजी से रंग खेला जाए."

युवकों ने वीरेन बाबू के चेहरे पर काला और जामुनी रंग इतनी बुरी तरह रगड़ा कि वह झल्लाने लगे. एक ने तो काला मोबिल आयल उन के शरीर पर पोतना शुरू कर दिया.

वीरेन बाबू कुछ कर नहीं सके, क्योंकि अधिकांश युवक शराब के नशे में मस्त थे. वह कहते भी क्या, गलती तो उन्हीं की थी. वह तुरंत घर लौट आए और मन ही मन उन सब को गालियां देते हुए चेहरे और शरीर की सफाई करने लगे. उस दिन से वीरेन बाबू ने कसम खाई कि अब वह कभी होली पर बाहर नहीं निकलेंगे.

विजय और अजय महीप के घर पहुंचे. उन को देखते ही महीप ने प्रसन्न हो कर कहा, "आओ यार, मैं कब से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं."

वे तीनों कमरे में बैठ गए. उन्होंने पहले ही बहुत शराब पी रखी थी. थोड़ी और पी डाली. जब शराब का नशा पूरी तरह चढ़ गया तो विजय ने कहा, "भाभी से होली खेलेंगे."

"जरूर खेलो, मना किस ने किया है?" महीप बोला.

महीप की पत्नी निशा बाहर आंगन में खड़ी थी. विजय और अजय हंसते हुए निशा की ओर बढ़े. विजय ने निशा के चेहरे पर रंग रगड़ते हुए कहा, "आज तो हम हाथ फेरेंगे, साल भर तो महीप का है."

रंग रगड़ कर विजय ने निशा के कपोल खींच लिए. अजय ने तो निशा को बांहों में उठा लिया.

निशा मौन रही. बेबस और घायल हिरनी की तरह देखती रही. सब सहती रही. आखिर क्या कहती, यह सब उस के पति की इच्छानुसार हो रहा था. होली के नाम पर उस के शरीर को नोचा गया. वह कसमसा कर रह गई. छोटे बच्चे सहमे से देखते रहे.

यह है आज की होली. भारतीय सभ्यता और संस्कृति का वह त्योहार जो प्रेम, मित्रता, सौहार्द और मस्ती भरी उमंग के लिए प्रसिद्ध है. प्राचीन काल में इस त्योहार का रूप कुछ

भी रहा हो परंतु अब इस का स्वरूप बहुत बदल चुका है. आज तो गुंडागर्दी, हुड़दंग, शराब और भांग का नशा, जोर जबरदस्ती और अश्लील हरकतें ही होली पर देखने को मिलती हैं.

बच्चे घरों के बाहर या मकान की छतों से गुब्बारों में पानी भर कर लोगों पर फेंकते हैं. गुब्बारा कहीं भी लग जाता है. कभीकभार चेहरे पर मानो जोरदार थप्पड़ लगा हो. आंख पर लगने से आंख खराब हो जाती है. स्कूटर या साइकिल वाले के मुंह पर अचानक गुब्बारा लग जाए तो दुर्घटना भी हो जाती है. पर बच्चों को इस की चिंता नहीं होती. बच्चे भला क्यों चिंता करेंगे जब उन के मातापिता ने बहुत प्यार से गुब्बारों की थैली ला कर दी है.

गलत परंपरा को त्यागें

होली के नाम पर चंदा इकट्ठा करने वालों की भी कमी नहीं. होली पर लाखों क्विंटल लकड़ी जला दी जाती है. इतना ही नहीं, पासपड़ोस की दुकानों के बाहर रखा लकड़ी का सामान भी उठा कर होली में स्वाहा कर दिया जाता है, जबकि होली से दो माह पूर्व जनवरी की कड़ाके की ठंड में कुछ गरीब लोग सर्दी के कारण मर भी जाते हैं.

ये होली जलाने के लिए चंदा मांगने वाले लोग यदि उन गरीबों के लिए चौराहों पर लकड़ियां जला दें तो उन्हें कितनी राहत मिले. महंगाई के इस जमाने में इस प्रकार बेकार ईंधन जला कर राख कर देना कौन सी बुद्धिमानी है.

होली पर शराब या भांग का नशा भी जरूरी समझा जाता है. वैसे तो शराब पीने वालों को बस पीने का बहाना चाहिए. लेकिन होली पर तो जो बिलकुल नहीं पीते, उन्हें भी जबरदस्ती पिला कर नशे की अंधी दुनिया में धकेल दिया जाता है. 10-12 साल के बच्चों को उन के किशोर और युवा मित्र जबरदस्ती पिला कर हुड़दंग कराते हैं.

बाजार में बिकने वाला गुलाल इतना घटिया होता है मानो चेहरे पर रेत रगड़ दिया गया हो. बहुत से लोग पानी के साथ काल जामुनी, लाल व हरा रंग हाथों पर लगा चेहरे पर रगड़ देते हैं. यह रंग कई दिनों त भी चेहरे से नहीं हटता. कपड़े फाड़ दिए ज हैं.

होली के दिन यदि हुड़दंग करने वा दल को कोई आतीजाती महिला मिल जा तो सभी उस से होली खेलने को उतावले ह जाएंगे. होली के बहाने उस के शरीर को भ नोच लेंगे.

होली पर प्रशासन की ओर से शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस का पू प्रबंध होता है. पर प्रायः हुड़दंग करने वाल को पूरी छूट होती है कि वे कुछ भी करें शराब या अन्य नशे में धुत सड़क के किनार नालियों में गिरे हुए लोगों को उठा कर पुलि जरूर ले जाती है. हालांकि सरकार व आदेशानुसार होली के दिन शराब पर पू प्रतिबंध होता है परंतु लोग इसी दिन नशे मे मस्ती करते हुए अधिक दिखाई पड़ते हैं.

बहुत से लोग रंगों की बजाय गोबर व नाली के कीचड़ से होली खेलते हैं. बसों औ रेलगाड़ियों पर गोबर, कीचड़ ही नहीं, पत्थ भी फेंके जाते हैं जिस से यात्री घायल हो जात हैं और मारपीट की नौबत आ जाती है.

बहुत से लोग तो इस हुड़दंग, गुंडागर्द और जबरदस्ती करने वालों से डर कर घर मे ही बंद रहते हैं.

क्यों बदल गया है होली का यह स्वरूप? आखिर इस का जिम्मेदार कौन है? सरकार और प्रशासन इस में कुछ नहीं कर सकता. इसे तो हम और आप स्वयं बदल सकते हैं.

भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक होली का त्योहार शराब या अन्य किसी भी नशे से दूर रह कर प्रेम, सौहार्द मधुरता, सभ्यता व शालीनता से मनाइए. किसी भी परिचित या अपरिचित से होली खेलते समय मन में मित्रता की भावना रखिए तथा प्रसन्नचित्त और उल्लासपूर्ण रहिए. ऐसे में आप सचमुच होली का अनूठा आनंद ले पाएंगे.

इंद्रधनुषी रंगों की फुहार

कहानी • साधना श्रीवास्तव

अखिलेश का दृष्टि से ओझल होते ही सरोज ने गेट बंद किया और अंदर आ कर बैठक की खिड़की पर खड़ी हो गई, जहां से सड़क पर आतेजाते लोग साफ दिख रहे थे. जब भी उस का मन अशांत होता, वह यहीं बैठक में खिड़की के पास खड़ी हो कर बाहर आतेजाते लोगों को देख कर मन बहलाने की कोशिश किया करती. इस समय भी मन में उठ रहे भीषण तूफान को बाहर की चहलपहल की हलकी परत डाल कर वह कुछ अंश तक शांत करना चाहती थी.

मन को चैन न मिला तो वहां से हट कर सरोज बगीचे में चली आई, जहां चारों तरफ की हरियाली पर फागुन की बयार का नशा छाया हुआ था. सफेद, पीले, गुलाबी व सुर्ख रंग के

मनमोहक गुलाब [illegible] प्रकृति की इस मनोरम छटा को निहारती रही.

होली आने में 15-20 दिन शेष रह गए थे. वह सोचने लगी, इस होली पर अखिलेश के यहां आए उसे डेढ़ वर्ष हो जाएगा. गत वर्ष उस के यहां आने के ठीक छः माह बाद होली पड़ी थी. तब की होली और इस आने वाली होली के बीच में समय ने कितना बदलाव ला दिया था. उसे समुद्र में उठते ज्वारभाटे की तरह समय के उतारचढ़ाव को झेलना पड़ा था.

सरोज बाग के इंद्रधनुषी रंगों में भी अपने मन को रंग न सकी तो वहां से हट कर अपने

नियति की विडंबनाओं के शिकार सरोज और अखिलेश अपनी सूनीसूनी सी जिंदगी को ले कर संताप के सागर में डुबकियां लगा रहे थे, तभी एक अजीब से मोड़ पर आपस में मिल कर उन्होंने हमसफर बनने का फैसला कर लिया. आखिर कैसे हो गया यह सब?

कमरे में आ कर पलंग पर पड़ गई. यद्यपि अखिलेश ने उसे पूरा अधिकार दे दिया था कि वह घर की स्वामिनी की तरह पूरे घर का अधिकार के साथ उपयोग कर सकती है. पर उस ने स्वयं को अपनी औकात से बाहर जाने से हमेशा रोका. अखिलेश के यहां वह नौकरी करती है, यह सचाई वह कभी भूल नहीं पाई.

सरोज नहीं जानती कि उस के द्वारा छिपाई बात का होली के दिन रहस्योदघाटन होने पर अखिलेश क्या निर्णय लेंगे. परिवर्तन के उतारचढ़ाव को झेलता उस का संतप्त मन होली के इंद्रधनुषी रंगों की फुहार से तृप्त हो सकेगा या नहीं, वह कुछ भी तो नहीं जानती. इस आशय से उस ने कभी अखिलेश के मन को टटोलना भी नहीं चाहा. पर यदि अखिलेश ने उस के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तो...? इनकार की कल्पना मात्र से ही उस का मन पीड़ा से कराह उठा और पलंग पर पड़ी सरोज अपने को अतीत में समाविष्ट होने से रोक न सकी.

'40 वर्षीय विधुर एडवोकेट के घर को सजासंवार कर रखने के लिए तथा दोनों समय नाश्ताभोजन बनाने हेतु एक महिला की आवश्यकता है. परित्यक्ता या विधवा, जिस की कोई संतान न हो. वेतन 1000 रुपए मासिक. स्वभाव एवं व्यवहार समझ कर जीवन साथी भी बनाया जा सकता है.'

एक पत्रिका में उक्त विज्ञापन पढ़ कर डेढ़ वर्ष पूर्व रविवार के दिन सरोज अखिलेश के यहां आई थी. बंगले के गेट के पास खड़े नौकर ने पूछा था, "किस से मिलना है?"

"इस बंगले के मालिक से." उस के कहने पर नौकर ने अखिलेश को उस के आने की सूचना दे दी थी और उस की आज्ञानुसार नौकर ने सरोज को बैठक की बगल में साधारण मिलनेजुलने वालों के लिए बने कक्ष में बैठा दिया था. जब तक अखिलेश आते, सरोज ने वहां बैठेबैठे ही बागबगीचे आदि पर दृष्टि दौड़ा डाली. उसे आश्चर्य हो रहा था जो इतने बड़े बंगले में किसी प्रकार की चहलपहल या शोरगुल का नामोनिशान न था. लगभग 10 मिनट बाद अखिलेश ने कक्ष में प्रवेश किया तो सरोज 'नमस्कार' करती खड़ी हो गई.

"बैठिए... बैठिए." विज्ञापन देने के बावजूद वह एकदम से न पूछ सका कि वह विज्ञापन से ही संबंधित है. 'हो सकता है, किसी अन्य कार्य से कोई और भद्र महिला उस के पास आई हो,' अखिलेश ने सोचा था. अतः सभ्यता की औपचारिकता निभाते हुए उस ने पूछा, "जान सकता हूं कि आप किस प्रयोजन से आई हैं?"

सरोज को आश्चर्य हुआ, 'क्या इन्हें अपने इश्तहार का स्मरण नहीं है? पर उसे तो बताना ही होगा.' सोच कर वह बोली, "आप ने पत्रिका में इश्तहार दिया था, मैं उसी को पढ़ कर आई हूं. मेरा नाम सरोज है."

लगभग 20-25 वर्षीया गौर वर्ण व आकर्षक नाकनक्श वाली वह महिला अखिलेश को अत्यंत सीधी व सभ्य प्रतीत हुई. माथे पर बिंदी या सिंदूर न होने से वह अनुमान न लगा सके कि वह अविवाहित है या...?

"ठीक है, विज्ञापन में लिखी बातें तो आप ने ध्यान से पढ़ी ही होंगी?"

"हां, घरगृहस्थी संभालने की आप की पहली बात मुझे पूरी तरह से मंजूर है. पर दूसरी..." सरोज हिचकिचा कर चुप हो गई.

"छोड़िए, उस के लिए आप पर कोई दबाव नहीं है. हां, क्या आप अपने बारे में कुछ जानकारी देंगी?" उस की उलझन दूर कर अखिलेश ने पूछा.

लगभग 40 वर्षीय सांवले रंग के परंतु आकर्षक व्यक्तित्व वाले अखिलेश सरोज को काफी सभ्य व भले प्रतीत हुए.

"जब मैं आप के यहां नौकरी के उद्देश्य से आई हूं तो मेरे विषय में जानकारी रखना आप का अधिकार है." निस्संकोच कहा सरोज ने और संक्षेप में अपना परिचय दे डाला, "मैं अत्यंत साधारण परिवार की हूं. आठ वर्ष पूर्व जब मैं ने इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की थी तो मेरे पिताजी ने मेरा विवाह आबकारी विभाग के एक क्लर्क से कर दिया. दरअसल पिताजी भी यह पता न कर सके कि मेरे पति शराब पीते हैं. शराब के आधिक्य ने उन का जीवन समेट कर बहुत छोटा कर दिया और कुल छः वर्ष बाद ही उन की मृत्यु हो गई." पति के स्मरण से सरोज की आंखें भर आईं.

थोड़ा रुक कर उस ने पुनः बताया, "आबकारी विभाग में मुझे नौकरी मिल रही थी, परंतु वह विभाग मुझे अपने लिए सुरक्षित नहीं लगा. कहीं अन्यत्र प्रयास में थी कि आप का इश्तहार आंखों के सामने पड़ गया." कह कर सरोज चुप हो गई. उसे भय था अखिलेश कहीं

बच्चे से संबंधित प्रश्न न कर बैठे, पर इस बाबत उन्होंने कुछ नहीं पूछा. कुछ झिझकते हुए सरोज ने जानना चाहा, "घर में कोई और नहीं है?"

"नहीं, मैं अकेला हूं. पर आप को भयभीत होने की जरूरत नहीं है." मुसकरा कर अखिलेश ने उस का भय दूर कर दिया.

उसी दिन से सरोज ने अपना काम संभाल लिया था. अखिलेश का सजासंवरा आलीशान बंगला सरोज ने और व्यवस्थित कर दिया. दिन भर आनेजाने वालों के लिए चाय बनाना, सुबहशाम का नाश्ता व भोजन तथा बिलकुल तड़के अखिलेश को चाय देना, कुल इतना ही काम था उस के जिम्मे. प्रत्येक रविवार को दोपहर बाद वह अपनी मां के पास चली जाती, जहां उस का छः वर्षीय पुत्र राजन नानी के साथ रहता था और पढ़ने जाता था. रविवार की रात बेटे और मां के साथ व्यतीत कर सोमवार को प्रातः वह पुनः एक सप्ताह के लिए अखिलेश के बंगले पर पहुंच जाती. लगभग छः माह सही ढंग से गुजर गए. अच्छा वेतन मिलने के कारण सरोज ने राजन का प्रवेश नए सत्र से अंगरेजी स्कूल में करा दिया.

इधर कुछ दिनों से सरोज को अखिलेश में कुछ मूक परिवर्तन का आभास हो चला था. कभीकभी उन का उस की तरफ नेत्रों में कुछ विचित्र भाव भर कर देखना, जैसे कुछ कहना चाहते हों, सरोज को विचलित कर देता था.

एक दिन प्रातः जब वह चाय ले कर अखिलेश के शयन कक्ष में पहुंची तो नित्य की भांति घंटी बजा कर उन्हें जगाना नहीं पड़ा, अपितु वह पहले से ही जगे उस के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे. मेज पर चाय की ट्रे रख कर वह जाने को मुड़ी ही थी कि अखिलेश की आवाज कानों में पड़ी, "ठहरो सरोज."

सरोज को आश्चर्य हुआ, 'क्या इन्हें अपने इश्तहार का संस्मरण नहीं है.'

वह रुक गई. अखिलेश ने धीरे से कहा, "कल से चाय के दो प्याले लाना."

"ठीक है." कह कर वह चली आई. दूसरे दिन जब दो प्यालों के साथ वह चाय ले कर पहुंची तो ट्रे मेज पर रखते ही अखिलेश ने कहा, "वह कुरसी इधर खींच कर थोड़ी देर बैठ जाओ."

सरोज हतप्रभ सी उसे देखती रही. अविश्वास का प्रश्न नहीं था क्योंकि इधर अखिलेश बदलेबदले नजर आने लगे थे. फिर भी वह बोली, "मैं आप के घर की नौकरानी..."

"इस तरह की बातें ठीक नहीं लगतीं." अखिलेश ने सरोज की बात बीच में ही काट कर कहा, "बहुत दिनों से तुम से अपने मन की व्यथा कहना चाह रहा था, पर उचित समय के अभाव में संभव नहीं हो पाया."

सरोज एक छोटी चौकी खींच कर उस पर बैठ गई.

"लीजिए मैं बैठ गई, अब कहिए."

"तुम को बुरा तो नहीं लगेगा."

"नहीं."

"तुम सोचती होगी, जिस के पास इतना बड़ा बंगला, धनदौलत आदि सब कुछ है, वह निश्चय ही सुखी इनसान होगा. पर सरोज, यह सच नहीं है. आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व मेरा विवाह हुआ था. दोतीन वर्ष तक मेरी पत्नी अंजलि को कोई बच्चा नहीं हुआ तो अड़ोसपड़ोस, रिश्तेदार आदि सभी कानाफूसी करने लगे. संयोग से विवाह के पांचवें वर्ष वह सब की जबान बंद करने में सफल हो गई. पर यह सफलता जानलेवा साबित हुई.

"प्रसव के कुछ दिन पूर्व बच्चे की मौत गर्भ में ही हो जाने से अंजलि के समस्त शरीर में जहर फैल गया और तब अथक प्रयास के बाद भी उसे बचाया न जा सका. चूंकि अंजलि की मृत्यु बच्चा होने के कारण हुई, अतः मैं अपनेआप को उस की मौत का जिम्मेदार समझता रहा. बच्चे से भी मुझे नफरत हो गई. भविष्य में ऐसी दुखद वारदात की पुनरावृत्ति न हो, इसलिए मैं ने पुनः विवाह न करने का निश्चय कर लिया. पर सरोज, यह तनहा जीवन काटना भी बड़ा दूभर प्रतीत हुआ और विज्ञापन के माध्यम से मैं ने मनमाफिक जीवनसंगिनी चुनने का विचार किया." अखिलेश एक लंबी सांस ले कर चुप हो गए.

"ओह, आप का जीवन भी व्यथा से पूर्ण है." सरोज ने अखिलेश से सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा.

जैसे कुछ अखिलेश को याद आ गया हो, अचानक वह बोला, "प्याला मंगा कर बातों में ऐसा लगा कि तुम से चाय पीने को कहना भी भूल गया." अपने हाथों से चाय बना कर उस ने प्याला सरोज की तरफ बढ़ाया.

सरोज ने हिचकते हुए हाथ बढ़ा कर प्याला पकड़ा. क्षण भर को दोनों के हाथों की उंगलियों का स्पर्श हुआ. दोनों की मूक दृष्टि भी चार हुई. सरोज ने आंखें नीचे कर लीं. किसी तरह चाय गले के नीचे उतार कर वह चुपचाप रसोई की तरफ बढ़ गई.

कचहरी से शाम को चार बजे आने के पश्चात अखिलेश चाय पी कर क्लब चले जाते थे. फिर रात्रि के साढ़े आठ या नौ तक ही वापस आते. उस दिन सिर दर्द के कारण घर को वापस चल पड़े. वह बखूबी अनुभव कर रहे थे कि प्रथम दृष्टि में ही प्रभावित करने वाली सौंदर्य की प्रतिमा सीधीसादी सरोज किस तरह से धीरेधीरे उस के हृदय में अपना स्थान बनाती जा रही थी.

सरोज को ले कर कल्पना में डूबे अखिलेश के मन में प्रश्न उठा, 'क्या सरोज के हृदय में भी उस के लिए प्रणय अंकुर प्रस्फुटित हुए हैं? उस ने तो पहले दिन ही स्पष्ट कह दिया था कि इश्तहार की अंतिम बात के लिए वह विवश नहीं है. यदि ऐसा आवश्यक है तो वह यह नौकरी नहीं कर सकेगी. तब अखिलेश ने उसे दबाव से मुक्त बताया था.'

विचारों में ही खोए हुए अखिलेश घर पहुंचे. बिना जूता और मोजा उतारे ही, पैर थोड़ा बाहर की तरफ रख कर वह पलंग पर लेट गए. थोड़ी देर बाद रसोई से आ कर सरोज ने साश्चर्य पूछा, "आज तो आप जल्दी आ गए?"

"हां, सिर में दर्द हो रहा था, इसलिए चला आया. खाना तो समय पर ही खाऊंगा."

सिर में दर्द, कुछ सोचते हुए सरोज असमंजस में पड़ गई. पर अपना कर्तव्य समझ कर एक मिनट को रसोई में जा कर गैस बंद की और वापस आ कर धीरे से बोली, "सिर में तेल लगा कर दबा दूं, क्या?"

अखिलेश ने पलकें उठा कर सरोज की तरफ देखा, "रहने दो, अधिक दर्द नहीं है. बाम लगा लूंगा... आराम मिल जाएगा."

"कुछ नहीं." सरोज चौंक गई.

"मैं ही लगा देती हूं." कह कर शीशी उठा कर सरोज उस के माथे पर बाम लगाने लगी. अखिलेश जैसे इसी स्पर्श के लिए तरस रहे थे. कितनी मीठी व सुखद अनुभूति हुई उन्हें, सरोज के स्पर्श मात्र से. एक अरसे से पुरुष का तृषित पुरुषत्व नारी के कोमल स्पर्श मात्र से विद्युत तरंगों जैसा झंकृत हो उठा. अवश होते मन को अखिलेश ने रोका. साहस बटोर कर उन्होंने अपने ललाट पर फिरती सरोज की उंगलियों पर धीरे से अपना हाथ रख दिया तो उंगलियां स्थिर हो गईं. सरोज की आंखों में झांक कर भाव विह्वल से बोले अखिलेश, "तुम ने कभी मेरी भावनाओं को समझने का प्रयास नहीं किया, सरोज."

सरोज सब कुछ जानतीसमझती भी अनजान बनी थी. अखिलेश के स्वभाव, व्यवहार और घर के एकांत वातावरण ने उसे भी प्रभावित किया था. इतना ही नहीं, इधर अखिलेश का

सामना पड़ते या उस से बातें करते हुए उस के दिल की धड़कन अनायास ही तीव्र हो जाती थी. पर अपनी स्थिति से विवश उस ने अपनेआप पर भरसक नियंत्रण रखा हुआ था. धीरे से अपना हाथ खींचती वह बोली, "यह ठीक नहीं है. आप बहुत बड़े आदमी हैं, मैं आप के योग्य किसी भी हालत में नहीं हूं."

"मुझे बड़ा आदमी मत समझो, सरोज. जो इनसान दोचार मिनट प्यार के क्षणों के लिए तरस रहा हो, वह भिखारी से कम नहीं है. तुम से सत्य कह रहा हूं, अंजलि के बाद तुम पहली नारी हो, जिसे मैं ने प्यार किया है, जिस के लिए मेरे मन में चाहत उभरी है. तुम्हारे अभाव में अब यह जिंदगी बिलकुल खोखली और वीरान हो जाएगी. पर यह भी याद रखना सरोज, तुम्हारी इच्छा के प्रतिकूल मेरा एक कदम भी आगे नहीं बढ़ेगा." दृढ़ शब्दों में अखिलेश ने कहा और धीरे से सरोज के हाथों को अपने होंठों से लगा कर चूम लिया. ऊपर से शांत पर भीतर से एक तूफान को झेलती सरोज ने भी अवश हो कर झुक कर अखिलेश के माथे को चूमा और कमरे से बाहर निकल गई.

बैठक में लगी दीवार घड़ी ने 11, 12 और फिर साढ़े बारह की भी एक घंटी टन से बजाई. बगल के कमरे में लेटी सरोज सुनती रही. उस की आंखों में नींद का नाम न था. उस ने 10 बजे ही अखिलेश को भोजन करा दिया था. आज बहुत जोर देने पर उसे भी मेज पर उन के साथ खाना खाने को बाध्य होना पड़ा. कल और आज के झूले में झूलती सरोज ने तुलनात्मक दृष्टि से अपने दिवंगत पति राकेश और अखिलेश को तौलना चाहा.

जब सरोज ब्याह कर ससुराल गई थी तो कुल 18 वर्ष आयु थी, उस की. राकेश ने कभी उसे प्यार नहीं किया. प्यार के नाम पर वह पति द्वारा शोषित व प्रताड़ित की जाती. उस के लिए पति के हृदय में कभी चाहत की तड़प नहीं उभरी. केवल शराब पी कर नशे में धुत उस के शरीर से उसे खेलने आता था. पर अखिलेश...? राकेश और अखिलेश में जमीन आसमान का अंतर था. अथाह धनदौलत होने पर भी अखिलेश में किसी तरह के नशा की आदत नहीं थी. वह निहायत शरीफ इनसान था. थोड़े दिनों के साथ में ही वह उसे पहचान गई थी. दूसरों का सम्मान करना उस के चरित्र की विशेषता थी. सच्चे हृदय से उसे चाहते हुए भी उस ने कभी किसी प्रकार की अशिष्टता का प्रदर्शन नहीं किया.

एक दिन अपने अपनत्वपूर्ण शब्दों में कहा था अखिलेश ने, "सोचता हूं, तुम्हें पा कर मेरे जीवन में फिर बहार आ जाएगी. पर यह भी याद रखना, तुम्हारी इच्छा के प्रतिकूल मेरा एक कदम भी आगे नहीं बढ़ेगा."

सरोज के मन की तुला पर बारबार अखिलेश का ही पलड़ा भारी पड़ता रहा. यद्यपि वह इस तरह के विचार अथवा उद्देश्य को ले कर अखिलेश के यहां नौकरी करने नहीं आई थी, पर अब परिस्थितियों ने उसे यह सब सोचने पर विवश कर दिया था. जहां अपने एकाकीपन से उबाथका अखिलेश उस से प्रभावित हो कर उसे अपनी जीवनसंगिनी बनाना चाहता था, वहीं उसे भी इस बात का आभास होता जा रहा था कि नारी को बिना किसी ठोस सहारे के कदमकदम पर खतरे से जूझना पड़ता है.

वह सोचने लगी, 'पर क्या उस के जीवन में राजन से संबंधित सत्य की जानकारी होने पर अखिलेश की प्रतिक्रिया उस के पक्ष में ही होगी, यह निश्चित तो नहीं है क्योंकि उस के आने के कुछ दिन बाद जब अखिलेश ने अपनी जीवन व्यथा सुनाई थी तो साफ शब्दों में बताया था, अंजलि की मृत्यु बच्चा होने के कारण हुई, उस की मौत का जिम्मेदार वह अपने को समझता रहा. इसलिए पुनर्विवाह और बच्चा दोनों ही इच्छाओं को उस ने दफन कर दिया. एकाकी जीवन की घुटन ने उस के पहले निर्णय को डांवाडोल कर दिया था पर दूसरा विचार उस के मन में न जाने किस स्थिति में था.'

वह दिन भी सरोज की स्मृतियों में उस से दूर नहीं रहा, जब करीब आती होली की ओर इशारा कर के अखिलेश ने उस से कहा था, "तुम्हारे यहां आने के बाद से यह दूसरी होली होगी, सरोज."

"हां."

"रंग तो खेलोगी?"

"नहीं, ठीक नहीं है. देखने वाले क्या कहेंगे?"

"सिंदूर से पूर्व गुलाल से ही तुम्हारी मांग सजा कर कहने वालों का मुंह बंद कर दूंगा. विश्वास रखो." अपनी तरफ से दृढ़ शब्दों में पूर्ण विश्वास दिलाया था, अखिलेश ने. पर वह अब भी शंकित था कि पता नहीं, सरो

यार होगी या नहीं?

दूसरी तरफ सरोज भी आशंका के घेरे में दथी कि पता नहीं, राजन के विषय में जान र अखिलेश क्या कदम उठाएंगे? पर यह निश्चित था कि शरीर में प्राण रहते वह बेटे का ाथ नहीं छोड़ सकती.

"क्या सोचने लगी."

"कुछ नहीं.." सरोज चौंक गई, जैसे कोई ोरी पकड़ ली गई हो. साहस बटोर कर धीरे से ोली, "मुझे आप से कुछ कहना है, पर आज हीं होली के दिन."

अखिलेश आश्चर्य से उस की तरफ देखते . वह समझ नहीं पाए कि ऐसी क्या बात है, आज नहीं होली के दिन ही कही जा सकती पर कुरेद कर कोई बात पूछना उन की आदत ीं, अतः होली के दिन की प्रतीक्षा करने लगे.

अतीत के विचारों में उलझी सरोज की ष्टि कभी शून्य सी छत पर टिक जाती तो कभी ार में झूलते कैलेंडर में उलझ जाती. इस तरह तमाम दिन बीत गए. घड़ी ने टनटन कर के चार बजाए, तब उस का बिखरापन टूटा. कचहरी गए अखिलेश के वापस आने का समय हो गया था. उठ कर सीधा वह रसोई की तरफ़ बढ़ गई.

होली की पूर्व संध्या को सरोज मां से यह कह कर कि मालिक ने राजन को देखने के लिए बुलाया है, उसे अपने साथ बंगले पर लेती आई. रात्रि में भोजन के समय अखिलेश ने पूछा, "कुछ मिठाई, गुझिया आदि बना ली है?"

"हां."

"कितने समय बाद अब तुम्हारे आ जाने से होली पर रौनक सी हो जाती है." बीते दिनों के खालीपन से ऊबे अखिलेश ने प्रसन्न मुद्रा में कहा. पर सरोज कुछ बोली नहीं. मन में टीस सी उभरी, पता नहीं कल क्या हो? शेष जीवन का कैसा निर्णय होगा, क्या पता?

होली के दिन की सुबह. सरोज ने अखिलेश को चाय दी. फिर चारों तरफ झाड़पोंछ

फरवरी (द्वितीय) 1990 अंक में प्रकाशित शब्द पहेली : 9 का उत्तर

1 अ	प	2 रा	ध	■	3 स	4 हो	द	5 र
गो	■	ह	■	6 श	■	ड	■	हा
7 च	र्म	■	8 ग	ह	ना	■	9 ग्रा	स
र	■	10 गु	■	र	■	11 प	■	हा
■	12 क	हा	नी	■	13 कू	टे	व	■
14 भ	■	र	■	15 वि	■	ल	■	16 त
17 र	क्त	■	18 दौ	ल	त	■	19 गो	रु
ता	■	20 गु	■	म्ब	■	21 त	■	णा
22 र	म	पी	क	■	23 अ	रु	णा	ई

कर [illegible] व प्रत्येक वस्तु को खूबसूरती से यथास्थान लगा दिया. तत्पश्चात कुछ ताजा नाश्ता बनाने के उद्देश्य से रसोईघर की तरफ बढ़ गई.

"क्या कुछ विशेष चीज बन रही है?" वहां पहुंच कर अखिलेश ने पूछा.

"हां."

"लेकिन तुम ने तो कहा था, होली का नाश्ता तैयार कर लिया है."

"सो तो ठीक है, पर इस समय तो ताजा नाश्ता कर लीजिए. फिर तो तमाम दिन गुझिया समोसे आदि खाने ही हैं." सहज सी बात कही सरोज ने. लेकिन अखिलेश प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका, "वाह, तुम्हारा भी जवाब नहीं है. कितनी उचित बात सोच लेती हो." अखिलेश के मुंह से अपनी प्रशंसा सरोज को बड़ी प्रिय लगी.

थोड़ी ही देर बाद नाश्ते की मेज पर चाय पीते हुए नेत्रों में उत्सुकता भर कर अखिलेश ने पूछा, "आज तुम कुछ कहना चाहती थी, सरोज."

"हां, पर गुस्ताखी माफ कीजिए, शायद मेरी बात से आप के मन को पीड़ा पहुंचे," कुछ झिझकते हुए सरोज बोली, "आप की पहली पत्नी अंजलि की तरह दूसरी के साथ भी तो हादसा हो सकता है."

"कम से कम उस कारण से तो नहीं क्योंकि...." थोड़ा रुक कर दबी जवान से अखिलेश ने बताया, "विवाह का विचार होते ही इश्तहार निकलवाने से पूर्व मैं ने आपरेशन करवा लिया था. ताकि पूर्व हादसे की पुनरावृत्ति न हो सके."

सरोज असमंजस में पड़ गई कि अपनी बात कहे या न कहे क्योंकि अखिलेश ने पहले भी कहा था कि बच्चा होने से पत्नी की मौत होने के कारण उन्हें बच्चे से नफरत हो गई है. इसी कारण अपना भी आपरेशन...

हठात राजन दौड़ता हुआ आया. सामने अखिलेश को देख कर "चाचाजी नमस्ते," कहता हुआ सरोज की बगल में बैठ गया.

"किस का बच्चा है? बड़ा प्यारा है."

"मेरा. इस की बात अब तक मैं ने आप नहीं बताई थी. इस के लिए क्षमा चाहती हूं. पढ़ानेलिखाने व पैरों पर खड़ा करने के लिए मुझे नौकरी करनी पड़ी. आप के इश्तहार के अनुसार, इस के बाबत बताने से संभवतः नौ नहीं मिलती, इसलिए मैं ने अपने बेटे का जि

नहीं वि
नहीं...
बोलती
सरोज
मैं ही
अपने
अपनी
ने अत्य
देखा.
दूसरी
उलझी
था.
की पूरी
खामोश
वह सो
लिए स
को सह
अखिले
पूछा भ
बंगले
थी. हां
समय

नहीं किया था. फिर कभी आप ने पूछा भी नहीं... पर यदि आप पूछते तो मैं झूठ नहीं बोलती."

राजन के सिर पर स्नेह से हाथ रख कर सरोज ने आगे कहा, "इस के लिए मांबाप दोनों मैं ही हूं. किसी स्वार्थ के पीछे इस निर्दोष को अपने से अलग कर देना मुझे स्वीकार नहीं." अपनी बात स्पष्ट शब्दों में कह चुकने पर सरोज ने अत्यंत विवश नेत्रों से अखिलेश की तरफ देखा.

एक तरफ उस का प्यार और सहारा था तो दूसरी तरफ बेटे की ममता. दोनों के बीच में उलझी सरोज ने निर्णय अखिलेश पर छोड़ दिया था.

सरोज की तरफ देखते हुए अखिलेश उस की पूरी बात ध्यान से सुनता रहा. और उस के खामोश होते ही उस ने राजन की तरफ देखा. वह सोचने लगा कि 'इस का जीवन संवारने के लिए सरोज ने नौकरी की. वास्तव में इस अबोध को सही पथप्रदर्शन की आवश्यकता है.'

सरोज द्वारा बच्चे की बात न बताना अखिलेश को गलत न लगा क्योंकि उस ने कभी पूछा भी नहीं था और न बच्चे के कारण उस के बंगले पर काम में किसी प्रकार की रुकावट आई थी. हां, बता देने से ही शायद वह उसे उस समय इश्तहार के अनुसार अपने यहां रखने में साफ असमर्थता व्यक्त कर सकता था.

अखिलेश सोचने लगा, 'इस बच्चे से जुड़ी सरोज है और सरोज से जुड़ा उस के शेष जीवन का अस्तित्व है, जिस को नकारना अब उस के वश की बात नहीं रह गई है. सरोज को जीवन साथी के रूप में स्वीकार कर उस के वीरान जीवन में फिर से बहर आ जाएगी. उस बहार का एकमात्र खिला, महकता पुष्प होगा राजन, जो उन का मन बहलाने के साथ ही उन की वृद्धावस्था का सहारा भी होगा.' सोच कर अखिलेश मुसकराए और राजन को अपने पास बुला कर प्यार से पूछने लगे, "बेटे, यह तो बताओ कि तुम को चाचा कहना किस ने सिखाया है? मैं तुम्हारा चाचा नहीं हूं."

"फिर क्या हैं?" भोलेपन से राजन ने प्रश्न किया.

"अपनी मां से पूछना, वही बताएंगी." अखिलेश ने सरोज की तरफ देख कर इशारा किया. सरोज ने अश्रुपूरित कृतज्ञ नेत्रों से अखिलेश की तरफ देखा और बेटे से बोली, "इन के चरण स्पर्श करो, बेटा." उसे लगा, सचमुच आज होली के दिन इंद्रधनुषी रंगों की फुहार ने उसे तर कर दिया है.

हर्षातिरेक में अखिलेश ने मेज पर रखा गुलाल हाथों में भर कर पहले राजन और फिर सरोज के गालों पर मल दिया. ●
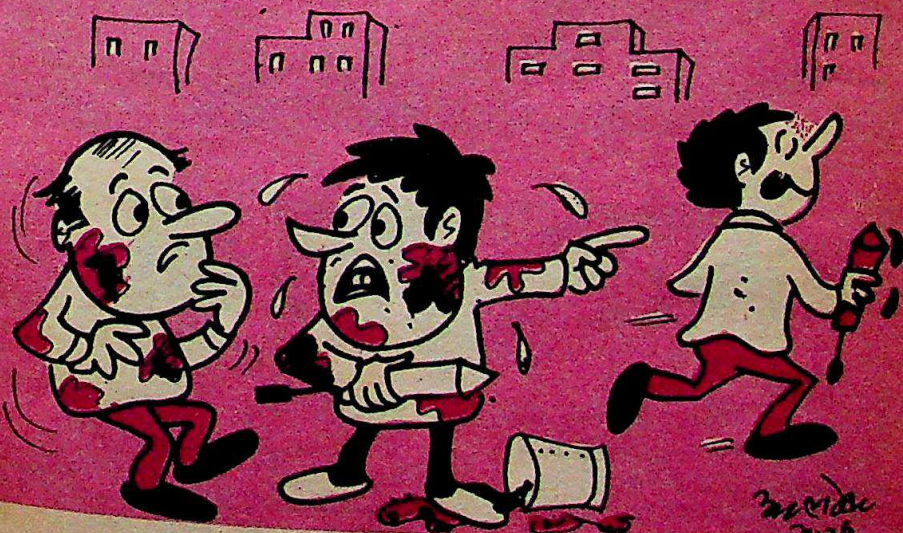
"कैसे रंग डालता? उस ने जो कमीज पहन रखी है, वह मेरी है."
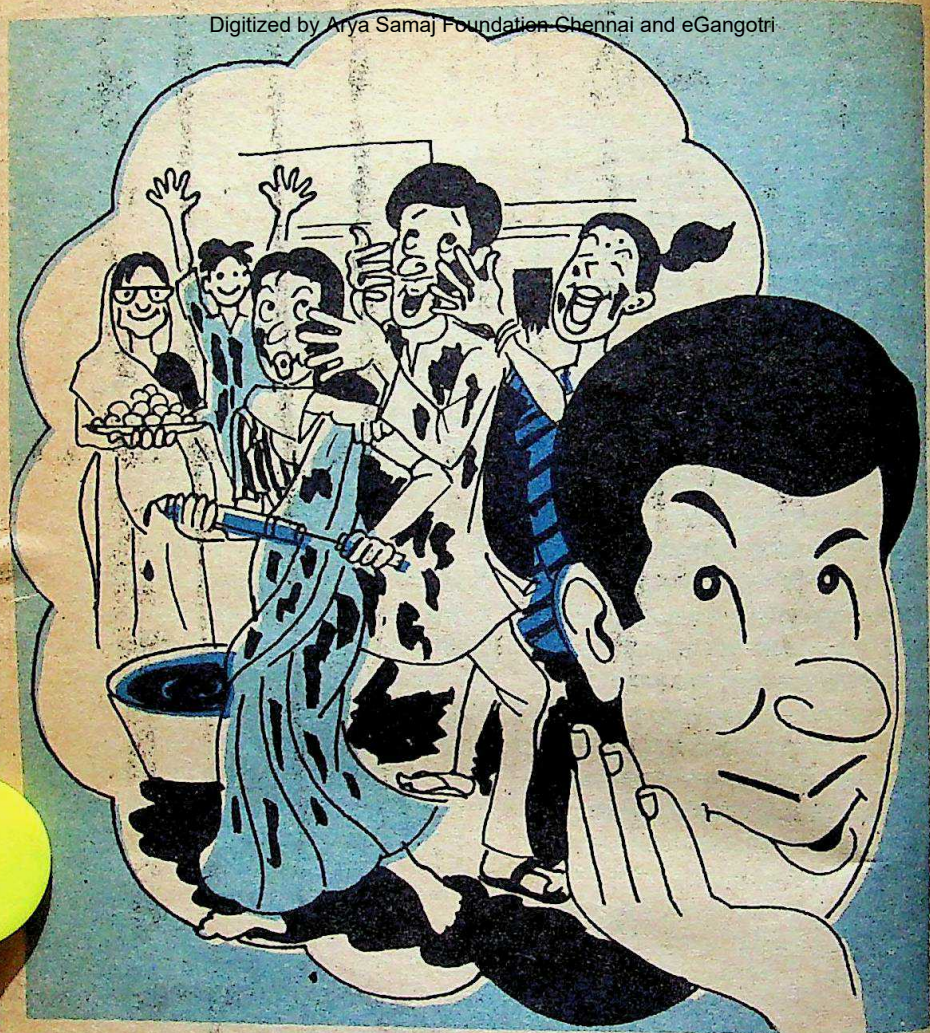
रंग ससुराल का

व्यंग्य • जीवन प्रकाश

कुछ बातें और कहावतें ऐसी होती हैं, जो किसी विशेष स्थान अथवा अंचल का प्रतिनिधित्व करती हैं. 'नक्शेबाजी दिखाना' और 'रंग मारना' भी ऐसी ही बातें हैं जो लखनऊ की हैं और उस की तहजीब से जुड़ी हुई हैं. अदा अपनीअपनी और रंग अपनाअपना. मजा तो तब आता है जब कोई सूखी रंगबाजी कर जाए और आप देखते रहें. कभीकभी तो लोग बिला वजह नक्शा मार जाते हैं और अगले की शराफत से सब झेलना

लखनऊ की [illegible] और तहजीब के कुछ गुर सीख कर जब हम अपनी नई नवेली ससुराल लखनऊ में होली मनाने पहुंचे तो वहां के रंग ढंग देख कर बागबाग हो उठे. सास ससुर और सालों के साथ फिर तो ऐसी जमी होली कि हम लखनवी ससुराल के रंग में रंग कर मस्त हो गए.

पड़ता है.

उन दिनों मेरी नईनई शादी हुई थी. जब नई नवेली लखनऊ की हो तो फिर सोच लीजिए कि क्या नक्शा होगा. क्या रंग होगा. नफासत थी कि पूछिए मत. उधर जम्मू घाटी में गरज के साथ दो छींटें क्या पड़ गए कि इधर पत्नी ने चार छींक मार कर मुंह ढांप लिया.

अभी हम उन की अदाएं समझ ही रहे थे कि वह मायके यानी लखनऊ कूच कर गईं. पहली विदा थी, सो तय हुआ कि अब पुनः रुखसत कराने मैं लखनऊ पहुंचूं और होली वहीं मनाऊं. वैसे भी पुरुषों के लिए शादी के बाद पहली होली ससुराल में ही मुफीद मानी गई है.

होली में लखनऊ और लखनऊ में ससुराल —बहरहाल काफी सोचविचार के बाद हम ने अपने अनुभवी मित्रों से नई ससुराल और पुराने लखनऊ के कुछ लटकेझटके सीखे और जा पहुंचे उस नूरमंजिल में जो हमारी ससुराल थी और जहां पर हमारी बेगम 'मन्नो' कयामफरमां रही थीं.

बाहर ही खासी चहलपहल थी और लोग स्वागत में खड़े थे. सास ने आगे बढ़ कर ऐसा मुसकामार अभिवादन किया, जैसे लंबी उम्र के बाद कोई भटका हुआ नवाबजादा अपनी रियासत में लौटा हो. आसपास के लोग अपनीअपनी छतों से चुप्पी सलामी दे रहे थे. बाकी उन की जवान रैना, नैना और मैना वगैरह छिटकी हुई रेवड़ी की तरह उसी इमामबाड़े के फाटक पर बिखरी हुई थीं, जिस में हमें प्रवेश करना था. हम ने मित्रों की

ससुरजी हारमोनियम झाड़ कर सरगम बजाने लगे. इस से ज्यादा उन्हें आता ही नहीं था.

हिदायतों को याद किया और फिर साले साहब के कंधे का सहारा लेते हुए किसी खानदानी नवाब की तरह इस अदा से रिकशे से उतरे कि सामने खड़ी ज्ञानो मौसी कराह उठीं, ''कितना महीन और नाजुक है, बेचारा... हमारी आशा का दामाद भी इसी तरह सींक जैसा है.''

तभी पास खड़ी सलहज ने उन की नस दबा दी. ''अभी नयानया है, मौसी. थोड़ा प्याज खा लेने दो फिर देखना कैसे कलगीदार पठे की तरह गरदन तानेगा.''

हम घंटे भर में ही उन की मेहमाननवाजी के कायल हो गए. हमारे आने से उन सब का अंगअंग खिल उठा था.

लोग चहकने लगे, 'आज क्या बना रही हो मां,' 'भई आज तो शीरमाल बनाइए.' 'नहींनहीं, आज तो बिरयानी होनी चाहिए.'

छोटे साले बिरजू गोभी के परांठों पर और बड़े साले साहब 'स्टू' के लिए मचले हुए थे. उधर हमारे ससुरजी थे कि मुर्गमुसल्लम पर वजन दिए हुए थे.

बेचारी सासूजी कचनार की तरह खिल रही थीं कि ''क्यों नहीं भाई, आज तो घर में रौनक आई है, जो जी में आए जा कर बाजार से ले आओ. मुझे पकाने में कितनी देर लगती है.''

ससुरजी चटपट तैयार हो गए, ''पोस्ता और जाफरानी भी तो लानी होगी. अच्छा, यह बताइए कि दही लाना है या नहीं... भई, आज तो दही काली मिर्च का बनाइए.''

मतलब यह कि ऐसी रंग की ली गई कि हमारी जीभ काबू से बाहर हो कर लार छोड़ने लगी. अफसोस भी हो रहा था कि अभी तक हम कहां थे और क्यों हम ने लड़कियां देखने में जवानी का इतना कीमती समय व्यर्थ कर दिया. काश मन्नो पहले दिख जाती. तभी ससुरजी ने घड़ी देखी थी, ''खैर अभी वक्त ही क्या हुआ है, पहले एक दौर चाय पकौड़ी का हो जाए.''

दौर कितना लंबा हो गया, हमें ठीक से याद नहीं, लेकिन इतना याद है कि उस के बाद काफी अंधेरा हो गया था. कुछ ठंड भी बढ़ गई थी. कुछ बातचीत का माहौल भी बन गया था. पेट भी भराभरा सा लग रहा था. मुख्तसर यह कि कार्यक्रम अगले दिन पर मुल्तवी हो गया और सब ने दालरोटी खा कर लपलपाती जीभ को शांत कर लिया.

इतने पर भी सब्र हो जाता तो क्या बात थी. लेकिन सासूजी का तुर्रा ऊपर से झेलना पड़ा कि ''हमारे यहां तो सब के सब काहिल हैं, बाजार तक जाना मुशकिल है. अब बताओ, लल्लाजी (दामाद) बेचारे कैसे खा पाएंगे. कुछ ढंग का तो पका नहीं है.''

'हमारे लिए तो दो रोटी खाना भी मुशकिल हो गया.' कोई कह रहा था कि 'दो चम्मच दाल ही और ले लीजिए.' तो कोई कह रहा था कि 'थोड़ा सलाद ही और ले लीजिए.' बड़े साले छोटे को हुक्म दे रहे थे कि 'जल्दी जाओ और घुन्नू की मलाई ले कर आओ तो मजा आए.'

मन्नो की छोटी बहन कम्मो फरमा रही थीं कि ''जब जा ही रहे हो तो रामआसरे की झलकी दिखाओ, उस की मिठाई खा लेंगे तो तर जाएंगे.''

हम वास्तव में पानीपानी हुए जा रहे थे इतनी इज्जत तो किसी ने हमारे बाप को भी कभी नहीं बख्शी थी. यहां तो सब के सब हमारे लिए बिछे हुए थे, बेचारे. हम ने बिरजू भाई का हाथ पकड़ लिया, ''भैया, अब कुछ न लाना. यहां तो सुनसुन कर ही पेट फूला जा रहा है.''

बिरजू कहां इतनी आसानी से मानने वाले थे, खूब रम पी ली और बहुत खुशामद करवा ली, तब जा कर कहीं पसीजे कि ''अच्छा, कल को जरूर खानी पड़ेगी.''

लखनऊ में रात को होली जलती है और सुबह को रंग खेला जाता है. सलहजजी घूमघूम कर इंतजाम में लगी थीं कि ''सुबह की तैयारी तो पूरी हो गई न, लल्लाजी को रंग खेलने के लिए नया कुरतापाजामा भी निकाल दो जो हलवसिया से मंगाया था.''

कम्मो जी सुनहरा और सफेदा तहा कर रख रही थीं और बिरजू भैया तेल में घेंप कर कोई 'लोकल-लसेढ़' तैयार कर रहे थे. बड़े साले साहब मन्नो से कह रहे थे, ''असली टूलिया रंग लाया हूं, जरा सा हथेली में घोल कर देख तो मजा आ जाएगा.''

सलहज ने एक कोने में केरोसिन का पी भी रख दिया था कि पहले से चपेड़ लिया जा तो बाद में रंग बहुत आसानी से छूट जाता है. ससुरजी देर रात तक टेसू भिगो कर केवड़े और गुलाब की शीशियां तलाशते रहे.

उस रंगारंग माहौल की पूर्व तैयारियों को देखदेख कर हम पर झुरझुरी सी चढ़ रही थी कि कल को झमाझम रंग खिलेगा, यादगार होली होगी.

सुबह जल्दी उठते ही हम ने पूरे बदन पर ससुरालिया केरोसिन चपेड़ ली. (गोया खुद ही अपनी शहादत को तैयार हो गए) अब हम महकेमहके घूम रहे थे, लेकिन सब लोग ऐसी घोर निद्रा में डूबे हुए थे, जैसे आज के बाद तो फिर कोई रात आनी ही नहीं है.

बहुत देर में सवेरा हुआ, सभी लोग रात की ठंड से अलसाए हुए थे, अतः चाय के कईकई दौर चले. हम पालतू कुत्ते की तरह पूरे घर में घूमघूम कर सूंघ रहे थे कि हवा का रुख क्या बोलता है. होली आज ही है या कल को होगी. आंगन में एक बालटी घुला हुआ रंग रखा था (जो रात को घोला गया था). मेज पर छोटी सी प्लेट में कुछ गुलाल और इसी तरह दूसरी डिबिया में लौंग, इलायची, गरी, मसाला आदि रखा हुआ था.

सूरज जब सीधा हो कर खोपड़ी पर तन गया तो "अरे, लल्ला जी कहां हैं? आज तो सुबह से बोलती भी बंद हो गई" कह कर ठहाका लगाती सलहज लहराती हुई प्रकट हो गईं, "जरा देखिए, तो यह रंग कैसा है" कह कर चाशनी जैसी गाढ़ी मुसकान बिखेरते हुए उन्होंने दो चुल्लू रंग (उसी बालटी से निकाल कर) उछाल दिया, "होली मुबारक हो."

"आप को भी हो" और "आप को भी हो" जैसी औपचारिकता को निभाने के लिए बड़े साले और ससुरे सब एकसाथ आ गए और फिर बातों का सिलसिला यों घूम गया कि 'इस रंग में कोई दम ही नहीं है, फीकाफीका सा है. कहा था कि अमीनाबाद से लाना, यहां तो सब नकली बेचते हैं.'

मतलब यह कि दो चार चुल्लू इधरउधर उछाल कर और थोड़ा सा अबीरगुलाल चिपका कर सब लोग सूखी रंगबाजी पर उतर आए कि 'पिछले साल मजा आ गया था.' 'मौसम भी अच्छा और सुहाना था.' 'राम और सुभाष के आ जाने पर तो खूब रंग जमा था,' 'आंगन तो ऐसा रंगीन हो गया था कि हफ्तों धुलाई में रंग छूटता रहा' आदि. तभी ससुरजी ने हांक लगाई, "बिरजू, जरा हारमोनियम तो निकालो."

बिरजू भाई अपना 'लसेढ़ा' भूल कर ढोलक थापने लगे. ससुरजी हारमोनियम झाड़ कर सरगम बजाने लगे. (इस से ज्यादा उन्हें आता ही नहीं था). सासूजी दहीबड़े में उलझ गईं और मौका पा कर साले साहब दाएंबाएं खिसक गए. इस बीच कई मिलने वाले आए और गुलाल का सूखा टीका लगा कर चलते बने. विदा होती धूप हमारा मुंह चिढ़ा रही थी. हम कभी खुद को तो कभी उस रंग भरी बालटी को देख रहे थे जो अभी भी आधी से ज्यादा भरी हुई थी.

तभी आखिरी लौ की तरह भड़कती हुई सलहज जी कम्मोजी के साथ चमक उठीं, 'कैसे छिपेछिपे बैठे हैं. जरा मैदान में आइए तो देखें' और फिर छमछम करती सुनहरी चमकी के बाद मन जम ही रहा कि सासूजी ने गर्जना कर दी, "बस भी करो बेचारे सुबह से भीग रहे हैं... मौसम भी खराब है. फिर समय भी तो देखो कि डेढ़ बज रहा है...? लीजिए लल्लाजी, उबटन लगाइए तो रंग उतर जाएगा."

हमें काटो तो खून नहीं, अभी रंग चढ़ा ही कहां था. हमारी खोपड़ी भनभना उठी, 'अच्छी नक्शेबाजी है, भई' हम बेसाख्ता बोल बैठे, 'ऐसी सूखी से क्या फायदा. अब जरा हमारी नक्शेबाजी रंगबाजी भी तो देख लीजिए.' और हम ने बिना चूक किए बालटी उठा कर सासूजी पर पलट दी और बिरजू का लसेढ़ा घेंपघेंप कर ऐसा रंग जमाया कि आज भी सब याद करते हैं कि 'होली तो उसी साल हुई थी, बस.' ●

होली का हादसा

·कहानी

अश्विनीकुमार भटनाग

'शहर' ग्वालियर के महल्ला चंद्रनगर में कोने वाला मकान कई महीने से खाली पड़ा था. मकान खेड़ापति मार्ग पर था, जहां अभी अधिक आबादी नहीं थी. धीरेधीरे मकान बन रहे थे. चंद्रनगर से लगा हुआ एक पुराना महल्ला रवि नगर था. यहां बहुत घनी आबादी थी. चंद्रनगर थोड़ा खुला और [illegible] था,

उस महल्ले में आए [illegible] के लिए अवकत ने चाल चलनी तो शुरू कर दी थी, किंतु तभी उस डाक्टर की लड़की सुषमा पर निगाह पड़ते ही उन की शरारतों का कीड़ा कुछ और ही तरह से कुलबुलाने लगा. पर होली के दिन उन का साबका एक ऐसे हादसे से पड़ गया कि उन्हें उस महल्ले को ही छोड़ देना पड़ा.

इस कारण रवि नगर के लोग अकसर घूमने इधर आ जाते थे.

रवि नगर में चार घनिष्ठ मित्र रहते थे. इन का नाम अरुण, वरुण, करुण व तरुण था. लगभग एक उम्र के नवयुवक, जिन्होंने अभी 20वां साल भी नहीं देखा था. चारों ही नटखट और शरारती थे. समय पड़ने पर बल प्रयोग से भी पीछे नहीं हटते थे. इन की प्रकृति विचित्र थी. कभी बिना कारण झगड़ा मोल ले लेते थे तो

कभी असहायों की सहायता भी कर देते थे. कुछ लोग इन से कतराते थे तो कुछ इन की मित्रता से लाभ उठाना चाहते थे.

'अ व क त' यानी अपनेअपने नाम के पहले अक्षर से ये चारों पहचाने और पुकारे जाते थे और यही इन के हस्ताक्षर थे. हंसते रहना और मुसकरा कर एक आंख मींचना इन का 'व्यापार चिह्न' था.

चंद्रनगर के कोने वाले इस मकान में पहले एक डाक्टर रहते थे. मकान भी उन्हीं का ही था. उन की डाक्टरी अच्छी चलती थी. अच्छा कमा लेते थे, परंतु पत्नी से परेशान थे. क्योंकि वह बहुत झगड़ालू और अशिष्ट थी. डाक्टर वैसे तो स्वभाव के अच्छे थे, परंतु पत्नी की बदमिजाजी के कारण हमेशा खीजेखीजे और चिड़चिड़े से रहते थे.

एक दिन गर्मियों में भरी दोपहरी में एक वृद्ध रिकशा से चक्कर खा कर नीचे गिर पड़ा. रिकशा चालक घबरा कर भागने की सोच रहा था कि 'अ व क त' आ पहुंचे. उन्होंने उसे डांट लगाई और वृद्ध को रिकशा में लाद कर डाक्टर के यहां चलने को कहा. चंद्रनगर का कोने वाला मकान ही पास था. जब उन्होंने घंटी बजाई तो डाक्टर और उस की पत्नी आपस में पंचम स्वर में झगड़ रहे थे. बड़ी कठिनाई से उन्होंने दरवाजा खोला.

डाक्टर की पत्नी ने चीख कर कहा, "क्या है? क्यों शोर मचा रखा है? यह कोई समय है, भले आदमियों को तंग करने का?"

अरुण ने कहा, "एक मरीज को दिखाना है. बुरी हालत में है."

"बुरी हालत में है तो कहीं और ले जाओ." डाक्टर की पत्नी ने चीख कर कहा और दरवाजा बंद कर लिया.

"सुसरे, मरने चले आते हैं." अंदर से स्वर गूंजा.

अवकत भौचक्के से खड़े रह गए. बहुत खटखटाया पर फिर दरवाजा नहीं खुला. मजबूर हो कर वे वृद्ध को दूसरे डाक्टर के पास ले गए.

अवकत ने फिर डाक्टर से शत्रुता ठान ली. डाक्टर और उस की पत्नी को इतना तंग किया कि उन्होंने महल्ला छोड़ देने का निश्चय किया. चूंकि पड़ोसी भी इन से दुखी थे. इसलिए उन्होंने कभी डाक्टर का साथ नहीं दिया. डाक्टर ने दूसरा मकान ले लिया और अपना मकान किराए पर उठाने का निश्चय किया.

जो भी मकान देखने आता था, अवकत के कारण तुरंत भाग जाता था. यही कारण था कि चंद्रनगर का यह मकान अभी तक खाली था.

दक्षिण भारत का 15 दिन तक भ्रमण करने के बाद अवकत काफी हलका महसूस करते हुए मटरगश्ती के लिए चंद्रनगर आए तो आश्चर्य से कोने वाले मकान को देखने लगे. बाहर की नामपट्टिका पर डाक्टर नगेंद्र डी.फिल. का नाम था. देख कर उन्हें बड़ा अफसोस हुआ. अगर वे दक्षिण भारत की यात्रा पर न जाते तो यह मकान अभी भी खाली होता. खैर, इन को भगाने में कुछ समय नहीं लगेगा, ऐसा उन का विश्वास था.

वे सोचने लगे कि पहले तो पता लगाना होगा कि घर में कौनकौन हैं. डाक्टर नगेंद्र और उन की पत्नी तो होंगे ही. लड़का होगा तो कभी न कभी उस की पिटाई करने का अवसर अवश्य हाथ लगेगा. लड़की हुई तो इश्क करेंगे. कुछ ही दिनों में मकान छोड़ कर भाग खड़े होंगे. कालिज से आतेजाते ज़ब उन्हें समय मिलता, कोने वाले मकान के आगे सड़क पर चक्कर लगाते.

एक दिन एक लड़का बाहर आता हुआ दिखाई दिया. उस की आयु लगभग 11-12 वर्ष रही होगी. सुंदर और मासूम सा था. एकाएक उसे धर दबोचने का उन का साहस न हुआ. हमउम्र होता तो मजा आता. उस के पीछेपीछे वे काफी दूर तक चले गए.

"क्यों बच्चे, कहां जा रहे हो?" नजदीक पहुंच कर अरुण ने पूछा.

"दीदी के लिए दवा लाने जा रहा हूं." बच्चे ने भोलेपन से उत्तर दिया.

"ओह, तुम्हारी दीदी बीमार है?" वरुण ने पूछा.

"हां."

"बड़े दुख की बात है," करुण ने पूछा, "क्या नाम है, तुम्हारा बेटे?"

"सुमंत."

"बड़ा प्यारा नाम है," तरुण ने खिलवाड़ करते हुए पूछा, "बेटे, तुम्हारी दीदी भी सुंदर है, न?"

"जी?" सुमंत ने परेशानी से कहा. उस ने मन में सोचा, 'इन से जल्दी ही पीछा छुड़ाना होगा.' वह जल्दीजल्दी चलने लगा.

वह चल क्या, भाग रहा था और अवकत ठठा कर हंस रहे थे.

सामने खड़े चारों युवकों को चकित देख कर सुषमा हंस पड़ी. अवकत के हाथ हवा में उठे रह गए.

"यार, इसे पीटने में तो मजा नहीं आएगा." अरुण ने कहा.

"बच्चा है." वरुण ने कहा.

करुण बोला. "लड़की फंसानी पड़ेगी."

"जब भाई ऐसा सुंदर है तो बहन क्या कुछ कम होगी." तरुण ने कहा.

चारों ने पांचछः दिन चक्कर लगाए कि किसी दिन तो लड़की घर से निकलेगी. कभी तो दर्शन होंगे. सातवें दिन उन की अभिलाषा पूरी हुई. ऊपर की मंजिल पर एक कमरा था. उस कमरे की खिड़की सड़क की ओर खुलती थी. खिड़की के पास एक अति सुंदर लड़की बैठी हुई दिखाई दे रही थी. सामने शायद मेज थी. कुछ पढ़लिख रही थी. बाल आधे कटे थे.

"लाजवाब है." अरुण बोला.

"बहुत खूबसूरत है." तरुण ने कहा.

"पटाने में मजा आएगा." वरुण मुसकराया.

"घास डालेगी तब न." करुण ने निराश स्वर में कहा.

अचानक चारों जोर से हंस पड़े. फिर लड़की से संबंधित वार्त्तालाप आरंभ हो गया.

"इतने दिनों तक कहां छिपी रही."

"बीमार थी न बेचारी."

"अब ठीक है."

"नहीं कमजोर लगती है."

अपनी बात पर वे स्वयं ही हंस पड़े.

"16 साल की है."

"नहीं, 18 की है."

"क्यों, 20 की भी हो सकती है."

"मुझे तो 14 से ऊपर की नहीं लगती."

फिर से हंसी का फुहारा छूटा.

सुमंत को घेरने से यह और पता लगा कि उस की मां का देहांत हो चुका है. पिता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्राध्यापक हैं. बहन 12वीं कक्षा में पढ़ती है. इतनी सूचना प्राप्त करने के बाद वे योजना बनाने लगे कि कैसे लड़की का ध्यान आकर्षित किया जाए. कभी बाहर तो निकलती नहीं, परंतु नियम से खिड़की के पास अवश्य बैठी रहती है.

अब जब वे खिड़की के नीचे से निकलते, ठठा कर हंसते कि कभी तो देखेगी. एक दिन उन की यह अभिलाषा भी पूरी हुई. लड़की ने कौतूहल से चारों युवकों को देखा जो हाथ में हाथ डाले ठुमकठुमक कर चल रहे थे. उन की चाल को देख कर लड़की के होंठों पर मुसकराहट दौड़ गई तो मानो युवकों के ऊपर बिजली सी गिर पड़ी.

मुसकरा कर अवकत ने कहा, "हाय."

"हाय" लड़की ने मधुर हंसी बिखेरते हुए कहा.

ग्वालियर जैसे परंपरावादी शहर में अवकत को किसी भी लड़की से ऐसी आशा न थी. वे भौंचक्के से खड़े रह गए. लड़की अभी भी हंस रही थी.

"आप का नाम क्या है?" अरुण ने पूछा.

"सुषमा." लड़की ने खिड़की के बाहर झांकते हुए उत्तर दिया.

"बहुत प्यारा नाम है." वरुण ने कहा.

"बाहर नहीं आओगी?" करुण ने पूछा.

"नहीं." सुषमा ने सिर हिलाया.

"घूमने चलेंगे." तरुण बोला.

सुषमा ने सिर हिला कर मना कर दिया और फिर मुसकरा दी.

"पढ़ाई हो रही है?"

सुषमा ने सिर हिला कर 'हां' की.

"फिर आएंगे, अभी चलते हैं."

सुषमा ने सिर हिलाया.

"बाइबाइ." चारों ने हाथ हिलाया.

सुषमा ने भी हाथ हिलाया और उन्हें जाते हुए देखती रही.

"एकदम पटाखा है." अरुण ने कहा.

"ऐटम बम है." वरुण बोला.

"नहीं, पोखरन का पटाखा है." करुण ने कहा.

"लगता है, पट जाएगी." तरुण ने राय प्रकट की, "इतनी आधुनिक लड़की यहां कहां मिलेगी?"

"बेचारी अकेली बैठी ऊबती रहती होगी उसे भी तो युवा संगत चाहिए." अरुण ने कहा

"उसे मोती बाग की सैर कराने ले चलेंगे"

"नहीं, पहले सिंधिया के किले घुमाने ले जाएंगे."

एक बार फिर जोरदार ठहाका गूंजा.

उस दिन के बाद से उन का प्रतिदिन का 'हाय' और 'बाइबाइ' का सिलसिला चल पड़ा. लड़की भी उन की प्रतीक्षा करती थी और अवकत तो उस के दर्शन के दीवाने थे ही.

"अब तो प्रेम पत्र लिखने का समय आ गया," अरुण ने कहा, "मेरी प्यारी सुषमा..."

वरुण ने आगे कहा, "हम तुम से प्यार करते हैं."

"अब तुम्हारे बिना एक क्षण नहीं जी सकते." करुण ने आगे की पंक्ति जोड़ी.

"पत्र का उत्तर नहीं मिला तो आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाएंगे." तरुण ने गंभीर मुद्रा में सोचते हुए कहा.

"नहीं. यह पत्राचार ठीक नहीं," अरुण ने कहा, "पकड़े जाएंगे."

"मौखिक मामला ही ठीक है,"

"इस में कुछ लेनादेना नहीं है."

"इस में पैसा नहीं लगेगा. हींग लगे न फिटकरी और रंग चोखा."

एक दिन 'हाय' की औपचारिकता के बाद अरुण ने पूछा, "हम से शादी करोगी?"

सुषमा ने सिर हिलाया और हंस कर मना कर दिया.

अवकत ने निराशापूर्ण मुद्रा का नाटक किया.

सुषमा ने हंसते हुए कलाई दिखाते हुए संकेत से पूछा, 'राखी बंधवाओगे?'

"राखी?" अवकत ने आश्चर्य से पूछा.

"हां."

"न बाबा." चारों ने कान पकड़ते हुए उत्तर दिया और वे हंसते हुए चले गए.

"बड़ी चालाक है."

"ऐसे नहीं फंसेगी."

"वैसे आधुनिक लड़की है."

"लगता है, भगा कर ले जाना पड़ेगा."

अब तो यह भी रोज का दस्तूर हो गया. वे पूछते 'शादी करोगी?' उत्तर में कलाई दिखा कर लड़की पूछती, 'राखी बंधवाओगे?'

इस आदानप्रदान पर वे भी हंसते और सुषमा भी अपनी हंसी बिखेर देती.

एक दिन रानी लक्ष्मीबाई की छतरी में बैठे वे आपस में परामर्श कर रहे थे.

''लगता है, हम अपने संकल्प में हार जाएंगे.'' अरुण ने कहा.

''घास नहीं डालती.'' वरुण ने कहा.

''अब कुछ पास आना पड़ेगा.'' करुण बोला.

''बस यार, उसे कस कर पकड़ना होगा.'' तरुण ने अपनी बात कही.

अरुण ने चुटकी बजा कर कहा, ''आ गई . पकड़ में.''

''कैसे?'' वरुण ने पूछा.

''होली आ रही है न.''

''मजा आ गया.'' करुण चहका.

''होली में कहां बच कर जाएगी.'' तरुण ने मुसकरा कर कहा.

अगले दिन अरुण ने पूछा, ''होली खेलोगी न?''

''नहीं.'' सुषमा ने सिर हिला कर मना कर दिया.

''पर हम तो खेलेंगे.'' वरुण ने कहा.

''नहीं.'' सुषमा ने हंस कर कहा, ''मैं होली नहीं खेलती.''

''इस बार खेलनी पड़ेगी.'' करुण बोला.

''नहीं, मुझे अच्छा नहीं लगता.''

''इस बार नहीं बचोगी. हम होली अवश्य खेलने आएंगे.'' तरुण ने कहा.

सुषमा इस बार मुसकराई नहीं. उस के चेहरे पर उदासी झलक आई.

कहते हैं, होली में सौ खून भी माफ हो जाते हैं. इसी की आड़ में अवकत ने चंद्रनगर के कोने वाले मकान में घुसने का साहस किया. खिड़की के पास सुषमा बैठी थी. उन के रंगे पुते चेहरे देख कर वह हंस रही थी. हाथ हिला कर बोली, ''हाय.''

''हम ऊपर आ रहे हैं.'' अरुण ने कहा.

सुषमा ने सिर हिला कर मना किया. अवकत आज कहां सुनने वाले थे? धड़धड़ करते हुए मकान में घुस गए और ऊपर जाने वाली सीढ़ी पर चढ़ने लगे. डाक्टर नगेंद्र ने रोकने का प्रयत्न किया, पर वे कहां रुकने वाले थे? आज तो वे सुषमा को रंग से पोतने का निश्चय कर के ही निकले थे. ऊपर पहुंच कर उन्होंने सुषमा के कमरे में प्रवेश किया.

अब जब वे खिड़की के नीचे से निकलते, ठठा कर हंसते कि कभी तो देखेगी. एक दिन उन की यह अभिलाषा भी पूरी हुई लड़की ने कौतूहल से चारों युवकों को देखा जो हाथ में हाथ डाले ठुमकठुमक कर चल रहे थे. उन की चाल को देख कर लड़की के होंठों पर मुसकराहट दौड़ उठी.

सुषमा कुरसी पर बैठी थी. घुटनों से नीचे तक एक शाल था. कुरसी में पहिए लगे थे. सुषमा विकलांग थी. वह चलफिर नहीं सकती थी. उस की खुशमिजाजी ही उस के जीने का सहारा थी. अपनी विकलांगता पर उदास या मायूस होना उस ने नहीं सीखा था. सामने खड़े चारों युवकों को चकित देख कर वह हंस पड़ी. अवकत के हाथ हवा में उठे रह गए. मुट्ठियों में गुलाल था, पर मुट्ठियां बंद की बंद रह गईं.

''क्या हुआ?'' सुषमा ने हंसते हुए पूछा.

''कुछ नहीं.'' अरुण ने कहा.

''हम शायद गलत रास्ते आ गए हैं.'' वरुण ने दुखी मन से कहा.

''लौट जाना ही ठीक होगा.'' करुण बोला.

''क्षमा करना, हम रास्ता भूल गए थे.'' तरुण का स्वर उदासी में डूबा था.

वे चारों एकसाथ मुड़े.

''रंग नहीं डालोगे?'' सुषमा ने पूछा.

''नहीं, तुम होली जो नहीं खेलतीं.'' अरुण ने मायूसी से उत्तर दिया.

''हम जबरदस्ती किसी के साथ होली नहीं खेलते.'' वरुण ने कहा.

सुषमा ने मधुर हंसी बिखेरते हुए पूछा, ''मुझ से शादी नहीं करोगे?''

''नहीं.'' चारों ने एक स्वर में उत्तर दिया.

''क्या राखी भी नहीं बंधवाओगे?'' सुषमा मुसकराई.

वे सोचने लगे, 'शायद मजाक कर रही है. कितना दर्द समेटे बैठी है, यह लड़की.'

जिस गति से वे ऊपर आए थे, उसी गति से बाहर निकल गए. उस के बाद किसी ने भी इन नवयुवकों को चंद्रनगर में नहीं देखा. ●

विश्वविद्यालयों में क्या हो रहा है?

लेख ● चंद्रकांता शर्मा

भारतीय विश्वविद्यालयों के परिसर दूषित हो रहे हैं और वे घटिया राजनीति के केंद्र तथा शौकिया छात्रों एवं शिक्षकों के ऐशगाह बन रहे हैं. जिन विश्वविद्यालयों की स्थापना के समय शिक्षा अर्जन एवं ज्ञानविज्ञान के प्रसार का जो लक्ष्य सामने रखा गया था, वह गौण हो गया है तथा वहां आर्थिक आपाधापी, राजनीतिक गुटबाजी व आपराधिक तत्त्वों ने अपने पांव जमा लिए हैं. हमारे विश्वविद्यालय भाईभतीजावाद, मनमानी, पक्षपात, आर्थिक अनियमितताओं के पर्याय बन गए हैं. वहां शिक्षक अपनी भूमिका भूल गए हैं तो छात्र इन्हें सैरगाह समझ कर ज्ञानार्जन से कट गए हैं.

इस सारे विवाद की तह में उतरें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इन सब के पीछे विश्वविद्यालयों

परीक्षा जगत में बढ़ते राजनीतिक प्रभाव, भ्रष्टाचार और आपाधापी की वजह से जहां निरंतर विश्वविद्यालय के शिक्षकों की सुखसुविधाओं और वेतन में बढ़ोतरी हो रही है, वहीं शिक्षा के स्तर में व्यापक रूप से गिरावट आती जा रही है. विश्वविद्यालय के परिसर में पनपते अराजकता और अनैतिकता के वातावरण के लिए पूर्णतः कौन जिम्मेदार है?
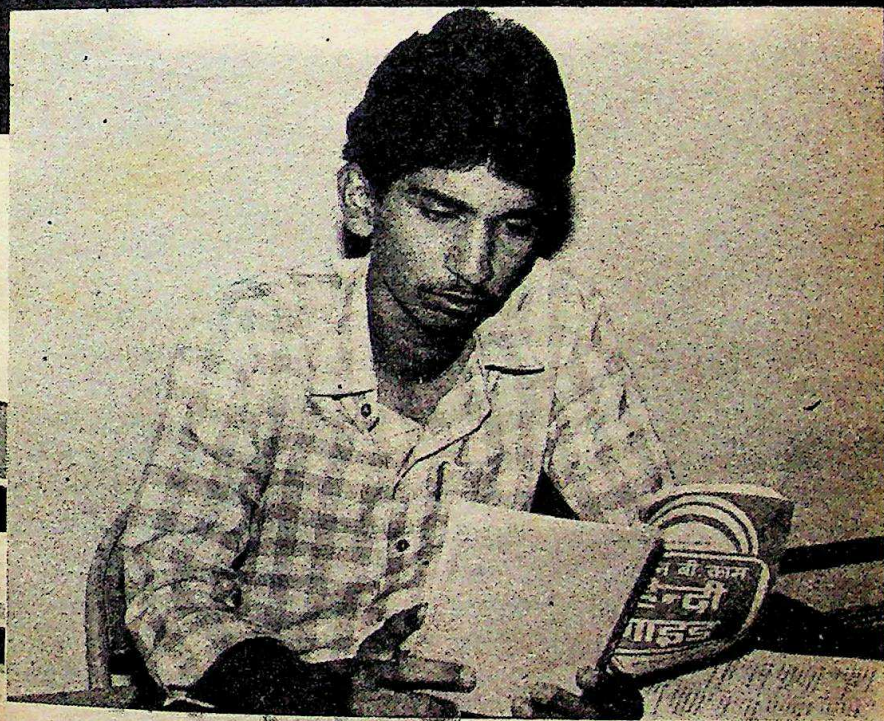
छात्रों की पढ़ाई का मसला : विश्वविद्यालय शिक्षक कितनी दिलचस्पी लेते हैं?

को मिली स्वायत्तता, नैतिक मूल्यों का ह्रास तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व राज्य सरकारों एवं अन्य एजेंसियों द्वारा दिए जाने वाले अनुदानों की जांचपड़ताल का अभाव ही मुख्य कारण हैं. विश्वविद्यालय के शिक्षकों की हालत यह है कि उच्च शिक्षा केंद्रों में कार्यरत होने से वे समाज में विशिष्टता हासिल किए हुए हैं. उन्हें लोग बुद्धिजीवी तथा हितैषी समझ कर सम्मान देते हैं. परंतु वास्तविकता यह है कि उन्होंने इस

विशिष्टता का लाभ तो उठाया है पर इस के बदले में समाज को कुछ देने की बजाय अपनी आर्थिक संपन्नता को बढ़ाने की ही तजवीज की है. इस के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय का शिक्षक भौतिक सुखसुविधाओं की अंधी दौड़ लगाने में अग्रणी हो गया है.

आर्थिक आधार मजबूत करने की ओर जितना ध्यान विश्वविद्यालय प्राध्यापकों का गया है, उतना शायद ही किसी और का गया हो. विभिन्न परियोजनाओं के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अन्य शैक्षणिक एजेंसियों द्वारा अनुदान के रूप में करोड़ों रुपया विश्वविद्यालय शिक्षकों को दिया जाता है, परंतु परिणाम वही ढाक के तीन पात. एक भी शोध परियोजना अथवा शोध प्रबंध राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय नहीं बना है, जिस का लाभ राष्ट्र व समाज को मिलने वाला हो.

शिक्षकों का दायित्व बोध

पीएच.डी. एवं शोध परियोजनाओं के अंतर्गत किया जाने वाला कार्य मात्र औपचारिक खाना पूर्ति बन गया है, जिस के बाद लोग नौकरी हथियाने की जुगाड़ अथवा उस की आड़ में होने वाले आर्थिक लाभों को ध्यान में रखते हैं. इन पैसों का खोटा हिसाब दिया जाता है तथा जाली बिलों की भरपाई कर के परियोजना निदेशक गटकते रहते हैं. इन परियोजनाओं की राशि से खरीदी जाने वाली स्टेशनरी, टाइप मशीन, अलमारियां तथा अन्य कीमती चीजें परियोजना अधिकारियों के घर काम आती हैं. कालांतर में उन की निजी संपत्ति बन जाती हैं.

विश्वविद्यालय शिक्षकों को मिलने वाली सुविधाओं पर दृष्टिपात किया जाए तो दांतों तले उंगली दबानी होगी. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेतनमानों के अंतर्गत ये शिक्षक 4,000 रुपए से ले कर 8,000 रुपए तक मासिक वेतन पा रहे हैं. कार्यालयों में इन कीं उपस्थिति की अनिवार्यता नहीं है.इच्छा हो तो कक्षा लें. न भी लें तो कोई पूछने वाला नहीं. दादा टाइप छात्रों को साथ कर रखते हैं.

और उन के बल पर सामान्य छात्रों पर शा
करते हैं. ये शिक्षक सारे परीक्षा
पारिश्रमिक के आधार पर ही करते हैं. प
परिणाम तैयार करवाने से ले कर प
भवन में निरीक्षण तक के कार्य के लिए
पैसा पाते हैं, जबकि विश्वविद्यालय अनु
आयोग के नियमों में पूरा परीक्षा
निःशुल्क किए जाने का प्रावधान है.

इस के अलावा विषय के विशेषज्ञ
कर नियुक्तियों के साक्षात्कारों के लिए जा
यात्रा एवं दैनिक भत्ते कमाना, परीक्षा
उत्तर पुस्तिकाएं जांचना, व्यावहा
परीक्षाएं लेना भी उन के काम हैं. इस के
वे क्याक्या नहीं करते. दफ्तर के कर्मचा
के साथ मिल कर वे आर्थिक लाभ कमाने
फिराक में रहते हैं.

इस के अलावा विश्वविद्यालयों में
सुरक्षा अधिकारी, आवास अधिकारी
अन्य पचासों प्रशासनिक पद हैं जिन
नियुक्ति के लिए ये उठकपटक करते रह
इन पर कार्य करने के लिए उन्हें अलग से
मिलता है. अनेक शिक्षक तो ऐसे भी हैं ज
स्थिति में ऐसे पद प्राप्त कर के अध्याप
आदत से बचे रहते हैं. शिक्षक कक्षाएं
कर इन प्रशासनिक पदों के कार्य में अ
कुलपतियों की जीहुजूरी में लगे रहते हैं
से विश्वविद्यालयों में अध्ययनअध्याप
माहौल बिगड़ता जा रहा है.

फिर राजनीति करने की स्वतंत्र
भी शिक्षकगण नाजायज फायदा उठा
राजनीतिक खेमेबाजी तथा राजनी
पार्टियों के लिए कार्य करना भी परिस
आम होता जा रहा है.

एक विश्वविद्यालय द्वारा
विश्वविद्यालय के शिक्षकों को व्याख
भाषण अथवा विशेषज्ञ के रूप में बुला
प्रचलन जोरों पर है, जिस से आदानप्रदा
परंपरा को बढ़ावा मिला है तथा इस के
पर लाखोंकरोड़ों रुपयों का चूना लगा
रहा है. एक भी संगोष्ठी अथवा सम्मेल
निष्कर्ष राष्ट्र अथवा समाज को लाभ
सके हों, ऐसा देखने में नहीं आया.
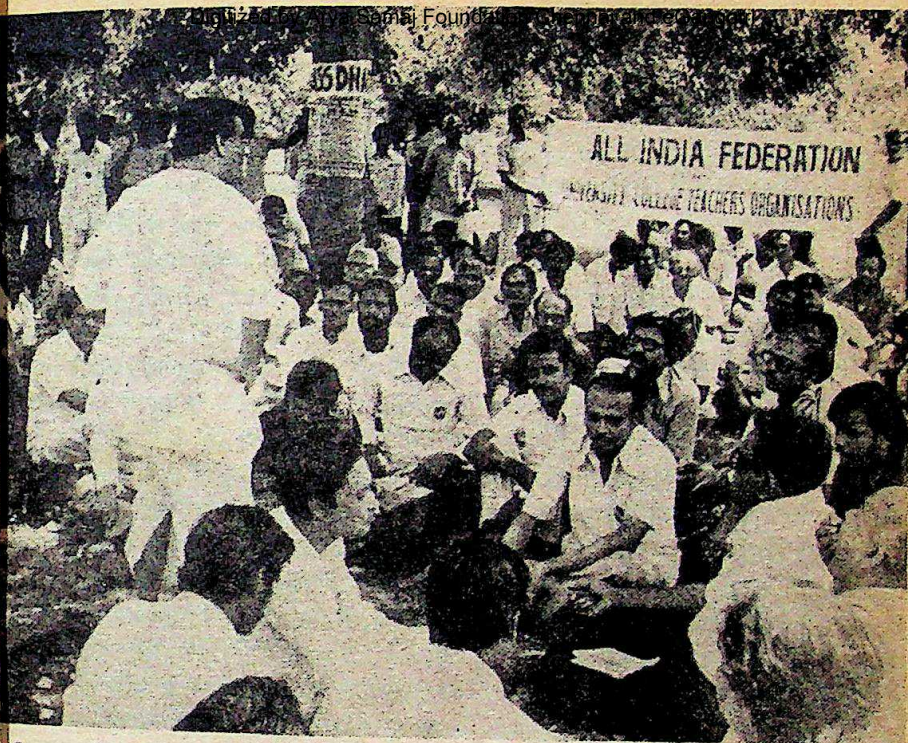
दिन पर दिन अपनी सुविधाओं के लिए हड़ताल, जलूस, धरने की संस्कृति अपनाने वाले विश्वविद्यालय शिक्षकों से अध्यापन की कितनी अपेक्षा?

विश्वविद्यालय शिक्षक इन्हीं सुविधाओं संतोष नहीं करता अपितु वह निरंतर इन के स्तार की चिंता में लगा रहता है. नेताओं को नाव के समय इन से मिलने वाले सहयोग के रण किसी प्रकार का विरोध नहीं किया ता. बल्कि इन की हर बात मानी जाती है. स से इन की सुविधाओं का विस्तार होता रहा है.

जहां तक अध्यापन, शिक्षा का स्तर या छात्रों के प्रति गुरु भाव का प्रश्न है इन नों की स्थिति में निरंतर गिरावट आ रही शिक्षक कम से कम कक्षाएं ले कर धिकतम लाभ कमा रहे हैं. शिक्षा स्तर ठाने के लिए विद्या परिषद व पाठ्यक्रम मितियों में वही घिसापिटा पाठ्यक्रम नुमोदित किया जाता है. उस पर भलीभांति चारविमर्श कर के स्तरीय तथा नई पीढ़ी के ए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों की सिफारिश नहीं की जाती. कारण, मेहनत के हर कार्य से ये लोग दूर भागते हैं.

पाठ्यक्रम में लगाई जाने वाली पुस्तकों के लिए प्रकाशकों से लाखों रुपए की रिश्वत ले कर ये लोग घटिया किताबें लगाते हैं. उस समय पुस्तक का स्तर नहीं अपितु प्रकाशकों द्वारा दी जाने वाली राशि को तोला जाता है. इस प्रवृत्ति से पाठ्यक्रम का स्तर दिनोंदिन गिरा ही है.

जहां तक गुरुभाव का प्रश्न है वह तो बिलकुल नदारद है. शिष्यों को ज्ञान देना अब उन का कार्य नहीं रह गया है. या तो शिष्य उन से ट्यूशन लें अथवा परीक्षा के समय आर्थिक प्रलोभन दें. विश्वविद्यालय के शिक्षक ही प्रश्नपत्र बनाते हैं. नंबर बढ़वाते हैं तथा परीक्षा में उत्तीर्ण करने का ठेका लेते हैं. विश्वविद्यालय प्रशासन से परीक्षकों के नामपते मालूम कर के वे चहेते लोगों को लाभ

पहुंचाने का 'नेक' कार्य करते देखे गए हैं.

शिक्षक, छात्राओं से नाजायज संबंध रखते हैं. कुछ तो शिष्यों को पत्नी बना लेते हैं. इस से पता चलता है कि वे गुरु पद के दायित्व का निर्वाह किस रूप में कर रहे हैं.

पीएच.डी. करने वाले छात्रछात्राओं का शोषण तो सर्वविदित है. घर के कार्य से ले कर अन्य वैयक्तिक कार्य करवाना ये शिक्षक अपना अधिकार समझते हैं. अच्छे बंगले तथा कार आदि की सुविधा के लिए प्राध्यापक जो ईमानदारी का मुखौटा लगा कर आया था, धीरेधीरे उतार फेंकता है तथा वह मारामारी व आपाधापी में लिप्त हो जाता है.

इस विश्लेषण को शायद एकतरफा अथवा पूर्वाग्रह से प्रेरित माना जा सकता है. परंतु यह सत्य के बहुत निकट है कि इन उच्च शिक्षा केंद्रों की स्थिति को गिराने के लिए शिक्षक ही जिम्मेदार हैं. विश्वविद्यालयों को मिली स्वायत्तता का सर्वाधिक लाभ शिक्षकों ने लूटा है. यही नहीं उन के स्तर पर की जाने वाली खरीदफरोख्त में भी दलाली खुलेआम खाई जाने लगी है और लोक निर्माण विभाग के दफ्तरों की तरह सौदेबाजी की जाने लगी है.

जिन शिक्षकों से हम समाज सुधार तथा राष्ट्र उत्थान और जीवन मूल्यों की स्थापना की आशा करते हैं. वे ही सारे मूल्यों को विघटित करने में लगे हैं. और हालात दिनप्रतिदिन बद से बदतर होते चले जा रहे हैं. भ्रष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों की गिरावट के इस भीषण संक्रमण काल में शैक्षणिक गरिमा का जितना भी ह्रास हुआ है, उस की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय शिक्षकों पर ही है.

इन बिगड़ते हालात पर रोक के लि कारगर कदम उठाना आवश्यक है. शिक्षक के लिए तुरंत आचरण संहिता बननी चाहि और उसे अविलंब लागू किया जाना चाहिए शिक्षकों के लिए उपस्थित होना तथा क लेना अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए. इस विपरीत आचरण करने वाले शिक्षकों प नियमानुसार कारवाई किए जाने क प्रावधान होना चाहिए. आर्थिक मामलों की जांच होनी चाहिए तथा प्रत्येक परियोजना खातों की लेखा परीक्षा अवश्य होनी चाहिए सामान का भौतिक सत्यापन हो त परियोजना की सारी संपत्ति उसी विश्वविद्याल की मानी जाए जिस में वे कार्य करते हैं.

शोध परियोजनाओं की सार्थकता प विचार कर के ही उन्हें स्वीकृत किया जा तथा समाजोन्मुखी योजनाओं के परिणामों क भी व्यावहारिक रूप दिया जाना चाहिए केवल अनुदान राशि दे कर ही कि परियोजना की इतिश्री नहीं मान ली जाए रुपया देने वाली एजेंसी को सभी तरह की जांच भी करनी चाहिए. अन्यथा विश्व विद्यालयों में रहासहा शैक्षणिक माहौ धीरेधीरे एकदम चौपट हो जाएगा तथा घटिया राजनीति और आर्थिक घपलेबाजी के अड्डे बन जाएंगे.

हमारी शैक्षणिक व्यवस्था के उत्था के लिए इन के भीतर घुस कर झांकना सम की मांग तथा राष्ट्र एवं समाज के हित में यदि छात्रों को नैतिक रूप से समृद्ध करने क कार्य हमारे विश्वविद्यालय नहीं करेंगे व्यावहारिक जगत में जीवन मूल्यों का ह्रा और भी द्रुत गति से होगा.

समुद्र की लहरों से भी बिजली

गुजरात सरकार ने अपने तटीय क्षेत्रों में समुद्र के ज्वार और हवा के माध्यम से बिजली पैदा करने के लिए एक व्यापक योजना तैयार की है.

उक्त योजना के तहत राष्ट्रीय पनबिजली निगम कच्छ की खाड़ी में 100 मेगावाट क्षमता वाले एक ज्वार विद्युत संयंत्र की स्थापना करेगा. इसी प्रकार एक पवन बिजली परियोजना को भी सौराष्ट्र तट के समीप भाटिया में स्थापित किया जाएगा.

सफलता मिल कर ही रही

• वीणा श्रीवास्तव

उस दिन मैं कार्यालय के कार्य में बहुत व्यस्त थी. कार्यालय की वार्षिक रिपोर्ट का हिंदी अनुवाद छपने के लिए प्रेस भेजना था और मैं उसी में सिर गड़ाए बैठी थी. अचानक फोन की घंटी घनघना उठी. मेरा सारा तारतम्य टूट गया. बहुत गुस्सा आया मुझे फोन करने वाले पर, लेकिन फोन करने वाले ने फोन पर जो खबर सुनाई उसे सुन कर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा.

फोन करने वाला व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि मेरे पति थे. उन्होंने फोन पर मुझे यह खुशखबरी दी थी कि मैं ने एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है. मेरी इस सफलता के पीछे शायद मेरा दृढ़ संकल्प ही था.

मैं ने 1973 में बी.एड. करने के 16 वर्ष पश्चात 1989 में हिंदी से एम.ए. किया. शुरू में तो मुझे थोड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा लेकिन बाद में मैं ने अनुभव किया कि उम्र अधिक हो जाने से मस्तिष्क की क्रियाशीलता कम नहीं हो जाती बल्कि दिमाग और भी परिपक्व हो जाता है तथा उस में समझने व ग्रहण करने की शक्ति पहले से अधिक विकसित हो जाती है.

नौकरीपेशा होने के कारण मैं ने पत्राचार पाठ्यक्रम के अंतर्गत यह परीक्षा दी थी. अतः पढ़ने का समय तो बहुत कम मिलता था लेकिन मैं ने मन में जो एक लक्ष्य बनाया था उस के लिए मुझे संघर्ष करना ही था.

दिमाग में अनेक तनाव रहते थे फिर भी मन को एकाग्र करना पड़ता था. मैं अपना विषय सब्जी बनाते समय, आटा गूंधते समय और कार्यालय जाते समय दोहराती रहती थी. कार्यालय में भी याद करने के लिए कुछ अध्ययन सामग्री दराज में रख ली थी. जब जरा भूलती दराज खींच कर देख लेती. जब कभी काम के चक्कर में पढ़ाई नहीं हो पाती तो बहुत खीज होती.

घर में तो बस हर समय काम फैला ही दिखता था. कभी बरतन साफ करने हैं, कभी बच्चों के कपड़ें इस्तिरी करने हैं और कभी कोई आ गया तो बस समझो मेरे दो घंटे खराब. इतने पर भी जब कभी कोई मेरी पढ़ाई को ले कर व्यंग्य करता, 'शुरू हो गई इन की पाठशाला' या 'इस उम्र में पढ़ाई कर के और कुछ तो मिलना नहीं बल्कि बुढ़ापा जल्दी आ जाएगा,' तो गुस्से से मेरा मानसिक संतुलन घंटों के लिए खराब हो जाता. फिर भी इन सब को नजरअंदाज कर के मैं अपने अध्ययन में जुटी रही.

मैं ने एम.ए. की परीक्षा हिमाचल विश्वविद्यालय से सेमेस्टर प्रणाली के अंतर्गत दी थी. पहले सेमेस्टर में बहुत चाहने पर भी मेरे प्रथम श्रेणी से 18 अंक कम आए लेकिन मैं जानती थी कि ऐसा मेरे परिश्रम में रही कमी के कारण ही हुआ है. अतः द्वितीय सेमेस्टर में ये अंक पूरे करने के लिए मैं जी जान से जुट

गई. मुझे मेरी मेहनत का फल मिला लेकिन नौ अंक अभी भी कम रह गए.

तृतीय सेमेस्टर में प्रथम श्रेणी के अंक तो आए लेकिन पिछले नौ अंकों की कमी पूरी न हो सकी.

चतुर्थ सेमेस्टर में पिछले अंक पूरे होने की उम्मीद तो न थी लेकिन 'यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोष .' (प्रयत्न करने पर भी यदि सफलता न मिले तो किस का दोष है?) यही सोच कर मैं ने अपना परिश्रम जारी रखा. अंत में मेरे परिश्रम और दृढ़ निश्चय ने मुझे सफलता की वांछित चोटी तक पहुंचा ही दिया.

मेरी समझ में, लक्ष्य चाहे छोटा हो या बड़ा, उस को पूरा करने के लिए संकल्प यानी दृढ़ संकल्प बहुत जरूरी है और व्यक्ति जब मन में संकल्प कर लेता है तो उस में कठिनाइयों से संघर्ष करने की क्षमता खुदबखुद आ जाती है तथा उसे सफलता भी निश्चित रूप से प्राप्त होती है. ●

संकल्प, संघर्ष और सफलता

एक संकल्प को पूरा करने के लिए जीवन में संघर्ष करना पड़ता है. संघर्ष के दौर में अनेक तरह के अनुभव होते हैं.

मुक्ता अपने पाठकों से जीवन के उतारचढ़ाव के उसी दौर को जानना चाहती है. ताकि आप का अनुभव अन्य पाठकों के लिए प्रेरणा बन जाए. यह भी हो सकता है कि आप की असफलता की कमियों को दूर कर कोई व्यक्ति जिंदगी की दौड़ में सफल हो जाए.

इस नियमित स्तंभ के लिए आप के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा.

पता है :

मुक्ता, संपादन विभाग, ई-3,
झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055

हम परिस्थितियों को अनुकूल बना सकते हैं

लेख • कमल सरीन

सुरेश एक कंपनी में अच्छे पद पर था. पर उसे काम पसंद नहीं था. उसे अपने विवेक के विरुद्ध काम करना पड़ता था. कंपनी के लाभ के लिए उसे गलत तरीके अपनाने पड़ते थे. अतः वह लगातार मानसिक तनाव में रहता था. पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण काम छोड़ने का साहस नहीं जुटा पाता था. आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि नए काम की तलाश में दोतीन माह घर बैठ सके. उस की पत्नी ने उस की समस्या समझी और काम छोड़ देने को कहा.

सुरेश ने कहा, ''घर बैठ कर खाएंगे क्या?''

जिम्मेदारी से जी न चुराने वाला व्यक्ति अपने कार्यालय में अपनी स्थिति तो मजबूत बनाता ही है, सफलता की सीढ़ियां भी चढ़ता है.

कैरियर के क्षेत्र में सफलता हासिल करने के लिए जिस तरह आप अपने विवेक और धैर्य का सहारा लेते हैं, उसी प्रकार विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए कौशल, ज्ञान और व्यवहारशीलता का सहारा लीजिए. फिर देखिए, आगे क्याक्या होता है?

शीला ने अपनी बचत के रुपए देते हुए कहा, ''इसी दिन के लिए तो यह बचत की थी. इतने रुपयों से हम आसानी से चार माह गुजार सकते हैं. इस बीच दूसरा काम अवश्य मिल जाएगा.''

सुरेश ने नौकरी छोड़ दी. तीन माह के भीतर मनपसंद काम तलाश लिया. ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो 50 हजार रुपए सालाना कमा कर भी बचत के नाम पर शून्य रहते हैं. परिणामस्वरूप अपने नापसंद मालिक की गुलामी करते रहते हैं.

दिनेश ने एक बैंक में नौकरी की. वेतन कम, महत्त्वाकांक्षा तीव्र. पर शीघ्र पदोन्नति की कोई आशा नहीं. अपने एक मित्र के सम्मुख समस्या रखी. उस ने सलाह दी कि अपने बचे समय के उपयोग के लिए बैंक की समस्याओं से संबंधित पत्राचार पाठ्यक्रम में भरती हो जाए. साथ ही इस विषय की पत्रिकाएं भी पढ़ना आरंभ कर दे.

दिनेश की समझ में बात आ गई. उस ने अपना ज्ञान बढ़ाना आरंभ कर दिया. दो साल में यथेष्ट ज्ञान अर्जन कर लिया. बैंक के समक्ष एक समस्या आई. मैनेजर उस का हल नहीं पा रहा था. कर्मचारियों की बैठक में उस ने सुझाव मांगे. सब चुप रहे. पर दिनेश ने खड़े हो कर उस का हल सुझाया. मैनेजर को हल ठीक लगा. दिनेश को मैनेजर का विश्वास मिला, साथ ही पदोन्नति भी.

जब कृपाशंकर ने अपने निदेशक ब्रजमोहन के कक्ष में प्रवेश किया तो उन्हें परेशान पाया. परेशानी का कारण पूछने पर पता चला कि कल अचानक ही यहां एक जरूरी बैठक होने वाली है. कार्यसूची व संबंधित कागजात तैयार नहीं हैं. करीब 100 पन्ने हैं जिन्हें टाइप करना है, स्टेंसिल काटना है, कापियां निकालना है व 100 पुस्तिकाएं बना कर बैठक में सदस्यों को बांटना है. यह कई दिनों में होने वाला काम एक दिन में कैसे होगा?

कृपाशंकर ने जरा सोचा और कहा, ''आप यह काम मुझ पर छोड़ दीजिए. आप को काम सवेरे 10 बजे तक किया हुआ मिल जाएगा.''

"पर करोगे कैसे? एक टाइपराइटर, एक टाइपिस्ट और एक रोनियो मशीन?" ब्रजमोहन ने शंका प्रकट की.

कृपाशंकर ने दृढ़ता से कहा ''सर, आप निश्चित रहें. कल सवेरे हम से काम ले लें." ब्रजमोहन ने काम उसे सौंप दिया.

कृपाशंकर ने काम ले तो लिया पर जब निबटाने के बारे में सोचा तो आसमान में तारे नजर आने लगे. पर बीड़ा तो उठा ही लिया था. अब पीछे हटने का प्रश्न ही कहां था. उस का परिचय क्षेत्र काफी व्यापक था. स्वयं दूसरों को सहयोग देता आया था. आसपास के अनुभागों से मधुर संबंध थे. योजना बना सब को काम बांट दिया. एक तरफ टाइपिंग होती रही, दूसरी तरफ स्टेंसिल कटते रहे. तैयार स्टेंसिल की कापियां निकलती रहीं. शाम को आठ बजे तक मशीनों का काम समाप्त हो गया. तीन घंटे में साथियों को बैठा कर पुस्तिकाएं तैयार करवा दीं. रात को 11 बजे निदेशक ब्रजमोहन को कार्य समापन की सूचना दे वह घर चला गया.

ब्रजमोहन चिंताग्रस्त तो थे ही, सूचना पा कर मजे की नींद सोए. इतनी बड़ी जिम्मेवारी ओढ़ कर व उसे समय से निबटा कर कृपाशंकर ने न केवल अपना स्थान बना लिया वरन एक आत्मविश्वास पैदा कर लिया कि आवश्यकता पड़ने पर असंभव दिखते कार्य भी संभव किया जा सकता है. फिर जो उन्नति के द्वार खुले तो खुले ही रहे.

उपर्युक्त कुछ उदाहरण हैं जहां पत्नी की बचत के कारण, नया ज्ञान अर्जित करने के कारण, और अतिरिक्त जिम्मेदारी ओढ़ कर उसे निभाने के कारण सुरेश, दिनेश व कृपाशंकर परिस्थितियों के दास नहीं रहे. अपनी व्यक्तिगत क्षमता का उपयोग कर अपनी उन्नति का रास्ता बनाते रहे.

युवावस्था में मात्र काम मिल जाना ही पर्याप्त नहीं है. यह भी देखना जरूरी है कि क्या काम मन का है, क्या अपना जीवन जी सकते हो? ऐसा तो नहीं कि एक मशीन के महत्त्वहीन पुरजे बन कर रह गए हो.

पदोन्नति नहीं हो रही है, निराशा घेर रही है. किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहे हो तो सोचो कि क्या किया जा सकता है. अधिकांश लोग इन्हीं परिस्थितियों का शिकार हुए जीवन यापन करते हैं. आज कार्यक्षेत्र इतना बढ़ गया है कि हम बड़े-बड़े संस्थानों में एक नगण्य पुरजा बन कर रह गए हैं. समाज में भी कोई स्थान नहीं रहता. लगता रहता है कि अपने मन का काम करने की तनिक भी स्वतंत्रता नहीं है.

जिस प्रकार किसी देश को उन्नति के लिए स्वतंत्र होना आवश्यक है, उसी प्रकार हर व्यक्ति को अपना लक्ष्य पाने व सफल होने के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता होनी जरूरी है. आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो. इतनी योग्यता हो कि काम जब चाहे बदला जा सके, दासता न हो. जिम्मेदारी की भावना इतनी हो कि सहयोगियों की कमी न रहे. प्रभाव क्षेत्र इतना विस्तृत हो कि अपना काम न रुके. निजी जीवन साफ हो. चरित्र निर्मल हो कि कोई उंगली न उठा सके. ये ही तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लक्षण हैं.

लोग आप के अनुकूल बने रहें, इसलिए सब के साथ व्यवहार कुशलता का परिचय दीजिए.

हमारी व्यक्तिगत स्वतंत्रता बनी रहे, इस के लिए हमें आर्थिक दृष्टि से मजबूत होना होगा. अकसर लोग बचत को वृद्धावस्था की सुरक्षा का साधन मानते हैं. पर यह बात नहीं है. सब से प्रमुख बात है कि बचत के होते वर्तमान में हमारी आर्थिक स्वतंत्रता बनी रहती है.

सामान्यतः हर परिवार एकदो माह से अधिक मासिक आय बंद होने पर कठिनाई का अनुभव करता है. स्पष्ट है, जो व्यक्ति तीन माह बिना वेतन नहीं रह सकता, वह अपनी पसंद का दूसरा काम तलाश भी नहीं सकता. काम मन का न होने पर भी उसे अधिकारी या मालिक की ज्यादतियों को सहते रहना पड़ेगा. पहले उदाहरण में सुरेश की पत्नी की बचत ने सुरेश को उस के मालिक की दासता से मुक्त कराया.

लोग भूल जाते हैं कि सिगरेट व शराब में प्रतिदिन एक अच्छीखासी रकम फूंक कर वे अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता किस प्रकार खो रहे हैं. यदि इस तरह व्यर्थ के खर्चों को रोक कर बचत की जाए तो आर्थिक दृढ़ता मिले व मालिक की धौंस भी न सहनी पड़े.

आजकल सामान्यतः तीनचार साल काम करने के बाद विवाह की जिम्मेदारी आती है. इन तीन वर्षों में यदि 30% बचाया जाए तो तीन साल में एक साल का वेतन बैंक में जमा हो सकता है. यह बचाया वेतन संकट के समय आप का बचाव करेगा.

अपनी योग्यता व ज्ञान बढ़ा कर हम अपनी स्वतंत्रता का दायरा विस्तृत कर सकते हैं, जैसा कि दिनेश ने किया. ज्ञान ही शक्ति होती है. वे दिन लद गए जब ज्ञान वृद्धि की रफ्तार धीमी थी. अब हर तीनचार साल में संसार का ज्ञान दोगुना हो जाता है. पांचवें दशक के विज्ञान के स्नातक इस नौवें दशक में अपने माध्यमिक स्कूल के बच्चों को विज्ञान पढ़ाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं. बात लगातार ज्ञान वृद्धि करने की है.

अपने कार्य को प्यार कर उस की बारीकियों को इस प्रकार जान लेना चाहिए कि वह काम अच्छी तरह समझ में आ जाए. नौकरी छूटे तो वेतन ही तो नहीं मिलेगा. दू... की पूंजी पर जो हुनर सीखा है वह तो पा... रहेगा. दक्षता तो कोई छीन नहीं सकता. ... तो तभी संभव है जब नया सीखते ही... पुराने का नवीनीकरण किया जाता रहे. आ... की दुनिया में हम उतने ही दक्ष एवं स्वतंत्र ... सकते हैं जितना कि हम नए तरीकों व ज्ञान ... अपने को प्रशिक्षित रख सकते हैं.

तीसरी प्रमुख बात जो वैयक्ति... स्वतंत्रता में बाधक होती है वह है चरित्र ... प्रति लापरवाह रहना. ऐसा कुछ न कर... जो भविष्य में प्रगति के लिए रोड़ा बन जा...

प्रभाव क्षेत्र बढ़ाइए

श्याममोहन सामाजिक कार्यों में भा... लेते थे. जरा क्रोध जल्द आ जाता था. घर ... पास कुछ मारपीट हो गई. बीचबचाव क... कूद पड़े. पुलिस आई, उन्हें भी थाने ले ... रात भर रखा. सवेरे जमानत पर छो... भविष्य के लिए एक गलत रिकार्ड हो ग... जब भी किसी नियुक्ति का कागज आता, ... घटना दर्ज हो जाती.

जगदीप की महिलाओं के ... कमजोरी थी. यह उन के कार्यालय के सा... जानते थे. एक दूसरी कंपनी में एक ज... खाली हुई. जगदीप ने आवेदन पत्र भेजा. ... भी लिया जाता पर उस की यह कमज़ो... बाधा बन गई. वह कंपनी महिला प्रधान ... उस की अध्यक्षा को जगदीप की कमजोरी ... पता चला तो उसे नहीं लिया.

आजकल कंप्यूटर आ जाने से रिक... रखने की सुविधा बढ़ रही है. भूल से भी ... काम दर्ज हो जाता है. बटन दबाया ... जीवन वृत्त हाजिर. अतः अपने ... कार्यकलापों पर अंकुश रखने की आवश्यक... है. जिन से चारित्रिक कमजोरी झलकती...

अपना प्रभाव क्षेत्र विस्तृत करते र... भी वैयक्तिक स्वतंत्रता के लिए आवश्यक... जब तक हर क्षेत्र में सहयोगी व मुला... नहीं होंगे अपना काम समय से व उचित ... से पूरा नहीं होगा. तीसरे उदाहरण ... कृपाशंकर ने अपने सहयोग व मृदुल स्व...

के बल पर अपनी जानपहचान व चतुराई होती तो क्या वह उस असंभव दिखते कार्य को संभव कर पाता. दूसरों से सहयोग कर, सहानुभूति रख, विनम्र बन, जिम्मेदार रह कर यह क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है. पड़ोसी हो, पास का दुकानदार हो, सहकर्मी हो, संपर्क कार्यालय हो, हर कोई किसी न किसी काम में मदद दे सकता है.

सहयोग में शक्ति असीम है. पर यह बिना दिए नहीं पाया जा सकता. पहल हमें ही करनी होगी. फिर जितना दिया जाएगा उस से अधिक ही मिलेगा. जितना उपलब्ध होगा, उसी अनुपात में परिस्थितियां हमारे अनुकूल होंगी.

हर कोई चाहता है कि उस के पास विश्वसनीय कार्यकर्ता हों, जिन में पहल शक्ति हो, जिम्मेदारी लेने व निभाने की भावना हो, साथ ही निर्णय लेने की शक्ति हो. जिस व्यक्ति में पहल शक्ति होती है, जो अपना काम व सौंपा काम बिना किसी के निर्देशन व आदेश के स्वयं ही निर्णय ले कर जिम्मेदारी की भावना से करता है या कर सकता है, उसे धन व सम्मान की कोई कमी नहीं रहती. दोनों खूब मिलते हैं. फिर उसे कहीं भी कोई भी काम करने की स्वतंत्रता होती है.

ऐसे व्यक्ति को उस का मालिक तो चाहता ही है, दूसरे भी अधिक वेतन पर उस की सेवाएं पाने को लालायित रहते हैं. ये तीनों आदतें डालना आवश्यक है.

शुरुआत की जा सकती है छोटीछोटी बातों से. जो भी छोटीबड़ी समस्या आए उस का विश्लेषण कर, उचितअनुचित का ध्यान कर तत्काल निर्णय लीजिए और फिर जिम्मेदारी से उसे कार्यान्वित कीजिए. धीरेधीरे यह आदत में शुमार हो जाएगा. बिना पहल शक्ति व जिम्मेदारी की भावना के आप दूसरों के दास रहेंगे. आप आदेश देने की स्थिति में न होंगे. आप का काम मात्र आज्ञापालन होगा. यह भी कोई जीवन होगा.

जिम्मेदारी नहीं लेने का मतलब है अपने जीवन की नकेल दूसरों के हाथ सौंप देना. हम जिंम्मेदारी टाल तो सकते हैं पर टालने के दुष्परिणामों से नहीं बच सकते.

ये कुछ बातें हैं जिन पर ध्यान दे कर हम अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता बनाए रख सकते हैं और परिस्थितियों को अनुकूल बना सकते हैं. हम स्वयं में उन गुणों का विकास कर सकते हैं जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता में सहायक हों. इस प्रयास से न केवल हम अपना भविष्य सुंदर बनाएंगे वरन दूसरों को लाभ भी पहुंचाएंगे. ●

मुक्ता के स्वामित्व व अन्य विवरण संबंधी जानकारी

फार्म 4, देखिए नियम 8.

1. प्रकाशन का स्थान : नई दिल्ली. 2. प्रकाशन अवधि : पाक्षिक. 3,4, व 5. मुद्रक, प्रकाशक व संपादक का नाम : विश्वनाथ. राष्ट्रीयता : भारतीय. पता : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55. 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के मालिक व हिस्सेदार हैं या जो इस पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर होल्डर हैं : दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

मैं विश्वनाथ, घोषित करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं.

(ह.) विश्वनाथ, प्रकाशक

बेरोजगारों के लिए काम का अधिकार

लेख ● जगदीश चावला

बेरोजगारी जैसे मुद्दे को ले कर गत वर्ष अगस्त के शुरू में युवा नेता रवींद्र कुमार की अगुआई में 'भारत मुक्ति मोरचे' से संबद्ध सैकड़ों पढ़ेलिखे बेरोजगार नवयुवकों ने नई दिल्ली के कनाट प्लेस क्षेत्र में जब आतेजाते लोगों का ध्यानाकर्षण करने के लिए 'जूता पालिश' करने का अभियान चलाया था तो उस समय वहां कुछ ही फर्लांग दूर स्थित प्रधान मंत्री कार्यालय में शहरी बेरोजगारों के लिए नेहरू रोजगार योजना का मसौदा बन रहा था और पास ही जंतरमंतर रोड स्थित जनता दल के कार्यालय में दल के कई दिग्गज अपने चुनावी घोषणापत्र में काम के अधिकार को प्रमुखता के साथ शामिल करने में व्यस्त थे.

बेरोजगारी के प्रश्न पर यों तो देश की युवा पीढ़ी स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भी विचलित रहा करती थी लेकिन तब यह सवाल लोगों को इतना नहीं मथता था जितना कि अब मथने लगा है. वैसे पहली पंचवर्षीय

बेरोजगारी की जटिल समस्या से निजात पाने के लिए बेरोजगारों का जुलूस : नौकरी कैसे मिलेगी?
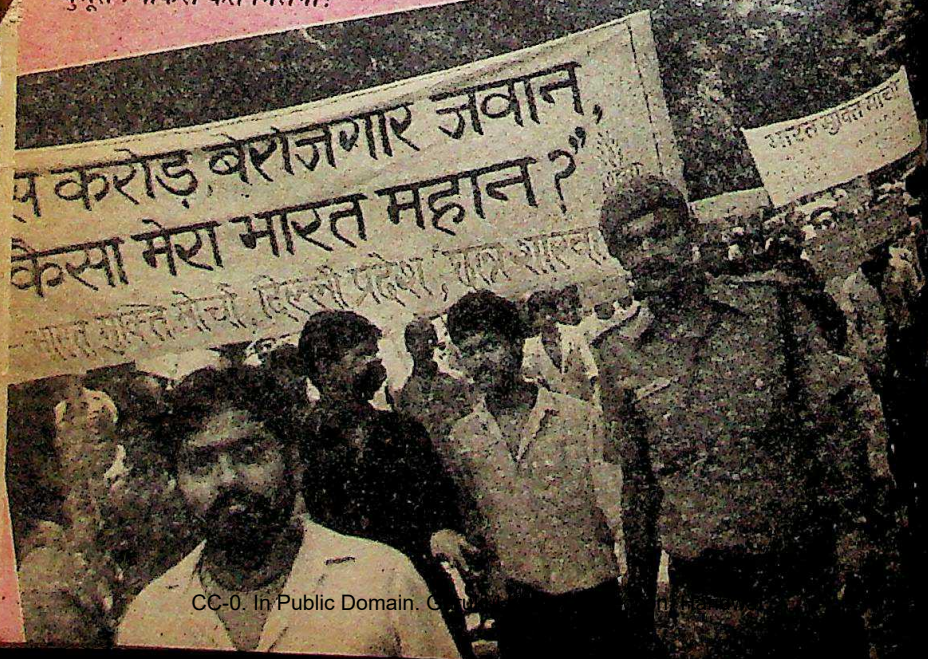
केंद्र में राष्ट्रीय मोरचे की सरकार के गठन के बाद बेरोजगारी की प्रदूषित हवा में सांस लेने वाले बेरोजगार युवाओं के निमित्त कुछ गंभीर कदमों की शुरुआत तो हो रही है, किंतु उन्हें रोजगार दिलाने के नाम पर काम के अधिकार को मौलिक अधिकार घोषित करने की प्रक्रिया सिर्फ सरकार के लिए ही नहीं, देश के हित के लिए भी कुठाराघात साबित हो सकती है.

योजना के जो लक्ष्य तत्कालीन योजना आयोग ने निर्धारित किए थे, उन में भी पहला लक्ष्य बेरोजगारी को दूर करना था. मगर खेद है कि बेरोजगारी जैसे गंभीरतम सवाल पर देश के राजनीतिबाजों ने कोई ठोस चिंतन नहीं किया बल्कि सत्तासीन रहे प्रधान मंत्रियों

अपनीअपनी डिगरियों को जलाते नवयुवक : क्या डिगरी जलाने से नौकरी मिल गई?

तक ने भी इस सवाल को अपने राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की चेष्टाएं की. ताजा मिसाल लें तो पूर्व प्रधान मंत्री

राजीव गांधी ने [illegible] 1988 को 'बेकारी हटाओ' का नारा उछालते हुए अपने पांच सूत्री कार्यक्रम के तहत प्रत्येक परिवार के कम से कम एक व्यक्ति को रोजगार मुहैया कराने की जो बात कही थी, वह भी उन की चुनावी रणनीति का ही एक हिस्सा मानी गई थी. राजीव गांधी को अलग कर के देखें तो बेरोजगारों के हित में कई लुभावने नारे उन राजनीतिक दलों ने भी लगाए हैं जो आज सत्तासीन हैं या सत्ता के निकट हैं.

वर्ष 1973-74 में जब महाराष्ट्र में 'रोजगार गारंटी योजना' लागू की गई थी तभी से यह दबाव भी पैदा हुआ था कि रोजगार या काम के अधिकार को कानूनी अधिकार बनाया जाए. देश के युवा मतदाताओं को प्रसन्न करने के लिए कदाचित राष्ट्रीय मोरचा व जनता दल ने अपने चुनावी घोषणापत्रों में कहा कि रोजगार के अधिकार को संविधान के तहत मौलिक अधिकार बनाने के लिए पहले रोजगार गारंटी योजनाओं को पूरे देश में लागू किया जाएगा. मौलिक अधिकार प्राप्त होने पर कोई भी व्यक्ति रोजगार न मिलने की सूरत में उच्चतम और उच्च न्यायालयों में अपना दावा प्रस्तुत कर सकता है. रोजगार गारंटी मिलने पर बेरोजगारों द्वारा निचले स्तर पर स्थानीय न्यायालयों के दरवाजें भी खटखटाए जा सकते हैं.

अब चूंकि कांग्रेस नेपथ्य में चली गई है और मंच राष्ट्रीय मोरचे की सरकार ने संभाल लिया है तो उसे भी अपने किए वादे गले की फांस नजर आने लगे हैं. तथापि नई सरकार के रंगढंग बताते हैं कि वह बेरोजगारी के प्रश्न पर व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने का इरादा रखती है. काम के अधिकार पर अमल करने के उद्देश्य से नई सरकार ने मंत्रिमंडल की एक उपसमिति नियुक्त कर दी है जो इस बात का जायजा लेगी कि रोजगार के अधिकार को संविधान का बुनियादी अधिकार कैसे बनाया जाए.

उधर जनता दल के प्रवक्ता भी जो खुलासा दे रहे हैं उस से पता चलता है कि अभिव्यक्ति के अधिकारों की तरह रोजगार पाने के अधिकार को संविधान के मूलभूत अधिकारों में शामिल किया जाएगा. दूसरे शब्दों में यदि सरकार काम के अधिकार को कार्यान्वित करने की कोई पहल करती है तो इस से रोजगार उपलब्ध कराना सरकार के लिए कानूनन जरूरी हो जाएगा.

लेकिन देश के अर्थशास्त्रियों को इस बारे में सरकार के सभी कार्य हास्यास्पद ही दिखाई दे रहे हैं. उन्हें लग रहा है कि भावनाओं में बह कर सरकार अर्थव्यवस्था की औकात भूल रही है. उन्हें यह भी हास्यास्पद लगता है कि कल तक जो प्रधान मंत्रीं विश्वनाथ प्रताप सिंह खजाना खाली होने का रोना रो रहे थे, आज अचानक अरबों-खरबों वाली इस पूर्णतः अनुत्पादक योजना की पैरवी भी करने लगे हैं.

अर्थशास्त्रियों की राय में

अर्थशास्त्रियों का यह कहना भी सही लगता है कि जिस भारत की गरीब जनता के लिए देश की सरकारें पानी और भोजन तक की भी पर्याप्त व्यवस्था नहीं कर पाईं और जहां पर 'समन्वित विकास कार्यक्रम' जैसी विराट योजनाएं धूल चाट कर रह गईं तथा 'नेहरू रोजगार योजना' भी लागू होने से पहले ही अव्यावहारिक तथा सारहीन समझ कर रद्दी की टोकरी में डाल दी गई, वहां भला हर वयस्क देशवासी के हाथ में रोजगार पाने का यह अधिकार सरकार को छकाने या परेशान करने का औजार भी बन सकता है. और शायद इसी लिए सरकारी निगमों व उपक्रमों को सफेद हाथी बताने वाले अर्थवेत्ता यह समझाने में लगे हैं कि पहले इस बात का खुलासा कर लिया जाए कि काम का अधिकार सभी को तुरतफुरत नौकरी मिलने का पर्याय नहीं, है जबकि आम बेरोजगार आदमी अभी भी यही सोचे हुए है कि काम के अधिकार को मौलिक अधिकारों में मान लिया जाना उन्हें बिना काम किए ही सरकार से पैसा यानी बेरोजगारी भत्ता दिलाएगा.

इस संबंध में महान्यायवादी सोली
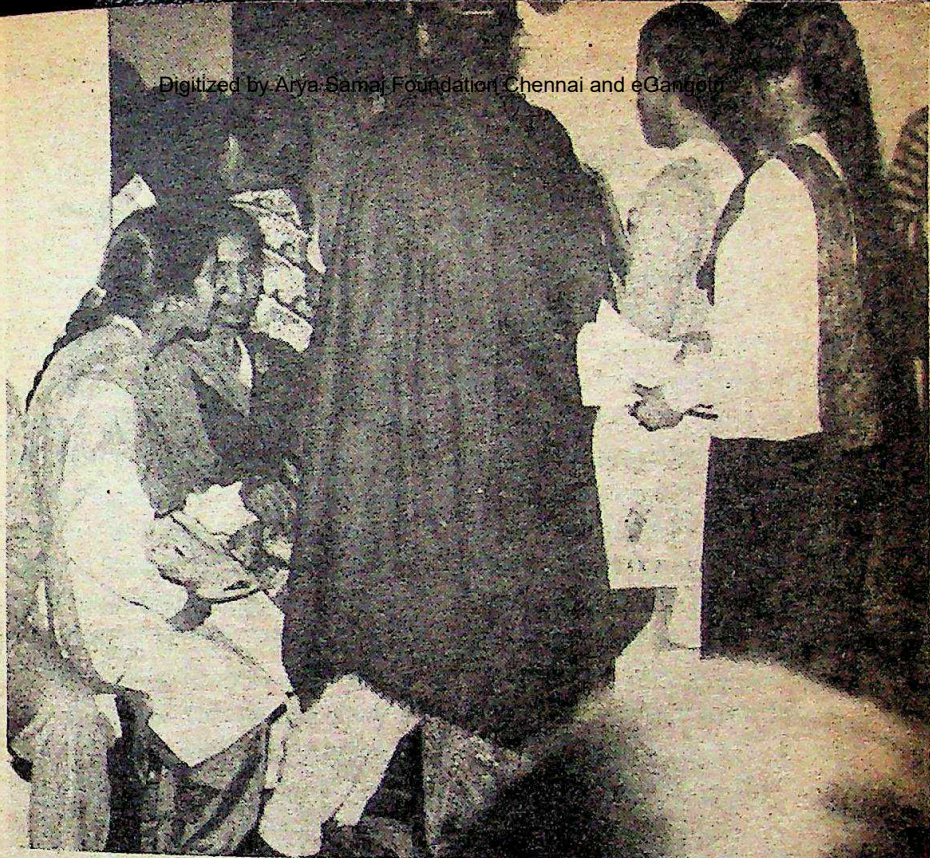
बेरोजगारों की भीड़ में युवक ही नहीं युवतियां भी हैं जो रोजगार कार्यालयों में धक्के खाते देखी जा सकती हैं.

सोराबजी बताते हैं कि रोजगार की गारंटी के दो अर्थ हो सकते हैं. एक तो काम के लिए चयन का अधिकार और दूसरे हर व्यक्ति को रोजगार के अवसर की गारंटी देना. संविधान के अनुच्छेद 19 (1) जी. के अंतर्गत कानून हमें किसी भी काम को चुनने का अधिकार देता है और जहां तक रोजगार के अवसर की गारंटी की बात है तो उसे भी संविधान में निदेशी सिद्धांतों के अंतर्गत 41वें अनुच्छेद में स्वीकार किया गया है. लेकिन इस अनुच्छेद के अंतर्गत कोई व्यक्ति सरकार को रोजगार देने के लिए बाध्य नहीं कर सकता क्योंकि सरकार के लिए ये निदेशी सिद्धांत आदर्श लक्ष्य हैं. इन में मौलिक अधिकारों की तरह बाध्यता नहीं है.

निदेशी सिद्धांतों के अध्याय में सरकार को सिर्फ निर्देश दिया गया है कि उसे ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए. लेकिन यदि सरकार रोजगार की गारंटी को मौलिक अधिकार बनाती है तो उस के साथ कुछ जरूरी व स्थितिजन्य निर्देश भी अवश्य रहेंगे. रोजगार की गारंटी को मौलिक अधिकार बनाए जाने के बाद यदि कोई व्यक्ति अदालत में जा कर यह कहता है कि उसे उस का मौलिक अधिकार दिलाओ तो यह जरूरी नहीं है कि न्यायालय उसे रोजगार दिलाने के लिए सरकार पर दबाव डाले.

वैसे इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि दुनिया के कई साम्यवादी देशों में रोजगार का अधिकार मौलिक अधिकारों में माना जाता है और वहां की सरकारें अपने नागरिकों को रोजगार उपलब्ध भी करवाती

हैं. लेकिन इस का मुख्य कारण भी उत्पादन के समस्त साधनों पर सरकार का नियंत्रण होना ही है. साम्यवादी व्यवस्था में सभी छोटेबड़े उद्योग, व्यापार, कृषि, खनन आदि सभी काम सरकारी क्षेत्र के अंतर्गत माने जाते हैं जबकि पूंजीवादी या लोकतांत्रिक अर्थव्यवस्था में अधिकतर संसाधनों पर सरकार का नियंत्रण नहीं होता. कुछ एक अपवादों को छोड़ कर अधिकतर साधनों पर व्यापारियों व उद्योगपतियों का ही मालिकाना हक रहता है.

हमारे देश ने चूंकि मिश्रित अर्थव्यवस्था को स्वीकार किया है, इसलिए यहां पर अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को सरकारी और निजी व्यवस्थाओं द्वारा नियंत्रित किया जाता है. ऐसी मिश्रित अर्थव्यवस्था के रहते रोजगार के अधिकार को लागू करना तभी संभव होगा जबकि औद्योगिक व्यवस्था का ढांचा हर दृष्टि से संपन्न व समर्थ होगा. अभी तो सरकारी क्षेत्र के उपक्रम भी उसी नौकरशाही द्वारा चलाए जा रहे हैं जहां कर्मचारियों को सेवानिवृत्त की अवस्था से पहले ही अगले वर्षों का (जब तक वे नौकरी करते) वेतन व अन्य सुविधाएं दे कर स्वैच्छिक नौकरी छोड़ने को प्रोत्साहित किया जाता है.

सरकारी क्षेत्रों में यह कार्यक्रम इसी लिए चलाया जा रहा है क्योंकि वहां भी कर्मचारियों की अधिकता मानी जा रही है, जबकि यह बात सभी जानते हैं कि सरकारी नौकरी तो रोजगार है ही नहीं. तीनचौथाई मामलों में तो यह जनता से करों के रूप में लूटे या उगाहे गए पैसे का आपसी वितरण ही है. सरकारी कर्मचारी अन्य नागरिकों के मुकाबले में वेतन ज्यादा पाते हैं और काम कम करते हैं. यानी उन की हिस्सेदारी लूट में ज्यादा है और रोजगार में कम.

असल में देखा जाए तो कोई भी सरकार सभी नागरिकों को रोजगार नहीं दे सकती. इस नाते काम के अधिकार को मौलिक अधिकार की संज्ञा देने का अर्थ है कि सरकार किसी व्यक्ति को काम करने से न रोके.

लेकिन देश की समस्या तो यह है कि य[...] काम ही नहीं मिलता. अपने राजनीतिक स्[...] पूरे करने के लिए सरकार कैसी भी योजना[...] क्यों न बना ले लेकिन वस्तुस्थिति यही है[...] बेरोजगारों को उन के मनमुताबिक नौक[...] दिलवाना समर्थ से समर्थ सरकार के लिए[...] कोई सहज कार्य नहीं है. 1951 में जहां देश[...] विभिन्न रोजगार कार्यालयों में पंजीकृ[...] बेरोजगारों की संख्या 3 लाख 29 हजार थ[...] वहीं अब यह संख्या तीन करोड़ से ऊपर[...] चुकी है और यदि इस में गैरपंजीकृ[...] बेरोजगारों को शामिल कर लिया जाए तो य[...] संख्या 6 करोड़ से भी ज्यादा हो जाएगी.

रोजगार कार्यालयों की योजना[...] 1943 में ब्रिटिश लोगों ने बनाई थी, जिस[...] तात्कालिक उद्देश्य युद्ध के समय सैनिकों[...] अन्य कर्मचारियों की भरती करना था. लेकि[...] अब सर्वोच्च न्यायालय तक की दृष्टि में इ[...] रोज़गार कार्यालयों का महत्त्व समाचारप[...] के विज्ञापन से बढ़ कर नहीं रहा. रोजगा[...] दिलाने में पाई गई इन की नगण्य भूमि[...] तथा असंतोषजनक कार्यप्रणाली के कारण[...] संभवतः 'बी.सी. मैथ्यू समिति' ने अप[...] रिपोर्ट में कहा था कि ये रोजगार कार्याल[...] तकनीकी तथा प्रबंधकीय क्षमता के अभाव[...] ग्रस्त हैं और इन के पास उम्मीदवार [...] क्षमता और कार्यकुशलता के मूल्यांकन [...] भी कोई मापदंड नहीं है.

रोजगार दफ्तरों की भूमिका

आजादी के बाद कुछ नियोक्ताओं त[...] श्रमिक संघों की मांग के कारण ही रोजग[...] कार्यालयों की प्रणाली भारत में अंगीकार [...] गई थी और 1956 में इन्हें राज्यों को सौ[...] दिया गया था. अब बहुत सी राज्य सरकारों[...] पंजीकरण के लिए स्थानीय होने की अनिवा[...] शर्त भी जोड़ दी है. इस प्रकार देश में का[...] कर रहे लगभग 600 रोजगार कार्यालयों [...] जायजा लेने पर यह बात भी सामने आती[...] कि इन कार्यालयों की मारफत भी सिर्फ 1[...] 12 प्रतिशत उम्मीदवारों को ही नौकरी मि[...] पाती है जबकि अन्य अधिकांश उम्मीदवा[...]

को यहां से मायूसी के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता.

दिल्ली की मिसाल लें तो यहां भी 23 रोजगार केंद्र कार्य कर रहे हैं जिन में दो चलतीफिरती इकाइयां पुनर्वास बस्तियों में कार्यरत हैं. इन में से कई केंद्रों पर सिर्फ एक विशेष प्रकार के उम्मीदवारों का ही चयन होता है. जैसे, पूसा रोड स्थित संस्थान में तकनीकी उम्मीदवारों का और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय स्थित रोजगार केंद्र पर चिकित्सा स्नातकों का पंजीयन होता है. कर्जन रोड स्थित केंद्र विकलांग तथा चतुर्थ वर्गीय कर्मचारियों के लिए है तो दरियागंज व अन्य क्षेत्रों के रोजगार केंद्रों पर हर बेरोजगार अपना नाम दर्ज करा सकता है.

बेरोजगार की भयावह स्थिति का यह एक क्रूरतम मजाक है कि रोजगार कार्यालयों में जो लोग अपना नाम बड़े उत्साह के साथ दर्ज कराते हैं उन में से ही अधिकांश लोग बाद में रोजगार कार्यालयों की वास्तविकता जानने पर उस के कटु आलोचक बने नजर आते हैं, जैसा कि कोटला लेन की कमलेश कुमारी ने दरियागंज स्थित रोजगार केंद्र के बारे में इस प्रतिनिधि को बताया:

"मैं ने अपनी माता के देहांत तथा उच्चतर माध्यमिक परीक्षा पास कर लेने के बाद 1980 में रोजगार के लिए यहां अपना नाम दर्ज कराया था. 1980 से लेकर 1990 तक मुझे साक्षात्कार के लिए कोई बुलावा नहीं आया. जबकि इसी बीच मैं ने कमला नेहरू कालिज से बी.ए. तथा स्टेनोग्राफी का प्रशिक्षण भी ले लिया है. अब यदि मैं इस कार्यालय में नौकरी के लिए कहती हूं तो मुझे यही उत्तर मिलता है कि 'नियमानुसार

रोजगार दफ्तर की उपयोगिता का प्रश्न : रोजगार नहीं, दिलासा.
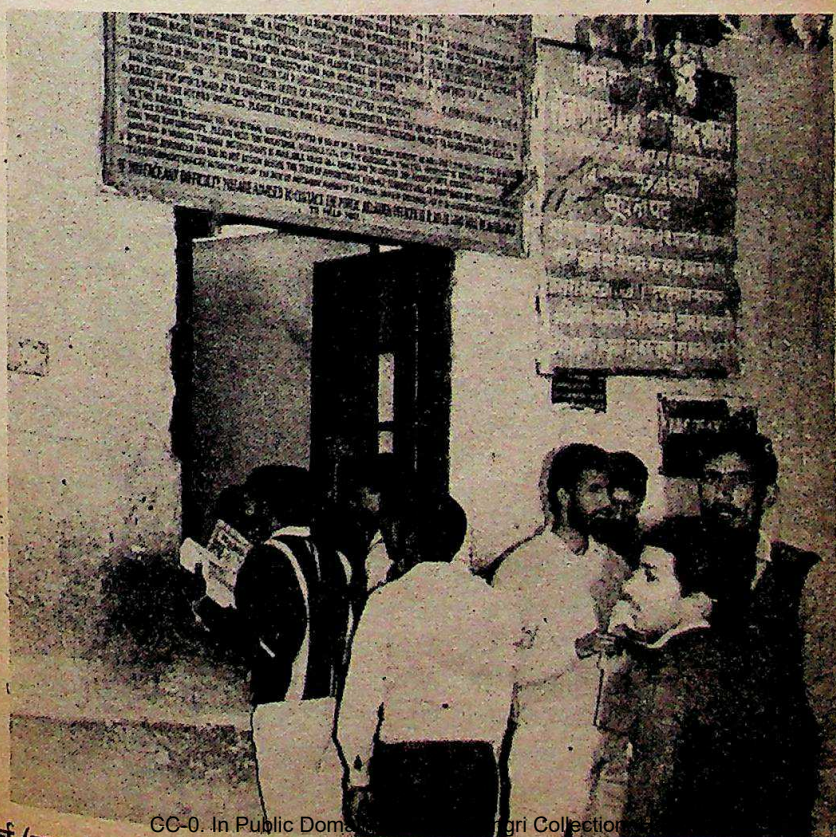
तुम्हारी उम्र अधिक हो गई है अतः यहां कोई कुछ नहीं कर सकता'."

इसी तरह एक अन्य युवक विनोद कुमार ने बताया कि "मैं ने यहां 1983 में अपना पंजीकरण कराया था लेकिन मुझे बुलावा एक बार भी नहीं आया." साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि "मुझे नहीं लगता कि सरकार सभी बेरोजगारों को कोई काम दिला पाएगी. जबकि उस की तरफ से बातें तो बहुत बढ़चढ़ कर की जा रही हैं."

बापा नगर के विनोद कुमार की शिकायत यह थी कि उन्होंने यहां रोजगार के लिए तब आवेदन दिया था जब वह 10वीं पास कर चुके थे. अब वह अंगरेजी साहित्य में एम.ए. कर रहे हैं तो भी उन्हें कोई बुलावा नहीं आया. बल्कि पूछने पर कह दिया जाता है कि 'चारपांच वर्ष और सब्र करो. शायद कहीं बात बन जाए.' लेकिन उन्हें बात बनने का आश्वासन भी अब एक छलावा ही नजर आता है.

नौकरी का अनुकूल अवसर पाने की चाह में वर्षों तक कहीं से बुलावा न आना और अंततः सरकारी नौकरी के लिए निर्धारित आयु की सीमा पार हो जाना यहां पंजीकृत हुए बेरोजगारों के लिए आम बात है. इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि क्या ये रोजगार संस्थान अपने औचित्य को साबित कर रहे हैं और क्या इन से बेरोजगारी की समस्या के समाधान में कोई मदद मिल रही है. उत्तर यदि नकारात्मक है तो इन केंद्रों को भी वस्तुतः राष्ट्रीय संसाधनों के दुरुपयोग का माध्यम ही माना जाना चाहिए.

सरकारी नीति का औचित्य?

इतने बरसों से पंजीकृत लाखों उम्मीदवारों को अब तक नौकरी के लिए बुलावा क्यों नहीं आया? यह सवाल पूछने पर एक अधिकारी ने बताया कि "एक तो सीमित संख्या में नियुक्तियां होती हैं. फिर हर पद के लिए कुछ मापदंड भी होते हैं जिन पर कई उम्मीदवार खरे नहीं उतरते. ऐसे में हम उन का नाम कैसे भेज सकते हैं."

रोजगार केंद्रों के अधिकारी अप... व्याप्त भ्रष्टाचार और भाईभतीजाव... बातों का जो चाहे कह कर प्रतिवा... लेकिन उन की इस बात में वजन है कि कोई नियोक्ता अपने लिए तेज रफ्ता... आशुलिपिक चाहता है तो वहां कम... का आशुलिपिक नहीं भेजा जा सकता... दूसरी तरफ यहां पंजीकृत बेरोजगारों... पूछना भी वाजिब है कि जब यहां... मिलने की संभावना नहीं तो पंजीकर... क्या आवश्यकता है? क्या पंजीकर... बहाने बेरोजगार युवकों को झूठी दिला... सरकारी ढोंग नहीं है?

सरकार द्वारा करोड़ों रुपए के... चलाए जा रहे ये रोजगार केंद्र जब बेरो... को रोजगार नहीं दिला पाते तो ये उन्हें... की भांति चुभने लगते हैं. अतः रोजगा... की कार्यप्रणाली में व्यापक और व्याव... संशोधन कर उन्हें बेरोजगारों के... उपयुक्त बनाना तो सरकार का कर्तव्य... साथ ही यदि नई सरकार काम के अ... को मौलिक अधिकार मान कर इसे सं... में सम्मिलित और कार्यान्वित कर... वास्तव में राजनीतिक इच्छा रखती है... के लिए यह उचित होगा कि वह अर्थव्य... के भविष्य पर राष्ट्रव्यापी बहस कराए... में यह बात शामिल हो कि वर्तमान... का स्वरूप कैसे अधिक रोजगार... बनाया जाए, जिस से ज्यादा हाथों को... मिल सके.

यहां यह बताना भी जरूरी... पश्चिमी देशों में 1929 के आर्थिक सं... बाद बेरोजगारी भत्ता और रोजगार... जैसी योजनाएं भी वहां की जनसंख्या... प्रतिशत देख कर ही लागू की गई थीं... वहां बेरोजगारों की संख्या कुल जनसं... दोतीन प्रतिशत ही थी. मगर भारत... 10-12 प्रतिशत से भी ज्यादा बेरोज... और अर्थव्यवस्था की बुनियादी कम... के कारण वह और भी बढ़ती जा रही... यहां इस तरह की योजनाओं के स्था... रोजगार के अधिकतम अवसर पैदा...

दा जरूरी है, न कि बेरोजगारी भत्ते बांट फोकट में वाहवाही लूटना.

देश के 'अपर्याप्त रोजगार' के 6 करोड़ कवों की भरपाई करने के लिए सरकार यदि हजार रुपया वार्षिक की दर से भी भत्ता तो यह रकम 6 हजार करोड़ रुपए ती है और यह कोई समझदारी नहीं होगी इतनी बड़ी रकम को वह देश एकदम त्पादक काम पर लुटा दे जिस के बाशिंदों औसत आय उन के रहनसहन का स्तर रने के लिए भी अपर्याप्त हो.

अमरीका और इंगलैंड जैसे साधनसंपन्न अपने संसदीय कानूनों के तहत भले ही जगारों को ऐसे भत्ते देते हों लेकिन गरीब की पंक्ति में खड़े भारत की जनता इस के चोंचलों को पालने की स्थिति में नहीं यह बात यहां के राजनीतिबाज भी भांति जानते हैं. अमरीका जैसे देशों में जगारी भत्ता वहां की विकसित अर्थ-वस्था बरदाश्त कर सकती है लेकिन त की अर्थव्यवस्था यह कदापि सहन नहीं गी कि केवल बेरोजगारी भत्ता ही विकास तमाम संसाधनों को अपने मुंह का ग्रास ले और यदि कोई सरकार अपने नीतिक स्टंट पूरा करने के लिए ऐसे भत्ते के लिए कोई पहल या व्यवस्था करती भी उस की कीमत करों के रूप में उन लोगों को भी चुकानी होगी जो आज काम पर लगे हैं.

बेरोजगारों से की गई बातचीत से यह तथ्य भी सामने आया है कि सरकार चाहे बेरोजगारों की दशा सुधारने में कितनी ही प्रयत्नशील क्यों न हो लेकिन काम उन्हीं को ही मिल पाता है जो काम के अवसर स्वयं अपनी योग्यता और प्रयत्नों से तलाशते हैं. बेरोजगारी भत्ते की खैरात पर तो वैसे भी कोई बेरोजगार अपना सारा जीवन व्यर्थ गंवाने की नहीं सोचेगा.

अतः काम के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाने या बेरोजगारी भत्ता देने जैसी सनक पूरी करने से पूर्व किसी भी लोकतांत्रिक सरकार के लिए यह सोचना जरूरी है कि उस की अपनी अर्थव्यवस्था के स्रोतों तथा तिजोरी की स्थिति क्या है? यदि परिस्थितियां अनुकूल न हों तो ऐसी योजनाएं रद्द भी की जा सकती हैं क्योंकि अपना सिर कटा कर सिर दर्द की दवा पाना किसी भी चिकित्सा शास्त्र का निर्देश नहीं है.

वैसे भी विगत में कोरे आश्वासनों से हताश हुई बेरोजगारों की भीड़ को किन्हीं अधिकारों के झुनझुने से तभी तक बहलाया जा सकता है जब तक कि वह यह नहीं जान पाती कि ऐसे अधिकार उसे रोजगार दिलाने में कितना मदद करते हैं. ●

बीवी भी किस्तों में

बड़े आश्चर्य की बात है कि पश्चिम जरमनी में लगभग 60 बीवी बेचने वाली संस्थाएं कार्यरत हैं. एक वधू बेचने पर मैरेज ब्यूरो को 1,100 से 2,000 अमरीकी डालर का लाभ होता है. किस्तों पर मिलने वाली, एशियाई देशों से आयात की गई बीवियों की संख्या पश्चिम जरमनी में बढ़ती जा रही है. इतना ही नहीं पति को पूरी संतुष्टि न मिलने पर वह किस्तों पर खरीदी गई बीवी को संस्था को लौटा कर बदले में नई मनपसंद बीवी भी ला सकता है.

बिकाऊ एवं कामचलाऊ बीवी का दर्जा पाने वाली ये एशियाई लड़कियां अल्पविकसित देशों के गरीब परिवारों से आती हैं. भोलीभाली आज्ञाकारी एशियाई लड़कियां कभी तलाक के बारे में सोच भी नहीं सकतीं और एक बंधुआ मजदूर की तरह घर और पति की सेवा में दिनरात एक कर देती हैं. ●

"फिल्मों में अभिनय की गुंजाइश नहीं है." —विभा मिश्रा

भेंटवार्त्ता ● अवध श्रीवास्तव

जनवरी माह में भारत भवन, भोपाल की ओर से एक फ्रांसीसी लेखक रासीन के नाटक 'फैद्रा' का मंचन दिल्ली, हैदराबाद, लखनऊ और भोपाल में किया गया.

यह प्रस्तुति कलाप्रेमी दर्शकों के द्वारा नाटक की नायिका 'फैद्रा' के जीवंत और सशक्त अभिनय के कारण काफी सराही गई. 17वीं सदी में लिखे इस भावपूर्ण नाटक की नायिका, पति और प्रेमी के बीच अपनी अभिव्यक्ति की तलाश करतेकरते आत्महत्या कर लेती है.

'फैद्रा' का अभिनय प्रसिद्ध रंगकर्मी विभा मिश्रा ने किया है. विभा मिश्रा का नाम भारत भवन की एक बड़ी त्रासदी और देश के प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक ब.व. कारंत से जुड़ा है. लेकिन अब विभा मिश्रा अपना दुखद अतीत भूल कर इन दिनों गंभीरता से अभिनय के प्रति समर्पित हैं.

लगभग दो वर्ष पूर्व विभा मिश्रा का शरीर 80 % जल गया था और उस के मंच पर वापस आने की उम्मीद नहीं थी. लेकिन विभा के दृढ़ संकल्प और जीने के प्रति असाधारण इच्छा शक्ति के कारण वह एक बार फिर देश के प्रसिद्ध रंगकर्मियों में गिनी जाने लगी है. अतीत की बात करने पर वह उखड़ जाती है, लेकिन तन्मयता से रंगकर्म को समर्पित विभा को देख कर यह लगता ही नहीं है कि वह अभिनेत्री के अतिरिक्त कुछ और भी है.

'फैद्रा' का भावपूर्ण अभिनय देश भर के रंगकर्मियों व रंगकर्म में रुचि रखने वाल[ों] चर्चा का विषय रहा है और विभा [...] अभिनय के इन क्षणों से पूर्ण संतुष्ट नह[ीं] वह किसी ऐसे पात्र को जीना चाहती है [...] अभिनय के चरम को जी सकने में उस[की] सहायक हो.

22 सितंबर 1958 में लखनऊ [में] जनमी विभा ने हिंदी साहित्य में स्नातक[ो]... परीक्षा उत्तीर्ण कर के राष्ट्रीय ना[ट्य] विद्यालय दिल्ली से 1982 में प्रशिक्षण प्र[ाप्त] किया था. बनारस, कानपुर, रायपुर, [...] बरेली, बैतूल, भोपाल आदि शहरों में [...] शिविरों का संचालन और निर्देशन भी वि[भा] ने किया है.

विभा के अब तक अभिनीत नाटक[ों में] 'अंधेर नगरी', 'एक्सेप्शन एंड दी [...]' 'बकरी', 'कैंप', 'चरणंदास चोर', '[...] अधूरे', 'माधव आए' और 'खामोश अद[ालत] जारी है' आदि नाटक रहे हैं. इन नाटक[ों को] विभा ने निर्देशित भी किया है.

लखनऊ में मूकबधिर बच्चों के [...] विभा ने नाट्य शिविरों में हिस्सा लिया. प्रस्तुत हैं, विभा मिश्रा से किए गए साक्षात्[कार] के कुछ अंश:

अभी हाल का मंचित नाटक 'फै[द्रा'] काफी चर्चा का विषय रहा है. इस में [...] क्या है?

वास्तव में 'फैद्रा' फ्रांस महोत्सव [की] प्रस्तुति है. यह फ्रेंच निर्देशक जार्ज लवाद[ां की] प्रस्तुति का नया रूप है. 'फैद्रा' फ्रां[सीसी] लेखक रासीन के जीवन की अंतिम कृति

विभा मिश्रा ने अतीत के एक दुखद प्रसंग को भूल कर एक बार फिर से आगे बढ़ने और कुछ नया कर दिखाने की तमन्ना के साथ अभिनयशीलता का सफर प्रारंभ कर दिया है. सफलता की मंजिलें उस के करीब तो अब भी हैं, किंतु क्या वह अपनी स्थिति से फिलहाल संतुष्ट है?

फ्रांसीसी लेखक रासीन के नाटक फैद्रा के एक दृश्य में संजय मेहता के साथ विभा मिश्रा.

क्या फिल्में, नाटकों के प्रति दर्शकों की रुचि कम नहीं कर रहीं?

नहीं, नाटक में जीवित अभिनय देखने का अवसर मिलता है और वास्तविकता का अहसास होता है. नाटक एक वर्ग विशिष्ट के

लिए है जबकि फिल्में सभी वर्गों द्वारा देखी जाती हैं.

लेकिन कला किसी वर्ग तक सीमित रहे तो वह कला कहां हुई?

क्षमा कीजिए, नाटक की अपनी अलग गरिमा बनी रहेगी, तभी तक उस की पूछ और परख है, नाटक के लिए एक समझ की जरूरत होती है, जो हर वर्ग में नहीं मिल सकती.

काफी समय से नाट्य कर्मियों के शरीर को क्षति पहुंचाए जाने का क्रम सा चल पड़ा है. सफदर हाशमी का उदाहरण सामने है. इस संदर्भ में आप क्या सोचती हैं?

यह निंदनीय है और कला या कलाकार को भयभीत कर के किसी देश की संस्कृति को जिंदा नहीं रखा जा सकता. अभी भारत भवन में कुछ लोगों ने सशस्त्र हमले किए... हम सभी असुरक्षित हैं.

भारत भवन के संबंध में लोगों का विचार है कि यह कुछ लोगों की मानसिक विलासिता का साधन मात्र है और शासकीय पैसे का दुरुपयोग.

गलत है सब... यह झूठे और कुंठित लोगों का प्रचार है. कला के प्रति समर्पित लोगों का केंद्र है, भारत भवन.

आप फिल्मों में काम क्यों नहीं करतीं?

फिल्मों में अभिनय होता ही कहां है? मैं फिल्में निर्देशित तो करना चाहती हूं, लेकिन फिल्मों में अभिनय की गुंजाइश नहीं है.

लखनऊ में आप के घर वाले नाटकों में काम करने से नाराज नहीं हैं?

शुरू में नाराज रहे. शायद अब भी हों लेकिन मैं रंगमंच नहीं छोड़ सकती. मैं नाटकों में अभिनय अपनी संतुष्टि के लिए करती हूं—और मेरा संतोष घर वालों की नाराजगी से कहीं अधिक बड़ा है. ●

दुनिया भर की

हमें तो साम्यवाद का झंडा ही फहराना है

नवंबर 1989 पूर्वी यूरोप में एक ऐतिहासिक महीना रहा है. लौह परदे में ढकी समाजवादी अर्थव्यवस्था लड़खड़ा उठी और एक के बाद एक साम्यवादी देशों में सत्ता परिवर्तन का दौर शुरू हुआ. सही बात तो यह है कि इन देशों में असफल साम्यवादी व्यवस्था को नए परिवर्तनों के नाम पर छिपा लिया गया.

पूर्वी यूरोप में तो बदलाव आ ही चुका है लेकिन कुछ ऐसे भी साम्यवादी देश हैं जो परिवर्तनों के नए दौर से कुछ सीखना ही नहीं चाहते हैं. ये देश हैं-क्यूबा, अलबानिया और जिबाब्वे. क्यूबा के राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो ने पूर्वी यूरोप में हो रहे ताजा परिवर्तनों पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इस से अमरीका का प्रभाव बढ़ेगा और पूंजीवादी मूल्यों को स्थान देने की मांग जोर पकड़ेगी. कास्त्रो ने अपने देश में किसी भी प्रकार के बदलाव से इनकार किया है.

कुछ इसी तरह की बात जिबाब्वे के

साम्यवाद को सबक: परिवर्तन की लहर जारी है.

राष्ट्रपति राबर्ट मुगाबे ने कहा है कि उन का देश समाजवादी ढांचे में कोई परिवर्तन किए बिना मार्क्सवादी 'लेनिनवादी' विचारधारा पर कायम रहेगा.

एक साम्यवादी देश और है-अल्बानिया. यहां के शासक कह रहे हैं कि साम्यवाद के सिद्धांतों में कोई दोष या गड़बड़ी नहीं है. गड़बड़ है सरकारों में, शासकों में और लोगों में. गड़बड़ है उन देशों में जो साम्यवाद पर अमल से कतरा रहे हैं और पूंजीवाद की शरण में जा रहे हैं.

पूर्वी यूरोप के परिवर्तनों से चीन परेशान है. लेकिन फिलहाल चीन के प्रधान मंत्री ली फंग ने भी 'डेली चायना' में कहा है कि चीन पूर्वी यूरोपीय शैली के राजनीतिक सुधार बरदाश्त नहीं करेगा.

बजने लगे हैं रूस में गिरजाघरों के घंटे

नए साल के पहले दिन मास्को (रूस) में पूरे 50 वर्ष बाद सेंट बसील के गिरजाघर में जब घंटा बजने लगा तो मास्कोवासी ताज्जुब में पड़ गए और कुछ देर में ही ढेरों लोग गिरजाघर में पहुंच गए.

पहली दिसंबर 1989 को रूस के मिखाइल गोर्बाचौफ रोम के पोप से मिले थे. दोनों में काफ़ी बातचीत हुई और रूस में करीब 70 वर्षों से चला आ रहा ईसाइयत और साम्यवाद के बीच वैचारिक मतभेद समाप्त

रूस के गिरजा घर : पेरेस्त्रोइका से ताजगी का अनुभव.

हो गया. अब गोर्बाचौफ रूस में कैथोलिक धर्म को छूट दे कर रूस की अखंडता की रक्षा करने की बात भी कह रहे हैं और दूसरी तरफ गोर्बाचौफ से मिलने के बाद रोम के पोप 'पेरेस्त्रोइका' में उन के मित्र बन गए लगते हैं. पोप ने गोर्बाचौफ की नई नीतियों की सराहना की है.

वक्त बदलते देर नहीं लगती है. साम्यवादी रूस में कुछ समय पूर्व तक ईसाइयत पर कड़ी पाबंदी थी. रूस स्थित ज्यादातर गिरजाघरों के दरवाजे बंद रहते थे और घंटियां खामोश रहती थीं. आज 'आर्थोडोक्स' चर्च को भी साम्यवादी रूस में काफी आजादी मिल गई है.

पूर्वी यूरोप में तो काफी हालात बदल चुके हैं. अनेक साम्यवादी देशों में अब वर्षों से बंद गिरजाघरों के दरवाजे खुल गए हैं. पोलैंड के स्कूलों में तो ईसाई प्रार्थनाएं होने लगी हैं और धर्मग्रंथ पढ़ाए जाने लगे हैं.

ईसाई धर्म के मामले में ढील बरतने के पीछे रूस की कुछ राजनीतिक मजबूरियां हो सकती हैं. रूस के लिथुएनिया प्रांत की अधिसंख्यक आबादी रोमन कैथोलिक है. यह प्रांत रूस से अलग होने की बात करने लगा है. ऐसी ही स्थिति रूस के उक्रैन प्रांत के पश्चिमी हिस्सों में भी बन रही है.

क्या आप ने इस बच्चे को देखा है?

उस महिला की उम्र होगी यही कोई 40 वर्ष. करीब 20 मिनट तक डिपार्टमेंट स्टोर में घूम कर उस ने कुछ सामान खरीदा. काउंटर पर बिल चुका कर वह बाहर निकली. उस के हाथ में चार थैले थे. घर पहुंच कर उस ने जैसे ही थैलों में से सामान निकालना शुरू किया अचानक रुक गई और थैले पर छपी तसवीर और उस का विवरण पढ़ने लगी. लिखा था, 'यदि आप ने इस बच्चे को कहीं देखा है तो कृपया इस फोन पर बताने की कृपा करें.'

दुनिया भर में संपन्नता के कारण विख्यात अमरीका में हर साल लाखों बच्चे गायब हो जाते हैं और उन्हें ढूंढ़ने के लिए दूध की थैलियों, सामान रखने वाले पतले बैगों, बसों, टैक्सियों तथा गलियों के कोनों पर लगे बोर्डों पर गायब बच्चे के बारे में पूरा विवरण छपा नजर आता है. मातापिता तो परेशान होते ही हैं, साथ में पुलिस भी. पुलिस स्टेशनों में कुछ मातापिता बच्चे की कुछ खास अवसर पर ली गई विडियो फिल्म भी दे आते हैं और पुलिस अफसर उन्हें अपने रिकार्ड में इकट्ठा करते रहते हैं.

अमरीका में जिस तरह बच्चे गायब हो जाते हैं उसी तरह वहां अपहरण, बलात्कार और हत्या के कांड भी काफी होते हैं. बच्चियों के साथ बलात्कार कर मार दिया जाता है. पुलिस को जहां कहीं भी कोई मरा बच्चा या बच्ची नजर आती है तो फिर उन की दौड़ बच्चे से हट कर हत्यारे की तरफ लग जाती है.

कमीशन और छूट से परेशान हैं सिंगापुर के होटल

दक्षिणपूर्व एशिया में स्थित सिंगापुर एक गणराज्य है जो मुख्य द्वीप सिंगापुर और आसपास के कुछ अन्य छोटेछोटे द्वीपों में बसा हुआ है. यह भूमध्य रेखा से लगभग 77 किलोमीटर उत्तर में मलेशिया, फिलीपीन और इंडोनेशिया के बीच बसा हुआ है. अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण सिंगापुर एक बहुत बड़ा बंदरगाह है और इस से देश को काफी आय होती है.

पिछले कुछ वर्षों से यह देश पर्यटकों का मनोरंजन स्थल बन गया है. यहां प्रतिवर्ष 30 लाख सैलानी आते हैं और कुछ दिन ठहर कर
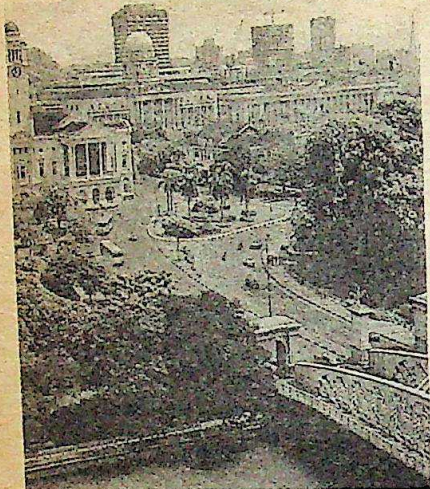
सिंगापुर का एक विहंगम दृश्यः पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र.

और खरीदारी कर के चले जाते हैं.

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यहां सभी तरह के मनोरंजन स्थल बने हुए... यहां दुनियाभर का बना अच्छा और स... माल बिकता है. कुछ एक चीजों में छूट... कमीशन दिया जाता है. छूट और कमीश... इस बीमारी से यहां के होटल वाले भी दु...

सिंगापुर में करीब 60-70 होटल हैं... में से एकचौथाई होटलों की हालत बड़ी ख... रहती है.

शहर के बड़े होटल 40% से 5... तक होटल में ठहरने और खानेपीने के ख... छूट दे देते हैं. यहां से प्रकाशित पत्रों में... होटलों के काफी विज्ञापन और उन के द्वार... जाने वाली छूट का हवाला होता है. इस प... पिछले वर्ष यहां कुछ और नए होटल खुल... हैं. छः होटलों के मालिक जापानी हैं.

बड़े होटल उन के यहां ठहराने के... मुसाफिर लाने वाली टैक्सियों के मालिक... भी भरपूर कमीशन देते हैं. फलस्... ज्यादातर टैक्सियां कमीशन के लालच में... होटलों से जुड़ी रहती हैं.

दो गज जमीन को तरसते तानाशाहों के शव

फिलीपीन में वर्षों तक शासन करने वाले तानाशाह मार्कोस को पिछले वर्ष जनतांत्रिक आंधी ने उड़ा दिया और वह भाग कर होनोलूलू पहुंचे जहां उन की मृत्यु हो गई. मार्कोस की अंत्येष्टि के लिए उन की विधवा इमेल्डा मार्कोस ने फिलीपीन की सरकार से इजाजत मांगी जो अस्वीकार कर दी गई. अंत्येष्टि का मामला फिलीपीन के सर्वोच्च न्यायालय में पेश किया गया लेकिन फिलीपीन में मार्कोस को लाने की इजाजत नहीं मिली.

उधर इमेल्डा मार्कोस ने भी ठान लिया है कि वह मार्कोस को फिलीपीन में ही दफनाएंगी और वह मार्कोस के शव को दफनाने तक सुरक्षित रखेंगी. अब एक वर्ष से भी ज्यादा समय बीत चुका है मार्कोस का शव अपने देश की दो गज जमीन भी नहीं पा सका है.

ऐसी ही घटना रूमानिया के साम्यवादी तानाशाह निकोलाई चाउसेस्कू के साथ... है. रूमानिया के तानाशाह को उन की... के साथ 25 दिसंबर 1989 को गोली मा... गई थी.

तब से ले कर आज तक इस श... का भी अंतिम संस्कार नहीं हुआ है. रूमा... में सत्तारूढ राष्ट्रीय मुक्ति मोरचा तथ... की जनता चाउसेस्कू का अंतिम सं... रूमानिया की धरती पर नहीं करवाना चा... अब स्थिति यह है कि चाउसेस्कू दंपती के... लेप लगा कर सुरक्षित रख दिए गए हैं. य... कहा जाता है कि शायद इन शवों को... सागर में बहा दिया जाए.

बहुत से तानाशाह तो ऐसे भी हु... जिन का मरने पर अंतिम संस्कार बड़े स... से हुआ. लेकिन बाद में उन की कब्रों को... कर उन की शवपेटियों को दूसरे स्था... दफना दिया गया. रूस और चीन में ऐसा... हुआ है जो किसी से छिपा नहीं है.

जगह
के सम
की फो
जा स
शता

चित्रावली

चलतीफिरती फोन सुविधा उपलब्ध

आज के युग में फोन की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता. और यदि हर वक्त और हर जगह से फोन करने की सुविधा उपलब्ध हो तो फिर कहना ही क्या. डाक्टरों के लिए मुआयने के समय, वकीलों के लिए न्यायालय में तथा हर व्यवसाय में इसकी महत्ता असाधारण होगी.

अब ऐसी ही चलतीफिरती फोन सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है जिस से आम जनता की फोन सुविधाओं में आशातीत सुधार होगा. इस फोन को बैग या अटैची में आसानी से रखा जा सकता है. आने वाले दशक में इस की संख्या में वृद्धि होने की संभावना है. आशा है इस शताब्दी के अंत तक करीब एक करोड़ लोगों को यह सुविधा उपलब्ध हो जाएगी.

जरमनी को पृथक करने वाला लौह आवरण हटा

जरमनी को विभाजित करने वाली दीवार अब तोड़ दी गई है. दोनों तरफ के लोग अब आसानी से आ जा सकते हैं. अब किसी भी प्रकार की बंदिश नहीं रह गई है.

दीवार को गिराने का काम स्टेपलबर्ग के निकट बनी 11 मीटर ऊंची चौकसी बुर्जी को तोड़ कर शुरू किया गया था. सीमाओं पर लगे कंटीले तारों को भी अब धीरेधीरे हटाया जा रहा है.
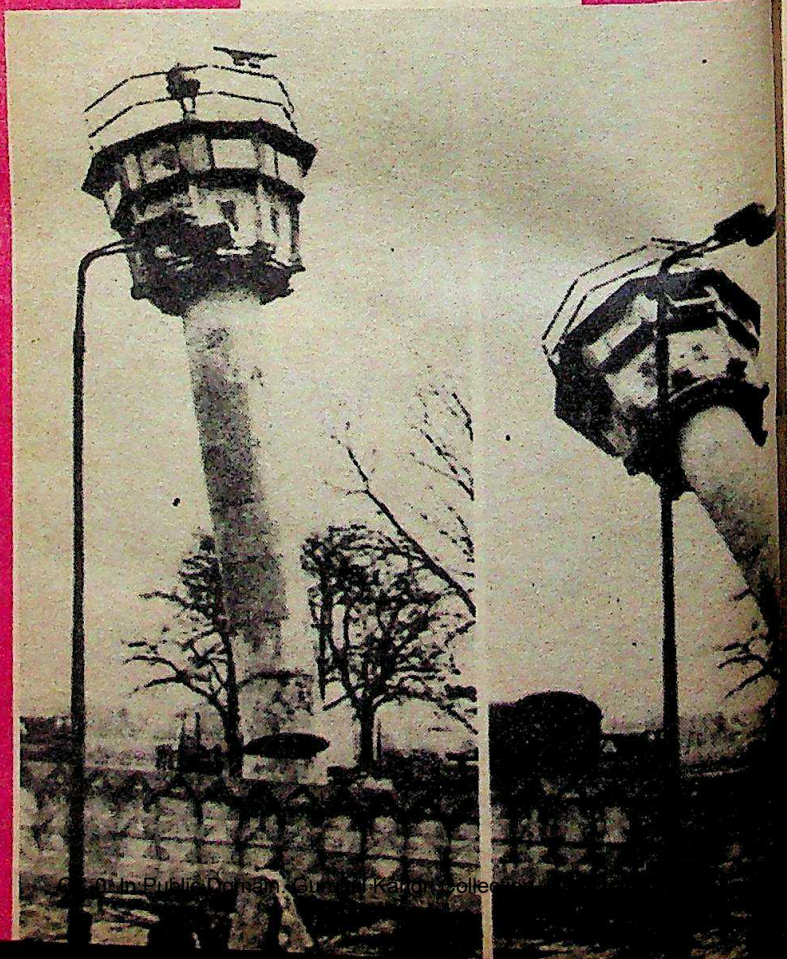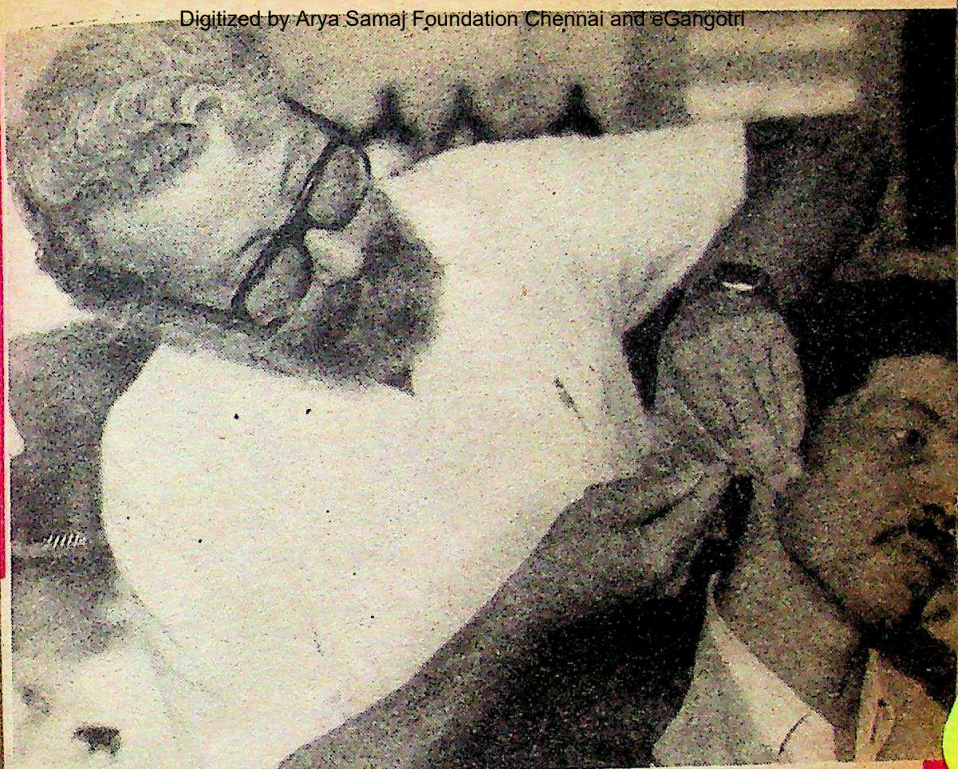
कुष्ठ रोग—विलुप्तता के कगार पर

कुष्ठ रोग को अब उतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना आज से कुछ वर्ष पहले समझा जाता था. अब यह रोग पूर्णरूप से साध्य है. बशर्ते कि शुरू की अवस्था में ही इस का पता चल जाए. दुनिया भर में 28 जनवरी को विश्व कुष्ठ निवारण दिवस मनाया जाता है. इस वर्ष का नारा है— 'यह साध्य है'. उस दिन से एक कोष संग्रहण अभियान चलाया जा रहा है. शताब्दी के अंत तक अनेक देशों से कुष्ठ रोग को पूर्णरूप से हटाने की योजना है. इस कोष से इस कार्य में सहायता मिल सकेगी. अब तक यूरोपीय देश माल्टा में कुष्ठ रोग पूर्णरूप से लुप्त हो गया है.

चित्र में कुष्ठ के रोगी में कुष्ठ के जीवाणुओं का पता लगाने के लिए चिकित्सक नासिका का नमूना ले रहा है.

छलावे

कहानी • अरुण अलबेला
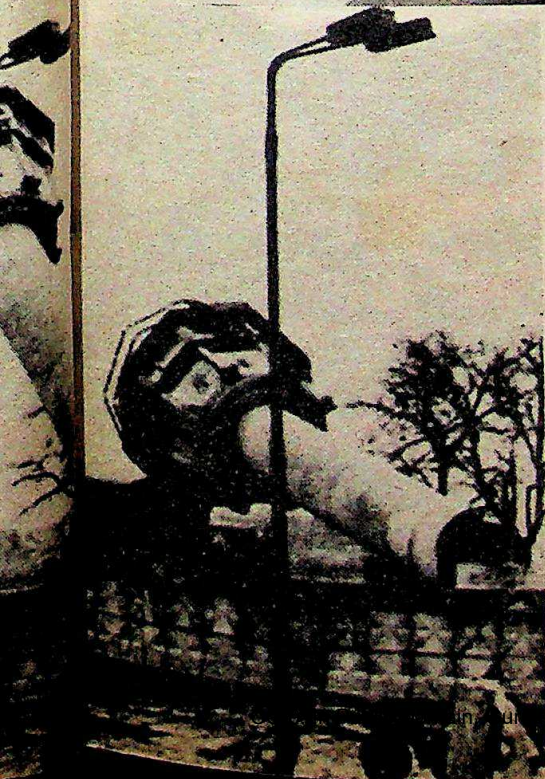
होली से दो सप्ताह पहले नंदिनी दफ्तर में बैठी फाइलें निबटा रही थी कि ट्रक चालक सरदारजी आ खड़े हुए और एक लिफाफा सामने रखते हुए बोले, "मैडम, मेरा ट्रक नहीं खाली किया जा रहा है. सामान उतराई के पांच सौ रुपए मांगते हैं, उमेश साहब. दो सौ में मानते नहीं."

"क्या?" नंदिनी की आंखें आश्चर्य से फैल गईं, "उमेश रिश्वत मांगते हैं?"

"जी...मैं शिकायत नहीं कर रहा. मेरा काम हो जाता तो दूसरी खेप लाता."

नंदिनी ने लिफाफा खोल कर देखा. उस में

तीन सौ रुपए थे. सरदारजी मुस्कुराए, "रख लीजिए. होली में बालबच्चों के काम आएंगे."

"शायद मेरे विषय में नहीं जानते." नंदिनी क्रोध से कांप उठी, "ले जाओ इसे. दूसरी खेप लाने के लिए तुम चाहते हो कि सामान शीघ्र उतरे. इसलिए रिश्वत देना चाहते हो ताकि अधिक आमदनी कर सको. जब तुम आमदनी के लिए दोतीन सौ उछाल सकते हो तो क्यों नहीं उमेश चारपांच सौ झटकना चाहेंगे? आदत तो तुम लोगों ने ही लगा रखी है और लेनदेन की परिपाटी शुरू की हुई है. जब काम नहीं बन रहा तो मेरे पास दौड़े आए हो. उठाओ यह रुपए."

सरदारजी के जाते ही नंदिनी ने फ़ोन से अभियंता उमेश के साथ संपर्क किया और उसे अपने कक्ष में आने को कहा.

उमेश आया तो नंदिनी गंभीर स्वर में बोल उठी, "शिकायत मिली है कि तुम ट्रक खाली कराने के रुपए लेते हो. यह काली कमाई है. दूसरे रूप में इसे रिश्वत कहा जाता है और मैं इसे पसंद नहीं करती क्योंकि इस से तुम्हारे चरित्र पर धब्बा लग सकता है."

"मैडम, क्षमा करें. यह देखना आप के अधिकार क्षेत्र में नहीं है." उमेश ने सीधे जवाब दे दिया, "देवेश साहब यह चाहते हैं और मैं उन्हें प्रसन्न रखने के लिए ऐसा करता हूं."

"यह क्यों नहीं कहते कि इस तरह तुम्हारी

नंदिनी अपने दागदार जीवन साथी की तरह अपनी छोटी बहन प्रीति के लिए जीवन साथी नहीं ढूंढ़ना चाहती थी. पर एक दिन अचानक जब प्रीति ने अपनी पसंद से उसे अवगत कराया तो वह सन्न सी रह गई. फिर क्या अपनी छोटी बहन को बगैर दाग का तोहफा देने का उस का सपना सच हो पाया?

भी कमाई हो जाती है."

"हां..."

"यह अच्छी बात नहीं है."

"आप देवेश साहब से पूछिए." कह कर उमेश बाहर निकल गया.

नंदिनी तिलमिला उठी. देवेश से वह पूछ नहीं सकती थी क्योंकि वह भी अधीक्षक थे, उसी के समकक्ष, उन्हीं के अधीन उमेश अभियंता पद

प्रीति लौटी तो उस के साथ उमेश को देख कर नंदिनी चौंक उठी, "क्या यही है, तुम्हारा पसंदीदा रंग प्रीति?"

पर कार्यरत था.
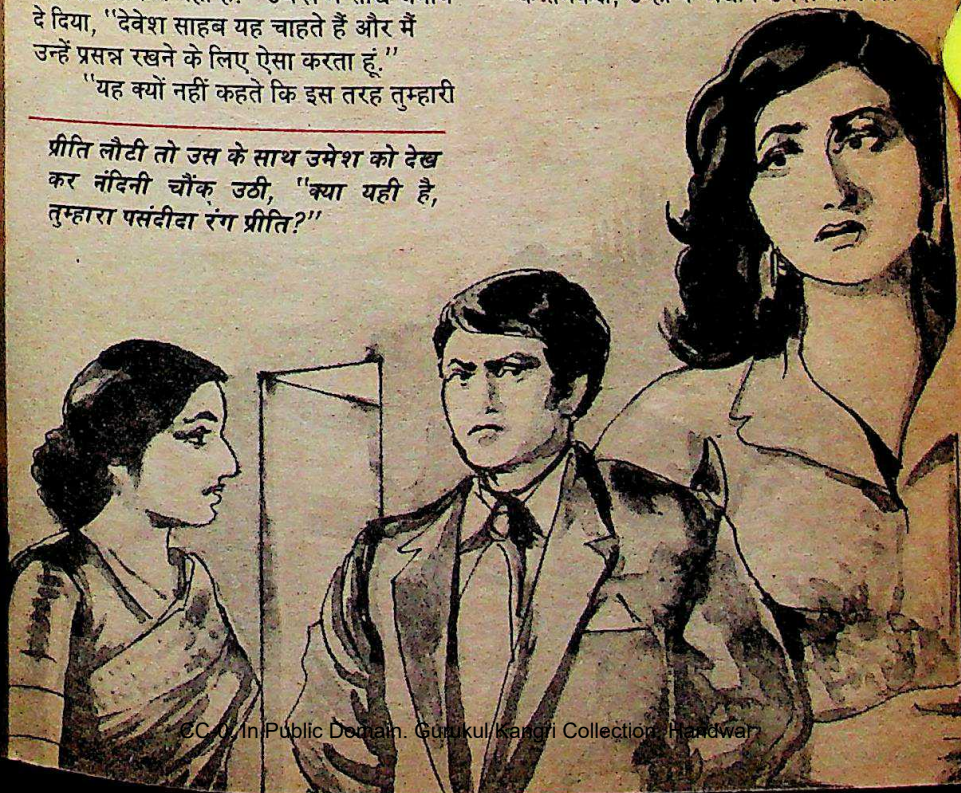
नंदिनी को गलत कार्य पसंद नहीं थे. वह इसे काले रंग सा समझती थी. वह छोटी बहन प्रीति से कहती भी थी, ''प्रीति सफेद वस्त्र को सफेद ही रखने की कोशिश करनी चाहिए. उस पर धब्बे पड़ने से लोगों की दृष्टि उसी पर पड़ी रहती है. और उस के विषय में कुछ न कुछ आवाजें उठने लगती हैं.''

''दीदी, मुझे भी प्रत्येक रंग पसंद हैं पर काले धब्बे नहीं.''

''तुम्हें मानना होगा कि काले धब्बे देख कर ही मुझे शेखर से अलग रहने की बात सोचनी पड़ी. उस ने अपने जीवन को किसी चटक रंग से रंगने की कोशिश की होती तो मैं खुद उसे रंगों से भर देती. पर उस ने अपने ही जीवन में ऐसेऐसे धब्बे लगाने चाहे कि मैं पसंद नहीं कर सकी. दफ्तर में वह कई युवतियों के पीछे अपने आप को बरबाद करता रहा. अपने और मेरे वेतन का भी दुरुपयोग करने में पीछे नहीं रहा. आज मैं अच्छे पद पर हूं और वह...?''

नंदिनी शेखर की यादों को झटक कर प्रीति की यादों में खो गई. वह चाहती थी कि प्रीति को ऐसा पति न मिले जो धब्बों से घिरा हो. वह उसे साफसुथरा पति देना चाहती थी. जो बेदाग जीवन जीना चाहता हो, शेखर सा धब्बेदार नहीं.

शेखर नंदिनी के जीवन में सफेद वस्त्र सा आया था. नंदिनी ने प्यार के रंग फेंकने शुरू किए थे. किंतु उन रंगों को शेखर पसंद नहीं कर सका था. उसे तो हर तरह के रंगों के छींटे चाहिए थे. वह युवतियों से संपर्क बनाने में सफल हो गया था. नंदिनी यह सहन नहीं कर पाई थी.

दूसरी बात यह कि शेखर रिश्वत के रुपयों से नंदिनी को दलदल की ओर ले जाना चाहता था. नंदिनी इसे स्वीकार नहीं कर सकी थी और उस से अलग हो कर दूसरे रास्ते पर चल पड़ी थी. एक नए रंग की खोज में. उसे ऐसा रंग चाहिए था जो उसे भी भाए और दूसरों को भी. वह ऐसे ही रंग से प्रीति को भी रंगना चाहती थी कि वह सदा खुश दिखे.

उस की दृष्टि में अनुरक्षण विभाग का युवा अभियंता प्रकाश था, जो प्रीति के उपयुक्त साबित हो सकता था. वह प्रकाश की चालढाल, रहनसहन और व्यवहार आदि के निरीक्षण में लगी हुई थी.

नंदिनी संध्या को घर आई तो प्रीति भी अपने कार्य स्थल से आ चुकी थी. वह नईनई नौकरी में लगी थी.

नंदिनी सोफे पर बैठी तो प्रीति भी सामने कुरसी पर बैठ गई.

नौकरानी समोसे और चाय तिपाई पर रख गई.

''क्या सोच रही हो दीदी?'' प्रीति ने जानना चाहा.

नंदिनी दफ्तर वाली घटना बता गई, ''ऐसे भी लोग हैं, इस दुनिया में जो मात्र वेतन से तसल्ली नहीं करते और ऊपरी आमदनी के लिए नैतिक स्तर से नीचे गिर जाते हैं.''

''दीदी, यह कह कर तुम मुझे जीजाजी की याद तो नहीं दिलाना चाहती?''

''हां, वैसा मर्द नहीं चाहिए जो रुपयों के पीछे स्वयं को बरबाद करे और पत्नी को भूल जाए. मैं चाहती हूं कि तुम्हें सही जीवन साथी मिले. जो वेतन से ही तुम्हें संतुष्ट रखे.''

''मुझे उस के वेतन से क्या मतलब दीदी! मुझे तो स्वयं अच्छा वेतन मिल रहा है.''

''तो क्या तू चाहेगी कि तेरा पति अपने वेतन को गलत जगह लगाता रहे और तू शांत हो कर देखती रहे?''

''नहीं.''

''तुम अपने और पति के वेतन से गृहस्थी सही ढंग से चलाने का रास्ता तो निकाल ही सकती हो?''

''हां दीदी. मैं ने तो ऐसा ही करार किया है.''

''किस से?'' नंदिनी चौंक उठी.

प्रीति को भी अपनी गलती का एहसास हुआ. जो बात वह कुछ महीनों से छिपाती चली आ रही थी, वह उस के होंठों पर आ गई थी. उस ने बता देना ही ठीक समझा, ''दीदी, क्षमा करना. मैं ने अपने लिए किसी को तलाश लिया है.''

नंदिनी तिलमिला उठी. उस ने तो प्रीति के लिए प्रकाश को सोच रखा था. फिर भी वह प्रीति की पसंद देखने के लिए लालायित हो उठी. बोली, ''प्रीति, मैं उस से मिलना चाहती हूं. होने से पहले मिलाओ, ताकि देख सकूं कि तुम ने कैसे रंग का चुनाव किया है.''

''मैं उसे एक घंटे में ले आती हूं. मुझे तुम्हारे ही आदेश की प्रतीक्षा थी.'' कहती हुई प्रीति बाहर निकल गई.

"यह मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं है. अंतिम निर्णय बंबई में रह रहे मातापिता के ऊपर है. हां, मेरा समर्थन जरूरी है. फिर भी एक बात कहना चाहूंगी उमेश कि तुम चूने की तरह हो और प्रीति हलदी सी. चूना मुंह काटता है और हलदी चेहरे के सौंदर्य को बढ़ाती हैं. किंतु दोनों के मिलने से रंग लाल हो जाता है और उसे चोट

नंदिनी घर आ कर प्रीति से पूछ बैठी, "इतने दिनों बाद उमेश से तुम्हारी दोस्ती कैसे चल पड़ी?"

नंदिनी ने एलबम निकाल लिया. उस में शेखर के साथ उस के विवाह के फोटो थे. कितना अच्छा लगा था, शेखर पहलेपहल. कितना सभ्य और सुशील लगता था. विवाह के बाद ही वह जान सकी थी कि उस का चरित्र घिनौना है. कभीकभी आदमी को पहचानना वास्तव में बहुत मुशकिल होता है.

प्रीति लौटी तो उस के साथ उमेश को देख नंदिनी चौंक उठी, "क्या यही है, तुम्हारा पसंदीदा रंग प्रीति?"

"हां दीदी."

उमेश चकित नेत्रों से नंदिनी को देखे जा रहा था. उसे भी आशा नहीं थी कि प्रीति नंदिनी की बहन हो सकती है.

"क्या तुम भी प्रीति को चाहते हो, उमेश?"

"जी...जी हां," उमेश हकलाया, "आशा है, आप व्यवधान नहीं डालेंगी.

लगे स्थल पर लगाने से दर्द भी दूर होता है. प्रीति ने तुम्हें सफेद रंग में तो देखा है पर मैं तुम्हारे अवगुणों को देख चुकी हूं, जो मेरे मन में शंकाएं उत्पन्न कर रहे हैं."

"दीदी बात क्या है?" प्रीति ने जानना चाहा. नंदिनी बोल उठी, "प्रीति उमेश भी सदा ऊपरी आमदनी के पक्ष में रहता है तथा अपने अफसर को खुश करने के लिए उस की खामियों को स्वीकारता है. ऐसे लोग ही अफसर को प्रसन्न रखने हेतु कभीकभी अपनी पत्नी तक को उस की सेवा में लगा देते हैं."

नंदिनी ने दफ्तर वाली घटना बता दी. प्रीति उमेश को उपेक्षित दृष्टि से देख कर बोली, "ऐसी बात है तो मुझे पाने के लिए तुम्हें प्रमाणित करना होगा कि तुम स्वयं को परिवर्तित कर सकते हो. उस के बाद ही मैं तुम्हारे विषय में निर्णय ले सकती हूं."

प्रीति की बात सुन कर उमेश सन्न रह

गया. उसे आशा थी कि होली के समय ही उस का रंग फीका पड़ जाएगा.

ठीक होली के दिन ही देवेश की सफेदी पर धब्बे लगे. उस दिन अनुमंडलीय प्रबंधक ने गुप्तचरों के माध्यम से पता लगाया कि देवेश ऊपरी आमदनी के लिए किस तरह उत्पादित वस्तुएं चोरीछिपे पार करता है व बाहर से आए सामान को पास करने के लिए रिश्वत लेता है.

उसी दिन उस से जबरदस्ती त्यागपत्र दिलवा दिया गया और उस विभाग को देखने का भार भी नंदिनी पर आ गया.

नंदिनी उमेश से पूछ बैठी, ''उमेश, तुम ने गलत कार्य का नतीजा देख लिया न? देवेश साहब को अच्छा वेतन मिलता था, कमाई के लोभ ने बरखास्त करा दिया. अब न वेतन रहा, न ऊपरी कमाई. उन के चरित्र पर जो धब्बा लगा है, वह मिटने वाला नहीं है. मैं नहीं चाहती कि ऐसा ही धब्बा तुम पर भी लगे.''

उमेश के चेहरे का रंग फीका पड़ गया. वह चिंतित दिखाई दे रहा था.

एक दिन नंदिनी दफ्तर में बैठी फाइलें निबटा रही थी कि राम सिह ठेकेदार आया. सलाम करने के बाद बोला, ''मैडम, उमेश साहब मेरा सामान पास नहीं कर रहे हैं. कृपया आप सहयोग करें, नहीं तो मेरी फर्म द्वारा उत्पादित वस्तुएं बेकार हो जाएंगी और मुझे मुनाफे के बदले घाटा उठाना पड़ेगा.''

ठेकेदार ने एक लिफाफा सामने रख दिया. उस में दो हजार रुपए थे.

नंदिनी का एकदम पारा चढ़ गया लेकिन फिर भी संयत स्वर में बोली, ''आप यह रुपए मुझे न दे कर उमेश साहब को देते तो शायद माल पास हो जाता.''

''वह नहीं लेते.''

''क्यों? क्या और रुपए मांगते हैं?''

''नहीं ईमानदार बने बैठे हैं.''

''तो आप लिफाफा उठा लीजिए.'' कह कर नंदिनी ने उमेश को बुलाया.

उमेश आते ही बोला, ''मैडम, ठेकेदार का सामान घटिए दर्जे का है. उस में गुणवत्ता का ध्यान नहीं रखा गया है. मैं ने पास कर भी दिया तो यह फैक्टरी के लिए लाभकारी सिद्ध नहीं होगा. आखिर इन की फर्म के घटिए माल से हमारी फैक्टरी को क्यों घाटा उठाना पड़े?''

''शाबाश,'' नंदिनी खुश हो गई. फिर गंभीर हो कर रामसिह से बोली, ''आप घटिया दर्जे का माल मुहैया करा कर रुपए बनाना चाहते हैं. यह नहीं हो सकता. आप जा सकते हैं.''

रामसिह के जाने पर नंदिनी उमेश से बैठी, ''तुम चाहते तो पांच हजार भी ले कर पास कर सकते थे.''

''पर मुझे नौकरी नहीं गंवानी है.''

''बस?''

''नहीं, उस से भी बढ़ कर अपने चरित्र पर धब्बा नहीं लगाना है. मैं देवेश साहब की तरह बदनाम नहीं होना चाहता. मैं इज्जत से जीना चाहता हूं. देवेश साहब ने अपने प्रभाव के बल पर मुझे गलत रास्ते पर डाला था और नौकरी जाने के डर से उन की हर बात मानता रहा था. दर असल अफसर के गलत होने पर मातहत भी गलत और मनमाने काम करने लगते हैं.''

उमेश ने आगे कहा, ''इधर आप के स्वभाव का असर मुझ पर हो रहा है. अतः सही राह पर चल पड़ा हूं और ऐसा रंग चाहता हूं जो मेरे जीवन को रंगीन बना दे, धब्बेदार नहीं.''

नंदिनी का हृदय खुशी से झूम उठा. वह महसूस करने लगी कि उस ने उमेश को कितना गलत समझ रखा था, ठीक शेखर की तरह. पर समय की ठोकर ने उसे सही राह दिखा दी थी.

छत से सादा पानी
फेंक रहे हो. जरा र...
घंटे ठहरो.

उस ने पूछ लिया, 'प्रीति से मिलते तो क्या ...हीं?''

''नहीं.''

''क्यों?''

''वह भी तो नहीं मिलती.''

''क्यों?''

''उस की नजर में मुझ पर रिश्वतखोरी के ...ब्बे लगे हुए हैं.''

''तुम जा सकते हो.'' कह कर नंदिनी प्रीति ...विषय में सोचने लगी.

प्रीति के लिए उस ने जिस प्रकाश को देखा ..., उस का विवाह पिछली होली में हो चुका था. ...र प्रीति ने भी उमेश में रुचि लेनी छोड़ दी ...ी.

'तो क्या उसे अपनी ओर खींचना चाहिए?' ...दिनी सोचने लगी, 'चारपांच साल ही तो छोटा ...गा, लेकिन इस से क्या? लेकिन पद में तो ...टा है, फिर भी क्या हुआ? किंतु लोग क्या ...हेंगे?' मन की इच्छाओं को झटक कर वह ...खर की बेईमानी को कोसने लगी, जिस ने उसे ...केलापन दिया था.

घर आ कर नंदिनी ने प्रीति से उमेश के ...षय में बताया और कहा कि वह ईमानदार ...ता जा रहा है.

''मैं कैसे मान लूं दीदी?'' प्रीति प्रश्न कर दीदी, ''अभी वह तुम्हारे अधीन कार्यरत है, अतः दिखावा कर रहा होगा. उसे स्वतंत्र विभाग मिल जाए तो हो सकता है फिर रिश्वत लेने लगे. आदमी का स्वभाव कभी नहीं बदलता. जीजाजी ने अपने को बदला होता तो आज तुम्हारे आगे नाक रगड़ते होते.''

नंदिनी उस के तर्क को काट नहीं सकी.

कुछ साल बाद ही अनुमंडलीय प्रबंधक ने नंदिनी की सिफारिश और कार्यों से प्रसन्न हो कर उमेश को तरक्की दे दी. उसे अधीक्षक बना दिया गया. साथ ही स्वतंत्र विभाग संभालने को कहा गया. नंदिनी को भी तरक्की मिली और वह उप प्रबंधक हो कर दूसरे विभाग में चली गई. उस ने उमेश को बधाई देते हुए कहा, ''उमेश अब तुम मेरे अधीक्षक क्षेत्र में नहीं हो. तुम्हारा विभाग भी स्वतंत्र है. तुम चाहो तो ऊपरी आमदनी कर सकते हो.''

उमेश कुछ नहीं बोला. मुसकरा कर रह गया. इस का अर्थ नंदिनी समझ नहीं सकी. उस के अंदर आशंकाएं घिरने लगीं. ठीक प्रीति की तरह ही कि कहीं उमेश फिर गलत रास्ते पर न चल दे.

एक दिन नंदिनी स्कूटर से घर जा रही थी कि प्रीति के साथ उमेश को देख चौंक पड़ी. उसे लगा कि उमेश ने प्रीति को फांसना शुरू कर

दिया है. वह डरी 'कहीं बदले की भावना से ग्रसित हो कर प्रीति पर धब्बा न लगाए.'

नंदिनी घर आ कर प्रीति से पूछ बैठी, "इतने दिनों बाद उमेश से तुम्हारी दोस्ती कैसे चल पड़ी?"

"पूर्व एहसासों के चलते."

"वह शेखर सा गलत भी हो सकता है, प्रीति. उसे स्वतंत्र विभाग मिला हुआ है. अधिक आमदनी के अवसर भी प्राप्त हैं."

प्रीति कुछ नहीं बोल सकी.

नंदिनी को चिंता होने लगी. वह बोली, "प्रीति, जीवनसाथी का चुनाव सोचसमझ कर करना चाहिए."

"मैं प्रयास में हूं दीदी. दोतीन युवक मेरी दृष्टि में हैं."

एक दिन प्रबंधक ने फोन से नंदिनी को बताया कि उमेश के कार्यों से प्रसन्न हो कर उसे उप प्रबंधक बना दिया गया है तथा सामुदायिक विकास में भेजा जा रहा है.

नंदिनी की आंखें आश्चर्य से फैल गईं. उमेश अपनी सचाई, कर्मठता और लगन से आगे बढ़ता जा रहा था.

वह उस के दफ्तर में पहुंची तो उस ने स्वागत भाव से कहा, "आइए बैठिए."

"तुम्हारी तरक्की पर बधाई देने आई हूं."

"धन्यवाद. अब आप शिकायत तो नहीं करेंगी कि मैं ऊपरी आमदनी के पक्ष में जा सकता हूं. क्योंकि सामुदायिक विकास में इस के अवसर नहीं हैं."

"मैं मान गई कि तुम ने अपने जीवन को सही दिशा की ओर मोड़ दिया है."

"वह दिशा आप ने ही दिखाई है. आभारी हूं."

"तुम वेतन से ही अच्छी गृहस्थी बसाने में सक्षम हो."

"जिसे गृहिणी के रूप में चाह रहा हूं, वह मिले तब न."

"किसे?"

"प्रीति को."

"क्या तुम उस के जीवन को रंगों से भर सकोगे, उमेश?"

"हां, इसी आशा में तो छः सालों की होली गुजर चुकी है. मैं विश्वास दिलाता हूं कि अपने प्यार में धब्बा नहीं लगने दूंगा."

"तो ठीक है."

नंदिनी घर आई तो प्रीति ने बताया, "दीदी, मैं ने जीवनसाथी चुन लिया है. और होली के दिन उसे तुम से मिलाऊंगी."

नंदिनी चकित रह गई. उसे आशा नहीं कि प्रीति बिना उस से सलाह किए जीवन सा[थी] चुन लेगी. अब वह उमेश को क्या जवाब दे[गी]. उसी की आशंकाओं ने प्रीति को उमेश से दू[र] किया था.

"वह कौन है, प्रीति? होली से पहले मिलाओ."

"लाने का प्रयास करूंगी."

"तुम्हें उमेश भी याद कर रहा था."

"करने दो."

उस दिन से नंदिनी उमेश से मिलने का साहस न कर सकी. कतराती रही कि कहीं वह प्रीति के विषय में न पूछ ले. एकदो दिन उस के फोन भी आए तो उस ने गोलमटोल उत्तर दे दिया.

एक दिन उमेश ने बताया, "मैं होली की पूर्व संध्या को आप के यहां आ रहा हूं."

नंदिनी कांप उठी, 'क्या कहेगी उस से? य[ही] यही कि प्रीति ने अपना जीवन साथी चुन लिया है.'

उसे अपना ही हृदय धब्बेदार लगने लगा. वह उमेश से स्पष्ट क्यों नहीं बता पा रही थी. 'मेरे घर न आओ. मेरे यहां तुम्हारे उपयुक्त रं[ग] नहीं मिल सकेगा. हो सकता है कि मेरे और प्री[ति] के विरोधाभासों के रंग तुम पर बदनुमा धब्बे डाल जाएं.'

होली की पूर्व संध्या को उमेश आया. प्री[ति] घर में ही थी. उमेश ने रुमाल से अबीर निका[ला] और नंदिनी के पैरों पर रख कर प्रणाम किया.

प्रीति भी उसी रुमाल से अबीर ले कर नंदिनी के पैरों पर रखने लगी.

"यह क्या?" नंदिनी चकित रह गई.

"दीदी, उमेश को ही तो मैं ने जीवन सा[थी] चुना है?"

"क्या... सच?" नंदिनी खुशी से झूम उ[ठी].

"मैं विश्वास दिलाता हूं, दीदी कि प्रीति [पर] पक्का रंग ही डालूंगा, काला धब्बा नहीं लगाऊंगा." कह कर उमेश ने शेष अबीर प्री[ति] पर उछाल दिया.

नंदिनी ने प्रीति और उमेश को बांहों के घेरे में ले लिया और मिठाई खिलाने दूसरे कम[रे] में ले गई. तीनों की खुशियों में कहीं भी धब्बे नहीं थे.

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

इधर तो हमारे अध्यापक महोदय नागरिक शास्त्र पढ़ा रहे थे. उधर एक छात्र कक्षा में बैठ कर न जाने क्या गुनगुना रहा था. अतः अध्यापक उस छात्र को कक्षा में खड़ा रहने की सजा दे कर पुनः पढ़ाने लगे. पाठ समाप्त होने पर अध्यापक महोदय ने स्वयं उस से गीत सुनाने को कहा.

दरअसल वह स्वयं को बड़ा गायक समझता था, वैसे बेसुरा गाता था. उस ने क्रोध में कहा, कि उसे कोई गीत नहीं आता. उस की जिद देख कर अध्यापक महोदय ने व्यंग्य में कहा, "देखो बेटा,तनी हुई गरदन देख कर लगता है कि तुम्हें कुछ गाना आता हो या न आता हो तुम यह जरूर गा सकते हो कि, सिर कटा सकते हैं लेकिन सिर झुका सकते नहीं."

यह सुनते ही सब छात्र हंस पड़े और उस छात्र का सिर स्वतः झुक गया.

—अनूप शर्मा

*

मेरी हिंदी की अध्यापिका कुछ विनोदी स्वभाव की हैं. एक दिन जब वह कक्षा में कुछ लिखा रही थीं तब एक छात्रा कापी में न लिख कर अलग कागज पर लिख रही थी. उसे संबोधित करते हुए अध्यापिका बोलीं, "सुनीता, तुम्हारे पास लिखने के लिए एक कापी भी नहीं है."

फिर वह सभी छात्राओं से कहने लगीं, "सभी छात्राएं चंदा कर के एक कापी ला कर सुनीता को देंगी."

दूसरे दिन अध्यापिका ने पढ़ाने के लिए जो पुस्तक निकाली वह काफी जीर्णशीर्ण थी. इस पर उन्होंने कहा, "यदि कोई मेरी इस पुस्तक की अच्छी सी जिल्द बांध कर ला सके तो मैं उस की आभारी रहूंगी."

"मैडम, हम आप की किताब के लिए भी चंदा कर देते हैं." छात्राओं ने जवाब दिया.

यह सुन कर अध्यापिका ऐसी झेंपी कि उन्होंने उस दिन कक्षा में पढ़ाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं किया.

— तरजमा बानू

*

हमारे स्कूल के संस्कृत अध्यापक जब भी किसी विद्यार्थी से कोई प्रश्न पूंछते तो आदतन उस की कलाई घुमा देते.

एक बार उन्होंने एक छात्र से उस की कलाई मोड़ते हुए विषय से हट कर एक प्रश्न पूछा, "भारत का सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज कौन है?"

छात्र ने तुरंत उत्तर दिया, "गुरुजी, आप."

इतना सुनते ही सभी छात्र ठहाका लगा कर हंस पड़े. जब बात अध्यापक की समझ में आई तो वह बुरी तरह झेंप गए और उस के बाद उन्होंने कभी किसी की कलाई नहीं मोड़ी.

—अवधेश त्रिवेदी ●

सुरेश ने बीमा की एजेंसी ली थी. रोजशाम वह मित्रों के साथ क्लब में कुछ समय बिताता था. नईनई एजेंसी थी, इस से उत्साह बहुत था. एक दिन ऐसे ही हर कोई अपनेअपने क्रियाकलापों के बारे में बतला रहा था कि एक व्यापारी का नाम आया. नाम सुनते ही हर कोई चौंक पड़ा, ''अरे, तो तुम भी उस के चक्कर में आ गए?''

कुछ ने कहा, ''तीनचार बार उस के यहां चक्कर काट कर निराश होना पड़ा, हाथ ही नहीं रखने देता.''

चुनौती

कहानी • कि.स. भटनागर

सुरेश बोला, "क्या बात करते हैं, आप लोग. तीनतीन बार जा कर आप खाली हाथ लौट आए? मैं भी कोशिश करूंगा. मुझे उस का पता दीजिए."

सब कहने लगे, "यह मुंह और मसूर की दाल. हम वरिष्ठ व अनुभवी एजेंट तो अपना मुंह ले कर चले आए, तुम कल के छोकरे जा कर उस का बीमा करोगे."

सुरेश कुछ देर सुनता रहा. फिर बोला, "आप लोग गरम क्यों होते हैं. बीमा करने हमें ग्राहकों के पास जाना पड़ता है. प्रतिदिन किसी न किसी के यहां तो जाना आवश्यक है, आप

बीमा एजेंटों को पास न फटकने देने वाले सेठ रामदास का बीमा करने की जब सुरेश ने अपने साथी एजेंटों से बाजी लगाई तो उसे केवल अपने साहस और धैर्य पर विश्वास था जिस का अटूट परिचय भी उस ने दिया और अंततः अपने लक्ष्य में सफल भी हुआ. पर उसे मुकाम तक पहुंचने में किनकिन दुर्गम रास्तों से गुजरना पड़ा?

लोग इस व्यापारी से अपना सिर खपा चुके हो. आप के काबू नहीं आया तो इस का यह मतलब तो नहीं कि वह किसी के काबू आ ही नहीं सकता. मैं भी कोशिश कर के देखूंगा."

"अरे, वह काबू में आने वाला नहीं. बेकार दीवार से सिर मत टकराओ. उतना प्रयास कहीं और करोगे तो कुछ आमदनी भी होगी. अभी तो आप नएनए हैं, ऐसे ग्राहकों में फंस कर अपना मनोबल न गिराएं." एक मित्र बोला.

"यह मेरा अपना मामला है. मैं ने तय कर लिया है कि इस व्यापारी से अवश्य मिलना है. बहरहाल, आप लोगों की सलाह के लिए धन्यवाद." सुरेश ने नम्रतापूर्वक कहा.

"अच्छा तो अपने मन की करो. पर यदि उस का बीमा न कर सके तो?" दूसरे मित्र ने कहा.

"यदि दो माह के अंदर मैं ने यह काम न किया तो एजेंसी छोड़ दूंगा. यदि काम ले आया तो आप क्या देंगे?"

"एक शानदार पार्टी." सभी ने उत्साहपूर्वक कहा.

सब ने देखा, पर किसी को विश्वास ही नहीं हुआ कि वह कागज का टुकड़ा नहीं, बल्कि उसी व्यापारी का चेक था.

"ठीक है." सुरेश ने मुसकराते हुए कहा.

इस घटना के तीसवें दिन जब सुरेश आया तो उस के चेहरे पर चमक थी. पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. पर वह अपने मनोभाव दबाने का प्रयास कर रहा था. आ कर चुपचाप क्लब में बैठ गया. उसे देखते ही चुनौती देने वाले साथियों ने घेर लिया.

"टकरा आए अपना सिर उस कंजूस से?" श्याम ने पूछा.

"तभी तो एक माह तक मुंह नहीं दिखाया. अब तो एजेंसी छोड़ने की स्थिति आने वाली है." अशोक ने व्यंग्यपूर्वक कहा.

"अरे, हम लोगों की बात नहीं मानी, अब मुशकिल में पड़ गया न? खैर अभी 30 दिन बाकी हैं." अनूप ने भी मुसकराते हुए सुरेश को छेड़ा.

जब हर कोई अपनीअपनी कह चुका तो सुरेश ने अपनी जेब से एक कागज निकाला और मेज पर रख दिया.

सब ने देखा, पर किसी को विश्वास ही नहीं हुआ कि वह कागज का टुकड़ा नहीं, बल्कि उसी व्यापारी का चेक था. बीमे की किश्त थी और वह भी पांच हजार रुपए की. दोतीन लोगों ने तो शंका प्रकट कर दी कि कहीं जाली तो नहीं है.

"आप लोगों की शंका निराधार नहीं है. इस चेक के साथ मैं बाजी जीत गया. आप अपनी शर्त पूरी कीजिए पर क्योंकि आप को शंका है, अतः चारछः दिन के बाद सही, तब तक इस का पैसा भी जमा हो जाएगा.

यह इतनी बड़ी बात थी कि लोगों के गले नहीं उतर रही थी. तय हुआ कि यदि चेक का भुगतान हो गया तो पांचवें दिन पार्टी होगी. चेक तो असली था. सब ने सुरेश को बधाई दी. शानदार पार्टी भी हुई.

शुरूशुरू में बातों ही बातों में सुरेश ने चुनौती स्वीकार तो कर ली थी. पर जब गहराई में गया तो लगा कि वह एक असंभव काम में फंस गया है. काम आरंभ किए चंद माह हुए थे.

दावपेंच भी नहीं मालूम थे, मुशकिल से गुजारे लायक ही कमा पाता था. ऊपर से यह शर्त लगा बैठा. फिर सोचा, यदि प्रयास कर यह असंभव कार्य संभव हो जाता है तो धाक जम जाएगी. फिर और काम पाने में आसानी होगी. उस ने दृढ़ निश्चय किया कि यह शर्त जीतनी ही है और वह तैयारी में जुट गया.

सुरेश ने अपने कुछ साथियों से बात की, कुछ पुस्तकें पढ़ीं. उस ने पढ़ रखा था कि अवचेतन मन एक ऐसी कार्यशाला है, जो 24 घंटे काम करती है. यदि उसे एक बार समस्या सौंप दी तो वह उसे स्वीकार कर उसे हल करने में जुट जाती है. इसलिए वह प्रतिदिन मन को अपनी इच्छा प्रेषित करता रहता था. उस ने अपना यह निश्चय आईने पर, अपनी मेज के नीचे और शयनकक्ष में लिख कर रख छोड़ा था. इस से उसे उठतेबैठते अपने निश्चय की याद आती रहती थी. तीनचार दिन इस तरह मनोबल बढ़ा तो वह सेठ रामदास के यहां गया. अपना परिचय कार्ड भेजा और बुलाए जाने की प्रतीक्षा करने लगा.

करीब 15 मिनट बाद सेठजी ने सुरेश को अंदर बुलाया. औपचारिकता निभाने के बाद उस ने अपना प्रयोजन बतलाया.

सुरेश की बात सुन कर सेठ रामदास ने कहा, "आप की कंपनी के अनेक प्रतिनिधि हमारे पास आ चुके हैं. हमारा काफी समय वे बेकार कर चुके हैं. पर आप की कंपनी है कि पीछा ही नहीं छोड़ती. सौ बार कह दिया कि मुझे बीमा नहीं कराना, वही बात आप से भी कह रहा हूं. मेरा समय बरबाद न करें."

"मैं न अपना समय नष्ट करने आया हूं और न ही आप का. मेरा तो अपना व्यवसाय है. मुझे तो अपना समय किसी न किसी के साथ लगाना ही है. हो सकता है, मुझ से पहले आने वाले मित्र आप का समाधान न कर पाए हों. मैं तो आप का समाधान करने आया हूं. आप की इच्छा है, बीमा कराएं या न कराएं." सुरेश ने नम्रतापूर्वक कहा.

"कोई बात नहीं, लेकिन आप की इच्छा पर मेरा समाधान नहीं होने वाला." सेठ ने मुसकराते हुए कहा.

कुछ देर बात कर सुरेश लौट आया, लेकिन दूसरे दिन फिर जा पहुंचा. अपना कार्ड भेज कर प्रतीक्षा करने लगा. सेठ ने कार्ड देखा तो गुस्से में आधे घंटे बाद उसे बुलाया. पर इस से सुरेश को कोई अंतर न पड़ा. वह तो समय का पूर्ण उपयोग करना जानता था. हमेशा अपने कार्य से संबंधित एक पुस्तक साथ रखता था. प्रतीक्षा का समय पढ़ कर बिता देता. इस
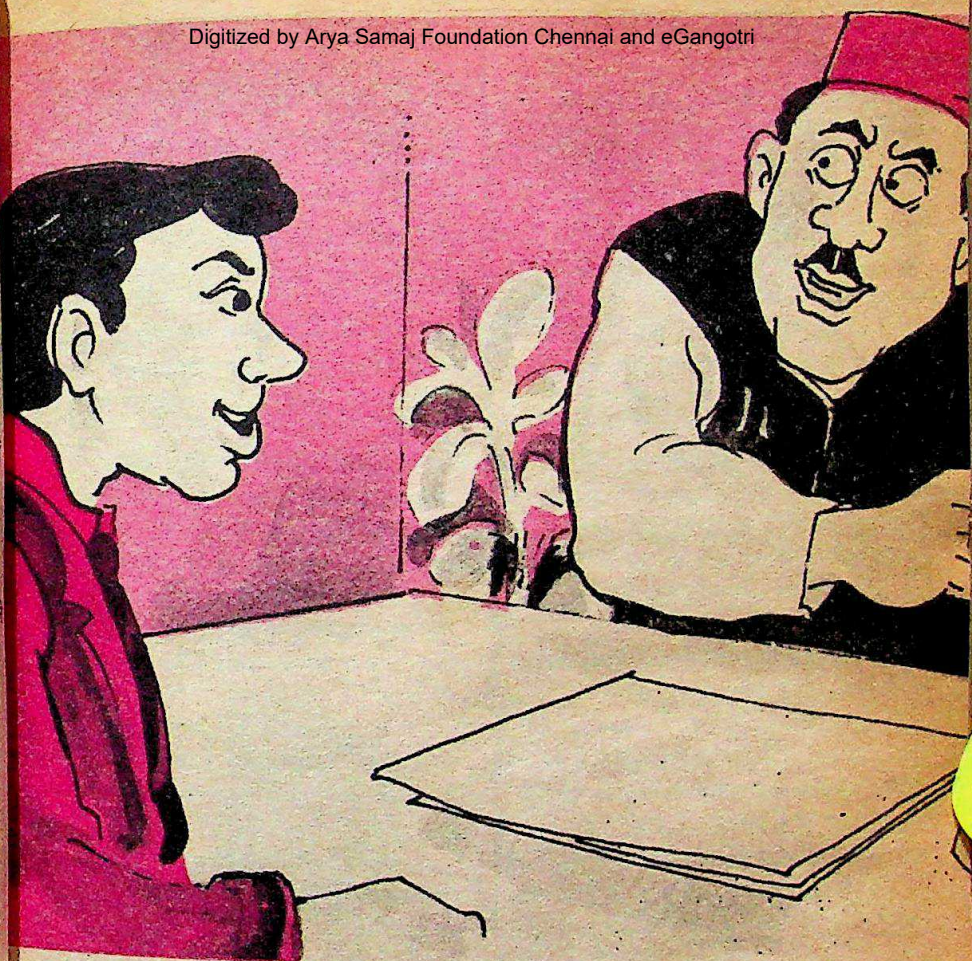
"आप ने मुझे तंग कर रखा है. अब तो यही रह गया है कि दरबान से कह दूं कि आप का कार्ड मेरे पास भेजे ही नहीं," सेठ ने कहा.

से दो स्पष्ट लाभ थे. एक तो उस का ज्ञान बढ़ता था, दूसरे प्रतीक्षा का समय भारी नहीं पड़ता था.

सुरेश के भीतर जाते ही सेठ ने कहा, "कल आप से कह दिया था कि मुझे बीमा नहीं कराना. कारण भी बतला दिए थे. आज आप पुनः आ गए, अजीब मुसीबत कर रखी है."

"आप की शंकाओं का समाधान करने आया हूं, बीमा करने नहीं." सुरेश ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"हां, तो कहिए." सेठ ने उदासीन स्वर में कहा.

कुछ देर बात करने के बाद सेठ ने कुछ और शंकाएं उठाईं और सुरेश लौट आया.

तीसरे दिन वह पुनः गया. सेठ को कार्ड देखते ही आग लग गई. "आप फिर आ गए. कितने बेशर्म हैं. आप अपना समय बरबाद कर सकते हैं. लेकिन मेरा क्यों कर रहे हैं? आज क्या कहना है, आप को?"

"आप की कल की आपत्तियों का समाधान करना है, इसलिए चला आया. मैं आप से बीमा लेने को नहीं कहूंगा."

कुछ देर बातें कर सुरेश वापस हो लिया.

चौथे दिन वह फिर गया. सेठ ने डेढ़ घंटे के बाद उसे बुला कर कहा, "आप ने मुझे तंग कर रखा है. अब तो यही रह गया है कि

दरबान से कह दूं कि आप का कार्ड मेरे पास भेजे ही नहीं."

सुरेश ने धीरे से कहा, "पर क्या यह ठीक होगा? मन में शंकाएं पालना ठीक नहीं. इस से मन में अशांति रहती है. आप ने जो बात कल उठाई थी, उस का उत्तर दे कर मैं फौरन चला जाऊंगा."

इस तरह सुरेश प्रतिदिन जाता रहा. तीनतीन घंटे बैठता, पर जाना बंद नहीं किया. बाद में तो सेठ उसे शाम तक बैठाने लगे थे. फिर पांच मिनट समय देते. कई बार उस की फाइल फेंक दी, एक बार तो धक्के मार कर बाहर करने का प्रयास किया पर सुरेश धुन का पक्का था. उस ने तो एक माह का समय सेठ की सेवा में लगाने का निश्चय कर रखा था. उसे समय की बरबादी की चिंता न थी. वह सेठ की आपत्ति सुनता और आ कर उस का समाधान तलाशता. फिर जा कर सेठ का समाधान करता.

इस तरह 28 दिन बीत गए. तीसवें दिन सेठ ने अपनत्व के भाव से बात की.

"सुरेशजी, 30 दिन हो गए आप को मेरे पास आते हुए. मैं ने आप को धेले का काम नहीं दिया. आप क्यों अपना समय नष्ट कर रहे हैं? मुझे अब छोड़ दीजिए. मैं बीमा नहीं कराऊंगा. मुझे 'बीमा' शब्द से चिढ़ है."

"सेठजी, मेरा समय तो जरा भी नष्ट नहीं हुआ है. यह तो एक तरह से मेरा प्रशिक्षण काल रहा है. आप ने मुझ से प्रतीक्षा करवाई, वह समय मैं ने अध्ययन में लगाया. कई उपयोगी पुस्तकें पढ़ डालीं. दूसरे, आप से बात कर मुझे दर्जनों आपत्तियों का ज्ञान हुआ, जो मेरे ग्राहक पेश कर सकते थे. उन का अध्ययन कर आप का समाधान किया. यह सब मुझे भविष्य में ग्राहकों को विश्वास में लेने में सहायक होगा. मेरा कोई नुकसान नहीं हुआ. मैं तो फायदे में ही रहा हूं. मैं तो आप का आभार मानता हूं कि आप ने मुझे एक माह में अपने कार्य के लिए इतना तैयार कर दिया है, जितना मैं दो साल में न हो पाता." सुरेश ने मुसकराते हुए कहा.

"कमाल है, तुम मेरे आज तक के व्यवहार के लिए आभार प्रकट कर रहे हो," सेठ ने आश्चर्य से कहा, "पर बेटे, मैं ने भी तुम से बहुत कुछ सिखा है. तुम मेरे गुरु हो. लक्ष्य को पाने के लिए किस दृढ़ता, लगन व धैर्य की आवश्यकता होती है, यह मैं ने तुम से सीखा. समय का सदुपयोग करना भी तुम से सीखा."

"मैं भी आभारी हूं, तुम्हारा. यह रही मेरी गुरुदक्षिणा." कहते हुए सेठ ने बीमे की किस्त के रूप में पांच हजार रुपए का चेक सुरेश को दिया.

यही वह चेक था, जिस पर सुरेश के सभी साथी जाली होने का संदेह कर रहे थे.

विश्व का सब से बड़ा शिशु

अफ्रीका में डरबन नामक शहर के निकट स्थित 'सिपेटु' हस्पताल में जन्म लेने वाले एक शिशु ने विश्व का सब से बड़ा शिशु होने का गौरव प्राप्त किया है. इस का नाम विश्व कीर्तिमानों की गिनीज बुक में दर्ज हो गया है.

यह शिशु अनेक असाधारण विशेषताओं से युक्त है. जन्म के समय इस का भार 10 किलो 800 ग्राम था जबकि साधारण शिशु का जन्म के समय भार औसतन 3 किलोग्राम होता है. इस की लंबाई 69 सें.मी. थी, जबकि औसतन 50 सें.मी. होती है. जन्म के एक दिन बाद ही इस ने प्याला मुंह से लगा कर दूध पीना आरंभ कर दिया था.

24 जून 1982 को पैदा हुआ यह शिशु जब अपनी मां के साथ बंबई आया तो उस समय इस की आयु चार वर्ष थी और वजन 38 किलो 500 ग्राम हो गया था. यह बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के साथसाथ मानसिक रूप से भी अपनी ही आयु के अन्य बच्चों से कहीं अधिक योग्य है.
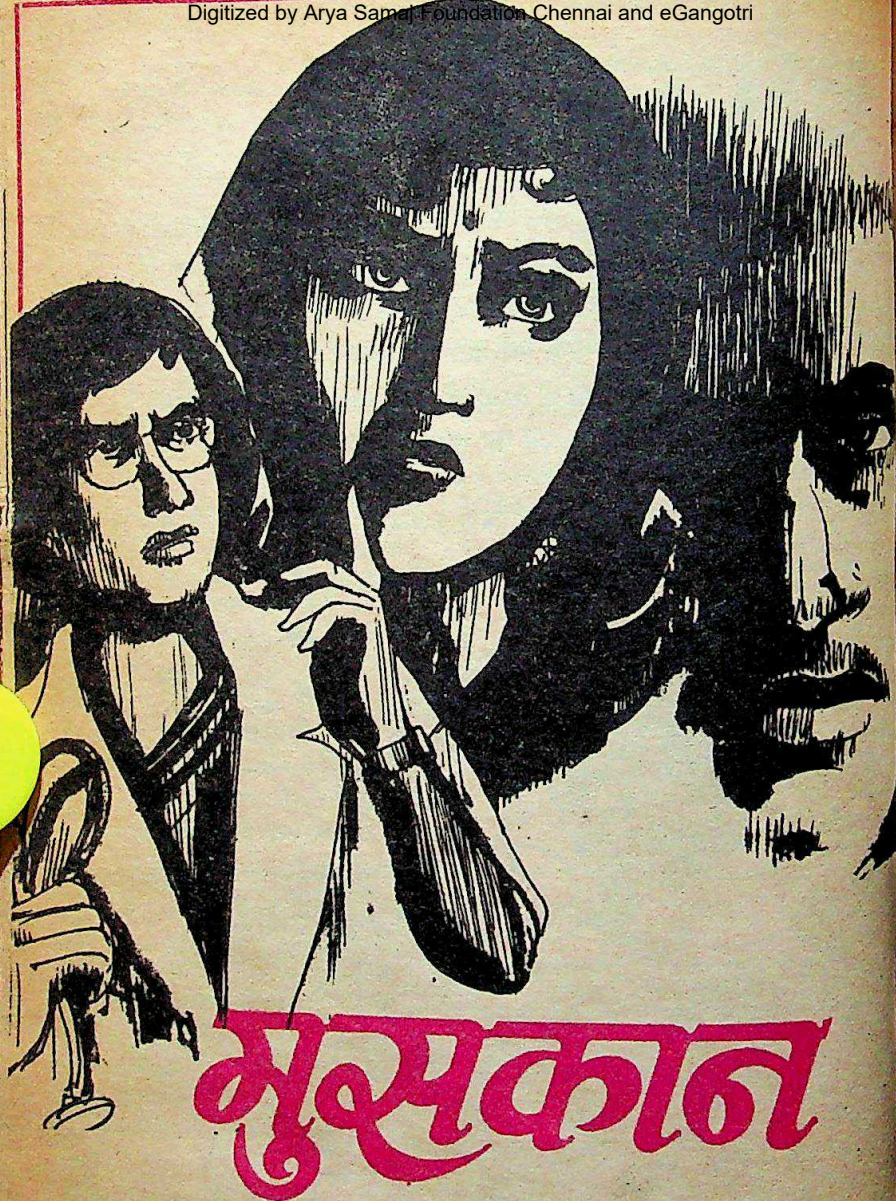
मुस्कान

कहानी • विवेक द्विवेदी

मोंटी आंचल में अपनी भीगी आंखों को छिपाए सोफे पर औंधे मुंह लेटी थी. शिशिर दूसरे कमरे में सिगरेट पीता हुआ भावशून्य सा खिड़की के बाहर देख रहा था. परंतु मोंटी का अंतर्द्वंद्व उसे परेशान किए हुए था.

शिशिर को रहरह कर मोंटी की बातें याद आ रही थीं, "शिशिर, तुम मेरी पिछली जिंदगी से वाकिफ हो. मेरी जिंदगी में जितने पुरुष आए, उन में से तुम एक हो. तुम अकेले नहीं हो, ऐसा

रंगमंच पर अपने अभिनय से दर्शकों का दिल जीत लेने वाले मोंटी और शिशिर अपनी आम जिंदगी में एक दूसरे का दिल जीत लेने का ख्वाब तो देखा करते थे, पर दांपत्य जीवन में एक दूसरे के बहुत करीब रहने के बावजूद वे दिन पर दिन बहुत दूर होते जा रहे थे. टूटते सपने और बढ़ते मनमुटावों के धक्के खाने वाले वे दोनों कलाकार क्या कभी अपनी मुरझाती जिंदगी को प्रेम की मुसकान से आह्लादित कर सके?

कभी न सोचना. तुम्हें ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए. लेकिन हां, अगर तुम मुझे अपने साथ बांधना ही चाहते हो तो मैं वादा करती हूं कि उस क्षण से सिर्फ तुम्हीं मेरे होगे. मेरा कुछ छिपा नहीं है. मंच की कलाकार जो ठहरी, रोज कथानक और भूमिकाएं बदलती हैं और रोज ही पात्र भी बदलते हैं. इसलिए ऐसा होना स्वाभाविक ही था.

"रमेश भी तुम्हारी तरह ही मुझ से जुड़ा था. उस के वादे एक निश्चित सीमा के बाद झूठे साबित हो गए. वह मेरी गोरी चमड़ी से मुहब्बत करता था. वह हर बार एक ही बात कहता था, 'क्या करूं, तुम्हारी मुसकान से हैरान हूं.' लेकिन तुम मेरे जिस्म से नहीं, मेरी भावनाओं से प्यार करो. मैं तुम्हें सारी जिंदगी इसी तरह प्यार करती रहूंगी."

मोंटी सोफे से उठ कर बैठ गई. जम्हाई लेते हुए सिगरेट का पैकेट उठा कर एक सिगरेट उस से बाहर निकाली और होंठों के बीच फंसा कर लाइटर जलाने लगी. शिशिर टहलता हुआ उसी कमरे में पहुंचा. मोंटी छत की ओर धुआं छोड़ती चुपचाप बैठी रही. शिशिर भी नहीं बोला और सामने सोफे पर बैठ गया.

शिशिर का बैठना शायद मोंटी को अच्छा नहीं लगा. वह उठी और रसोई में जा कर चाय बनाने लगी. शिशिर को मोंटी का चला जाना शायद अच्छा नहीं लगा. वह जानता था कि मोंटी का गुस्सा अभी शांत नहीं हुआ है. शिशिर का उस के प्रति किया गया व्यवहार उसे ही परेशान किए हुए था. वह शर्मिंदा भी था. लेकिन वह अपनी आदत से मजबूर था. आवेश में आ कर उसे अच्छेबुरे का ज्ञान नहीं रह जाता था.

विक्की का मोंटी से बात करना न जाने क्यों उसे अच्छा नहीं लगता था. लेकिन विक्की शिशिर का भी तो दोस्त था. दोनों मोंटी के साथ कई त्रिकोणीय भूमिकाओं में काम कर चुके थे.

फिर मोंटी और विक्की तो पुराने दोस्त थे.

मोंटी तो अब भी रमेश से आम लोगों की तरह बात करती थी. अजय, ओम और प्रह्लाद तो हमेशा मोंटी से मिलने घर पर ही आते थे. सभी से संबंध बिस्तर के तो हो नहीं सकते. मोंटी एक कलाकार थी. कलाकार का एक पक्ष सभी के लिए होता है और एक हिस्सा नितांत अपना होता है, जो शिशिर और मोंटी का है. बिस्तर सुख इसी हिस्से का एक भाग है. फिर शिशिर भी तो एक कलाकार है. क्या हर लड़की उस की जीवन संगिनी की तरह है. नहीं, ऐसा नहीं हो सकता.

यह सोच शिशिर की थी. जब वह होश में था, एक निर्विकार आदमी था. उसे मालूम था, मोंटी मां बनने वाली है. डाक्टर ने उसे काम करने से मना किया है. ध्यान आते ही शिशिर उठा और रसोई की ओर मुड़ गया. मोंटी दो प्याले चाय लिए रसोई से बाहर आ रही थी. शिशिर से रास्ते में ही मुलाकात हो जाने से उस ने एक प्याला शिशिर को थमा दिया. फिर दोनों बैठक में लौट आए. दोनों के चेहरे उतरे हुए थे और आंखें नम थीं. मोंटी ने चाय की चुसकी के साथ एक सिगरेट सुलगाई. शिशिर से मोंटी का सिगरेट पीना न देखा गया. वह बोल उठा, "डाक्टर ने सिगरेट मना किया है."

"तुम्हें या मुझे?" मोंटी ने पूछा.

"जिस के पेट में बच्चा पल रहा है."

"लेकिन दर्द तो मुझे होना चाहिए क्योंकि यह अपराध मैं ने किया है."

"जो हुआ, उसे भूल जाओ. मैं अपने किए पर बहुत शर्मिंदा हूं." शिशिर की आंखें झुकी हुई थीं.

"कैसे भूल जाऊं? आज तुम ने इसे विक्की का कहा है, कल रमेश का कहोगे और परसों..." मोंटी का गला भर आया.

थोड़ी देर के लिए दोनों के बीच खामोशी छाई रही. अचानक शिशिर बोला, "मुझे न जाने क्यों...?" बोलतेबोलते वह रुक गया.

"क्या कहना चाहते हो?" मोंटी प्याला खाली करते हुए बोली.

"तुम्हारा इन लोगों से मिलना और बतियाना मुझे अच्छा नहीं लगता है."

मोंटी ने सुर्ख आंखों से शिशिर की ओर देखा, "तुम इस हद तक घटिया इनसान हो सकते हो, मैं तो ऐसा स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी."

"तुम कुछ भी सोचो."

"ऐसा तभी हो सकता है, जब मैं रंगमंच से अलग हो जाऊं. लेकिन यह संभव नहीं है."

"क्या रंगमंच से जुड़ कर ऐसा नहीं हो सकता?" शिशिर की आवाज में लोच थी.

"तुम मुझे अपनी दासी समझते हो? लेकिन यह बंधन मुझ तक ही क्यों? तुम्हें क्यों..."

शिशिर चुप रहा. मोंटी आगे बोली, "तुम जितने अच्छे कलाकार हो, उतने ही घटिया इनसान हो. मैं जानती हूं तुम्हें मेरी पुरानी जि[illegible] परेशान कर रही है. लेकिन..." मोंटी ने दूसरी सिगरेट जलाई.

"नहीं, मैं उसे भूल चुका हूं." शिशिर अपने स्थान से उठ कर मोंटी की बगल में जा बैठा. उस ने मोंटी के हाथ से सिगरेट छीन कर तोड़ दी और उस के पेट पर हाथ फेरते हुए बोला, "मैं चाहता हूं, तुम मेरी इस मुसकान के लिए मंच छोड़ दो."

मोंटी एकाएक भड़क उठी और अपने [illegible] से शिशिर का हाथ अलग करते हुए खड़ी हो गई, "तुम्हें मालूम है, शादी से पहले समझौता क्या हुआ था?"

"याद है. लेकिन आज की परिस्थिति कुछ और है."

"तो क्या तुम मंच छोड़ सकते हो?" मोंटी का प्रश्न शिशिर के होंठों के बीच चिपक गया. तभी दरवाजे पर दस्तक हुई.

दरवाजा खुला तो सामने विक्की, रोला, अजय, रोनी, उमा, संजय और डाली खड़े थे. मोंटी और शिशिर दोनों ने उन का हंस कर स्वागत किया.

"बधाई हो," समवेत स्वर उभरा, "तुम दोनों की तारीफ में अखबार में बहुत अच्छा [illegible] छपा है."

विक्की ने मोंटी के गाल को धीरे से सह[illegible] दिया. मोंटी मुसकरा दी. परंतु शिशिर सहम उठा. ऐसा तो पहले भी होता रहा था, लेकिन आज न जाने क्यों शिशिर के चेहरे के भाव बदल गए. शिशिर का यह भाव मोंटी के अ[illegible] शायद ही कोई समझा हो.

"अखबार ने लिखा है," विक्की, मोंटी [illegible] बगल में बैठते हुए बोला, 'हुजूर का दरबार' [illegible] शिशिर और मोंटी का अभिनय देख कर शीरीफरहाद, लैलामजनूं और हीररांझा की [illegible] ताजा हो आई. ऐसा जीवंत अभिनय हिंदुस्ता[illegible]

"क्यों नहीं, मैं अभी बना कर लाई." मोंटी उठ ही रही थी कि रोली ने हाथ पकड़ कर खींच लिया, "नहीं दीदी, आप नहीं. मैं किस मर्ज की दवा हूं."

यह सब इन लोगों की जिंदगी की आम आदत थी. आपस में इसी तरह मिलना, एकदूसरे पर व्यंग्य करना और फिर मजे लेना. रंगमंच और घर इन लोगों के लिए दोनों एक जैसे थे.

लेकिन शिशिर इन सब से अपनेआप को क्यों अलग समझने लगा था. उसे मोंटी का किसी

गिनेचुने कलाकारों में ही देखा गया है."

डाली शिशिर को अपनी बांहों में दबाते हुए बोली, "लेकिन विक्की, अब मेरे इस मजनूं शिशिर का क्या होगा? मोंटी दीदी तो लैला का लाल..."

बात पूरी नहीं हो पाई थी कि विक्की तपाक से बोल उठा, "तब तक के लिए तुम लैला का पद ग्रहण कर लेना."

इस बात पर जोरदार ठहाका गूंजा. शिशिर और मोंटी ने भी ठहाके में साथ दिया. डाली को जैसे और जोश आ गया. वह तपाक से बोल उठी, "मोंटी दीदी की इजाजत मिलेगी तब न."

"कोशिश कर के देखो, शायद सफलता मिल जाए." मोंटी ने हंसते हुए जवाब दिया.

"तारीफ तो बहुत हो चुकी, अब कुछ चाय वगैरह भी हो जाए." संजय ने चुटकी ली.
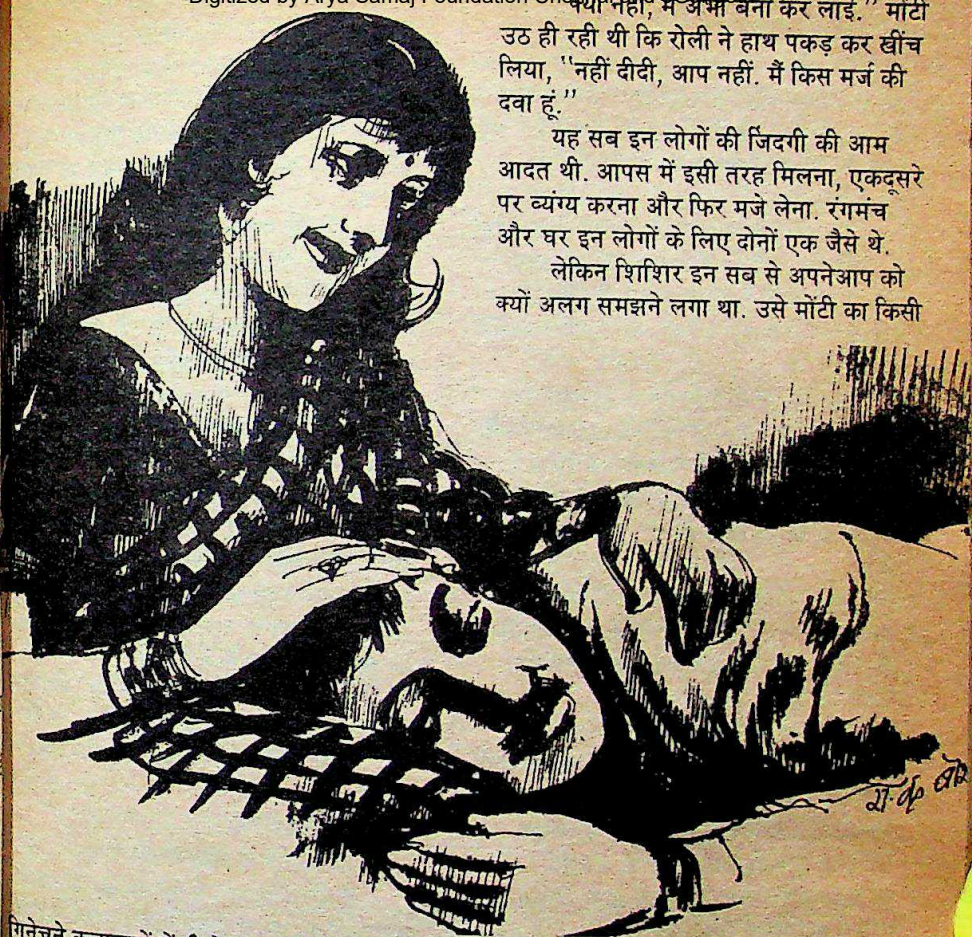
शिशिर जा कर पलंग पर लेट गया. मोंटी सिरहाने बैठ कर उस के बालों पर हाथ फेरने लगी.

और के साथ मुसकराना भी पसंद नहीं था. बारबार उस के मन में तलाक की भावना पनपने लगी थी. वह चाह कर भी स्वयं को नहीं रोक पा रहा था.

यही हाल मोंटी का भी था. उस ने तो खुल कर कह भी दिया था कि वह तलाक चाहती है. एक छत के नीचे रहते हुए भी दोनों बहुत दूर होते जा रहे थे.

मोंटी गर्भ पात कराने की इच्छा होते हुए भी कदम आगे नहीं बढ़ा पा रही थी. रमेश से अलग हो कर उस ने एक बार अपनेआप से कहा था, 'मोंटी, नारी तो सिर्फ आपनी बेवफाई के लिए बदनाम है, लेकिन पुरुष से बड़ा बेवफा शायद

ही कोई हो. अब मैं किसी पुरुष से कभी भी जुड़ नहीं सकती.'

मोंटी जिंदगी में स्थिरता चाहती थी. शिशिर में वह मिल भी गई थी. वह बहुत खुश थी. उस ने मां न बनने की प्रतिज्ञा को खंडित कर दिया था. लेकिन शिशिर का डाली के प्रति बढ़ता हुआ प्रेम उसे रहरह कर डरा रहा था.

विक्की जो मोंटी का एक अच्छा दोस्त और बुरे वक्त का हमदर्द था, शिशिर की शंका का शिकार था. मोंटी ने लाख सफाई दी, लेकिन शिशिर को विश्वास न हुआ. मोंटी अपनी बेबसी छिपाए हुए थी.

एक दिन मोंटी ने निर्णय ले ही लिया कि अब वह गर्भपात करा ही लेगी. उस के निर्णय ने उसे महिला डाक्टर के क्लिनिक तक पहुंचा ही दिया. डाक्टर मोंटी को पहचानती थी. उसे यह भी मालूम था कि मोंटी का यह पांचवा गर्भपात होगा.

डाक्टर ने गंभीरता से कहा, "मोंटी, तुम एक कलाकार हो. क्या तुम्हें बारबार किसी जीव की... खैर, मैं तुम्हें एक हफ्ते तक सोचने का मौका देती हूं."

"लेकिन डाक्टर मैं क्या करूं? बच्चा धरती पर जन्म ले, उस के पहले ही उस के बाप से संबंध विच्छेद हो जाता है." मोंटी का गला भर आया, "कौन ऐसी स्त्री होगी, जो अपने झोली के फूल को अपने हाथों ही मसल दे. लेकिन डाक्टर, अगर बच्चे को जन्म देती हूं तो उस से क्या कहूंगी कि तेरा बाप..."

"मैं समझती हूं, मोंटी. परंतु जिंदगी में तुम्हें एक सहारे की आवश्यकता है और अपने खून से अच्छा..."

"सोचूंगी." मोंटी का संक्षिप्त सा उत्तर था.

शिशिर को पता चल गया था कि मोंटी डाक्टर के पास गई हुई है. वह सुबह से मोंटी का इंतजार घर पर ही कर रहा था. आज वह रिहर्सल पर भी नहीं गया था. अब वह स्वस्थ आदमी की तरह सोच रहा था. वह खुद हैरान था, 'मोंटी एक कलाकार है. उसे बोलने से भला कौन रोक सकता है. शादी के पहले भी तो इसी तरह सभी से बोलती और हंसती थी. फिर वह डाली के करीब आ कर भी क्या मोंटी से दूर जा सका है. मोंटी की जिंदगी में शादी के बाद शायद ही कोई आया हो.'

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई. शिशिर ने दरवाजा खोला. मोंटी सामने खड़ी थी. दोनों की नजरें चार हुईं. फिर दोनों के सिर झुक गए. अंदर जा कर सोफे पर लेट गई. लगभग आधा घंटा उसी तरह लेटी रही. शिशिर भी खामोश सिगरेट पीता पत्रिका के पन्ने पलटता बैठा रहा. लेकिन मोंटी की खामोशी तोड़ना उसे भारी पड़ रहा था.

मोंटी की नजर कलाई घड़ी पर गई. शाम के सात बज रहे थे. उसे ध्यान आया कि आज शिशिर ने दिन भर कुछ नहीं खाया है. आंखें बंद किए शिशिर का ध्यान करती रही. उसे खुद खाना बनाना आता नहीं. होटल में खाना खाना नहीं. अब उस से लेटा न गया. एक झटके के साथ जैसे ही उठी, शिशिर दो प्याले ले कर पहुंच गया.

मोंटी ने मुसकराते हुए एक प्याला ले लिया और धन्यवाद कह कर रसोई में चली गई. वहां से चार अंडे और प्याज ले कर पुनः सोफे पर आ कर बैठ गई. चाय के साथ प्याज भी काटने लगी. वह जल्दी से आमलेट बना कर शिशिर को खिला देना चाहती थी.

लेकिन तभी शिशिर पूछ बैठा, "क्या तुम ने गर्भपात कराने का निश्चय...?"

मोंटी ने गुस्से से शिशिर की ओर देखा. "नहीं... कभी नहीं."

"तो फिर...?"

"सिर्फ तुम से तलाक चाहती हूं."

शिशिर के हाथ से प्याला छूट कर फर्श पर जा गिरा. प्याले के छोटेछोटे टुकड़ों के साथ चाय एक बड़े हिस्से में फैल गई.

"तुम इतना कमजोर क्यों पड़ गए?"

"मैं खुद कुछ नहीं समझ पा रहा हूं." शिशिर सोफे पर टिक गया.

मोंटी उठी और एक कपड़े से फर्श साफ करने लगी. उस के बाद रसोई में जा कर आमलेट बनाने लगी. थोड़ी देर बाद शिशिर रसोई में जा पहुंचा.

"रमेश जी आए थे." शिशिर गैस से दूध उतारते हुए बोला.

"**रमेश** का नाम ले कर यह कहना चाहते हो कि मैं उस के पास वापस जाना चाहती हूं?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता."

"फिर तुम ने उस का नाम क्यों लिया?"

"उन का धारावाहिक नाटक दूरदर्शन

स्वीकृत कर लिया है. तुम्हें...''

मोंटी प्लेट में आमलेट डाल कर बैठक में आ गई. उसे कुछ ही क्षण हुए होंगे कि शिशिर की चीख सुनाई पड़ी. वह रसोई की ओर दौड़ी.

''क्या हुआ?'' मोंटी ने घबराए स्वर में पूछा.

''कुछ नहीं.''

मोंटी ने देखा कि शिशिर के पांव पर पतीले का पूरा गरम दूध गिर गया है. शिशिर बरनाल ले कर स्वयं मलने लगा. मोंटी की आंखें भर आईं. फिर भी हिम्मत कर के उस ने शिशिर का हाथ पकड़ लिया, ''क्या मुझे इतना भी अधिकार नहीं?''

शिशिर चुप रहा. मोंटी बरनाल ले कर उस के पांव में मलने लगी. शिशिर जा कर पलंग पर लेट गया. मोंटी सिरहाने बैठ कर उस के बालों पर हाथ फेरने लगी. शिशिर ने देखा, मोंटी का गला रुंधा हुआ है और आंखें डबडबाई हुई हैं. शिशिर ने उस का हाथ पकड़ लिया, ''मोंटी... तुम...''

मोंटी ने शिशिर के होंठों के बीच अपनी उंगली रख दी, ''बस शिशिर, बस. मैं जानती हूं जिंदगी कोई गुड्डेगुड़िया का खेल नहीं है. दोनों के परस्पर सहयोग से ही इस में मुसकान लाई जा सकती है.

''बीता हुआ कल एक सबक था. वर्तमान हमारे सामने है. लेकिन भविष्य को नजरअंदाज करना एक बहुत बड़ी भूल होगी.''

मोंटी थोड़ा रुकी. फिर शिशिर का गाल सहलाते हुए बोली, ''शिशिर, एक बार मुसकरा दो. तुम्हारी इस मुसकान से इस घर में हजारों फूल खिल जाएंगे.''

शिशिर का चेहरा दमक उठा. उस ने मोंटी को सीने से लगा लिया. मोंटी भी उस से लिपट गई. उस की आंखों से बहते हुए आंसू शिशिर को जैसे बड़ी राहत दे रहे थे. शिशिर उस के बालों में हाथ फेरते हुए बोला, ''रमेशजी के नाटक में काम करोगी?''

''अगर तुम कहो तो...''

''कथानक अच्छा है. हम दोनों की भूमिकाएं भी अच्छी हैं.''

''लेकिन क्या वे इन तीनचार महीनों...''

''उन्होंने पांच माह बाद की तारीख मांगी है.''

''पारिश्रमिक क्या देंगे?''

''अभी बात नहीं हुई है. फिर वह तो हमारे गुरु भी हैं.''

''तो क्या हुआ? भूखे रह कर कितने दिन...''

शिशिर हंस पड़ा, ''रमेशजी ठीक ही कहा करते हैं. तुम पैसों के मामले में कोई समझौता नहीं करना चाहती.''

सुन कर मोंटी सिर्फ मुसकरा दी. शिशिर ने प्यार से उस का माथा चूम लिया. ●
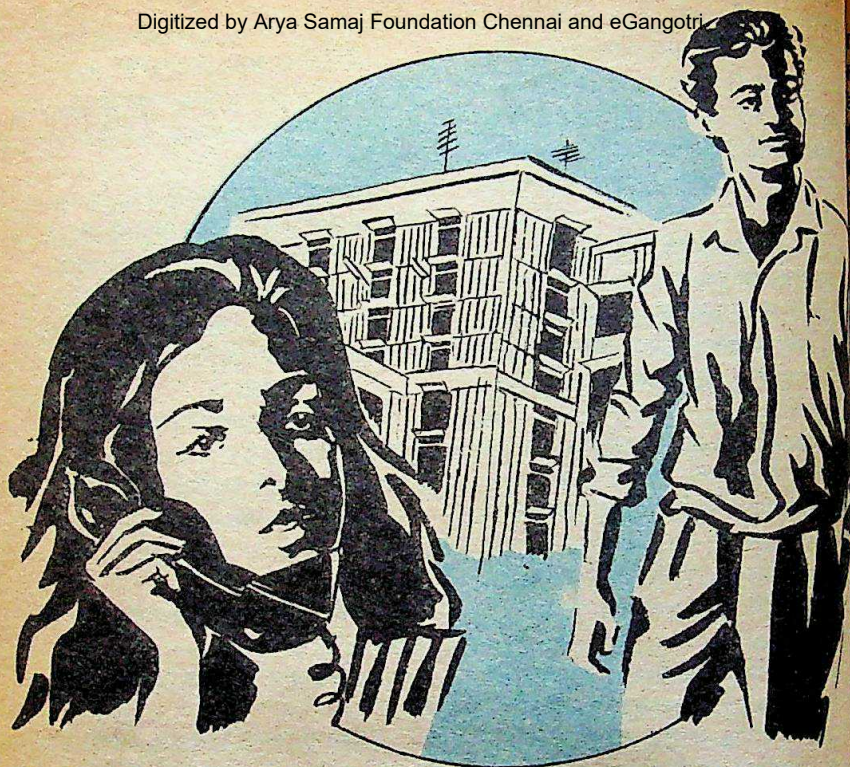
एक और आरंभ

धारावाहिक उपन्यास • तीसरी किस्त • भक्ति चौ

अब तक आप ने पढ़ा : सुरक्षित भविष्य, ज्यादा छुट्टी और अधिक सुखसुविधाओं की लालच स्वच्छ वातावरण के एक निजी संस्थान की नौकरी छोड़ कर गोपा जब मंडल अभियंता टेलीफोन कार्यालय में निजी सचिव की हैसियत से नौकरी करने पहुंची तो वहां का भ्रष्ट माहौल देख कर दंग गई. सरकारी महकमे के सुस्त और आलसी कर्मचारियों की उच्छृंखल प्रवृत्ति से उसे घुटन सी महसूस होने लगी. पर दूसरी तरफ उस की कुरसी की कीमत जान कर लोग गोपा के आसपास मंडराने लगे. क्या गोपा ऐसे लोगों की मनोभावनाओं से ज्यादा दिनों तक अनभिज्ञ रह सकी? अब आगे पढ़िए

कनिष्ठ अभियंता कहीं अपने पास मामले दबा कर न बैठा रहे, इसलिए चारपांच दिन में या सप्ताह में एक बार गोपा भेजी गई फाइलों की स्थिति के बारे में रहती और जल्दी भिजवाने की याद भी दिलाती. पर वह तब भी फाइलें न भेजे किया जा सकता था.

तभी संजय की मधुर आवाज कानों में पड़ी, "अधिकारी की झाड़ एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल देनी चाहिए. इसे दिल व दिमाग पर बोझ बनने दिया तो 58 वर्ष की उम्र से बहुत पहले ही नौकरी से कूच करना पड़ जाएगा." गोपा को संजय की सूरत देखते ही राहत मिल गई, "देखिए न, कसूर किसी का और झाड़ मुझे पड़ी."

"एक राज की बात बताऊं, आप को. जो जितना अधिक काम करता है उसे उतने ही अधिक ज्ञापन मिलते हैं? खैर, अब क्या सोचने लगीं."

"कुछ नहीं." गोपा ने अचकचा कर कहा.

"रूपसिंह, जरा कैंटीन से ब्रेड पकौड़ा लाना?" संजय ने चपरासी को कहा.

"सवेरेसवेरे ब्रेड पकौड़ा." गोपा ने संजय की ओर देखा.

एक तो कार्यालय के भ्रष्ट माहौल से ही गोपा क्षुब्ध भरी बैठी थी, ऊपर से घर में जतिन के आगमन से उस का रहासहा चैन भी जाता रहा. गोपा इन दोनों समस्याओं से किस प्रकार निबटती थी?

"क्या करें, जो मिले वही खाना पड़ता है. पता है, सुबह से चाय भी नहीं मिली."

"आप की पत्नी खाना नहीं बनाती?" गोपा ने जानबूझ कर टटोला.

"हूं, बनाती है."

सुनते ही गोपा का दिल डूब गया. वह धीरे से बोली, "फिर आप को खाना क्यों नहीं मिलता?"

संजय ने उस आदमी के कंधे पर अपना पंजा रख दिया, "भाई साहब, यह दफ्तर है. यहां मारपीट करना और गाली देना मना है."
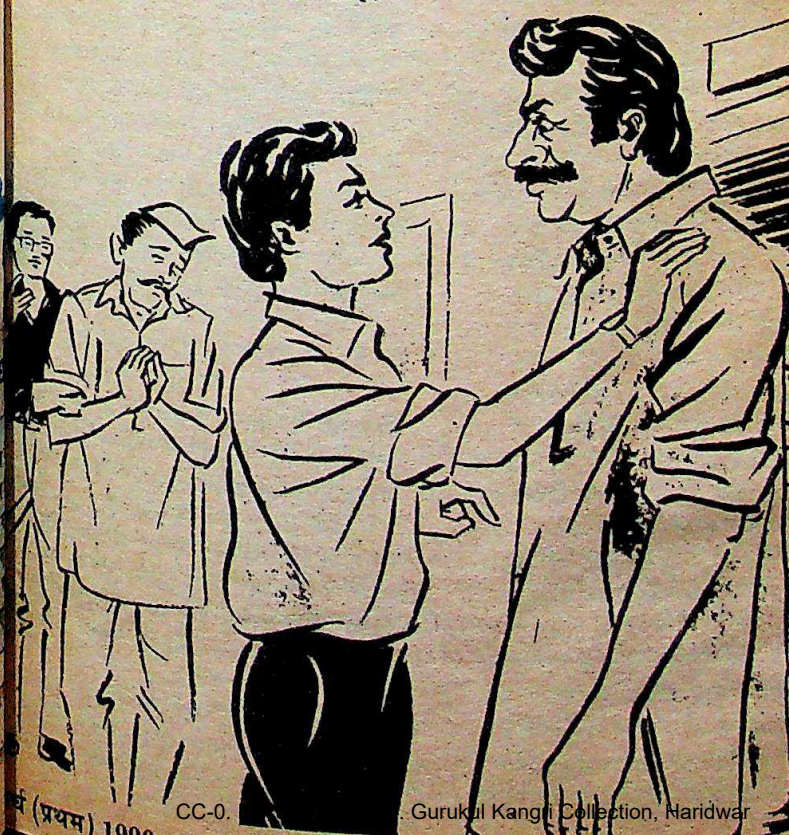
"भई, पत्नी तो अपने घर बनाती है मेरे लिए तो शादी के बाद ही बनाएगी न." कह कर संजय जोर से हंसने लगा.

"आप की शादी नहीं हुई?" गोपा सहसा प्रसन्न हो उठी. तभी कमरे के बाहर शोरगुल होने लगा. किन्हीं दो व्यक्तियों के बीच बहस हो रही थी.

"मेरे दो हजार रुपए खा गया और टेलीफोन भी चालू नहीं करवाया." क्रुद्ध और रोबदार आवाज निस्संदेह किसी उपभोक्ता की थी.

जवाब में रूपसिंह की मिमियाती आवाज आई. "साहब, टेलीफोन मैं थोड़े ही चालू करवा सकता हूं. वह तो बड़े साहब के आदेश..." बीच में ही रूपसिंह की बोलती बंद हो गई. इस के साथ ही मारपीट की आवाजें आने लगीं

"बड़े साहब की औलाद. फोन चालू नहीं करवा सकता था तो रुपए क्यों लिए थे? ला वापस कर मेरे दो हजार रुपए." साथ ही मारने की आवाज सुनाई दी. गोपा के रोंगटे खड़े हो गए. रूपसिंह ने दो हजार रुपए रिश्वत ली थी. इस से भी अधिक हैरानी इस बात की थी कि उपभोक्ता टेलीफोन केंद्र में आ कर रिश्वत में दिए रुपए वापस मांग रहा था और सरकारी कर्मचारी को पीटने की जुर्रत भी कर रहा था. क्या रिश्वत दे कर उस ने भी समान अपराध नहीं किया था. गोपा के माथे पर पसीने की बूंदें उभर आईं. उत्तेजना और डर से उस का दिल बैठने लगा. वह कुरसी पर किंकर्तव्यविमूढ़ हो कर बैठी रही. हिलने का साहस भी न हो रहा था.

"अच्छी तरह से सुन ले, मेरे रुपए न लौटाए तो यहीं पर छुरी घोंप जाऊंगा." उपभोक्ता निस्संदेह कोई गुंडा था. वह गालियों की बौछार कर रहा था. संजय झट कुरसी छोड़ कर उठ गया और दरवाजा खोल कर उपभोक्ता के सामने खड़ा हो गया. छः फुट लंबेतगड़े उपभोक्ता के सामने वह बौना सा लग रहा था.

संजय ने उस आदमी के कंधे पर अपना पंजा रख दिया, "भाई साहब, यह दफ्तर है. यहां मारपीट करना और गाली देना मना है. आप को इस का निबटारा बाहर करना होगा. चाहें तो मंडल अभियंता को लिखित शिकायत भी कर सकते हैं."

जवाब में उस आदमी ने जो कहा, उ[illegible] का सार यह था कि उपभोक्ता बिहारी लाल [illegible] पास एक गैरकानूनी टेलीफोन कनेक्शन था [illegible] विभाग द्वारा वह टेलीफोन किसी और आद[illegible] के नाम दिया गया था. बिहारी लाल को उ[illegible] उपभोक्ता ने कुछ हजार रुपए में यह कने[illegible] बेच दिया था. इस के बाद से बिहारी लाल [illegible] बेरोकटोक उस टेलीफोन को इस्तेमाल कर [illegible] था. विभाग को उस के गैरकानूनी होने का [illegible] न चला क्योंकि जो भी कनिष्ठ अभियंता या [illegible] अन्य अधिकारी निरीक्षण के लिए जाता, बिहारी लाल रुपए के बल पर उसे खरीद लेता. दो वर्ष पहले जब प्रमोद कुमार की [illegible] दूसरे मंडल अभियंता हरिहर थे, तब बिहा[illegible] लाल की चाल नाकामयाब हो गई. एक बा[illegible] वह स्वयं अपने क्षेत्र का निरीक्षण करने नि[illegible] बिहारी लाल किसी भी कीमत पर उन्हें रो[illegible] सका. हरिहर ने टेलीफोन काट कर ही दम लिया.

इस के बाद बिहारी लाल कई अधिकारियों से मिन्नतें करता रहा, उन की हथेली भी गरम की, पर सब बेकार गया. हरिहर और अधिक अड़ गए. इसी बीच रूपसिंह ने बिहारी लाल से कहा कि दो ह[illegible] रुपए के बदले वह टेलीफोन चालू करवा [illegible] बिहारी लाल को और क्या चाहिए था. उ[illegible] उसी दिन रुपए ला दिए. वह दिन और आ[illegible] का दिन. न टेलीफोन खुला और न ही रुप[illegible] वापस मिले. हरिहर का स्थानांतरण हो ज[illegible] रहीसही उम्मीद भी जाती रही थी.

रूपसिंह आ कर गिड़गिड़ाने लगा, "मैडमजी, मैं ने तो रुपए [illegible] को दे दिए थे. अब तो वे चले गए. मैं गरीब आ[illegible] इतने रुपए कहां से दूंगा? आप साहब से कह [illegible] इस का टेलीफोन खुलवा दीजिए."

एक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के दु[illegible] पर गोपा विस्मित थी. मंडल अभियंता की तरफ से दो हजार रुपए हजम कर के वह अफसर को बदनाम कर रहा था और अ[illegible] रोधो कर गैरकानूनी टेलीफोन खुलवाने [illegible] कह रहा था.

"रुपए तुम ने लिए थे. इसलिए तु[illegible] जानो और बिहारीलाल जाने. मुझ से इस [illegible] में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं." गो[illegible] कठोर स्वर में कहा.

नहा कर गोपा बाहर निकली तो देखा कि शृंगार मेज के आगे खड़ा जतिन गोपा के डब्बे से मलमल कर पाउडर लगा रहा था.

कभीकभी गोपा सोचती, अजीब माहौल है यहां का. बातचीत से तो सभी भले मालूम होते हैं, पर रिश्वत लेने के लिए कितनी तिकड़में भिड़ाते हैं. कुछ को तो स्वतः ही लोग रुपए दे जाते थे. उपभोक्ताओं के पास इस के अलावा अन्य उपाय नहीं. रिश्वत के बिना जिस काम को वर्षों लग सकते हैं उसे कुछ हजार रुपए के बदले कुछ महीनों में करवा लेना अक्लमंदी का ही काम है.

रामनिवास और राजबीर को कुछ हिदायतें दे कर गोपा आधा घंटा पहले दफ्तर से निकली. दूसरे दिन ज्योति का विवाह था, उस के लिए वह कोई उपहार खरीदना चाहती थी.

बाजार में अधिक भीड़ नहीं थी. घंटा भर घूमघाम कर गोपा ने चांदी का एक मंगलसूत्र पसंद किया.

घर पहुंचते ही गोपा का मिजाज उखड़ गया. जतिन दरवाजा खोले [illegible] तैयार

रहा था. सातआठ वर्ष के अंतराल में उस का चेहरा और भी काला पड़ गया था. चिट्ठी फाड़ डालने का भी कोई लाभ न हुआ था.

"तू तो अच्छीखासी लंबी हो गई है." जैसे जतिन को कहने के लिए और कोई बात न सूझी. गोपा का कुछ कहने को मन नहीं हुआ. वह स्वयं को समझाती रही. जतिन की नौकरी लग जाए तो खुशी की बात होगी. पर वह यहां ढंग से रहेगा, इस बात का संदेह था.

ज्योति की शादी में कई पुरानी सहेलियों से गोपा की मुलाकात हुई. बीते दिनों की मस्ती कुछ समय के लिए लौट आई. विवाह की व्यस्तता में भी गोपा ने मौका ढूंढ़ कर ज्योति से पूछ लिया, "प्रताप का क्या हुआ?"

"कौन प्रताप?" लाल चुनरी की जरीदार किनारी में ज्योति का चेहरा कमल सा खिला था.

गोपा एकाएक चौंक उठी, 'क्या ज्योति अभिनय कर रही है? बेशक वह प्रताप से

विवाह नहीं कर रही है तो क्या उस का नाम तक भूल चुकी है? क्या यह संभव है या विवाह की व्यस्तता और भावी पति का खयाल इस का कारण है?'

मुसकरा कर लोगों की बधाई स्वीकार करती ज्योति के चेहरे पर परेशानी का कोई चिह्न नहीं था.

"वही प्रताप, तू ने जिसे चाहा था. उस से शादी क्यों नहीं की?" गोपा ने धीरे से पूछा.

एकाएक ज्योति का चेहरा गंभीर हो गया, "हां, पसंद तो था, पर मुझे लगा, वह अच्छा दोस्त बन सकता है, अच्छा पति नहीं. इसलिए अपना निर्णय बदल दिया है."

ज्योति के जवाब ने गोपा को और अधिक उलझन में डाल दिया. हर लड़की की हार्दिक कामना होती है कि उस का पति उस का मित्र भी हो. फिर दोस्त को पति क्यों नहीं बना सकी, ज्योति?'

जतिन के कारण घर में हमेशा तनाव बना रहता. खानेपीने और सोने के अलावा उसे दिनभर कोई काम नहीं था. नौकरी करने या ढूंढ़ने में उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी. गोपा और नीता उसे देखदेख कर कुढ़ा करतीं. उन्हें

"मैडमजी, यह आप से बात करना चाहते हैं," रामनिवास ने दो फोन दोनों कानों में लगाते हुए एक फोन गोपा की ओर बढ़ा दिया.
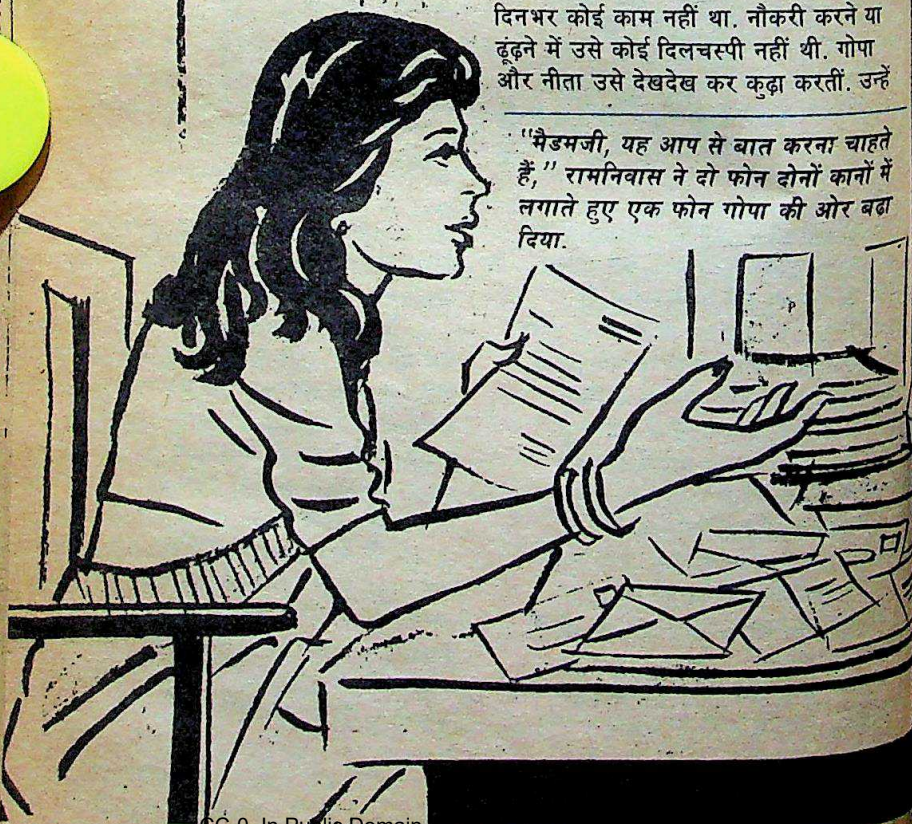
पिताजी के ऊपर क्रोध आता. जवान लड़कियों के घर में एक लोफर को ला बैठाया था.

साढ़े आठ बजनें वाले थे. जतिन न जाने आधे घंटे से गुसलखाने में क्या कर रहा था. गोपा कों खीज होने लगी. जैसेतैसे जतिन निकला तो गोपा घुसी.

नहा कर गोपा बाहर निकली तो देखा कि श्रृंगार मेज के आगे खड़ा जतिन गोपा के डब्बे से मलमल कर पाउडर लगा रहा था. क्रीम की शीशी भी खुली पड़ी थी.

"श्रृंगार मेज पर मेरे किसी सामान को आगे से हाथ मत लगाना." गोपा ने गुस्से से कहा तो जतिन मरा सा मुंह बना कर बाहर चला गया.

गोपा बस स्टाप पर पहुंची तो साढ़े नौ बज रहे थे. आधा घंटा खड़ा रहने के बाद एक बस आई. लटके हुए लोगों के भार से बस एक तरफ झुक गई थी. जैसेतैसे वह बस में सवार हुई. रास्ते भर भीड़ में पिसते हुए अपने गंतव्य पर पहुंच कर उस ने चैन की सांस ली.

"जरा धीरे चलिए. देर तो हो ही चुकी है अब भाग कर भी कितना समय बचा लेंगी."

गोपा ठिठक गई. संजय पीछेपीछे आ रहा था.

"आप भी देर से आ रहे हैं?" गोपा ने
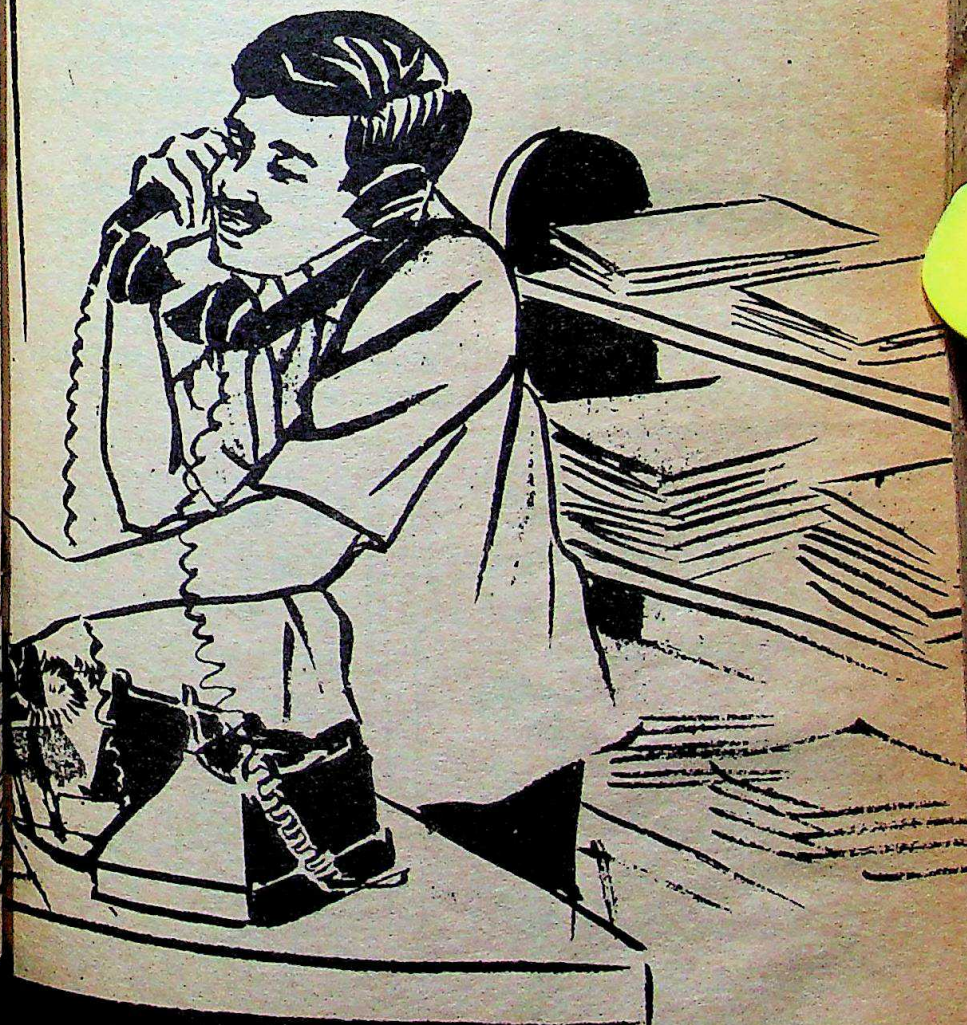
हंस कर पूछा.

"हमें कैसे देर हो सकती है हमारी तो 24 घंटे की ड्यूटी होती है. इस मोड़ पर तारें बिछाने का काम चल रहा है, उसी का निरीक्षण करना था."

सड़क के किनारे एक गड्ढे के ऊपर तंबू लगा था. आसपास मजदूर मिट्टी खोद रहे थे.

"आप को भी गड्ढों में घुस कर काम करना होता होगा?" गोपा ने संजय के साथसाथ चलते हुए पूछा.

"हां, वह तो है. मेरा काम तारों की देखरेख करना ही है."

"आप को अच्छा लगता है, कीचड़ और गंदे पानी में घुस कर काम करना?"

"हर पेशे में अच्छाई और बुराई होती है. पर इस विभाग में कनिष्ठ अभियंता के लिए हानि ही हानि है."

"क्यों?" गोपा विस्मित हुई.

"उपभोक्ता के साथ सीधा संपर्क न होने के कारण रिश्वत नहीं खा सकते." संजय जोर से हंसा.

"मनपसंद पुरुष के साथ चलना कितना भला लगता है." गोपा ने सोचा, दफ्तर कुछ और दूर होता तो अच्छा होता. एक मोड़ से गुजरते हुए अचानक गोपा का पैर मुड़ गया. किसी फल के छिलके पर पांव पड़ गया था. लेकिन गिरतेगिरते वह संभल गई थी. तभी कंधे पर उसे किसी सहारे का स्पर्श महसूस हुआ था.

"इसी तरह लापरवाह हो कर चलती हैं क्या?" गोपा के कंधे से अपना हाथ हटा कर संजय ने सहजता से कहा.

गोपा का मन संजय के स्पर्श से प्रफुल्लित था. वह मंदमंद मुसकरा रही थी.

"ऊंची ऐड़ी की चप्पलें पहनना खतरनाक हो सकता है."

गोपा केवल मुसकरा कर रह गई.

डाक दो दिन से इकट्ठी हो रही थी. गोपा झटपट हाथ चलाने लगी 'मैलिशियस काल' की काफी शिकायतें आती थीं. यानी टेलीफोन पर उपभोक्ताओं को कोई अनजान व्यक्ति गालियां देता है या अनापशनाप बोलता है. इन टेलीफोनों को सप्ताह या दो सप्ताह तक निरीक्षण में रख कर उन पर हुई बातचीत को नोट किया जाता था. फिर उस नंबर का पता लगाने की कोशिश की जाती, जहां से इस प्रकार की आवाजें आती थीं. संबंधित दोषी व्यक्ति के टेलीफोन को काटने का विधान भी था. वह इसी मामले से संबंधित एक रिपोर्ट पढ़ रही थी.
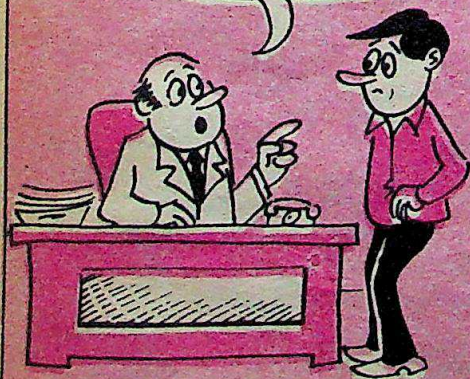
तभी तीनों टेलीफोन बजने लगे. गोपा ने रामनिवास को टेलीफोन सुनने को कहा. यूनियन वालों के कई पत्र थे. चपरासी के हाथ उन पत्रों को अंदर मंडल अभियंता के पास भिजवा दिया. यूनियन के पत्रों के मामले में सावधानी बरतनी होती है ताकि कल को कोई यह न कह दे कि हमारे पत्र मंडल अभियंता को दिखाए ही नहीं जाते.

"मैडमजी, यह आप से बात करना चाहते हैं." रामनिवास ने दो फोन दोनों कानों में लगाए हुए एक फोन गोपा की ओर बढ़ा दिया.

"तुम्हीं कर लो न बात. शिकायत है तो रजिस्टर में लिख लो."

"यह मानता ही नहीं. कहता है, आप से या बड़े साहब से बात करेगा."

गोपा खीजने लगी क्योंकि अब डाक बीच में रह जाएगी.

"हैलो, क्या गोपाजी बोल रही हैं?"

"जी कहिए." स्वर में पर्याप्त नम्रता व मिठास भर कर गोपा ने स्वयं को कठोरतम शब्द सुनने के लिए तैयार किया.

"मैं आप का शुक्रिया अदा करना चाहता था. आप से कहने के दो घंटे के भीतर ही मेरा टेलीफोन ठीक हो गया है. इस से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ और न ही आप की तरह किसी ने शिकायत के बाबत की." गोपा के कानों में शहद घुलने लगा. एक महिला को अंदर आते देख कर उस ने बात समाप्त कर दी.

"कहिए?" गोपा ने कुरसी की ओर संकेत करते हुए उन्हें बैठने के लिए कहा.

"मैं ने एक अस्थायी टेलीफोन कनेक्शन के लिए आवेदन किया था. मेरे पति बीमार रहते हैं. घर में कोई तीसरा व्यक्ति नहीं है. मुझे बारबार भागदौड़ करने में कठिनाई आती है. मैं पहले भी बड़े साहब से बात कर चुकी हूं. तीन महीने हो गए, अभी तक कुछ नहीं हुआ."

"मैं समझती हूं, आप की परेशानी." कहते हुए गोपा ने उप मंडल अधिकारी का नंबर मिलाया, "जरा साहब से बात कराइए."

"कौन बोल रही हैं?" उस ओर से उप मंडल अधिकारी की क्लर्क राज ने पूछा.

"मैं हूं, गोपा."

"अरे, उस कमरे से इस कमरे में फोन पर बात करती है."

"मजबूरी है." गोपा ने संक्षेप में उत्तर दिया.

"हैलो." उप मंडल अधिकारी का स्वर था.

"एक अस्थायी टेलीफोन का मामला है.

अब तो विवाह को बहुत दिन हो गए अब किस लिए जल्दी जाना चाहते हो?

तीन महीने हो गए, अभी तक कुछ हुआ नहीं.

"हमारे पास उपकरण उपलब्ध नहीं हैं. उन के लिए जनरल मैनेजर की अनुमति लेनी पड़ेगी क्योंकि वह सड़क के दूसरी ओर है."

"उस में कितना समय लगेगा?"

"यह तो जनरल मैनेजर के दफ्तर वालों पर निर्भर करता है."

गोपा ने सामने बैठी महिला पर दृष्टि डाली. वह उम्मीद से उस की ओर देख रही थी. गोपा को उस की आशाओं पर तुषारापात करने का मन न हुआ. पर महिला समझदार थी. गोपा की शक्ल देख कर परिस्थिति भांप गई, "कोई कठिनाई है?"

"हां, क्या आप कल सवेरे मुझे टेलीफोन कर सकती हैं? तब तक मैं बड़े साहब से बात कर के आप को बता दूंगी."

"ठीक है." महिला उठ खड़ी हुई.

गहरी सांस ले कर गोपा बाकी डाक छांटने लगी. 'अति आवश्यक व तुरंत' लिखी दोनों फाइलों को उस ने उठा लिया. पहला मामला एक्सटेंशन 103 यंत्र के बारे में था. एक जानीमानी निजी कंपनी के निर्देशक के निजी सचिव के कक्ष में इस यंत्र की आवश्यकता थी. कंपनी के कई पत्र पिछले छः महीने में गोपा देख चुकी थी. कंपनी के प्रशासनिक अधिकारी भी कई बार मंडल अभियंता से बात कर चुके थे. पर ई-103 यंत्र की लंबी प्रतीक्षा सूची थी जो उपभोक्ता जान जाते, उन्हें ई-101 यंत्र से काम चलाने को कह दिया जाता. फाइल कई कार्यालयों से घूमती हुई दो महीने का समय लगा कर यहां पहुंची थी. सभी उच्च अधिकारियों ने घुमाफिरा कर एक ही टिप्पणी लिखी थी, 'अभी तक उपभोक्ता का यंत्र क्यों नहीं उपलब्ध कराया गया?'

गोपा सोचने लगी, 'कमाल है, जब यंत्र है ही नहीं तो कहां से उपलब्ध कराएं. इस यंत्र की कमी के बारे में तो विभाग से ले कर मंत्रालय तक सभी को पता है.'

दूसरी फाइल एक कनेक्शन काटने के नोटिस के बारे में थी. उपभोक्ता ने गैरकानूनी ढंग से प्लग और सर्किट लगाया था. अब उस का कहना था कि प्लग, साकेट के लिए बाकायदा अनुमति ली गई थी.

गोपा ने वरिष्ठ निरीक्षक का नंबर मिलाया. "जरा देखिए, टेलीफोन नंबर 271547 में पलग साकेट है या नहीं? यह फोन हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड के नाम से है."

"केवल हिंदुस्तान जिंक लिखा है, लिमिटेड नहीं," वरिष्ठ निरीक्षक ने संदिग्ध स्वर में कहा.

"गलत लिखा है. आप देखिए, प्लग साकेट है?" कहतेकहते गोपा ने फाइल में नजर डाल कर उपभोक्ता का नाम व टेलीफोन नंबर फिर से देख लिए. उस ओर चुप्पी छाई थी. गोपा फोन पकड़े बैठी रही.

"प्लग साकेट नहीं है." उधर से आवाज आई.

"ठीक से देखिए, इस फोन पर 1976 से प्लग साकेट है."

"तब तो यह एक्सचेंज शुरू ही नहीं हुआ था. 1976 का रेकार्ड राजौरी गार्डन टेलीफोन एक्सचेंज में मिलेगा. उस समय यह नंबर वहीं से चलता था." गोपा के लिए इस से अधिक छानबीन करना संभव नहीं था. अपनी टिप्पणी लिख कर उस ने फाइल अंदर के केबिन में भिजवा दी.

-क्रमशः

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरज द्वारा आप की समस्याओं का समाधान किया जाता है.

भेजने का पता : सरिता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

मैं जिस लड़की से पिछले चार साल से प्रेम करता हूं वह अब एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाती है. जातिगत कारणों से हम दोनों के घर वाले भी हमारी शादी के विरुद्ध हैं. मेरी नौकरी भी स्थायी नहीं है. बताइए, मैं क्या करूं?

यदि आप दोनों पूरी तरह वयस्क हैं और लड़की अभी भी आप से शादी करने की इच्छुक है तो आप दोनों 'स्पेशल मेरिज एक्ट-1954' के अंतर्गत अदालती शादी भी कर सकते हैं जहां धर्म, जाति आदि बंधनों का प्रतिबंध स्वीकार्य नहीं होता. लेकिन यदि आप दोनों अपने घर वालों को समझाबुझा कर और उन की सहमति से विवाह करेंगे तो आप को कतिपय आगे आने वाली कई परेशानियों का सामना भी नहीं करना पड़ेगा. बाकी यदि आप अपने संस्थान में मेहनत और ईमानदारी से काम करेंगे तो आप की नौकरी स्थायी भी हो सकती है.

मैं एक कानवेंट स्कूल में 10 वीं कक्षा की छात्रा हूं और पायलट बनना चाहती हूं. पायलट बनने के लिए कम से कम कितने कद की जरूरत होती है क्योंकि मेरा कद अभी सामान्य से कुछ कम है. कृपया कद बढ़ाने का उपाय भी बताएं.

आप यदि कामर्शियल पायलट बनना चाहती हैं तो विस्तृत जानकारी के लिए 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी', फुरसत गंज, रायबरेली (उ.प्र.) से संपर्क करें जहां युवकों के साथसाथ युवतियों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था है. बाकी वायुसेना आदि में आप की उम्र के लड़कों के लिए तो प्रावधान है पर लड़कियों को विमान चालक बनाने की फिलहाल कोई व्यवस्था नहीं है.

कद बढ़ाने के लिए आप संतुलित आहार लें और किसी अवलंब को पकड़ कर लटकने या शरीर को खिंचाव देने वाली अन्य कसरत करें तो लाभ मिल सकता है.

मैं 18 वर्षीय युवक हूं. मेरी मंगनी हो चुकी है और बेरोजगारी की हालत में भी मुझ पर शादी के लिए दबाव डाला जा रहा है. मुझे यह भी पता चला है कि मेरी मंगेतर उम्र में मुझ से चारपांच वर्ष बड़ी है. मैं द्विविधा में हूं. बताइए क्या करूं?

कानूनन जब तक आप वयस्क और विवाह योग्य नहीं हो जाते, आप के मातापिता आप पर शादी के लिए दबाव नहीं डाल सकते. बाकी मंगनी से पूर्व आप को ये सारी बातें अपने मातापिता व भावी सासश्वसुर से कर लेनी चाहिए थीं. अब भी यदि आप के मातापिता व सासश्वसुर आप के वयस्क होने व रोजगार पाने तक धैर्य रखें तो ठीक है. वैसे पत्नी का उम्र में थोड़ा बड़ा होना दांपत्य जीवन में बाधक नहीं बनता यदि वह और सभी गुणों से संपन्न हो.

मैं पत्रकारिता में डिप्लोमाधारी युवक हूं और अपनी पत्रिका निकालने के लिए प्रयासरत हूं. बताइए, मैं इस के लिए ऋण कहां से प्राप्त करूं?

मैं डिटर्जेंट पाउडर व साबुन आदि से संबंधित अपना लघु उद्योग भी शुरू करने का इच्छुक हूं. कृपया बताएं कि मुझे इस के लिए ऋण (कम ब्याज पर) कहां से मिल सकता है और उत्पादन का ट्रेडमार्क पंजीकरण तथा उस के मानकीकरण की प्रक्रिया क्या है?

छोटे और मंझले उद्योगों के लिए सरकारी और गैरसरकारी एजेंसियां ऋण देने

का काम करती हैं जो अपनी शर्तों पर दिए गए ऋण पर ब्याज भी लेती हैं. सरकारी क्षेत्र के बैंकों तथा राज्यों में वित्त निगम से संपर्क कर ऋण प्राप्त किया जा सकता है. सामान्यतः ये संस्थाएं भूमि, इमारत, प्लाट, मशीनरी, पूंजीगत संपत्तियों आदि के लिए ऋण देती हैं, जिस की ब्याज दर भी सामान्य होती है. आप अपने शहर/प्रदेश में ऐसी किसी संस्था से संपर्क कर ऋण प्राप्त कर सकते हैं.

ट्रेडमार्क रजिस्ट्रेशन के लिए आप अपने क्षेत्र के 'रजिस्ट्रार आफ ट्रेडमार्क्स' अथवा ट्रेड मार्क्स रजिस्ट्री, ओखला इंडस्ट्रीज एस्टेट नई दिल्ली के पते पर संपर्क कर व्यापक जानकारी ले सकते हैं.

इसी तरह अपने उत्पादन की गुणवत्ता (क्वालिटी कंट्रोल) बनाए रखने के लिए कई उद्यमी अपने माल का मानकीकरण करा लेना ज्यादा बेहतर मानते हैं और वैसे भी बाजार में आई.एस.आई. के मानकीकरण वाले उत्पादन ज्यादा विश्वसनीय माने जाते हैं. अतः मानकीकरण संबंधी जानकारी के लिए आप भारतीय मानक ब्यूरो, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002. से संपर्क कर सकते हैं.

मैं 17 वर्षीया बालिका हूं तथा अभी तक मेरे स्तनों में उभार नजर नहीं आता है. अगले वर्ष मेरी शादी भी होने वाली है. कोई ऐसी दवा बताएं जो स्तनों में उभार ला सके.

इस में संदेह नहीं कि युवा स्त्रियां अपने शारीरिक सौंदर्य में इस बात का ध्यान रखती हैं कि उन का वक्षस्थल सुंदर एवं सुडौल उभार लिए हुए हो, और वक्षस्थल का यह उभार भी यदि हारमोन की गड़बड़ी न हो तो सामान्यतः 17 से 19 वर्ष की आयु तक अपना विकसित रूप ले लेता है. अतः घबराएं नहीं, इस से आप के दांपत्य जीवन पर विपरीत असर नहीं पड़ेगा. बाजार की इश्तहारी दवाओं के चक्कर में न पड़ कर संतुलित आहार और व्यायाम करने से आप के स्तनों में विकास नजर आने लगेगा.

मैं एक लड़की को विश्वास दिलाने की चेष्टा करता हूं पर पता नहीं वह मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करती?

किसी का विश्वास पात्र बनने के लिए पहले उसे अपनी विश्वसनीयता का सबूत देना पड़ता है जो शायद आप नहीं दे पा रहे हैं. जब आप अपनी कमी और कमजोरियों के बारे में आत्मावलोकन करेंगे तो आप को पता चलेगा कि किस कमी की वजह से लड़की आप पर यकीन नहीं करती. आप चाहें तो लड़की से पूछ सकते हैं कि वह आप पर यकीन क्यों नहीं करती. लेकिन सचाई जान कर यदि आप अपनी कमी में सुधार लाएंगे तो कोई कारण ही नहीं कि लोग आप पर विश्वास न करें.

वैसे भी यह कार्य ज्यादा मुशकिल नहीं है.

मेरी आयु 12 वर्ष की है और मैं रेडक्रास का सदस्य बनना चाहता हूं. यह कैसे संभव होगा. कृपया मेरा मार्गदर्शन करें.

यदि आप में जनसेवा करने की ललक है तो रेडक्रास के सदस्य कभी भी बन सकते हैं. इस के लिए आप को एक सदस्यता फार्म भर कर शुल्क के साथ देना होगा. इस संस्था का सदस्यता शुल्क वर्गानुसार (सामान्य, आजीवन, संरक्षक आदि) 18 रुपए वार्षिक से ले कर 20 हजार रुपए तक है. ज्यादा जानकारी के लिए आप इस पते पर संपर्क कर सकते हैं. इंडियन रेडक्रास सोसाइटी, राष्ट्रीय हेडक्वार्टर, 1, रेडक्रास रोड, नई दिल्ली-110001.

मैं 22 वर्षीय एम.ए. (भूगोल) अंतिम वर्ष का छात्र हूं और आगे एम.फिल. करना चाहता हूं. परंतु मेरे मातापिता अभी से मुझ पर शादी के लिए दबाव डाल रहे हैं. बताइए क्या करूं?

यदि आप की इच्छा आगे पढ़ने व एम.फिल. करने की है तो अपने मातापिता को अपनी इस इच्छा से अवगत कराएं. साथ में यह भी कहें कि मैं पहले पढ़लिख कर अपना कैरियर बनाऊंगा, फिर विवाह की सोचूंगा. अभी विवाह करने से पढ़ाई में बाधा आएगी. आशा है आप का दृढ़ निश्चय देख कर आप के मातापिता आप से अवश्य सहयोग करेंगे.

कब तक बनी रहेगी चिरकमनीय त्वचा

लेख ● गिरधारीलाल हेडा

"कल हम आईने में रुख की झुर्रियां देखा किए, कारवाने उम्रे रफ्ता के निशां देखा किए."

जिन्होंने अधेड़ उम्र तक की जीवन यात्रा की है, वे हर सुबह दर्पण में इस तथ्य से साक्षात्कार करते हैं, जिसे कहते हैं—झुर्रियां. त्वचा मुख्यतः कालेजन व इलास्टिन नामक प्रोटीन से बनी होती है. कालेजन प्रोटीन त्वचा को संरचनात्मक आधार देती है. इलास्टिन इन्हें जोड़ने, बांधने व संभा... कार्य करती है. ज्योंज्यों उम्र बढ़ती है... प्रोटीनों की लचक में उत्तरोत्तर कमी... जाती है. अतः शरीर की त्वचा में झुर्रि... जाती हैं.

वृद्धावस्था में आतेआते त्वचा... परिवर्तन भी आते हैं. स्वेद ग्रंथियों...

कूपों में परिवर्तन के फलस्वरूप त्वचा अपनी नैसर्गिक आभा खो देती है. त्वचा सूख जाती है व उस पर पाए जाने वाले बाल सफेद होने लगते हैं. साथ ही बालों के गिरने की रफ्तार भी बढ़ जाती है. इस प्रकार त्वचा के नीचे की वसा, कालेजन व इलास्टिन तंतुओं के क्षरण के परिणामस्वरूप त्वचा ढीली हो जाती है. उस में झुर्रियां पड़ जाती हैं और वह अपनी कमनीयता खो देती है.

त्वचा विशेषज्ञों के अनुसार आज के दिन झुर्रियां पूर्णतः खत्म हो जाएं तथा त्वचा चिर कमनीय बनी रहे, जरा मुशकिल है. मगर जिस तरह व्यापक रूप से अनुसंधान कार्य हो रहे हैं तथा उन के आशानुरूप परिणाम सामने आ रहे हैं, उन से आशा बंधती है कि चिर युवा, चिर कमनीय त्वचा का ख्वाब जल्दी ही पूरा होगा.

किसी भी व्यक्ति की खूबसूरती का राज उस की कोमल, स्निग्ध और स्वस्थ त्वचा में छिपा होता है, किंतु जैसेजैसे उम्र ढलान पर पहुंचने लगती है, त्वचा पर पड़ने वाली झुर्रियों से खूबसूरती का नकशा ही बिगड़ जाता है. क्या कोई ऐसा तरीका नहीं है, जिस की बदौलत त्वचा पर झुर्रियां ही न पड़ने पाएं?

अभी हाल ही में लंदन के वेस्टमिंस्टर अस्पताल के त्वचा विशेषज्ञ रिचर्ड स्टाटन और उन के सहयोगियों ने प्रयोगशाला में एक ऐसी कृत्रिम त्वचा बनाने में सफलता प्राप्त की है जो एकदम प्राकृतिक त्वचा जैसी है और दोनों के गुण भी लगभग एकसमान हैं. आशा की जाती है कि इस से न केवल जन्मजात कुरूपता, विकृत त्वचा और इस से संबंधित अनेक बीमारियों, परेशानियों से छुटकारा मिल सकेगा अपितु चिर युवा नजर आने का स्वप्न साकार करने में भी अच्छा सहयोग मिलेगा.

अधिकांश वैज्ञानिक आशावान हैं कि भविष्य में त्वचा का बुढ़ापा रोकने वाली क्रीम जरूर बन जाएगी. आज विश्व बाजार में अनेक ऐसी क्रीमें बिक रही हैं जिन की निर्माता कंपनियां उन की वार्धक्य रोधी शक्ति का दावा करती हैं, मगर डा. आंट, डा. निग्रा आदि अनेक वैज्ञानिक इन क्रीमों में वार्धक्य रोधी गुण होने में संदेह करते हैं. 'आर्काइब्ज आफ डर्मेटालाजी' के संपादक के अनुसार इन क्रीमों के गुणकारी होने की पुष्टि में कोई वैज्ञानिक अध्ययन उपलब्ध नहीं है. अधिकांश दावे जो इन क्रीमों की निर्माता कंपनियां करती हैं, उन के स्वयं के अनुसंधान पर आधारित होते हैं और वे त्वचा विशेषज्ञों से पुष्ट भी हों, यह जरूरी नहीं.

मगर एक औषधि निर्माता कंपनी 'ओर्थो फार्मेक्युटिकल्स' (जानसन एंड जानसन) का विश्वास है कि उस की क्रीम 'रेटिन-ए' त्वचा को बाहर व भीतर से युवा बना सकती है. यह कंपनी अपनी इस क्रीम का परीक्षण यूरोप व अमेरिका के अनेक विश्वविद्यालयों, हस्पतालों व अनुसंधान केंद्रों में करा रही है.

रेटिन-ए एक विटामिन से बनी क्रीम है. एक परीक्षण में 16 अधेड़ व्यक्तियों ने रेटिन-ए क्रीम को दिन में दो बार अपनी कलाइयों पर लगाया था. इस परीक्षण में यह पाया गया कि उन की कलाई की त्वचा में कई परिवर्तन आए. मसलन, बाह्य त्वचा की सब से ऊपर वाली परत जिस में सभी मृत कोशिकाएं होती हैं, पतली हो गई, अर्थात मृत कोशिकाएं कम हो गई. संभवतः बाह्य त्वचा की कोशिकाओं की मृत्यु दर कम हो गई. रक्त प्रवाह स्पष्ट रूप से बढ़ गया जिस से त्वचा का रंग और भी गुलाबी हो गया. त्वचा में चितकबरापन कम या समाप्त हो गया है.

इसी तरह वैज्ञानिक क्लीनस्मिथ का दावा है कि रेटिन-ए मृत कोशिकाओं को छील देती है, त्वचा की सतह से लगी सूक्ष्म रक्त वाहिकाओं में वृद्धि करती है और त्वचा को चिकना बनाती है.

मगर अभी अध्ययन जारी है और आशा है कि भविष्य में संपूर्ण त्वचा के लिए वार्धक्य रोधी क्रीमें बनने लगेंगी.
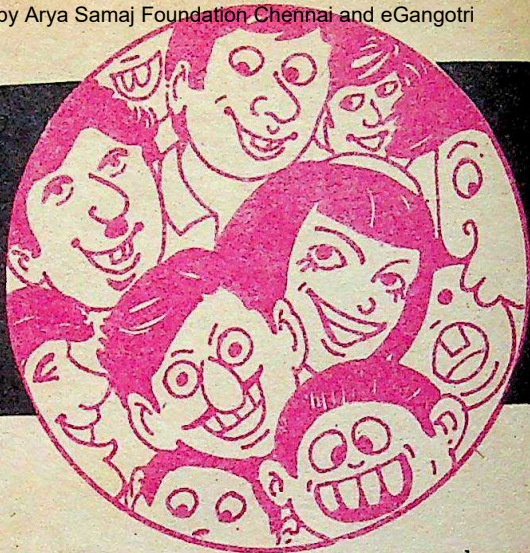
लतीफा सुनाइए

बचपन में पढ़ा था, 'हास्य मानव जाति के लिए एक विशिष्ट वरदान है.' ठीक इसी से कुछ मिलताजुलता ही लिखा है डाक्टर रेमंड ए. मूढी ने अपनी पुस्तक 'लाफ आफ्टर लाफ : द हीलिंग पावर आफ ह्यूमर' में. विलियम फ्राइ जूनियर ने 30 वर्ष से भी अधिक समय तक हंसी के लाभकारी प्रभावों पर अनुसंधान कार्य किया है. उन का कहना है कि जब हम हंसते हैं तो हमारी मांसपेशियां शिथिल पड़ जाती हैं. मांसपेशियों में तनाव के कारण होने वाले दर्द जैसे गठिया, सिरदर्द आदि से पीड़ित व्यक्तियों को हंसने से काफी लाभ मिलता है.

डाक्टरों व मनश्चिकित्सकों के अनुसार हंसी के माध्यम से हम जिंदगी के विकट आघातों को भी सह सकते हैं.

तनाव व व्यस्तता भरी जिंदगी में औरों को हंसाना भी मानव जाति की एक सेवा ही है. यह हंसाना एक साधारण कार्य नहीं अपितु एक कला है, और इस कला का सब से सरल रूप है 'लतीफा सुनाना.' हर कला की तरह इस में पारंगत होने के लिए भी साधना की जरूरत होती है.

लतीफा महज एक छोटी कहानी है जिस का अंत चौंकाने वाले चरमोत्कर्ष पर है, जहां हंसी के फुहारे फूट पड़ते हैं. ल... केवल हंसाता है अपितु समाज, व्य... जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कभीक... कुछ कह जाता है. मगर आप के सुनाए... पर तभी हंसी आएगी जब आप उसे स... सुनाएंगे. अन्यथा श्रोता आप के लतीफे... स्वयं आप पर भले ही हंस पड़े.

लीजिए कुछ बुनियादी बातें प्र... जिन्हें ध्यान में रख कर आप अपने ल... प्रभावशाली तरीके से सुना सकते हैं :

लतीफा शुरू करने से पहले असमंजसता प्रदर्शित मत कीजिए कि ... पाऊंगा अथवा नहीं, मुझे पूरा याद है अ... आदि.

लतीफा जरा तेज गति व लयबद्ध... सुनाइए. उसे धीमी गति का समाचार न...

लतीफा सुनाते वक्त अपना ध्यान... की तरफ रखें. परीक्षार्थियों की तरह... तरफ देखना अथवा नवेली वधू की त... नीचे किए नज़रें रखना ठीक नहीं. श्रो... तरफ ध्यान रखने से उन का पूरा ध्यान...

तनाव और व्यस्तता से परेशानहाल जिंदगियों में खुशी और हास्य की बहार लाने से बढ़ कर मानव सेवा और क्या हो सकती है? आप भी अपनी जिंदगी में खुशियों के पल समेटिए और दूसरों को हंसाने के लिए लतीफा सुनाने की कला में पारंगत हो जाइए.

लतीफा पूर्णतः आत्मविश्वास से सुनाइए.

ा आप के लतीफे की तरफ होगा. वे उसी के वाह में बहेंगे.

लतीफा सुनाते वक्त आप स्वयं भी यह तलाने की कोशिश कीजिए कि आप को भी स में आनंद आ रहा है. लतीफे के हिसाब से कसांसें भरना, हैरत प्रकट करना, चौंकना, सना, मुसकराना आदि जरूरी है.

केवल उन्हीं बातों और पात्रों का वर्णन करें कि लतीफे के लिए आवश्यक हों. दाहरणार्थ, 'मैं अपने मित्र के साथ जा रहा था' यदि आप इस तरह सुनाएंगे कि 'मैं अपने निष्ठ मित्र अशोक जी कि लाला हसमुखलाल की पांचवीं रोड स्थित किराने की दुकान पर काम करता है, के साथ सड़क पर जा रहा था,' तो निश्चित तौर पर श्रोता का ध्यान दुकान पर चला जाएगा और वह दुकानदारी से संबंधित किसी घटना के जिक्र की आशा व अपेक्षा करेगा और जब वह चीज नहीं मिलेगी तो संभव है उस में खीज उत्पन्न हो.

लतीफे का अंतिम वाक्य जो कि सब से महत्त्वपूर्ण होता है, स्पष्टतः पूर्णतः आत्मविश्वास से कहिए.

आप इन बिंदुओं को ध्यान में रख कर एक अच्छे लतीफेबाज बन सकते हैं. ●

11 वर्ष का नन्हां पायलट

कैलिफोर्निया निवासी 11 वर्षीय क्रिस्टोफर ली मार्शल ने सब से कम उम्र में अटलां
महासागर पार करने वाले पायलटों में अपनी गिनती करा ली है.

मार्शल ने 5,900 किलोमीटर की दूरी दो सीटों वाले 'मूनी-252' विमान से उड़ान भर
एक सप्ताह में पूरी की. मार्शल की यह उड़ान ले बुरगट हवाई अड्डे पर समाप्त हुई. इस
यात्रा में 47 वर्षीय पायलट रैंडी 'ड्यूक' कैनिंघम भी उस के साथ था. मौसम की खरा
कारण एक बार ही ड्यूक ने विमान का नियंत्रण अपने हाथ में लिया था.

उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष जब मार्शल 10 वर्ष का था तो उस ने अमरीका के आ
उड़ान भरने वाला सब से कम उम्र का पायलट होने का गौरव प्राप्त कर लिया था.

—तेहरान टा

*

निहत्थे सुरक्षा गार्ड ने बैंक लुटने से बचाया

फरीदाबाद की इलाहाबाद बैंक शाखा को जब तीन सशस्त्र युवकों ने लूटने का प्र
किया तो निहत्थे गार्ड राजपाल ने उन का मुकाबला किया और शोर मचा कर उन की सु
योजना चौपट कर दी. इस मुठभेड़ में गार्ड बंदूक के छर्रे लगने से घायल हो गया.

जब बैंक अधिकारियों ने राजपाल को इस बहादुरी के कार्य के लिए पुरस्कार दे
पेशकश की तो उस ने कहा, "पुरस्कार की क्या जरूरत है यह तो मेरी ड्यूटी थी" और पु
लेने से इनकार कर दिया.

—हिंदु

*

15 वर्षीय बालक ने दो बदमाशों को मौत के घाट उतारा

डिहरी आनसोन (रोहतास) के 15 वर्षीय कृष्ण प्रताप सिंह को बदमाश उस के घर
कुछ रुपया ऐंठने के लिए उठा कर ले गए.

बदमाशों ने कृष्णप्रताप को अपने अड्डे पर रस्सी से बांध दिया. तीसरे दिन जब बद
शराब पी कर सो गए तो लड़के ने किसी तरह रस्सी खोल ली. उस के बाद बदमाश के सि
रखी रिवाल्वर धीरे से निकाल कर बदमाश की ओर निशाना लगा कर गोली चला दी.
बदमाश जब गोली की आवाज सुन कर उठा तो उसे भी मार डाला और खुद भाग कर
स्टेशन चला गया.

—दैनिक वि

*

दुर्घटना टालने के लिए अपनी बलि

पूर्वोत्तर रेलवे के मथन व कल्याणपुर स्टेशनों के बीच एक गैंगमैन ने पटरी पर र
देखा और उस ने अपनी जान की परवाह न करते हुए उस बम को पटरी पर से तो हटा दि
इसी कोशिश में बम फट जाने से उस की [illegible] कुछ ही समय बाद वहां से
एक्सप्रेस गुजरने वाली थी. इस प्रकार दुर्घटना होतेहोते बच गई.

—दैनिक जा

रंग बेरंग

मंत्री पत्नी

मंत्री पत्नी
योग्य कितनी,
बिना इलैक्शन
शासक की शासक
जनता की अभिभावक.

मंत्री साला

मंत्री का साला
गोरा या काला
मिनिस्टरी और खुदाई में
कोई नहीं उस से आला.
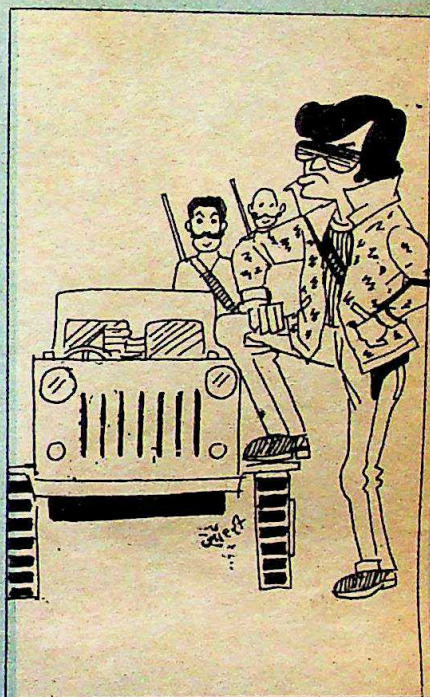
मंत्री चमचा

मंत्री का चमचा
मक्खन में लिपटा
खिलाए, पर खाए
कभी न गच्चा.

मंत्री पी.ए.

मंत्री पी.ए.
झूमे बिन पिए
दिल पर जले लोगों के
उधार घी के दिए.

—डा. सेवा नंदवाल
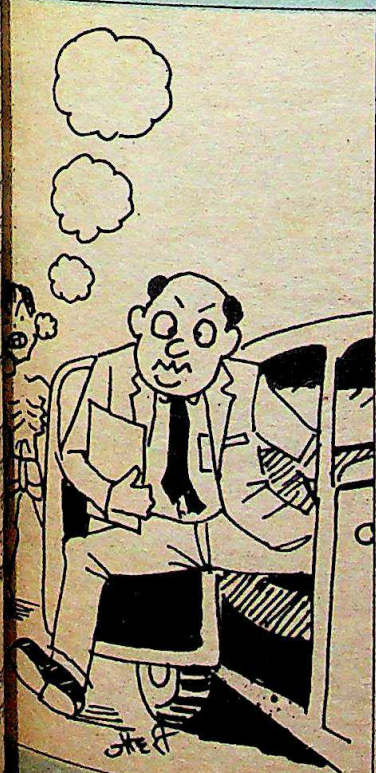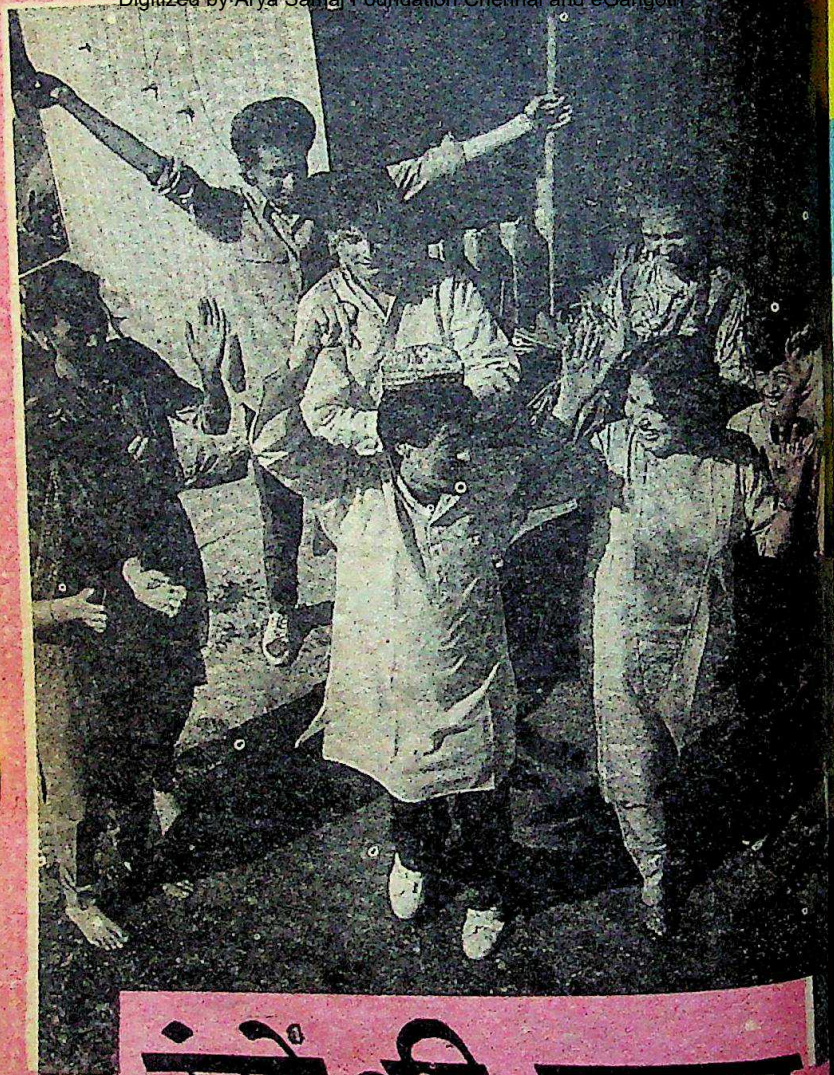
रंगों की प्यास

सपने रंगों की प्यास होते हैं,
यादों के आसपास होते हैं.
रंगों में गंध की बोली भरते,
आस्था के अमलतास होते हैं.

उड़ानें जिन की तलाश करती हैं,
पंख ऐसे आकाश होते हैं.

जिन के पलकों में नदी बहती है,
दुख उन के लिबास होते हैं.

जिंदगी जब आग से गुजरती है,
परिवर्तन अनायास होते हैं.
अपने सुख गीतों में बांटते रहिए,
गीत जीवन की आस होते हैं.

—विनेश

होली है प्रिय आज

मैना को बताओ
बयार को जताओ.
फूलों के संग वन
मौसम को सुझाओ
होली है आओ प्रिय, इतना ना सताओ.

देहरी को बताओ
आंगन भी सजाओ
तुलसी के बिरवा को
महकना सिखाओ
होली है आज प्रिय, इतना ना सताओ.

पड़ोसी को सुनाओ
गलियां गुनगुनाओ
सखी, कब वो आ रहे
ढिंढोरा पिटवाओ
होली है आओ प्रिय,
इतना ना सताओ
टेसू ना भिगाओ
रंगों को बचाओ

उन के आए रंग गहरा
चढ़े ना चढ़ाओ
होली है आज प्रिय, इतना ना सताओ.

मंत्र कोई चलाओ
मरण को टलाओ
चढ़ रहा जो अंगअंग
जहर कोई उतारो
होली रंग जाओ प्रिय,
इतना ना सताओ.

—गोपीनाथ कालभोर

तन पर अबीरी रंग,
मन पर प्यार रंग रचता गया,
यों लगा मौसम कहीं
फागुन के आने का हुआ.

चूनरी पीली पहन
सरसों खड़ी है खेत में,
कह रही मुझ से समय
साजन रिझाने का हुआ.

मधुर मिश्री सी घुली
झनकार की आवाज में,
संकेत कोई यह नया
छागल बजाने का हुआ.

मदभरी बागी हवाओं ने
छुआ है क्या तुझे,
मेरी गली का मन भला
क्यों महक जाने का हुआ.

कर गई पागल मुझे प्रिय
भ्रमर की अठखेलियां,
बिन पिए ही आज फिर
मन बहक जाने का हुआ.

—मैत्रेयी पुष्पा

फागुन खेल रही हूं

भोलेपन में अब तक गुजरी
जाने या अनजाने में
क्या मालूम था सुख होता है
नजरों के लड़ जाने में.

मैं तेरे आंगन में हूं और
तेरा रंग बरसता है
फागुन खेल रही हूं जैसे
आ कर मैं बरसाने में.

जब से हाथ रचे हैं मेरे,
तेरे नाम की मेंहदी से
मिलती है सौगात प्यार की
तब से हर नजराने में.

मधुशाला तक झूम उठे
और थिरक उठे हों मस्ती
ऐसा क्या होता है आखिर
सांसों के मयखाने में.

—रंजीत सिंह

शांतिनिकेतन में दोलोत्सव

लेख • नारायण भक्त
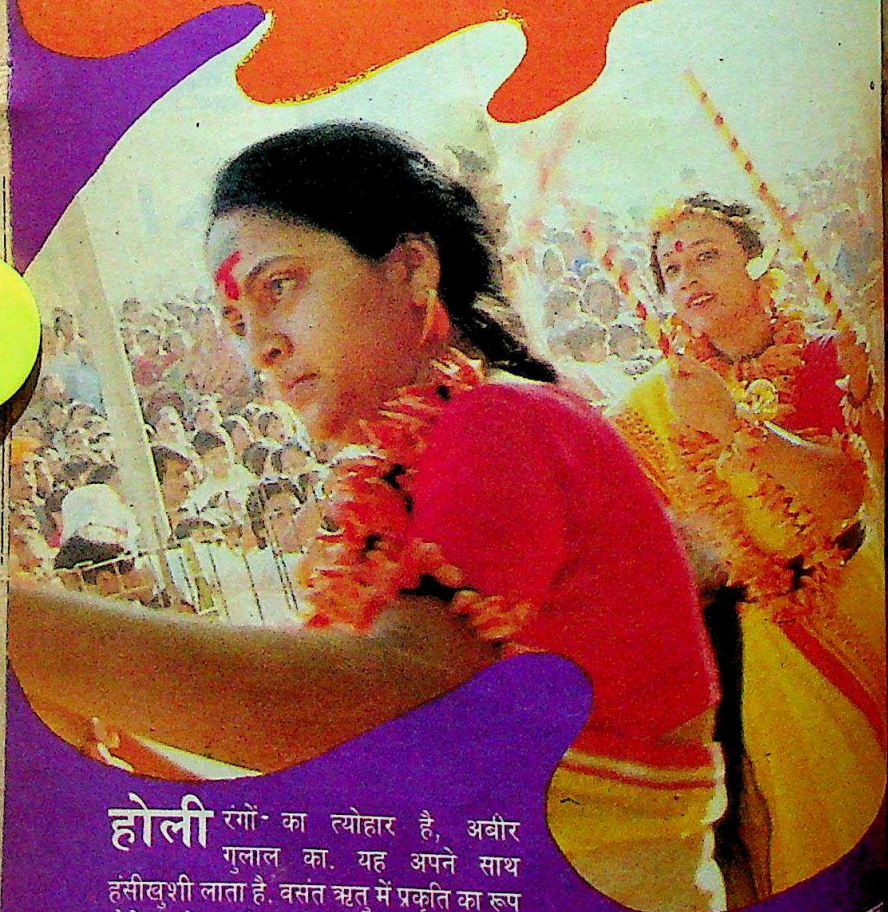
होली रंगों का त्योहार है, अबीर गुलाल का. यह अपने साथ हंसीखुशी लाता है. वसंत ऋतु में प्रकृति का रूप जैसे अपनेआप खिल उठता है. हम वसंत को बुलाते नहीं, वसंत खुद गुनगुनाता, मुसकरा[illegible] हंसता हुआ हमारे पास चला आता है और होली की खुशियां जैसे इस ऋतु में झरने लग[illegible]

खुशियों से भरा यह पर्व शांतिनिकेतन में भी बड़े उत्साह से मनाया जाता है. [illegible] छात्रछात्राएं उल्लास सहित भाग लेते हैं. एकदूसरे को रंगगुलाल से सराबोर करते और [illegible] खातेखिलाते हैं. हां, यहां की होली में कुछ विशेषताएं भी होती हैं.

इसे सर्वप्रथम रवि बाबू ने ही आरंभ किया था. उन्होंने इसे होली, वसंतोत्सव न कह कर 'दोल' कहा. वही दोलोत्सव कहलाने लगा प्रतिवर्ष फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन इस के आयोजन की परिपाटी आरंभ हो गई.

पश्चिम बंगाल में शांतिनिकेतन एक आदर्श शिक्षण संस्थान है. यहां पर दूरदूर से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं. छात्र-छात्राओं के रहने के लिए आवास की सुविधा भी है. इसी स्थान पर यह उत्सव आमों की घनी छांह में एक मंच बना कर मनाया जाता है.

शांतिनिकेतन के छात्रछात्राएं मंच को रंगबिरंगे तोरणों से सजा कर वस्त्रों एवं पुष्पादि से आकर्षक बना देते हैं. मंच की शोभा तो देखते ही बनती है. नए वर्ष का स्वागत करने की यह कल्पना गुरुदेव की थी. वसंत हमारे थकेमांदे

शरीर में नई स्फूर्ति, नया जोश भर देता है. ऐसे मौसम में वृद्ध व्यक्ति भी अपने भीतर शक्ति का अनुभव करते हैं.

शांतिनिकेतन में दूरदूर से काफी संख्या में लोग खूब सवेरे पहुंचने लगते हैं. इस अवसर पर

छात्रछात्राएं मनमोहक पीलेलाल वस्त्र धारण करते हैं. छात्राएं पलाश के फूलों की मालाएं, बाजूबंद एवं कमरबंद पहनती हैं. इन के कोमल और सुंदर हाथों में अबीरगुलाल से सजे थाल देखते ही बनते हैं.

उन की वेशभूषा को देखने पर लगता है मानो सचमुच वसंत धरती पर उतर आया हो. सारा वातावरण नृत्यसंगीतमय हो उठता है. पृष्ठभूमि में सर्वत्र रवींद्र संगीत की गूंज सुन पड़ती है. बीचबीच में जयदेव एवं विद्यापति के गीत भी मुखरित होते हैं. रवि बाबू तो विश्व के महान कवि थे ही, जयदेव और विद्यापति भी हमारे देश के प्राचीन कवियों में बहुत ऊंचा स्थान रखते हैं. जयदेव के अमर काव्य 'गीत गोविंद' तथा 'विद्यापति की पदावली' में होली का मनोहारी वर्णन मिलता है.

मृदंग और करताल की आवाज के साथ छात्र नर्त्तकों की टोलियां आगे बढ़ जाती हैं. सर्वत्र उल्लास का वातावरण दिखाई देता है. यहां बैठ कर कोई उदास नहीं रह सकता. उदासी आनंद

दोलोत्सव के समय गीतनृत्य में विमुग्ध शांतिनिकेतन की छात्रछात्राएं.
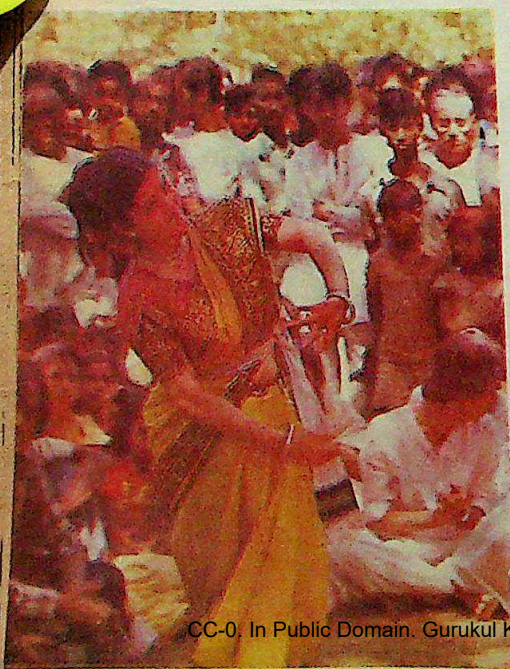
वसंत के आगमन के साथ ही पू देश में खुशियों का रंग जम लगता है और होली के दिन त पूरा वातावरण ही रंग, अबी गुलाल और फाग की मस्ती डूब कर होलीमय हो जाता है पर शांतिनिकेतन की होली क तो कुछ खास ही विशेषता है.

में बदल जाती है.

जरा उधर देखिए, छात्रों की टोलियां धोती, पीला कुरता, पीली पगड़ी, पीला प कंधे पर रखे नृत्य में भाग लेने के लिए ब लड़के और लड़कियां दोनों खुश नजर आ लीजिए, अब वसंत गीत शुरू हो गया. रवि की ये पंक्तियां चारों ओर गूंजने लगी हैं :

"ओ रे गृहवासी
खोल द्वार खोल, लागलो दोल
स्थले, जले, वन तले लागलो दोल
खोल द्वार खोल, ओ रे गृहवासी!"

अर्थात, अरे गृहवासी, अपने घर के खोलो, दोल पर्व आ गया है. जल, स्थल, सभी ओर आनंद का उत्सव छा गया है.

गीत के साथ मृदंग पर थाप पड़ने है. मजीरे की ध्वनि भी सुनाई दे रही है. गीत के साथ तरहतरह के भाव, तालों और से नृत्य यात्रा की दूरी तय करती हैं. दोनों हाथों को ऊपर उठा कर, मुट्ठियां अबीर हवा में उछालती हैं. उन के मुख गान फूट पड़ता है :

'जाबार आगे जाओ गो आमाय दिए,
रक्ते तोमार चरण दोला लागिए दि

अर्थात, जाने के पहले मुझे जगा कर मेरे रक्त प्रवाह में तुम्हारे पैरों की गति है.

गीतनृत्य के बाद लोग विभिन्न टोलि बंट कर एकदूसरे को गुलाल लगाते हैं. गले मिलते हैं. अलगअलग सघन पेड़ों की में बैठ कर ढोल, मजीरों, हारमोनियम

गी

वालियों पर संगीत चलत भाव नृत्य क्रम चलत छात्रछात्राएं छात्रावास व अन्य हाथों में रंग वे उन की शांतिनिकेत बच्चों और . छुट्टियों खुशी के प कर एक हो दोल समापन रा नाटिका के मार्च (प्रथ

गीतनृत्य के बाद 'गुलाल' की बारी : परस्पर प्रेम, सौहार्द और मिलन की भावना.

डालियों पर गीत छेड़ देते हैं. पृष्ठभूमि में रवींद्र संगीत चलता रहता है. एकएक कर के लड़कियां भाव नृत्य करती हैं. इस तरह दोपहर तक यह क्रम चलता रहता है. तदुपरांत आश्रम की छात्रछात्राएं आराम करने के लिए अपने छात्रावास को लौट जाती हैं.

अन्य स्थानों में तो बड़े लोग बच्चों के हाथों में रंग अबीर सौंप कर निश्चिंत हो जाते हैं. वे उन की टोलियों में शामिल नहीं होते. पर शांतिनिकेतन की होली का रस ऐसा नहीं है, जो बच्चों और बड़ों को एकदम से अलगथलग कर दे. छुट्टियों में घर नहीं गए विद्वान शिक्षक भी इस खुशी के पर्व में छात्रछात्राओं के साथ घुलमिल कर एक हो जाते हैं.

दोल पर्व अर्थात होली के उत्सव का समापन रात्रि के खुले मंच पर रवि बाबू की नृत्य नाटिका के प्रदर्शन से होता है. खुले मंच पर 'चांडालिका' या 'चित्रांगदा' नाटिका का प्रदर्शन होता है, जिस में बड़े उल्लास के साथ कलाकार भाग लेते हैं. यह क्रम मध्यरात्रि तक चलता रहता है.

इस दोलोत्सव में भाग लेने वाले सभी दर्शक, कलाकार अगले वर्ष के दोल की प्रतीक्षा बड़ी बेसब्री से करते हैं. शांतिनिकेतन पहुंच कर इन सुहावन, मनभावन दृश्यों को देखना उन्हें बहुत भाता है.

शांतिनिकेतन के वसंतोत्सव की जो खूबियां हैं, वे प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुरूप हैं. प्राचीन भारत में मनाए जाने वाले वसंतोत्सव की कुछ झलक भी इस में देखी जा सकती है, जिसे हम एक प्रकार से भूल बैठे हैं. हम उस दिन की भी कल्पना कर सकते हैं, जब सारे देश में निर्मल तथा निर्जल, स्वस्थ एवं पवित्र होली मनाई जाएगी. ●

परदे के आगे परदे के पीछे

अनिल कूपर : हीरो बनाम जीरो

अनिल कपूर, अमिताभ बच्चन की खाली होती कुरसी लेने की फिराक में था. पिछले साल अमिताभ की तीनों फिल्में असफल हुईं और अनिल कपूर की तीनों फिर भी वह नंबर एक नहीं बन पाया. एक की कुरसी खाली है, पर उस पर अब चाकलेटी हीरो नहीं बैठने वाला.

अब तो चरित्र अभिनेताओं का ज है, चाहे वह नाना पाटेकर हो, नसीरुद्दीन या कोई और. अनिल भी इस तथ्य को गया है और वह अपनी फिल्मी दुकान मजबूत बनाने के लिए निर्माता बन गया अपनी निर्मित दो फिल्मों में तो वह खुद है. तीसरी में अपने भाई संजय को बतौर पेश कर रहा है.

एक फिल्म के मुहूर्त में अनिल मिला तो मैं ने पूछा, "नंबर एक की कुर कब बैठ रहे हैं?"

वह धीरे से "यह नंबरों का खे मेरी समझ में नहीं मैं तो एक अभिनेता बनना हूं."

अनिल क नाम का नेता निर

माधु अब

हिं सफल है, माधुरी दी पिछले स अपना में था. इसी 'महासंग्रा

एव पर उभरे थे. मैं ने

'खिलाफ' में चंकी पांडे व माधुरी दीक्षित : कपड़े हटाने के खिलाफ नहीं.

माधुरी दीक्षित : अब मेरी बारी

हिंदी फिल्मों में एक हीरोइन उतनी ही सफल है, जितने वह परदे पर कपड़े उघाड़े. माधुरी दीक्षित इसे अच्छी तरह समझ गई है. पिछले साल की उस की फिल्म 'कानून अपना अपना में' उस ने तबीयत से देह प्रदर्शन किया था. इसी परंपरा में उस की आने वाली फिल्में 'महासंग्राम' और 'खिलाफ' हैं.

एक समारोह में उस से भेंट हुई. चेहरे पर उभरे मुंहासे शायद उस का मुंह चिढ़ा रहे थे. मैं ने प्रश्न किया, ''आप की नई फिल्मों में देह प्रदर्शन की काफी बेबाकी है. इस बारे में कुछ कहेंगी?''

सुनते ही वह घूरते हुए बोली, ''अच्छा.'' कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद फिर बोली, ''यह ग्लैमर की दुनिया है. कुछ न कुछ तो दिखाना ही पड़ता है. मैं एक नर्तकी भी हूं और जब नाचूंगी तो शरीर में थिरकन होगी ही.''

जवाब मिल गया आप को?

मैं ने प्यार किया : बासी कढ़ी का उबाल

राजश्री बैनर्स ने इस बार बड़े बजट की नई जोड़ी के साथ प्रेम कहानी बनाने की कोशिश की है, परंतु अपने परंपरा वादी मूल्यों और नए फिल्मी परिवेश में वह भटक गए हैं.

बतौर निर्देशक सूरज बड़जात्या ने मेहनत की है. पर फिल्म की नई जोड़ी, सलमान खान और भाग्यश्री में वह ताजगी नहीं है, जो इसे 'एक दूजे के लिए' जैसी कशिश दे सके.

कारण साफ है. हीरो सलमान खान यहां 'मिस्टर संगीता बिजलानी' के नाम से मशहूर है और भाग्यश्री ने बीच में घर से भाग कर शादी कर ली थी. फिल्म के प्रदर्शन के बाद सूरज बड़जात्या मिले तो पूछा, "यह तो 'लव स्टोरी' 'ब्लू लागून' और 'एक दूजे के लिए' की अनुकृति है?"

वह बोले, 'नहीं, इस फिल्म की कहानी मेरी है. मैं जवान हूं और जवां दिलों की पसंद को समझता हूं. रही प्रेरणा की बात तो यह अपनाअपना नजरिया है."

"पर क्या यह राजश्री की परंपरा के अनुरूप है?"

हंसते हुए सूरज बोले, "वक्त के साथ परंपरा भी बदलती है. पर फिल्म साफसुथरी है, यह तो आप मानेंगे ही."

आलोकनाथ, सलमान खान व भाग्य श्री : सफलता का श्रेय कलाकार को कम निर्देशक को ज्यादा.

शिखा स्वरूप और अविनाश वाधवान : एक और नई फिल्मी जोड़ी.

आवाज दे कहां है : दुनिया मेरी जवां है

बहुत पुरानी एक फिल्म थी, 'अनमोल घड़ी'. इस का एक मशहूर गाना था, आवाज दे कहां है, दुनिया मेरी जवां है.'

संगीतकार नौशाद ने इस मुखड़े से प्रभावित हो कर एक फिल्म की कहानी लिख डाली, 'आवाज दे कहां है' जो कई वर्षों तक उन की तिजोरी में पड़ी थी. आजकल नौशाद के पास करने को कुछ नहीं है. खाली मन को उन की पुरानी कहानी याद आई और जोड़तोड़ कर फिल्म की शुरूआत की. पुरानी पड़ी कहानी पर शिखा स्वरूप और अविनाश वाधवान की नई जोड़ी काम कर रही है. यह कहानी नौशाद ने तब लिखी थी, जब वह युवा थे.

संगीत और पटकथा नौशाद की है और इस के निर्देशक सिब्ते हसन रिजवी हैं, जिन की 'जोशीले' पिछले साल की एक बड़ी असफल फिल्म थी.

नौशाद मिले तो पूछा, ''आजकल क्या शगल है?''

''इस फिल्म में संगीत है. दूसरी लिख रहा हूं तथा उसे निर्देशित भी करूंगा.'' उन्होंने जवाब दिया.

''इस फिल्म की पृष्ठभूमि क्या है?''

''यह फिल्म रोमांटिक और संगीत प्रधान है. इसी लिए नई जोड़ी ली है. इस से ताजगी रहेगी.''

''और अगर नहीं चली तो?''

हंसते हुए नौशाद बोले, ''आगे वाली फिल्म नहीं लिखूंगा.''

21वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव

आपाधापी में बीता फिल्मी कुंभ

• महमिया अजय

फिल्म जैसे सशक्त कला विधा के माध्यम से देशविदेश की कला, संस्कृति और तकनीक का आदानप्रदान करने के उद्देश्य को ले कर अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सवों में दिखाई जाने वाली फिल्मों का स्तर चाहे जैसा भी हो, पर इस के आयोजक हर बार कुछ न कुछ ऐसा कर देते हैं कि फिल्मोत्सव बेमतलब का हो कर रह जाता है. इस बार भी कलकत्ता में संपन्न होने वाले 21वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव के बारे में कुछ ऐसा ही कहा जा सकता है.

"**क्या** कुछ ऐसा नहीं लगता कि आप लोगों को गलतियां ढूंढने की आदत सी पड़ गई है? फिल्म समारोह जब 14 दिन का होता था तो कहा गया कि घटा कर 10 दिन का किया जाए. अब जब 10 दिन का

भारतीय पैनोरमा में प्रदर्शित तीन क्षेत्रीय भाषा की फिल्मों के दृश्य. 1. दीप्ति नवल पंजाबी फिल्म 'मढ़ी दा दीवा' में 2. गुजराती में बनी पर्सी 3. बंगाली फिल्म '[illegible]'
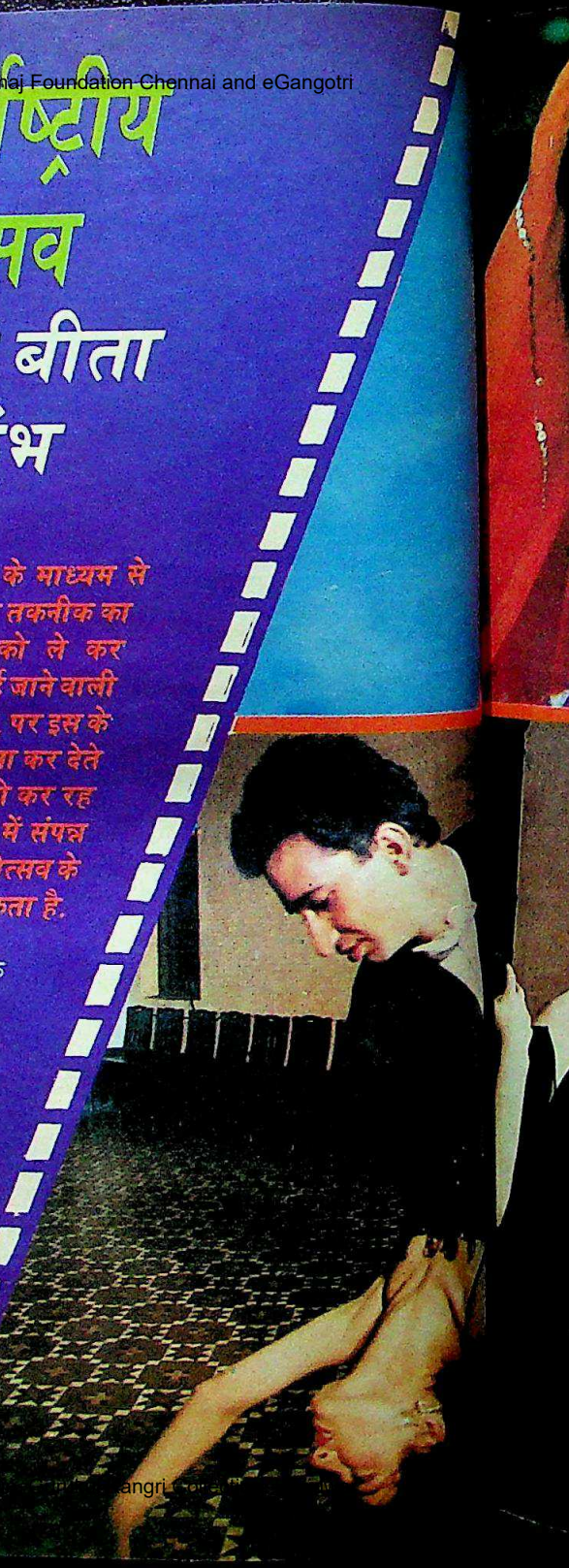
कर दिया गया है तो कहा जा रहा है कि एकसाथ चार फिल्मों की 'स्क्रीनिंग' हो रही है. बात कुछ जमीं नहीं. वैसे स्पर्धात्मक होने में खराबी क्या है? केवल अच्छी फिल्में देखने को मिलेंगी, यह तो और भी अच्छी बात है. कला फिल्मों से आप को एलर्जी है क्या? मेरी समझ में तो यह आ रहा है कि जो कुछ अच्छा हो रहा है उस का सही मूल्यांकन नहीं हो रहा है. केवल बुरे की तलाश कर रहे हैं, आप लोग.'' निर्मातानिर्देशक, गीतकार गुलजार ने इन शब्दों में अपनी खीज प्रकट की, जब उन से भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह–90 में मची भारी अफरातफरी पर टिप्पणी मांगी गई.

भारत का यह 21वां सफल फिल्मोत्सव आयोजित करने के लिए गठित विभिन्न इकाइयों के तालमेल के अभाव में आपाधापी, अनिश्चितता और अफरातफरी में मध्य जनवरी में कलकत्ता में संपन्न हुआ 'फिल्मोत्सव–90' तमाम बुराइयों के बावजूद दर्शकों को दुर्लभ फिल्मों की भेंट दे गया और यही बात इस समारोह की सब से बड़ी सफलता मानी जानी चाहिए.

इतने विशाल स्तर पर आयोजित होने वाले ऐसे व्यापक समारोह में आयोजनमूलक खामियां खटकती जरूर हैं, खास कर के तब जब विश्व के प्रख्यात निर्देशकों और फिल्म अभिनेता, अभिनेत्रियों की मौजूदगी में गुलजार एवं दीप्ति नवल जैसी हस्तियों को सीढ़ियों के कारपेट पर बैठ कर 'इनावेंद्रि' जैसी दुर्लभ फिल्म देखनी पड़ी हो.

समारोह के मूल स्थल नंदन फिल्म

भारतीय पैनोरमा के अंतर्गत अपर्णा सेन की बंगला फिल्म 'सती' का एक दृश्य : गूंगे चरित्र को निभाती शबाना आजमी.

परिसर ... बार नहीं ... लेकिन ... बावजूद ... 'ईवनिंग ... 'रेमिरो' ... (आस्ट्रेलि... 'स्वीटी' ... लैंड), ... मांट्रियल ... 'अ शा... 'सेक्स, ... 'जांजीब... (ग्रीस), ... आस्ट्रेलि... रहे, उ...

मार्च (

चीन की एक फिल्म 'इवनिंग बेल' का एक दृश्य : अन्य चीनी फिल्मों की अपेक्षा थोड़ी बेहतर फिल्म.

परिसर में ऐसी गफलत एवं खींचतान एकदो बार नहीं, बल्कि बारबार देखने को मिली. लेकिन सारी धक्कामुक्की एवं खींचतान के बावजूद जो दर्शक 'रेनमैन' (अमरीका), 'ईवनिंग बेल' (चीन), 'ब्लैक रेन' (जापान), 'रेमिरो' (अमरीका), 'पोवाकात्सी', 'सेलिया' (आस्ट्रेलिया), 'प्रोसीक्यूटर' (बल्गारिया), 'स्वीटी' (आस्ट्रेलिया), 'द वैनिशिंग' (नीदरलैंड), इजवेंट्री (पोलैंड), जीसस आफ मोंट्रियल (कनाडा), 'द अक्यूज्ड' (अमरीका), 'अ शार्ट फिल्म अबाउट लव' (पोलैंड), 'सेक्स, लाईज एंड वीडियो टेप्स' (अमरीका), 'जांजीबार' (फ्रांस), 'लैंडस्केप इन द मिस्ट' (ग्रीस), 'मिसिसिपी बर्निंग' (अमरीका) तथा आस्ट्रेलिया की 'द आईलैंड' देखने में सफल रहे, उन के लिए यह फिल्मोत्सव अमिट यादगार बन कर रह गया है.

हर बार की तरह आम नागरिक बिना सेंसर हुई गरम फिल्मों की तलाश में सिनेमाघरों में रातरात भर टिकटों की लाइनों में खड़े रहे. एक तथाकथित गरम फिल्म 'लव अराउंड द कार्नर' (मैक्सिको) को समारोह में शामिल कर लिए जाने पर अच्छाखासा विवाद उठ खड़ा हुआ और 17 तारीख को सार्वजनिक शो रद्द कर दिया गया तो दर्शकों की नाराज भीड़ ने जमकर तोड़फोड़ की. आयोजकों को मजबूरन घोषणा करनी पड़ी कि बिक गए टिकटों पर 21 जनवरी को इस फिल्म का शो किया जाएगा. इस की भारी आलोचना हुई.

फिल्म समारोह निदेशालय सूत्रों के अनुसार, इस फिल्म में इतना नंगापन था कि

चयन समिति ने इस फिल्म को [illegible] चुनने की राय दी थी.

इस एक घटना को छोड़ दिया जाए तो कलकत्ता फिल्मोत्सव निर्विघ्न संपन्न हुआ. कलकतिया दर्शकों की मानसिकता को देखते हुए यह उपलब्धि मामूली नहीं आंकी जानी चाहिए. कलकत्ता में पिछला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1982 में हुआ था, जिस में कांग्रेसी नेता सुब्रत मुखर्जी और उन के समर्थकों ने रवींद्र सदन में जम कर हंगामा किया था और तोड़फोड़ करते समय दूरदर्शन द्वारा उपलब्ध कराए गए टीवी सेट भी नहीं बख्शे गए थे.

सत्यजीत राय ने दीपक जला कर समारोह उदघाटित किया और वहां उपस्थित पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री ज्योति बसु को कलकत्ते की बिगड़ती स्थिति पर खरीखोटी सुनाने के बाद उन्हें धन्यवाद भी दिया कि लंदन जैसा सिने परिसर बना कर एवं 'साल्ट लेक' में फिल्म लैब बना कर राज्य सरकार ने सांस्कृतिक क्षेत्र में अच्छा योगदान किया है.

समारोह में भारतीय फिल्म निर्माताओं के प्रतिनिधि जी.पी. सिप्पी ने दहाड़ती आवाज में केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री पी. उपेंद्र से मांग की कि वीडियो चोरी समाप्त कर फिल्मोद्योग के समक्ष पनपे बेकारी के खतरे को खत्म किया जाए. पी. उपेंद्र ने वीडियो चोरी सहित फिल्मोद्योग की सभी समस्याओं पर बंबई में फरवरी के अंत तक एक बैठक करने एवं आवश्यक कदम उठाने का आश्वासन दिया.

इस बार बंबइया फिल्मी सितारों में से शत्रुघ्न सिन्हा, राज बब्बर, शबाना आजमी एवं दीप्ति नवल ही समारोह में आए. अन्य सभी बड़े चेहरे नदारद रहे. इन कलाकारों की दूसरी जमात में से नाना पाटेकर, सुरेश ओबराय एवं नीना गुप्ता भी इस बार उपस्थित थे.

क्या फिल्मोत्सव फिर से स्पर्धात्मक होगा?

कलकत्ता में हुए 21वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में इस मुद्दे पर गरमागरम बहस हुई कि फ़िल्मोत्सव को फिर से स्पर्धात्मक कर दिया जाए ताकि दुनिया की अच्छीअच्छी फिल्में ही इस में शामिल हों. केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण सचिव सुरेश माथुर ने कहा कि इस प्रश्न पर फिलहाल विचार किया जा रहा है और फरवरी मार्च तक कोई निर्णय लिया जा सकेगा.

1989 में दिल्ली फिल्मोत्सव में स्पर्धा वर्ग समाप्त कर दिया गया था. अनेक फिल्म विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसा कर देने से इस बार अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में लचर फिल्में ज्यादा आईं. निर्मातानिर्देशक गुलजार ने इस बारे में पूछने पर बताया कि स्पर्धा वर्ग का रहना अत्यावश्यक है.

गुलजार ने कहा, "चाहे बर्लिन हो, फ्रांस हो या वेनिस, वहां के पुरस्कारों की प्रतिष्ठा धीरेधीरे प्रतिपादित हुई. हम ने अपना 'मयूर' बंद कर दिया, यह गलत निर्णय था. इसे जारी रखना चाहिए. हां, यह अपेक्षा करना गलत होगा कि इस की अंतर्राष्ट्रीय कीमत रातोंरात हो जाएगी. हर पुरस्कार का सम्मान धीरेधीरे होता है."

बंगला फिल्मों में 10 वर्षों से नायक की भूमिका कर रहे तापस पाल ने भी फिल्मोत्सव को स्पर्धात्मक बनाने पर जोर दिया जबकि कलकत्ता आए यूगोस्लाविया के अग्रणी फिल्म निर्देशक जेलीमीर जिल्निक ने इसे गैर प्रतियोगितात्मक रखने की सलाह दी.

जेलीमीर जिल्निक, जो 20 फीचर फिल्में और 60 वृत्तचित्र बना चुके हैं, ने इस प्रतिनिधि से कहा, "मैं तो बर्लिन, फ्रांस और वेनिस सहित अनेक फिल्म समारोहों में गया हूं. स्पर्धात्मक होने से मात्र 20-30 फिल्में चुनी जाती हैं. गैर प्रतियोगितात्मक होने का लाभ यह है कि दर्शक दुनिया के सभी हिस्सों की फिल्में देखने का अवसर पाते हैं."

वैसे, स्वयं जिल्निक की फिल्म 'अली बक्स' को बर्लिन ग्रां प्री मिल चुका है.

'टेंटेड होर्स प्ले' का एक दृश्य : 'गरम', फिल्मों की शृंखला में अग्रणी.

सुरेश ओबेराय और नसीरुद्दीन शाह के लिए यह फिल्मोत्सव अविस्मरणीय रहेगा क्योंकि सुरेश को विदेशी पैनोरमा की फिल्म 'मनिका, मनिका द गर्ल हू लिव्ड ट्वाइस' (फ्रांस) के अभिनेता के रूप में कलकत्ता आने का गौरव मिला, जबकि नसीरुद्दीन के लिए यह फिल्मोत्सव कुनैन की गोली साबित हुआ.

यह पहला मौका रहा, जब नसीर की कोई भी कला फिल्म इंडियन पैनोरमा में नहीं दिखाई गई. इस सशक्त अभिनेता का व्यावसायिक पतन इसे अच्छी कला फिल्मों से लगातार दूर खींच रहा है. इस का परिणाम यह हुआ है कि दर्शक इस फिल्मोत्सव के 'इंडियन मेनस्ट्रीम सिनेमा' खंड में नसीरुद्दीन नृत्य करते हुए ओएओए गाते ही देख सके.

भारतीय फिल्मोत्सव गैर स्पर्धात्मक हो जाने से इस में शामिल हो रहीं फिल्मों का स्तर गिरा है. 'टेंटेड होर्सप्ले' 'द क्वीन आफ फ्लावर स्ट्रीट', 'डोग्स आफ द नाइट' जैसी फिल्में क्यों और कैसे चुन ली जाती हैं पता नहीं. 'डीलर्स', 'बाईबाई ब्लूज', 'सागर जलामा' व 'अलोन सान फान' का भी यही हाल था.

क्रमशः ब्रिटेन, कनाडा, श्रीलंका और इटली की इन फिल्मों में न तो कोई कथ्य नजर आता है, न ही सिने तकनीक का वैशिष्ट्य.

निर्वाचन मंडली ने सेक्स के भूखे भारतीय मस्तिष्क की संतुष्टि के लिए अनेक फिल्में इस बार भी चुनी, जिन में से 'हाउ टु मेक लव टू अ नीग्रो विदाउट गेटिंग टायर्ड' (कनाडा/फ्रांस) 'आई लव यू लव' (चेकोस्लोवाकिया), 'टेंटेड होर्सप्ले' (चेकोस्लोवाकिया),. 'वीनस ट्रैप' (पश्चिम जरमनी), 'डोग्स आफ द नाइट' (अर्जेंटीना), 'सीस फ्राम द क्लास स्ट्रगल इन बेवरली हिल्स' (अमरीका) एवं 'द कुक, द थीफ, हिज वाइफ

भारतीय पैनोरमा : युवा निर्देशकों की सफलता

फिल्मोत्सव-90 भारतीय पैनोरमा की फिल्म 'गणशत्रु' (सत्यजीत राय) के प्रदर्शन के साथ समाप्त हुआ और इस में मृणाल सेन की फिल्म 'एक दिन अचानक' भी दिखाई गई. लेकिन सच पूछा जाए तो दोचार को छोड़ कर इस 21वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रदर्शित सभी 32 (भारतीय पैनोरमा) फिल्में युवा निर्देशकों की सफल प्रगति दर्शाती हैं.

इस वर्ग का उद्घाटन ही युवा निर्देशक परवेज मेरवानजी की गुजराती फिल्म 'पर्सी' से हुआ, जिस के जरिए पारसी युवक की त्रासदी, उस की जीवन संपदा को उभारा गया है. ध्यान देने की बात यह है कि 'पर्सी' परवेज की पहली फीचर फिल्म है.

भारतीय पैनोरमा के अलावा अशोक क़ुमार की 13 पुरानी फिल्में तथा मुख्य धारा की 12 भारतीय फिल्में प्रदर्शित की गई, जिन में 'अछूत कन्या' और 'राम लखन' व 'चांदनी' भी शामिल थीं.

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त दक्षिण भारत की अभिनेत्री अर्चना की तीन फिल्में भारतीय पैनोरमा में शामिल की गईं, जिन में से 'बाघ बहादुर' हिंदी, 'दासी' तेलुगू एवं 'पिरावी' मलयालम भाषा की फिल्में हैं.

इसी दृष्टिकोण से दीप्ति नवल, शबाना आजमी एवं मीता वशिष्ट की भी दोदो फिल्में फिल्मोत्सव-90 में प्रदर्शित हुईं. 'सती' बंगला फिल्म है, जिस में अपर्णा सेन ने शबाना का चरित्र गूंगा रखा, अतः भाषा की कठिनाई नहीं हुई. शबाना की 'एक दिन अचानक' (मृणाल सेन) हिंदी में है. दीप्ति नवल की 'मढ़ी दा दीवा' और 'सूर्योदय' क्रमशः पंजाबी एवं मराठी फिल्में हैं. 'मढ़ी दा दीवा' देश की पहली पंजाबी फिल्म है, जिसे [?] अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में शामिल किया गया. इसे 'राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम' ने बर्लिन फिल्म समारोह में चयन हेतु भेजा है.

बुद्धदेव दासगुप्त की 'बाघ बहादुर', अदूर गोपालकृष्णन की 'मथिलुकल' और जया भारती की 'उछू वायल' को अंतिम क्षणों में भारतीय पैनोरमा में शामिल करने पर काफी विवाद हुआ. लेकिन इन फिल्मों ने दर्शकों का मन जीत लिया. 'एक दिन अचानक' के प्रदर्शन में शबाना आजमी आधे घंटे देर से पहुंची तो शो देर से शुरू हुआ. समारोह निर्देशिका उर्मिला गुप्ता को निर्देश जारी करना पड़ा कि किसी भी कारणवश फिल्म का शो न रोका जाए.

इस बार के इंडियन पैनोरमा खंड में 1[?] भारतीय भाषाओं की 21 फिल्में दिखायी गईं, जिन में से 'दासी', 'पिरावी', 'छंदनीड़', 'परशुरामेर कुठार', 'जाजीरे' एवं 'खयालगाथा' ने भी काफी प्रभावित किया. 'कनक पुरंदर' ले[?] कर आए गिरीश कर्नाड ने पूरा फिल्मोत्सव ध्यान से देखा. इस के अलावा भारत की 1[?] लघु फिल्में भी दिखाई गईं.

मराठी फिल्म 'सूर्योदय' के एक दृश्य में नाना पाटेकर और दीप्ति नवल.
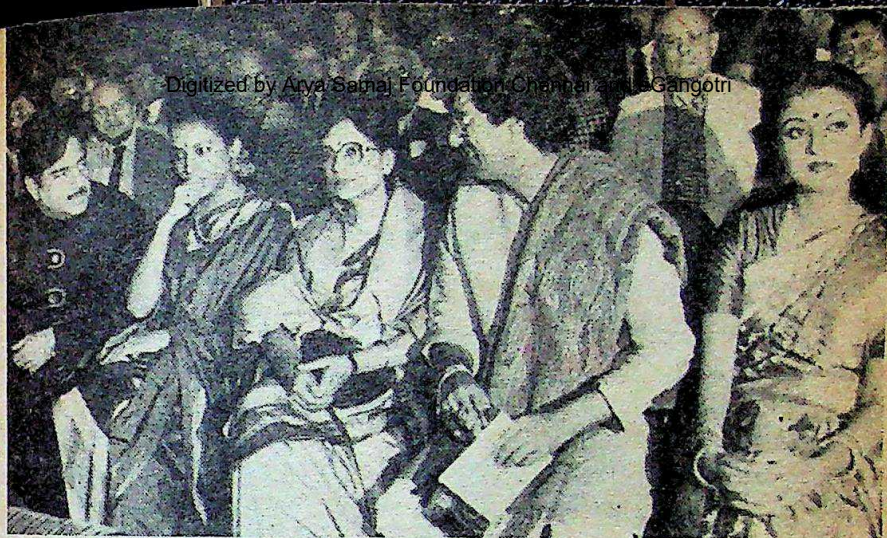
फिल्मोत्सव में पधारने वाले शत्रुघ्न सिन्हा, शबाना आजमी, राजबब्बर तथा अन्य सितारे : ज्यादातर लोग आए ही नहीं.

एंड हर लवर' (ब्रिटेन) तथा 'लेट इट बी नोन टू आल यूअर लव्स' (चेकोस्लोवाकिया) ने दर्शकों की 'ब्लू' फिल्मी भूख को शांत किया और इन के टिकट 500 रुपए तक में बिके.

यौन संबंधों की विषयवस्तु पर ही प्रदर्शित एबसेंसेज (ग्रीस), 'माइ नाइट्स आर मोर ब्यूटीफुल दैन योर डेज' (फ्रांस), 'सेक्स लाइज एंड वीडियो टेप्स' (अमरीका) में भी नंगापन कम नहीं दिखाया गया है. लेकिन ये फिल्में प्रस्तुतिकरण और कथ्य के आधार पर विश्व की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों की श्रेणी में आती हैं.

कुल 44 देशों की 173 फिल्मों के इस मेले में 39 देशों से पधारे 191 प्रतिनिधियों में तावियानी बंधु (गुड मार्निंग बेबीलोनिया), पाल काक्स (द आइलैंड), जार्ज स्लूजर (द वैनिशिंग), जैक्स दी बेनोइट (हाउ टू मेक लव...), गोडफ्रे रेजिओ (पावाकात्सी), चैप्लिन परिवार की मित्र मैडम पामेला पामिअर, अमरीका की तीन महिला निर्देशक जोन मैक्लिन सिल्वर, जोन त्वेकेसबरी तथा टेरी मैकलुहान एवं अमरीका, फ्रांस व श्रीलंका के अग्रणी अभिनेता, अभिनेत्रियां भी शामिल थे.

स्थानीय प्रेस का आरोप था कि समारोह में अच्छी फिल्मों का चुनाव नहीं हुआ है. जिस का खंडन करते हुए 'द गार्जियन' अखबार के प्रतिनिधि डेरेक मैल्कम सहित 15 प्रतिनिधियों ने कहा कि फिल्मोत्सव-90 में विश्व में गत वर्ष प्रदर्शित सर्वश्रेष्ठ फिल्में चुनी गई हैं.

समारोह के विदेशी वर्ग के विभिन्न खंडों में चार्ली चैप्लिन, लारेंस ओलिवर, कीस्लोव्स्की, ओतार लोसेलिआनी एवं तावियानी बंधुओं की फिल्मों का विशेष प्रदर्शन कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई और अर्जेंटीना के सिनेमा पर विशेष प्रकाश डाला गया.

कीस्लोव्स्की की 'अ शार्ट फिल्म अबाउट लव' एवं 'अ शार्ट फिल्म , अबाउट किलिंग' फिल्मोत्सव की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में रहीं, जबकि अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सजी फिल्म 'रेन मैन' में डस्टिन होफमैन का अभिनय सभी कलाकारों को पीछे छोड़ गया.

भारतीय पैनोरमा की 57 फिल्मों को मिला लिया जाए तो इस फिल्मोत्सव में कुल 303 शो हुए. फिल्मोत्सव निर्देशिका उर्मिला गुप्त के शब्दों में, ''उत्सव के दौरान जुटी भारी भीड़ (धक्कामुक्की?) इस आयोजन की सफलता ही सिद्ध करती हैं.''

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. : निर्देशक
स : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु.पा. : मुख्य पात्र

आवारगी : फिल्म की कहानी दो भागों में बटी है. पहले भाग में प्रेम का त्रिकोण है तो दूसरे भाग में गिरोह युद्ध. आजाद (अनिल कपूर) अनुपम खेर के गिरोह में काम करता है. वह मीना (मीनाक्षी शेषाद्रि) को कोठे से छुड़ाता है तथा उसे गायिका बनाने का प्रयास करता है. मीना को ले कर दूसरे गिरोह के सरगना भाऊ (परेश रावल) से आजाद की ठन जाती है. उधर मीना को गायक धीरेन (गोविंदा) से प्यार हो जाता है. अंत में मीना को बचाने के लिए आजाद भाऊ को मार देता है तथा मीना का हाथ धीरेन के हाथ में दे कर खुद भी मर जाता है. फिल्म का गीतसंगीत अच्छा है. **नि. :** महेश भट्ट, **मु.पा. :** अनिल कपूर, गोविंदा, मीनाक्षी शेषाद्रि, अनुपम खेर, परेश रावल, अवतार गिल व सतीश कौशिक. **अ.**

बाप नंबरी बेटा दस नंबरी : पूरी फिल्म कादरखान पर टिकी है. जिस ने अपने लटकोंझटकों से दर्शकों को बांधे रखा है. फिल्म में कई प्रसंग ऐसे हैं, जिस से दर्शक हंसने से अपनेआप को रोक नहीं पाते. फिल्म में हास्य लाने के लिए चालू शब्दों के साथ कार्टून का भी सहारा लिया गया है. रमण (कादरखान) एक नंबरी धोखेबाज है. वह अपने लड़के प्रसाद (शक्ति कपूर) को बचपन से ही धोखाधड़ी में माहिर बनाता है. रमण अपनी बहन गायत्री (अंजना मुमताज) को पागल करार कर पागल खाने में डाल देता है तथा उस के बेटे रवि को ट्रेन में बैठा देता है. थोड़ी नाटकीयता के बाद अनिल नामक एक नौजवान रमण से गायत्री का हक मांगता है तो वह बौखला जाता है तथा उसे जान से मारने के लिए रवि का सहारा लेता है जो बस्ती का दादा है. रवि अनिल को मारने जाता है, जहां वह अपनी मां से मिलता है. रवि व अनिल दोनों मिल कर रमण व प्रसाद को कानून के हवाले कर देते हैं तथा गुल्लू बादशाह के आतंक को समाप्त करते हैं. **नि. :** अमीज सजावल **मु.पा. :** जैकी श्राफ, फरहा, आदित्य पंचौली, साबिहा, अंजना मुमताज, असरानी, गुलशन ग्रोवर, शक्ति कपूर और कादर खान. **अ. :**

वफा : जिस तरह की कहानी पर यह फिल्म बनाई गई है उस तरह की कहानी पर टीवी का नाटक तो चल सकता है पर लंबाई की फिल्में नहीं. यही वजह है कि फिल्म की लंबाई को पूरा करने के लिए निर्देशक को फूहड़ हास्य का सहारा लेना पड़ा.

फिल्म की कहानी में राधिका (विजेता पंडित) शादी वाले दिन ही विधवा हो जाती है. काफी समय बाद राधिका पर गर्भावस्था के लक्षण प्रकट होते हैं. वह घबरा जाती है तथा सोचती है कि घर में रह रहे युवक शेखर (फारुखशेख) ने ही बेहोशी की दवा खिला कर उस की यह दशा बनाई है. खानदान की इज्जत बचाने के लिए वह शेखर से प्यार का नाटक करती है तथा चुपचाप विवाह कर लेती है. अंत में पता चलता है कि वह कभी गर्भवती थी ही नहीं. वह शेखर से सब कुछ भूलने के लिए कहती है, पर वह उस की बात नहीं मानता और राधिका मर जाती है तथा शेखर पागल हो जाता है. **नि. :** एस.ए. अब्बास **मु.पा. :** फारुख शेख, करण शाह, विजेता पंडित, जगदीप, मुकरी आदि. **अ.**

रिहाई : इस फिल्म का उद्देश्य पैसा कमाना नहीं बल्कि विवाहेत्तर संबंधों की नई व्याख्या करना है. फिल्म में यह साबित करने की कोशिश की गई है कि शारीरिक भूख नैसर्गिक है और यह पति के प्रति बेवफाई का प्रमाण नहीं है. फिल्म की कहानी गुजरात के एक गांव की है, जहां अमरजी अपने पांचछः साथियों के साथ बंबई काम करने जाता है.

गांव में औरतें व बूढ़े खेतीबाड़ी करने के लिए रह जाते हैं. एक दिन गांव में मनसुख (नसीरुद्दीनशाह) नाम का एक युवक दुबई से वापस आता है, जो गांव की औरतों में चर्चित होता है. कुछ औरतों के साथ उस का शारीरिक संबंध होता है, जिस से वे गर्भवती होती हैं. अमरजी की पत्नी टकूबाई (हेमामालिनी) भी मनसुख के जाल में फंस कर गर्भवती हो जाती है. अमरजी जब बंबई से वापस आता है तो उसे पता चलता है कि उस की पत्नी के पेट में पराए पुरुष का बच्चा है. वह उसे स्वीकारने से मना करता है. अंत में गांव की महिलाएं एकजुट हो कर अपनेअपने पतियों को लताड़ती हैं. कुछ भाषणबाजी के बाद सभी पुरुष अपनीअपनी पत्नियों को माफ कर देते हैं. **नि. :** अरुणा राजे **मु.पा. :** विनोद खन्ना, हेमा मालिनी, नसीरुद्दीन शाह, नीना गुप्ता, रीमा लागू व इला अरुण. **अ.**

महासंग्राम : हिंसा पर आधारित फिल्म है. फिल्म की सब से बड़ी कमजोरी उस की कहानी है. एक बार लगता है कि फिल्म आपसी रंजिश पर आधारित है

दूसरी ओर प्रेम कहानी भी समानांतर चलती है. गोदा (अमजद खान) व विश्वराज (किरन कुमार) तसकरों के गिरोह के मुखिया हैं. दोनों आपसी दुश्मनी को समाप्त करने के लिए अपने लड़केलड़कियों की शादी आपस में करते हैं. पर गोदा की बेटी पूजा (शाहीन) अर्जुन (गोविंदा) से प्यार करती है. पूजा का खूंखार भाई अर्जुन को जान से मारने की योजना बनाता है. उधर अर्जुन के भाई विशाल (विनोद खन्ना) को जब यह पता चलता है कि उस का भाई मारा गया तो वह बदले की आग बुझाने बाहर आता है.

विशाल बदला लेने के लिए सूरज के घर में घुस जाता है वहां सूरज व उस के आदमी उस को मारमार कर अधमरा कर देते हैं. माधुरी दीक्षित विशाल को बचाती है तथा अर्जुन के जिंदा होने की खबर देती है. अर्जुन व विशाल मिल कर बदला लेते हैं. जिस में सभी खलनायक मारे जाते हैं. **नि. :** मुकुल एस. आनंद **मु.पा. :** विनोद खन्ना, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, शाहीन, आदित्य पंचोली, सोनू वालिया, सुमित सहगल, अमजद खान व किरण कुमार. **अ.**

खतरनाक : इस फिल्म का निर्माता स्वयं मारधाड़ निर्देशक है, इसी लिए अपनी इस फिल्म में उस ने ज्यादा से ज्यादा मारधाड़ ही दिखाने की कोशिश की है. मारधाड़ के अलावा फिल्म में जो कुछ है, सब लचर है. फिल्म की कहानी एक आवारा लड़के सूरज (संजय दत्त) की कहानी है जो संगीता (फरहा) के लिए खूंखार अपराधियों से टकराता है तथा उन्हें समाप्त कर संगीता का हाथ थाम लेता है. फिल्म का निर्देशन बेकार है व संवादों में भी कोई दम नहीं है. **नि. :** भरत रंगाचारी **मु.पा. :** संजय दत्त, फरहा, अनिता राज, किरन कुमार, अनुपम खेर तथा गोविंदा (मेहमान कलाकार)

तकदीर का तमाशा : सत्यदेव (जीतेंद्र) एक ईमानदार व्यक्ति है. एक तसकर शेषनाग (सदाशिव अमरापुरकर) के जुल्मों से तंग आ कर वह भी तसकर बन जाता है. सत्यदेव की पत्नी अपने दो बच्चों को ले कर घर छोड़ कर चली जाती है. दोनों बच्चों के बड़े होने के बाद उन में से एक पुलिस निरीक्षक सत्यप्रकाश बनता है तथा दूसरा गरीबों का मसीहा. देव तथा शेषनाग में टक्कर होती है. देवा तथा सत्य प्रकाश में टक्कर होती है. टक्कर में ही फिल्म समाप्त हो जाती है. अंत में परिवार के सभी सदस्य मिल जाते हैं. **नि. :** आनंद **मु.पा. :** जीतेंद्र, गोविंदा, आदित्य पंचोली, किमी काटकर, मौसमी चटर्जी, सदाशिव अमरापुरकर, सतीश कौशिक, गुलशन ग्रोवर, मंदाकिनी (मेहमान कलाकार). **अ.**

आग का गोला : फिल्म में सिवा नाटकीयता के और कुछ भी नहीं है. नाटकीयता भी कुछ ऐसी जो अविश्वसनीय लगे. राजा (प्रेम चोपड़ा) शंकर (सनी) को चोरी करने में माहिर बना कर अपने हाथ की कठपुतली बना लेता है पर अंत में शंकर न केवल खुद मर जाता है बल्कि राजा भी मारा जाता है. शंकर का बेटा बड़ा हो कर एक ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर बनता है. सनी देओल दोहरी भूमिका में केवल दर्शकों को लुभाता है. बारबार घटनाएं बदल कर निर्देशक ने अपनी अदूरदर्शिता का ही परिचय दिया है. अर्चना पूरनसिंह की उत्तेजक अदाएं भी टिकट खिड़की पर भीड़ नहीं जुटा सकी. **नि. :** डेविड धवन, **मु.पा. :** सनी देओल, डिंपल कपाड़िया, अर्चना पूरनसिंह, शक्ति कपूर, रजा मुराद और प्रेम चोपड़ा. **(अ.)**

जुर्रत : राजेंद्र कुमार ने अपने बेटे कुमार गौरव को स्टार बनाने के लिए यह फिल्म बनाई मगर वह इस फिल्म में भी दर्शकों में लोकप्रिय नहीं हो सका. 'जुर्रत' फिल्म में दो इंस्पेक्टरों अविनाश व रामसिंह की माफिया किंग कामा से जंग है. पूरी फिल्म में केवल भागदौड़, पिस्तौल व बंदूक चलने की आवाजें व बेवजह मौतें दिखाई गई हैं. के.के. सिंह की कहानी में एक भी अंश ऐसा नहीं है जिसे नया कहा जा सके. **नि. :** डेविड धवन, **मु.पा. :** शत्रुघ्न सिन्हा, कुमार गौरव, अनिता राज, अमला, अरुणा ईरानी, किरन कुमार और अमरीश पुरी. **(अ.)**

मैं ने प्यार किया : किशोर अवस्था के प्रेम पर आधारित इस फिल्म की कहानी में नवीनता नहीं है. फिर भी फिल्म का निर्देशन व पटकथा इतनी मंजी हुई है कि दर्शक पूरी फिल्म में बंधा रहता है. नाचगाने से भरपूर फिल्म में पार्श्व से 'आई लव यू' की गूंज दर्शकों को मदहोश कर देने वाली है. सलमान खान व भाग्यश्री अपनीअपनी भूमिकाओं के साथ न्याय करने में सफल रहे हैं. फिल्म की लोकप्रियता एक बार यही साबित कर रही है कि दर्शकों के लिए बड़े सितारों का नाम भीड़ जुटाने के लिए पर्याप्त नहीं है. **नि. :** सूरज बड़जात्या **मु.पा. :** सलमान खान, भाग्यश्री, राजीव वर्मा, आलोक नाथ, रीमा लागू, अजीत वाच्छानी, मोहनीश बहल तथा हरीश पटेल म.

पाप का अंत : पुरानी कहानी पर मसालों से भरी एक फिल्म है. फिल्म की कहानी दो हिस्सों में बंटी है. पहले हिस्से में राजेश खन्ना है तो दूसरे हिस्से में गोविंदा व हेमा मालिनी हैं. पहले नायक की हत्या होती है, दूसरा नायक बदला लेता है और पाप का अंत करता है. फिल्म की रफ्तार तेज करने के लिए तेजाब की तर्ज पर एक डिस्कोडांस भी है. अभिनय में केवल गोविंदा ही प्रभावित कर पाता है. राजेश खन्ना अब नायक की भूमिका में बेकार लगता है. हेमा मालिनी अधेड़ उम्र में मारधाड़ करते हुए ठीक नहीं लगती. **नि.** विजय रेड्डी, **मु.पा.** राजेश खन्ना, हेमा मालिनी, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, रंजीत, अनुपम खेर, महावीर शाह, तेज सप्रू. **अ.**

अब मेरी बारी : सुमित सहगल के इर्दगिर्द पूरी कहानी घूमती है. दोहरी भूमिका में सुमित सहगल एक बार प्रेमी व एक बार गुंडा बन कर आता है. फिल्म की कहानी बेहद साधारण है. कहानी में नायक, खलनायक की बेटी से प्रेम करता है. खलनायक को जब इस बात का पता चलता है तो वह अपने आदमी से नायक को मरवा देता है. पर नायक मरता नहीं, बल्कि वेश बदल कर पुनः परदे पर आ जाता है. अंत में खलनायक के हाथों में पुलिस हथकड़ी पहना देती है. फिल्म में साहिल चड्ढा के उत्तेजक नृत्य हैं तो किमी काटकर की सेक्सी

अदाएं जो केवल टिकट खिड़की पर भीड़ बटोरने के उद्देश्य से फिल्म में जबरदस्ती ठूसी गई हैं. **नि.** : भागवत एस. ठाकुर **मु.पा.** : किमी काटकर, सुमित सहगल, रजा मुराद, स्वप्ना, अनुपम खेर, हेमंत बिरजे और साहिला चड्ढा अ.

चालबाज : वर्षों पहले हेमा मालिनी की एक फिल्म आई थी, 'सीता और गीता', जिस में दो जुड़वां बहनों की कहानी थी. चालबाज बहुत कुछ उसी फिल्म की नकल है. इस फिल्म में श्रीदेवी की दोहरी भूमिका है. दोनों भूमिकाओं को श्रीदेवी ने बखूबी जिया है. श्रीदेवी ने फिल्म में जितना बढ़िया नृत्य किया है, उतना ही सुंदर हास्य अभिनय किया है. यद्यपि फिल्म में आगे क्या होगा, जैसी कोई बात नहीं है. फिर भी दर्शक अगर सीटों पर बैठा रहता है तो इस का सारा श्रेय निर्देशक को जाता है. जिस ने पुरानी कहानी को नए मसालों से बेहतर बनाया है. नि. : पंकज पराशर, **मु.पा.** : श्रीदेवी, सनी देओल, रजनीकांत, अनुपम खेर, रोहिणी हटंगणी, शक्ति कपूर, अन्नू कपूर. म.

मैं आजाद हूं : इस फिल्म को देखने के बाद ऐसा लगता है कि अमिताभ बच्चन अब अपने पुराने चोले को उतार रहे हैं वरना हाकियों व लाठियों की मार के बाद भी उन की आंखों में बदले के अंगारे नहीं दहकते. फिल्म की कहानी एक अखबार के दफ्तर से शुरू होती है. जहां एक लेखिका एक सनसनीखेज खबर को प्रकाशित करती है कि आजाद नाम का एक व्यक्ति शहर की सब से बड़ी इमारत से कूद कर आत्महत्या करेगा और फिल्म के अंत में ऐसा ही होता है. आजाद के रूप में अमिताभ बच्चन इमारत से कूद कर आत्महत्या कर लेता है. फिल्म के मध्य में राजनीतिक दावपेंच के बीच भाषणबाजी को केवल जनता को लुभाने के लिए ठीक उसी तरह के लटकोंझटकों के साथ पेश किया गया है, जैसा कि आज के दौर में हो रहा है.

इस फिल्म में मनोहर सिंह ने एक बार फिर दामुल की तरह अपने सशक्त अभिनय का परिचय दिया है. इस फिल्म की कहानी पटकथा व संवाद जावेद अख्तर ने लिखे हैं. पटकथा काफी कसी हुई है और संवाद इतने तीखे हैं कि शायद ही किसी फिल्म में सुनने को मिलें. निर्देशक ने फिल्म में भ्रष्ट मुख्य मंत्री के रूप में एक रिश्वतखोर व्यक्ति को दिखा कर भ्रष्ट शासन पर करारी चोट की है. **नि.** टीनू आनंद, **मु. पा.** अमिताभ बच्चन, शबाना आजमी, अनुपम खेर, अजीत बछानी, सुधीर, अन्नू कपूर, मनोहर सिंह. म.

घर का चिराग : लगभग 20 वर्ष पूर्व एक फिल्म आई थी 'एक फूल दो माली', जो टिकट खिड़की पर काफी सफल रही थी. 'घर का चिराग' फिल्म पूरी तरह उस की नकल लगती है. उस फिल्म में बलराज साहनी ने अंधे पति की भूमिका व बच्चे के प्रति अपने प्रेम भाव का ऐसा सहज अभिनय किया था कि दर्शक बंध जाता था. पर इस फिल्म में राजेश खन्ना का नाटकीय अभिनय दर्शकों को प्रभावित नहीं कर सका. फिल्म की कहानी को गति देने के लिए

निर्देशक ने चालू मसालों को इतना अधिक ठूंस दि… फिल्म आकर्षक बनने के स्थान पर उबाऊ बन कर… **नि.** : सिकंदर भारती **मु.पा.** : राजेश खन्ना, चंकी… नीलम. (अ.)

जख्म : बाप और बेटे के बीच बदले की… बनाई गई फिल्म में देखने को कुछ भी नहीं है. न… का अभिनय है. न कहानी, न संवाद और न ही… चंकी पांडे परिस्थितियों के कारण सड़क छाप गुंडा… है. बाप से बदला लेने के लिए उस की तलाश शुरू… बाप की तलाश में वह शत्रुघ्न सिन्हा से टकराता… ट्रक ड्राइवर है. दोनों में मारपीट होती है और फि… दोस्त बन जाते हैं. अंत में अनुपम खेर और उस के… बेटे से नायक और उस के दोस्त का टकराव होता… खलनायक मारा जाता है. **नि.** : इरफान खान, मु.पा… सिन्हा, चंकी पांडे, नीलम, अनुपम खेर, एटली… वासवानी, रूबीना व माधवी अ.

लड़ाई : नाम के अनुरूप फिल्म में लड़ाई खूब… की नकल पर बनी फिल्म में कुछ भी नया… खलनायक एक व्यक्ति का खून करता है. झूठे… सरकारी वकील के प्रयास से अपराधी खुद बच… खून का इलजाम एक निर्दोष व्यक्ति पर लगता है… कारावास की सजा काट कर आया व्यक्ति सरका… (रेखा) के सामने आत्महत्या कर लेता है. पश्चात… में जलती रेखा उस के दोनों लड़कों, शेरा व अमर… से असली अपराधी के विरुद्ध लड़ाई छेड़ देती… अपराधी मारा जाता है. **नि.** दीपक शिवदासानी… मिथुन, आदित्य पंचोली, डिंपल, मंदाकिनी,… गुलशन ग्रोवर, सतीश शाह. अ.

एलाने जंग : फिल्म पूरी तरह दो पात्रों पर… एक नायक दूसरा खलनायक. जहां तक जयाप्रदा… तो इस मारधाड़ की फिल्म में उस के लिए… बचता ही क्या है. फिल्म की कहानी 'कर्मा'… मिलतीजुलती है. फिल्म में हिंसा के दृश्य… सड़कछाप दर्शकों को आकर्षित करने के लिए… निर्मातानिर्देशक ने फिल्म शुद्ध व्यावसायिक… लिए बनाई थी, जिस में वे कामयाब रहे हैं. इस… अनिल शर्मा का नाम भी उन निर्देशकों की सूची… हो गया है जो एक्शन फिल्म बनाने में विश्वास र… अनिल शर्मा **मु.पा.** : धर्मेंद्र, जयाप्रदा,… अमरापुरकर, दारा सिंह, सुषमा सेठ और पुनीत…

कसम वरदी की : विषय अच्छा है पर… चक्कर में एक अच्छा विषय भी नाटकीय व घटिया… विजय एक ईमानदार पुलिस अफसर है. तसकरों… कुछ लोग राजनीतिक प्रभाव का लाभ उठा कर… तहत उसे जेल भिजवा देते हैं. विजय का छोटा भाई… वरदी पहन कर अपने भाई को निर्दोष साबित… अपराधी नायक के भाई की हत्या कर देते हैं.… सभी अपराधियों को एकएक कर खत्म कर देता है… मित्रा **मु. पा.** जितेंद्र, भानुप्रिया, चंकी पांडे,… खेर, किरण कुमार, राजकिरण, तेज सप्रू, विक्रम…

ऐस्पिरिन :
नब्बे वर्ष की नायिका

लेख ● प्रेम प्रकाश व्यास

सिर दर्द, बदन के दर्द अथवा अन्य शारीरिक विकारों को फौरन दूर भगाने के लिए आप जिस 'ऐस्पि-रिन' का प्रयोग करते हैं, क्या उस के बारे में और भी बहुत कुछ जानने की आप के मन में उत्कंठा नहीं पैदा होती. इस 'ऐस्पिरिन' का प्रभाव जितना असरकारक है, उतनी ही रोचक इस के जन्म की कहानी है.

दि आज औषधियों पर एक नजर डालें तो सब से सस्ती व तेज असरकारक ऐस्पिरिन. आज तो यह बाजार में कई नामों बेची जा रही है. परंतु 90 वर्ष पूर्व उस ने ऐस्पिरिन नाम से ही जन्म लिया था. आज तो औषधि जगत की नायिका है, यह. यूरोप में भी ऐस्पिरिन आज विश्वभर में लोकप्रिय लेकिन इस की लोकप्रियता नई नहीं है. प्राचीन यूनानी लोग जानते थे कि 'विलो' नामक वृक्ष की छाल, पत्तियों व फूलों में एक विशिष्ट औषधि तत्त्व है जो दर्द निवारक है. ईसापूर्व पहली शताब्दी में डियोस्कोराईड्स ने इस पौधे का उपयोग बुखार, जुकाम व दर्द निवारक के रूप में किया. सदियों तक यह पौधा इसी काम आता रहा. लेकिन इस में पाए जाने वाले रासायनिक पदार्थ का पता तो 19वीं शताब्दी में आ कर तथा जब इंग्लैंड, स्विट्जरलैंड व अमरीका

में 'विलो' पौधे ... इस में सेलिसाइलिक अम्ल या सैलिसिन ढूंढ निकाला गया.

इसी बीच 1853 में स्ट्रासवर्ग (जरमनी) के युवा रसायनज्ञ चार्ल्स फ्रेडरिक मेहार्ट ने सेलिसाइलिक अम्ल का एसिटिलीकरण कर 'एसिटाइल सेलिसाइलिक अम्ल' बनाया, पर वह इस का उपयोग औषधि के रूप में करने की संभावना पर सोच ही नहीं पाए, इस तरह ऐस्पिरिन जन्म लेने के बाद भी प्रयोगशाला की चारदीवारी में ही कैद रही.

1874 में स्काटलैंड के मैक लेगन ने सेलिसाइलिक अम्ल का उपयोग गठिया और जोड़ों के दर्द के इलाज में किया और कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त की. 1876 में एक जरमन रसायनज्ञ स्ट्रिकर ने भी लेगन की पुष्टि की परंतु उस ने पाया कि इसे लेने पर आमाशय में जलन होती है. 1877 में जरमनी के 'डेंशी' ने इस का सोडियम लवण (सोडियम सेलिसाइलेट) तैयार किया जो कुछ कम हानिकारक था, परंतु अपने कड़वे स्वाद के कारण बदनाम हो गया. बावजूद इन सब के इस का उपयोग धीरेधीरे बढ़ता गया.

ऐस्पिरिन को औषधि का स्वरूप दे... श्रेय जरमनी के ही फेलिक्स हाफमैन को ... है. वह विश्वप्रसिद्ध दवाइयों की ... 'बायर' में केमिस्ट थे और औषधियों ... परीक्षण करते थे. 1890 में बायर कं... एक प्रयोगशाला स्थापित की जो औ... विज्ञान में शोधकार्य करने वाली ... विश्व की प्रथम प्रयोगशाला थी. हाफ... पिता एक लंबे समय से गठिया के मरी... और चूंकि वह सोडियम सेलिसाइलेट ... कड़वी दवा नहीं ले पा रहे थे, हाफमैन ने ... में सुधार करने का निश्चय किया. मेहा... किए प्रयोगों को आधार बना कर लगभ... वर्षों में हाफमैन ने सेलिसाइलिक अम्... एसिटिलीकरण की नई विधि आखिर ... ली.

हायनरिक ड्रेसर ने परीक्षण ... एसिटाइल सेलिसाइलिक अम्ल को द... रूप में उत्पादन करने का निश्चय किया ... यों हुआ 1 फरवरी 1899 को ऐस्पिरि... जन्म. बायर कंपनी ने अपनी इस नई द... जोशोखरोश के साथ बाजार में प्रस्तुत ... इस का नाम ऐस्पिरिन रखा गया.

'बायर' कंपनी के वाहन पर ऐस्पिरिन के विज्ञापन : लोकप्रियता के लिए.

यह औ... सेलिसा... अम्ल ... सोडियम... साइलेट ... गुना बेह... परंतु यह ... रातोंरात ... में छा ... इस की क... तो हाफ... सपने में ... नहीं की ... 18... ही बायर ... ने जरम... फ्रांस में ... परिन का ... अंतर्राष्ट्री...

ऐस्पिरिन के जन्मदाता फेलिक्स हाफमैन.

ब्यूरो, बर्न में करवाया. इस समय विश्व के 75 देशों में ऐस्पिरिन का ब्रांड पेटेंट किया हुआ है और लगभग 50 देशों में यह किसी अन्य नाम से प्रचलित है.

अपने प्रारंभ से ही ऐस्पिरिन एक करिश्मा साबित हुई और इसे जादुई औषधि के रूप में मान्यता मिल गई. दसियों बीमारियों का इलाज इस से तुरतफुरत होने लगा. इस सदी के तीसरे दशक में तो इसे विज्ञापनों के जरिए खूब प्रचारित किया जाने लगा.

ऐस्पिरिन की प्रसिद्धि केवल बायर कंपनी से ही नहीं बल्कि अन्य कार्टूनिस्टों और विज्ञापन ऐजेंसियों के माध्यम से भी बढ़ी. फ्रांस के एक चिकित्सक बायार्ड ने तो बड़ा सा विज्ञापन लगा रखा था, 'बायार्ड की ऐस्पिरिन सुरक्षित व विश्वसनीय, हर बीमार में बुखार से जुकाम तक, माइग्रेन से साइटिका तक.' निश्चय ही ऐस्पिरिन का जादू सिर चढ़ कर बोलने लगा और लगभग तमाम बीमारियों का इलाज इसी से किया जाने लगा.

जब चिकित्सकों ने ऐस्पिरिन का अंधाधुंध प्रयोग आरंभ कर दिया तो इस के दुष्परिणाम भी सामने आने लगे. लोगों को पता चल गया कि ऐस्पिरिन पूर्णतया सुरक्षित नहीं है. यह घावों में रक्तस्राव को और तेज कर देती है, विशेषकर हीमोफीलिया के रोगी के लिए तो यह प्राणघातक औषधि ही साबित हुई.

प्रारंभ में चिकित्सकों को इस की मात्रा का अनुपात भी ठीक से ज्ञात नहीं था. इस की अधिक मात्रा दिए जाने से कई दुष्प्रभाव भी सामने आने लगे. 1960 तक तो यह भी पता नहीं था कि यह मानव शरीर में किस तरह कार्य करती है. परिणाम यह हुआ कि चिकित्सकों ने इसे आंख मूंद कर देना शुरू कर दिया.

लेकिन इन सब के बावजूद ऐस्पिरिन आज विश्व की 10 सर्वोत्तम जीवनरक्षक औषधियों में से एक मानी जाती है. विश्व में लगभग एक अरब डालर का व्यवसाय करने वाली ऐस्पिरिन की खपत का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अकेले अमरीका में 10 से 20 हजार टन ऐस्पिरिन का उपयोग होता है और फ्रांस में 15 सौ से 18 सौ टन तक दर्द निवारक औषधियों में आधा भाग ऐस्पिरिन का ही होता है.

90 वर्ष की इस नायिका ने इन वर्षों में कई रूप बदले हैं. प्रारंभ में ऐस्पिरिन पाउडर के रूप में उपयोग में ली जाती थी. यहां तक कि बायर कंपनी द्वारा भी इसे बोतलों में भर कर बेचा जाता था. 1904 में इस ने टिकिया का रूप ले लिया. इस में स्टार्च मिलाया गया. किंतु उस के घुलनशील न होने के कारण यह आमाशय में जा कर उस की श्लेष्मा झिल्ली को नष्ट कर देती थी, जिस के परिणामस्वरूप आंतों में जलन होती थी. इसलिए शोधकर्ताओं ने इस का स्वरूप ऐसा बनाने का निश्चय किया जिस से यह आंतों के संपर्क में कम से कम रहे.

आज बाजार में ऐस्पिरिन (ऐस्प्रो) के दो स्वरूप मौजूद हैं, एक, जो घुलनशील है तथा छोटेछोटे महीन कणों से बना है और आसानी से शीघ्र ही घुल जाता है. इसे माइक्रोफाइंड एस्प्रो भी कहते हैं. दूसरा, जो पानी में आते ही

झाग उत्पन्न करता है और शीघ्र घुल भी जाता है. इस का प्रभाव अतिशीघ्र होता है. इस पर जिलेटिन की परत चढ़ी रहती है जिस से आमाशय से इस का सीधा संपर्क नहीं हो सकता और आंतों में जलन भी नहीं होती. यह कैप्सूल के रूप में भी मिलती है.

ऐस्पिरिन की मानव शरीर में क्रिया विधि कुछ यों है. इसे टिकिया के रूप में मुंह में लिए जाने के बाद आमाशय में जाते ही यह घुल जाती है. आंतों में इस का अवशोषण होता है, जहां से यह रक्त प्रवाह से यकृत में चली जाती है. यहीं से पूरे शरीर में इस का वितरण होता है.

वयस्क मनुष्य के लिए ऐस्पिरिन की 0.5 ग्राम से 2 ग्राम की मात्रा सुरक्षित कही जा सकती है. यह शरीर के दर्द, जोड़ों के दर्द, सिरदर्द या किसी भी प्रकार के दर्द को तुरंत गायब कर देती है. यह कैंसर के दर्द में भी कई बार राहत पहुंचाती है.

फिर भी अधिक मात्रा में लेने पर कुछ मामलों में आमाशय में जलन की शिकायत पाई जाती है. कुछ रोगियों को इस के अधिक सेवन से कै, मितली व आंतरिक रक्तस्राव की शिकायत भी हो जाती है. कई बार इस से त्वचा पर चकत्ते, श्वसन संबंधी रुकावटें, दमे का दौरा, कानों में घरघराहट जैसे लक्षण भी देखे गए हैं. यह यकृत व गुरदों को भी प्रभावित करती है. कई बार खसरे से पीड़ित शिशुओं को ऐस्पिरिन की अधिक मात्रा दे देने से मृत्यु तक हो जाती है. इस से रक्त की थक्का बनने की क्षमता समाप्त हो जाती है. इस से मासिक रक्तस्राव बढ़ जाता है. हीमोफिलिया के रोगी के लिए यह प्राणघातक है तो हृदय रोगियों के लिए वरदान है.

हाल ही में हुए अनुसंधानों से ऐस्पिरिन के कई नए उपयोगों का भी पता चला है. एस्पिरिन रक्त नलिकाओं में रक्त के जमाव को रोकती है. विश्वप्रसिद्ध येल विश्वविद्यालय में 1100 हृदय रोगियों पर एस्पिरिन के प्रभावों का अध्ययन करने पर पता चला कि उन में से 80% को इस से राहत मिली.

अमरीका के खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग के शोधपत्रों में हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार रोजाना 325 मिलीग्राम एस्पिरिन लेने से हृदय रोगियों को दूसरा दिल का दौरा पड़ने की संभावना बिलकुल नहीं रहती है. अमरीकी अखबारों में ऐसे विज्ञापनों की कमी नहीं है, 'एक ऐस्पिरिन रोजाना लेने से हृदयघात नहीं होता.' येल विश्वविद्यालय के डा. कार्टीलीयर के अनुसार ऐस्पिरिन के सेवन से मोतियाबिंद का बनना रुक जाता है. यही नहीं सोडियम सेलिसाइलेट मधुमेह के रोगियों के रक्त में ग्लूकोज की मात्रा को नियंत्रित भी करता है.

ऐस्पिरिन के उपयोगों की सूची भविष्य में और भी लंबी होने की आशा है क्योंकि शोध कार्य अभी भी चल रहे हैं. अपने 90वें वर्ष में प्रविष्ट होने पर भी यह सब से सस्ती, असरकारक व लोकप्रिय औषधि है, इस में कोई दो राय नहीं है. ●

कंप्यूटर की मदद से मेकअप

यों तो प्रायः सभी महिलाएं किसी न किसी रूप में अपना मेकअप कर ही लेती हैं, मगर अपने चेहरे के आकार व रंग के अनुकूल उचित मेकअप का चयन करना अनेक आधुनिक मेकअप विशेषज्ञाओं के लिए भी समस्या है. अब कंप्यूटर की सहायता से उन की इस समस्या का समाधान ढूंढ़ लिया गया है.

टोकियो में विकसित एक तकनीक से कंप्यूटर के जरिए आंखों व भौहों का मेकअप शुरू कर दिया गया है. कंप्यूटर पहले आंख की तसवीर लेता है और फिर उस के आकार, रंग और बनावट के आधार पर मेकअप का उचित रंग और आकार चुन कर बताता है. यही नहीं, वह तसवीर के द्वारा यह भी बता देता है कि मेकअप के बाद आंखें कैसी लगेंगी. ●

भेदभाव के भंवर में डूबा भारतीय टेनिस

लेख • मनोज कुमार चतुर्वेदी

टेनिस जगत में दो दशक तक राष्ट्र का नाम रोशन करने वाले विजय अमृतराज का कुसूर चाहे जो भी रहा हो, पर भारतीय टेनिस संघ ने जिस तरह से उसे दल से बाहर कर दिया, वह तरीका क्या उचित कहा जा सकता है?
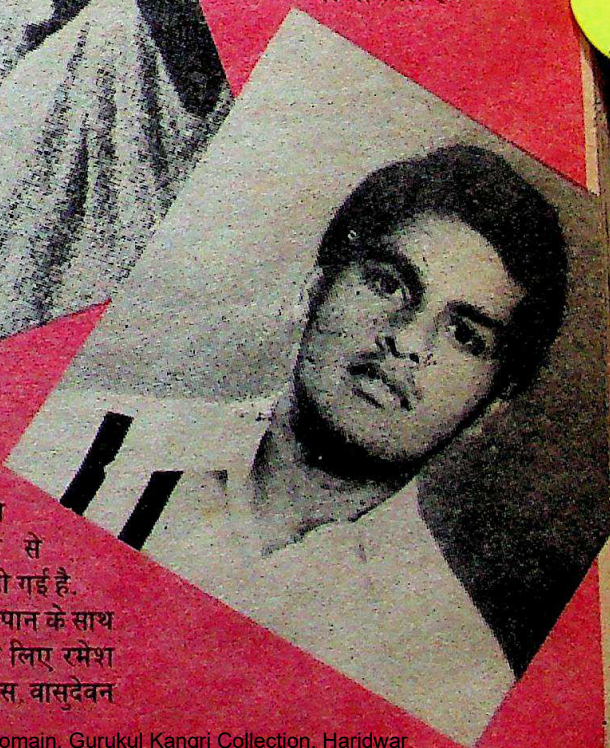
भारतीय टेनिस की दो दशक तक सेवा करने वाले विजय अमृतराज की आकस्मिक ढंग से भारतीय डेविस कप टीम से छुट्टी हो गई है. आने वाले साल की शुरुआत में जापान के साथ चंडीगढ़ में होने वाले मुकाबले के लिए रमेश कृष्णन के साथ जीशान अली और एस. वासुदेवन को टीम में रखा गया है.

विजय अमृतराज और आनंद अमृतराज : भाई को साथ खिलाने की शर्त पर औचित्य का प्रश्न

वैसे तो अमृतराज पिछले साल दक्षिण कोरिया के साथ हुए डेविस कप मुकाबले में भी पूरी तरह फिट नहीं होने का बहाना बना कर टीम से अलग रहा था. उसी समय स्पष्ट हो गया था कि वह शायद अब आगे न खेले. पर इस तरह से उस की दल से छुट्टी होगी, इस की किसी को भी कतई उम्मीद नहीं थी.

अभी तीन साल पहले ही भारतीय चुनौती को डेविस कप फाइनल तक पहुंचाने वाले विजय अमृतराज के साथ ऐसा क्या हो गया कि अखिल भारतीय टेनिस ऐसोसिएशन को उस की जरूरत नहीं रही. वास्तव में इस के पीछे दक्षिण और उत्तर की लाबी के आपसी झगड़े का ही मुख्य हाथ है.

अभी कुछ सालों पहले तक अखिल भारतीय टेनिस एसोसिएशन पर भूतपूर्व महा सचिव पी.एल. रेड्डी की अगुआई वाला धड़ा हावी था, जो पूरी तरह से विजय अमृतराज की मरजी से ही चलता था. विजय की इच्छा के कारण ही मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन जीशान अली स्वीडन के साथ हुए डेविस कप फाइनल में टीम का सदस्य होने के बावजूद अन्य खिलाड़ियों को मिली सुविधाएं नहीं पा सका था.

जीशान अली के पिता और एक दशक तक भारतीय टीम को प्रशिक्षित करने वाले अख्तर अली बताते हैं कि विजय के इशारों पर रेड्डी ने जीशान को निराश करने के लिए हर संभव उपाय किया, पर वे अपने इरादों में सफल नहीं हो सके. वह बताते हैं कि "मैं ने जीशान को समझाया कि 'ऊपर अल्ला और हाथ बल्ला' यदि ठीकठाक है तो दुनिया की कोई ताकत तुम्हें टीम में खेलने से नहीं रोक सकती है."

अख्तर अली एसोसिएशन द्वारा जीशान को परेशान करने का खुलासा करते हुए बताते हैं कि आस्ट्रेलिया के साथ हुए डेविस कप सेमी फाइनल के लिए जीशान का टीम में चयन हुआ. चयन होने पर मैं ने सचिव पी.एल. रेड्डी को लिखा कि 'आप जीशान का ब्लेजर बनवा दें

यदि नहीं बनवा रहे हों तो मुझे बनवाने की अनुमति दे दें.' इस के जवाब में उन्होंने लिखा कि 'नया ब्लेजर बनवाने की कोई जरूरत नहीं है. आप अपना 30 साल पुराना ब्लेजर ही उसे दे दें.' इस के जवाब में अख्तर अली ने लिखा कि 'मेरे ब्लेजर की बाहें उस की बाहों से काफी छोटी हैं.' पर रेड्डी जवाब में उसी ब्लेजर की बाहें बढ़वाने को राजी हुए.

एक तरफ तो अखिल भारतीय टेनिस एसोसिएशन पैसे के खर्च में इतनी कंजूसी बरत रही थी, दूसरी तरफ विजय और रमेश कृष्णन के परिवार वालों को स्वीडन ले जा कर मैच दिखाने का सारा खर्च बरदाश्त कर रही थी. यही नहीं, टीम का स्वीडन में फोटोग्राफ होते समय जीशान अली को उस से अलग कर दिया गया. यहीं पक्षपात खत्म हो जाता तो भी बरदाश्त कर लिया जाता लेकिन यह आगे भी जारी रहा. टीम के अन्य सदस्यों को जहां हजारों डालर मिले, वहीं जीशान को सिर्फ 50 डालर दिए गए.

इस के बाद सत्ता बदली और यहां सचिव पद पर आर.के. खन्ना विराजमान हुए. उन्होंने सब से पहले विजय अमृतराज द्वारा फाइनल खेलने के लिए दिए गए अनापशनाप बिलों पर रोक लगा दी. यहीं से विजय अमृतराज और महा सचिव खन्ना में टकराव की शुरुआत हुई. यह टकराव सब से पहले दक्षिण कोरिया के साथ हुए डेविस कप मुकाबले में देखने को मिला.

रमेश कृष्णन के चोटिल होने के बाद विजय अमृतराज ने मौके की नजाकत को पहचाना और अपने को पूरी तरह से फिट न होने का बहाना बना कर टीम से अलग कर लिया. इस का प्रमुख उद्देश्य खन्ना को नीचा दिखाना था. जीशान अली, मार्क फरेरा और एस. वासुदेवन से युक्त भारतीय टीम इस मुकाबले में आसानी से हार गई और विजय अपने मकसद में काफी हद तक सफल भी हो गया.

विजय अमृतराज की इस से पहले यह शर्त हुआ करती थी कि युगल में यदि उस के बड़े भाई आनंद अमृतराज को खिलाया जाएगा, तभी वह स्वयं खेलेगा. इस तरह से वह आनंद को लगभग पांच साल तक जबरदस्ती खिलाता रहा. लेकिन खन्ना ने दक्षिण कोरिया के खिलाफ आनंद का टीम में चयन नहीं किया. विजय की नाराजगी की एक वजह यह भी रही.

महा सचिव खन्ना कहते हैं कि अब समय आ गया है, जब बुजुर्ग खिलाड़ियों पर निर्भरता को कम कर के युवा खिलाड़ियों को मौका देने की जरूरत है. इसी योजना के तहत उन्होंने दक्षिण कोरिया के खिलाफ युवा टीम को उतारा. वास्तव में एक न एक दिन तो युवा खिलाड़ियों को आजमाया जाना ही था और इस में जितनी देर की जाती, उतना ही राष्ट्र का नुकसान होता. वैसे भी अंतर्राष्ट्रीय अनुभव मिलने पर ही खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का मौका मिलता है.

नया दल चुनौती पेश करने में सक्षम

इस में कोई दो राय नहीं है कि विजय अमृतराज के स्तर का अभी भी रमेश कृष्णन के अलावा देश में कोई खिलाड़ी नहीं है. पर उस की बुढ़ा चुके आनंद अमृतराज को खिलाने जैसी शर्तों को कब तक माना जा सकता है. इस के अलावा, जीशान अली अब पूरी तरह से परिपक्व खिलाड़ी हो गया है और पिछले चार सालों से राष्ट्रीय चैंपियन के पद पर भी प्रतिष्ठित है. साथ ही विश्व रैंकिंग में वह 137वें स्थान तक पहुंच चुका है, यह उस की प्रतिभा को सही ढंग से दर्शाता है. वह रमेश कृष्णन के साथ मिल कर भारतीय चुनौती को पेश करने में पूरी तरह से सक्षम है.

हां, इतना जरूर है कि दो दशक तक राष्ट्र का नाम रोशन करने वाले विजय अमृतराज की दल से छुट्टी करने का तरीका थोड़ा गलत रहा. उसे थोड़े सम्माननीय ढंग से अलविदा कहा जाना चाहिए था, जिस से वह युवा खिलाड़ियों की मदद के लिए तैयार रहता. पर मौजूदा हालत में उस ने मार्च में चंडीगढ़ में होने वाले डेविस कप मुकाबले में भारतीय टेनिस एसोसिएशन द्वारा सलाहकार के रूप में मौजूद रहने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया है. जब उस के अहम को चोट लगी हो तो उस से ऐसे फैसले की तो उम्मीद की ही जानी चाहिए. अब युवा खिलाड़ियों के कंधों पर देश की प्रतिष्ठा का भार आ गया है और उन्हें यह साबित कर के दिखाना है कि वे अपने बुजुर्गों से किसी भी तरह पीछे नहीं हैं. ●

खेल समीक्षा

स्टेरायड : पश्चिमी देशों से एशिया में

चीन की मध्यम दूरी की धाविका सुम सुमेई आजकल चर्चा का विषय बनी हुई है. चर्चा का कारण यह नहीं कि उस ने कोई पदक जीता है या किसी प्रतियोगिता में नया कीर्तिमान स्थापित किया है, बल्कि चर्चा का कारण यह है कि वह अंतर्राष्ट्रीय ऐमेच्योर एथलेटिक फेडरेशन के सामने ठीक उसी तरह कटघरे में खड़ी होने वाली है जैसे कि कुछ दिनों पहले कनाडा का बेन जानसन खड़ा हुआ

एशियाई ट्रैक एंड फील्ड प्रतियोगिता में 800 मीटर का स्वर्ण पदक जीतने वाली चीन की सुम सुमेई.

था. सुम सुमेई पर भी शक्तिवर्द्धक द
का आरोप लगा है.

पिछले दिनों आठवीं एशियाई ट्रै
फील्ड प्रतियोगिता में चीन की इस धा
800 मीटर दौड़ में रिकार्ड समय के सा
पदक जीता था तथा 4×400 मीटर
चीन को रजत पदक दिलाया. उस के
अंदाज व उस की शक्ति को देख क
अधिकारियों ने उस पर संदेह व्यक्त
अतः उस के मूत्र को टोकियो (जापान)
मित्सुबिशी लेबोरेटरी में परीक्षण के
लिए भेजा गया था.

लेबोरेटरी की प्राथमिक रि
अनुसार परीक्षण के दौरान ऐसे तत्त्व पा
हैं, जिन पर अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक क
मेडिकल आयोग ने रोक लगा रखी है.

भारतीय ऐमेच्योर एथलेटिक फे
ने मित्सुबिशी लेबोरेटरी से मिली रि
अंतर्राष्ट्रीय ऐमेच्योर फेडरेशन के पा
दिया है. संभव है अगले माह अंत
ऐमेच्योर फेडरेशन इस रिपोर्ट के आ
कोई कदम उठाए.

सुम सुमेई एशिया महाद्वीप की
ऐसी महिला खिलाड़ी है जिस पर शक्ति
दवा लेने का आरोप लगा है. आश्चर्य
बात का है कि एशिया में शक्ति
(स्टेरायड) लेने का आरोप किसी पु
नहीं बल्कि महिला धाविका पर लगा है

सुम सुमेई का 800 मीटर का
समय 1 मिनट 58:56 सेकंड का है, जो
बार्सिलोना विश्व कप में बनाया था

...टर दौड़ में 52:60 सेकंड का उस का ...कार्ड भी बार्सिलोना विश्व कप में ही बना ...

अंतर्राष्ट्रीय ऐमेच्योर फेडरेशन के ...मने अगर यह सिद्ध हो गया कि सुम सुमेई 'स्टेरायड' लेती थी तो यह न केवल चीन के लिए बल्कि एशिया के लिए भी शर्मनाक घटना है. इस के कारण चीन में होने वाले एशियाड में चीनी खिलाड़ियों को संदेह की नजर से देखा जाएगा.

जायनर एक रूप अनेक

फ्लोरेंस ग्रिफिथ जायनर को लोग सोल ...लपिक से पहले जानते तक नहीं थे. पर ...ल ओलंपिक में अमरीका की इस धाविका ...तीन स्वर्ण व एक रजत पदक जीत कर पूरे ...श्व को चकित कर दिया और दो ऐसे रिकार्ड ...नाए जो आने वाले समय में महिला ...विकाओं के लिए एक चुनौती बने रहेंगे.

1988 की सर्वश्रेष्ठ एथलीट का सम्मान ...ने वाली तथा जे.ओ. अंतर्राष्ट्रीय ट्राफी ...तने वाली जायनर को यह सफलता ...नानक नहीं मिली. बल्कि यहां तक पहुंचने ...लिए उस ने 20 वर्षों तक ट्रैक पर जो अथक ...श्रम किया है तथा जितनी हारें स्वीकार की ...उतनी हारें स्वीकार कर कोई महिला शायद ...ट्रैक पर दौड़ने का मनसूबा कायम रख ...के.

जायनर की इस अप्रत्याशित जीत पर ...स के ही देश के कुछ धावकों ने उस पर ...देह व्यक्त किया पर सचाई को सुबूत की ...वश्यकता होती है, जो उस के आलोचकों ...पास नहीं था.

जायनर न केवल अपने उत्कृष्ट खेल में ...ल्कि अपने हावभाव व मुसकान से भी ...र्शकों में लोकप्रिय है. जायनर के लंबेलंबे ...खूनों पर अलगअलग रंगों की पालिश की ...जावट को देख कर ऐसा लगता है कि वह ...ल पालिश' की माडल हो. पर जायनर को ...स तरह रंगबिरंगे पालिश में नाखून सजाने ...का शौक है.

जायनर अब ट्रैक की दुनिया से अलग हो ...ई है और उस के संन्यास की घोषणा से उस ...के प्रशंसक निराश भी हैं. शायद जायनर ने ...पने प्रशंसकों के अनुरोध पर ही अपने ...र्णय पर फिर से विचार किया है.

ग्रिफिथ जायनर : गजब का मनसूबा

जायनर ने हाल ही में दो निर्णय लिए हैं. पहला यह कि वह खेलों से जुड़ी रहेगी और निकट भविष्य में वह किसी मैराथन में दौड़ेगी. दूसरा यह कि वह कुछ वस्त्र उद्योगों, कास्मेटिक्स व शीतल पेयों की विज्ञापन फिल्मों में काम करेगी. इसी क्रम में जायनर कुछ दूरदर्शन धारावाहिकों व दो फिल्मों के लिए अनुबंध भी कर चुकी है. यद्यपि धारावाहिक व फीचर फिल्मों में उस की भूमिका कैसी है तथा नाम क्या है जैसी बातें उस ने स्पष्ट नहीं की हैं पर यह तो निश्चित है कि उस के प्रशंसक बहुत जल्द उसे एक कलाकार के रूप में परदे पर देखेंगे.

जायनर की खासियत है कि वह जिस काम को शुरू करती है उसे पूरा कर के ही संतुष्ट होती है. और काम पूरा करने के बाद वह उस से अलग भी हो जाती है. यही बात है कि कभी वह खेल के मैदान पर चमकती है तो कभी विज्ञापन फिल्मों के लिए चर्चित होती है और कभी एकदम घरेलू औरत बन कर बच्चे की कामना करती है.

डेविस कप में बेकर की तीसरी खिताबी जीत

डेविस कप का इतिहास जब भी टेनिस प्रेमी देखेंगे तो पाएंगे कि पश्चिम जरमनी के 21 वर्षीय टेनिस खिलाड़ी बोरिस बेकर ने लगातार तीन सालों तक अपने ही दम पर डेविस कप जीता था.

वर्ष 1989 के डेविस कप फाइनल मैच को न केवल मार्टिन स्केलीपर हाल में बैठे 10 हजार दर्शकों ने देखा, बल्कि दूरदर्शन पर समूचे संसार के असंख्य टेनिस प्रेमियों ने भी उल्लास सहित देखा. जब बेकर ने मैट्स विलैंडर व स्टीफन एडबर्ग दोनों को सीधे सेटों में परास्त किया.

डेविस कप में अपनी हार के बाद मैट्स विलेंडर ने कहा कि "मैं ने इस वर्ष एक बेहतर टेनिस खिलाड़ी को मैदान पर खेलते देखा है तथा मैं अपनी इस हार से शर्मिंदा भी नहीं हूं."

बेकर ने पहले एकल दौर में स्टीफन एडबर्ग को परास्त कर मास्टर्स चैंपियनशिप में अपनी हार का हिसाब न केवल चु किया बल्कि अपनी टीम को 1-0 से बढ़ दिलाई. पर मैट्स विलैंडर ने अपने एकल मैच में कार्ल उबे स्टीब को परास्त स्वीडन को बराबरी पर ला खड़ा किया. एकल मैच में स्टीफन एडबर्ग ने कार्ल स्टीब को परास्त कर अपनी टीम को 1- अग्रता दिला दी. इस बार कार्ल पिछले डे कप की तरह कोई उलटफेर नहीं कर और अपने दोनों एकल मैच हार कर स्वी को 2-1 की बढ़त दिलाने के लिए मजबूर गया.

युगल मुकाबले में बोरिस बेकर ए जैलेन के साथ जोड़ी बना कर मैदान उतरा. उन के मुकाबले में स्वीडन ने अ पैरिड और जान गुनारस को उतारा. बेक एरिक की जोड़ी ने डबल्स का मुकाबला 2 32 मिनट में जीत कर अपनी टीम को बढ़

डेविस कप पर कब्जा जमाने के बाद बोरिस बेकर अपने टीम मैनेजर निकी पिलिस, साथी खिलाड़ी उबे स्टीब एरिक जैलीन और पैट्रिक कुनैन के साथ : साथ में जीता हुआ कप भी.

पर ला खड़ा किया तथा स्वीडन की निश्चित जीत पर एक प्रश्नचिह्न लगा दिया.

अंतिम और निर्णायक मैच में पश्चिम जरमनी के बोरिस बेकर के मुकाबले में विश्व टेनिस का भूतपूर्व नंबर एक का खिलाड़ी मैट्स विलैंडर था. दोनों खिलाड़ी न केवल डेविस कप में बल्कि अन्य प्रतियोगिताओं में भी एकदूसरे को परास्त कर चुके थे. अतः कौन जीतेगा यह पहले से अनुमान लगाना बड़ा मुशकिल था.

खेल शुरू हुआ और बेकर एक बार फिर अपने जीवन का एक यादगार मैच खेलने में सफल रहा. बेकर ने वही कर दिखाया जो पश्चिम जरमनी की टीम के मैनेजर व दर्शक चाहते थे. मैट्स विलैंडर को सीधे तीन सेटों में 6-2, 6-0, 6-2 से परास्त कर बेकर ने एक वर्ष के लिए डेविस कप को जरमनी की झोली में डाल दिया.

बेकर की इस जीत के बाद टीम के मैनेजर निकी पिलिस ने कहा कि टेनिस में 1990 का दशक जरमनी का है. उन के इस विश्वास की वजह शायद यही थी कि जरमनी में टेनिस खिलाड़ियों की जो पौधें तैयार हो रही हैं,उन में बेकर जैसे और भी खिलाड़ी होंगे

क्रिकेट में गेंद की रफ्तार पर अंकुश लगना चाहिए

आज के दौर में क्रिकेट का खिलाड़ी बल्लेबाजी करते समय सिर से पांव तक आधुनिक सुरक्षा कवचों से ढका रहता है खास कर बल्लेबाज का वह अंग जो विशेषज्ञों की नजर में नाजुक होता है या जहां तेज रफ्तार की गेंद लगने से मौत होने की संभावना रहती है. आज जिस रफ्तार की गेंदबाजी की जा रही है उसे देख कर इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि कोई भी गेंद मौत का कारण बन सकती है.

क्रिकेट के पेशेवर रुख ने गेंदबाजों द्वारा गेंद फेंकने की रफ्तार तथा उन की मानसिकता को बदला है. आज विश्व में जितने भी देश क्रिकेट खेल रहे हैं सभी के पास कुछ ऐसे तेज या मध्यम तेज गेंदबाज जरूर हैं जो 70 से 90 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से गेंद फेंकते हैं. यह सही है कि गेंद की रफ्तार के पीछे एक मात्र उद्देश्य यही होता है कि सामने खड़े बल्लेबाज को आउट किया जाए. चूंकि गेंदबाज अपनी रफ्तार से बल्लेबाज को छकाता है. अतः वह अपनी गेंदों की रफ्तार में परिवर्तन भी करता है. किसी भी गेंदबाज की मानसिकता यह नहीं होती कि सामने खड़े बल्लेबाज को मारे या घायल करे. पर रफ्तार से आती गेंद को समझने व खेलने में हुई भूल बल्लेबाज को घायल करती है.

सिडनी से 400 किलोमीटर दूर डब्बो में दो स्थानीय क्रिकेट टीमों के बीच खेले जा रहे एक मैच के दौरान एक बाउंसर गेंद माइकल एडम नामक 17 वर्षीय खिलाड़ी से टकराई और खिलाड़ी की मौत का कारण बन गई.

माइकल बल्लेबाजी कर रहा था. अचानक एक गेंद तेजी से उठी. इस से पहले कि वह अपने को गेंद की सीध से अलग करता गेंद उस के सीने से टकराई और पैरों के पास गिर पड़ी. माइकल गेंद को उठाने के लिए झुका पर गेंद उठाने की बजाए वह वहीं पिच पर लुढ़क गया.

माइकल को फौरन एंबुलैंस में डाल कर हस्पताल ले जाया गया, जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. हालांकि मौत के कारणों की जांच हो रही है पर अंदाज लगाया गया कि शायद बाउंसर गेंद लगने से माइकल के सीने की हड्डी टूट गई होगी, जो झुकने के कारण उस के फेफड़े या दिल में घुस गई जिस के कारण उस की मौत हो गई.

मौत का कारण चाहे कुछ भी हो पर यह तो तय है कि माइकल की मौत क्रिकेट में तेज गेंदबाजी की बढ़ती मानसिकता का ही परिणाम है. और अगर गेंद फेंकने की रफ्तार पर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने रोक नहीं लगाई तो वह दिन दूर नहीं जब कभीकभार होने वाली ऐसी दुर्घटनाएं क्रिकेट में आम हो जाएंगी.

नशे के विरुद्ध अमरीका में मेमे का जिहाद

मुहम्मद अली की लड़की मेमे अली : आवाज भी, अंदाज भी.

हो सकता है, मेमे का नाम आप के लिए नया हो, अनसुना हो क्योंकि यह नाम खेल की दुनिया से कोई सरोकार नहीं रखता. पर अमरीका में आज इस नाम और इस के काम की धूम मची है. मेमे अपने समय के मशहूर विश्व हैवीवेट चैंपियन मुहम्मद अली की लड़की है.

मुहम्मद अली की तरह हूबहू दिखाई देने वाली 21 वर्षीय मेमे अली का बचपन शिकागो में बीता था. 1987 में वह शिकागो से लांस एंजेलस चली आई. वहां से हाईस्कूल की शिक्षा समाप्त कर उस ने अभिनय के प्रशिक्षण के लिए ला सिटी कालिज में प्रवेश लिया.

1987 की शुरुआत में अपने दोस्तों के आग्रह पर मेमे अली ने पहली बार फिलाडेलफिया में एक 'कामेडी शो' में भाग लिया.

उस का प्रदर्शन अच्छा रहा. लोगों ने उस की कला को सराहा. अपनी इस सफलता से प्रोत्साहित हो कर मेमे ने निर्णय लिया कि वह हालीवुड के कामेडी स्टोर में अपनी प्रतिभा को विकसित करेगी.

मेमे अपने अंदर उठे विचारों के तूफान को शांत करने के लिए कामेडी स्टोर के मालिक मित्जी शीरे से मिली. उस ने उस में छिपी प्रतिभा को देख कर ही टीना टर्नर के साथ एक शो का आयोजन किया. इस शो के साथ ही मेमे हालीवुड के कामेडी जगत में एक चर्चित नाम हो गया.

आज के दौर में मेमे सप्ताह में पांच दिन प्रोग्राम देती है. और अभिनय के इस शौक के साथसाथ वह अध्ययन भी कर रही है. मेमे की दिली इच्छा है कि वह अमरीका ही नहीं विश्व के काले समुदाय के लोगों पर एक फिल्म बनाएगी. क्योंकि उस के विचार से काले समुदाय के लोग हमेशा से ही गोरों में हंसी के पात्र बने रहे हैं.

—राकेश श्रीवास्तव

कैरियर बनाने के लिए घर का मोह छोड़ना आवश्यक

लेख ● राकेश कुमार भटनागर

नौकरी करने के लिए घर छोड़ने में नुकसान नहीं.

रवि को नौकरी का नियुक्ति पत्र मिला. जिस में व्याख्याता पद कर मध्य प्रदेश के बस्तर जिले में नियुक्ति की सूचना थी तथा 10 दिन में उस पद का कार्यभार संभालने का आदेश था. रवि को जहां व्याख्याता पद पर प्रथम नियुक्ति की अपार खुशी हुई, वहीं उस के मातापिता को जैसे सांप सूंघ गया. वे कभी भी नहीं चाहते थे कि उन का पुत्र उन की नजरों से ओझल हो. बस्तर जैसे पिछड़े क्षेत्र का नाम सुन कर रवि के मातापिता ने किसी भी कीमत पर वहां न जाने के लिए उस पर दबाव डाला.

रवि भी अ[illegible] मातापिता के मोह [illegible] अपने अपरिपक्व अनु[illegible] भव के कारण नियुक्ति का प्रस्ताव ठुकराने को राजी हो गया. आ[illegible] हालत यह है कि [illegible] पांच साल गुजर [illegible] के बाद व्याख्याता [illegible] क्या, निम्न श्रे[illegible] शिक्षक पद के लिए [illegible] वह लालायित है [illegible] लेकिन मिलने की को[illegible] उम्मीद दिखाई न[illegible] देती. यही दुष्परिणाम होता है घर के मोह [illegible] वशीभूत हो कर प्रथम नियुक्ति के तिरस्कार करने का.

रवि का उदाहरण ऐसे बहुत से युवक[illegible] की वेदना को उजागर करता है जो मातापि[illegible]

यारदोस्तों के अंधे मोह में फंस कर प्रथम नियुक्ति ठुकराते हैं और दूसरी नौकरी का इंतजार करतेकरते अधिकतम आयु सीमा को पार कर जाते हैं. यदि मातापिता अपनी मोहममता को त्याग कर अपने पुत्रपुत्रियों को नौकरी पर दूर जाने से न रोकें तो बहुत से युवा साथी अपना कैरियर बना सकते हैं. हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि घर से बाहर निकल कर जीवन में तरहतरह के अनुभव होते हैं. जिन से सबक ले कर अपरिपक्व ज्ञान परिपक्वता ग्रहण करता है. यही बाहरी अनुभव युवाओं के व्यक्तित्व में निखार लाता है, जो कि प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता का आधार माना जाता है.

रमेश असम की एक बड़ी कंपनी में इंजीनियर के पद पर चुना गया. घर से बाहर कदम न रखने वाले रमेश को हजारों मील दूर जाना मुसीबत लग रहा था. लेकिन उस के पिताजी ने अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर तरहतरह के तर्क देते हुए उसे संतुष्ट कर दिया और वह जाने को सहर्ष तैयार हो गया. आज चार साल में ही रमेश का मासिक वेतन पांच हजार रुपए है तथा वह अपने घर पर भी आर्थिक सहायता नियमित रूप से भेजता है. उस के छोटे भाई भी उस का अनुकरण करते हुए पढ़लिख कर इधरउधर अच्छी नौकरियों में लग गए हैं. अतः घर का मोह त्यागना युवाओं के अच्छे कैरियर के लिए अनिवार्य है.

मातापिता की संतुष्टि अपने बच्चों को खुशहाल देखने में है. बच्चों की खुशहाली पढ़लिख कर अच्छी नौकरी या कामधंधे में निहित है. प्रथम नियुक्ति के तिरस्कार का दंड भोगते हुए रवि जैसे युवाओं के मातापिता क्या कभी खुश हो सकते हैं? स्वाभाविक है जब नौकरी नहीं मिलती, युवकयुवतियां परेशान और चिंतित दिखाई देते हैं. विशेषकर पहली नौकरी छोड़ने वाला व्यक्ति दूसरा अवसर शीघ्र न मिलने पर हीन भावना या अन्य मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है. यह स्थिति मातापिता के मोह या उन के सामीप्य से मिलने वाले वात्सल्य से वंचित रहने की तुलना में अधिक हानिकारक होती है.

हमारे पड़ोस में एक ऐसे सज्जन रहते हैं जो नौकरी मिल जाने के बाद भी अपने घरप्रेम की खातिर अपने कैरियर को तबाह कर बैठे. शिवपुरी के निवासी इन सज्जन की नियुक्ति ग्वालियर की कपड़ा मिल में लेखाकार के पद पर हुई थी. कुछ समय बाद उन का गृहप्रेम उभरा और उन्होंने ग्वालियर शिवपुरी रोज आनाजाना शुरू कर दिया. परिणाम बहुत शीघ्र सामने आ गया.

दोनों शहरों के बीच की दूरी 115 किलोमीटर है. रोजरोज आनेजाने से उन का स्वास्थ्य तो गिर ही गया, साथ ही देरसवेर आने से और काम में ढील होने से अधिकारी नाराज हो गए. परिणामस्वरूप नौकरी छूट गई. आज बेचारे पांच साल बाद भी बहुत प्रयासों के बावजूद बेरोजगार हैं.

चाहे प्रश्न पहली नौकरी पर दूर जाने का हो अथवा नौकरी पर रहते हुए घर के प्रति आकर्षण का, युवकयुवतियों को भावुकता से परे हट कर वास्तविकता से समझौता कर लेना चाहिए और वास्तविकता यही है कि बाहर जाने पर ही कमजोर कदमों को बल मिलता है. कदमों की मजबूती ही सफलता के सोपान पर चढ़ा सकती है.

अपनी व्यक्तिगत भावनाओं और समस्याओं को तिलांजलि दे कर जो युवक अपने घर से दूर किसी भी शहर में नौकरी करने के लिए तैयार हो जाते हैं, उन के कैरियर के रास्ते में पड़ने वाला कोई भी अवरोध उन की सफलता की मंजिल में बाधक नहीं बन सकता.

उपयुक्त पात्र का चयन और सुखी वैवाहिक जीवन

लेख • विवेक वैभव

आज वैवाहिक रिश्तों में कड़वाहट कुछ ज्यादा ही आने लगी है. ऐसा लगता है कि अधिकतर विवाहित स्त्रीपुरुष अपने दांपत्य जीवन से खुश नहीं हैं. उन के आपसी प्यार और समर्पण की भावना जैसे चुक गई हो. कुछ तो अपनेआप को अपने जीवनसाथी के अनुरूप ढाल कर खुश रहने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं, कुछ अपने अहंकार, स्वभाव और संस्कारों के कारण अपनेआप में परिवर्तन न ला कर अपने दांपत्य जीवन को नारकीय बनाने पर तुले हुए हैं और कुछ ऐसे भी दुखी स्त्रीपुरुष हैं जो अपने जीवनसाथी के ऊपर सब कुछ कुरबान करने के बावजूद सुख का एक कतरा तक प्राप्त करने में सफल नहीं हो पा रहे हैं.

दांपत्य जीवन से निराश होने की [illegible] में क्या जिंदगी की तमाम उपलब्धियां [illegible] नहीं लगतीं? आखिर यह निराशा क्यों [illegible] के लिए जिम्मेदार कौन? क्या इस स्थि[illegible] उबरने का कोई उपाय नहीं है? क्या ऐसा [illegible] हो सकता है कि यह स्थिति आए ही नहीं [illegible] न जाने कितने प्रश्न आज हमारे सामने [illegible] बाए खड़े हैं.

आधुनिक जीवन की विसंगतियों, [illegible] स्वतंत्रता व उस से उत्पन्न उस की [illegible] आत्मनिर्भरता को इस के लिए सब से [illegible] दोषी ठहराया जा रहा है. लेकिन, क्या यह [illegible] सत्य है? क्या इस निराशाजनक स्थि[illegible] लिए संबद्ध मातापिता और स्वयं गुज[illegible] कल के भावी पतिपत्नी दोषी नहीं हैं?

चहकते हुए खुशियों के पल अपनी जिंदगी में समेट कर भला कौन नहीं चैन की बंशी बजाना चाहेगा? पर इत्तफाक से दांपत्य जीवन की देहरी लांघते ही कुछ ऐसी परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं कि जिंदगी नीरस और बोझिलबोझिल सी महसूस होने लगती है. क्या दांपत्य जीवन में घटित होने वाली ऐसी परिस्थितियों से बचा नहीं जा सकता?

दांपत्य जीवन को हमेशा खुशहाल रखने के लिए पतिपत्नी दोनों की बराबर की भूमिका होती है.

वस्तुतः इस निराशपूर्ण स्थिति का बीज ...ा उसी समय डाल दिया जाता है, जब ...उपयुक्त पात्र का चयन करना होता है. ...दरअसल जिन मानदंडों के आधार पर पात्रता ...े मापा जाता है, वही दोषपूर्ण है. क्या हम ...किसी से उस चीज को पाने की कल्पना कर ...सकते हैं, जो उस के पास है ही नहीं? लेकिन ...बाद में हम उन्हीं चीजों की तलाश करते हैं जो ...क उस के पास कभी थी ही नहीं. नतीजा सिर्फ ...निराशा और घोर निराशा.

आइए हम कुछ दंपतियों के वैवाहिक ...जीवन पर दृष्टिपात करें, और उपयुक्त बातों ...की सत्यता की परख करें.

अनमेल विवाह :

उम्र, रंगरूप और शारीरिक तौर पर ही नहीं वरन मानसिक तौर पर भी दोषी श्याम किशोर मेरे करीबी रिश्तेदार हैं. लाखों की जायदाद है इन के पास. बहुत मोटी आमदनी वाला उत्तराधिकार में पाया गया व्यवसाय, सुशिक्षित परिवार, प्रतिष्ठित घराना और स्वतंत्र जीवन. सभी कुछ तो है इन के पास. लेकिन, ये सब क्या इन के वैवाहिक जीवन को सुखी बना पा रहे हैं? नहीं, बिलकुल नहीं. इन की [illegible] है कि इन्हें अपनी पत्नी किसी कोण से भी पसंद नहीं है, बल्कि

अब तो यह कहना ज्यादा उचित होगा कि वह अब उन को अपने लिए एक अभिशाप लगने लगी है.

वह कहते हैं, "मैं ने आज तक यह नहीं जाना कि वैवाहिक सुख क्या होता है. बल्कि मैं तो अब यह महसूस करने लगा हूं कि जैसे मेरा विवाह कभी हुआ ही नहीं. उम्र में छःसात साल बड़ी, रंग काला और भैंस जैसी मोटी तो थी ही, ऊपर से उस का अभिमानी स्वभाव, खुदगरजी, लापरवाही की आदत, बारबार बच्चों के साथ घर छोड़ कर मरने जाने की उस की नौटंकी से मैं अब ऊब चुका हूं."

वह आगे कहते हैं, "मैं मानता हूं कि मैं पढ़ाई में अच्छा नहीं था. परिवार से आर्थिक असहयोग की स्थिति में मृदुला दीदी की शादी में दिक्कतें आ रही थीं और मेरी शादी पर मिलने वाले दहेज से पिताजी को कुछ मदद मिलनी थी, लेकिन इन सब के चलते मेरी अनमेल शादी कर देना कहां तक उचित था?"

दो विपरीत ध्रुवों का साथ

मृदुला दीदी तो बिलकुल अपने नाम के अनुरूप मृदुल और शीतल हैं. नम्र, उदार और सहिष्णु तो वह हैं ही, सौंदर्यबोध, गृहकार्य में दक्षता, आतिथ्य, व्यवहारकुशलता इत्यादि में भी उन की कोई बराबरी नहीं. हर स्थिति में जीवंतता और होंठों पर मुसकराहट उन की विशिष्टता है.

डा. शेखर बाबू जो मृदुला दीदी के पति हैं इन सारी बातों से बिलकुल अपरिचित से हैं. जहां मृदुला दीदी अपेक्षाकृत कम पढ़ीलिखी हो कर भी बहुत ही व्यापक दृष्टिकोण और संतुलित विचार रखती हैं, शेखर बाबू एक डाक्टर हो कर भी बेहद दकियानूसी और संकुचित विचार रखते हैं.

दोनों ही अच्छे परिवार से संबंध रखते हैं. दोनों सुंदर और स्वस्थ हैं. फिर भी उन का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं कहा जा सकता. जब पति पत्नी पर असंगत अविश्वास के आधार पर उसे अपने पास नहीं रखे, तो इसे और क्या कहा जा सकता है? जरा इसे विस्तार में देखा जाए.

उस दिन अपने स्वभाव के अनु[illegible] मृदुला दीदी अपने रिश्तेदारों की आवभ[illegible] करते हुए गप्पें हांक रही थीं. तभी शेखर ब[illegible] सात दिन की अपनी यात्रा से वहां लौटे [illegible] एकाएक मृदुला दीदी पर बरसने लगे. हमें [illegible] यह विश्वास ही नहीं आया कि एक प्रशिक्षि[illegible] डाक्टर की ऐसी भाषा हो सकती है. उस [illegible] अच्छी भाषा में तो कोई जाहिलगंवार अप[illegible] पत्नी से बोलता है. दीदी भी उस दिन फट प[illegible] थीं और हम ने तब जाना था कि उन के सीने [illegible] कितना दर्द छिपा हुआ है, लेकिन वह सदा [illegible] अपनी जीवंतता और मुसकराहटों से छि[illegible] रहती हैं.

वह शेखर बाबू की ओर इंगित कर[illegible] कहने लगीं, "ऐसा खुदगरज, संकुचित वि[illegible] और कमजोर मस्तिष्क वाला महाकृ[illegible] व्यक्ति और सोच व कर भी क्या सकता [illegible] चाहे कोई पत्नी अपने पति के प्रति कितनी [illegible] कर्तव्यनिष्ठ और समर्पित क्यों न रहे?

"पहले तो स्वयं उस के साथ दो[illegible] बढ़ाई, उस के यहां आएगए, साथ[illegible] घूमेफिरे, मौजमस्ती की और जब वह इ[illegible] यहां आनेजाने लगा तो इन के दिमाग में श[illegible] के कीड़े रेंगने लगे.

"पूरे 16-17 वर्ष साथ रह कर भी [illegible] पति अगर अपनी पत्नी को पहचान नहीं प[illegible] तो इस से बड़ा दुख उस पत्नी के लिए औ[illegible] क्या होगा? दूसरों की बातों पर तो सहज [illegible] भरोसा कर लिया, लेकिन अपनी पत्नी [illegible] नहीं."

अब तो वह भावुक हो चली थीं. [illegible] हुई कहने लगीं, "इन बीते वर्षों में मैं ने [illegible] कभी इन्हें कोई उंगली उठाने का मौका दि[illegible] नहीं. मैं तो सदा इन के सुख को ही अपना [illegible] मानती रही, इन की एकएक इच्छा पर अ[illegible] तनमनधन समर्पित करती रही, बच्चे [illegible] तरह इन की एकएक बात का खयाल र[illegible] रही. लेकिन मुझे क्या मिला?

"स्नेह भरा पति का क्या बोल [illegible] व्यवहार होता है, मैं ने आज तक जाना न[illegible] प्रशंसा का एक शब्द कभी सुना नहीं, जो[illegible]

कितना भ[illegible] पति अप[illegible] जाता है य[illegible] तक जान[illegible] साथसाथ[illegible] मैं ने अनु[illegible] वह[illegible] बाहर ही[illegible] 10 बजे [illegible] नहीं है, [illegible] व्यतीत व[illegible] कोई साथ[illegible] मुझे कम[illegible] पत्नी अ[illegible] परिचितो[illegible] चरित्रही[illegible] जाएगा?

वैचारिक मतभेद दांपत्य में कलह की भूमिका निभाते हैं.

कितना भी कुछ क्यों न कर दूं. शौक से कोई पति अपनी पत्नी को कैसे घुमानेफिराने ले जाता है या उसे कुछ ला कर देता है, मैं ने आज तक जाना नहीं. यहां तक कि पतिपत्नी कैसे साथसाथ रह कर घंटों बातों में खोए रहते हैं, मैं ने अनुभव नहीं किया."

वह कहती रहीं, "स्वयं तो घर से सदा बाहर ही रहते हैं. सुबह 8 बजे के गए रात के 10 बजे ही आ पाते हैं. घर में कोई बच्चा भी नहीं है, जो कि मैं उस के साथ अपना समय व्यतीत करूं. मनोरंजन और व्यस्तता के और कोई साधन भी नहीं. किताबें पढ़ने का शौक मुझे कभी रहा ही नहीं. ऐसे में अगर कोई पत्नी अपने सगेसंबंधियों, पड़ोसियों अथवा परिचितों के यहां घूमफिर आए तो क्या उसे चरित्रहीन करार दे कर घर से बाहर कर दिया जाएगा?

"मैं अब समझने लगी हूं. असल में यह अपनी कमजोरी जाहिर कर रहे हैं. वैसे मैं ने शारीरिक सुख को उतना कभी महत्त्व नहीं दिया, फिर भी ऐसे पुरुषों को शादी कर के दूसरे की जिंदगी बरबाद करने का क्या अधिकार है, जो अपनी पत्नी को कोई भी सुख नहीं दे पाता, न शारीरिक न भौतिक और न ही भावनात्मक. ऐसे व्यक्तियों को तो चौराहे पर खड़ा कर के गोलियों से उड़ा देना चाहिए."

इतने पर भी वह रुकी नहीं थीं. अपने इस असंतुष्ट वैवाहिक जीवन के लिए वह भी अपने मातापिता को ही दोषी ठहराने लगीं, "क्या ऐसा भी कोई बाप होता है जो लड़का देखने जाता है तो सिर्फ उस की शक्लसूरत, उस का कैरियर और उस के बाप की दौलतभर देखता है? क्या लड़के से विस्तार में बातचीत कर के उस की बुद्धि, मानसिकता, जीवनदर्शन और उस के अन्य चारित्रिक गुणदोषों का बिना विचार किए अपना निर्णय

दे डालता है? जिस के साथ पूरी जिंदगी बितानी है, क्या उस की अपनी पसंदनापसंद का कोई अर्थ नहीं है-सिर्फ यह सोच कर कि उस ने तो अपनी बेटी के लिए सुंदर, स्वस्थ, सुस्थापित और अमीर वर चुना है और इस से ज्यादा किसी लड़की को और चाहिए भी क्या?''

मोटे दहेज, प्रतिष्ठा और प्रभुत्व के लिए :

प्रतापसिंह, भारतीय पुलिस सेवा के एक उच्चअधिकारी हैं. यह कभी बहुत ही मेधावी छात्र थे, जिन्होंने बहुत से नए कीर्तिमान स्थापित किए थे. छात्र नेता के रूप में इन के प्रभावकारी और प्रचंड भाषण की तीक्ष्णता महसूस करने योग्य होती थी. लड़कियां इन के कठोर, गंभीर और अभिमानी स्वभाव से भलीभांति परिचित थीं और इन से कोसों दूर रहना पसंद करती थीं. लेकिन, आज यह अपनी पत्नी की प्रत्येक गलतसही बात को सुनने और मानने में कोई पालतू कुत्ते से कम नहीं हैं.

शायद उन की मजबूरी है. अपनी प्रतिष्ठा की जैसे कोई पहचान ही नहीं रह गई है इन के लिए. आखिर इस का कारण?

प्रतापसिंह स्वयं तो एक कृषक परिवार से हैं, एक औसत पुरुष हैं. भारतीय पुलिस सेवा में आने के बाद रिश्तों की जैसे बाढ़ ही आ गई थी. अंत में इन्होंने एक बहुत ही समृद्ध और प्रभुत्व वाले राजनीतिबाज की अंगरेजी माध्यम और माहौल में पलीपढ़ी अत्यंत सुंदर और अत्याधुनिक कन्या को पसंद किया अपने पिताजी की पहल पर ताकि उन्हें मोटा दहेज, सुंदर और आधुनिक लड़की मिलने के साथसाथ उन का रुतबा समाज में और बुलंद हो सके.

दुनिया भले ही उन्हें बहुत खुशहाल

एकदूसरे की भावनाओं का आदर करते हुए दांपत्य की गाड़ी को आगे बढ़ाइए.
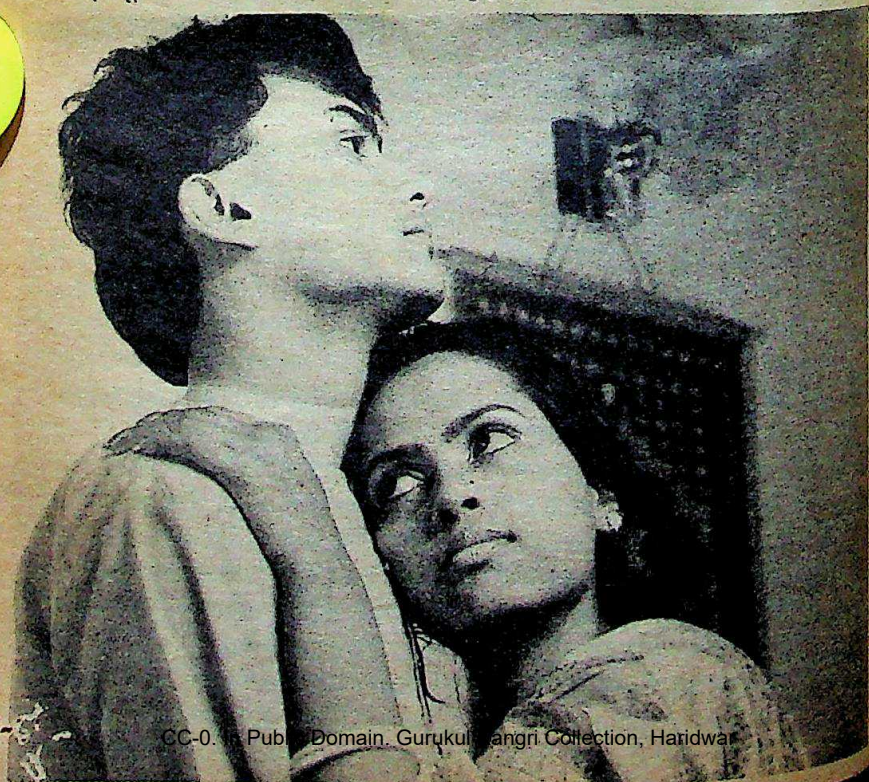
समझे, लेकिन कोई उन से पूछ कर देखे कि वह क्या कहते हैं अपने जीवन के विषय में. उन का कहना है, "यह खोखली प्रतिष्ठा और दौलत, सब व्यर्थ है अगर दांपत्य जीवन नारकीय हो तो. मेरी स्थिति तो सांपछछूंदर वाली हो कर रह गई है."

अमीर और प्रतिष्ठित पति :

सर्वेश्वर एक जानेमाने स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं. इन का 'नर्सिंग होम' पूरी प्रगति पर है. लाखों की आय है इस से. खानदानी जायदाद अलग. घर में सुखसुविधा के सब साधन हैं. दो बड़े बच्चे भी हैं. लेकिन, उन की पत्नी लक्ष्मी को हमेशा इस बात की कसक रहती है कि उन का पति सिर्फ उन का हो कर क्यों नहीं रहता? क्यों वह अपनी नर्सों से ताल्लुक रखता है? एक को तो उपपत्नी का दर्जा भी दिए हुए है.

उन्हें इस बात से और भी तकलीफ होती है कि उन का पति अपने इस कर्म को किसी तरह से गलत भी नहीं समझता. आए दिन इस विषय को ले कर घर में अशांति बनी रहती है, बच्चे भी सब जान चुके हैं.

कहना न होगा कि ऐसा दांपत्य जीवन कभी भी सुखमय नहीं कहा जा सकता. लेकिन, इस तरह का पात्र (पति) तो लक्ष्मी ने स्वयं ही चुना था. प्रेमविवाह था उन का. प्रेम संबंध शारीरिक संबंध में बदल चुका था और यही उन की शादी का कारण भी बना. क्या उसी दौर में लक्ष्मी को नहीं परख लेना था कि इस पात्र में नैतिकता का अभाव है? लेकिन नहीं. तब तो उन्हें भविष्य का एक डाक्टर के रूप में कमाऊ पति नजर आ रहा था. अब रोते रहने से क्या लाभ?

कन्हैया और माधुरी. दोनों ही एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार से हैं. दोनों के बड़े भाई एक महाविद्यालय में शिक्षक हैं. तथा आपस में घनिष्ट दोस्त हैं.

माधुरी और कन्हैया वर्षों तक साथसाथ पढ़े हैं. नजदीकी के क्षणों में एक दूसरे को जांचेपरखे हैं. जब कन्हैया एक प्रतिष्ठित कंपनी में इंजीनियर बन गया और माधुरी ने स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली तो दोनों की राय ले कर बात चलाई गई और बिना दहेज के एक अत्यंत सादे समारोह में उन की शादी संपन्न हो गई.

आज माधुरी की प्रेरणा और उस के द्वारा बनाए गए अनुकूल घरेलू माहौल को पा कर कन्हैया एम.टेक. और एम.बी.ए. (क्रमशः इंजीनियरिंग और व्यापार प्रबंध में स्नातकोत्तर) कर के एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी है. स्वयं माधुरी भी एक महाविद्यालय में शिक्षिका है. दोनों का अत्यंत मधुर दांपत्य सहज ही किसी के मन में ईर्ष्या उत्पन्न कर सकता है. उन का 10 वर्षीय लड़का राहुल अभी से कीर्तिमान स्थापित कर रहा है.

उपर्युक्त उदाहरणों से क्या यह साफ पता नहीं चल जाता है कि वैवाहिक जीवन की सुखशांति उपयुक्त पात्र के चयन पर ही निर्भर है? फिर भी, क्या मातापिता या स्वयं लड़केलड़कियां पात्र के चयन के समय कभी समुचित ध्यान देते हैं कि वस्तुतः वे कौनकौन सी बातें हैं, जो वैवाहिक जीवन को सही अर्थों में सुखी बनाती हैं? जवाब है, अधिकतर नहीं. उन का सारा ध्यान तो पात्र की आर्थिक संपन्नता, शारीरिक सौष्ठव और सामाजिक प्रतिष्ठा पर केंद्रित रहता है. वे पात्र के जीवन दर्शन, दिल की उदारता और मस्तिष्क की स्वस्थता से लगभग अपरिचित ही रहने की कोशिश करते हैं. हां, इन से परिचय का औचित्य उन्हें अपने दांपत्य जीवन के कड़वे क्षणों में अवश्य होता है. लेकिन, तब तक तो बहुत देर हो चुकी होती है.

अतः उपयुक्त पात्र के चुनाव के अवसर पर ही क्यों न ऐसा मानदंड अपनाया जाए, जो कि अधिक युक्तिसंगत और कारगर हो? वस्तुतः जिन बातों पर एकदम ही ध्यान नहीं दिया जाता है, उन पर कम से कम 50 प्रतिशत ध्यान देने की आवश्यकता है. विवाह कोई जुआ नहीं है, जैसा कि आज के माहौल में लोग समझे बैठे हैं.

माना कि अर्थ यानी धनदौलत आज की बहुत बड़ी जरूरत है, लेकिन सब से बड़ी

यह दावा करने में कोई हिचक नहीं है कि चाहे कोई भी पति या पत्नी कितनी भी दौलत, शोहरत और तथाकथित सामाजिक प्रतिष्ठा क्यों न प्राप्त कर ले, उन का दांपत्य जीवन सही अर्थों में तब तक सुखी नहीं रह सकता जब तक कि दोनों में एकदूसरे को भरपूर प्यार करने का उत्साह न हो.

जरूरत नहीं-विशेषकर वैवाहिक जीवन की सुखशांति के लिए. यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति सोनाचांदी, हीरेमोती नहीं खाता है और न ही उसे चांदसितारों से जटित महल में रहने की मजबूरी है. वैसे इच्छाओं और आवश्यकताओं की कोई सीमा भी नहीं है. श्याम बाबू, मृदुला दीदी, प्रतापसिंह और लक्ष्मी सभी के पास तो दौलत का अंबार है, लेकिन उन का दांपत्य जीवन कैसा है-हम भलीभांति देख चुके हैं.

यह दावा करने में कोई हिचक नहीं है कि चाहे कोई भी पति या पत्नी कितनी ही दौलत, शोहरत और तथाकथित सामाजिक प्रतिष्ठा क्यों न प्राप्त कर ले, चाहे वे कितने भी शिक्षित क्यों न हों, चाहे वे शारीरिक तौर पर कितने ही सुंदर और स्वस्थ क्यों न हों, उन का दांपत्य जीवन सही अर्थों में तब तक सुखी नहीं रह सकता, जब तक कि दोनों में एकदूसरे को प्यार करने का भरपूर उत्साह न हो, दोनों एकदूसरे की भावनाओं की कद्र करना न जानते हों, दोनों एकदूसरे को महत्त्व न देते हों, एकदूसरे की सुखसुविधा का खयाल न रखते हों तथा दोनों में समर्पण की भावना न हो.

जब कभी वैवाहिक संबंधों में खरास आती है तो इन में से किसी के न्यूनाधिक अभाव के कारण ही. अतः विवाह के लिए उपयुक्त पात्र के चुनाव के समय ही अगर उपर्युक्त बातों की परख कर ली जाए तो संभवतः वैवाहिक रिश्ते बिगड़े ही नहीं. और यह परख कर लेना कोई बहुत दुष्कर कार्य भी नहीं है. बस थोड़े से धीरज, उदारता और बुद्धिमता की जरूरत है.

व्यावहारिकता में सब से पहले मांबाप को अपने तुच्छ स्वार्थ से ऊपर उठना होगा-चाहे अपना बोझ हलका करने की बात हो, चाहे अधिक दौलत का लालच हो अथवा प्रतिष्ठित और प्रभुत्वशाली परिवार से रिश्ता जोड़ कर अपने खोखले अहं को हवा देने की बात हो, चाहे अपनी पसंद या कुंठा बच्चों पर लादने की इच्छा हो.

बात, चाहे परंपरागत विवाह की ही क्यों न हो, भावी पतिपत्नी को एकदूसरे को अधिक से अधिक समझने के लिए भरपूर अवसर मिलना चाहिए. उन्हें स्वयं अपने गुणों की अपेक्षा अपनी कमजोरियों को एकदूसरे पर पूर्ण रूप से प्रकट कर देनी चाहिए, ताकि भविष्य में उन्हें किसी सुनहले सपने के टूटने का दर्द न सहना पड़े और जो उन के दांपत्य जीवन में खरास पैदा न कर सकें.

विवाह के लिए उपयुक्त पात्र के चुनाव के मामले में मातापिता को अपनी समझ और लंबे अनुभव के आधार पर अपने विचार तो अवश्य प्रकट करने चाहिए, किंतु निर्णय भावी पतिपत्नी पर ही छोड़ देना चाहिए क्योंकि अंततः उन्हें ही साथ रहना है. ऐसा कर के न सिर्फ अपने बच्चों को मनपसंद जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता प्रदान कर के उन की नजरों में और भी बड़े हो जाएंगे, वरन आने वाले कल के लिए अपनी निश्चितता को भी सुरक्षित कर लेंगे.

एक बार फिर, विवाह के लिए उपयुक्त पात्र के चुनाव के समय मातापिता और स्वयं भावी पतिपत्नी को यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि दुनिया की सारी दौलत, शोहरत, सामाजिक प्रतिष्ठा, सुंदरता, चमचमाता कैरियर इत्यादि उस व्यक्ति के लिए उस के हाथ में रखी राख के समान तुच्छ है, जिस का दांपत्य जीवन सुखी नहीं हो.

उचित सुझाव

टिप्पणी 'रोजगार मौलिक अधिकार' (मुक्तविचार/जनवरी/द्वितीय) के अंतर्गत व्यक्त किए गए आप के विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूं.

यह सही है कि सरकार सभी पढ़ेलिखे लोगों को नौकरी नहीं दिला सकती और रोजगार का मतलब सिर्फ सरकारी नौकरी करना नहीं है. यह नागरिकों का कर्तव्य है कि वे अपने लिए उचित रोजगार की तलाश करें. यही बेरोजगारी जैसी समस्या के समाधान के लिए जरूरी भी है.

—जाकिर हुसैन 'लखना'

*

'रोजगार मौलिक अधिकार' के अंतर्गत प्रकाशित संपादकीय टिप्पणी सटीक है. इस में व्यक्त सार को झुठलाया नहीं जा सकता.

भारतीय संविधान के अनुसार सभी नागरिक अपनीअपनी प्रकृति व योग्यता के अनुसार देश के सभी भागों में काम करने के लिए स्वतंत्र हैं, अतः मौलिक अधिकारों की मांग ही अप्रासंगिक है. वास्तविकता तो यह है कि राजनीतिबाजों की स्वार्थपरता व ढुलमुल नीतियों के कारण ही भारत का सामान्य नागरिक कम से कम काम कर के अधिक से अधिक धन अर्जन करने व सुविधाएं भोगने का आदी हो गया है और उसे ये सारी सुविधाएं केवल सरकारी नौकरी में ही मिल सकती हैं. अतः इस मांग का अर्थ बिना ... किए मौजमस्ती करने भर से है.

—विद्यास...

*

समाधान कैसे होगा?

'फिर पहले खाने में' (मुक्तवि... जनवरी/द्वितीय) के अंतर्गत प्रस्तुत कि... विचार पंजाब की त्रासदी पर स्पष्ट प्र... डालते हैं.

यह एक सचाई है कि पंजाब में ... हुए युवकों के साथ ही हमारी सरकार ... भटक गई है. समस्या के समाधान के ना... की जाने वाली ऊलजलूल बातों से ... परिणाम की आशा नहीं की जा सकती. ... जिस तरह से निर्दोष व्यक्तियों, नेत... सामाजिक कार्यकर्ताओं, बुद्धिजीवियों ... पत्रकारों की हत्याएं की जा रही हैं, ... लगता है कि समाधान का रास्ता बहुत ... छूटता जा रहा है. आतंकवादी हरकतों ... विशेष वर्ग के लोगों को पलायन के लि... मजबूर किया जा रहा है. क्या ये लोग ... शासकों पर विश्वास कर सकेंगे?

उग्रवादियों तथा गिरगिट की तर... बदलने वाले सिमरनजीत सिंह मान से ... उम्मीद लगाई जा सकती है? कुल मिला... पंजाब का भविष्य एक बार फिर से अंधे... में जा छिपा है.

—राजेंद्र ...

*

सही तथ्य की तलाश में

'बलात्कार कब कितना' (मुक्तवि... जनवरी/द्वितीय) में व्यक्त किए गए वि...

...से सहमत नहीं हूं... रियादी से छीनी हुई चीज को वापस दिला ...ना या जो दर्द गुनाहगार ने फरियादी को ...या है, उस दर्द का एहसास गुनाहगार को ...रा देना ही इंसाफ कहा जा सकता है.

बलात्कार की शिकार महिलाओं की ...पनी त्रासदी होती है और इस त्रासदी को न ...मझना एक मानवीय भूल ही है. यदि इस ...लत में कोई युवती हादसे के पांच दिन बाद ...रिपोर्ट दर्ज कराती है तो किसी भी अदालत ...ो यह हक नहीं है कि वह उसे बदचलन ...रार दे. अपराधी अपने बचाव के लिए चाहे ...भी सुबूत पेश करे, उस के अपराध को ...म नहीं आंका जाना चाहिए और ऐसे ...मलों में अदालत को एक बार नहीं 10 बार ...चना चाहिए कि ऐसे अपराधियों को बच ...कलने का मौका न मिलने पाए.

लड़की जब थकहार जाए या जबरदस्ती ...उस की यौन पिपासा को भड़का कर उसे ...योग के लिए प्रेरित किया जाए तो यह भी ...लात्कार की ही श्रेणी में आता है. अब तो ...कानून बनाने वालों की मरजी पर है कि वे ...प्रश्न को भी पेचीदा बना दें.

—राधेश्याम मित्तल

*

...द्धांत' की हार का दुख

राजमोहन गांधी (जनवरी/द्वितीय) पर ...शित लेख न सिर्फ सारगर्भित था, बल्कि ...प्रश्नों को जन्म देने वाला भी था.

विश्व के सब से बड़े लोकतांत्रिक देश ...प्रधान मंत्री पद पर आरूढ़ व्यक्ति के ...व क्षेत्र में हिंसा, लूट और मात्र विजय श्री ...लिए सिद्धांतों की बलि चढ़ाना निहायत ही ...र्मनाक बात है. इस हालत में राजमोहन ...धी की पराजय से निस्संदेह नैतिकता, ...र्यों एवं सिद्धांतों पर करारी चोट लगी है.

राजमोहन गांधी की जीवन यात्रा, ...चय एवं कार्यक्षेत्र संबंधी जानकारी ...प्त रही.

—राजेश नेम

*

भेंटवार्ता 'अमेठी के चुनाव में धांधली है' (जनवरी/द्वितीय) के अंतर्गत
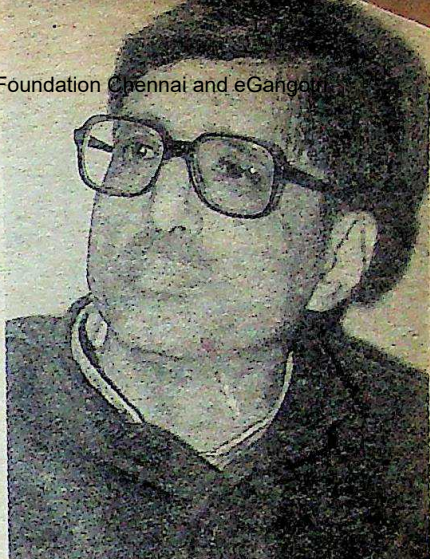
प्रकाशित राजमोहन गांधी के विचारों से बखूबी अवगत हुआ.

चुनावों में हार का स्वाद चखने वाले अमूमन सभी राजनीतिबाज इस तरह के आरोप लगाते हैं, इसलिए इस संबंध में व्यक्त राजमोहन गांधी के बयान को 'अनोखा' नहीं कहा जा सकता.

प्रश्न यह है कि छलकपट से परिपूर्ण भारतीय राजनीति में ऐसे लोग आते ही क्यों हैं, जिन्हें धांधली जैसे सामान्य राजनीति के गुर तक का पता नहीं है.

खैर, राजमोहन गांधी को भले ही चुनाव हार जाना पड़ा हो, किंतु संतोष की बात यह है कि उन का दल चुनाव जीत कर सत्ता में आ गया है. अब देखना यह है कि खुद सरकार में रह कर वह सरकारी धांधलियों को कितना रोक पाते हैं. वैसे, राजमोहन गांधी को यह तो मालूम ही होगा कि प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने बोफोर्स दलालों के नाम बताने का आश्वासन दे कर चुनाव जीता है, किंतु आज तक वह अपने उस कथन को स्पष्ट नहीं कर पाए हैं. मतदाताओं से झूठ बोल कर वोट हथियाना क्या धांधली नहीं है?

—दादू राम सलोने

*

नेपाल की राजनीति

लेख 'नेपाल में समाचार पत्रों पर सेंसर' (जनवरी/द्वितीय) पढ़ कर क्षोभ हुआ.

नेपाल में भारतीय समाचार पत्रों पर सेंसर लगा कर वहां के राजनीतिबाजों ने न सिर्फ अपने देश की जनता के ज्ञान के स्रोत पर अंकुश लगाया है, वरन जनसाधारण को लोकतांत्रिक भावनाओं से दूर रख कर उन की भावनाओं का शोषण भी करना शुरू कर दिया है. यह नेपाल की सड़ीगली राजनीति का प्रतीक नहीं है तो और क्या है?

नेपाल को समझना चाहिए कि इस तरह से ज्ञान पर प्रतिबंध लगाना कभी भी, किसी भी देश के लिए हितकर नहीं होता. अच्छा तो यही है कि नेपाल यह प्रतिबंध तुरंत हटा दे.

—कैलाश जैन

*

समस्या शहरीकरण की

लेख 'शहरीकरण की समस्या और समाधान' (जनवरी/द्वितीय) काफी प्रभावी लगा.

आज जिस रफ्तार से शहरीकरण हो रहा है, वह हमें बहुत कुछ सोचने को मजबूर करता है. दिन पर दिन शहरों की सीमाएं दूरदूर के गांवों से मिलती जा रही हैं, जिस के कारण एक विकट समस्या का जन्म हो रहा है. प्रशासन को इस मामले पर ध्यान देना ही चाहिए.

—संजय तिवारी

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो, पत्र इस पते पर भेजिए.

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

नई आशाएं

हाल के चुनावों में जनता ने राजनीतिबाजों को अच्छा सबक दिया और उन्हें जतला दिया कि वह उन से काफी... है.

अब जबकि नई सरकार सत्ता में आ... है, जनता में नई आशाओं का उदय हुआ... यों भी विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अ... मंत्रिमंडल में योग्य व्यक्तियों को स्थान दि... है, उन के द्वारा दो वरिष्ठ वैज्ञानिकों... मंत्रिपरिषद में शामिल करने के फैसले... बहुत स्वागत हुआ है.

हर सरकार की तरह विश्वनाथ प्र... सिंह की सरकार ने भी सत्तासीन होते... जनता को कुशल प्रशासन देने का ... किया, परंतु आज देश में जो समस्याएं हैं... वे कड़ी चुनौतियां हैं. कश्मीर प्रकरण, ... समस्या और राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद... विवाद जैसी विकट समस्याओं के अति... बेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार जैसी और... समस्याएं हैं. इन समस्याओं से सरकार... निबट पाएगी, यह आने वाला समय ही... सकता है.

—...

*

संतुलित सामग्री

लेख, 'लाटरी का समाजशास्त्र' (ज... वरी/प्रथम) ज्ञानवर्द्धक होने के ... प्रशंसनीय है. यह लेख उन सभी युवा... लिए पथ प्रदर्शक की भूमिका अदा करेगा... दिग्भ्रमित हो कर लाटरी के लालच में... गए हैं.

लेख की हर बात में सचाई है... लाटरी जैसे सरकारी जुए से सतर्क रहना... चाहिए.

—रूप कुमार ...

*

शब्दों का खेल

लेख, 'भाषा साहित्य का अ... शब्दालंकार: पालिंड्रोम' बेहद उप... लगा. ऐसे शब्दों के गठन में रचनाकार... भले ही समय लगे, पर शब्दों के इस ... पाठकों को कम उत्साह नहीं आएगा.

—यदुमणि कुमार...
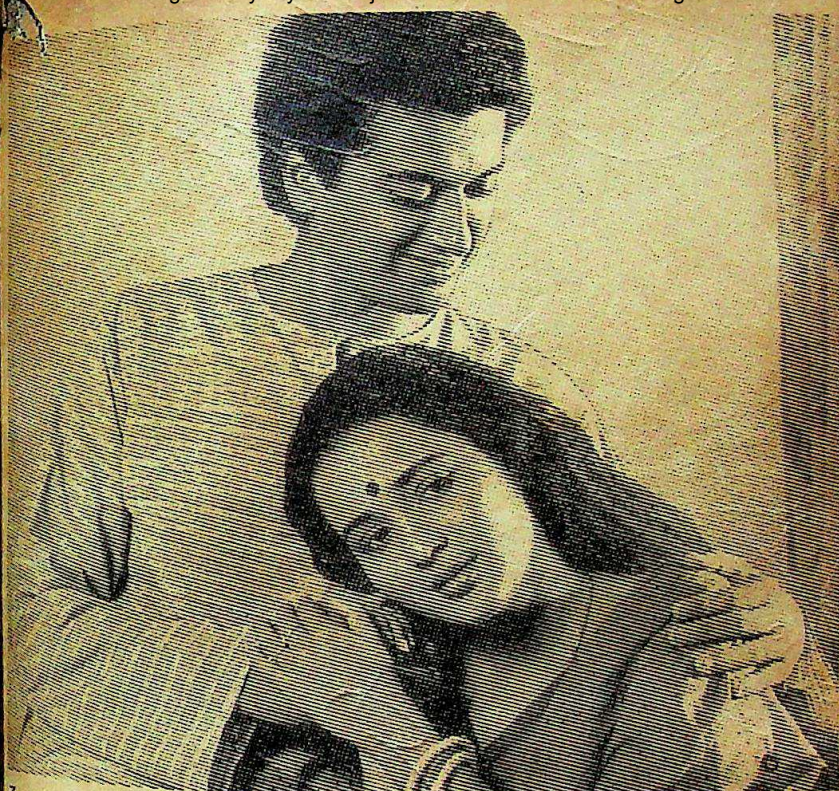
जब-जब दर्द सताए, तब कौन राहत दिलाए?

अमृतांजन, करीब सौ सालों से सिर दर्द, पीठ दर्द, मोंच और बदन के सभी दर्द से अमृतांजन राहत दिलाता आ रहा है. दर्द में आपका दोस्त, अमृतांजन – लगाते ही दर्द को उड़न छू कर देता है, आराम पहुँचाता है!

पेन बाम

अमृतांजन लिमिटेड

O&M 1985 HIN

क्या आपके रसोई घर की शोभा में झलकता है आपका व्यक्तित्व?
आपके रसोई घर की शोभा है आपके व्यक्तित्व का आईना. उजले, चमचमाते स्टेनलेस स्टील के बर्तनों में झलकती हैं आपकी ख़ूबियाँ. आप आधुनिक हैं, अपने घर पर गर्व करती हैं और अपने परिवार की सेहत का ख़याल रखती हैं.
कुछ और नहीं. सिर्फ स्वास्थ्यकर स्टेनलेस स्टील के बर्तन ही हैं आपकी पसंद. खाना पकाने, परोसने और रखने के लिए. हर जगह. हर मौक़े पर.
स्टेनलेस स्टील हर आधुनिक रसोई घर की शोभा बढ़ाता है. और हर उस जगह प्रयोग किया जाता है जहाँ स्वच्छता और ताज़गी को महत्व दिया जाता है—बड़े-बड़े पाँच-सितारा होटलों के रसोई घरों में. डेयरी, फूड प्रोसेसिंग और डिस्टिलरी जैसे उद्योगों में.
स्टेनलेस स्टील. जिस पर हर गृहिणी भरोसा करती है. अपने रसोई घर के सौंदर्य के लिए. अपने गौरव के लिए.
स्टेनलेस स्टील
उचित • उज्ज्वल • उत्तम
Released by Indian Stainless Steel Development Association.
ULKA-D-ISSDA-895-1 HIN

मार्च (द्वितीय) 1990 रु. 6.00
मुक्ता
टिहरी बांध परियोजना का राजनीतिक
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में
आत्म हत्या : फ़ैशन या

बस चाहिए केवल भरपूर केयो-कार्पिन केश
देख लीजिए, बालों का यह स्टाइल कैसे बनता है :
बालों में अच्छी तरह कंघी करके एक गुच्छ बाल लीजिए ।
समान माप के रंगीन ऊन के टुकड़ों में से एक लीजिए । बीच से बालों पर गांठ बांधिए ।
ऊन के टुकड़े से एक 'बो' बांधिए ।
पूरा सिर इसी प्रकार से रंगीन ऊन के फूलों से भर दीजिए
आपकी लाडली बिटिया के बालों का स्टाइल उसके बारे में बहुत कुछ कह देता है । लेकिन कोई भी स्टाइल तभी सुन्दर बनेगा जब सिर पर होंगे भरपूर बाल । और भरपूर बालों के लिए चाहिए केयो-कार्पिन हेयर ऑयल ।
केयो-कार्पिन हेयर ऑयल से बाल होते हैं घने, काले, रेशमी । खुश्की नहीं होती, बालों के सिरे भी नहीं फटते । हर रोज केयो-कार्पिन हेयर ऑयल लगाने से बालों का झड़ना रुक जाता है ।
अब अपनी लाडली बेटी के भरपूर केयो-कार्पिन केश को मनचाहे स्टाइल में सजाइए-सँवारिए । फिर देखिए उसका चंचल-चपल सुन्दर रूप!
स्वस्थ केश। सुन्दर केश। केयो-कार्पिन केश।
केयो-कार्पिन
भीनी-भीनी सुगंधयुक्त चिपचिपाहट-रहित केश तेल
A HAIR OIL OF DISTINCTION
ADWAVE/PET/3823/HN

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पाक्षिक

राजनीति

कथा साहित्य

कैरियर

खेल

विज्ञान

फिल्म, मनोरंजन

धारावाहिक उपन्यास

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय:
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए ... दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

मार्च (द्वितीय) 1990
अंक : 566

विविध

जानकारी

कविताएं

स्तंभ

अन्य कार्यालय : **अहमदाबाद** : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. **बंगलौर** : 302-बी. 'ए' क्वींस कार्नर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. **बंबई** : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. **कलकत्ता** : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्टीट, कलकत्ता-700016. **मद्रास** : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. **पटना** : 111, आशियाना टावर, एग्जिबिशन रोड, पटना-800001. **सिकंदराबाद** : 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116 पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'मुक्ता' के नाम से ई-3 झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.

मूल्य : यह प्रति 6.00 रु.
वार्षिक : 120 रु.
विदेशों में–
समुद्री डाक से : 225 रु. हवाई डाक से 550 रु.

सेहत से जुड़ी कुछ दिल की बातें.

ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड ऑइल.
स्वाद और सेहत का एकदम सही मेल.

ज़रा सोचिए आपके पति, हर समय अपने काम में जी जान से लगे हुए, रोज की उलझनों से कैसे निपटते रहते हैं. उनकी ये सारी मेहनत है आपके और आपके परिवार के लिए.

आप जानती हैं, इतनी मेहनत का दिल पर क्या असर होता है ? पर अब गौर करने की बात ये है कि आप क्या करें जिससे आपके पति हमेशा खुश और तन्दुरुस्त रहें.
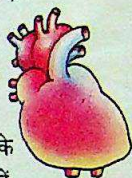
अच्छी सेहत के लिए अच्छा क्या है ?

वैज्ञानिक खोजबीन से ये पता चला है कि अनसैचुरेटिड फ़ैटी ऐसिड्ज़ - दोनों, मोनो और पॉली - कॉलस्ट्रॉल पर रोकथाम रखने में मदद करते हैं. ये, पकाने के बहुत से तेलों में होते हैं. पर, सभी तेलों में से सिर्फ़ सोया ऑइल में ही सही तालमेल है.

ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल में सैचुरेटिड फ़ैट्स कम और अनसैचुरेटिड फ़ैट्स ज़्यादा हैं. उसे बनाने वाले हैं ब्रिटैनिया, यानि ये १००% शुद्ध है. तभी तो इसमें पका खाना, दिल की खूबी को बनाए रखता है.... और आपके परिवार की सेहत को.

व्हाइटल सोया रिफ़ाइन्ड ऑइल

अनसैचुरेटिड फ़ैट्स	मोनोअनसैचुरेटिड फ़ैट्स	पॉलीअनसैचुरेटिड फ़ैट्स
८५%	२२.८%	५७.८%

वो स्वाद जो पूरे परिवार को भाए.

ज़्यादातर लोगों के मन में ये बात बैठ गई है कि खाने को अगर पौष्टिक बनाया जाए तो वो स्वादिष्ट नहीं रह पाएगा. ब्रिटैनिया को इस बात पर बहुत आश्चर्य होता है : व्हाइटल ऑइल इतना हल्का और शुध्द है कि इसका, खाने के स्वाभाविक स्वाद पर कोई असर नहीं पड़ता. व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल इस्तेमाल में भी किफ़ायती है.

ब्रिटैनिया
व्हाइटल
शुद्ध रिफ़ाइन्ड कुकिंग ऑइल
"दिल की बात"

O&M2992HIN

जी हां. सभी केल्विनेटर रेफ्रिजरेटरों में विश्वविख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर लगा होता है। यह जल्दी ठंडा करता है और उस से भी जल्दी बर्फ़ बनाता है। वोल्टेज के तीव्र उतार चढ़ाव सहने करते हुए, बिजली की कम खपत करता है। सच तो यह है कि विश्व भर को निर्यात किया जाने वाला यह एक मात्र भारतीय रेफ्रिजरेटर कम्प्रैसर है।

केल्विनेटर की उत्कृष्ट विशेषताएं :

★ पूर्णतः स्टील निर्माण तथा सुदृढ़ लाइनर
★ ज़्यादा स्टोरेज के लिए ज्यादा शेल्फें
★ सब से अधिक, आठ मॉडल, नौ आकर्षक रंगों में उपलब्ध

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर लाखों संतुष्ट परिवारो के संगी साथी।
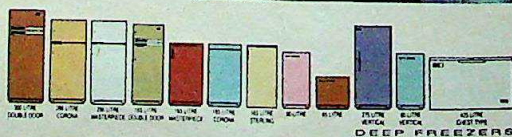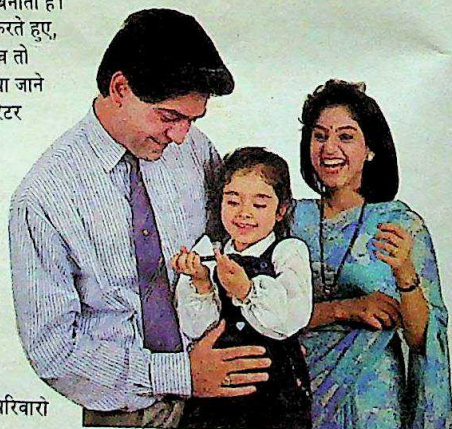
घर में लाइए खुशियां घर में लाइए

बिक्री एव सर्विस के लिए एक्सपो मशीनरी लिमिटेड प्रगति टावर, 26 राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110008.

Mutual 5070d/HN

CLARION C-BCPC-1

कैन्थँराइडिन ऐसा एकमात्र लाइट हेयर ऑयल जो आपको देता है दोनों ही खूबियों का खज़ाना

कैन्थँराइडिन हेयर ऑयल आपके बालों को देता है मन को खुश रखनेवाला स्वास्थ्य और स्टाइल। इस तेल की हर बूँद में है कैन्थँरिस का अद्वितीय गुण, जो क्लियोपैट्रा के ज़माने से ही बालों की देखभाल का एक प्राकृतिक उपादान जाना-माना जाता है।

नियमित रूप से कैन्थँराइडिन लगाने से बालों की जड़ें तो मज़बूत होती ही हैं साथ ही बाल अधिक घने, काले और स्वस्थ होते हैं। यह तेल हल्का है, चिपचिपाहट-रहित है, इसीलिए तो कैन्थँराइडिन के बालों को मनचाहे स्टाइल में सजाया-सँवारा जा सकता है।

कैन्थँराइडिन
लाइट हेयर ऑयल
स्वस्थ बालों के लिए,
सजे-सँवरे बालों के लिए।

CLARION C-BCPC-1

बेंगाल केमिकल
(भारत सरकार का एक उद्यम)

नवीन धारा.
आपके लिए शुद्ध तेल. नये पैक में.
२२-५० रुपये प्रति लिटर.
धारा
रिफाइन्ड वेजिटेबल तेल
भारतीय नारियों के लिए नॅशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एन डी डी बी) प्रस्तुत करते हैं-स्वच्छ, सुनहरा, शुद्ध पकाने का रिफाइंड वेजिटेबल तेल-धारा, जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एक लिटर के टैम्पर प्रूफ़ पैक में उपलब्ध है.
-ले-जाने में आसान, निकालने में आसान और रखने में आसान. स्वास्थ्यवर्धक,
दिष्ट भोजन आपके परिवार के लिए बना सकते हैं.
पकाने का ऐसा गुणकारी तेल, जिसकी आपको सदा तलाश थी. मदर डेरी के सभी फल एवं सब्ज़ी की दुकानों और आपके किराने की दुकानों पर आसानी से उपलब्ध.
प्रारम्भिक दाम २२-५० रुपये-सभी करों के साथ.
वाजिब दाम
रु. २२-५०
प्रति लिटर
उठायें
सीधा
काटें
धारा
रिफाइन्ड वेजिटेबल तेल
र्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त टैम्पर प्रूफ़ पैक में.

संपादकीय

मार्च (द्वितीय) 1990

मुक्त विचार

साझा सरकारें

केंद्र के बाद मणिपुर में और फिर राजस्थान व गुजरात में गैर कांग्रेसी साझा सरकार का आसानी से गठन हो गया है व बिहार में भी साझा सरकारों के बनने के आसार हैं. आम जनता को साझा सरकारों से बहुत डर लगता है, क्योंकि वे बाहर से ही अस्थिर नजर आती है.

साझा सरकारों के साथ कठिनाई यह होती है कि कई बार परस्पर विरोधी विचारों वाले लोग एक साथ मिल जाते हैं और कई मामलों में उन के रुख बहुत कट्टर होते हैं. वे कब झगड़ बैठें, इस का भरोसा नहीं रहता.
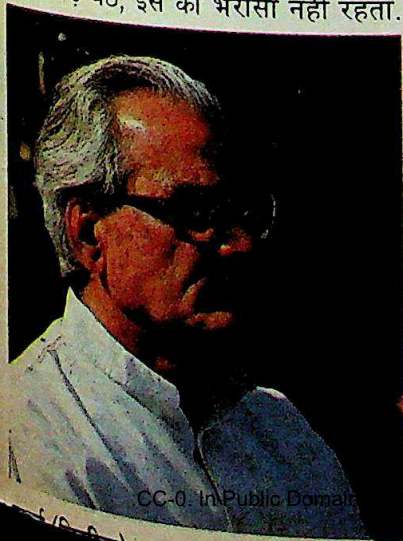
लेकिन पिछले 40 वर्षों से लगभग एकछत्र राज करने वाली कांग्रेस में भी हमेशा विभिन्न विचारों के लोग रहे हैं और उन के विवाद भी कम नहीं रहे. राज्य सरकारों की तो वहां हालत बहुत बुरी रही है और यदि कोई मुख्य मंत्री पांच साल पूरे कर लेता था तो उसे एक आश्चर्य समझा जाता था.

कांग्रेसी सरकारें एकदलीय होते हुए भी इस कदर आपसी कलह की शिकार थीं कि मुख्य मंत्रियों का आधा समय विधायकों को खुश करने में ही लगता था. उन सरकारों में अलगअलग विचारों वाले ही नहीं, सत्ता के अलगअलग दावेदार भी थे.

अब बन रही साझा सरकारों का लाभ यह है कि वे एकदूसरे राज्य से संतुलित होती रहेंगी. यदि वामपंथी दल केंद्र में जनता दल को समर्थन दे रहे हैं तो बदले में उन्हें पश्चिम बंगाल व केरल में निश्चितता से राज करने का अवसर मिल रहा है. भारतीय जनता पार्टी को मध्य प्रदेश और हिमाचल के अतिरिक्त एकदो राज्य और मिल सकते हैं.

जनता दल के आपसी गुटों का संतुलन भी इसी तरह बने रहने की आशा है. गुट के कुछ लोगों को केंद्र में यदि कम स्थान मिलें तो राज्यों में उस की भरपाई हो सकेगी. उत्तर प्रदेश की जनता दल सरकार को अभी से वह स्वतंत्रता प्राप्त है जो नारायण दत्त तिवारी जैसे वरिष्ठ नेता तक को कांग्रेसी शासन में कभी नसीब नहीं हुई.

साझा सरकारों की संस्कृति पनपने में समय लगेगा. पर देश के हित के लिए यह सब से अच्छी प्रणाली है जिस में किसी एक का एकाधिकार न रहेगा और निर्णय बहुमत के आधार पर होंगे. यह डर अवश्य है कि अल्पमत वाले लोग रूठ कर बाहर जाने की धमकी दें पर ऐसा तो कांग्रेस शासन में भी होता था.

साझा सरकारों का सब से बड़ा लाभ यह रहेगा कि इन में बेईमानी काफी कम होगी. एक दल दूसरे पर सरकार में रह कर जो अंकुश रख सकता है, वह बाहर रह कर नहीं. उम्मीद यही है कि साझा सरकारों के होते बोफोर्सों का मत्ता कटा रहेगा.

पाकिस्तान और कशमीर

कशमीर के प्रश्न को ले कर भारत और पाकिस्तान में तनाव अभी भी गंभीर स्तर पर है. कशमीर में उग्रवादियों की निरंतर सफलता ने पाकिस्तान के कट्टरपंथियों को बल दिया है और वे पूरे पाकिस्तान में भारत विरोधी लहर भड़का रहे हैं.

आम जनता को किसी एक ऐसे मामले में उलझाए रखना, जिस के आसानी से हल होने की संभावना न हो, कूटनीति का सब से अच्छा गुर है. पाकिस्तान को अपने अस्तित्व के लिए यह एक आवश्यकता नजर आती है, क्योंकि उस का जन्म ही भारत के हिंदू विरोध के कारण हुआ था. भारत विरोध पाकिस्तान के शासकों और कट्टरपंथियों के लिए सब से सुलभ अफीम की तरह है.

पर जैसे अफीम का नशा शुरू में आनंद देता है और बाद में शरीर को खोखला कर देता है, वैसे ही पाकिस्तान को यह भारत विरोध आतंरिक रूप से कमजोर कर रहा है. वहां आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के स्थान पर देश को कशमीर और भारत के मुसलमानों की चिंता रहती है.

इतने वर्ष यदि पाकिस्तान का काम चला है तो उस की चतुर विदेशनीति और भारत की मूर्खतापूर्ण नीतियों के कारण. भारत
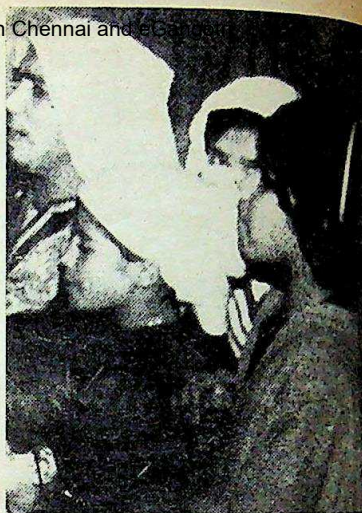
ने आरंभ से ही रूस का पल्ला जो एक बार पकड़ लिया तो ऐसा पकड़ा कि हम रूसियों से भी ज्यादा रूसभक्त हो गए. बदले में पाकिस्तान ने अमरीका की ओर रुख किया. रूस ने तो भारत को नाममात्र की आर्थिक सहायता दी पर अमरीका ने पाकिस्तान को हर तरह से मालामाल कर दिया.

इसी मुफ्त के माल पर पाकिस्तान के 40 वर्ष निकल गए. वहां का जीवन स्तर भारत के मुकाबले अधिक बुरा नहीं रहा. उद्योगों के अभाव में भी वहां विदेशों से माल आता रहा.

अब शायद यह स्थिति बदले और पाकिस्तान को भारत विरोध महंगा पड़ना शुरू हो. अमरीका के लिए पाकिस्तान का महत्त्व कम होता जा रहा है. उसे रूस पर नजर रखने के लिए पाकिस्तानी अड्डों की आवश्यकता नहीं है. उसे यह भी डर है कि पाकिस्तान सहित अन्य मुसलिम देश अमरीकी हथियारों का इस्तेमाल रूस के मुसलिम क्षेत्रों में अशांति फैलाने में न करें.

अगर पाकिस्तान को अमरीकी सहायता मिलनी बंद हो गई तो कशमीर का जिहाद उन के लिए भारी पड़ेगा. उन्हें अपनी खुद की कमाई इन दंगों को भड़काने में लगानी पड़ेगी, जबकि उन की कमाई ऐसी कोई खास नहीं है. कशमीर विवाद पाकिस्तान को मानसिक

संतोष दे सकता है, कोई आर्थिक [illegible] नहीं भारत के लिए भी कशमीर एक महंगा सौदा है, जबकि इस पर होने वाला खर्च पूरे भारत पर बांटा जा सकता है. पाकिस्तान को तो यह छोटी जनसंख्या से वसूल करना पड़ेगा और वह उन का पेट काटे बिना संभव नहीं होगा.

जबरन वेतन वृद्धियां

नियोजकों से अधिक वेतन दिला कर हमारे देश की केंद्र व राज्य सरकारें ही नहीं, छोटेबड़े न्यायालय भी यह समझते हैं कि उन्होंने सामाजिक हित का महान कार्य किया है. यह भूल जाते हैं कि वेतन वृद्धि का बोझ अंततः नागरिकों को ही स्वयं ढोना पड़ता है और सरकारों व न्यायालयों का दखल देश में एक ऐसे वर्ग को पैदा कर रहा है जो कम काम कर अधिक वेतन पाने का अधिकारी होता जा रहा है.

इस बारे में एक नया फैसला गोवा उच्च न्यायालय का हुआ है जिस ने गोवा के अंगरेजी माध्यम के माध्यमिक व प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों का वेतन सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के समकक्ष करने का आदेश दिया है. यह बात जगजाहिर है कि अब देश भर में सरकारी स्कूलों में न केवल वेतन अधिक है, वहां काम न करने की भी आजादी है और ट्यूशन करने, परचे बताने और अंक बढ़ाने व भ्रष्टाचार की भी खुली छूट है.

गैर सरकारी स्कूलों में वेतन कम है पर फिर भी वहां का स्तर अच्छा है, अध्यापकों में अनुशासन है और भ्रष्टाचार नहीं के बराबर है. असल में सरकारी स्कूलों के अध्यापकों और सरकार के शिक्षा विभाग के लिए ये स्कूल भारी सिरदर्द हैं, क्योंकि लोग जब सरकारी स्कूलों की तुलना इन स्कूलों से करते हैं तो उन्हें नीचा देखना पड़ता है.

अतः सरकार तरहतरह के कानून बना कर गैरसरकारी स्कूलों में मजदूर दादागिरी पैदा करती रहती है ताकि किसी तरह इन स्कूलों का प्रबंध खराब हो जाए. उच्च न्यायालय का यह फैसला इन्हीं प्रयासों का [illegible] है.

अब इन गैरसरकारी स्कूलों के पास अतिरिक्त वेतन देने के लिए फीस बढ़ाने के अलावा कोई चारा नहीं. वेतन बढ़ जाने से स्तर में सुधार होगा, इस की कोई गारंटी नहीं क्योंकि अतिरिक्त वेतन उन्हीं लोगों को मिलेगा जो पहले वास्तव में कम वेतन के लायक थे. अभिभावकों पर जो अतिरिक्त बोझ पड़ेगा उस को समाज के हर अंग को सहना पड़ेगा.

दूसरी तरफ अधिक वेतन पाने वाले ये अध्यापक और निरंकुश हो जाएंगे. अतिरिक्त वेतन इन्हें प्रबंधकों से लड़ने में मजबूती देगा और इन का अंत विवादों में होगा. निश्चित है कि इस से स्तर गिरेगा.

किसी भी समाज में वेतन मांग और पूर्ति के आधार पर तय होना चाहिए. योग्य व्यक्ति अधिक वेतन पाने का अधिकारी है और कम योग्य को कम वेतन मिलना चाहिए, क्योंकि समाज को उस से कम लाभ होता है. एक जैसे वेतन का सिद्धांत योग्य व्यक्ति को हतोत्साहित कर देता है, समाज को जड़ बना देता है.

जहां मांग और पूर्ति के सिद्धांत को छोड़ कर विशेष वर्ग को नौकरी की सुरक्षा व अधिक वेतन दे दिए जाएं वहां एक तरह की सामंतवादी स्थिति पैदा हो जाती है. वहां वेतन काम पर नहीं, नौकरी पा जाने की दुर्घटना पर निर्भर होते हैं और एक बार दिए जाने पर छीने नहीं जा सकते.

पर्यावरण की मार

पर्यावरण के मुद्दे का इस्तेमाल देश के उद्योग और व्यवसाय को लूटने के लिए किया जाएगा. इस का आधार बनाना शुरू कर दिया गया है. केंद्र व राज्य सरकारों ने पर्यावरण खराब करने पर भारी दंड देने वाले कानून तो पहले ही बना रखे हैं, अब ऐसी अदालतों का गठन किया जा रहा है जहां सजाएं मूंगफलियों की तरह बिना सोचेसमझे दी जा सकें.

अनेक अन्य मामलों की तरह राजनीति-

बाज (नए भी, पुराने भी) व नौकरशाह देश की हर मुसीबत के लिए नागरिक क्षेत्र के उद्योगों को 'बलि का बकरा' बनाते हैं. पर्यावरण के लिए भी सब से पहले इन्हें पकड़ने का इरादा है. उन अदालतों का स्तर उच्च न्यायालय के बराबर होगा जिस का अर्थ होगा कि इन में अपनी सफाई प्रस्तुत करने के लिए ही हजारों रुपए वकीलों को देना. फिर अपीलें कम होंगी और मामले की सुनवाई के दिन यदि अभियुक्त को कोई और काम पड़ गया तो भी छूट न मिलेगी.

पर्यावरण के मामले में सब से बड़े दोषी सरकारें और नगर निकाय हैं. इन्होंने ही पैसा कमाने की होड़ में एक तरफ जंगल काटे हैं तो दूसरी ओर शहरी गंद को सही ठिकाने लगाने के उपाए नहीं ढूंढ़े. दोनों ही जगह नौकरशाह अपनी जेबें भरने के लिए आते हैं, उन्हें न देश की लंबी समस्याओं की चिंता है और न ही उन्हें हल करने की अकल. जब समस्या उग्र होती है, वे कानून बना कर उन लोगों पर लागू कर देते हैं जिस के पास बचाव के साधन न हों.

देश भर में सड़कों का जाल सरकार ने बिछाया. लाखों एकड़ भूमि सड़कों के लिए ली. ठीक है, यह आवश्यक था. पर क्या इन के किनारे पेड़ लगाना आवश्यक न था. सड़कों को हराभरा करना सब से सरल था क्योंकि सड़क के किनारे पेड़ों की देखभाल संभव थी. इसी प्रकार रेल पटरियों के किनारे पेड़ लगाना आसान था पर किया नहीं गया.

सरकारी भवनों और आवास क्षेत्रों की देश में भरमार है. उन में कितने पेड़ लगाए जाते हैं? सरकारी उद्योगों से प्रदूषण सब से ज्यादा फैलता है, ज़बकि वहां न पैसे की कमी होती है न आदमियों की. सरकारों ने ही जंगलों को काटने के ठेके अंधाधुंध दिए हैं. असल दोषी सरकार है.

पर सरकार पर मुकदमे कौन चलाएगा? आज तक काम पूरा न कर पाने पर किस नौकरशाह को सजा तो दूर नौकरी से भी कब निकाला गया है. किस राजनीतिबाज ने गलती होने पर त्यागपत्र दिया है. किस पर मुकदमा चलाया गया है.

पर्यावरण अदालत बनाने का अर्थ है यह है कि सरकार नागरिकों को एक और चंगुल में फांस रही है. पर्यावरण के नाम पर रिश्वतें ऐसे ही बटोरी जाएंगी जैसे अब तक समाजवाद, जन हित, सामाजिक हितों के नाम पर बटोरी जाती रही हैं.

अगर सरकार में वास्तव में दम है तो वह उन अदालतों में सरकारी विभागों पर नागरिकों द्वारा मुकदमा चलाए जा सकने के प्रावधान भी रखे. तभी पता चलेगा कि पर्यावरण को जेब भरने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है या देश हित के लिए.

लोकतंत्र की खटखटाहट

पूर्वी यूरोप और सोवियत रूस में भी जब लोकतंत्र आ पहुंचा तो नेपाल जैसे देश आखिर कैसे बच सकते हैं. आश्चर्य तो यही है कि इतने वर्ष वह भारत से घिरे होने के बावजूद तानाशाही राजतंत्र व्यवस्था कैसे निभा सका. अब वहां लोकतंत्र की मांग करने का आंदोलन तेज हो चुका है और नई जनता दल सरकार का अपरोक्ष समर्थन होने के कारण राजा बीरेंद्र काफी दिन तक लोकतंत्र को दरवाजे के बाहर रख पाएंगे, ऐसा नहीं लगता.

राजा बीरेंद्र ने नेपाल को राजकीय तानाशाही के चंगुल के दायरों से बांध रखा है

भारत की कांग्रेस सरकार को इस पर आपत्ति न थी, क्योंकि इंदिरा गांधी और राजीव गांधी स्वयं भी दिखावे के लोकतंत्र समर्थक थे. वे चाहते थे कि नेपाल में लोकतंत्र न आए, क्योंकि फिर नए नेताओं से नए समीकरण बनाने होंगे.

भारतीय नेता, जो दक्षिण अफ्रीका में काले लोगों को मताधिकार न मिलने पर हर रोज चिंतित होते थे, नेपाल के मामले में मुंह सिए रहते थे. नेपाल का राजघराना इसे भारत सरकार का अपना स्वार्थ समझता था और बजाए एहसानमंद होने के और अधिक गुर्राता था. अगर राजतंत्र से नेपाल में खुशहाली हो रही होती, शिक्षा का प्रसार हो रहा होता तो बात दूसरी थी. राजनीतिक उथलपुथल न होने के बावजूद नेपाली प्रगति बहुत धीमी है. न वहां उद्योगधंधे पनप रहे हैं, न पर्यटन.

ऐसा नहीं है कि नेपाली दूसरों से कम हैं. जो कौम बहादुर होती है, वह काम करने में भी तेज होती है. नेपाली सैनिकों का लोहा अंगरेज भी मानते थे और आज भी कितने ही देशों में उन की मांग है. उन की निष्ठा व परिश्रम का स्तर आम भारतीय की तुलना में अच्छा ही है.

इस पर भी यदि नेपाली उन्नति नहीं कर पा रहा तो उस का जिम्मेदार उस का गलासड़ा तंत्र है, जिस ने हर तरह के नए विचारों के लिए दरवाजे बंद कर रखे हैं. राजा वीरेंद्र जनता को अशिक्षित ही रखना चाहते हैं, क्योंकि तभी अंधविश्वासों के सहारे राजा को भगवान तुल्य माना जा सकता है. इसी कारण वह स्वयं तरहतरह के धार्मिक कामों में अगुआ बने रहते हैं.

किसी भी देश की उन्नति अब सिर्फ शांति व्यवस्था पर निर्भर नहीं रह सकती. उस के साथ वहां नए विचारों की हवा भी चलनी चाहिए. चाहे उस से थोड़ी उथलपुथल ही क्यों न हो. नए विचारों से ही नए उद्योग पनप सकते हैं और कोई भी राजतंत्र ऐसा जोखिम नहीं लेना चाहता. नेपाल का राजतंत्र तो एक कदम आगे है, क्योंकि उसे प्राचीन हिंदू व्यवस्था में विश्वास है जहां पुरोहित और राजा के अतिरिक्त समाज में सब दोयम दर्जे के नागरिक हैं.

नेपाल के राजा या उन की कठपुतली राष्ट्रीय पंचायत कानून व व्यवस्था के नाम पर कुछ दिन लोकतंत्र को दबा कर रख सकती है पर ज्यादा दिन नहीं. आज किसी भी देश के नागरिक को विदेशी सरकार ही नहीं उस की खुद की भी सरकार शारीरिक या मानसिक कैद में रख नहीं सकती. ●

बचपन में आप में से कइयों ने 'कोड़ा जमाल' खेल खेला होगा. इस में कई बच्चे एक गोल घेरा बना कर बैठ जाते हैं. एक लड़का खड़ा हो कर इस गोल

रे का चक्कर लगता रहता है. उस के हाथ में किसी कपड़े को गांठ दे कर बनाया आ एक कोड़ा होता है. गोल घेरे का चक्कर लगाते हुए वह बोलता जाता है, कोड़ा जमाल खां, पीछे देखे मार खा.' यानी जिस किसी ने पीछे देखने की शिश की उस की पीठ पर धम्म से एक कोड़ा.

यह कोड़ा फिर धीरे से किसी के पीठ पीछे रख दिया जाता . कोड़ा अपने पीछे पा कर वह उठ खड़ा होता है. गोल घेरे का चक्कर लगाने लगता है. उसी तरह बोलते हुए, 'कोड़ा जमाल खां, पीछे देख मार खा.' पहले वाला लड़का दूसरे की पकड़ से बचता एक चक्कर लगा कर उस के द्वारा खाली किए गए स्थान पर बैठ जाता है. बगैर किसी खास नतीजे के यह खेल इसी तरह चलता रहता है. यानी इस में न किसी को जीता माना जा सकता है और न किसी को हारा ही कहा जा सकता है.

अब के बच्चे तो शायद ही 'कोड़ा जमाल' खेलते हों, पर दिल्ली स्थित राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में पिछले कई वर्षों से यह खेल बदस्तूर खेला जा रहा है. देश में राष्ट्रीय स्तर की अपने ढंग की इकलौती समझे जाने वाली इस नाट्य शिक्षण संस्था को घेर कर बैठे निदेशक, अध्यक्ष, संस्था के सदस्य, अध्यापक, छात्र, केंद्रीय सांस्कृतिक मंत्रालय के अधिकारी आदि में से कोई न कोई असंतोष का कोड़ा लिए नारे लगाता, कीचड़ उछालता, दूसरों पर आरोपों की बौछार करता आप को हमेशा दौड़ता मिलेगा. यह दौड़ कभी निदेशक व अध्यक्ष के बीच, अध्यापक व निदेशक के बीच, मंत्रालय के अधिकारियों व निदेशक के बीच तथा अक्सर छात्रों व निदेशक के बीच दिखाई देती है.

फिल्म प्रशिक्षण संस्थान, पुणे के बाद राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली ने फिल्मी दुनिया को अनेक बेहतरीन कलाकार दिए हैं. इसी क्रम में सेल्यूलाइड पर उतरने का हसीन सपना ले कर प्रतिवर्ष समूचे भारत से छात्रछात्राएं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में प्रवेश लेते हैं. पर यहां जारी 'कोड़ा जमाल' का खेल उन के सपनों को साकार करने में कितना सहयोग देता है?
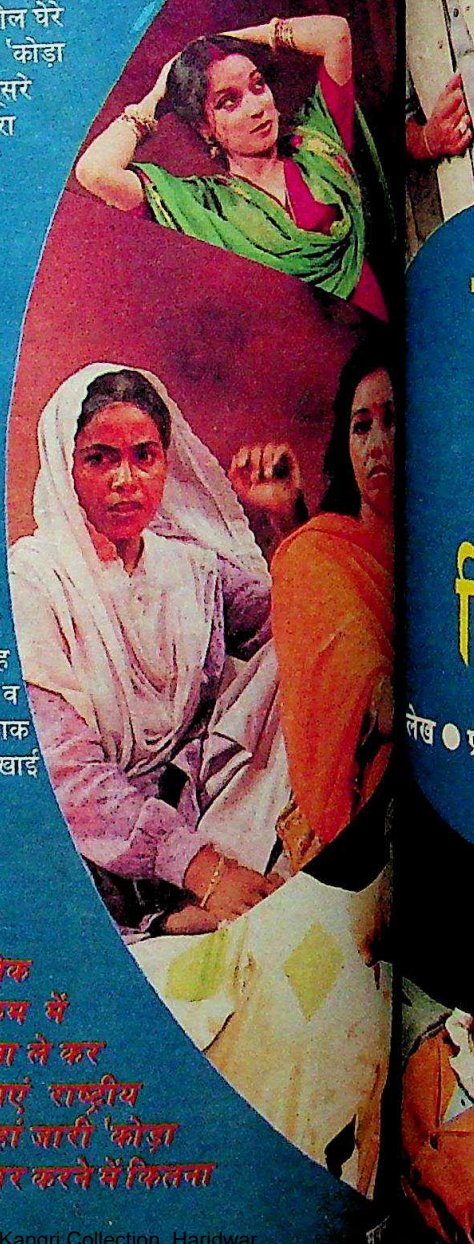
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

लेख ● प्रदीप कुमार श्रीवास्तव

यों राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में खेले जा रहे इस खेल में अधिकतर असंतोष का कोड़ा फटकारता व नारे लगाता छात्र समुदाय ही दौड़ता दिखाई देता है. इस की एक वजह यह भी है कि जब कभी निदेशक, अध्यक्ष, अध्यापक या किसी अन्य भागीदार ने अपने पीछे असंतोष का कोड़ा रखा महसूस किया तो उसे चुपके से अपने बगल में बैठे छात्रों के पीछे खिसका दिया. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में खेले जा रहे इस खेल का भी कभी कोई नतीजा या हल नहीं निकला है.

यों खेल का शोर, हल्लाहंगामा आप को रहरह कर उस समय सुनाई देता है जब हड़तालों, धरनों या बंद के दौर चलते हैं. पर एक करोड़ 20 लाख का वार्षिक बजट व प्रति छात्र पर औसतन 30 लाख रुपए खर्च करने वाले इस राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रांगण में ऊपर से दिखाई देने वाली शांति के दौरान भी अगर आप आएं तो असंतोष का कोड़ा ले कर एकदूसरे के पीछे दौड़ते लोग मिल जाएंगे. भीतर का यह शोर, हंगामा तो प्रांगण से निकल कर दिल्ली के बाहर उस समय पहुंचता है जब छात्र उठ खड़े होते हैं. जाहिर है उन में जवानी का जोश है, ऊर्जा है, आक्रोश है. आवाज में दम है. इसलिए उन का चिल्लाना भी दूर तक सुनाई देता है.

इधर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में उठे विवाद का जो स्वर बाहर सुनाई दे रहा है उस में एक नई बात यह है कि इस बार असंतोष को ले कर विद्यालय का कर्मचारी संगठन उठ खड़ा हुआ है. विद्यालय के 31 वर्षों के
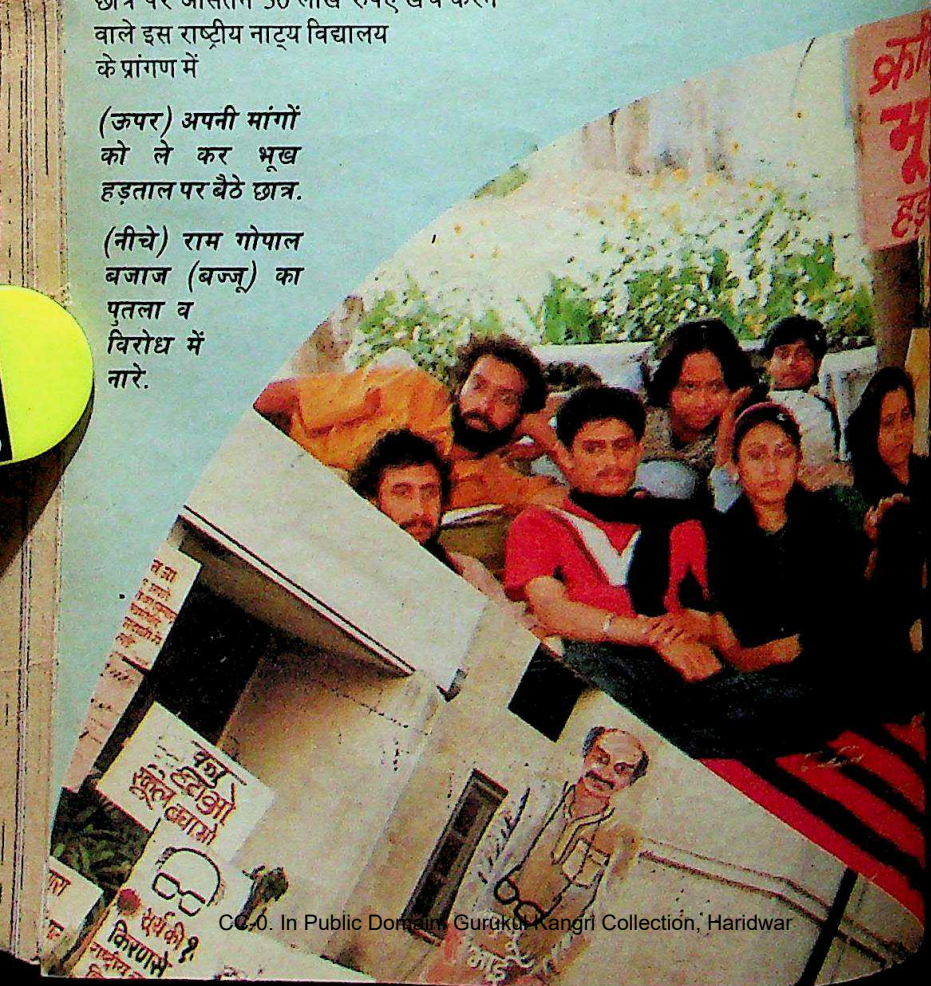
(ऊपर) अपनी मांगों को ले कर भूख हड़ताल पर बैठे छात्र.

(नीचे) राम गोपाल बजाज (बज्जू) का पुतला व विरोध में नारे.
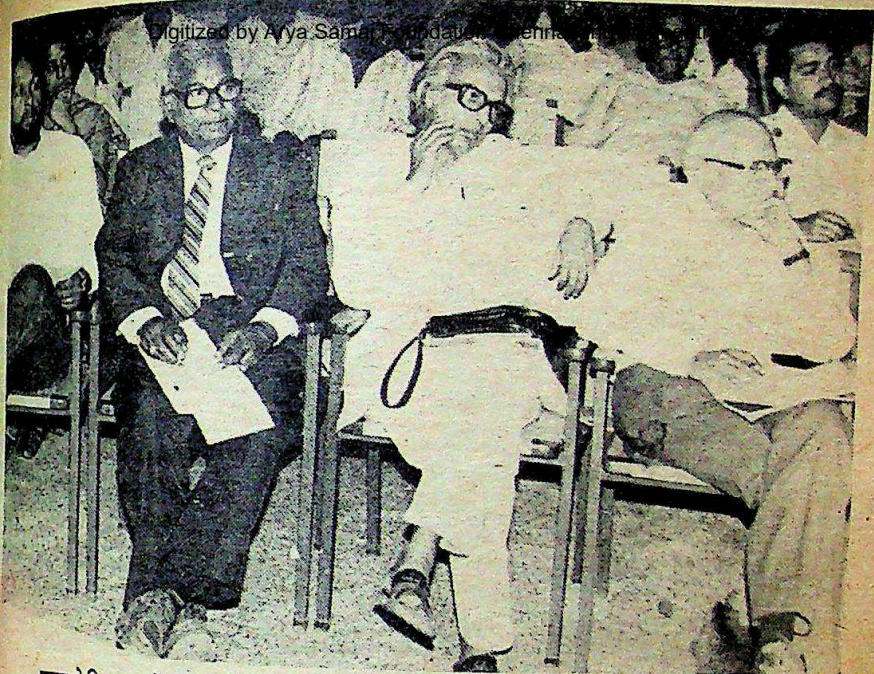
एक सेमिनार में राम गोपाल बजाज व कीर्ति जैन : राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के दो शक्तिशाली बिंदु.

इतिहास में पहली बार वे हड़ताल पर जाने के लिए उद्यत दिखाई दे रहे हैं. यों असंतोष उन में पहले भी था. 1981 से ले कर अब तक कई बार वे अपने मांगपत्र विद्यालय के निदेशक व उस की सोसाइटी को दे चुके हैं. पर उन मांगों को ले कर गोल घेरे में दौड़ने की प्रक्रिया में वे पहली बार सामने आए हैं.

कर्मचारियों के अध्यक्ष विजयपाल वशिष्ठ का कहना है कि हम चूंकि चुप थे इसलिए हमारा वजूद माना ही नहीं जा रहा था. हमारे लोगों में तीनचौथाई लोग 'एडहाक' (तदर्थ) पर नौकरी कर रहे हैं. कुछ को नौकरी करते 12-14 साल हो गए पर अभी भी वे तदर्थ आधार पर ही नियुक्त हैं. और भी कई मांगें हैं. जैसे आवास की, समयानुसार पदोन्नति देने की, यूनियन को मान्यता देने की. पर इन में से एक महत्त्वपूर्ण मांग यह है कि विद्यालय में अस्थायी निदेशक की जगह स्थायी निदेशक नियुक्त किया जाए और यह स्थायी निदेशक का पद वर्तमान निदेशक (कीर्ति जैन) को कदापि न मिले.

कीर्ति जैन पिछले दो साल से विद्यालय की निदेशक हैं. इस बार उन की नियुक्ति स्थायी करने की भी कोशिश की जा रही थी. कर्मचारियों ने अपना विरोध काली पट्टी बांध कर शुरू किया था और हड़ताल पर जाने की योजना बना रहे थे. मगर इन के असंतोष के साथसाथ अब छात्र भी खड़े हो गए हैं. इन की मांगें कई हैं. पर उन का उद्देश्य भी कीर्ति जैन को कुरसी से हटाने का ही है.

किंतु इस समय जो हो रहा है वह इस संस्थान के लिए आम बात है. समय के साथ केवल पात्रों का परिवर्तन ही होता रहा है. आइए पहले देखते हैं यहां 'कोड़ा जमाल' कब से शुरू हुआ. इस के बाद उन वजहों पर नजर दौड़ाएंगे जिन्होंने असंतोष की गांठों को खींच कर और पक्का कर दिया है.

आज से 31 साल पहले 1959 में राष्ट्रीय रंगमंच के विकास के लिए इस संस्था को स्थापित करने की जो बात सोची गई थी

उस के पीछे तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की व्यक्तिगत रुचि भी प्रमुख आधार थी. उस दौरान बंबई के रंगकर्मी इब्राहिम अलकाजी का नाम काफी धूम मचाए था. विदेशों से वह नाट्य संबंधी प्रशिक्षण भी ले कर भारत आए थे. इसलिए संस्था को संभालने व चलाने की पहली जिम्मेदारी उन्हीं को सौंपी गई.

अलकाजी ने इस जिम्मेदारी को कुछ वर्षों तक बखूबी निभाया भी. उन के कार्यकाल में विद्यालय व नाट्य कला दोनों का काफी विकास हुआ. नई विधाएं सामने लाई गईं. योग्य कलाकार तैयार किए गए. दिल्ली के कोपरनिकस मार्ग पर स्थित रवींद्र भवन की तीसरी मंजिल पर छोटी सी जगह में स्थापित यह संस्था बढ़तेबढ़ते 1975 में बहावलपुर हाउस के लंबेचौड़े भवन में पहुंच गई. इसी समय इसे स्वायत्तशासी संस्था का स्वरूप भी मिला.

किंतु अलकाजी के लिए इसी समय से कुछ मुसीबतें भी सामने आने लगीं. अलकाजी ने अपने निजी निर्णय के आधार पर जो प्रयोग करने शुरू किए उसे कुछ लोगों ने पांव फैलाने जैसा समझा, विशेषकर सांस्कृतिक मंत्रालय के अधिकारियों ने अपने मंत्रालय में अलकाजी के बढ़े पांवों की चुभन महसूस

शून्य सत्र

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में इस वर्ष प्रथम वर्ष की कोई कक्षा नहीं चली क्योंकि इस वर्ष विद्यालय में प्रथम वर्ष का कोई छात्र या छात्रा थी ही नहीं. इस सत्र को शून्य सत्र घोषित कर के पिछले वर्ष दाखिले बंद कर दिए गए थे.

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय हर वर्ष अपने यहां प्रवेश के लिए अखबारों में विज्ञापन देता है. विज्ञापन के आधार पर देश भर से छात्रछात्राएं यहां प्रवेश पाने के लिए अर्जी भेजते हैं. अर्जियों पर विचार करने के बाद उन में से छांटे हुए छात्रों को दिल्ली बुलाया जाता है. नाट्य विद्यालय द्वारा गठित चयन मंडल उन का साक्षात्कार लेता है और उन की योग्यता व साक्षात्कार में उन के निष्पादन के आधार पर प्रवेश पाने के लिए चयन करता है.

इस वर्ष भी अखबारों में हर वर्ष की तरह प्रवेश संबंधी विज्ञापन दिया गया था. इंटरव्यू बोर्ड भी गठित कर लिया गया. पर अर्जियां आने के बावजूद सहसा सत्र को शून्य सत्र घोषित करने का निर्णय ले लिया गया. ऐसा क्यों हुआ? यह रहस्य है. पर कुछ लोगों का कहना है पिछले वर्ष हड़ताल के बाद निदेशिका कीर्ति जैन डर गई थीं. हड़ताल के बाद ही विद्यालय को बंद कर देना, होस्टल खाली करा लेना व इस सत्र को शून्य घोषित करना उन की भय की वजह से किया गया निर्णय है.

प्रथम वर्ष न होने से इस वर्ष छात्रों की संख्या कम हो जाएगी. वैसे जब इस निर्णय को सार्वजनिक रूप से घोषित किया गया तो उस समय तृतीय वर्ष के छात्रों को पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार त्रिवेंद्रम में कवलम पन्नीकर द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में भाग लेने के लिए भेज दिया गया था. हो सकता था वे यहां रहते तो शून्य सत्र की घोषणा से भड़क उठते.

इस वर्ष के लिए गठित इंटरव्यू बोर्ड के एक सदस्य ने आश्चर्य प्रकट करते हुए बताया, "सब कुछ बहुत ही रहस्यात्मक लगा. एक दिन मुझे पैनल में रखने की चिट्ठी मिली. कुछ दिनों बाद मुझ से कहा गया कि साक्षात्कार की तिथियां आगे बढ़ा दी गई हैं फिर मुझे मौखिक रूप से बताया गया कि विद्यालय में इस वर्ष कोई नया दाखिला नहीं होगा."

शून्य सत्र का अर्थ यह हुआ कि इस वर्ष राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने देश भर के 25 चुनी हुई प्रतिभाओं को शिक्षा देने से इनकार कर दिया है.

करनी शुरू कर दी और यहीं से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में 'कोड़ा जमाल' खेल का आरंभ हो गया.

निदेशक इब्राहिम अलकाजी व मंत्रालय के अधिकारियों के बीच टकराव बढ़ता गया. राजनीतिक सूझबूझ से काम लेते हुए असंतोष का कोड़ा छात्रों के पीछे रख दिया गया. निदेशक के विरुद्ध आवाज उठनी शुरू हो गई. हड़तालें हुईं. नारे बुलंद किए गए. 1977 में इन दबावों के चलते अंततः इब्राहिम अलकाजी को निदेशक पद से त्यागपत्र दे देना पड़ा.

इब्राहिम अलकाजी के बाद राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में निदेशकों का परिवर्तन तेजी से होने लगा. बी.बी. कारंथ आए. फिर बी.एम.शाह, मोहन महर्षि, रतन थियम और अब हैं कीर्ति जैन. बीच में लंबेलंबे समय तक निदेशक की कुरसी खाली भी रही. अच्छे लोग बाहर से यहां आने को तैयार नहीं थे. यहां के लोगों को कुरसी तक पहुंचाने में कई अड़ंगे लग जाते थे. इन अड़ंगों के बावजूद सारी मान्यताओं को ताक पर रख कर कुछ समय के लिए रामगोपाल बजाज तथा रामबाबू शर्मा को निदेशक पद की जिम्मेदारी भी सौंपी गई. रामगोपाल बजाज अलकाजी के निजी सचिव रह चुके थे. इसी तरह विद्यालय में योग प्रशिक्षक से निदेशक बने रामबाबू शर्मा को नाटकों से दूरदूर तक लेनादेना नहीं था. इसलिए उन के विरुद्ध जिस तरह असंतोष भड़का, उन को पद से हटना या हटाना ही अधिक श्रेयस्कर समझा गया. बहरहाल इस सारी अवधि में वह खेल बदस्तूर जारी रहा जो अलकाजी के उत्तरकाल में शुरू हुआ था.

बी.बी. कारंथ के समय में कुछ राजनीतिक व कुछ अराजक तत्त्वों ने विद्यालय में प्रवेश पा लिया. उन पर शिक्षक पदों पर राजनीतिक नियुक्तियां करने का भी आरोप लगाया गया था. कहते हैं, अध्यापक समूह में गुटबाजी व विद्यालय में सक्रिय राजनीति का प्रवेश बी.बी. कारंथ के समय में ही हुआ. उन दिनों विद्यालय द्वारा खेले जाने वाले नाटकों को ले कर भी विवाद खड़ा हो जाता था.

बी.बी. कारंथ के बाद निदेशक की कुरसी काफी समय तक खाली रही. इस के बाद इस कुरसी पर बी.एम. शाह को बैठाया गया. विद्यालय के छात्र रह चुके बी.एम. शाह की निर्देशन के क्षेत्र में तो गहरी पैठ थी, पर प्रशासन व राजनीति में वह थोड़ा कच्चे थे. इसी दौरान इंदिरा गांधी तक अपनी पहुंच का फायदा उठा कर विद्यालय की पुरानी अध्यापिका शांता गांधी विद्यालय की अध्यक्षा बन गई थीं.

दौड़ के दो दावेदार

बी.एम. शाह के जमाने में असली दौड़ निदेशक व अध्यक्ष के बीच हुई थी. दोनों ही को एकदूसरे के प्रति सख्त शिकायत थी. एकदूसरे पर आरोप लगाने में दोनों में से कोई पीछे नहीं था. शांता गांधी ने निदेशक को नजरअंदाज कर विद्यालय के कामकाज में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था. वह अंततः अपने हित में छात्रों का इस्तेमाल करने में कामयाब भी रहीं.

बी.एम.शाह व शांता गांधी के बीच हुई इस दौड़ में बी.एम.शाह को ही बीच में धम्म से बैठ जाना पड़ा क्योंकि ढांचे, व्यवस्था, जरूरी आवश्यकताओं को ले कर छात्रों द्वारा उठाई गई आवाज व उन की हड़तालों ने बी.एम. शाह को पस्त कर दिया था.

बी.एम. शाह ने इस्तीफा तो नहीं दिया. पर लंबा अवकाश जरूर ले लिया था. उन के व शांता गांधी के बीच का झगड़ा अदालत तक पहुंच गया था.

बी.एम. शाह व शांता गांधी के हटने के बाद भी निदेशक व अध्यक्ष के बीच का टकराव बरकरार रहा. इस बार बी.एम. शाह की जगह निदेशक की कुरसी पर मोहन महर्षि थे तथा अध्यक्ष के पद पर शांता गांधी के स्थान पर सुरेश अवस्थी आए थे. टकराव का मुद्दा वही था. खेल वही था. खेल के नियम भी वही थे. मोहन महर्षि को भी अपनी पूरी

अवधि में छात्रों की हड़ताल व विरोध का सामना करना पड़ा था. इसी दौरान वेतन को ले कर एक बार अध्यापक भी उठ खड़े हुए थे.

रतनथियम को भी बहुत जलालत के साथ अपने पद से हटना पड़ा था. उन के समय में छात्रों की जबरदस्त हड़ताल हुई थी. उस हड़ताल के पीछे रतनथियम का विरोध कर रहे अभिनय के अध्यापक रामगोपाल बजाज का हाथ बताया जाता है. रामगोपाल बजाज विद्यालय में लौह पुरुष के रूप में उभरे थे. रतनथियम ने जातेजाते रामगोपाल बजाज के खिलाफ आरोपों की एक लंबी सूची सोसाइटी को सौंप दी थी. इन आरोपों की जांच कराने के लिए व रामगोपाल बजाज को हटाने के लिए जो छात्र आंदोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहे थे, उन में वे छात्र भी थे जिन का रतनथियम के विरुद्ध रामगोपाल बजाज ने उपयोग किया था.

पिछले वर्ष की हड़ताल के दौरान संजय मिश्रा नाम के एक छात्र ने इस संवाददाता को बताया था कि रतनथियम के समय में हुए आंदोलन का असली मुद्दा वही था और बजाज ने उसे मुख्य मोहरे के रूप में इस्तेमाल किया था. "मेरी हाजिरी कम होने के कारण मुझे निकाल दिया गया था. रामगोपाल बजाज ने मुझे बुला कर कहा कि संजय तुम्हारे आने की उम्मीद नहीं है. फिर उन्होंने समस्या के निदान के लिए सुझाव दिया. उन का कहना था कि तुम लोग निदेशक (रतनथियम) से सेमेस्टर की अवधि बढ़ा

जहां सभी लाचार हों

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सभी उच्च अधिकारी अपने पद की सुखसुविधाओं का इस्तेमाल करने के लिए पूरी तरह सक्षम हैं. पर विद्यालय की समस्याओं से निबटने या छात्र, कर्मचारी व अध्यापक की शिकायतों को दूर करने में सभी अपनी अक्षमता जाहिर करते मिलेंगे.

यदि आप निदेशक कीर्ति जैन से मिलें तो वह आप को बताएंगी, "मैं अपने से कुछ कर नहीं सकती. कोई भी निर्णय सोसाइटी के हाथ में होता है. मेरा काम तो बस विद्यालय की समस्याओं या आप की शिकायतों को सोसाइटी (जनरलबाडी) के सामने रख देना है. अब वे न सुनें तो मैं क्या कर सकती हूं?"

विद्यालय की अध्यक्षा विजया मेहता आप द्वारा कही सारी समस्याओं व वहां की बिगड़ती स्थिति को मंजूर तो करेंगी पर उन की दलील रहेगी, 'मैं तो उन्हीं चीजों के बारे में सोच सकती हूं या निर्णय ले सकती हूं जो निदेशक मुझे बतलाएगा. मेरा दिन भर का कार्यक्रम यहां आने पर (विजया मेहता बंबई में रहती हैं) इस तरह निर्धारित कर दिया जाता है कि मुझे खुद नहीं पता रहता है कि मुझे कब आना और कब जाना है. किनकिन लोगों से मिलना है. मुझे यहां आने पर ही वह टाइमटेबल दिया जाता है. मुझे तो निदेशक के द्वारा यहां कि स्थिति की असलियत तक नहीं पता लगने दी जाती है.'

मंत्रालय के अधिकारियों का दो टूक उत्तर मिलेगा, 'भई, हम इतनी दूर से वहां क्या हो रहा है, कैसे जान सकते हैं. सोसाइटी हमें जब तक किसी चीज के बारे में इत्तला नहीं करेगी तब तक हम आप की बात कैसे मान सकते हैं.'

कर्मचारियों के अध्यक्ष विजयपाल वशिष्ठ के अनुसार पिछले कई सालों से यहां दिखाई दे रहा है कि यहां न किसी को फैसला लेने का अधिकार है और न ही किसी का कुछ निजी दायित्व समझा जाता है. 31 साल हो गए पर इस संस्थान का अपना कोई 'बाई ला' या कायदाकानून नहीं है. वे चाहते भी नहीं. उन्हें तो विदेश यात्राओं व सुखसुविधाओं से मतलब है. दायित्वहीन सुखसुविधाएं.

की मांग करो तो तुम्हारी हाजिरी ठीक हो जाएगी." उस साल आंदोलन समेस्टर की अवधि को बढ़ाने के लिए ही किया गया था.

फिल्मी माहौल

कुल मिला कर लंबीचौड़ी रेखाएं खींच कर बनाया गया राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय इस तरह धीरेधीरे चूंचूं का मुरब्बा बनता गया विद्यालय में तूतू मैंमैं, गुटबाजी, राजनीतिक उठापटक तो आम बात हो ही गई, सेल्यूलाइड पर उतरने का सपना ले कर आए छात्रछात्राओं ने विद्यालय के वातावरण को फिल्मी रंग देना भी शुरू कर दिया. उन्मुक्त व्यवहार, रोमांस, शाम के धुंधलके में पेड़ों तले या दीवारों से सटे बतियाते नायकनायिकाएं विद्यालय के आम दृश्य बन गए. फिल्मों व दूरदर्शन पर नायकनायिका बनने के भविष्य को धाराशायी होते देख कर कुछ लड़कों व लड़कियों ने असली जीवन में प्रतिनायक व प्रतिनायिका की भूमिका निभानी शुरू कर दी. मुड़ेतुड़े कालर, बिखरे बाल, धुंए के छल्ले उड़ाते उदासीन चेहरे, चरस, गांजा पीनेपिलाने का दौर सभी कुछ विद्यालय की रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल होने लगा.

मई 1983 में प्रसन्ना के निर्देशन में खेले जाने वाले 'चंद्रमा सिंह उर्फ चमक' नामक नाटक के रिहर्सल के अवसर पर छः विद्यार्थियों को अनुशासनहीनता के आरोप में निष्कासित कर दिया गया था. उन पर आरोप था कि वे रिहर्सल के समय पर शराब पी कर आए थे और रिहर्सल के दौरान उन के पांव लड़खड़ा रहे थे. इन छः विद्यार्थियों में दो लड़के व चार लड़कियां थीं. लड़कों में एक छात्र संघ का तत्कालीन सचिव तथा छात्राओं में एक खुद निर्देशक प्रसन्ना की पत्नी थी.

फिल्मों में सामान्यतः दो या अधिक से अधिक तीन कोणीय प्रेम की कहानियां होती हैं. पर इस विद्यालय में चलने वाले प्रेम किस्सों में यह प्रेम पंचकोणीय या बहुकोणीय स्थिति लेने लगा. ऐसी ही एक कहानी का अंत काफी दर्दनाक हुआ था. उस का शोर कई दिनों तक रहरह कर गूंजता रहा.

असम की एक छात्रा नवेदिता द्वारा की गई आत्महत्या के इस मामले ने काफी तूफान खड़ा किया था. इस मामले से संबंधित अनेक कहानियां भी सामने आईं. पर हर कहानी का पहला व आखिरी सिरा प्रेम कांड पर ही खत्म हुआ.

उस दौरान यह भी पता चला कि बहुकोणीय इस प्रेम कहानी में कुछ कोण संस्थान के अध्यापकों के साथ भी बने थे. वैसे इस समय विद्यालय की छात्राएं स्वीकार करती हैं कि विद्यालय के कुछ अध्यापक गुरुदक्षिणा में प्रेमदान लेने के लिए अधिक लालायित दिखाई देते हैं. नाटकों में भूमिका देने से ले कर विद्यालय आई फिल्मी हस्तियों से वे उन्हीं छात्राओं का परिचय कराते हैं जिन पर इन की और जिन की इन पर 'विशेष अनुकंपा' रहती है.

खोखली होती उपयोगिता :

31 वर्षों के जीवन में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के (शुरु के 10-12 साल छोड़ कर) हमेशा समस्याग्रस्त, विवादग्रस्त, संकटग्रस्त बने रहने की ये सारी वजहें वैसी ही हैं जिन्हें आजकल किसी भी शिक्षण संस्थान या विश्वविद्यालय पर सरसरी निगाह दौड़ा कर ढूंढ़ा जा सकता है. पर इस संस्थान के बरबाद होने की खास वजह इस की खोखली होती जा रही उपयोगिता ही है.

केंद्रीय सांस्कृतिक मंत्रालय से संबंधित इस संस्थान की कोई ऐसी गतिविधि नहीं है जो इस देश की राजनीति को किसी तरह प्रभावित करती हो और न ही इस में कोई ऐसे आर्थिक आकर्षण हैं जो अपनी ओर दौड़ लगाने के लिए लुभावना आमंत्रण देते हों. इन सब के बावजूद यह संस्थान चर्चित हुआ है तो इस का एकमात्र कारण यही है कि पूरे देश में लाखों युवकयुवतियां दिलों में पल रहे रजतपट के सुनहरे सपनों को साकार करने के लिए इसे लुभावनी सीढ़ी मान बैठे हैं. ओम शिव पुरी, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, राज बब्बर, सई परांजपे, अनिता कंवर आदि विद्यालय से निकले छात्रों को फिल्मी लाइन में
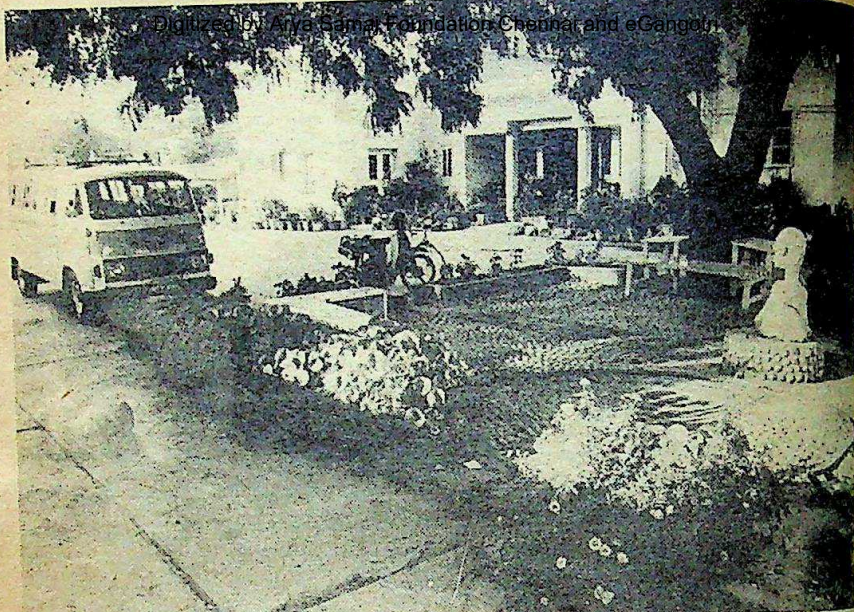
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय : यहां होता है 'कोड़ा जमाल' का खेल.

मिली सफलता ने उन के इस सपने को हवा दी.

इस से पहले इस सीढ़ी का काम पूना स्थित फिल्म संस्थान किया करता था. कुछ वर्षों पहले वहां अभिनय प्रशिक्षण बंद कर दिया गया और यह काम पूरी तरह राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय को सौंप दिया गया. नतीजा यह हुआ कि जो भीड़ पहले पूना की ओर भागती थी वह अब दिल्ली में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ओर भागने लगी. उधर दूरदर्शन ने भी जब अपना रूप बदला, प्रायोजित धारावाहिकों की बहार आई तो रंगकर्मियों को दूरदर्शन में पैसा, शोहरत व ग्लैमर दिखने लगा.

पर मोहभंग की स्थिति उस समय सामने आती है जब वे तीन वर्ष का कोर्स पूरा कर के सड़क पर आते हैं. एकाध को फिल्म व दूरदर्शन में सफलता मिलती है. बाकी के हाथ निराशा ही लगती है. पहले मोहभंग की यह स्थिति विद्यालय से निकलने के बाद आती थी, अब इसे वे संस्थान में प्रवेश लेते ही महसूस करने लगते हैं. हताशा, निराशा की स्थिति संस्थान में चल रहे 'कोड़ा जमा[ल' का] खेल को देख कर और बढ़ जाती है. अंततोगत्वा वे भी इस खेल में शामिल हो जाते हैं और जो सपना भविष्य के लिए देख[ते] थे उसे वर्तमान में ही पूरा करने की कोशि[श] करने लगते हैं.

दरअसल सच पूछा जाए तो राष्ट्री[य] नाट्य विद्यालय की अपनी कोई व्यवस्था [या] उस का अपना ढांचा है ही नहीं. छात्रों से आ[प] बात कीजिए तो उन की प्रतिक्रियाओं [की] वास्तविकता व गंभीरता को आप खुद महसू[स] करेंगे. बिगड़े हुए बच्चों की सी जिंदगी जी[ने] वाले ये छात्र जिस दोषपूर्ण प्रणाली व ढांचे [की] कमियों की ओर इशारा करते हैं उन को [...] के अध्यापक व अवकाशप्राप्त निदेशक [...] एकांत में स्वीकार करते हैं.

पिछले वर्ष मार्च में जो हड़ताल हुई [...] उस दौरान कई छात्रछात्राओं से [...] संवाददाता ने बातचीत की थी. मामला [...] खैराद्दीन नामक एक छात्र के फेल होने [...] कर उठा था. पर उन का आक्रोश विद्याल[य] [illegible] से कम था.

रामगोपाल बजाज : दो धारी तलवार

बज्जू भैया यानी रिपर्टरी के अध्यक्ष रामगोपाल बजाज, को यह नाम पता नहीं छात्रों ने दिया है या उन के परिचितों द्वारा पुकारा जाने वाला आत्मीय संबोधन है. पर रामगोपाल बजाज को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सभी लोग प्रायः इसी नाम से जानते हैं.

बज्जू भैया का नाता अभी हाल ही में इस नाट्य विद्यालय से टूटा है. कुछ दिनों पहले तक वह इस विद्यालय में अभिनय के प्रोफेसर थे और इस से जुड़ी रिपर्टरी के कार्यकारी अध्यक्ष. अब वह केवल रिपर्टरी के अध्यक्ष रह गए हैं. पिछले एक दशक से रामगोपाल बजाज की छवि एक लौह पुरुष की बनी हुई है. विद्यालय के छात्र रह चुके रामगोपाल बजाज जो चाहते थे वही विद्यालय में होता था. कहा जाता है कि निदेशकों को लाने व हटाने में मुख्य हाथ इन्हीं का होता था. इन के अब तक के अंतिम शिकार रतनथियम थे. वर्तमान निदेशक कीर्ति जैन को कुरसी पर बैठाने और वहां स्थापित करने में बज्जू भैया का ही दिमाग बताया जाता है.

रतनथियम इन के शिकार तो जरूर बने. पर जातेजाते उन्होंने बज्जू भैया पर लगाए कई आरोपों की एक सूची सोसाइटी को सौंप दी थी. ये आरोप बज्जू भैया के लिए गले का कांटा बन गए हैं. पिछले वर्ष इन आरोपों की जांच कराने के मामले को ले कर छात्रों ने हड़ताल छेड़ दी. कीर्ति जैन की काफी छीछालेदर हुई, क्योंकि उन के लिए एक तरफ कुआं व दूसरी ओर खाई वाला मामला बन गया था. पर बज्जू भैया का प्रभाव केवल निदेशक तक ही नहीं बल्कि सोसाइटी व मंत्रालय तक बताया जाता है.

आरोपों की जांच के लिए गिरीश कर्नाड की अध्यक्षता में एक समिति छात्रों के दबाव के कारण जरूर बना दी गई. पर समिति की जांच का क्या हुआ, यह एक साल बीतने के बाद भी किसी को नहीं पता चला. गिरीश कर्नाड कुछ दिनों पहले सोसाइटी की सदस्यता से इस्तीफा दे चुके हैं. इस से बज्जू भैया के प्रभाव की एक बार फिर सब के सामने पुष्टि हो चुकी है. जब बज्जू भैया अभिनय के अध्यापक थे तो छात्रों की इन के विरुद्ध बहुत सी शिकायतें थीं. दांवपेच में माहिर बज्जू भैया को कक्षा पढ़ाने से कोई मतलब नहीं था, यह सारे छात्र कहते थे. संकाय में गुटबाजी भी बज्जू भैया की वजह से ही थी. दूसरे अध्यापक विरोध नहीं करते? छात्रों का कहना था कि हर अध्यापक की कमजोर नस बज्जू भैया के हाथ में होती है. यों अगर आप इन से मिलें तो सौम्य, हंसमुख और अत्यंत मृदुल स्वभाव वाले बज्जू भैया पर लगाए गए सभी आरोप आप को झूठे लगेंगे. पर यह कठोर सच्चाई है कि विद्यालय को इस स्थिति तक पहुंचाने में सब से बड़ा जिम्मेदार इन्हीं को माना जाता है.

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की हड़ताल में बाहरी प्रमुख रंगकर्मी भी गाहेबगाहे हस्तक्षेप कर मामला सुलझाने की कोशिश करते रहे हैं. हबीब तनवीर को भी इस प्रयास में विद्यार्थियों का समर्थन लेते कई बार देखा गया. पर बज्जू भैया पर उंगली किसी ने नहीं उठाई. इस बारे में विद्यालय की एक छात्रा की टिप्पणी थी, "दिल्ली में चूंकि नाटक की दुनिया बहुत ही छोटी है इसलिए यहां सभी मिलजुल कर रहने के लिए मजबूर हैं."

कहते हैं रिपर्टरी तक सीमित कर देने के बाद भी रामगोपाल बजाज का हस्तक्षेप नाट्य विद्यालय में बना हुआ है. बी.एम. शाह के बाद कुछ दिनों के लिए वह शांता गांधी द्वारा कार्यकारी निदेशक भी बनवाए गए थे. पर उस के बाद निदेशक की कुरसी पर बैठने का उन का सपना, सपना ही रहा. उन के सपने को तोड़ने में रतनथियम का ही हाथ था. खुद बज्जू भैया कहते हैं, "मेरे ऊपर आज आरोप नहीं होते तो मैं विद्यालय का निदेशक होता." ●

"सच पूछिए तो इस संस्थान की सब से बड़ी कमजोरी यह है कि यहां कोई 'सिस्टम' है ही नहीं. जो जैसा चाहता है वैसा ही इसे बना देता है. कभीकभी कुछ लोग इतने शक्तिशाली हो जाते हैं कि वे तथा 'सिस्टम' एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं." तीसरे वर्ष के छात्र सीताराम की यह प्रतिक्रिया थी.

एक सरकारी अधिकारी ने, जिन्होंने 1967 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से डिगरी ली थी, पुराने समय से वर्तमान समय की तुलना करते हुए बताया कि अलकाजी के समय में अनुशासन का एक बहुत बड़ा कारण यह था कि छात्रों को रचनात्मक कार्य में व्यस्त रखा जाता था. पाठ तैयार कर के दिए जाते थे. सेमिनार होते थे. अलकाजी उन समस्याओं को समझाते और उन्हें दूर करने का उपाय बतलाते थे, जो नाटक के समय सामने आ सकती हैं. हर छात्र के व्यक्तिगत विकास पर ध्यान दिया जाता था. अब तो वह सब है ही नहीं. कुछ लोगों ने तो इसे आमदनी का जरिया बना डाला है.

"पाठ्य सामग्री तैयार कर के देने की बात तो दूर, कायदे से कक्षाएं तक नहीं ली जाती हैं." द्वितीय वर्ष की छात्रा रूपल की टिप्पणी थी, "शिक्षक महीनों तक छुट्टी पर रहते हैं क्योंकि उन के पास बाहर का काम काफी रहता है. दोनों ओर से वे कमाते हैं. यहां आप को न विद्यालय की कोई समय सारिणी मिलेगी और न ही छात्रों के पास कोई लिखित पाठ्यक्रम. शिक्षकों की उपलब्धता के आधार पर कक्षाएं आयोजित की जाती हैं और अपनी सुविधा के अनुसार विषय पढ़ाए जाते हैं."

ये तो हुईं विद्यालय के ढांचे, शिक्षा के स्तर व शिक्षकों के व्यवहार की बातें. नाटक के तकनीकी पहलुओं व अभिनय के विषय में यहां से मिलने वाली जानकारी के संबंध में तीसरे वर्ष के छात्र पवन कुमार का कहना था, "विश्व रंगमंच पर पिछले कुछ वर्षों में विविध प्रयोग हुए हैं. पर भारत में इस विधा को बढ़ाने में; उस का संवर्धन करने में, उसे नया आयाम देने में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

"राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में न तो कोई समय सारिणी मिलेगी और न ही छात्रों के पास कोई लिखित पाठ्यक्रम. शिक्षकों की उपलब्धता के आधार पर कक्षाएं आयोजित की जाती हैं और अपनी सुविधा के अनुसार विषय पढ़ाए जाते हैं?"

का योगदान शून्य ही कहा जा सकता है हालांकि यह उस का उद्देश्य माना गया था.

"बस बाहर से कुछ अतिथि नाट्य निर्देशकों को बुला कर, उन से विदेशी नाटक करवा कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ ली जाती है. नाटक में छात्र बेहतर काम तो कर लेता है पर अभिनय नहीं सीख पाता. संवाद, भाषण, हावभाव आदि अभिनय की विधाओं से अपरिचित रह जाता है. विद्यालय, विद्यालय न हो कर बस रंगमंच बन गया है. हम स्कूल में कुछ सीखने आते हैं और फिर जो नाटक किए जाते हैं उन में सब को सभी भूमिकाएं तो मिल नहीं जातीं.

ऊपर जो बातें बतलाई गई हैं, वे सब आज से 10 वर्ष पूर्व भी आप किसी छात्र या छात्रा से पूछते तो यही बतलाता, आज भी किसी से पूछें तो यही बताएगा. जाहिर है यहां विद्यालय में कोई ठोस व्यवस्था कायम नहीं हुई, यहां आने वाले छात्रछात्राओं के भविष्य को ले कर कोई ठोस योजना नहीं बनाई गई, गुटबाजी व व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर नहीं किया गया, सोसाइटी, निदेशक व मंत्रालय में तालमेल बैठाने की कोशिश नहीं की गई. हड़ताल, धरनों व विवादों का यह खेल बिना नतीजे के साल दर साल खेला जाता रहा और जो विद्यालय करोड़ों रुपए खर्च कर के भी छात्रछात्राओं के भविष्य से खिलवाड़ करने वाला संस्थान तथा ऐयाशी का अड्डा बन कर रह जाए तो उस को बंद कर देना ही श्रेयस्कर कहा जा सकता है.

लेख • उग्रसेन गोस्वामी

गंगा तू अभी भी मैली

यों तो आज की उद्योगप्रधान शहरी सभ्यता ने जिस भी नदी के किनारे डेरा डाला, उस का हुलिया ही बिगाड़ कर दम लिया. किंतु कलकत्ता में हुगली का हुलिया कुछ अधिक ही बिगड़ चुका है. गोमुख के ग्लेशियर से ढाई हजार किलोमीटर का फासला तय कर के आने

राजीव सरकार ने 1985 में गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए खूब ढोल पीटा तथा 250 करोड़ रुपए खर्च कर गंगा केंद्रीय प्राधिकरण का गठन भी किया. पर प्राधिकरण ने दोएक अधकचरी योजनाएं चला कर गंगा को उस के हाल पर छोड़ दिया और खुद अपने भाइयों की जमात में खड़ा हो गया.
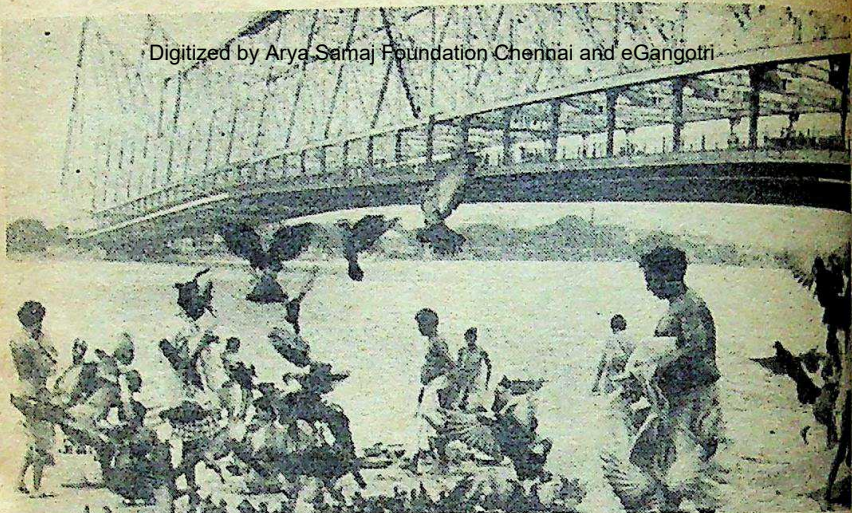
हुगली नदी जहां गंदगी हटा कर लोग स्नान करते हैं और अपने को धन्य मानते हैं.

वाले गंगा प्रवाह का यह हुगली नामक गलियारा भारत के एक अत्यधिक औद्योगीकृत क्षेत्र में से हो कर गुजरता है और इस के तटवर्ती क्षेत्रों में पश्चिम बंगाल की आधी से भी अधिक जनता बसती है. ऐसे में इसे कितना कलुष अपने कंठ में उतारना पड़ता होगा, कहने की आवश्यकता नहीं है.

पर कलकत्ता एवं हावड़ा के मल प्रवाह और प्रदूषण को समेटती हुई हुगली हो या सैकड़ों बजरों, स्टीमरों और जलयानों द्वारा आंदोलित एवं उन से निकलती गंदगी को गले लगाती हुगली हो, है तो यह वही गंगा जिस ने युगयुग से भारतीय मन पर आधिपत्य जमा रखा है. कलकत्ता के हुगली तट पर जहां जगहजगह ढेरों गंदगी देखी जा सकती है वहीं ऐसे धर्मपरायण को भी देखा जा सकता है जो एक हाथ से अपने नासिका रंध्रों को दुर्गंध से बचाने का उपक्रम कर रहा हो तो दूसरे हाथ से गंगाजली में पवित्र जल सहेजने में जुटा हो.

अपने आसपास के दूषित वातावरण से या जल की वास्तविक स्थिति से वह धर्मपरायण बेखबर हो, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, किंतु युगों से उसे जो आदत या गरिमामय शब्द का प्रयोग करें तो जो परंपरा विरासत में मिली है, वह यही कहती है कि गंगा जल हर स्थिति में और हर स्थान पर पवित्र है.

किंतु क्या ऐसा है? गंगा भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल के राज्यों में से हो कर बहती है, जहां इस के किनारे बसे क्षेत्रों में 80% बीमारियों की जड़ में जल प्रदूषण है. गंगा किनारे कोई ढाई दर्जन नगर ऐसे हैं, जिन की आबादी एक लाख से अधिक है. यों तो हरिद्वार इलाहाबाद, वाराणसी, पटना और भागलपुर आदि जैसे नगर भी काफी बड़े हैं और गंगा को गंदगी का काफी दान करते ही हैं, किंतु कानपुर और कलकत्ता तो इस मामले में सिरमौर हैं.

कलकत्ता क्षेत्र में हुगली तट पर ही डेढ़ सौ के करीब तो औद्योगिक इकाइयां होंगी ही. उधर कानपुर में भी 45 बड़े चमड़ा उद्योग, 15 सूती, ऊनी और जूट मिलें और दर्जनों रसायन और औषधि निर्माण एकक गंगा की 'निर्मलता' को कितना बढ़ाते होंगे, कहने की आवश्यकता नहीं है.

वाराणसी औद्योगिक दृष्टि से उतना भयप्रद न सही किंतु जनमानस में उस का

वाराणसी में गंगा के किनारे मृत देह दहन : 10 हजार टन राख प्रतिवर्ष यहां से बहाई जाती है.

धार्मिक महत्त्व गंगा के लिए घातक सिद्ध हो रहा है. काशी में मृत देह दहन का जो भी माहात्म्य शास्त्रों में लिखा हो, आज की स्थिति को देखते हुए तो वह माहात्म्य गंगा की मौत को न्योता दे रहा है. एक अनुमान के अनुसार वाराणसी के मणिकर्णिका तथा हरिश्चंद्र घाट पर हर वर्ष 32 हजार शव जलाए जाते हैं, 10 हजार टन से कहीं अधिक राख गंगा में बहाई जाती है, तो अधजली लाशों के रूप में मानव मांस भी काफी परिमाण में नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है.

गंगा के किनारे छोटेबड़े नगरों की संख्या सौ के आसपास है. इन की आबादियों का कितना गंदा पानी गंगा को ढोना पड़ता होगा, इस का कुछ अंदाजा इस बात से हो सकता है कि अकेले कानपुर शहर का 40 लाख गैलन कचरायुक्त पानी प्रतिदिन गंगा के प्रवाह का अंग बनता है.

फिर गंगा कोई छोटीमोटी नदी तो है नहीं. इस के उद्गम से अंत [illegible] नदियां सहायक नदियां इस में समाहित हो जाती हैं. जाहिर है इन नदियों के किनारे स्थित शहर और कसबे तथा वहां के औद्योगिक संस्थान अपना कचरा पास की नदी में बहाते हैं, जो अंततः मुख्य गंगा प्रवाह के प्रदूषण में ही वृद्धि करता है.

इसी मुख्य गंगा प्रवाह का एक बड़ा हिस्सा हुगली की राह कलकत्ता पहुंचता है और वहां से कोई सवा सौ किलोमीटर और चलने के बाद गंगा सागर नामक स्थान पर यह बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाता है. गंगा सागर वही स्थान है जहां पौराणिक गाथा के अनुसार कपिल मुनि ने कुपित हो कर महाराज सगर के 60,000 पुत्रों को भस्म कर दिया था. बाद में सगर के वंशज भगीरथ की तपस्या के फलस्वरूप स्वर्गवासिनी गंगा हिमालय प्रदेश में अवतरित हुई, जहां से भगीरथ के दिशा संकेत पर बहती हुई वह गंगा सागर पहुंची और वहां उस ने युगों से जमा सगर पुत्रों की भस्मी को अपने में समाहित कर उन का उद्धार किया.

स्पष्ट है ऐसे स्थान का हिंदू जनता के लिए बहुत अधिक धार्मिक महत्त्व है. इसी कारण हर वर्ष जनवरी में वहां बहुत बड़ा मेला लगता है. अब मेला लगता है तो प्रदूषण भी बढ़ता है. ऐसा अनुमान है कि इस मेले के दौरान इस जल प्रदेश में जीवाणु की मात्रा स्नान करने योग्य पानी के मानक की तुलना में 10 गुना बढ़ जाती है.

यहां का पानी तो बाद में सागर में मिल जाता है और पुनः प्रत्यक्षतः मानव के इस्तेमाल में नहीं आता है. किंतु ऐसे मेलेठेलों के कारण गंगा का प्रदूषण तो इस के प्रारंभिक प्रवाह से ही शुरू हो जाता है और अगले ढाई हजार किलोमीटर तक गंगा जल में प्रदूषण भी बढ़ता रहता है और यह सीधे मानव उपयोग में भी आता रहता है.

गंगा और उस की सहायक नदियों का प्रवाह क्षेत्र भारत देश के एकचौथाई इलाके में फैला हुआ है, जहां देश की 40% से भी अधिक जनता बसी है. यदि चीन और

केवल आदमी के ही नहीं जानवरों के शव भी गंगा को प्रदूषित करते हैं.

भारत को छोड़ दिया जाए तो समूचे विश्व में ऐसा कोई देश ही नहीं है, जिस की कुल आबादी हमारे यहां केवल गंगा थाले में बसने वाली जनसंख्या की बराबरी कर सके.

गंगा को पुण्यदायिनी समझा जाना भले ही जनमानस की श्रद्धा पर निर्भर करता हो, किंतु वह कितनी प्रबल जीवनदायिनी है, इस का प्रत्यक्ष प्रमाण तो यही है कि इस के थाले में 35 करोड़ लोग निवास करते हैं. इतने बड़े क्षेत्र के लिए जनसंख्या का ऐसा घनत्व भी अन्यत्र दुर्लभ ही है. 1971 से 1981 तक के केवल एक दशक में गंगा थाले की आबादी 26% बढ़ गई.

स्पष्टतः इस का कारण यहां की उपजाऊ भूमि है जिसे यहां की नदियां युगों से संवारती चली आ रही हैं. किंतु इधर जिस तरह वहां के पर्यावरण से छेड़छाड़ हुई है, खेती के लिए अधिक भूमि प्राप्त करने हेतु जंगलों की जिस तरह अंधाधुंध कटाई हुई है, उसे इस थाले के स्वास्थ्य के लिए कोई बहुत शुभ नहीं कहा जा सकता.

ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि 16वीं 17वीं शताब्दी तक भी गंगायमुना क्षेत्र में ऐसे घने जंगल थे जहां हाथियों, अरने-भैंसों, गैंडों, सिंहों और बाघों का शिकार किया जाता था. किंतु अब तो लगभग समूचे गंगा थाले से मूल प्राकृतिक वनस्पति गायब हो चुकी है और अधिक से अधिक भूमि काश्त के काम आ रही है.

खेतीबाड़ी में भी गंगा का योगदान कम नहीं है. इस के पानी से दो करोड़ हेक्टेयर भूमि में सिंचाई हो रही है और यह क्षेत्र भारत की कुल सिंचित भूमि का 40% है.

विश्व की कई विशाल नदियों की तुलना में गंगा कोई बहुत बड़ी नदी नहीं है. लंबाई के लिहाज से एशिया की नदियों में इस का स्थान 15वां है तो विश्व की नदियों में 39वां. प्रति वर्ष गंगा में जितना जल बहता है, उस से भी अधिक जल ढोने वाली नदियां विश्व में कई हैं. फिर भी यदि हम मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार के समूचे क्षेत्र में एक मीटर की गहराई तक पानी भर दें, तो हर वर्ष करीबकरीब इतना पानी गंगा प्रवाह में बहता है.

गंगा का डेल्टा

आंकड़ों की भाषा में कहें तो गंगा में हर साल 86,140 करोड़ घन मीटर पानी बहता है जो भारत की सभी नदियों के वार्षिक अपवाह का लगभग एकचौथाई बैठता है. वर्षा के दिनों में तो कई स्थानों पर यह नदी रौद्र रूप धारण कर लेती है और इस का पानी तट तोड़ कर 200 किलोमीटर तक की चौड़ाई में फैल जाता है.

पश्चिम बंगाल की सीमा में प्रवेश करने के तुरंत बाद ही गंगा का डेल्टा शुरू हो जाता है, जहां यह नद युगयुग से अपने साथ लाई गाद जमा करता आ रहा है. उद्गम क्षेत्र में भिन्नभिन्न नाम ले कर बहने वाली धाराएं देव प्रयाग में जिस एक जलप्रवाह का रूप धारण करती हैं, उसे ही गंगा का नाम मिलता है. अपने डेल्टा में पहुंच कर ...

गंगा स्वयं को अलग-अलग नामों से कई शाखाप्रशाखाओं में बांटना शुरू कर देती है.

अब तक मुख्यतः दक्षिण पूर्व दिशा में बहती गंगा की पहली शाखा पश्चिम बंगाल में मुर्शिदाबाद जिले के जांगीपुर स्थान के निकट एकदम दक्षिण की ओर मुड़ जाती है.

देव प्रयाग में अलकनंदा से मिलने से पहले पश्चिम दिशा से गोमुख से आने वाली गंगा की प्रमुख धारा को भागीरथी कहा जाता है तो जांगीपुर से गंगा के प्रमुख प्रवाह से सर्वप्रथम अलग होने वाली पश्चिमी धारा को भी भागीरथी ही कहा जाता है.

पारंपरिक नाम

16वीं शताब्दी तक सागर की ओर अग्रसर गंगा के प्रमुख प्रवाह का माध्यम यही भागीरथी थी. किंतु डेल्टा के इस पश्चिमी छोर पर अधिक गाद भर जाने के बाद यह दूसरी भागीरथी गंगा के प्रमुख प्रवाह को सहेजने में असमर्थ हो गई. बहरहाल, सागर से मिलने की आकांक्षा सहेजे यह दूसरी भागीरथी 190 किलोमीटर चलने के बाद नवद्वीप पहुंचती है जहां जालंगी नदी से इस का संगम होता है. सागर तो अभी भी 260 किलोमीटर दूर रहता है और यह रास्ता यह जलप्रवाह हुगली के नाम से तय करता है. समुद्र की ओर अग्रसर गंगा की यही धारा गंगा सागर पहुंचती है.

परंपरा नामों को कैसा आकर्षण प्रदान करती है, उस का एक उदाहरण तो भागीरथी नाम ही है जो गंगा के उद्गम और मुहाना दोनों क्षेत्रों में पुकारा जाता है. दूसरा उदाहरण यमुना का है. गंगा को बीच सफर में यदि एक यमुना प्रयाग (इलाहाबाद) में मिलती है तो दूसरी यमुना इसे गुआलुंडो घाट पर मिलती है.

बंगला देश में स्थित गुआलुंडो घाट पर वस्तुतः गंगा की मुख्य धारा का मिलाप ब्रह्मपुत्र से होता है किंतु ब्रह्मपुत्र ही इस संगम स्थल से कोई ढाई सौ किलोमीटर पहले यमुना का नाम अपना लेती है. मजे की बात यह कि गंगायमुना के इस संगम के बाद ये दोनों ही नाम लुप्त हो जाते हैं. सम्मिलित जलप्रवाह पद्मा के नाम से आगे बढ़ता है.

आगे चल कर इस का मिलाप मेघना नदी से होता है और अपनी यात्रा के अंतिम चरण में यह जल प्रवाह मुख्यतः मेघना के नाम से, किंतु वस्तुतः कई शाखाओं में बंट कर एक विस्तृत नदी मुख बनाते हुए बंगाल की खाड़ी में समाहित हो जाता है. इसी प्रकार हुगली भी बंगाल की खाड़ी में खो जाने से पहले कई धाराओं में बंट कर करीब 32 किलोमीटर चौड़ा नदीमुख बनाती है.

गंगा और उस से जुड़ी अनेकानेक नदियों के सुंदर नाम हमारे मन में जो भी धार्मिक श्रद्धा और पारंपरिक आकर्षण पैदा करें, नदी का तो एक ही गुणनाम हो सकता है-सहज प्रवाह; और यही उस के आकर्षण और उपयोगिता को बनाए रख सकता है. गंगा के ऐसे ही प्रवाह को यदि कायम रखना है तो उसे प्रदूषण से बचाना ही होगा.

प्रदूषण में वृद्धि जारी

फरवरी, 1985 में 250 करोड़ रुपए के बजट से पांच साल में गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के प्रयोजन से केंद्रीय गंगा प्राधिकरण का गठन किया गया था. इस बीच इस प्राधिकरण द्वारा जो भी प्रयास किए गए हों, गंगा तो अभी भी मैली है, और इस के प्रदूषण में वृद्धि ही हो रही है.

वस्तुतः बढ़ती जनसंख्या के दबाव और औद्योगीकरण के फैलाव के सम्मुख दोचार स्थानों पर कुछ अधकचरी योजनाएं चला कर एक छोटा सा संगठन क्या कर लेगा.

गंगा की गरिमा तो तभी लौट सकती है जब इस नदी क्षेत्र से जुड़ा हर व्यक्ति अपने स्तर पर ऐसा कुछ न करे जो गंगा को मैला करे. •

टिहरी बांध परियोजना : एक और विवाद

लेख ● प्रदीपकुमार

बहुउद्देशीय टिहरी बांध परियोजना की शुरुआत आज से 20 साल पहले हुई थी तब से इस परियोजना के गुणदोषों को ले कर समयसमय पर विवाद खड़ा होता रहा है. हाल ही में पर्यावरण प्रेमियों व बांध विरोधी संघ... समिति द्वारा टिहरी बांध निर्माण के विरुद्ध न... सिरे से उठाई जा रही आवाज ने टिहरी बां... परियोजना को एक बार फिर अखबारों की सुर्खियों में ला दिया है.

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस बार पर्यावर... प्रेमियों द्वारा प्रकट किए जा रहे विरोध पर जहां सरकार ने पहली बार गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया है वहीं बां... निर्माण के समर्थन त... विरोध में जुड़े आम लोगों ... संघर्ष अब खुली सड़कों पर आ गया है. परस्पर विरोधी ये स्वर परियोजना ... गुणदोषों, लाभहानि, तक... नीकी या मानवीय पहलु... से हट कर एकदूसरे ... कीचड़ उछालने तक सीमि... हो गए हैं. बांध विरोधि... का कहना है कि जो लोग ... परियोजना के समर्थन ... टिहरी में मशाल ज... निकाल रहे हैं त...

पर्यावरण प्रेमी सुं... बहुगुणा : "400 करो... बात छोड़िए 2,600 ... रुपए की बचत भी ...

विकास का प्रतीक टिहरी बांध परियोजना देश की सर्वाधिक महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में एक है. मगर राजनीति के चक्रव्यूह में फंस कर यह बहुउद्देशीय योजना न केवल खटाई में पड़ी है बल्कि धीरेधीरे सफेद हाथी साबित हो रही है. क्या नई सरकार नर्मदा परियोजना की तरह टिहरी परियोजना के लिए भी कोई क्रांतिकारी कदम उठा सकेगी.

सरकार को ज्ञापन दे रहे हैं वे ठेकेदार के आदमी हैं तथा वे ऐसा ठेकेदार के हितों और निजी स्वार्थों के कारण कर रहे हैं.

दूसरी ओर टिहरी बांध निर्माण के समर्थकों का कहना है कि 400 करोड़ रुपए खर्च हो जाने के बाद इस परियोजना के पूरा होने में वे ही लोग अड़ंगा लगा रहे हैं जिन्होंने सरकार से वित्तीय या जमीन के रूप में मुआवजा प्राप्त कर लिया है. ये लोग मुआवजा भी हड़पना चाहते हैं और जिस जमीन के नुकसान की एवज में उन्हें मुआवजा दिया गया है उसे छोड़ना भी नहीं चाहते हैं. दरअसल इस प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप की मुख्य वजह यही है कि इस बार टिहरी बांध परियोजना के विरोध में पर्यावरण विशेषज्ञों व पारिस्थिति की वैज्ञानिकों के साथ-साथ वे लोग भी सामने आ रहे हैं जो इस परियोजना से प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए हैं.

बहरहाल टिहरी बांध निर्माण का काम रोक दिया गया है. पिछली 22 जनवरी को नई दिल्ली में केंद्रीय पर्यावरण वन राज्यमंत्री मेनका गांधी तथा केंद्र व उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारियों के साथ प्रसिद्ध पर्यावरण प्रेमी सुंदरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में कई पर्यावरण रक्षक संगठनों के प्रतिनिधियों की पांच घंटे से अधिक समय तक चली बैठक में यह निर्णय किया गया है कि टिहरी बांध का निर्माण कार्य
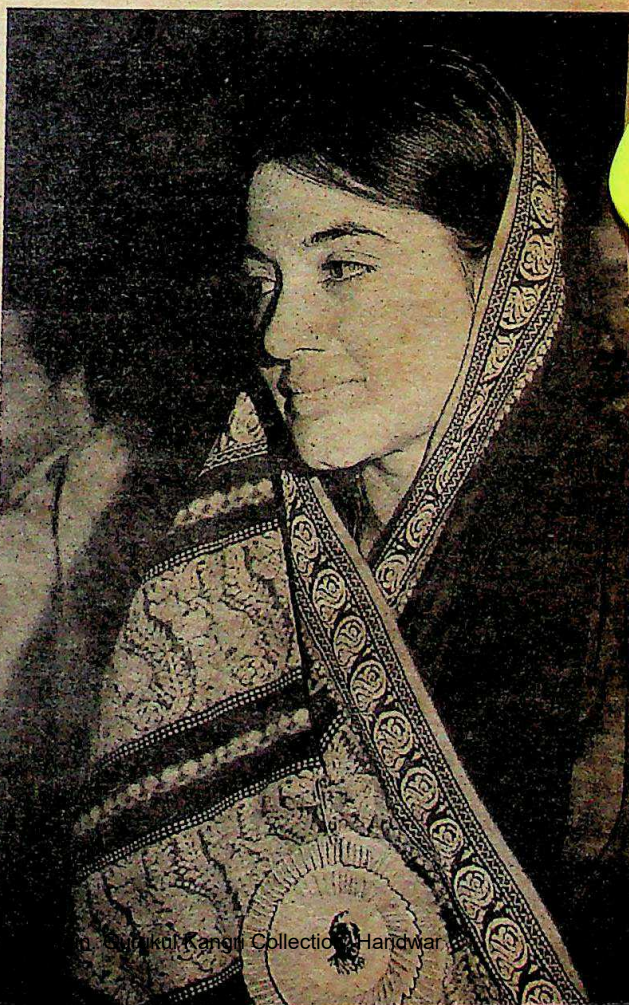
केंद्रीय पर्यावरण मंत्री मेनका गांधी : अपनी स्थिति स्पष्ट करने की लाचारी.
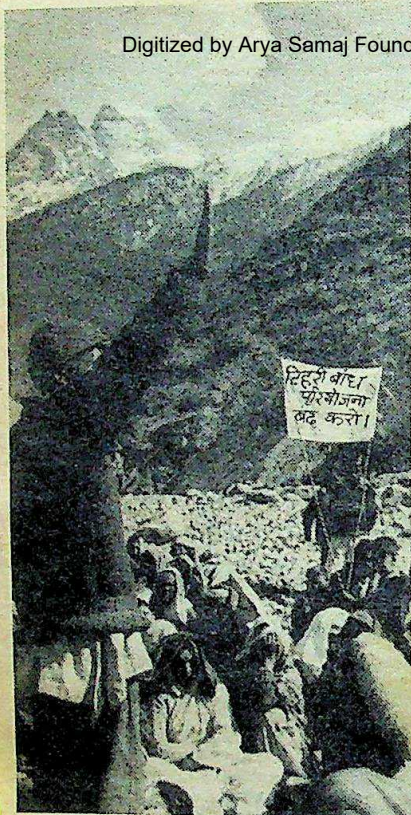
बांध निर्माण के विरोध में संघर्ष समिति : शांति घाटी में आंदोलन की शुरुआत.

उस समय तक रुका रहेगा जब तक केंद्र सरकार इस मामले में किसी अंतिम फैसले पर नहीं पहुंच जाती. मगर निर्माणस्थल से मलबा व बांध जलाशय से गाद निकालने के काम को जारी रखने की मंजूरी दे दी गई है.

उल्लेखनीय है कि पिछली 2 जनवरी से टिहरी बांध का निर्माण कार्य केंद्रीय ऊर्जा मंत्री आरिफ मुहम्मद खान के आदेश पर रोक दिया गया था. यह आदेश आठ दिनों से चल रहे आमरण अनशन की वजह से सुंदरलाल बहुगुणा की चिंताजनक होती जा रही हालत को देख कर दिया गया था. सुंदरलाल बहुगुणा टिहरी बांध के संभावित खतरे की तरफ सरकार व राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करने के लिए आमरण अनशन पर बैठे थे.

महत्त्वाकांक्षी परियोजना

'विकास का प्रतीक' और 'आधुनिक भारत का तीर्थ' जैसी संज्ञाओं से विभूषित टिहरी बांध परियोजना आज की तारीख में देश की सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी परियोजना है. अगर यह परियोजना पूरी हो गई तो 260.5 मीटर ऊंचा टिहरी बांध विश्व का सब से ऊंचा बांध होगा. टिहरी जल विकास निगम के महाप्रबंधक तथा टिहरी बांध के निर्माण निदेशक यशपाल सिंह के अनुसार इस बांध के साथ जो भूमिगत बिजली घर बनाया जा रहा है उस की विद्युत उत्पादन क्षमता 2,000 मेगावाट होगी. इस परियोजना के ही अंतर्गत टिहरी बांध से 22 किलोमीटर नीचे भागीरथी की धारा पर कोटेश्वर में 103.5 मीटर ऊंचा बांध व 400 मेगावाट उत्पादन क्षमता का बिजली घर भी बनाया जा रहा है.

परियोजना के उद्देश्यों में कुल 2,400 मेगावाट बिजली उत्पादन करने के अलावा, लाख 60 हजार हेक्टेयर कृषिभूमि की सिंचाई करना, गंगाघाटी को बाढ़ के प्रकोप से मुक्त करना, रोजगार के साधनों में वृद्धि करना तथा पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देना भी शामिल है.

पर टिहरी बांध विरोधी संघर्ष समिति तथा 'भारतीय सांस्कृतिक निधि' (इंटैक) द्वारा संयुक्त रूप से इस परियोजना के विरोध में जो दलीलें दी जा रही हैं उन के अनुसार इस परियोजना से होने वाली उपलब्धियों व लाभ को ले कर तैयार की गई सरकारी गणना भ्रामक आकड़ों व अतिशयोक्तिपूर्ण अनुमानों पर आधारित है. इन के अनुसार पारिस्थितिकी व पर्यावरण के दृष्टिकोण से यह परियोजना आगे चल कर आत्मघाती साबित होगी.

इस संबंध में पर्यावरण मंत्रालय के अध्ययन दल की रिपोर्ट में भी अध्ययन दल के अध्यक्ष सुनीलकुमार राय ने टिहरी बांध के जलाशय को जोखिमपूर्ण माना है. बांध निर्माण से टिहरी क्षेत्र में पहाड़ों के धसकने और भूस्खलन की भयावह आशंका रिपोर्ट में व्यक्त की गई है. सब से बड़ी बात यह है कि

जिस क्षेत्र में बांध का निर्माण किया जा रहा है वह मध्य हिमालय का भूकंपीय क्षेत्र है. एक बड़े भूकंप से यदि यह विशालकाय बांध टूट गया तो इस की अतुल जलराशि पूरे क्षेत्र में महाप्रलय का कारण बन जाएगी.

मानवीय व सामाजिक पहलू भी बांध विरोध का एक बड़ा मुद्दा है. बांध से प्रभावित व विस्थापित लोगों की संख्या 85 हजार बताई जा रही है. बांध समर्थकों की दलील है कि टिहरी परियोजना ने टिहरी गढ़वाल क्षेत्र के हजारों लोगों के लिए रोजगार मुहैया कराया है. बांध अधिकारियों के अनुसार विस्थापितों के पुनर्वास के लिए देहरादून व हरिद्वार में जमीनें आवंटित की गई हैं. बांध क्षेत्र में आवास कालोनी भी बनाई गई है.

मगर वास्तविकता यह है कि विस्थापितों के पुनर्वास का कार्य अभी तक आधा अधूरा ही है. फिर इन में कई ऐसे हैं जो अपनी जमीन व पुरानी संस्कृति से उजड़ने का दर्द किसी मुआवजे से अधिक कीमती समझते हैं. बड़ी बात यह है कि बांध के बनने से भागीरथी तथा भिलंगना नदियों के एक छोर पर रहने वालों व दूसरे छोर पर रहने वाले अपने निकट संबंधियों से नाता हमेशाहमेशा के लिए टूट ही जाएगा. आने वाली नई पीढ़ियां एकदूसरे से अलग ही रहेंगी.

लाभ लागत अनुपात

'इंटैक' की ओर से वाडिया कालिज, पूना के विजय परांजपे ने टिहरी परियोजना के विभिन्न पहलुओं पर एक अध्ययन रिपोर्ट तैयार की है. 1987 में तैयार की गई इस रिपोर्ट को इस वर्ष 22 फरवरी को दिल्ली में हुई बैठक में अद्यतन बना कर 'इंटैक' द्वारा प्रस्तुत किया गया था.

इस रिपोर्ट के मुताबिक 1969 में टिहरी बांध परियोजना की जो परियोजना रिपोर्ट योजना आयोग को दी गई थी उस में परियोजना पर 169 करोड़ रुपए खर्च आने की बात कही गई थी. 1986 तक कोटेश्वर की योजना को मिलाने पर यह खर्च 2035 करोड़ रुपए तक बढ़ गया. अगर मुद्रास्फीति की
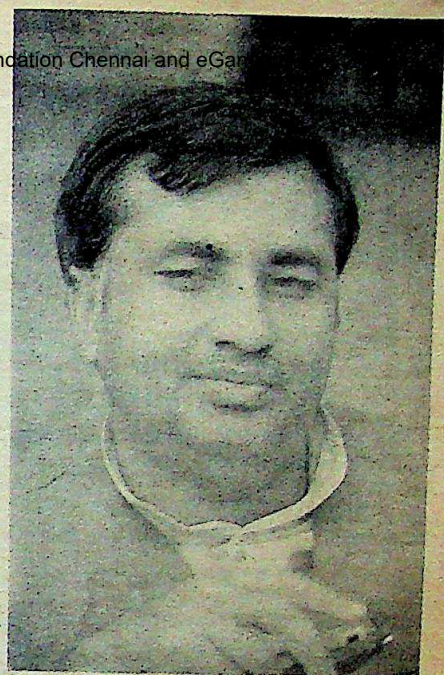
आरिफ मुहम्मद खान : परियोजना के निर्माण को ठप करने का आदेश.

वार्षिक वृद्धि दर 10% मान ली जाए तो 1986 से अब तक यह लागत बढ़ती ही जा रही है.

सवाल यह उठता है कि इतना वित्तीय बोझ उठाने के बाद इस परियोजना से हमें कहां तक लाभ पहुंचने वाला है? हालांकि पर्यावरण मंत्रालय की ओर से परियोजना के लाभहानि का लेखा तैयार किया जा रहा है और फ़रवरी माह के अंत तक यह रिपोर्ट केंद्रीय मंत्रिमंडल को सौंप दी जाएगी. मेनका गांधी भी टिहरी परियोजना के बारे में पूछे गए सवालों को अभी परियोजना के गुणदोषों की पूरी तरह विवेचना हो जाने के समय तक टाल ही रही हैं.

पर इस सिलसिले में गहन अध्ययन व जांच पड़ताल के बाद इंटैक ने जो अध्ययन रिपोर्ट तैयार करवाई है, उस में परियोजना से होने वाले लाभ को उस पर आने वाली लागत की तुलना में बहुत कम आंका गया है. रिपोर्ट के अनुसार अधिकारियों द्वारा परियोजना रिपोर्ट में तथा इस समय भी परियोजना से जो

अत्यधिक लाभ पहुंचने की बात कही जा रही है वह भ्रामक व तथ्यहीन आकड़ों पर आधारित है. परियोजना उन उद्देश्यों को पूरा करने में असमर्थ है जिन को ले कर इसे स्वीकृति प्रदान की गई थी. रिपोर्ट में बाकायदा हिसाब लगा कर यह साबित करने की कोशिश की गई है कि परियोजना में लाभ लागत का अनुपात उस न्यूनतम सीमा से भी कम आता है जिसे योजना आयोग ने वित्तीय स्वीकृति प्रदान करने के लिए एक नियम के रूप में निर्धारित कर रखा है.

परियोजना के उद्देश्यों में 2 लाख

सुंदरलाल बहुगुणा

''यह मत कहना मैं ने समय पर जगाया नहीं''

यह एक संयोग की बात है कि सुंदरलाल बहुगुणा का सार्वजनिक जीवन में उदय तभी हुआ था जब टिहरी बांध परियोजना की योजना बनी थी. 1969-70 में उन्होंने टिहरी में शराबबंदी आंदोलन चलाया था. इस अभियान में वह काफी हद तक सफल भी रहे थे पर सुंदरलाल बहुगुणा को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति उस समय मिली जब उन्होंने गढ़वाल में 'पेड़ बचाओ' का नारा दिया और वहां कट रहे पेड़ों से चिपक जाने के लिए लोगों का आह्वान किया. 'चिपको आंदोलन' के साथ एक बार जो आगे बढ़े तो फिर उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा. केंद्र द्वारा पर्यावरण कानून बनाए जाने का श्रेय बहुत कुछ सुंदरलाल बहुगुणा को ही दिया जाता है.

दिल्ली में पर्यावरण संगठनों के साथ 22 जनवरी को केंद्र सरकार के अधिकारियों की टिहरी बांध को ले कर जो बैठक हुई वह सुंदरलाल बहुगुणा के थोड़े दिनों के अंतर पर दो बार लंबे समय तक आमरण अनशन पर बैठ जाने का नतीजा था. इस बैठक के कुछ दिनों बाद इस प्रतिनिधि ने सुंदरलाल बहुगुणा से दिल्ली में मुलाकात की.

उस समय वह लखनऊ जाने की तैयारी में थे. खाना खाते, तैयार होते और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ते हुए सुंदरलाल बहुगुणा ने टेढ़ेमेढ़े, सरलसीधे सभी सवालों का जवाब हंसते हुए और सहज ढंग से ही दिया. उन से बातचीत करने से यह बात स्पष्ट हुई कि केंद्र सरकार के साथ अभी तक हुई बातचीत से वह या दूसरे पर्यावरण संगठन खुश नहीं हैं. ''काम तो अभी भी एक तरीके से वहां हो ही रहा है.''

सुंदरलाल बहुगुणा यह मानते हैं कि समस्या का हल अभी नहीं निकला है और टिहरी बांध विरोधियों में अभी भी मायूसी है. ''मुझ से कहा गया कि इस समय देश में वैसे ही हत्याएं, आगजनी हो रही हैं. टिहरी बांध का विरोध हिंसा की एक नई लपट को जन्म दे रहा है. मैं ने कहा, 'अगर ऐसी बात है तो मैं कुछ दिन चुप लगा जाता हूं, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे शांतिपूर्ण उपाय हिंसा को जन्म दे.'''

सुंदरलाल बहुगुणा पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि परियोजना का काम तो पिछले 20 साल से चल रहा है. अब जा कर वह अपना विरोधी स्वर क्यों मुखर कर रहे हैं. इसी लिए उन से पहला सवाल यही था कि अभी तक आप चुप क्यों रहे और अब अचानक विरोध प्र

हजार हेक्टेयर कृषि भूमि के लिए सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराने की बात कही गई है. इंटैक की रिपोर्ट के अनुसार टिहरी परियोजना की सिंचाई व्यवस्था से लाभान्वित होने वाला क्षेत्र पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आता है और इस क्षेत्र के 80% से अधिक भाग में गहन सिंचाई की व्यवस्था पहले से ही विद्यमान है. इस क्षेत्र में मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, अलीगढ़, आगरा, मथुरा, कानपुर, फतेहपुर आते हैं. इन इलाकों में नहरों और ट्यूबवेलों से पहले से ही सिंचाई की पर्याप्त सुविधा मौजूद है.

1987 की अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार

करने की बात आप को कैसे सूझी?

"मैं ने पहले भी कई बार विरोध प्रकट किया था. 1969 में मैं ने इस विषय पर उत्तर प्रदेश के तत्कालीन सिंचाई मंत्री से बात की थी. पर उस समय मैं बांध को ले कर चिंतित नहीं था. यह सचाई है तब मैं पुनर्वास समस्या को ले कर ही उठा था. सिंचाई मंत्री ने मुझे आश्वासन भी दिया था कि विस्थापितों को परेशान होने नहीं दिया जाएगा. उन के पुनर्वास का पूरा बंदोबस्त होगा.

"सच पूछिए तो बांध का विरोध 1976-77 में सरकारी रिपोर्ट के गोपनीय तथ्यों का पता लग जाने पर शुरू हुआ. लोगों को पहली बार पता चला कि जहां बांध बन रहा है वह भूकंपीय क्षेत्र है. तब लोग चौंके. फिर टनल (सुरंग) के निर्माण के दौरान धरने दिए गए. फिर गिरफ्तारियां हुईं. 1978 में मैं ने इस सिलसिले में संसद में अर्जी भी दी थी. पर संसद चूंकि तुरंत ही भंग हो गई इसलिए उस अर्जी का कोई परिणाम नहीं निकला."

पर परियोजना पर इस समय तक 400 करोड़ रुपए खर्च हो चुके हैं?

"अभी 2,600 करोड़ रुपए और खर्च होने हैं. आप इस तरह क्यों नहीं सोचते. यह तो सरकारी लोग और बांध समर्थक हैं जो 400 करोड़ का शोर मचा रहे हैं और उसे बड़ा बता रहे हैं. मैं तो अधिकारियों से यह भी पूछ रहा हूं कि इतने पैसे किनकिन मदों में खर्च हुए हैं. नगर बसाया गया है. सड़कें बनी हैं. ये तो बेकार जाती नहीं. नदियों के प्रवाह को मोड़ने के लिए जो टनल बनाए गए हैं उन का बिजली बनाने में इस्तेमाल किया जा रहा है. मैं ने सरकार को जो विकल्प दिए हैं इस से खर्च हुए पैसों में 82% का इस्तेमाल हो जाएगा."

सरकार से आप की क्या बातचीत हुई?

"उस दिन पांच घंटे से भी अधिक देर तक हम लोग बैठे रहे. मैं ने उन से कहा कि कैबिनेट में अपना जो भी निर्णय लें उन में चार बातों का ध्यान अवश्य रखें. पहला, वैज्ञानिक व पर्यावरण विभाग की रिपोर्ट के सारे पहलुओं को देख लें, मानवीय पहलू को भी पूरा वजन दें. सरकार का खुद कहना है कि 14 हजार विस्थापित परिवारों में 1,800 परिवारों को जमीन दी गई है. शेष को पैसा दिया गया है या दिया जाएगा. पैसा कितने दिन तक चलता है? पैसे से क्या उन की जमीन की पूर्ति हो जाएगी?

"मैं ने उन से कहा है कि नियंत्रक व महालेखा परीक्षक (सी ए जी) ने इस विषय में जो रिपोर्ट दी है और आपत्ति उठाई है उसे भी ध्यान में रखा जाए. अब तक जो खर्च होने की बात कही जा रही है उस की जांच भी सीएजी से ही कराई जाए और अंत में मैं ने उन्हें महान्यायवादी की राय ले लेने के लिए भी सलाह दी है."

आप को इस मामले में अभी तक नई सरकार के रुख से क्या लगा?

"मैं तो चौकीदार हूं. मेरा काम है ऐसे मामलों के उपस्थित होने पर लोगों को आवाज दे कर जगाना. मैं लोगों से कह भी रहा हूं कि मैं ने समय पर चेता दिया है, यह मत कहना मैं ने समय पर जगाया नहीं, अभी बांध की नींव पड़ रही है. बांध बन गया तो फिर कुछ भी नहीं हो सकता." ●
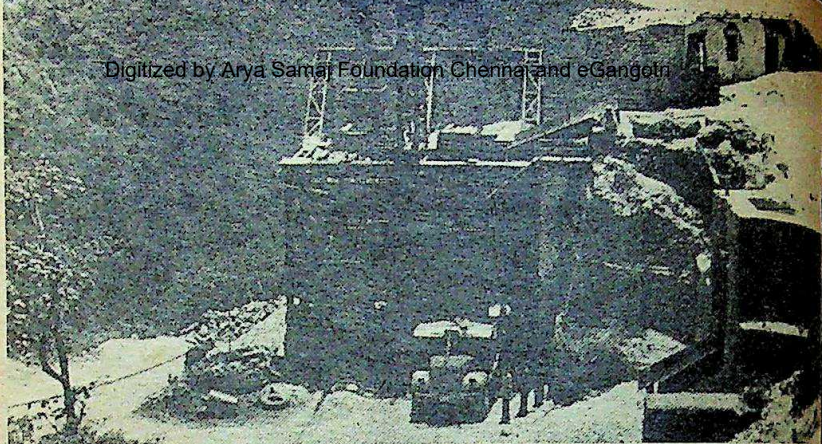
घाटी में चूना पत्थर की खान : भूस्खलन का खतरा तो इस से भी बढ़ रहा है.

1969 में प्रति यूनिट विद्युत उत्पादन की लागत जो अधिकारियों ने 3.8 पैसा आंकी थी, वह लागत 1986 तक 48 पैसे प्रति यूनिट हो गई है. (वर्तमान लागत अधिकारियों के अनुसार 36 पैसे प्रति यूनिट व इंटैक के अनुसार 73 पैसे प्रति यूनिट आ रही है.)

अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार चूंकि योजनाकार व अधिकारी टिहरी परियोजना से होने वाले लाभ को बढ़ाचढ़ा कर दिखाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने चातुर्यपूर्ण आंकड़ेबाजी से काम लिया. परियोजना में विद्युत उत्पादन से होने वाले प्रतिफल की दर को 11% से 12% रखा गया है. पर यदि हम बिजली (उत्पादित) की बिक्री पर 48 पैसे प्रति यूनिट भी रखें तथा बिजली की आपूर्ति में जो नुकसान होता है उस की औसत दर कुल आपूर्ति का 18% (जो कि प्रदेश सरकार द्वारा स्वीकृत मापदंड है) रखें तो गणना करने पर टिहरी परियोजना की विद्युत इकाई के लाभ : लागत का अनुपात 0.9:1 ही आता है.

इस अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार परियोजना की सिचाई इकाई से होने वाले लाभ को भी परियोजना रिपोर्ट में बढ़ाचढ़ा कर दिखाया गया है. परियोजना के अधिकारियों का कहना है कि परियोजना से मिलने वाली सिंचाई सुविधा से लाभान्वित क्षेत्र में कृषि उत्पादन की दर पंजाब की दर तक पहुंच जाएगी. पर इंटैक ने सिंचाई सुवि[illegible] प्राप्त उत्तर प्रदेश के गंगा दोआब में वर्त[illegible] उत्पादन दर का आकलन कर इसे सिंचाई [illegible] परे बताया है. यहां यह बात भी ध्यान में रख[illegible] होगी कि बांध निर्माण की वजह से 4,[illegible] हेक्टेयर उपजाऊ भूमि जलप्लावित होने [illegible] रही है.

रिपोर्ट में सभी आंकड़ों से गणना क[illegible] टिहरी परियोजना की विद्युत व सिं[illegible] इकाइयों को मिला कर लाभ लागत का [illegible] अनुपात निकाला गया है वह 1.27:1 बै[illegible] है, जबकि योजना आयोग द्वारा बनाए [illegible] मापदंड के मुताबिक 1.5:1 से कम [illegible] लागत के अनुपात वाली किसी भी योजना [illegible] आयोग द्वारा वित्तीय स्वीकृति नहीं प्रदान [illegible] जाएगी. ध्यान देने वाली बात यह है कि [illegible] ने जो लाभलागत का अनुपात निकाला है [illegible] में सामाजिक व पर्यावरण संबंधी पहलु[illegible] उन में होने वाले फायदेनुकसान को [illegible] रखा है. यह गणना भी 1986 की है. [illegible] चार सालों में मुद्रास्फीति से जो लागत ब[illegible] उसे जोड़ा जाए तो यह अनुपात और भी [illegible] आएगा.

वर्तमान समस्या

टिहरी बांध परियोजना को रोकने [illegible] पूरा करने के बीच अब सब से बड़ी स[illegible]

यह है कि पिछले 20 वर्ष में इस परियोजना पर अब तक 400 करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं. कुछ वर्ष पहले इस सिलसिले में भारत सरकार ने रूस के साथ एक समझौता भी किया था. इस समझौते के तहत इस परियोजना पर 30 अरब रुपए खर्च करने का प्रावधान है. बांध के समर्थन में जो इस समय सब से बड़ा तर्क दिया जा रहा है वह यही है कि इतने रुपए खर्च करने और इतना आगे कदम बढ़ा लेने के बाद पीछे पांव हटाना मूर्खता ही कही जाएगी.

लेकिन जो विरोध में हैं वे वर्तमान से अधिक भविष्य के प्रति चिंतित हैं. उन के अनुसार यदि हम वर्तमान की बजाए भविष्य की ओर ध्यान दें तो टिहरी बांध परियोजना जिन भयावह संभावनाओं की ओर संकेत दे रही है उस में इस अवस्था तक पहुंचने के बाद भी कदम खींचना मूर्खता नहीं बल्कि बुद्धिमानी ही कही जाएगी. जहां तक अभी तक हुए काम व खर्च हुई धनराशि का प्रश्न है उस के लिए बांध विरोधी अपनी ओर से कुछ ऐसे विकल्प सुझा रहे हैं जिस से अभी तक जो राशि खर्च की गई है उस का बिना बांध बनाए पूरी तरह उपयोग किया जा सके. उन के अनुसार अभी तक जो काम हुआ है उस से छोटे स्तर पर बिजली व पानी की सुविधा टिहरी गढ़वाल क्षेत्र के लोगों को उपलब्ध कराई जा सकती है. पर ये विकल्प अभी तक सरकारी अधिकारियों की निगाह में समस्या का हल नहीं बन पा रहे हैं.

यों तो यह ताजा विवाद काफी लंबे समय के बाद ही उठ रहा है पर इस में कोई संदेह नहीं कि टिहरी बांध परियोजना के विरुद्ध समयसमय पर न केवल पर्यावरण विशेषज्ञों व प्रकृति प्रेमियों के तर्क बल्कि सरकारी एजेंसियों की प्रतिकूल टिप्पणियां भी सामने आती रही हैं. टिहरी बांध के वैज्ञानिक पहलुओं के अध्ययन के लिए जो पर्यावरण मंत्रालय ने सुनील कुमार राय की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय कार्यकारी दल की नियुक्ति की थी उस ने अगस्त 1986 में सौंपी गई अपनी अध्ययन रिपोर्ट में इस परियोजना को साफ तौर पर 'घातक', 'एकतरफा फैसला', 'प्रभावित लोगों के मौलिक व संवैधानिक अधिकारों का हनन' बतलाया है. केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा अनुमति न दिए जाने की वजह से वित्त मंत्रालय ने परियोजना के लिए पैसा देना बंद कर दिया था.

भारत के नियंत्रक व महालेखा परीक्षक ने अपनी पिछली रिपोर्ट में भी टिहरी बांध को टिहरी क्षेत्र के प्राकृतिक पर्यावरण और जन जीवन पर प्रतिकूल असर डालने वाला माना है. रिपोर्ट के अनुसार, "यह बांध आर्थिक दृष्टि से सक्षम नहीं है. 1986 में इस परियोजना की लागत लगभग छः गुना बढ़ गई थी और यह लागत अब तक बढ़ कर 15 गुना हो गई है. यह परियोजना इस गरीब देश के साधनों पर बोझ है." बांध निर्माण को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती भी दी जा चुकी है.

पुरानी सरकार इन तमाम विरोधों के बावजूद टिहरी परियोजना को पूरा करने में लगी रही थी. नई सरकार ने सुंदरलाल बहुगुणा द्वारा किए जा रहे विरोध पर ध्यान देते हुए पर्यावरण प्रेमियों की बैठक बुला कर नई पहल की है, पर सवाल यह है कि नर्मदा परियोजना को मंजूरी देने वाली सरकार क्या टिहरी परियोजना के लिए कोई क्रांतिकारी कदम उठा पाएगी? ●

मुक्ता
हर अंक में ढेरों पठनीय सामग्री
युवाओं की अनूठी पत्रिका
उद्योग व्यापार व्यवसाय की जानकारी
ज्ञान से भरपूर जानकारी वाले लेख
फैशन, फिल्म और खेलों पर विशेष सामग्री
मुक्ता
हर अंक में मनोरंजक कहानियां प्रेम रस में डूबी कविताएं
युवाओं को सफल जीवन जीने की प्रेरणा देने वाली अकेली पत्रिका
आज ही से नियमित खरीदिए
दिल्ली प्रेस प्रकाशन

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

हमारे गणित के अध्यापक कक्षा में किसी एक लड़के को खड़ा कर के श्यामपट्ट पर सवाल हल करवाते थे. सवाल हल न कर पाने की स्थिति में वह उस से कहते, "मैं तुम्हें कई दिनों से देख रहा हूं कि तुम्हारा दिमाग कहीं खोया हुआ रहता है."

एक दिन एक नया लड़का जो पहली बार कक्षा में आया था, श्यामपट्ट पर सवाल हल करने के लिए खड़ा किया गया. जब वह सवाल सही तरह से हल नहीं कर सका तो शिक्षक महोदय ने आदतन कहा, "मैं तुम्हें पिछले कई दिनों..."

पहले तो लड़के को कुछ संकोच हुआ, फिर उस ने जवाब दिया, "सर, मैं तो आज पहली बार इस कक्षा में आया हूं. आप ने पहले कब मुझे देख लिया."

अब शिक्षक महोदय लाजवाब थे. **—मनीष कुमार जैन**

*

इतिहास की कक्षा चल रही थी. अध्यापक महोदय इतिहास की बातें बताते जा रहे थे. एक छात्र ने मजाक उड़ाने की नीयत से शिक्षक से कहा, "सर, इतिहास पढ़ाना सब से आसान है क्योंकि इस में केवल गड़े मुरदे ही उखाड़ने पड़ते हैं."

"हां बेटा, तुम ने बिलकुल सही कहा. मैं ने भी बहुत से गड़े मुरदे उखाड़े हैं, जिन में से एक तुम हो." शिक्षक का जवाब हाजिर था. **—शरदनारायण खरे**

*

बात कालिज के दिनों की है. एक बार एक लड़की के कमर तक झूलते बालों को देख कर मैं ने कहा, "तुम्हारी जुल्फ के साए में सांझ कर लूंगा."

मेरी बात निकट से गुजरते एक शिक्षक ने सुन ली. उन्होंने कहा, "अरे बेटा, जुल्फों के साए में जुओं का भी राज होता है. उन से तो डर." **—शरदनारायण खरे**

*

हमारे एक सहपाठी को हर व्यक्ति को 'प्रभु' कह कर बात करने की आदत थी. एक दिन हमारी कक्षा में एक नए अध्यापक पढ़ाने आए. वह छात्रों का अनुक्रमांक बोल कर उन से उन का नाम परिचय के रूप में पूछ रहे थे.

जब उस सहपाठी की बारी आई तो वह बोले, "आप का नाम कुलदीप है?"

आदतन उस के मुंह से निकल गया, "जी, प्रभु."

इतना सुनना था कि शिक्षक महोदय आगबबूला हो गए, "आप को बड़ों से बात करने की तमीज नहीं है. बड़ों का नाम लेते हुए आप को शर्म नहीं आती. क्या यही आप के संस्कार हैं?"

ऐसी फटकार से कुलदीप को तो जैसे सांप सूंघ गया. जब माजरा समझ में आया तब सभी का हंसतेहंसते बुरा हाल था. दरअसल, उन अध्यापक महोदय का नाम 'प्रभुदयाल' था. **—संजय डंग**

शिष्या

कहानी • सरेशकुमार
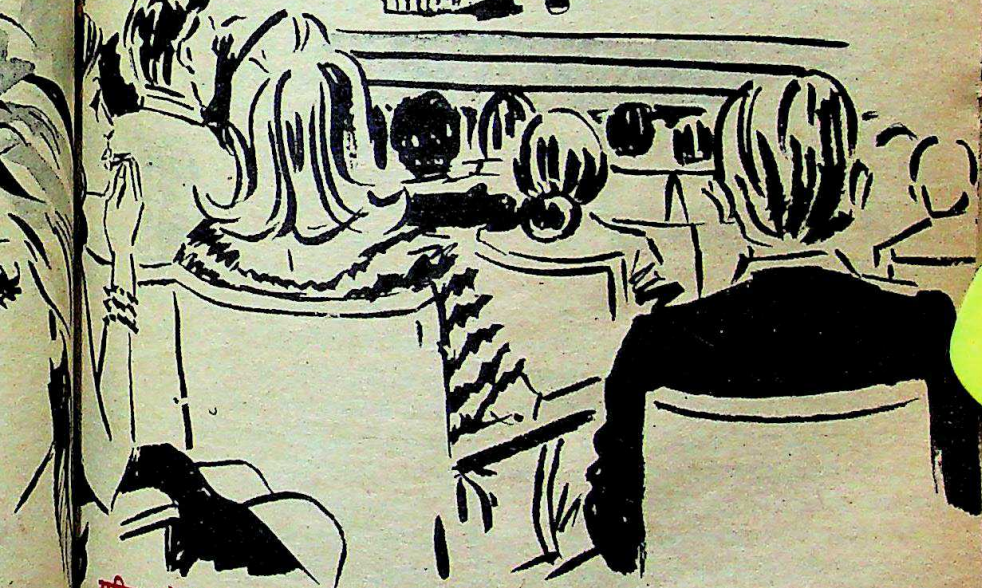
गणित के प्रोफेसर नरेंद्र विश्वविद्यालय में अपनी ईमानदारी, मेहनत व लगन के मिसाल थे. अपनी सेवानिवृत्ति समारोह पर जब उन्होंने अपने जीवन की एक रोचक घटना सुनाई तो वहां उपस्थित सभी व्यक्ति चौंक पड़े तथा मूक बन कर एक दूसरे को देखने लगे पर उन के चेहरों पर एक प्रश्न तैर रहा था कि क्या प्रोफेसर नरेंद्र भी ऐसा कर सकते हैं.

प्रोफेसर नरेंद्र 30 वर्ष के पश्चात विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हो रहे थे. पीएच.डी. करने के पश्चात उन्होंने इसी विश्वविद्यालय में पढ़ाना शुरू किया था और बस कहीं और पढ़ाने का ध्यान ही मन में न आया. उन की पत्नी और बच्चों को मांटरीयल शहर बेहद पसंद था.

मांटरीयल शहर है भी तो उत्तरी अमरीका महाद्वीप का सब से सुंदर शहर. पेरिस के बाद मांटरीयल शहर में ही फ्रांसीसी लोगों की तादाद सब से अधिक है. यहां पर फैशन और सुंदर

मकानों की बहुतायत है. इस शहर में लगभग पांच हजार रेस्तरां हैं.

नरेंद्र व्यवसाय स्कूल में उद्यमी अनुसंधान के प्राध्यापक थे. शुरू में तो गणित पढ़ाते थे, पर बाद में यह विषय पढ़ाने लगे. एक तरह से उन्हें सेवानिवृत्त होने की जल्दी ही पड़ी थी. इतने वर्षों में काफी कुछ कमा लिया था और बचाया भी खूब था. मांटरीयल में बहुत सी जायदाद खरीदी हुई थी, जिसे किराए पर चढ़ाया हुआ था. मकानों की खरीदफरोख्त में उन्होंने पिछले 20 वर्षों में बहुत पैसा कमाया था. अब तो वह चाहते थे कि आराम से जीवन बिताएं. जो पैसा कमाया है, उस का कुछ सुख लूटें. यह नहीं कि कमाकमा कर बस बच्चों के लिए ही ऐश करने के लिए छोड़ जाएं.

प्रोफेसर नरेंद्र की विश्वविद्यालय में इतनी साख थी कि सेवानिवृत्त होने के पश्चात भी विश्वविद्यालय वाले उन से संबंध बनाए रखने के लिए आतुर थे. वैसे वह भी चाहते थे कि उन का दफ्तर विश्वविद्यालय के पास ही रहे, क्योंकि इस से मन भी बहल जाएगा और अपने विषय से संबंध भी बना रहेगा.

प्रोफेसर नरेंद्र के सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में बड़ी जोरदार दावत का आयोजन किया जा रहा था. व्यवसाय स्कूल के विद्यार्थी अलग से दावत दे रहे थे. उस दावत में व्यवसाय स्कूल के लगभग सभी प्रोफेसर आमंत्रित थे. व्यवसाय स्कूल के प्रोफेसरों द्वारा दी जाने वाली दावत में तो केवल प्रोफेसर और विश्वविद्यालय के अधिकारी ही थे. वह दावत एक दिन शाम को हुई थी. प्रोफेसर नरेंद्र को कई अच्छेअच्छे उपहार मिले थे. दावत में विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी आए थे. दावत का माहौल बड़ा ही औपचारिक रहा. कम से कम प्रोफेसर नरेंद्र को तो मजा नहीं आया.

विद्यार्थी जिस दावत का आयोजन कर रहे थे, वह बड़े पैमाने पर होने वाली थी. उन्होंने प्रोफेसर नरेंद्र के पढ़ाए न जाने कितने पुराने विद्यार्थियों को निमंत्रण भेजा था. विश्वविद्यालय के बड़े भवन में पहले स्वागत समारोह होने वाला था. उस के पश्चात खानेपीने का इंतजाम किया गया. लगभग एक हजार लोगों के आने की आशा थी. दावत के नौ सौ से अधिक टिकट बिक चुके थे. हर टिकट 25 डालर का था. सारा इंतजाम बड़े ही सुचारु ढंग से किया गया था.

प्रोफेसर नरेंद्र को व्यवसाय स्कूल की संचालिका डाक्टर कैथरीन विलियम्स अपने साथ दावत में ले जाने वाली थीं. कैथरीन पिछले तीन वर्षों से इस पद पर थीं. उन की देशविदेश में बहुत साख थी. न जाने कितनी मुख्य प्रांतीय और केंद्रीय सरकार की समितियों की वह सदस्या थीं. वह प्रोफेसर नरेंद्र का बहुत मान करती थीं, क्योंकि बरसों पहले वह उन की शिष्या रह चुकी थीं.

कैथरीन और प्रोफेसर नरेंद्र जब सभा भवन में पहुंचे तो हाल में बैठे सभी लोग खड़े हो गए और खूब तालियां बजीं. मंच पर प्रोफेसर के एक ओर कैथरीन बैठी थीं तो दूसरी ओर व्यवसाय स्कूल के छात्र संघ का अध्यक्ष.

प्रोफेसर नरेंद्र की प्रशंसा एक के बाद एक वक्ता कर रहा था. उन के पढ़ाए अनेक विद्यार्थी मंच पर आ कर अपनेअपने संस्मरण सुना रहे थे. ऐसा लगता था कि वह काफी कठोर अध्यापक थे. प्रश्नपत्र कठिन बनाते थे और परीक्षा की कापियां भी कठोरता से जांचते थे. विद्यार्थियों को अनुत्तीर्ण करने में जरा भी दया नहीं दिखाते थे. जिस ने परीक्षा की कापी में जैसा लिख दिया, वैसे ही अंक पाए, न कम न ज्यादा. पर विद्यार्थी उन की कठोरता की सराहना कर रहे थे. हालांकि उन को उस समय बहुत बुरा लगता था, परंतु जीवन के अनुभवों ने उन्हें सिखा दिया था कि अगर आगे बढ़ना है तो कठोर बनना ही पड़ता है.

लगभग दो घंटे तक और लोग भाषण करते रहे. अपनी बारी आने पर जब प्रोफेसर नरेंद्र खड़े हुए तो पांच मिनट तक तालियां बजती रहीं. छात्र संघ के अध्यक्ष ने उन से प्रार्थना की कि वह अपने जीवन की कोई ऐसी घटना सुनाएं जिस से विद्यार्थी कुछ पाठ सीख सकें.

प्रोफेसर कुछ क्षण मौन रहे. अपने सिर को अपने दाएं हाथ की दूसरी उंगली से खुजाने लगे फिर उन्होंने बोलना शुरू किया, "बात करीब 20 वर्ष पहले की होगी. उन दिनों उद्यमी अनुसंधान का विषय बस एम.बी.ए. में शुरू ही हुआ था. यह विषय मैं ही पढ़ाया करता था. आज विद्यार्थियों को इस विषय से डर लगता था, आज भी लगता है. पर पहले कहीं अधिक लगता था. अब तो आप लोगों के पास कैल्क्युलेटर हैं. पर पहले गणना करनी काफी मुशकिल पड़ती थी. पर यह विषय अनिवार्य था. बिना इस को उत्तीर्ण किए डिगरी नहीं मिलती थी. न जाने कितने

मैं ने जूली के लिफाफे से पत्र निकाल कर देखा और मुझे लगा कि एक तरफ मेरा विषय है, दूसरी ओर मेरी एक शिष्या का सुनहरा भविष्य.

विद्यार्थी इस विषय को उत्तीर्ण नहीं कर पाए और दो बार अनुत्तीर्ण होने के बाद व्यवसाय स्कूल से निकाल दिए गए.

"आप में से हर किसी ने यही कहा है कि मैं बहुत ईमानदार, सिद्धांतवादी प्रोफेसर रहा हूं. वैसे मैं ने लगभग हमेशा ही काफी ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारियां निभाई हैं. पर एक बार मैं ने वह काम किया कि अगर पकड़ा जाता तो लज्जित कर के इस विश्वविद्यालय से निकाल दिया जाता. लोग मेरे को किसी और विश्वविद्यालय में नौकरी नहीं देते. मेरा कैरियर चौपट हो जाता, लेकिन संयोग से मैं पकड़ा नहीं गया. पर आज तो मैं सेवानिवृत्त हो रहा हूं. अपना जुर्म कबूल कर के इतने लोगों के सामने कम से कम मेरे मन का बोझ तो हलका हो ही जाएगा."

लोग प्रोफेसर नरेंद्र की बात सुन कर चौंक गए कि आखिर उन्होंने ऐसा क्या किया था? कहीं किसी महिला विद्यार्थी के साथ अनुचित संबंध तो नहीं रखे थे? लोगों की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी.

प्रोफेसर नरेंद्र ने सामने रखे जग में से पानी एक गिलास में डाला और पी गए. उन्होंने फिर बोलना शुरू किया, "आप सोच रहे होंगे कि मैं ने ऐसा आखिर किया क्या? जनाब, मैं ने ऐसा संगीन जुर्म किया था कि बताने में भी लज्जा होती है. मैं ने एक छात्रा के अंक बढ़ा दिए थे."

लोगों में चुप्पी की लहर दौड़ गई. वे सोचने लगे कि क्या इन्हीं को इतने वर्षों से व्यर्थ में ही आदर्श अध्यापक समझते आ रहे थे.

चंद क्षणों के बाद प्रोफेसर बोले, "जूली मेरी शिष्या थी. वह आम विद्यार्थियों की ही तरह थी. पहली बार जब उस ने उद्यमी अनुसंधान का विषय लिया तो बुरी तरह अनुत्तीर्ण हो गई. यह नहीं कि उस ने मेहनत न की हो. हफ्ते में दो बार तो मेरे दफ्तर में सवाल पूछने के लिए आती थी. पुस्तक के हर पाठ के आखिर में दिए हुए सब प्रश्न हल कर लेती थी. परंतु न जाने उसे परीक्षा में क्या हो गया कि बुरी तरह अनुत्तीर्ण हो गई.

"मैं एक दिन एम.बी.ए. के कोर्स के निर्देशक से बात कर रहा था. तब उस ने बताया कि जूली बहुत ही प्रतिभाशाली विद्यार्थी है और लगभग हर विषय में वह कक्षा में प्रथम आती है, परंतु मेरे विषय में तो वह अनुत्तीर्ण हो गई थी.

"जूली के पास मेरे विषय को दोबारा लेने के अलावा कोई चारा भी नहीं था. बिना यह विषय उत्तीर्ण किए उसे एम.बी.ए. की डिगरी
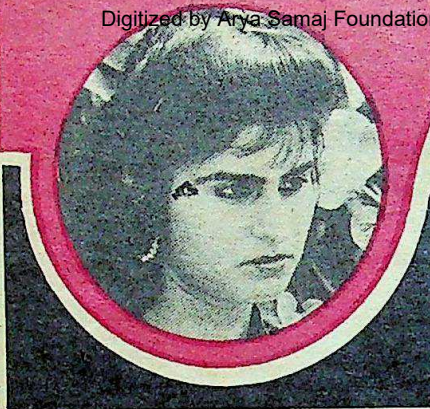
नहीं मिलती और सब से अधिक भय इस बात का था कि अगर दूसरी बार अनुत्तीर्ण हो गई तो उस की सारी मेहनत बेकार हो जाएगी. नियमों के अनुसार उस को दूसरी बार अनुत्तीर्ण होने पर व्यवसाय स्कूल से निकाल दिया जाना था. जूली ने फिर से वह विषय ले लिया. वह पहली बार से कहीं अधिक मेहनत कर रही थी.

''कक्षा में जो पुस्तक प्रयोग में लाई जा रही थी, उस के तो सारे प्रश्न जूली ने पहली बार में ही हल कर लिए थे और इस बार भी किए, वह किसी दूसरे लेखक की उसी विषय की पुस्तक भी मुझ से ले गई. उस पुस्तक में भी दिए हुए लगभग सभी प्रश्न हल कर लिए. पर कक्षा के टेस्ट में जूली अच्छा नहीं कर पाई. लगभग पहली बार जैसा ही उस का परिणाम रहा. मैं आश्चर्यचकित था कि इस विषय में टेस्ट या परीक्षा देते समय उसे क्या हो जाता है. बेचारी बहुत परेशान हो जाती थी. मैं ने उसे सुझाया कि क्यों न वह डाक्टर से कोई घबराहट कम करने की गोली ले ले. पता नहीं जूली ने मेरी राय मानी या नहीं मानी.

''परीक्षा भी आ गई. ऐसा लगता था कि जूली दिनरात मेहनत कर रही है. मैं परीक्षा के दिन न्यूयार्क गया हुआ था, इसलिए परीक्षा भवन में न जा सका. मेरे एक सहयोगी ने ही परीक्षा भवन की मेरी अनुपस्थिति में देखरेख की. परीक्षा शुक्रवार की थी. न्यूयार्क में मैं इतवार तक रहा. सोमवार को सवेरे जब विभाग में पहुंचा तो जूली मेरे दफ्तर के कमरे के सामने मेरी प्रतीक्षा कर रही थी. वह बहुत घबराई हुई थी. मैं कमरे में पहुंचा तो वह कुरसी पर बैठ गई और सिसकसिसक कर रोने लगी. मैं घबराया कि किसी ने बाहर सुन लिया तो लोग क्या सोचें. जूली ने शांत होने पर बताया कि उस ने मेरी सलाह मान कर घबराहट कम करने की गोली खा ली थी. परंतु उस का असर अच्छा नहीं हुआ. उसे परीक्षा के समय नींद सी ही आती रही. पता नहीं, वह क्या कर बैठी, प्रश्नों के उत्तर में. मैं ने उसे समझाया कि अब जो परीक्षा में हो गया, उसे तो बदला नहीं जा सकता. मैं आज परीक्षा की कापियां जांचूंगा. कल सवेरे तक नतीजा तैयार हो ही जाएगा. जूली यह सुन कर चुपचाप चली गई.

''सारा दिन मैं कापियां जांचता रहा. मैं हर कापी को एकएक कर के नहीं जांचता. पहले प्रश्न से प्रारंभ कर के हर कापी का वही प्रश्न जांचता हूं और पहला प्रश्न समाप्त होने पर दूसरा प्रश्न जांचता हूं. परीक्षा के अंकों और टेस्टों के अंकों को जोड़ कर उत्तीर्ण होने के लिए 100 अंकों में से 60 अंक लाने थे. जिस विद्यार्थी के 60 से कम अंक थे, वह अनुत्तीर्ण हो गया.

''मेरी हमेशा की आदत थी कि अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी के अंकों को लाल स्याही के दायरे में बांध देता था. 30 विद्यार्थियों में से केवल तीन विद्यार्थी ही अनुत्तीर्ण हुए थे. दुख की बात यह थी कि इस बार फिर जूली के अंक लाल स्याही के दायरे में गिरफ्तार थे. जूली के 55 अंक आए थे. बाकी और दो अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों के अंक जूली से कम ही थे. मुझे बहुत ही खराब लग रहा था कि जूली इस बार फिर अनुत्तीर्ण हो गई. मुझे मालूम था कि जूली ने बहुत मेहनत की थी. मैं ने भी अपनी ओर से उस की भरपूर मदद की थी. मेरे अनुभव में कोई विद्यार्थी नहीं आया, जो अन्य विषयों में इतना प्रतिभाशाली हो और मेरे ही विषय में

बार अनुत्तीर्ण हो जाए. अगर जूली एकदो अंकों से अनुत्तीर्ण होती तो शायद मैं उसे अनुत्तीर्ण कर देता. परंतु पांच अंकों से अनुत्तीर्ण होने पर उस को उत्तीर्ण करना एक अध्यापक की हैसियत से मैं अपने मन को राजी न कर सका. उस रात मैं सो न सका. काफी देर तक करवटें बदलता रहा. मुझे मालूम था, जूली सवेरे दफ्तर के सामने मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी. उस को कैसे कहूंगा कि वह फिर अनुत्तीर्ण हो गई है. उस की डेढ़ वर्ष की मेहनत मेरे विषय के कारण बेकार होने जा रही थी.

"मैं सवेरे दफ्तर पहुंचा तो जूली मेरी प्रतीक्षा कर रही थी. मेरा रुख देख कर शायद वह भांप गई थी कि उसे मैं अच्छी खबर नहीं देने जा रहा हूं. मैं ने कमरा खोल कर जूली को बैठने के लिए कहा और उसे उस के अंक बता दिए. जूली का चेहरा तो पहले ही बुझा हुआ था. उस को जो शक पहले से ही था, मैं ने बस उस की पुष्टि कर दी थी. जूली कुछ न बोली, उस ने पर्स से एक लिफाफा निकाला और मेरी ओर बढ़ा दिया.

"मैं ने लिफाफे से पत्र निकाला. पत्र हारवर्ड विश्वविद्यालय के विश्वविख्यात व्यवसाय स्कूल से था. उस में लिखा था कि जूली को डी.बी.ए. में छात्रवृत्ति के साथ प्रवेश मिल गया है. मैं अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पाया कि जूली को हारवर्ड विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया है. कुछ वर्षों में वहां से डी.बी.ए. की डिगरी हासिल कर के सफलता उस के कदम चूमेगी. जूली के सुनहरे भविष्य के मार्ग में मेरा विषय दीवार की तरह खड़ा हो गया था. मैं ने जूली की ओर देखा. वह मौन थी: उस की आंखों में जो वेदना थी उस को देखने का साहस मैं न कर सका. मैं उठ खड़ा हुआ और अपने दफ्तर की खिड़की के पास खड़ा हो गया. एक ओर एक अध्यापक का सिद्धांत था तो दूसरी ओर एक प्रतिभाशाली छात्रा का सुनहरा भविष्य था. मैं ने जूली की परीक्षा की कापी निकाली. उस में जूली ने एक प्रश्न का पांच अंकों का भाग नहीं कर रखा था.

"मैं ने जूली से झटपट वह भाग अपने सामने करने को कहा. उस ने 15 मिनट से भी कम समय में उसे ठीक तरह से कर दिखाया. उस प्रश्न पर मैं ने उसे पांच अंक दे दिए. इस तरह जूली के पूरे साठ अंक आ गए. मैं ने सोचा कि बाद में कोई झंझट उठा भी तो कह दूंगा कि आखिरी प्रश्न शायद देखना भूल गया था. जब कापी गौर से देखी तो गलती पता चली. जूली

क्षुद्रग्रहों द्वारा पृथ्वी की तबाही का खतरा

अंतरिक्ष में 0.8 किलोमीटर चौड़े एवं इस से भी बड़े लगभग 1,000 क्षुद्रग्रह हैं, जो कभी भी पृथ्वी की कक्षा में आ कर उस से टकरा सकते हैं. वैज्ञानिकों द्वारा इन में से 100 का तो स्थान निर्धारण किया जा चुका है. लेकिन शेष में से कोई भी बड़ा अज्ञात ग्रह पृथ्वी से टकरा कर उस में तबाही मचा सकता है. यह भी संभव है कि वैज्ञानिकों को उन के आधुनिक उपकरणों द्वारा इस की चेतावनी भी न मिल पाए और पलक झपकते ही समूची सभ्यता का विनाश हो जाए.

प्रायः तीन लाख वर्षों में एक बार अंतरिक्ष के गोलाश्म पृथ्वी से टकरा कर 100,000 मेगाटन की क्षमता के परमाणु बल जितना विस्फोट करते हैं.

1908 में साइबेरिया के वेस्टलैंड में एक छोटा धूमकेतु या क्षुद्रग्रह पृथ्वी पर गिरा था. यद्यपि उस से कुछ ही लोगों की जानें गई थीं, लेकिन उस बड़ी चट्टान ने सैकड़ों वर्ग मील लंबेचौड़े जंगल का एकदम सफाया कर दिया था. इस से पृथ्वी की नाजुकता का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है. पृथ्वी पर इस प्रकार का विस्फोट एक शताब्दी में एक बार हो सकता है.

यह भी संभव है कि तात्कालिक विनाश से पूर्व आकाश में इतनी अधिक धूल एवं मलवा फैल जाए कि कई महीनों या वर्षों तक पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश ही न पहुंच सके और परिणामस्वरूप पर्यावरण में इतनी शीतलता आ जाए कि किसी भी प्रकार की खेती करना संभव ही न हो.

अपनी आंखों पर विश्वास न कर सकी. वह रोने लगी. मैं ने जूली से कह दिया कि किसी को इस बात की खबर न लगने पाए. जूली आश्वासन दे कर चली गई और आज तक यह बात एक राज ही बनी रही." इतना कह कर प्रोफेसर नरेंद्र अपनी कुरसी पर बैठ गए. कुछ लोगों ने तालियां बजाईं, पर जोश की कमी थी.

कार्यक्रम की आखिरी वक्ता थीं, कैथरीन विलियम्स. व्यवसाय स्कूल की संचालिका की हैसियत से वह आने वाले लोगों को धन्यवाद अदा करने वाली थीं. लोग अब उठने की तैयारी में थे.

कैथरीन ने बोलना शुरू किया, "प्रोफेसर नरेंद्र ने जिस जूली की कहानी आप को सुनाई है, मैं उस जूली को जानती हूं."

सुनते ही हाल में एकदम चुप्पी छा गई. लोगों की उत्सुकता बढ़ गई.

कैथरीन आगे बोलीं, "दो बच्चों की मां थी, जूली. बच्चे बड़े हो गए थे. स्कूल जाने लगे थे. उस ने इधरउधर ढंग की नौकरी पाने की कोशिश की. पर नौकरी न मिली. इसलिए एम.बी.ए. में प्रवेश ले लिया. कोर्स के दौरान पता चला कि पति किसी और कम उम्र युवती के चक्कर में फंसे हैं. उसी दौरान तलाक भी हुआ. जूली की अगर प्रोफेसर नरेंद्र मदद नहीं करते तो पता नहीं उस बेचारी का क्या होता. वह तो शायद आत्महत्या ही कर लेती. पर प्रोफेसर नरेंद्र ने उस की मदद कर के उसे जीवन ही नहीं एक सुनहरा भविष्य भी दिया. वह आज इज्जत और गर्व से समाज में घूमफिर सकती है."

कैथरीन कुछ क्षणों के लिए रुक गईं. उन्होंने पानी पिया और आगे बोलीं, "आप को जूली के बारे में जानने की उत्सुकता होगी. मैं बता ही देती हूं. प्रोफेसर नरेंद्र की जूली मैं ही हूं."

तभी प्रोफेसर नरेंद्र उठ खड़े हुए. वह कैथरीन की ओर बढ़े. कैथरीन भी उन की ओर बढ़ीं, प्रोफेसर ने कैथरीन को गले लगा लिया. लोग तालियां बजाने लगे. हाल में कोई भी बैठा नहीं रहा. प्रोफेसर नरेंद्र और कैथरीन की आंखें नम हो गईं. कैथरीन की सफलता देख कर प्रोफेसर नरेंद्र को अपना किया हुआ अनैतिक कार्य कभी भी अपराध नहीं लगा था.

कैथरीन जैसी शिष्या कभीकभार ही किसी अध्यापक के जीवन में आती है. पर जब आती है तो अपनी अमिट छाप छोड़ कर जाती है.

सावधान

नकली पुलिस अधिकारी गिरफ्तार

मद्रास के अन्नानगर क्षेत्र में चार व्यक्तियों ने पुलिस कर्मियों का रूप बना कर वहां के एक निवासी को लूट लिया. वे चारों एक पुलिस इंस्पेक्टर, एक सब इंस्पेक्टर और दो कांस्टेबल के रूप में उस व्यक्ति के पास गए और उस पर जाली पासपोर्ट के धंधे में शामिल होने का आरोप लगाया. उन्होंने कहा कि यदि वह मामले को खत्म करना चाहता है तो 15 हजार रुपए देदे. उस आदमी ने अपना पिंड छुड़ाने के लिए सात हजार रुपए दे दिए लेकिन उन्होंने और धनराशि की मांग की. तब उस व्यक्ति ने तंग आ कर पुलिस के खुफिया विभाग को सूचित कर दिया, जिस के परिणामस्वरूप उन चारों को गिरफ्तार कर लिया गया.

—न्यूज टुडे, मद्रास

*

झूठा संसद सदस्य

पिछले दिनों आसनसोल में 70 वर्षीय श्री.के.एम. शर्मा को पुलिस ने गिरफ्तार किया जो अपने आप को राज्य सभा का सदस्य बताता था. पुलिस का कहना है कि वह आसनसोल के विभागीय रेल प्रबंधक से बात करना चाहता था. जांच करने पर पता चला कि इस नाम का कोई भी व्यक्ति उत्तर प्रदेश से सांसद नहीं है. भारतीय दंड संहिता की धारा 419 के अंतर्गत उस पर अभियोग लगाया गया है.

—स्टेट्समैन, कलकत्ता

*

जाली पासपोर्ट ने जेल की सैर कराई

पिछले दिनों दिल्ली पुलिस ने बाबूलाल और मोहम्मद हनीफ नामक दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया. ये दोनों पिछले दो वर्षों से जाली पासपोर्ट व वीसा बनाने वाले एक गिरोह के लिए काम कर रहे थे.

पुलिस ने दलालों के माध्यम से पासपोर्ट बनवाने वाले लोगों को सतर्क किया है कि ऐसे लोगों से बचें और किसी भी तरह की परेशानी या जानकारी के अभाव की स्थिति में संबंधित विभाग से स्वयं मिलें.

—विश्वमित्र, कलकत्ता

*

अपराधी को कैद करने के लिए, गंध कैद की जाएगी

रोटेरडम पुलिस ने अपराधियों को पकड़ने का एक नायाब तरीका ईजाद किया है. अब पुलिस, अपराधियों की भविष्य में निशानदेही के लिए उन के शरीर की गंध को कैद करेगी. इस के लिए अपराधी के शरीर के कपड़े का टुकड़ा विशेष रसायनों से भरे ग्लासजार में रखा जाएगा.

इस तरह अपराधी की गंध को तीन वर्ष तक सुरक्षित रखा जा सकेगा.

—अमर उजाला, मेरठ ●

अपने बच्चों को ईमानदार, सच्चा व मेहनती नागरिक बनाएं
उन्हें पढ़ने के लिए दीजिए रंगीन व आकर्षक चित्रों से सजीधजी नन्हे नागरिकों की मनोरंजक पत्रिका
चंपक
बच्चों की बेजोड़ पत्रिका
चंपक की कहानियों में न जादू टोना होता है न अलौकिक पौराणिक कहानियों का मायाजाल. चंपक की कहानियां बच्चों को साहस, चतुराई, अनुशासन, परिश्रम और मैत्री भाव की शिक्षा देती हैं. इसके चित्र, रंगीन छपाई और ज्ञानवर्धक लेख बच्चों को पढ़ाई के प्रति आकर्षित भी करते हैं.
हर अंक में
• चीकू, डिंकू, राजू और नन्ही गिलहरी, चुंचू जैसी कई गुदगुदाने वाली चित्रकथाएं
• चुटकुले
• अनेक पहेलियां
• विश्व के महत्त्वपूर्ण नगरों, संग्रहालयों और इमारतों की जानकारी
अपने बच्चे को खरीद कर दें चंपक का लुभावना उप

जाल

कहानी • सुरेशकुमार गोयल

टेलीफोन की घंटी ने कमल को चौंका दिया, बत्ती जलाई और घड़ी पर एक नजर डाली. रात के तीन बजे थे. हस्पताल से फोन आया था. वे कांता को प्रसूति कक्ष में ले जाने वाले थे. कमल ने फटाफट कपड़े पहने और 10 मिनट के अंदर ही कार से हस्पताल के लिए रवाना हो गया. एक नजर कमल ने अपनी दुकान पर डाली जो घर के नीचे वाली मंजिल पर थी. सब कुछ ठीक ही था. सड़क लगभग खालीखाली सी ही थी. आधे घंटे से कम समय में ही वह हस्पताल पहुंच गया. कांता और कमल दोनों की ही इच्छा थी कि प्रसव के समय कमल कमरे में ही हो.

परदेश में घर का तो कोई और पास था नहीं, जो कांता को साहस बंधाता. हस्पताल पहुंचने पर कमल को नर्स ने बताया कि ''शल्यचिकित्सा करनी पड़ रही है, इसलिए कमल को कांता के पास जाने की मनाही है.''

कमल शल्यचिकित्सा की बात सुन कर घबराया परंतु नर्स ने उस को सारी समस्या अच्छी तरह समझा दी, ''चिंता की कोई बात

जिस कांता से विवाह रचाने के लिए कमल ने एक झूठ के जाल से अपने व्यक्तित्व को ढक लिया था, उसी कांता ने एक दिन अचानक उस जाल को खींच कर कमल की असलियत को उजागर कर दिया. किंतु क्या इस रहस्योद्घाटन से उन दोनों के दांपत्य जीवन पर कोई प्रभाव पड़ पाया?

नहीं. ऐसा तो यहां के डाक्टर दिन में कई बार करते ही हैं."

कमल यही सोच रहा था कि बस कुछ समय बाद वे दो से तीन हो जाएंगे. बेटा या बेटी, चाहे कोई भी पैदा हो परंतु होना सब तरह से ठीक ही चाहिए.

कमल ने सिगरेट सुलगा ली. उस को न जाने क्यों, बीते दिनों की याद आ गई, कांता चार साल पहले ही तो शादी के बाद लंदन आई थी. अब उन की गृहस्थी में एक फूल खिलने वाला था. जून 1960 में वह लंदन पहली बार आया था. कांता 1968 में आई थी. उन आठ वर्षों में वह दो बार भारत गया था. पहली बार जब पिताजी को दिल का दौरा पड़ा था तो उन की तेरहवीं करा कर ही लौटा. दूसरी बार 1966 में मां के निधन पर गया था.

पिछली बार बड़े भैया और भाभी के व्यवहार पर उस का दिल बहुत खट्टा हुआ. मातापिता भैया के साथ ही रहते थे. जो भी उन की जमा पूंजी थी, वह सब बड़े भैया और भाभी ने यह कह कर हड़प ली कि इतने वर्ष हम ने मातापिता का भार तो उठाया. उन की सेवा भी की, इसलिए हमारा ही सारा हक बनता है. तुम तो लंदन में ऐश करते रहे और हम मांबाप की सेवा में खटते रहे.'

ऐसी बात भी नहीं कि कमल ने मातापिता के पैसों या वस्तुओं में से कुछ अपना हक मांगा हो, परंतु भैयाभाभी ने जो बहाना बना कर सब हड़प कर लिया, वह उसे अच्छा न लगा. अगर उस ने अपना हक साफसाफ मांग लिया होता तो शायद दोनों भाइयों में अनबन हो ही जाती.

कमल को तो अपने भतीजे बंटी और भतीजी रीना से बेहद प्यार था. इसलिए उस ने बड़े भैया से पत्रव्यवहार बनाए रखा. उन दोनों के जन्म दिन पर खिलौने खरीद कर भेज देता था. वे दोनों भी उस पर जान छिड़कते थे. भाभी भी ठीक ही थीं. बड़े भैया शादी से पहले तो बहुत अच्छे थे, कमल से बेहद लगाव था उन का. पर शादी के बाद कुछ बदल से गए थे.

बेचारे करते भी क्या, शादी के तीन वर्ष के अंदर ही तो दो बच्चे हो गए. पिताजी को भी थोड़ीबहुत तकलीफ रहती थी. उन की दवा और डाक्टर का खर्चा हमेशा ही लगा रहता था. सीमित आय में गुजारा मुशकिल से ही चल पाता था. वैसे कमल भी हर महीने पैसे भेजता ही रहता था. वह भी बहुत अधिक न बचा पाता था. मां की मृत्यु के पश्चात तो कमल ने भी पैसे भेजने बंद कर दिए थे. अगर भेजता भी तो शायद भैया उस से लेते नहीं.

कमल 30 वर्ष से ऊपर का हो चुका था. वह जीवन के उस मोड़ पर खड़ा था जिस में आगे बढ़ने के लिए उसे जीवन साथी की आवश्यकता महसूस होने लगी थी. उस के साथ जितने भी लोग लंदन आए थे, सब ने शादी कर ली थी. केवल वह ही अब तक कुंआरा था. उस ने सोच लिया कि इस साल अक्तूबर या नवंबर में भारत जा कर शादी करा कर ही आएगा. बड़े भैया के पास उस के लिए रिश्ते आते ही रहते थे, पर वह बहुत बात आगे नहीं बढ़ाते थे. शायद उन को अपने परिवार की समस्याओं को सुलझाने से ही समय नहीं मिल पाता था.

कमल को अपनी भाभी के चुनाव पर अधिक विश्वास नहीं था. उस ने खुद ही दिल्ली के एक अखबार में विज्ञापन दिया और लड़कियों के परिवार वालों से पत्रव्यवहार किया. उस ने पांच लड़कियों को चुना, जिन्हें दिल्ली जा कर देखने के पश्चात उस का 'मंगनी पट ब्याह करने' का इरादा था.

कमल ने पांच हफ्ते की छुट्टी ले ली और ने लंदन से ही शादी के लिए कुछ खरीदारी कर ली. दिल्ली पहुंचा तो भाभी तो इस अवस्था में नहीं थी कि इधरउधर उस के साथ लड़कियां देखने जा सकें. भैया भी केवल इतवार को ही जा सकते थे. तय यह हुआ कि कमल खुद ही लड़कियां देख आए और बात पक्की कर

और फिर शादी करा कर ही अपनी पत्नी के साथ लंदन जाए.

कमल ने एकएक कर के चार लड़कियां देखीं, पर बात कुछ खास जमी नहीं. आखिरी लड़की का नाम था कांता. बी.ए. करने के पश्चात उस ने अध्यापिका बनने का प्रशिक्षण ले रखा था. 25 वर्ष से ऊपर उम्र थी. पिछले चार साल से घर पर बैठी हुई थी. कभी कोई पक्की नौकरी मिली ही नहीं और दिल्ली के बाहर मातापिता ने नौकरी के लिए जाने नहीं दिया. शादी करने के लिए मातापिता के पास पैसे भी नहीं थे. इसलिए बस घर ही बैठी हुई थी. क्या करती बेचारी और क्या करते उस के मातापिता.

कांता को देख कर कमल को ऐसा लगा कि उसे अपनी मंजिल मिल गई है. कांता के मातापिता उस को बिरला मंदिर में दिखाने लाए थे. वे वहां बाग में दरी बिछा कर बैठे थे. कुछ खानेपीने का सामान भी था.

''आप ने अध्यापिका का प्रशिक्षण लेने के बाद क्या किया?'' कमल ने कांता से पूछा.

''कभी कोई पक्की नौकरी मिली ही नहीं.'' कांता ने नीची निगाहें किए हुए कहा. पता नहीं, कितनी बार उस को इस तरह से दिखाया गया था लेकिन कहीं शादी तय नहीं हो पाई थी.

''आप लंदन में कहां काम करते हैं?'' कांता की मां ने बरफी की प्लेट कमल के

अचानक ही कांता की गरदन दाईं ओर घूम गई. उस ने ड्राइवर की सीट पर कमल को बैठे देखा.

सामने रखते हुए कहा.

"लंदन में वहां के परिवहन विभाग में काम करता हूं," कमल ने बरफी का टुकड़ा उठाते हुए कहा.

कमल और कांता को कुछ देर के लिए अकेला छोड़ कर बाकी के लोग मंदिर में चले गए. इस दौरान न तो कमल ने ही कांता से कुछ पूछा और न ही कांता ने कमल से कुछ कहा. लगभग आधे घंटे में सब वापस आ गए. उन को आता देख कमल ने कांता से बस यही कहा, "बहुत अधिक गरम कपड़े मत खरीद लेना. बस एक जोड़ा बहुत है. वहां जा कर अपने मनपसंद कपड़े खरीद लेना. अच्छे भी मिलेंगे और सस्ते भी."

सुनते ही कांता शरमा कर उठ खड़ी हुई और अपने छोटे भाई को जबरदस्ती फिर से मंदिर में ले गई. कमल ने कांता के मातापिता से अपने भैया से उसी दिन शाम को मिलने को कहा.

उसी दिन शाम को कांता के पिताजी कमल के घर आए. भैयाभाभी ने अपनी ओर से पूरी आवभगत की. दहेज की तो कोई मांग थी ही नहीं. लड़का रोकने की रस्म तो उसी शाम कांता के पिता कर गए. अगले दिन कांता की गोद भरने का तय हुआ और एक हफ्ते बाद ही शादी करने का निश्चय किया गया.

कांता का पासपोर्ट भी बनना था. कमल के भैया पासपोर्ट विभाग में किसी उच्च अधिकारी को जानते थे, जिस के कारण पासपोर्ट एक हफ्ते में ही बन गया. शादी बहुत ही साधारण ढंग से हुई. इतने थोड़े समय में अधिकतर संबंधी भी नहीं आ सके थे.

शादी के दूसरे दिन ही कमल कांता को ले कर ब्रिटिश हाईकमीशन गया और उस के पासपोर्ट पर ब्रिटेन जाने की इजाजत की मुहर लगवा ली. कुछ ही दिनों में वे लंदन आ गए. लंदन में कांता को घर जमाने में अधिक परेशानी नहीं हुई. कुछ सामान तो वे दोनों भारत से ही ले आए थे. वैसे भी इतने वर्षों में कमल ने जरूरत की सारी चीजें खरीद ली थीं.

लंदन आ कर कांता अचानक ही बेहद अकेलापन महसूस करने लगी थी. दिन में कम से कम 10 घंटे उसे अकेले ही गुजारने पड़ते थे. सवेरे सात बजे कमल घर से चला जाता था. उस के जाने के बाद कांता फिर सो जाती थी. नौ बजे उठ कर कुछ नाश्ता कर के नहा लेती थी. फिर बाजार निकल जाती. खरीदारी तो कुछ खास नहीं करनी होती थी, पर दुकानों में सजी चीजें देखने में उसे आनंद आता था. वापस आतेआते 12 बज ही जाते थे. तब टेलीविजन पर कार्यक्रम शुरू हो जाते थे. के बाद वह शाम का खाना बनाती थी. और शाम को साढ़े पांच बजे तक कमल आ ही जाता था.

हर शनिवार को कमल कांता को घुमाने ले जाता था. लंदन की सैर ठंड के महीनों में आसान तो नहीं होती, पर कांता को घूमने का इतना शौक था कि ठंड जैसे उसे महसूस ही नहीं होती थी. कमल अकसर उसे 'साउथहाल' ले जाता, जहां वे चाटपकौड़ी आदि खाते. वहां कितनी ही साड़ियों की दुकानें थीं. एक बार जिद कर के कमल ने कांता के लिए दो साड़ियां खरीद ली थीं.

कांता ने लंदन आने के कुछ दिन बाद नौकरी ढूंढ़ना शुरू कर दिया. उस के पास अध्यापिका के प्रशिक्षण का प्रमाणपत्र था, पर लंदन में कोई उसे मानने को तैयार न था. उस ने रोजगार दफ्तर में नाम लिखाया, दफ्तरों में जा कर आवेदन किया. उसे बड़ा अजीब सा लगता था कि दफ्तरों और दुकानों के बाहर लिखा होता कि काम करने वाले चाहिए परंतु उस को देख कर कोई काम नहीं देता था.

दिल्ली में कांता ने कभी सोचा भी न था कि उस के साफ रंग को ब्रिटेन में लोग नीची निगाह से देखेंगे. ब्रिटेन में तो वह दूसरी एशियाई महिलाओं की तरह ही थी, जो बहुत साधारण काम करती थीं. उसे बड़ा आया कि लंदन के हवाई अड्डे पर एक महिला ही तो मेहतरानी का काम कर रही थी. चाहे उस ने एक दर्जन सोने की मोटीमोटी चूड़ियां हाथों में पहन रखी थीं, पर काम तो वह भंगिन का ही कर रही थी. कांता को फैक्टरी में कपड़े सीने का काम तो मिल रहा था, पर वेतन बहुत ही कम था. इतने कम वेतन पर काम करने का उस का मन न हुआ. वैसे ओर से ढंग का काम खोजने की कांता की कोशिश जारी रही.

कांता को लंदन आए छः महीने हो गए थे. उस की बड़ी इच्छा थी कि एक बार कमल का दफ्तर देख कर आए. पर कमल शा
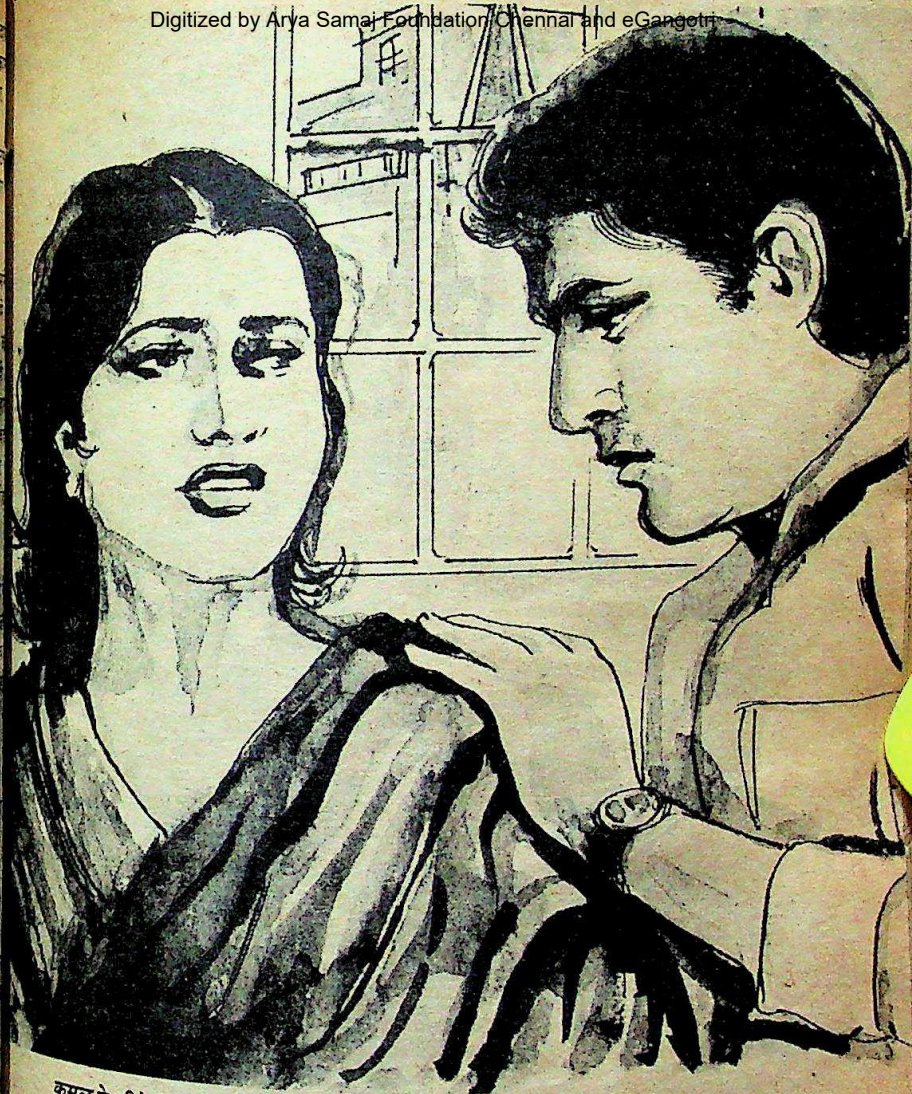
कमल ने धीरे से कहा, "जब बिरला मंदिर में तुम्हारे पिताजी ने पूछा था कि मैं कहां काम करता हूं तो मैं ने सत्य ही कहा था कि मैं लंदन परिवहन विभाग में काम करता हूं."

उस को अपने साथियों से मिलवाने का इच्छुक नहीं था. कांता ने भी जिद न की.

एक दिन कांता एक दफ्तर में साक्षात्कार देने के लिए गई थी. दफ्तर के बाहर निकल कर उस ने सोचा कि घर पैदल जाए या बस से. जब घर से चली थी तब धूप अच्छीखासी थी. बस में आई थी. अब दो बज गए थे. पर धूप का नामोनिशान नहीं था. बादल घिर आए थे. लंदन में बारिश तो कभी भी हो जाती है. कांता ने बस लेने का निश्चय किया. धूप होती तो घर पैदल ही जाती. तीन मील की सैर हो जाती और ऊपर से पैसे भी बच जाते. कुछ देर बस स्टाप पर खड़ी रही. बस आई तो वह उस में चढ़ गई.

15 मिनट बाद उस के घर के पास वाला बस स्टाप आ गया. कांता बस से उतरने लगी. अचानक ही उस की गरदन दाईं ओर घूम गई. उस ने ड्राइवर की सीट पर कमल को बैठा

देखा. ''अरे आप [illegible]
निकल गई. कमल ने उस की ओर देखा. दोनों की आंखें मिलीं. कांता के पीछे वाला बस का यात्री उतरने को आतुर था. न चाहते हुए भी कांता बस से उतर गई.

कांता को ऐसे लगा, जैसे भ्रम के बादल छिन्नभिन्न हो गए हों और सूर्य की किरणों से रोशनी हो गई हो. पिछले छःसात महीनों में उस ने कई बार कमल से अपना दफ्तर दिखाने को कहा था, पर वह हमेशा ही टाल जाता था. बहुत जल्दी बात बदल देता था. तब कांता को अजीब सा लगता था.

उस शाम कमल रोज की तरह समय पर नहीं आया. कांता के चेहरे पर परेशानी के भाव झलक रहे थे. कमल आठ बजे घर पहुंचा. उस को देख कर कांता की जान में जान आई. कमल आ कर सोफे पर बैठ गया. कांता भी उस के पास बैठ गई.

कमल ने धीमे से कहा, ''जब बिरला मंदिर में तुम्हारे पिताजी ने पूछा कि मैं कहां काम करता हूं तो मैं ने सत्य ही कहा था कि मैं लंदन परिवहन विभाग में काम करता हूं. उन्होंने सोचा होगा कि मेरी अच्छी नौकरी होगी. यह पूछने की आवश्यकता ही नहीं समझी कि मैं क्या काम करता हूं. तुम्हारे से पहले मैं ने जितनी भी लड़कियां देखी थीं उन से साफसाफ कह दिया था कि मैं क्या काम करता हूं. शायद इसी कारण से कहीं बात नहीं बनी.

''तुम्हें देख कर मैं तुम को खोना भी नहीं चाहता था. अगर तुम्हारे पिताजी मुझ से मेरे काम के बारे में पूछते तो मैं झूठ तो नहीं बोलता, पर अपनी ओर से सत्य कहना भी नहीं चाहता था. मैं हमेशा डरता था कि किसी न किसी दिन सचाई सामने आ ही जाएगी. फिर मैं तुम को क्या जवाब दूंगा. तुम ने देखा ही है कि यहां नौकरी मिलना कितना मुशकिल है. मैं ने पता नहीं कितनी कोशिशें कीं पर हार कर बस ड्राइवरी करनी ही पड़ी. ओवरटाइम करने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती, नहीं तो अब तक पैसा जमा कर के कोई दुकान ही खोल लेता और बस ड्राइवरी की नौकरी छोड़ देता.''

''आप ने मुझे पहले क्यों नहीं बताया. अगर मुझे मालूम होता तो यहां आ कर तुरंत ही कोई न कोई काम करना शुरू कर देती. [illegible] से काम [illegible] तो कमाती. देखना, अब कितनी जल्दी दुकान खुलती है. आज से हर शनिवार को घूमनेफिरने और बाहर खाना खाने की फ़ुजूलखर्ची बंद,'' कांता ने कहा.

''मुझे इस बात का हमेशा ही खेद करेगा कि मैं ने तुम्हारे पिताजी को अपनी नौकरी के बारे में अंधेरे में रखा.'' कमल ने उदास स्वर में कहा.

''आप जिस को अंधेरा कहते हैं, उस अंधेरे के कारण ही मेरे जीवन में उजाला हुआ है. पता नहीं, अगर आप पिताजी को अपनी नौकरी के बारे में कह देते तो वह शादी के लिए राजी होते या नहीं? आप को पति के रूप में पा कर मैं ने जीवन में सब कुछ पा लिया.'' कांता का भावावेश में गला भर आया.

कमल ने कांता को अपनी बांहों में समेट लिया, कमल को ऐसा लगा कि उस के वास्तविक विवाहित जीवन की शुरुआत शायद इसी क्षण से हुई है. पिछले कुछ महीने तो वह अपने ही बनाए भ्रमपूर्ण जाल में फंस गया था जिस से आज कांता की उदारता ने उस को मुक्त करा दिया था.

उस शाम की याद कर कमल के होंठों पर मुसकान खेल गई थी. उस की सिगरेट खत्म हो गई थी. अचानक एक नर्स कमरे से बाहर आई. वह उस की ओर लपका, परंतु नर्स ने कुछ भी न बताया. सब अपने काम में व्यस्त थे या सो रहे थे. वही बस प्रतीक्षा कर रहा था.

पिछले दो वर्षों में कांता ने डट कर मेहनत की थी. एक दुकान में काम करती थी. इस के अतिरिक्त जानपहचान की महिलाओं के वस्त्रों की सिलाई करती थी. धीरेधीरे उसे इतना काम मिलने लगा था कि कभीकभी तो मना करने की भी इच्छा हो आती थी. परंतु उस ने कभी किसी को मना नहीं किया. घर आती दौलत को ठुकराना भला कहां की बुद्धिमानी थी.

कांता की अथक मेहनत का नतीजा यह हुआ कि उन्होंने इस दुकान को खरीद लिया. स्वयं दुकान के ऊपर फ्लैट में ही रहने लगे. इस कारण कांता को दुकान चलाने में दिक्कत भी नहीं हुई. अकेली ही दुकान चला लेती थी. कमल भी शाम को अथवा सवेरे, जब भी मौका मिलता, दुकान पर खड़ा हो जाता और इस से कांता को कुछ आराम मिल जाता था. छुट्टी के दिन कमल [illegible] जिद कर के कांता

दुकान पर आने ही नहीं देता था. कांता उस समय घर का काम और सिलाई का काम कर लेती थी. कांता ने एक अंगरेज लड़की से बात कर रखी थी. कल सुबह जब कमल कांता को हस्पताल ले गया था, तब वह लड़की दुकान पर काम करने आ गई थी. एकदो महीने तो कांता को उसे रखना ही था. कमल भी कुछ दिनों की छुट्टी लेने की सोच रहा था.

कमल ने सोच रखा था कि जब दुकान अच्छी तरह से चल जाएगी तब वह नौकरी छोड़ देगा. कांता भी यही चाहती थी. कमल को रहरह कर वे दिन याद आने लगे, जब वह गरीबी में अकेले इस ठंडे देश में समय बिता रहा था. उस की सारी खुशहाली कांता के कारण ही तो थी. अगर वह इतनी मेहनत और लगन से पैसे नहीं कमाती तो शायद अब तक गरीबी के जाल में ही उलझे रहते.

सवेरे के सात बज गए थे. कमल ने महिला डाक्टर को अपनी ओर आते देखा. वह तेजी से डाक्टर की ओर बढ़ा.

"बधाई हो, तुम एक बेटी के पिता बन गए हो. आठ पौंड की बच्ची थी, इसी कारण मां को इतनी परेशानी हुई," डाक्टर ने कहा.

कमल के जी में आया कि खुशी से डाक्टर को उठा ले. वह धीरे से बोला, "मेरी पत्नी और बच्ची कैसी हैं, डाक्टर."

"दोनों बिलकुल ठीक है. बच्ची को आधे घंटे बाद नर्सरी में देख सकते हो. तुम्हारी पत्नी तो अभी बेहोश है. होश आने में कुछ समय लगेगा," डाक्टर यह कह कर चली गई.

कमल मशीन से काफी ले आया. बड़ी मुशकिल से आधा घंटा कटा. नर्स ने कमल को कांता के पास जाने नहीं दिया. अभी सवेरे का समय था. वार्ड में और महिलाएं भी थीं. वह धड़कते दिल से अपने बच्ची से मिलने गया. नर्स ने बच्ची को उस के हाथों में दे दिया. इतने छोटे बच्चे को उस ने पहले कभी अपने हाथों में नहीं लिया था. बच्ची की आंखें बंद थीं. उस ने उसे चूम लिया. बच्ची की सूरत कुछकुछ कांता से मिलती थी. वह एक जालीदार कंबल में लिपटी थी. कुछ देर तक बच्ची को अपनी बांहों में लिए वह निहारता रहा.

कुछ देर बाद नर्स बच्ची को ले कर चली गई. उस ने बच्ची को जाली के कंबल से ढक दिया था. कमल दूर लेटी अपनी बेटी को देखता रहा. उसे कुछ ऐसा लगा, जैसे वह जालियों वाला कंबल उन के जीवन में आने वाली समृद्धि का सूचक है. वह जीवन में गरीबी के जिस जाल में फंसा हुआ था, उस से तो कांता ने उसे मुक्त कर ही दिया था. कांता का ध्यान आते ही उस की आंखें भीग गईं और कदम कांता के वार्ड की ओर बढ़ने लगे. ●

गर्भ परीक्षण, स्वयं ही घर बैठ कर करें

महिलाओं को गर्भ परीक्षण के दौरान होने वाले तमाम झंझटों से निजात दिलाने के लिए 'प्रेगाकलर' विधि ईजाद की गई है. इस के द्वारा महिलाएं घर बैठे स्वयं गर्भ परीक्षण कर सकती हैं.

इस विधि में एक दो इंच लंबी शीशी एवं इसी लंबाई की एक नली प्रयोग की जाती है. शीशी में एक रासायनिक गोली होती है और नली खाली रहती है. निश्चित तिथि पर मासिक धर्म न होने के ठीक दो दिन बाद इस का प्रयोग किया जा सकता है. किसी चीज में मूत्र एकत्र कर के उस की तीनचार बूंदें बंद शीशी खोल कर नली द्वारा उस में डालनी होती हैं. इस के बाद शीशी फिर बंद कर दी जाती है. फिर शीशी में रखी रासायनिक गोली मिलने से मूत्र की बूंदों का घोल गुलाबी रंग का हो जाता है. जब शीशी में बने उक्त गुलाबी घोल के रंग में परिवर्तन होने लगे तो यह महिला के गर्भवती होने की पहचान है. यदि घोल का गुलाबी रंग परिवर्तित नहीं होता तो समझो कि महिला गर्भवती नहीं है. ●

अपना अपना स्तर

व्यंग्य ● एम. उपेंद्र

गोपालदास की द्विविधा बड़ी विचित्र थी. वैसे उस की हर द्विविधा ही विचित्र होती थी. वह स्वयं भी विचित्र आदमी था. आदमी तो वह मामूली सामर्थ्य का था, पर उस का सोचविचार करोड़पतियों जैसा था. वह दुनिया की हर सुविधा को प्राप्त करना चाहता था. पर उस के पास वे ही सुविधाएं थीं, जो एक मामूली हिंदुस्तानी के पास होती हैं.

गोपालदास सूई से ले कर हवाई जहाज तक का सौदा करता था. परंतु वह खरीदता सुई ही था, वह भी आधे दाम पर. उस के मित्रों को, उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि गोपालदास ने सचमुच ही अपने मकान का निर्माण आरंभ कर दिया है. वह मकान बनाने की योजना पिछले 10 वर्षों से बना रहा था.

जब कभी भी मकान मालिक किराया बढ़ाता तो गोपालदास मकान बनाने की योजना बनाता. पिछले 25 वर्षों में उस ने 25 मकान बदले थे. देखतेदेखते आठ महीनों में मकान बन कर तैयार भी हो गया. उस ने सौदेबाजी की आदत यहां भी नहीं छोड़ी.

नगरपालिका वालों से निर्माण की अनुमति प्राप्त करने के लिए अच्छेअच्छों को रिश्वत देनी पड़ती है क्योंकि वे अपने बाप को भी नहीं छोड़ते. पर गोपालदास उन के बाप का दामाद निकला. यहां पर भी सौदा करने की आदत ही उस के काम आई. जिस समय उस ने अपने मकान के नक्शे नगरपालिका के दफ्तर में दाखिल किए तो संबंधित कर्मचारी ने उस से हजार रुपए की मांग की.

गोपालदास ने साफसाफ कह दिया, "एक सौ रुपए से अधिक नहीं दूंगा."

कर्मचारी ने जवाब दिया, "फिर तो आप सौ साल बाद ही मकान बना पाएंगे.

गोपालदास ने सिफारिश ढूंढ़ने की कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली. दोचार दिन चक्कर लगा कर उस ने दो सौ रुपए देने चाहे. पर कर्मचारी तो ऐसे 56 लोगों को देख चुका था. उस ने आंखें उठा कर भी उस की तरफ नहीं देखा.

ऐसे ही दो सप्ताह निकल गए. गोपालदास ने भी ठान ली कि वह दो सौ रुपए

एक पैसा भी ज्यादा नहीं देगा. इसी उधेड़बुन में एक दिन वह नगरपालिका के दफ्तर से निकल रहा था तो अचानक तेजी से गुजरते हुए एक स्कूटर से उस की मुठभेड़ हो गई. वह सड़क पर ही चारों खाने चित्त हो गया. संयोगवश स्कूटर चालक नगरपालिका का बड़ा अधिकारी था. लोग जमा हो गए.

उन्होंने गोपालदास को अंदर ला कर लिटा दिया. लगभग 15 मिनट बाद उसे होश आया. अपने चारों ओर नगरपालिका के लोगों को देख कर वह कुछ सोचने लगा. इतने में वह अफसर उस के पास आया और हालचाल पूछा. कई दिनों से गोपालदास उस अफसर को देख रहा था. उस ने कराहते हुए उन्हें 'नमस्ते' कहा और उठने का नाटक करते हुए फिर से लुढ़क गया.

अफसर डर गया कि कहीं पुलिस केस न बन जाए. पांच मिनट बाद गोपालदास बातें करने लगा. मौके का फायदा उठा कर उस ने अफसर से अपने काम के बारे में बता दिया. अफसर अब किसी भी प्रकार उस की मदद करना चाहता था. उस ने तुरंत संबंधित कर्मचारी को बुला कर आधे घंटे में अनुमतिपत्र देने की हिदायत दी. आधे घंटे बाद तक गोपालदास उस अफसर के कमरे में बैठ कर काफी पीता रहा. कर्मचारी मन मसोस कर रह गया और गोपालदास को अनुमति मिल गई.

पर उस कर्मचारी की निगाह गोपालदास

नगरपालिका के भ्रष्ट कर्मचारियों के मनसूबे को ध्वस्त कर के गोपालदास ने चक्रव्यूह के पहले दरवाजे को तो पार कर लिया, किंतु मकान बन कर तैयार हो जाने के बाद जब कर निर्धारण की बारी आयी तो पता चला कि उन कर्मचारियों के सामने गोपालदास चारों खाने चित्त हो गए. फिर आगे क्या हुआ? क्या चक्रव्यूह के दूसरे दरवाजे को तोड़ने में उन्हें सफलता मिल सकी?

स्कूटरसवार को देखते ही गोपालदास समझ गया कि यह नगरपालिका का आदमी ही हो सकता है.
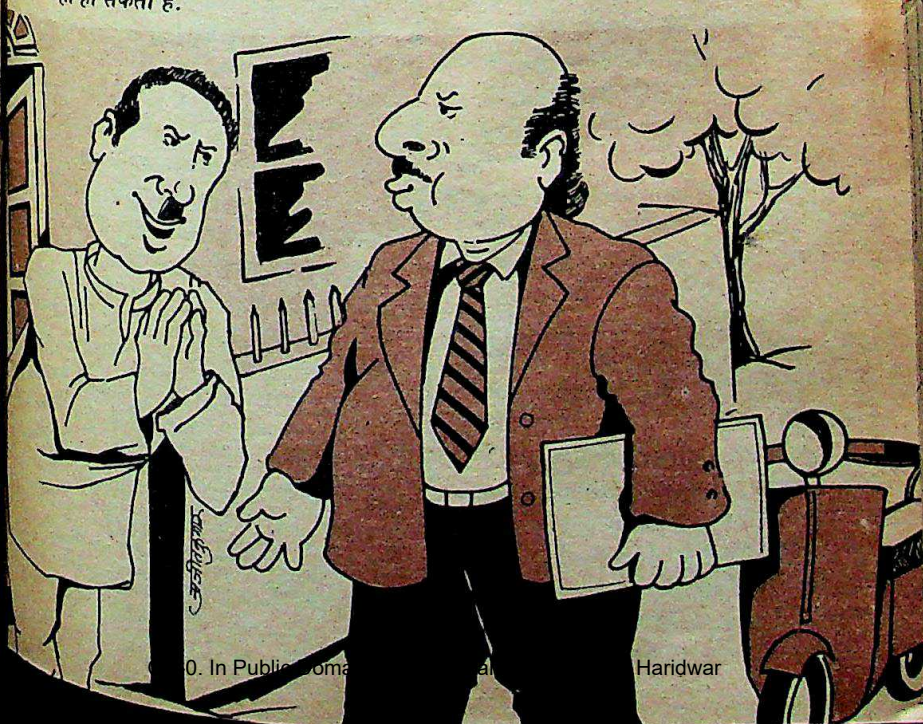
पर टिकी हुई थी. मकान बनवाते समय गोपालदास ने मिस्तरियों, मजदूरों आदि से किस तरह सौदेबाजी की, इस बारे में एक अलग दास्तान लिखी जा सकती है.

परंतु एक बात तो माननी पड़ेगी कि यदि यही मकान कोई दूसरा व्यक्ति बनवाता तो उस पर दोगुना खर्च आता. यद्यपि उस के मकान की लागत तुलनात्मक दृष्टि से कम थी, पर लोग समझते थे कि गोपालदास उस खर्चे को भी बढ़ाचढ़ा कर बता रहा है. यह बात कुछ हद तक ठीक भी थी.

मकान बन गया. बिजली भी जल्दी ही आ गई क्योंकि बिजली विभाग में गोपालदास का एक दोस्त काम करता था. अब गोपालदास मकान वाला आदमी बन गया यानी कि मकान मालिक. अब उसे मकान मालिकों से लड़ने या गिड़गिड़ाने की आवश्यकता नहीं थी.

खुद के मकान में जाने के लिए जब वह किराए का मकान खाली कर रहा था तो उस के मकान मालिक ने भी उस के साथ आशा के विपरीत अच्छा व्यवहार किया पर आश्चर्य तो इस बात का था कि गोपालदास ने भी उस के साथ अच्छा व्यवहार किया.

अन्यथा जब भी उन का सामना होता था तो दोनों कुत्तों जैसे गुर्राते थे. शायद यह गोपालदास के मकान मालिक बन जाने का प्रभाव था. दोनों ने ऐसा ही व्यवहार किया, जैसे एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है.

दोस्तों ने गोपालदास को सुझाव दिया कि मकान तो बन गया, अब जल्दी नगरपालिका से जा कर गृह कर का भी निबटारा करवा लो. गोपालदास सोच में पड़ गया. एक दोस्त ने कहा, "उन से कैसे बच सकते हो? मकान मालिकों और नगरपालिका वालों का संबंध तो पतिपत्नी जैसा ही है. पतिपत्नी का संबंध भी टूट सकता है, पर इन दोनों का संबंध जीवन भर का है."

गोपालदास को उस अफसर की याद आई, जिस के स्कूटर से उस ने मुहब्बत की थी. फिर उस कर्मचारी की भी याद आई, जिसे उस ने हजार रुपयों से वंचित किया था. उसे उस समय बड़ी निराशा हुई, जब पता चला कि हमदर्द अफसर का तो तबादला हो गया है, पर बेदर्द कर्मचारी अभी तक टिका हुआ है.

उस ने कुछ दिनों तक चुप रहना ही उचित समझा.

दो महीने गुजर गए. कोई भी कर अधिकारी गोपालदास के घर नहीं आया. पर गोपालदास तो उन का रास्ता देख ही रहा था. एक दिन नगरपालिका का डाक से नोटिस आया—'आप का मकान बन कर तैयार हो गया है. पर आप ने अब तक उस का कर निर्धारित नहीं करवाया है. एक सप्ताह के भीतर यह काम करवा लीजिए अन्यथा अगली कारवाई की जाएगी.'

गोपालदास दो दिन बाद नगरपालिका के दफ्तर पहुंचा. कुछ लोगों ने उसे पहचाना. जिस कर्मचारी के हजार रुपयों पर गोपालदास ने पानी फेरा था, उस ने देखते ही उठ कर अभिवादन किया, "आइए, गोपालदासजी, बधाई हो आप का मकान बन गया है. हम तो समझते थे, आप मिठाई ले कर आए हैं. खैर छोड़िए... कभी घर आ कर खाएंगे. सुनाइए, क्या हाल है?"

गोपालदास झेंप गया. उस ने नोटिस निकाल कर उन्हें दिखाया. नोटिस देख कर कर्मचारी ने कहा, "फिक्र मत कीजिए. मैं कर निरीक्षक से आप को मिलवा दूंगा."

शीघ्र ही उन्होंने कर निरीक्षक को बुलवाया और गोपालदास का परिचय करवाते हुए कहा, "आप को याद होगा, पिछले साल यह सज्जन दफ्तर के सामने ही हमारे साहब के स्कूटर से टकरा गए थे और साहब ने इन का कार्य ऐसे ही करवा दिया था. एक दिन आप इन के घर का मुआयना कर आइए."

गोपालदास सब कुछ समझ गया. उस ने धन्यवाद दे कर घर का रास्ता पकड़ा. अब हर रोज वह कर निरीक्षक का रास्ता देखने लगा. 10-12 दिन गुजर गए, पर कोई नहीं टपका. गोपालदास की बेचैनी बढ़ती गई. आखिर एक महीने बाद सुबहसुबह जब गोपालदास चाय पी रहा था तो घर के सामने एक स्कूटर रुका.

स्कूटर सवार को देखते ही गोपालदास समझ गया कि यह नगरपालिका का आदमी ही हो सकता है. नगरपालिका वालों की एक खास पहचान होती है, जो केवल मकान मालिक ही जान सकते हैं. उस के हाथों में एक फाइल थी. गोपालदास ने गरमजोशी से उस का स्वागत किया.

निरीक्षक ने कहा, "मैं आप के मकान का
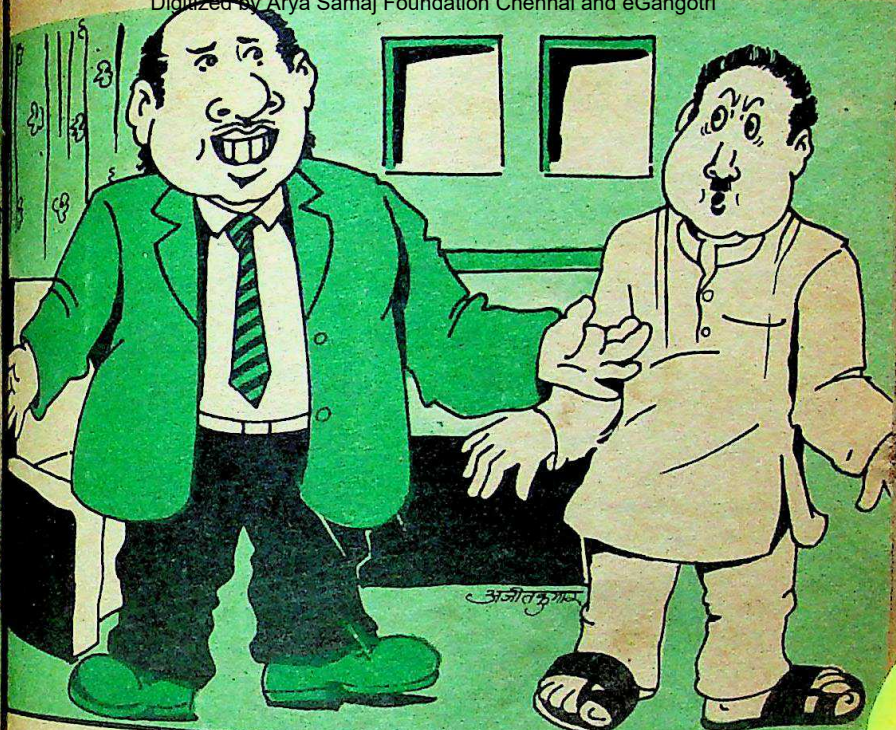
निरीक्षक ने स्पष्ट करते हुए कहा, "बात यह है कि हमारे दफ्तर में इस काम के लिए ढाई हजार रुपए तय हैं."

मुआयना करने आया हूं, ताकि कर की रकम निश्चित हो सके."

गोपालदास ने उसे पूरा मकान दिखाया. कुछ कमरे योजना के अनुसार नहीं थे. सीढ़ियां भी नक्शे के हिसाब से नहीं थीं. निरीक्षक ने इस की ओर ध्यान दिलाया और कहा, "कोई बात नहीं मैं देख लूंगा."

गोपालदास ने सोचा कि चलो, पार हो गए. उस ने चाय के लिए पूछा, पर निरीक्षक ने बड़ी नम्रता से कहा, "मैं चायकाफी, सिगरेटपान आदि कुछ नहीं लेता. आप तकलीफ मत कीजिए."

गोपालदास समझ गया कि जो आदमी चाय नहीं लेता वह और क्या ले सकता है? वह भी मंजा हुआ खिलाड़ी था. उस ने खामोश रहना ही उचित समझा. फिर धीरे से पूछा, "आप के अंदाजे से कितना कर लग सकता है?"

निरीक्षक ने बिना सोचे कहा, "कम से कम पांच हजार रुपया वार्षिक तो लगेगा ही. हम चार महीने के किराए का मूल्य कर के रूप में लगाते हैं और आप के घर का कम से कम डेढ़ हजार तक किराया तो मिल ही सकता है."

गोपालदास चुप रहा. निरीक्षक ने कहा, "हम चारपांच दिन में आप को सूचना दे देंगे." और वह जैसे आया था, वैसे ही चला गया.

गोपालदास की सरगरमी फिर बढ़ गई. उस ने अपने एक दोस्त से इस के बारे में पूछा. उस ने कहा, "वे तो ऐसे ही कहते हैं. कुछ दे दो काम कर देंगे."

गोपालदास को अंदाजा था कि उस के मकान का कर ज्यादा से ज्यादा ढाई हजार हो सकता है. अब ढाई हजार करवाने के लिए कितनी रिश्वत देनी पड़ेगी? गोपालदास रिश्वत विरोधी नहीं था, पर रिश्वत देने का उस का एक स्तर था. उस का विचार था कि रिश्वत, देने वाले की सामर्थ्य के अनुसार ही दी जानी चाहिए न कि रिश्वत लेने वाले की

सामर्थ्य के अनुसार.

एक अन्य मित्र ने सुझाव दिया, "उन के नोटिस की प्रतीक्षा मत करो. जा कर मिल लो और उसे पटा लो. एक सप्ताह बाद गोपालदास नगरपालिका के दफ्तर पहुंचा. वहां जा कर उसे पता चला कि कर निरीक्षक अभी दफ्तर नहीं आया है. वह दो बजे के बाद आता है. वहां पर उस की मुलाकात पुराने बेदर्द कर्मचारी से हुई. उस ने मुसकराते हुए कहा, "आप घर चले जाइए. मैं उन्हें पांच बजे आप के घर भेज दूंगा. आप को दफ्तर आने की क्या जरूरत है, कहीं फिर किसी स्कूटर से टकरा जाएंगे. आप की सेवा करने के लिए हम ही आप के घर आ जाएंगे."

गोपालदास समझ गया कि टक्कर की याद दिला कर उस ने उसे सावधान किया है.

उस दिन पांच बजे निरीक्षक नहीं आया. वादे के अनुसार यदि नगरपालिका वाले घर आ जाएं या काम कर दें तो उन की शान में कमी आ जाएगी. इस तरह लगभग सात दिन गुजर गए. गोपालदास को चिंता लग गई कि निरीक्षक कितना मांग सकता है. दोस्तों ने कहा था कि हजार रुपए तक मांग सकता है. सुनते ही गोपालदास की सांस चढ़ गई. आज तक उस ने किसी को दो सौ रुपए से ज्यादा रिश्वत नहीं दी थी.

एक मित्र ने कहा, "इस बार वे नहीं छोड़ेंगे. इस में पुराना हिसाब भी मिला हुआ होगा."

आखिर 10-11 दिन बाद निरीक्षक ने दर्शन दिए. आराम से कुरसी पर बैठ कर उस ने बड़ी सावधानी से फाइल में से एक कागज निकाला और कहा, "देखिए, साहब, नोटिस तैयार है. हम ने सोचा, जारी करने से पहले आप को बता दें. आप का कर पांच हजार रुपए तक हुआ है. अब आप निश्चित हो जाएं. अब आप भी कर दाता बन गए हैं."

गोपालदास पहले से तैयार था. उस ने सीधे वार किया, "ठीक है, पर मैं चाहता हूं कि मेरा कर ढाई हजार रुपए हो. बताइए, इस के लिए क्या करना होगा."

"अब कुछ भी नहीं हो सकता. हां आप चाहें तो अपील में जा सकते हैं. पर इस बात की कोई गारंटी नहीं कि आप जीत जाएंगे क्योंकि हमारे वकील भी काफी तगड़े हैं. पर इस के लिए आप के कोर्ट कचहरी का खर्च जरूर खर्च हो जाएगा. अब आप सोच लीजिए मैं कल या परसों नोटिस पहुंचा दूंगा."

गोपालदास ने कहा, "वह तो मैं जानता हूं. पर मैं कचहरी जाना नहीं चाहता. इसलिए आप ही बताइए कि दफ्तर में ही यह काम कैसे हो सकता है?"

निरीक्षक खुश हुआ. उसे ऐसी कल्पना नहीं थी कि यह आदमी इतनी जल्दी लाइन पर आ जाएगा. उस ने हंसते हुए कहा, "जरूर हो सकता है. दफ्तर वाले चाहें तो क्या नहीं हो सकता. पर आप को इस के लिए कुछ खर्च करना पड़ेगा. इस काम में कई लोगों की मदद लेनी पड़ती है."

"कितना खर्च करना पड़ेगा." गोपालदास ने पूछा.

निरीक्षक ने कुछ सोच कर बताया, "ढाई हजार वार्षिक बजट करवाने के लिए आप को कम से कम ढाई हजार रुपए खर्च करने पड़ेंगे."

गोपालदास ने पहले ही तय कर लिया था कि उसे कितना देना है. फिर भी उस ने सोचा कि इतनी जल्दी अपना आंकड़ा नहीं बताना चाहिए. उस ने कहा, "ठीक है, मैं चारपांच दिनों बाद आप से मिलूंगा."

निरीक्षक ने कहा, "आप के आने की जरूरत नहीं, मैं खुद आप के पास पहुंच जाऊंगा."

चार दिन बाद सुबहसुबह निरीक्षक फिर हाजिर हो गया. बिना किसी भूमिका के गोपालदास ने कह दिया, "मैं एक हजार रुपए से ज्यादा नहीं दे सकता."

निरीक्षक मन ही मन खुश हो गया. उसे सपने में भी आशा नहीं थी यह आदमी इतनी रकम दे देगा. फिर भी अपना भाव बढ़ाने के लिए उस ने कहा, "नहीं साहब, ढाई हजार रुपए से कम में काम नहीं हो सकता. आप सोच लीजिए, मैं कल परसों आ जाऊंगा." और बिना जवाब सुने वह स्कूटर स्टार्ट कर चला गया.

गोपालदास बेचैन हो गया. उस ने हिसाब लगाया कि 'कचहरी का खर्च कम से कम दो हजार रुपए तो हो ही सकता है. फिर बारबार दफ्तर से छुट्टी लेनी पड़ेगी. चलो डेढ़ हजार में बात तय कर लेंगे.' सात दिन हो गए, लेकिन निरीक्षक नहीं आया. गोपालदास की बेचैनी बढ़ गई, कहीं नोटिस न आ जाए. उस ने

नगरपालिका दफ्तर जाने की सोची. फिर इरादा बदल दिया कि वहां पर तो सभी मगरमच्छ टूट पड़ेंगे.

गोपालदास को मालूम था कि इस काम के लिए एक हजार रुपए उचित है, पर उसे यह भी पता था कि उस के साथ पुराना हिसाबकिताब चुकाया जा रहा है. आखिर 10वें दिन निरीक्षक के दर्शन हुए. वह स्कूटर से नीचे भी नहीं उतरा. उस पर बैठेबैठे उस ने पूछा, "कहिए, क्या तय किया है, आप ने?"

गोपालदास ने उसे अंदर आने के लिए कहा तो निरीक्षक ने इस अंदाज से घर में प्रवेश किया, जैसे वह गोपालदास पर बड़ी मेहरबानी कर रहा हो. उस के बैठने के बाद गोपालदास ने अपना दुखड़ा उस के सामने रोना शुरू किया और अंत में बताया कि डेढ़ हजार रुपए देने के लिए तैयार है.

निरीक्षक भी इसी आंकड़े की आशा कर के आया था. दो मिनट तक उस ने कुछ नहीं कहा.

सिर्फ आंखें बंद कर के कुछ सोचता रहा. फिर आंखें खोलीं और बोला, "ठीक है, आप की परेशानियां मैं समझता हूं. मैं डेढ़ हजार में काम कर दूंगा, पर इस के लिए एक शर्त है."

गोपालदास घबरा गया उस ने कहा, "बताइए, क्या है, मैं किसी से भी इस बात का जिक्र तक नहीं करूंगा."

निरीक्षक ने टोकते हुए कहा, "नहींनहीं, आप मेरी बात नहीं समझे. आप यह मत कहिएगा कि मैं ने डेढ़ हजार रुपयों में यह काम किया है. आप यह कहिए कि मैं ने इस काम के लिए ढाई हजार रुपए लिए हैं."

सुनते ही गोपालदास भौचक्का रह गया. यह सचमुच ही बड़ी अजीब बात थी.

निरीक्षक ने स्पष्ट करते हुए कहा, "बात यह है कि हमारे दफ्तर में इस काम के लिए ढाई हजार रुपए तय हैं. अगर मेरे सहयोगियों को यह बात मालूम हो जाए कि मैं ने यह काम डेढ़ हजार में किया है तो वे मुझे जूते मारेंगे और मेरी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी. आखिर हमारा भी एक स्तर है."

गोपालदास को ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसे सरेआम नंगा कर दिया हो. डेढ़ हजार तथा कर की रकम ले कर निरीक्षक ने फिर कहा, "साहब, आप का स्तर अलग है और हमारा स्तर अलग है. पर कभीकभी हमें भी आप के स्तर पर उतरना पड़ता है."

निरीक्षक तो रुपए ले कर चला गया. पर गोपालदास उदास मन से यह सोचने लगा कि उस का स्तर क्या है? ●

विश्व बाल साहित्य
मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक पुस्तकें
वीरान टापू
अनमोल शंख
योगीराज
दुश्मनों के बीच
संकट के साथी
सत्य का बल
अज्ञात द्वीप
घड़ी की टिकटिक
सेट नं. 23
वीरान टापू रु. 2.00
योगी राज रु. 2.50
चीकू से बलवान हारा रु. 2.50
घड़ी की टिकटिक रु. 2.50
दो नारे रु. 2.50
मां को बता देना रु. 2.50
मंगल की सैर रु. 3.00
प्रसिद्ध वैज्ञानिक रु. 3.00
अनोखा मित्र रु. 3.00
पहेली रु. 3.00
आदमी की कहानी रु. 3.00
अज्ञात द्वीप रु. 3.00
हमारी सेना रु. 3.00
घाट का चोर रु. 3.50
सत्य का बल रु. 3.50
राजा की अंतरिक्ष यात्रा रु. 3.50
अनमोल शंख रु. 4.00
शुक्र की खोज रु. 4.00
संकट के साथी रु. 4.00
दुश्मनों के बीच रु. 4.00
पूरा सैट केवल 50 रुपए में.
आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:
दिल्ली बुक कंपनी
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.
पूरे सैट का मूल्य 50 रुपए अग्रिम भेज कर वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक खर्च केवल दो रुपए • यही सैट वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक व्यय सहित मूल्य 57 रुपए • सैट के बजाए चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 15 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें, बकाया वी.पी.पी. से, डाक व्यय अतिरिक्त • कृपया सैट का नंबर अवश्य दें • अग्रिम राशि चैक द्वारा नहीं, केवल

महा लेखाकार बनने का संकल्प जो पूरा न हो सका

लेख • गंगाप्रसाद मिश्र

घर की परिस्थितियों के कारण मैं मैट्रिक के आगे नहीं पढ़ पाया था. मुझे 12 मई 1950 का वह दिन अभी भी अच्छी तरह से याद है जब मैं उप महालेखाकार (डाकतार) के कार्यालय में निम्न श्रेणी लिपिक के पद पर नौकरी में लगा था.

इसे संयोग ही कहिए कि उसी दिन उस कार्यालय में अधीनस्थ लेखा सेवा का नतीजा आया था और कुछ लोगों को सभी हार्दिक बधाइयां दे रहे थे. पूछताछ करने पर पता चला कि यह परीक्षा भारतीय लेखा और लेखा परीक्षा विभाग की सब से बड़ी विभागीय परीक्षा है जिसे पास करने वाले कर्मचारी महा लेखाकार तक उन्नति कर सकते हैं.

बस, फिर क्या था, उसी दिन मैं ने मन ही मन महा लेखाकार पद तक पहुंच जाने का संकल्प ले लिया और जल्द से जल्द अधीनस्थ लेखा सेवा परीक्षा पास कर डालने की ठान ली.

नौकरी में लगने के दूसरे महीने से ही मैं विभागीय परीक्षा पास करने की तैयारी में लग गया था पर अधीनस्थ लेखा सेवा की नहीं वरन निम्न श्रेणी लिपिक से उच्च श्रेणी लिपिक के पद पर तरक्की दिलाने वाली परीक्षा की.

मैं दिन भर कार्यालय में काम करता और सुबहशाम घर के कामकाज देखता. पढ़ने का समय ही कहां था? फिर भी 'जहां चाह वहां राह' वाली कहावत मेरी आंखों के सामने झूल जाती थी. मैं शाम को खापी कर आठ बजे ही सो जाता और रात में दो बजे के अलार्म पर जग कर ढाई बजे रात से सुबह के सात बजे तक नित्यप्रति विभागीय परीक्षा की तैयारी करने लगा. छुट्टियों के दिन ज्यादा ही मेहनत करता था. जो कुछ पढ़ता उसे रास्ता चलते, बाजार जाते और नहातेधोते मन ही मन दोहराते चलता.

कार्यालय में काम से थोड़ा सा भी समय मिलते ही अपनी कुरसी पर बैठेबैठे पिछली परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न हल करने लगता था. पहले पिछले पांच वर्षों की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र निर्धारित समय के अंदर हल करने का अभ्यास करने लगा.

इस प्रकार पूरी तैयारी के साथ सितंबर 1951 में मैं इस विभागीय परीक्षा में बैठा और जनवरी 1952 में ज्यों ही इस का नतीजा निकला मुझे उच्च श्रेणी लिपिक के पद पर तरक्की मिल गई.

अब तो मेरी हिम्मत बढ़ गई. मेरी खुशियों का ठिकाना न रहा पर मैं ने विश्राम लेना उचित नहीं समझा. अधीनस्थ लेखा सेवा परीक्षा पास कर के महा लेखाकार

बनने का मेरा सपना मुझे हर समय अपनी मंजिल की याद दिलाता रहता था. इसलिए मैं ने अधीनस्थ लेखा सेवा परीक्षा के प्रथम भाग की तैयारी पूरी लगन और तत्परता से शुरू कर दी.

इस बार छुट्टियों के दिनों में पिछली परीक्षाओं के 10 साल के प्रश्न पत्र निर्धारित समय में कईकई बार हल कर के देख डाले. तैयारी के लिए समय भी काफी था क्योंकि पांच साल की नौकरी पूरी हुए बिना मैं इस परीक्षा में बैठ ही नहीं सकता था. अतः पूरी तैयारी के बाद नवंबर 1955 में मैं इस में बैठा और प्रथम बार में ही उत्तीर्ण हो गया.

मैं ने द्वितीय भाग की तैयारी शुरू ही की थी कि दिसंबर 1956 में पिताजी का देहांत हो जाने से मुझे बड़ा धक्का लगा और पारिवारिक झगड़ेझंझट कुछ ऐसे बढ़े कि द्वितीय भाग की परीक्षा में मैं नवंबर 1958 में ही बैठ पाया. फरवरी 1959 में इस का नतीजा निकला और मैं अधीनस्थ लेखा परीक्षा के द्वितीय भाग में भी उत्तीर्ण हो कर अधीक्षक के पद पर तुरंत तरक्की पा गया.

अब मुझे बताया गया कि अधीक्षक से विभाग के राजपत्रित अधिकारी अर्थात लेखा अधिकारी के पद पर तरक्की पाने के लिए स्नातक होना भी आवश्यक है. अतः मैं ने सुबह के समय चलने वाले कालिज में दाखिला ले लिया और 1965 में स्नातक भी हो गया. 10 अगस्त 1972 से मुझे लेखा अधिकारी के पद पर तरक्की मिल गई.

पर मुझे तो महा लेखाकार के पद तक समय रहते पहुंचने की धुन थी. इस बाबत जब मैं ने पूछताछ की तो पता चला कि राजपत्रित ग्रुप 'ए' में पहुंचने के लिए कोई विभागीय परीक्षा नहीं होती है. ग्रुप 'ए' में कुल रिक्त पदों में से हर साल 40% पदों पर लेखा अधिकारियों में से गोपनीय रिपोर्ट के बल पर चयन किया जाता है.

उत्कृष्ट गोपनीय रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए लगन से काम करना ही काफी नहीं होता वरन हमेशा अपने अफसर के अधिकारी
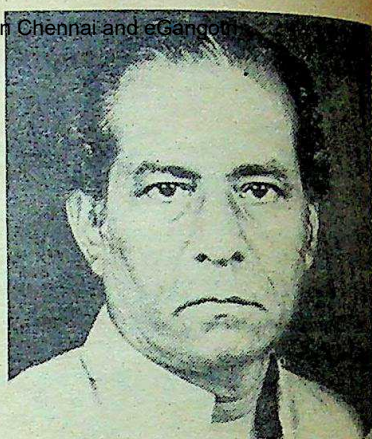
गंगाप्रसाद मिश्र : महालेखाकार के लिए विभागीय परीक्षा के पक्षधर.

को अपनी ओर आकर्षित करते रहना व प्रसन्न रखना पड़ता है. उत्कृष्ट रिपोर्ट लेने के लिए कई प्रकार के पापड़ बेलने पड़ते हैं और कम से कम लगातार तीन साल तक उत्कृष्ट रिपोर्ट मिलनी चाहिए और वह भी अलगअलग अधिकारियों से.

मैं ने स्वयं अपनी आंखों से देखा है कि इसे प्राप्त करने के लिए मेरे कुछ साथी लेखा अधिकारी महा लेखाकार के घर मौकेबेमौके जाते रहते हैं. उन के घरेलू व निजी काम करते रहते हैं. बच्चों को स्कूल पहुंचाते व वापस लाते हैं. वारत्योहारों पर बंगले पर डालियां पहुंचाते रहते हैं. अपने बगीचे की सब्जीभाजी और फल स्वयं न खा कर साहब के घर दे आते हैं. साहब लोगों को प्रायः ही अपने घर भोजन पर आमंत्रित करते रहते हैं.

जब साहब दौरे पर होते हैं तब मेमसाहब की सेवा में हाजिर रहते हैं व जब कभी ये लोग स्वयं दौरे पर जाते हैं तब मेमसाहब और बच्चों के लिए अच्छेअच्छे बेशकीमती कपड़े व अन्य दुर्लभ वस्तुएं उपहार हेतु ले कर लौटते हैं. कार्यालय में हर दिन मौका निकाल कर उप महालेखाकार के पास जीहुजूरी करने या दूसरों की निंदा करने पहुंच जाते हैं.

साहब दौरे से वापस आ रहे हों तो सरकारी गाड़ी के साथ उन्हें लेने रेलवे स्टेशन या हवाई अड्डे पर हाजिर रहते हैं और उसी प्रकार साहब के दौरे पर जाते समय भी उन्हें स्टेशन या हवाई अड्डे पर पहुंचाना नहीं भूलते हैं. इन सभी कामों के लिए एकदूसरे में होड़ सी लगी रहती है.

इस प्रकार महा लेखाकार महोदय की सेवा व जीहुजूरी कम से कम छ:सात साल या कभीकभी, तो 10-12 साल करने के बाद ही दस में से किसी एक लेखा अधिकारी का नाम ग्रुप 'ए' के चयन के लिए दिल्ली भेजा जाता है. सारे भारत से इस प्रकार करीब एक सौ नाम पहुंचते हैं और उन में से भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक किन्हीं 30-40 को ही संघ लोक सेवा आयोग की सलाह से ग्रुप 'ए' में पदोन्नत करते हैं. इस प्रकार उन्नति पाने वाले लेखा अधिकारी उप महालेखाकार के पद पर तरक्की पा कर और यदि उम्र रही तो धीरेधीरे आगे चल कर वरिष्ठ उप महालेखाकार और उन में से इक्केदुक्के अंततोगत्वा महालेखाकार बन पाते हैं.

मुझे तो बिना काम या बिना बुलाए महालेखाकार के घर जाने में ही झिझक सी महसूस होती थी. कार्यालय में भी बिना बुलाए साहब के पास जाने में एक प्रकार की शर्म सी लगती थी. औरों की देखादेखी एक दो बार जीहुजूरी भी करनी चाही पर औंधे मुंह गिरा और आत्मधिक्कार ने पैरों में बेड़ियां जकड़ दी. नतीजा यह हुआ कि महा लेखाकार के पद तक पहुंचने का मेरा संकल्प अधूरा ही रह गया और मैं अगस्त 1989 को अपनी उम्र के 58 वर्ष पूरे कर के प्रवर लेखा अधिकारी के पद से ही सेवा निवृत्त हो गया.

विभाग को मैं ने कई बार सुझाया कि ग्रुप 'बी' से ग्रुप 'ए' में तरक्की के लिए भी यदि विभागीय परीक्षाओं का प्रावधान कर दिया जाए तो यह आपाधापी समाप्त हो जाएगी और अपनी योग्यता के बल बूते पर लेखा अधिकारी ग्रप 'ए' में बेहिचक तरक्की पाने लगेंगे. मेरा यह सुझाव न तो विभाग को पसंद आया और न ही लेखा अधिकारी भाइयों को.

उन का कहना था कि बढ़ती उम्र में परीक्षाएं पास करना संभव नहीं है, उस के लिए भी एक खास उम्र होती है. अजीब बात है, साहब की घरेलू चाकरी बढ़ती उम्र में हो सकती है पर परीक्षाओं में बैठना नहीं हो सकता.

विभागीय परीक्षाओं के अभाव में मैं अपने संकल्प को पूरा करने के लिए आगे संघर्ष नहीं कर पाया. मैं हार गया हूं, क्योंकि चाटुकारिता और साहब की सेवा करना न मुझे आता है और न ही मुझे सिखाया गया है.

किंतु जो मैं स्वयं नहीं पा सकता उस से कहीं अधिक मैं ने अपनी संतानों के द्वारा हासिल कर लिया है. मेरी दो बहुएं और दो बेटे डाक्टर हैं, दो इंजीनियर और एक एडवोकेट है. जिंदगी के इस अंतिम चरण में मुझे अपनेआप से कोई गिला, शिकवा या शिकायत नहीं है. ●

संकल्प, संघर्ष और सफलता

एक संकल्प को पूरा करने के लिए जीवन में संघर्ष करना पड़ता है. संघर्ष के दौर में अनेक तरह के अनुभव होते हैं.

मुक्ता अपने पाठकों से जीवन के उतारचढ़ाव के उसी दौर को जानना चाहती है. ताकि आप का अनुभव अन्य पाठकों के लिए प्रेरणा बन जाए. यह भी हो सकता है कि आप की असफलता की कमियों को दूर कर कोई व्यक्ति जिंदगी की दौड़ में सफल हो जाए.

इस नियमित स्तंभ के लिए आप के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा.

पता है :
मुक्ता, संपादन विभाग, ई-3,
झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055.
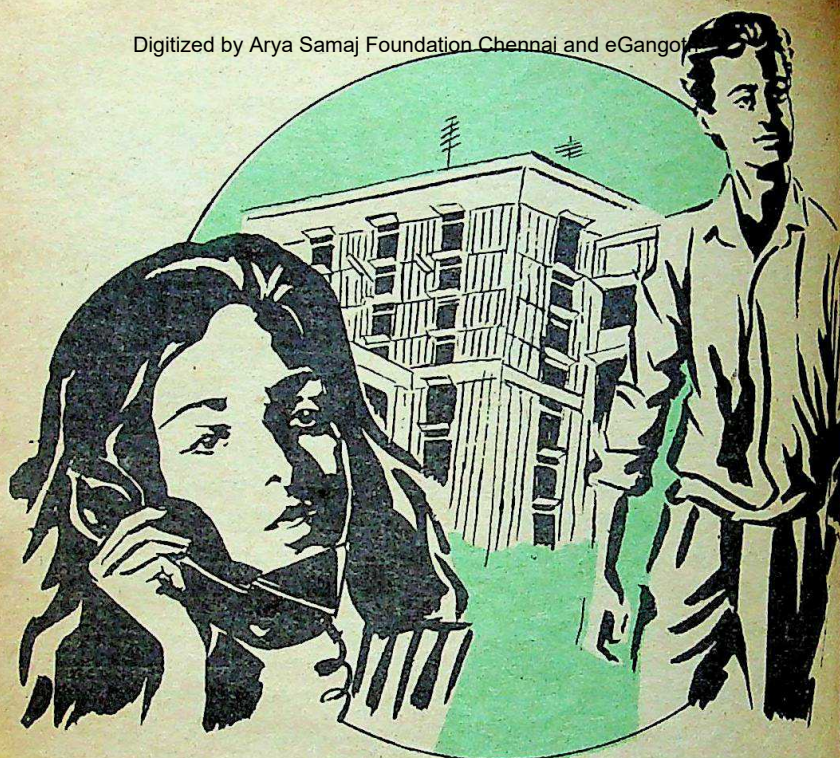
एक और आरंभ

धारावाहिक उपन्यास • चौथी किस्त

• भक्ति चौध

अब तक आप ने पढ़ा : सुरक्षित भविष्य, ज्यादा छुट्टी और अधिक सुविधाओं के लालच में स्वच्छ वातावरण के एक निजी संस्थान की नौकरी छोड़ कर गोपा जब मंडल अभियंता टेलीफोन के कार्याल में निजी सचिव की हैसियत से काम करने पहुंची तो वहां का भ्रष्ट माहौल देख कर वह सकते में आ गई फिर भी वह धीरेधीरे इस नए वातावरण में अभ्यस्त होने की कोशिश करती रही और संजय नाम का एक अन्य सहयोगी उस की इस कोशिश में हाथ बंटाता रहा. एक दिन वह समय भी आ पहुंचा, जब गोपा संजय को ले कर मीठीमीठी भावनाओं में गुम होने लगी. **अब आगे पढ़िए :**

दोपहर के भोजन के समय गोपा खाना खा कर अकेली बैठी एक उपन्यास पढ़ रही थी कि संजय ने दरवाजा खोलते हुए पूछा, "क्या मैं अंदर आ सकता हूं?"

"नहीं." किताब बंद कर के गोपा शरारत से मुसकराई.

"धन्यवाद." अंदर आ कर संजय

पर बैठ गया. "लड़कियों के न कहने का मतलब है, हां." होंठों के साथ संजय की आंखें भी हंस दी थीं. गोपा को रोमांच का अनुभव होने लगा.

"आप को लड़कियों के स्वभाव के बारे में क्या पता?" गोपा ने संजय की आंखों में झांका.

"लड़कियों के बारे में न सही पर एक लड़की के बारे में तो पता है." वह एकाएक गंभीर दिखने लगा.

गोपा के दिल की धड़कन तेज हो गई. सोचने लगी, 'आगे क्या कहने वाला है संजय? कहीं यही तो वह क्षण नहीं, जिस का हर लड़की चाहे, अनचाहे लंबे समय तक प्रतीक्षा करती है.' गोपा को लगा, समय रुक गया है. पृथ्वी सिमट कर इस कमरे में समा गई है. जिस में उस के और संजय के अलावा और कोई नहीं.

तभी दरवाजा धकेल कर कामता प्रसाद ने प्रवेश किया. वह यहां के वरिष्ठतम कनिष्ठ

किसी ढीठ मेहमान की तरह जतिन ने अपनी हुकूमत का जो सिलसिला आरंभ किया था, उस से गोपा को कोफ्त सी महसूस होने लगी थी. ऐसे में संजय की प्रेम भरी अनुभूतियां उस के हृदय में ताजगी का एहसास कराती और वह घर तथा दफ्तर दोनों जगह के वातावरण से तालमेल बिठा पाने में सफलता पा लेती.

अभियंताओं में से थे. आते ही बोले, "माफ करना भई, रंग में भंग डाल रहा हूं. एक सूचना देनी थी. हमारे महेश बाबू ने शादी कर ली है. आज तीन बजे वह दावत दे रहे हैं, आप

"मैं, नीता और मां भी परोपकार करने के लिए घर में दोतीन और बेरोजगार पाल लें तो कैसा लगेगा आप को?" गोपा ने पिताजी से कहा.
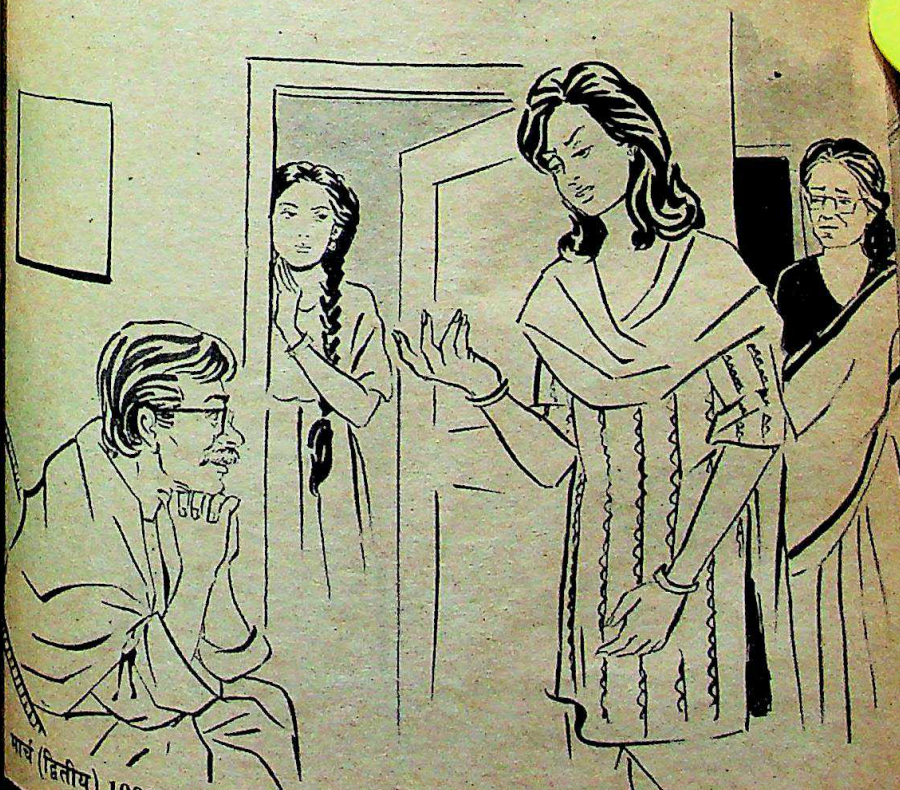
सब को आना है."

[illegible] के जाने के बाद संजय ने कहा, "पता है, महेश ने कल ही कचहरी में विवाह किया है. उस की पत्नी ईसाई है. दोनों की जानपहचान कालिज के समय से है. महेश के मातापिता इस विवाह के सख्त विरुद्ध थे."

"सूरत से तो महेश सीधासादा दिखता है." गोपा ने हंसते हुए कहा.

"आप का मतलब है, सीधेसादे लोग प्रेम विवाह नहीं करते." संजय कुछ व्यथित और अनमने स्वर में बोला.

"नहींनहीं, ऐसी बात नहीं." गोपा ने तुरंत अपनी बात को सुधारा, "मैं सोच रही थी कि अंतर्जातीय विवाह में तो परेशानियां आती होंगीं."

"परेशानियां जीवन का अभिन्न अंग हैं. आपसी प्यार और सदभावना से हर समस्या सुलझ जाती है." कह कर संजय परिचित मुद्रा में हंसा.

उस दिन गोपा देर तक संजय के साथ अपने विवाह की संभावना पर विचार करती रही. पर उस के परिवार के बारे में उसे कुछ विशेष मालूम नहीं था. उस के पिता नौकरी से अवकाश प्राप्त करने के बाद अलमोड़ा में रह रहे थे. बड़े भाई वायु सेना में थे. संजय ने
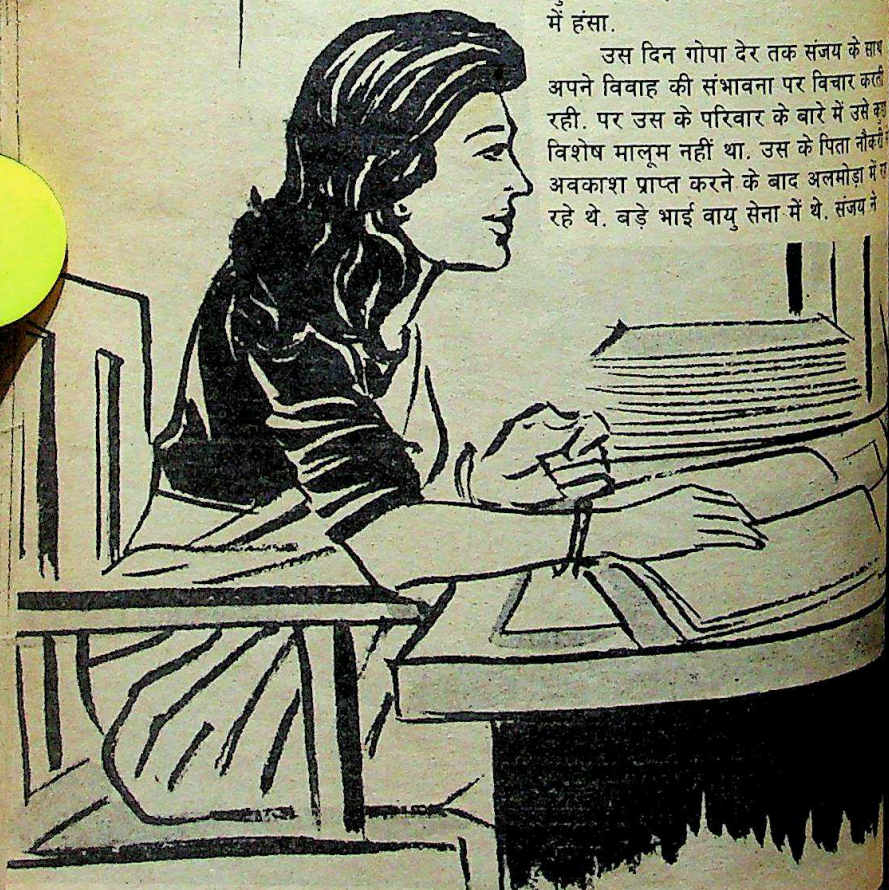
एम.एससी. तक की पढ़ाई दिल्ली में ही पूरी की थी. बस, गोपा को यही गिला था.

जतिन के लिए अब तक नौकरी का कोई इंतजाम न हो पाया था. गोपा ने पिताजी के माध्यम से उसे टाइप सीखने की सलाह दी. उस में केवल एकडेढ़ घंटा ही लगता. बाकी सारा दिन वह मटरगश्ती करता, गोपा व नीता की किताबों व अन्य वस्तुओं की छानबीन करता था या सोया रहता. उस के विषय में गोपा की अकसर पिताजी से बहस हो ज़ाया करती. पिताजी कहते, ''लड़के का भला हो जाए, इसी लिए यहां आने के लिए कहा था.''

"आप ने कहा था?''

"हां.''

"और क्याक्या है खाने को?" जतिन बेशर्मी से बोला.

'तभी पत्र फाड़ने पर भी आ धमका है,' उस ने सोचा. फिर बोली, "उस के आने से हमें कुछ तकलीफ हो सकती है, यह सोचने की आप को आवश्यकता नहीं महसूस हुई?" गोपा को पिताजी पर सचमुच क्रोध आ रहा था.

"जहां चार लोग रहते हैं, वहीं पांच भी रह सकते हैं. कौन सा उसे जीवन भर रहना है?" पिताजी हृदय से जतिन का भला चाहते थे.

"वह पिताजी, घर में एक निखट्टू, आवारा लड़के को ला टिकाया. यह भी नहीं सोचा कि बेटियां जवान हैं. कल को कुछ ऊंचनीच हो गई तो किसे जिम्मेदार ठहराएंगे? उस की नौकरी करने की इच्छा है तो फिर मजदूरी ही क्यों नहीं करता? महंगाई के जमाने में एक मुस्टंडे को मुफ्त खिलाने का शौक चर्राया है, आप को. मैं, नीता और मां भी परोपकार करने के लिए घर में दोतीन और बेरोजगार पाल लें तो कैसा लगेगा आप को?" पिताजी निरुत्तर हो गए.

"छः महीने हो गए हैं और छः महीने तक भी कुछ न जुटा पाया तो उसे वापस जाने को कहिएगा." पिताजी को आदेश देना गोपा को अजीब सा लगा था.

जतिन भी जान गया था कि उस का यहां रहना गोपा को सख्त नापसंद है. अतः गोपा को और अधिक नाराज करने में उसे बेहद मजा आता. एक दिन तो उस ने हद ही कर दी. ग्यारह, साढ़े ग्यारह बजे गोपा के आफिस पहुंच गया. चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के साथ कनिष्ठ अभियंता की मीटिंग थी. गोपा उसी की तैयारी में लगी थी. मंडल अभियंता निर्देश दे रहे थे. यूनियन के नेता एकएक कर पधारने लगे थे.

"मैडमजी, साहब को बता दो कि बैठक का समय हो गया है." लाइनमैन शिवलाल ने गोपा से कहा.

"बस पांच मिनट बैठिए, अभी बुलाते हैं. अब किस विषय पर बात करेंगे?"

"बहुत से विषय हैं." शिवलाल रोब से बोला, "अफसरों की खाट खड़ी करेंगे आज. अपने आदमियों को दैनिक मजदूर भरती करते हैं. उन से पैसे खाते हैं."

"मैं ने सुना है, आप भी यही करते हैं," झट कह कर गोपा को पछतावा हुआ, तृतीय श्रेणी की कर्मचारी हो कर यूनियन के विरुद्ध कुछ कहना दुस्साहस ही कहलाएगा. पर शिवलाल को उस की बात पर क्रोध न आया. "बेशक, हम भरती करवाएंगे तो भरती होने वालों से रुपए लेंगे. पर ये अफसर हमें रुपए खाने नहीं देते. उप मंडल अधिकारी ने अपने यहां खेमचंद को भरती करने के पांच सौ रुपए लिए हैं. हम लोग उपभोक्ताओं से सौ दो सौ ले लेते हैं तो जांच करवाते हैं और स्वयं हजारों रिश्वत खाते हैं."

बजर बज उठा. मंडल अभियंता यूनियन वालों को अंदर बुला रहे थे. दूसरा फोन भी बजने लगा. नीचे से संतरी बोल रहा था, "मैडम, एक साहब हैं. अपना नाम जतिन बता रहे हैं. अंदर आने के लिए कह रहे हैं. क्या भेज दूं."

गोपा का खून खौलने लगा. क्रोध को पी कर उस ने धीरे से कहा, "भेज दो."

"क्या बात है, यहां क्यों आए?" गोपा ने आंखों से आग बरसाते हुए जतिन के आते ही पूछा.

"पहले बैठ तो लेने दो. आते ही पुलिस वालों की तरह जिरह करना शुरू कर दी." जतिन निर्लज्जता से हंसा. वह गोपा की बेबसी समझ चुका था.

"जरा घूमने निकला था. इधर से जा रहा था तो सोचा तुम्हारे दफ्तर हो आऊं?"

"क्यों? दफ्तर क्या कोई अजायबघर है जो देखने चले आए." रामनिवास और बनवारी लाल की उपस्थिति में गोपा खुल कर क्रोधित भी नहीं हो पा रही थी.

"मैडम चाय?" कैंटीन वाला पूछ रहा था. इस समय वह प्रतिदिन चाय के लिए पूछने आता था.

"नहीं चाहिए." गोपा ने रोज की भांति कह दिया.

"मुझे चाहिए." जतिन बोल पड़ा.

कैंटीन वाले लड़के ने हैरानी से एक बार गोपा को और फिर जतिन को देखा.

"और क्याक्या है खाने को?" जतिन बेशर्मी से बोला.

"आमलेट, समोसा, छोलेभठूरे..."

"सब एकएक प्लेट ले आ."

लड़का फिर आंख फाड़फाड़ कर जतिन को देखने लगा.

"देखता क्या है? जल्दी ले कर आ."

मंडल अभियंता प्रमोद कुमार उप मंडल अधिकारी को कुछ निर्देश दे रहे थे. गोपा को उन्होंने सामने की कुर्सी पर बैठने का इशारा किया.

जतिन ने हुक्म दिया.''

"अभी लाया." कहते हुए लड़का बाहर चला गया.

गोपा समझ गई कि क्रोध कर के भी कोई लाभ न होगा. अक्ल से काम लेना होगा. वह चुपचाप फाइलों के पन्नों को पढ़ती रही और मन ही मन मनाती रही कि कहीं इस समय संजय न आ जाए. वह गोपा की सूरत से ही मन के भाव जान लेता था. जतिन उस के सामने भी उलटीसीधी हरकतें करने लगा तो गोपा की स्थिति लज्जास्पद हो जाएगी.

जतिन अभी प्लेटें साफ कर ही रहा था कि संजय आ पहुंचा. जतिन पर दृष्टि पड़ते ही वह क्षण भर को ठिठक गया.

''क्या बात है गोपा?'' संजय ने हमेशा की तरह आत्मीयता से पूछा.

गोपा सिहर उठी. इस से पहले कभी भी संजय ने उसे नाम से नहीं बुलाया था.

एक बार मन हुआ कि संजय से कहे, 'मेरे सामने बैठी इस बला को किसी तरह दूर करने का उपाय बता सकते हो? ताकि हमारे घरपरिवार पर इस का साया भी न पड़े.' पर यह उचित समय नहीं था. जतिन खाना रोक कर ध्यान से संजय को देख रहा था. गोपा समझ गई, वह आंखों से संजय को तौल रहा था.

''एक टेलेक्स की बारबार शिकायत आ रही है, जबकि इस की हमारे यहां बुकिंग ही नहीं है.'' असली समस्या छिपा कर गोपा ने कहा.

''टेलेक्स का डाकेट जनपथ में बनता है.''

''पर वहां नहीं है.''

''फिर तो हम कुछ नहीं कर सकते.'' संजय ने दूसरी बात शुरू कर दी, ''साहब खाली हैं क्या? एक केस के बारे में बात करनी है.''

"साहब तो बैठक में व्यस्त हैं." गोपा ने कहा.

जतिन उसी समय उठ खड़ा हुआ, "चलता हूं, अब. पेट भर गया."

"कौन था यह?" जतिन के जाने के बाद संजय ने पूछा.

"पिताजी की मौसी की बेटी का लड़का."

संजय हंस पड़ा. "बड़ा नजदीकी रिश्ता है."

"यही रिश्ता तो जी का जंजाल बना हुआ है." गोपा ने संक्षेप में जतिन के बारे में बताया.

"इस में चिंता की क्या बात है. उसे यहां दिहाड़ी पर लगवा दीजिए." संजय ने पल भर में हल सुझा दिया.

"नहीं, मैं उस के लिए किसी की मिन्नत नहीं कर सकती." गोपा ने साफ इनकार कर दिया.

मना करने के बावजूद गोपा इस विषय पर सोचती रही. पर किसी निर्णय पर न पहुंच पाई. विभाग में किसी को दिहाड़ी पर लगवाने का मतलब था, मंडल अभियंता या अन्य किसी का एहसान लेना. जिस का अर्थ था, एहसान करने वाले का गुलाम बने रहना. सोचते ही गोपा को वितृष्णा हुई.

एक टेलीफोन केंद्र में आपरेटरों की हड़ताल चल रही थी. अन्य टेलीफोन केंद्रों से आपरेटरों की वहां बदली की जा रही थी. शाम पौने पांच के करीब गोपा अपने कागज समेट कर चलने की तैयारी कर रही थी कि साहब ने बुला भेजा.

मंडल अभियंता प्रमोद कुमार उप मंडल अधिकारी को कुछ निर्देश दे रहे थे. गोपा को उन्होंने सामने की कुरसी पर बैठने का इशारा किया.

थोड़ी देर बाद उप मंडल अधिकारी चले गए. "गोपाजी कुछ आवश्यक आदेश निकालने हैं. गोपनीय रिपोर्ट भी ठीकठाक करनी है. आज आप को एक घंटा रुकना होगा."

"क्या?" गोपा जैसे आसमान से गिरी. पिछले डेढ़ वर्ष में कभी ऐसा अवसर न आया था. उस ने धीरे से कहा, "मैं नहीं रुक सकती."

"क्यों?" साहब की दृष्टि गोपा के चेहरे पर टिक गई.

"यह मेरी इच्छा है. गोपा ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"मैं आप का ओवरटाइम मंजूर कर दूंगा." प्रमोद कुमार बोले.

"मुझे समय पर घर पहुंचना होता है. पांच बजे के बाद बस मिलने में भी कठिनाई होती है."

"मैं ड्राइवर से कह दूंगा. वह आप को घर छोड़ देगा." फिर वह गंभीर स्वर में बोले, "जरा सी बात पर निर्णय लेने में आप इतना झिझक क्यों रही हैं? मुझे देखिए, रोज रात नौ बजे से पहले यहां से उठ नहीं पाता और सवेरे आठ बजे पहुंच जाता हूं."

"फिर भी टेलीकाम सेवाओं की अवस्था उतनी ही शोचनीय है." गोपा ने चिढ़ कर कहा.

"उस के कई कारण हैं, जो हमारे नियंत्रण में नहीं." गोपा की खीज से बेखबर प्रमोद कुमार कहते रहे, "एक्सचेंज उपकरण बनाने की क्षमता न होने के कारण हम इसे फ्रांस, जापान, जरमनी और अमरीका से आयात करते हैं, जिस में प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए खर्च होते हैं. आयातित उपकरण पुराने होते हैं असल में जो कुछ विदेशो में बेकार हो जाता है, वह हमारे मत्थे मढ़ दिया जाता है. उपकरण की मरम्मत के लिए हमारे पास पर्याप्त कलपुरजे नहीं. 30-35 वर्ष पुराने केंद्रों को बदलना भी आवश्यक है. पर रुपए नहीं है.

"भारत में टेलीकाम सेवाओं के क्षेत्र को इतना महत्त्व कभी नहीं दिया गया, जितना कि देना चाहिए. फिर बाहरी संयंत्र पर बिना सोचेसमझे यहांवहां खोदे जाने का बुरा असर पड़ता है. तारों व अन्य महत्त्वपूर्ण समान की चोरियां बहुत होती हैं. अत्यधिक यूनियनबाजी भी यहां हर काम में रोड़े डालती है. विकसित देशों के विपरीत भारत में प्रति हजार व्यक्ति केवल चार टेलीफोन यंत्र प्रयोग करते हैं. इस का अर्थ हुआ कि प्रत्येक यंत्र का अत्यधिक प्रयोग, जिस से पहले से ही पुराने हो चुके नेटवर्क पर जोर पड़ता है. अतिभार के कारण परिचालन क्षमता घट जाती है."

गोपा प्रमोद कुमार की बातें समझने का प्रयत्न कर रही थी. पहली बार उसे महसूस हो रहा था कि वह अपनी नौकरी से शारीरिक व

मानसिक रूप से ओतप्रोत हो कर जुड़ चुके हैं. गोपा के लिए नौकरी का महत्व बेगारी से अधिक नहीं. फिर भी वह उस शाम साढ़े छः बजे तक काम करती रही.

पहली दिसंबर से टेलीकाम शुल्कों में वृद्धि कर दी गई थी. टेलीफोन, टेलेक्स, पी.बी.एक्स. के किराए व प्रति काल दाम बढ़ाए गए थे. आंतरिक साधनों को उत्पन्न करने के लिए ऐसा किया गया था. पर उपभोक्ताओं की शिकायतों में कमी न आई. टेलीफोन के लिए प्रतीक्षारत लोगों की पंक्ति बढ़ती ही जा रही थी और लगभग उतने ही लोगों के टेलीफोनों पर डायल टोन नहीं आती थी.

मन से न चाहते हुए भी गोपा को आखिर जतिन के लिए विभाग में दिहाड़ी पर लगवाने का प्रबंध करना पड़ा. गोपा को इस के लिएं कुछ न करना पड़ा. संजय ने ही सारी व्यवस्था की.

"कर्मचारी संघ वाले जतिन की नियुक्ति पर आपत्ति तो नहीं करेंगे?" गोपा ने संजय से पूछा.

"अरे नहीं, आप कोई अफसर थोड़े ही हैं. संघ अपने सदस्यों के उम्मीदवारों की भरती पर कैसे ऐतराज कर सकता है?"

"पर मैं तो संघ की सदस्या नहीं हूं." गोपा ने शंका प्रकट की.

यूनियन के नेता दोतीन बार उस के पास आए थे. गोपा ने तब इस की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं की थी. वैसे नेताओं के ठाटबाट देख कर वह हैरान होती थी. एक बार उस ने विमला से पूछा था, "इन नेताओं के पास इतना पैसा कहां से आता है?"

विमला ठहाका लगा कर हंस पड़ी, "अभी विभाग में आए तुझे बहुत कम समय हुआ है, कुछ साल निकलने दे, फिर समझ जाएगी कि कोई यूनियन की लीडरी क्यों करता है."

शब्द पहेली—10 : अपना शब्दज्ञान बढ़ाइए

1		2		■	3	4		5
	■		■	6	■		■	
7	8		■		■	9	10	
■		■	11			■		■
12			■		■	13		
■		■	14			■		■
15		16	■		■	17		18
	■		■		■		■	
19				■	20			

संकेत

बाएं से दाएं

1. कहासुनी
3. टूटाफूटा
7. सोना
9. छाया हुआ
11. अज्ञान
12. प्राणयुक्त
13. जिसे तोड़ा न जा सके
14. जो सहज ही समझ में आए
15. एक छोटा उड़ने वाला कीड़ा
17. खिंचाव
19. अधपका
20. टाल देना

ऊपर से नीचे

1. सालाना
2. तरुण
4. टेढ़ा
5. स्थिर किया हुआ
6. शेखी बघारना
8. नई जिंदगी
10. निराश होना
15. सांप
16. घड़ा
17. तल्लीन, तैयार
18. प्रार्थना

उत्तर आगामी अंक में

स्कूल, कालिज में या राह चलते अनेक बार लड़केलड़कियों की शरारत भरी बातें मनोरंजक स्थिति बना देती हैं और कई बार तो घटना काफी दिलचस्प बन जाती है. क्या आप के समक्ष कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण मुक्ता के लिए अपना नाम व पूरा पता के साथ लिखें. प्रत्येक प्रकाशित रचना पर 30 रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र इस पते पर भेजें: मुक्ता, दिल्ली प्रेस, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

हम गंगानगर से सूरतगढ़ जा रहे थे. रास्ते में तीनचार लड़कियां बस में चढ़ीं. हम ने उन्हें सीट दे दी.

थोड़ी देर बाद उन में से एक लड़की कहने लगी, "लड़के लोग कितने मूर्ख होते हैं बिना कहे ही सीट दे देते हैं."

यह सुन कर मुझे बहुत गुस्सा आया. मैं ने अपनी जेबें टटोलते हुए उस लड़की से कहा, "दीदी, लगता है मेरा पर्स सीट के नीचे गिर गया है. आप यदि खड़ी हो जाएं तो."

जैसे ही वह लड़की खड़ी हुई मैं सीट पर बैठ गया, और बोला, "हम लोग इतने मूर्ख नहीं होते कि पहले सीट दें और फिर गालियां सुनें."

अब उस लड़की का चेहरा देखने लायक था.

—राकेश नोलखा

*

हमारे कालिज का एक लड़का अकसर लड़कियों को तंग करता रहता था. एक दिन मैं अपनी सहेली के साथ कैंटीन में बैठी थी कि तभी उस ने हमारी सीट के पास अपना 50 का नोट गिरा दिया. फिर उसे उठा कर हम से कहने लगा, "शायद यह नोट आप का है."

सहेली ने वह नोट तुरंत उस के हाथ से झपट लिया और उसे धन्यवाद देती हुई चली गई. अब उस लड़के की शक्ल देखने लायक थी. बेचारा उस दिन अपनी फीस जमा नहीं करा सका.

—रजनी चावला

*

मैं अपने कुछ मित्रों के साथ बाग में बैठा था. हम ने दूर से आती हुई दो लड़कियों को देखा. उन के साथ एक बच्चा भी था, जो आगेआगे चल रहा था. जब वे लड़कियां हम से कुछ ही दूर रह गईं और बच्चा हमारे निकट तक आ पहुंचा तो मेरे एक मित्र ने लड़कियों को आकर्षित करने के लिए बच्चे से जोर से कहा, "मुन्ने, अपनी मौसी के साथसाथ चला करो."

लड़की ने एक नजर मेरे मित्र पर डाली और बच्चे से बोली, "नहीं, भैया, उधर नहीं जाते. हमारे साथसाथ चलो, वरना सफेद बालों वाले बाबा पकड़ लेंगे."

लड़की का व्यंग्य समझ कर हमें हिंदी कवि केशव की याद हो आई क्योंकि मेरे मित्र के बाल भी सफेद थे.

—नत्थूसिंह मीणा

*

एक बार मैं अपने मित्र के साथ पार्क में बैठा था. उधर दो सुंदर लड़कियां वहां आ पहुंचीं. उन्हें देखते ही मेरा मित्र उन्हें सुनाते हुए मुझ से कहने लगा, "अरे, ये चंपा और चमेली के फूल कहां से आ गए."

उन में से एक तेज तर्रार लड़की ने नहले पर दहला जड़ दिया, "वहीं से, जहां से तुम जैसे बेशरम और धतूरे के फल आए हैं."

—शरदनारायण खरे

प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट : कैसा है इन का भविष्य?

लेख
•
शांति स्वरूप त्रिपाठी

सरकारी बैंकों की अस्तव्यस्त व्यवस्था और मांग के अनुपात में लाकरों की अनुपलब्धता को ध्यान में रखते हुए बहुतेरी निजी कंपनियां 'सेफ डिपाजिट वाल्ट' के धंधे में उतर आई हैं. राष्ट्रीयकृत बैंकों की तुलना में इन कंपनियों की सेवा सुविधा कितनी विशिष्ट और उपयोगी साबित हो सकती है?

गत 29 नवंबर को सुबह साढ़े 10 बजे अंधेरी (पश्चिम) स्थिति कोहली विला के चारों तरफ लोगों का जमघट लगा हुआ था. इस जमघट में व्यापारी वर्ग की बहुतायत थी. इस इमारत के तलघर में ही पंजाब नेशनल बैंक की भी एक शाखा है. क्या बैंक में डकैती हो गई या ऐसी ही कोई अन्य घटना घट गई? इस तरह का प्रश्न दिमाग में तुरंत आया. पर दूर से कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था.

नजदीक जाने पर पता चला कि कोहली विला के मालिक एन.एस. कोहली ने पंजाब नेशनल बैंक के बगल में ही 'सेंट्रल वाल्ट' नाम से एक 'प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट' की शुरुआत की है और उसी का उदघाटन समारोह हो रहा है तथा उदघाटन करने के लिए बंबई के शेरिफ नाना चूड़सामा पधारे हैं.

कुछ देर बार मेरी मुलाकात एन.एस. कोहली से हुई. वह मुझे 'वाल्ट' के अंदर ले गए. उन्होंने अपने 'सेंट्रल वाल्ट' के संबंध में समझाते हुए कहा, "सेफ डिपाजिट वाल्ट यानी लाकरों की मांग बढ़ती जा रही है. और सरकारी व सहकारी क्षेत्र के बैंकों में उपलब्ध लाकरों की संख्या बहुत कम है. इन दिनों बंबई में 'प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट' की कई कंपनियां कार्यरत हैं. पर अंधेरी से बोरीवली तक एक भी ऐसी प्राइवेट कंपनी नहीं है इसी लिए मैं ने 'सेंट्रल वाल्ट' शुरू करने का निर्णय किया."

यह कितनी विचित्र बात है कि ... सरकारी बैंक (जिस में 'सेफ डिपाजिट वाल्ट' की सुविधा है) के बगल में ही एक व्यापारी ... पैसा कमाने के उद्देश्य से ही लाखों रुपए ... कर के एक प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट की शुरुआत की. और उसे पूर्ण विश्वास ... यह उस के लिए घाटे का सौदा साबित नहीं होगा. उस का आत्मविश्वास गलत नहीं ... क्योंकि लाकरों की बढ़ती मांग के अनुरूप बैंकों में लाकर उपलब्ध नहीं हैं. बंबई शहर में सहकारी व सरकारी बैंकों की तीन हजार ... ज्यादा शाखाएं हैं और 40% शाखाओं में लाकर की सुविधा मिलती है. दूसरे शब्दों में कहें तो एक करोड़ की आबादी वाले बंबई शहर में सिर्फ 80 हजार लाकर हैं. ... सुविधा मांग को देखते हुए पर्याप्त नहीं है किंतु बंबई के बुलियन बाजार में स्थित ... प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट में लग...

एक राष्ट्रीयकृत बैंक का सेफ डिपाजिट वाल्ट : लाकरों की किल्लत और ऊपर से हीलाहवाली.
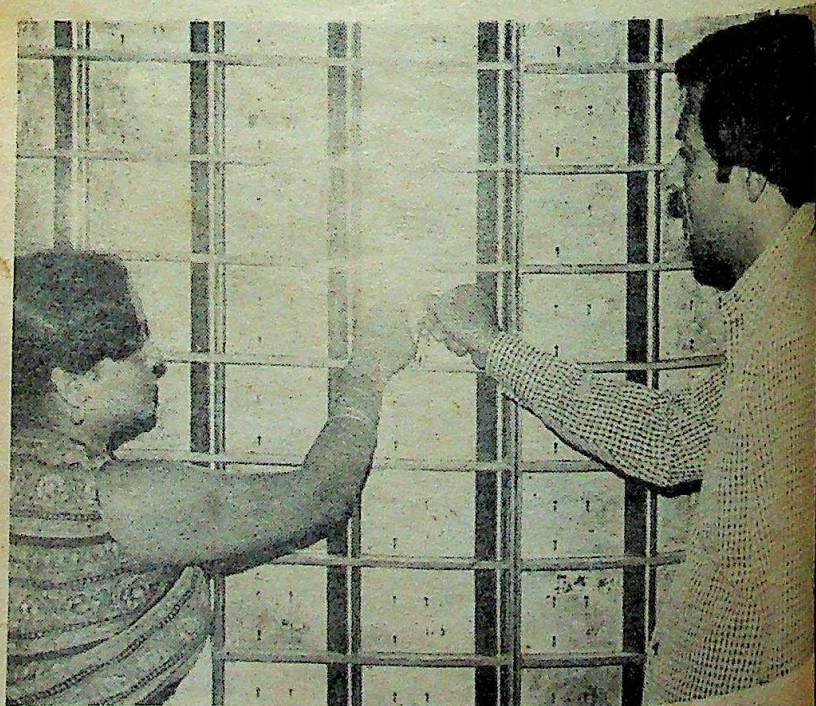
3,000 लाकर हैं, जिसे इन दिनों बैंक आफ इंडिया ने ले लिया है. इसी तरह निर्मल बिल्डिंग स्थित यूनियन बैंक में भी 17,000 लाकर हैं.

बैंक में लाकर रखने की प्रवृत्ति हमारे देश में कई दशकों से चली आ रही है. पहले चोरों से बचाव के लिए लाकर लेते थे. लाकर के अंदर नकद पैसा, जेवर और महत्त्वपूर्ण कागजात रख कर चोरी होने की चिंता से मुक्त हो जाते थे. लेकिन जब काला धन बढ़ा, दो नंबर की हुंडियों और चिट्ठियों का चलन शुरू हुआ तो सेफ डिपाजिट वाल्ट यानी लाकरों का चलन भी बढ़ा और अब तो आतंकवादी चोरलुटेरों के भय से आम आदमी भी लाकर पाने की होड़ में शामिल हो चुका है.

पर बैंक मैनेजर से एक ही जवाब मिलता है, 'एक भी लाकर खाली नहीं है.' अथवा बैंक वाले खुलेआम कह देते हैं कि 'इतना हजार रुपए बैंक की सावधि जमा योजना में जमा कीजिए, तभी लाकर मिलेगा.' इस परिस्थिति के लिए बैंक मैनेजर कोई दोषी नहीं है. वास्तव में मांग के अनुरूप पूर्ति नहीं हो रही है.

किसी भी चीज की कमी होने पर कुछ दिमागी लोग उस का उपाय खोज कर कमाई का साधन बना लेते हैं. उसी तरह लाकरों की कमी को दूर करने के लिए प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट का धंधा शुरू हो गया.

ब्रिटेन, अमरीका जैसे विकसित देशों में लोग बैंक 'सेफ डिपाजिट वाल्ट' के चक्कर में नहीं पड़ते. क्योंकि वहां पर सेफ डिपाजिट वाल्ट की उत्कृष्ट सेवाएं देने वाली सैकड़ों प्राइवेट कंपनियां इस व्यापार में संलग्न हैं. लेकिन कुछ ही साल पहले भारत में शुरू हुए इस कारोबार के भविष्य पर अभी भी प्रश्नचिह्न लगा हुआ है.

ब्रिटेन में तो गुजराती उद्योगपति ही प्राइवेट लाकर के व्यापार में जमे हैं. करोड़पति अब्दुल शामजी ने चार साल पहले 'नाइट्स ब्रिज सेफ डिपाजिट सेंटर' खरीद कर धंधे को बढ़ाया और फिर एक भारतीय युवक को 20 लाख पौंड में बेच दिया. लंदन शहर की सेफ डिपाजिट वाल्ट कंपनियों में दूसरे नंबर पर आने वाली 'हेंपस्टेड सेफ डिपाजिट वाल्ट लि.' में 12,000 लाकर हैं. यह वाल्ट वर्ष में 365 दिन खुला रहता है.
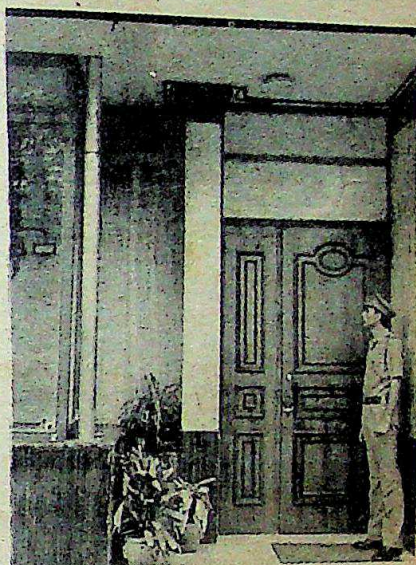
बंबई के कैंट्स कार्नर स्थित 'इंडिया सेफ्टी वाल्ट प्रा. लि.' का मुख्य दरवाजा : सुरक्षा का भरपूर बंदोबस्त.

भारत में प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट की शुरुआत 1985 में 'डी.एम.सी. वाल्ट लि. कंपनी' ने की थी. फिर तो छः महीने के अंदर ही 8-10 कंपनियां इस व्यापार में आ गईं. उस के बाद कलकत्ता, मद्रास और फिर बंबई में यह धंधा शुरू हुआ.

बंबई में प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट का काम शुरू करने का श्रेय उद्योगपति एच.बी. रूइया को जाता है. जिन्होंने बंबई के कैंप्स कार्नर जैसे वैभवशाली इलाके में 21 जुलाई 1986 को 1500 लाकर वाले 'इंडिया सेफ्टी वाल्टस लि.' की स्थापना की थी. इस व्यापार को शुरू करने से पहले एच.बी. रूइया ने भारतीय बाजार अनुसंधान ब्यूरो से सर्वेक्षण करवाया था. इस संस्था ने उन्हें कैंप्स

कार्नर में कंपनी शुरू करने का सुझाव दिया था.

इंडिया सेफ्टी वाल्टस लि. की स्थापना के बाद अवेरी बाजार में 'भगत डिपाजिट वाल्टस प्रा.लि.', घाटकोपर (पूर्व) के गुजराती भाषी क्षेत्र में 'कुबेर सेफ वाल्टस लि.,' हीरे के व्यापार के गढ़ आपेरा हाउस में 'अमृत सेफ वाल्टस लि.', रौक्सी सिनेमा के पीछे 'रिलाएबल सेफ वाल्टस', 'शक्ति सेफ वाल्टस', 'अकबरअलीज सेफ वाल्टस', 'सेंट्रल वाल्टस' सहित कई कंपनियां खुलीं. अब कुछ और लोग भी इस व्यापार में प्रवेश करने की तैयारियां कर रहे हैं.

सर्वाधिक आश्चर्य की बात यह है कि इस व्यापार को शुरू करने में कोई झंझट नहीं है. कोई सरकारी आज्ञा की जरूरत नहीं. सिर्फ भारतीय रिजर्व बैंक को आवेदन दे कर अनापत्ति प्रमाणपत्र लेने के बाद इस व्यवसाय को शुरू किया जा सकता है. हां, रिजर्व बैंक की यह शर्त होती है कि वाल्ट के स्ट्रांगरूम (कोषकक्ष) और लाकरों की बनावट उन के द्वारा निर्धारित मानकों तथा नियमों के अनुसार होनी चाहिए.

तुलना सरकारी और निजी की

भारत में 'गोदरेज' कंपनी के अलावा ब्रिटेन की मशहूर 'चब' कंपनी के साथ सहयोगी रूप से जुड़ी 'स्टीलेज इंडिया कंपनी' सेफ डिपाजिट वाल्ट के लाकर, कैबिनेट और दूसरे सुरक्षा उपकरण बनाती है.

बंबई के कैंप्स कार्नर स्थिति 'इंडिया सेफ्टी वाल्टस प्रा.लि.' के दफ्तर पहुंचने पर एक विशेष किस्म का बंदूकधारी चौकीदार दिखाई पड़ता है. जो ग्राहक के आने पर अदब के साथ मुख्य द्वार खोलता है. लूटने के इरादे से आने वाले को चौकीदार तो क्या इलेक्ट्रानिक बर्गलर अलार्म सिस्टम बीच में ही पकड़वा दे.

बैंक में लाकर मिलना मुशकिल है. इस के साथ ही कई अन्य समस्याएं भी हैं. एक व्यक्ति एक दिन में सिर्फ एक ही बार लाकर खोल सकता है और वह भी बैंक के सीमित समय के अंदर ही. यही नहीं आप जब लाकर खोलने के लिए जाते हैं तो बैंक मैनेजर या संबंधित अधिकारी तुरंत आप की बात नहीं सुनता. वह पहले अपना काम करता है, फिर आप की बात सुनता है.

रविवार और अवकाश के दिनों में बैंक लाकर से जेवर निकालना महिलाओं की सब से बड़ी समस्या है. इस समस्या का समाधान भी प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट ही हैं. क्योंकि ग्राहक पूरे दिन में किसी भी समय अपना लाकर खोल सकता है. सुबह नौ बजे से शाम सात बजे तक खुले रहने वाले लाकरों का उपयोग छुट्टी के दिन भी किया जा सकता है. लगभग सभी प्राइवेट वाल्ट कंपनियां छुट्टी के दिनों में भी सुबह नौ बजे से एक बजे तक खुली रहती हैं.

यही नहीं, प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट कंपनियां अपने ग्राहकों को कई तरह की अन्य सुविधाएं भी देती हैं. बैंक वाल्ट के अंदर एकसाथ कई ग्राहक जा सकते हैं. इस से लाकर की गोपनीयता भंग होती है. लेकिन प्राइवेट कंपनियों में एक बार में सिर्फ एक ही ग्राहक को वाल्ट के अंदर जाने की अनुमति होती है.

अधिकांश प्राइवेट वाल्टों के अंदर वातानुकूलन के साथसाथ निरीक्षण कक्ष की भी व्यवस्था है. औरतें लाकर से जेवर निकाल कर निरीक्षण कक्ष में जा कर पहन सकती हैं और वहां से निकल कर सीधे पार्टियों या अन्य समारोहों में जा सकती हैं.

प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट में ग्राहक अपनी आवश्यकता के अनुरूप छोटा या बड़ा लाकर चुन सकता है. लगभग हर कंपनी में 4½"x6" से ले कर 15½"x20" तक के प्रकार के लाकर मिलते हैं.

'इंडिया सेफ्टी वाल्टस लि.' कंपनी के मैनेजर अनिल खन्ना से प्राइवेट कंपनियों द्वारा चलाए जा रहे सेफ डिपाजिट वाल्ट और बैंक वाल्ट में अंतर की चर्चा चली तो वे बोले, "बैंक का मुख्य व्यवसाय पैसे का लेनदेन, चेकों का भुगतान और कर्ज वगैरह देना है. बैंक कर्मचारी उन्हीं कामों में ही
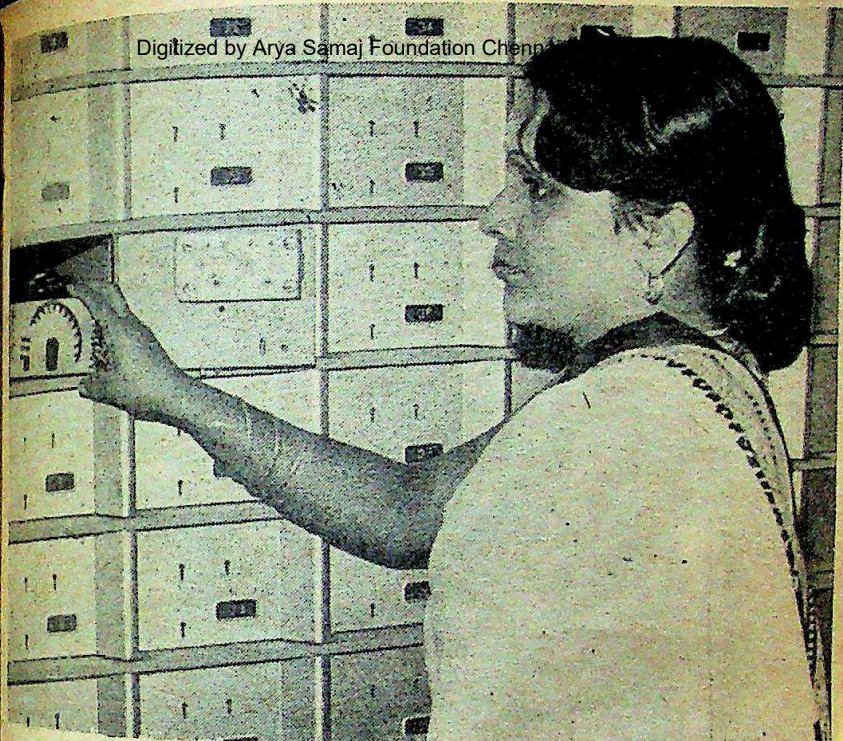
कीमती सामानों की सुरक्षा लाकरों के हवाले : पर क्या उपभोक्ताओं को सरकारी बैंकों के अधिकारियों, कर्मचारियों की मनमरजी का शिकर नहीं होना पड़ता?

व्यस्त रहते हैं कि लाकर धारियों को समुचित सेवा देने के लिए उन के पास समय नहीं होता. जबकि प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट वालों का मुख्य व्यापार ग्राहकों को लाकर की सेवा देना ही है. हम लोग जो सुविधाएं ग्राहकों को दे रहे हैं. वैसी सुविधाएं बैंक कभी भी नहीं दे सकते."

माना कि प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट कंपनियां अपने ग्राहकों को बैंकों के मुकाबले में काफी अच्छी सुविधाएं देती हैं और मानव स्वभाव से सुविधाभोगी भी है. फिर भी बैंकों की अपनी एक विश्वसनीयता है. बैंक को लोग ज्यादा सुरक्षित मानते हैं. इस के बावजूद पंजाब नेशनल बैंक (गौरेगांव-बंबई शाखा) सहित बंबई के कई बैंकों के लाकरों से बहुमूल्य वस्तुएं गायब हो चुकी हैं. परिणामस्वरूप बैंकों के प्रति लोगों में जो अंधविश्वास या बैंकों की जो विश्वसनीयता थी, वह भी टूट रही है.

ऐसी स्थिति में प्राइवेट कंपनियों द्वारा चलाए जा रहे सेफ्टी वाल्ट पर लोग किस आधार पर विश्वास कर रहे हैं? आखिर प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट वालों की विश्वसनीयता क्या है? इस संबंध में 'इंडिया सेफ डिपाजिट वाल्ट' के अनिल खन्ना का कहना है, "यह आपसी विश्वास पर आधारित व्यवसाय है. वाल्ट के संचालक विश्वासपात्र हों, भरोसेमंद हों, समाज में उन का रुतबा, मानसम्मान हो तो लोगों के मन में उन के प्रति अपनेआप विश्वास पैदा होता है."

'कुबेर सेफ वाल्टस लि.' के मैनेजर कांतिभाई वीरा के अनुसार, "हमारे देश के लोगों के लिए यह नया अनुभव है. लेकिन
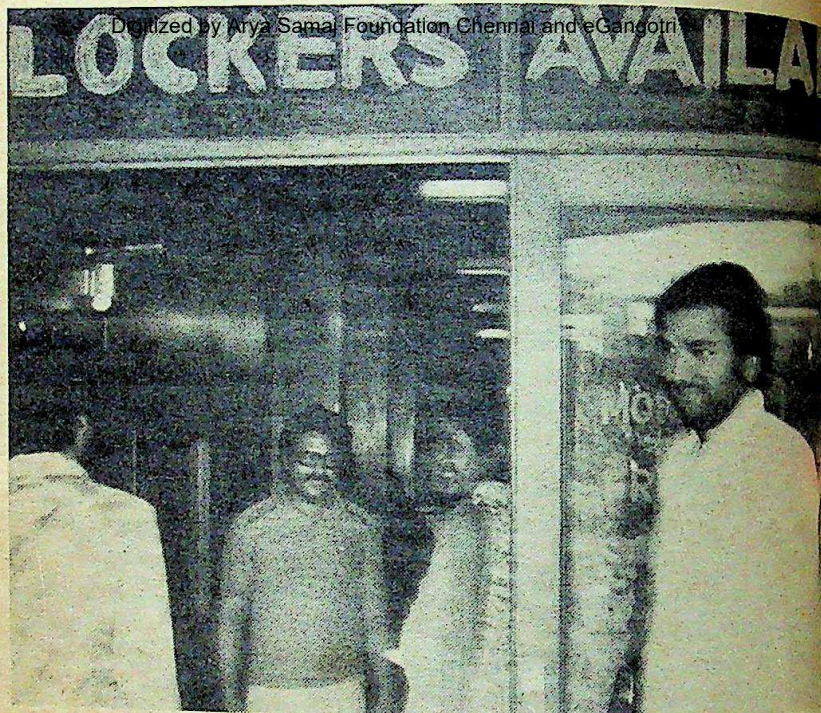
लगभग सभी बैंक के दरवाजे पर 'यहां लाकर उपलब्ध हैं,' जैसे विज्ञापन लिखे होते हैं, पर क्या जरूरतमंदों को वे आसानी से उपलब्ध हो पाते हैं?

हमारे यहां उपलब्ध सुविधाओं तथा लाकर की सुरक्षा के साधनों व कंपनी के संचालकों को देख कर लोगों में धीरेधीरे विश्वास बैठ रहा है.''

लाकर एवं लाकर कैबिनेट बनाने वाली कंपनी 'गोदरेज एंड बायस' के एच.जे. बागवाला का ध्यान जब बैंक लाकरों से गायब हो रही वस्तुओं की तरफ खींचा गया तो उन्होंने कहा, ''तकनीकी दृष्टि से किसी भी लाकर या उस की चाबी में कोई खराबी नहीं हो सकती. हम लोग तो लाकर की चाबी वगैरह सील कर के देते हैं. बैंक लाकर के अंदर से कोई भी वस्तु गायब होने का सीधा अर्थ यह है कि इस काम में बैंक मैनेजर व कर्मचारियों की मिलीभगत है. इस में कोई दो राय नहीं है.''

बंबई की लगभग सभी प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट कंपनियों का सर्वेक्षण करने के बाद पता चला कि हर कंपनी का संचाल[न] शहर के प्रतिष्ठित लोगों द्वारा ही किया जा[ता] है. जैसे कि 'इंडिया सेफ डिपाजिट वाल्ट' के संचालकों में बंबई उच्च न्यायालय के अवकाशप्राप्त मुख्य न्यायाधीश आर.ए[.] कांटावाला, कंपनी ला बोर्ड के अवकाशप्रा[प्त] सदस्य एस.सी.बाफना, औद्योगिक विक[ास] बैंक के पूर्व अध्यक्ष एन.एन. पई., सोलीसि[टर] पी. बी. मेहता, चार्टर्ड एकाउंटेंट एम.[..] दारूवाला और उद्योगपति एच.बी. ह[..] शामिल हैं.

इसी तरह 'कुबेर सेफ वाल्टस लि.' [के] निदेशक में चंद्रकांत दामजी शाह, चंद[..] भगवानजी सेलार्का, भरत खानी, [..] संगोई, जयंत पारिख, जीतेंद्र माहेश्वरी [..] अन्य हैं. 'अमृत सेफ वाल्टस लि.' के निदे[शक] बोर्ड में बी.आर. पटेल (अवकाश[प्राप्त] आई.सी.एस. अफसर), एयर इंडिया [के] मु[..]

इंडियन एयर लाइंस के भूतपूर्व प्रबंध निदेशक नवीन एच. मपारी, बंबई सिल्क मिल्स लि. के निदेशक व कई उद्योगपतियों का समावेश है.

'रिलाएबल सेफ्टी वाल्टस' के मालिक ...नसी सिनेमा के मालिक हैं. 'अकबरअलीज ...फ वाल्टस' के पीछे अकबर अलीज और 'शक्ति सेफ वाल्टस' के पीछे शक्ति फाइनेंस लि. जैसी जानीमानी कंपनियों का हाथ है. यही नहीं, लगभग हर प्राइवेट वाल्ट कंपनी के अभिरक्षक (कस्टोडियन) किसी न किसी बैंक के अवकाश प्राप्त मैनेजर हैं.

सुरक्षा उपाय

कंपनी के संचालकों में प्रतिष्ठित नागरिकों के नाम देखने के बाद मन से यह भय तो दूर हो जाता है कि किसी तरह की धोखाधड़ी हो सकती है. लेकिन वाल्ट की सुरक्षा का प्रश्न जरूर उठता है. सुरक्षा उपायों को मद्देनजर रख कर जब सभी प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट कंपनियों का सर्वेक्षण किया तो कुछ कंपनियों में बैंक के मुकाबले. कहीं अधिक सुरक्षात्मक उपाय देखने को मिले तो कहीं पर बैंक से भी ज्यादा बेहतर सुरक्षात्मक उपाय नजर आए.

सुरक्षात्मक उपायों के संबंध में इंडिया ...सरी वाल्ट के संस्थापक एच.बी. रूइया कहते हैं, "जहां तक सुरक्षात्मक उपायों की बात है, पहली जरूरत भौतिक सुरक्षा यानी फिजिकल सिक्यूरिटी की होती है. हम ने जो सुरक्षा गार्ड रखे हैं, उन्हें किसी एजेंसी से नहीं लिया है बल्कि हम ने कंपनी की तरफ से उन की नियुक्ति की है. हम अपने सुरक्षा गार्डों को ...गांव भेज कर प्रशिक्षण दिलाते हैं. सुरक्षा गार्डों को दी गई बंदूक का लाइसेंस कंपनी के नाम पर है. हम ने कुल चार सुरक्षा गार्ड रखे हैं.

"इस के अलावा किसी भी बैंक में इलेक्ट्रानिक सुरक्षा प्रणाली का उपयोग नहीं किया जाता. लेकिन हम अत्याधुनिक इलेक्ट्रानिक सुरक्षा प्रणाली का इस्तेमाल कर रहे हैं. स्ट्रांगरूम की 18 इंच मोटी आरसीसी की दीवारें बनाई हैं. गोदरेज कंपनी से विशेष तौर पर लाकर कैबिनेट बनवाए. स्ट्रांगरूम का दरवाजा 65 मिलीमीटर मोटा है. जिस का वजन तीन टन है.

" इस दरवाजे में 'टाइम लाक' 'कांबिनेशन लाक' जैसे विशिष्ट ताले लगे हुए हैं. दरवाजा खोलने के लिए दो चाबियां हैं, जो कि अलगअलग अधिकारियों के पास होती हैं. शाम छः बजे वाल्ट बंद करने के बाद यदि हम स्वयं दरवाजे को खोलना चाहें तो भी वह दूसरे दिन सुबह नौ बजे के पहले नहीं खुल सकता है. आपाती दरवाजा भी दो निदेशक चाबी लगा कर खोल सकते हैं. ऐसा निश्चित समय पर ही खुल सकने वाला 'टाइम लाक' किसी भी कंपनी के पास नहीं है. भारत के राष्ट्रीयकृत बैंकों में जो 'ए' क्लास करेंसी चेस्ट होता है इसी में यह दरवाजा लगता है. लाकर की चाबियां गोदरेज कंपनी हमें सील कर के देती है."

'सेंट्रल वाल्ट्स' के मैनेजर व कस्टोडियन के.सी. चोपड़ा कहते हैं, "हमारा स्ट्रांग रूम भी आरसीसी का बना हुआ है. वाल्ट पर आग का असर नहीं हो सकता है. परिसर को भी पूर्ण रूप से आधुनिक इलेक्ट्रानिक प्रणाली की सहायता से सुरक्षित बनाया गया है. चौबीसों घंटे पहरा रहता है."

'कुबेर सेफ्टी वाल्टस' के कांतिभाई वीरा कहते हैं, "हमारा स्ट्रांगरूम भी आरसीसी का बना हुआ है. स्ट्रांगरूम के बंद होने पर यदि उस के अंदर कोई हलचल होती है या धुआं भी निकलता है तो तुरंत खतरे का साइरन बजने लगता है. हमारे यहां पर इलेक्ट्रानिक सुरक्षा प्रणाली भी है?"

इस तरह अधिकांश प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट कंपनियों ने सुरक्षा के समुचित उपाय कर रखे हैं. इन कंपनियों का दावा है कि उन के स्ट्रांगरूम की दीवार 12 इंच मोटी और आरसीसी की बनी है. दीवारों पर 'मूवमेंटडिटेक्टर' और और 'वाइवेरान सेंसर' लगे हुए हैं. जिन से किसी भी प्रकार की गतिविधि या हलचल का पता चल जाता है. वाल्ट के अंदर इंफ्रारेड मूवमेंट

बैंक में लाकर मिलना मुशकिल है. इस के साथ ही कई अन्य समस्याएं भी हैं. एक व्यक्ति एक दिन में सिर्फ एक ही बार लाकर खोल सकता है और वह भी बैंक के सीमित समय के अंदर ही. यही नहीं, जब लाकर खोलने के लिए जाते हैं तो बैंक मैनेजर या संबंधित अधिकारी तुरंत आप की बात भी नहीं सुनता.

डिटेक्टर' लगाने का फायदा यह है कि वाल्ट बंद होने के बाद भूल से कोई व्यक्ति अंदर रह जाए तो उस के जरा सा हिलने से खतरे की घंटी बजने लगती है. आदमी तो आदमी, यदि पंखा चालू रह जाए तो भी यह साइरन बजने लगता है. स्ट्रांगरूम के बाहर दीवार पर हथौड़े की आवाज होते ही साइरन बजने लगता है. दूसरी तरफ बैंक के वाल्ट अभी तक आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित नहीं हैं. कई बार ऐसा भी हुआ है कि ग्राहक या कोई कर्मचारी आधी रात तक स्ट्रांगरूम में बंद रहा. बड़ोदरा के एक बैंक में स्ट्रांगरूम के चौकीदार की गलती से एक परिवार दो दिन तक बंद रहा.

'इंडिया सेफ्टी वाल्ट लि.', 'कुबेर सेफ वाल्टस' और 'सेंट्रल वाल्टस' के संस्थापक व मैनेजर इस व्यापार की प्रगति और उज्ज्वल भविष्य के प्रति पूर्ण रूप से आश्वस्त हैं. जबकि कुछ लोगों को इस व्यापार की सफलता में संदेह है.

'रिलाएबल सेफ्टी वाल्टस' के मैनेजर गांधी एक कुशल व्यापारी की भांति इस व्यापार के अंधकारमय भविष्य की ओर इशारा करते हुए बताते हैं, ''यह व्यापार घाटे का सौदा है क्योंकि लाकरों के सुरक्षात्मक उपायों और कर्मचारियों पर जो खर्चा होता है उसे हर लाकर के पीछे तीनचार सौ रुपए किराया ले कर भी पूरा नहीं किया जा सकता. इस खर्च को पूरा करने के लिए जमा राशि ले कर लाकर दिए जाते हैं और संचालक जमा की इस राशि को दूसरे व्यापार में लगा [...] लाभ कमाने का प्रयास करते हैं. [...] समस्या यह है कि आज लोगों के पास [...] हजार से 20 हजार रुपए स्थायी जमा के [...] में देने के लिए नहीं हैं. परिणामस्वरूप [...] खाली पड़े हैं. मेरे यहां 70% लाकर खाली [...] जबकि हमारी कंपनी के इलाके में चारों [...] हीरे, सोने, चांदी के जेवरात, मोटर [...] वगैरह का बहुत बड़ा कारोबार होता है.''

कई कंपनियों का सर्वेक्षण करने [...] 'रिलाएबल सेफ्टी वाल्टस' के मैनेजर [...] बातें सच प्रतीत होती हैं क्योंकि कई कंप[...] की हालत बड़ी दयनीय है. 'अकबर [...] सेफ डिपाजिट वाल्टस' में तो डिपाजिट [...] लिया जाता. सिर्फ चारपांच सौ रुपए कि[...] के रूप में ही लिए जाते हैं. फिर भी आधे [...] ज्यादा लाकर खाली पड़े हैं, 'शक्ति [...] वाल्टस' में तो सिर्फ 35 लाकर किराए पर [...] हैं. बाकी खाली पड़े हैं. 'सेंट्रल वाल्टस' के [...] में तो अभी से कुछ नहीं कहा जा सकता.

महंगा व्यवसाय

प्राइवेट सेफ डिपाजिट वाल्ट [...] व्यवसाय से जुड़ा हर व्यक्ति मानता है कि [...] व्यवसाय में समय तथा पैसा बहुत खर्च [...] है. इस व्यापार को शुरू करने के लिए [...] कार्नर व आपेरा हाउस जैसे क्षेत्रों में ए[...] डेढ़ करोड़ रुपए तथा घाटकोपर जैसे क्षेत्रों [...] 40 लाख रुपए लगाने पड़े हैं. [...] विश्वसनीय अभिरक्षक को प्रतिमाह [...] पांच हजार रुपए वेतन के रूप में देने पड़ते [...] कम से कम चार सुरक्षा गार्ड रखने होते [...] और हर गार्ड को 1200 से 1500 [...] प्रतिमाह देने पड़ते हैं. फिर क्लर्क, टाइपि[...] चपरासी वगैरह का वेतन, बिजली [...] टेलीफोन के बिल सहित कई अन्य खर्चे [...] अर्थात खर्चे बहुत हैं, जिन्हें पूरा करने के [...] सावधि जमा रकम डिपाजिट लेना जरूरी [...] जाता है क्योंकि लाकर के किराए से खर्च [...] नहीं हो सकता और कोई भी व्या[...] नुकसान उठाने के लिए व्यापार नहीं [...] करता.

'सेंट्रल वाल्टस' वाले लाकर के अलग-अलग आकार के अनुसार 4,500 से 15,000 रुपए तक डिपाजिट (जमा राशि) और 150 रुपए से 1,200 रुपए तक वार्षिक किराया ले रहे हैं. डिपाजिट राशि पर ब्याज नहीं देते.

'इंडिया सेफ्टी वाल्टस लि.' वाले लाकर के आकार के अनुसार कम से कम पांच साल का किराया 2,200 रुपए से 15,000 रुपए तक ले रहे हैं. डिपाजिट नहीं.

'कुबेर सेफ वाल्टस' वाले 3,500 रुपए से 14,000 तक डिपाजिट जमा करवाते हैं. जिस पर 10% वार्षिक दर से ब्याज देते हैं. और 100 रुपए से 225 रुपए वार्षिक किराया लेते हैं.

अत्याधुनिक सुरक्षा उपायों के बावजूद ब्रिटेन सहित कई देशों के प्राइवेट सेफ वाल्टों में डकैतियां हो चुकी हैं. पर भारत में अभी तक ऐसी कोई घटना नहीं घटी है.

बहरहाल, प्राइवेट सेफ वाल्टस कंपनियों में उपलब्ध सुरक्षात्मक उपायों और सुविधाओं के बावजूद भारत जैसे देश में आम लोग इन कंपनियों में लाकर लेने के लिए दौड़ेंगे, ऐसा नहीं लगता. जब तक बैंकों में किसी भी तरह लाकर मिलते रहेंगे तब तक लोग बैंकों को ही प्राथमिकता देंगे क्योंकि मध्यमवर्गीय आदमी डिपाजिट राशि देने से पहले दस बार सोचेगा. दूसरी बात यह भी है कि बैंक के लाकरों के किराए की राशि अपेक्षाकृत कम है. ●

आखिरी फतह

कहानी • राजनारायण प्रसाद

कालिंजर के अजेय किले को अंततः अफगान सैनिकों ने जीत कर अपना झंडा फहरा ही दिया तथा शेरशाह शूरी के उस सपने को पूरा कर दिया जिसे ले कर वह अपने घर से चला था. मगर इस जीत के लिए उसे कितनी बड़ी कुरबानी देनी पड़ी यह केवल जलाल खां ही जानता था...

"या खुदा! समझ में नहीं आता कि इस खतरनाक चढ़ाई का अंत कहां होगा? कब अपनी मंजिल मिलेगी? हमें फतह कब हासिल होगी?"

सूरीवंश के महान विजेता महत्त्वाकांक्षी सुलतान शेरशाह ने चलतेचलते अचानक अपने घोड़े की बागडोर खींची और भरी दोपहरी में पसीने से बुरी तरह लथपथ हालत में ही ललाट पर चुहचुहा आई पसीने की बूंदों को पोंछते हुए कहा.

"हां आलमपनाह! पता नहीं यह किला है या कोई शैतानी करिश्मा! सातवें आसमान पर ले जाने वाली सीढ़ी सा लगता है. मैं ने तो पहले ही कहा था कि इसे जीतना आसान नहीं है. लोहे के चने चबाना है. यह दुर्जेय है. दुर्भेद्य है." साथसाथ चलते उस के हिंदू मंत्री राजा टोडरमल ने भी अपने घोड़े की बागडोर खींचते हुए कहा. वह भी थकावट से बोझिल सा होता जा रहा था.

"मैं ने सैकड़ों किले देखे और जीते भी. मगर इस जैसा एक भी नहीं पाया. तभी तो चंदेले निडर हो कर शासन करते हैं. अपने शत्रु की तनिक भी परवाह नहीं करते." ऊपर देखने की कोशिश में अपने सिर से गिरती अपनी शाही पगड़ी को संभालते हुए शेरशाह ने फिर कहा.

"परवरदिगार! बड़ी टेढ़ी खीर है इस पर कब्जा करना. इसे जीतने का अरमान संजोए कितने ही राजामहाराजा दुनिया से कूच कर गए. असंख्य सैनिकों के खून की नदियां बह
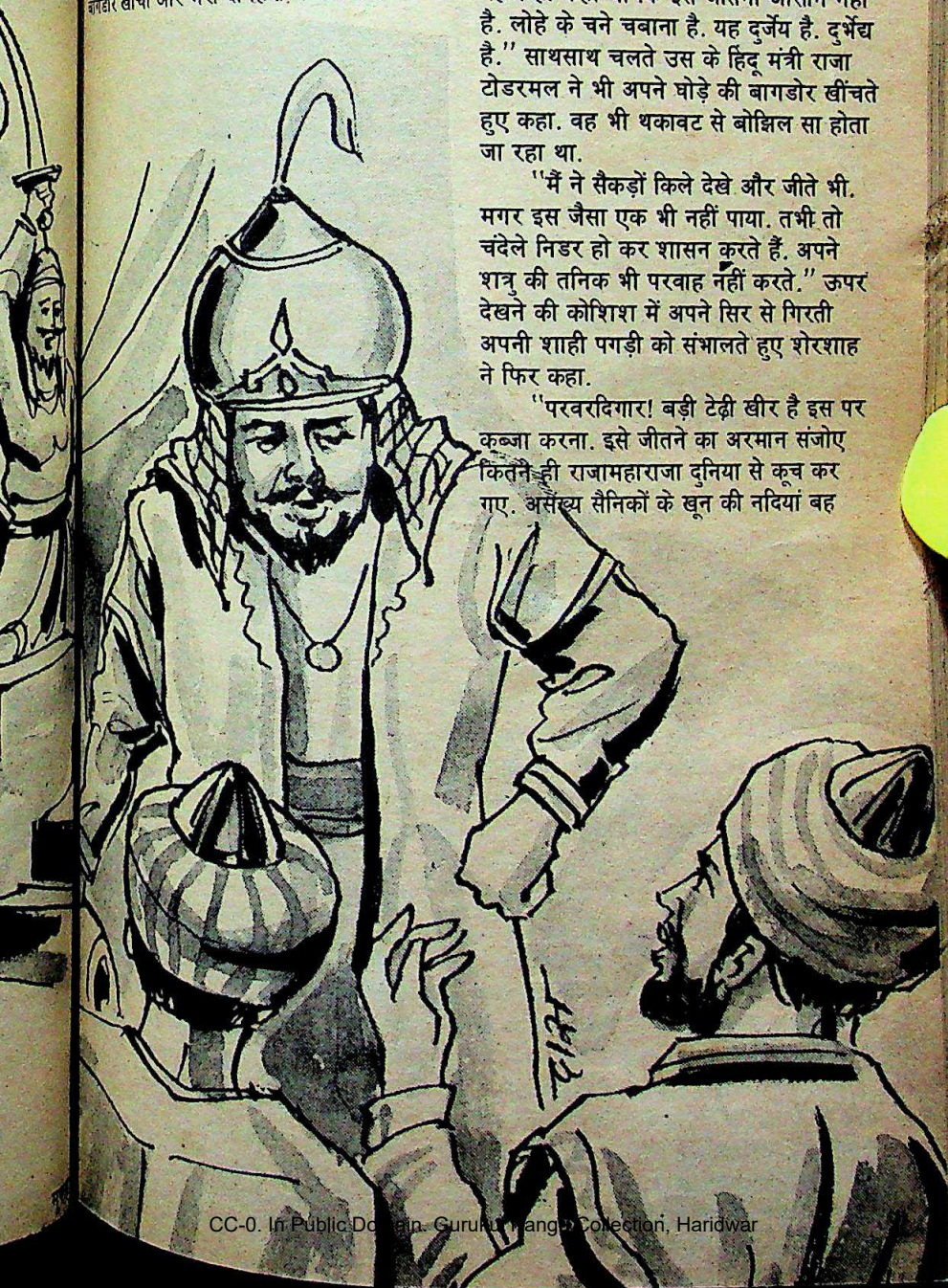
गईं. यहां तक कि स्वयं मुगल बादशाह हुमायूं ने भी अपने घुटने टेक दिए. वह भी चंदेल राजाओं से संधि कर के ही रह गया. इस पर अपना अधिकार न जमा सका." राजा टोडरमल ने अपने घोड़े पर आराम की मुद्रा में बैठते हुए कहा.

"तुम ठीक कहते हो राजा. मैं ने भी बड़ी तारीफ सुनी है इस की. मगर मैं अपनी इस फतह के महत्त्वपूर्ण अभियान को पूरा करने के लिए आग की धधकती ज्वाला में भी कूदने को तैयार हूं. देख लेना तुम! एक दिन इस किले पर हमारा अफगानी झंडा अवश्य फहरेगा. कीर्तिसिंह को मेरे पैरों पर झुकना ही होगा. चलो, आगे बढ़ो."

शेरशाह ने घोड़े की बागडोर ढीली की और कस कर एड़ लगा दी. उस के चेहरे पर फतह की दृढ़ महत्त्वाकांक्षा लिए तेजस्वी कठोरता स्पष्ट हो उठी थी. उस का घोड़ा पहाड़ी रास्ते पर झाड़ियों और जंगलों को तीव्र गति से पीछे छोड़ता हुआ आगे भागता जा रहा था.

टोडरमल ने भी सीधे तन कर घोड़े पर बैठते हुए संकेत से पीछे रुकी शाही फौज को आगे बढ़ने का आदेश दिया और उसी गति से शेरशाह के घोड़े का अनुसरण करने लगा पहाड़ी चढ़ाई का आज यह दूसरा दिन था.

कालिंजर का किला मध्यकालीन भारत का सर्वोत्तम और अजेय किला माना जाता था. वह वास्तुकला और रक्षाकौशल का अप्रतिम उदाहरण था. लगभग दो कोस के विस्तृत क्षेत्र में फैला वह अनूठा किला गंगा के दक्षिण में स्थित था. उस में मनोहर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण अनेक सुंदर झीलें और अद्वितीय मंदिरनिर्माण कला सर्वत्र चर्चा का विषय थी. एक दुर्गम पहाड़ की चोटी पर स्थित उस सुदृढ़ किले की प्राचीरें आसमान को छूती प्रतीत होती थीं. उस के आसपास का दुर्गम पहाड़ी व जंगली क्षेत्र उस की सुरक्षा के लिए पर्याप्त था. खतरनाक चढ़ाई, रास्ते की बीहड़ता, अनगिनत खड्डों व जंगलों के कारण किले तक पहुंचना अत्यधिक दुष्कर था. उस पर अधिकार सारे मध्य भारत पर अधिकार का परिचायक था. किला राजपूत राजा कीर्तिसिंह के अधीन था.

किले की अनवरत प्रशंसा एवं चर्चा ने शेरशाह का मन मोह लिया था. उस की फतह में उसे अपनी बढ़ती अफगान शक्ति की व्यापकता की झलक मिली लगती थी. यही कारण था कि किले पर अधिकार कर के उसे अफगान राज्य में मिलाने की अदम्य लालसा ने उसे पागल सा कर दिया था.

तेजतर्रार व दूरदर्शी कीर्तिसिंह शेरशाह द्वारा भेजे गए सुलहनामे को मानने को तैयार नहीं था. वह धोखे से भरी अफगानी चाल का मर्म भलीभांति समझता था. इस इनकार से शेरशाह को उस के खिलाफ अपना विजय अभियान छेड़ने का सुनहरा मौका हाथ लग गया. वह बहाना तो खोज ही रहा था.

इसी उद्देश्य से शेरशाह की शाही फौज किले तक पहुंचने के लिए उस दुर्गम और ऊंचे पहाड़ पर चढ़ती जा रही थी. हथियारों से लैस अफगान सैनिक जंगली पेड़पौधों की ओट से होते हुए तेजी से ऊपर की ओर बढ़ते चले जा रहे थे.

हालांकि पहाड़ पर चढ़ने से पहले चंदेल सैनिकों द्वारा ऊपर से लुढ़काए गए बड़ेबड़े पत्थरों और जहरीले तीरों की बरसात ने अफगानों को काफी क्षति पहुंचाई थी. हमलावर दिख नहीं रहे थे मगर लगातार हमला हो ही रहा था.

शेरशाह तो जंगलों और पहाड़ों की ओट से होने वाले उस गुप्त हमले से अनगिनत सैनिकों को वीरगति प्राप्त होते देख कर एक बार बेहद विचलित हो उठा था. मगर अपने सैनिकों की हिम्मत बढ़ाने के लिए उन्हें ललकारता हुआ जिरहबख्तर और लोहे का टोप लगाए पीठ पर ढाल बांधे अपने तूफानी घोड़े पर सवार हो खुद सब से आगे दौड़ता बढ़ रहा था. गुप्त हमले से बचते हुए शाही फौज आगे बढ़ती ही जा रही थी. उस की सतर्कता पहले से अधिक थी.

राजा कीर्तिसिंह को पहली बार उस के गुप्तचरों ने हमले के लिए आने वाली अफगानी फौज के बारे में सूचना दी तो उस दुस्साहस पर उन के माथे पर बल पड़ गए. यह सब जानते थे कि कालिंजर के किले पर फतह पाना तो दूर, अनगिनत खड्डों से भरी दुर्गम पहाड़ी चढ़ाई को पूरा करना भी साक्षात मौत के मुंह में प्रवेश करना था. लेकिन अब उन्होंने किले की सब से ऊंची बुर्ज से अपनी आंखों से टिड्डीदल की तरह आगे बढ़ते और चारों ओर घेराबंदी करते सशस्त्र अफगान
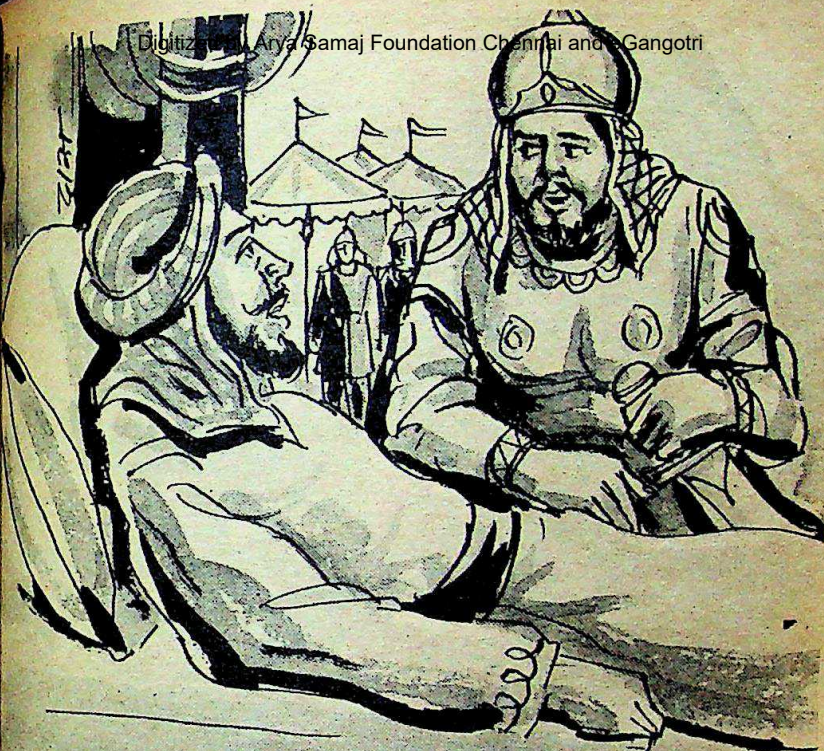
जलाल खां शेरशाह की ओर देख कर बोला, "अब्बा, आप की पगड़ी की लाज सुरक्षित रहेगी. मैं फतह की खुशखबरी ले कर जरूर आऊंगा."

सैनिकों को देख लिया तो वह मुकाबले की तैयारी के लिए सोचने पर विवश हो गए.

राज्य के बुद्धिमान मंत्रियों और रणनीति में कुशल सेनापतियों की एक आपातकालीन बैठक बुलाई गई और भलीभांति विचार कर सर्वसम्मति से सुरक्षित युद्ध नीति का अंतिम निर्णय लिया गया. रणनीति के तहत सारी राजपूत सेना किले के भीतर कर ली गई और किले का फाटक काफी मजबूती से बंद करवा दिया गया.

कई घंटों की लगातार चढ़ाई के कारण अफगान सैनिक पसीने से नहा कर थकावट से चूरचूर हो चुके थे. उन के लड़ाकू घोड़ों के मुंह से झाग भी निकलने लगे थे. फिर भी वे अपने सिपहसालार के हुक्म के मुताबिक लगातार ऊपर चढ़ते ही जा रहे थे. सब से आगे चलने वाले शेरशाह का भी यही हाल था.

शाम का सूरज पहाड़ों की ओट में छिपने की तैयारी करने लगा था. उस की सिमटती लालिमा भी शाम के गहराते धुंधलके में खोती जा रही थी. समय और परिस्थिति के मुताबिक शेरशाह ने अभियान को विराम देना ही उचित समझा. रात के अंधेरे में वैसे भी दुशमनों से नुकसान पहुंचने का अंदेशा था.

शेरशाह ने रुक कर रिसाले की देखरेख करने वाले अपने बेटे जलाल खां को वहीं पड़ाव डालने का हुक्म दे दिया. पलक झपकते ही फौज की सारी गतिविधि बदल गई. सैनिक और घोड़े सफर की थकान मिटाने की तैयारी में जुट गए.

दो महीने से भी अधिक समय बीत गया. मगर शेरशाह को अपने विजय अभियान में सफलता हासिल नहीं हुई. उस के सैनिक न तो किले का मजबूत फाटक ही तोड़ पाए और न

ही उस की गगनचुंबी दीवारों पर चढ़ पाए. बस, उस के चारों ओर घेरा डाल कर पड़ेपड़े समय काटने के अलावा उन के पास और कोई चारा नहीं रह गया था.

कीर्तिसिंह को शाही फौज की गतिविधियों से जरा भी फर्क नहीं पड़ा था. वह अपने सैनिकों के साथ पूरी तरह सुरक्षित था. उस के सारे काम पूर्ववत चल रहे थे. इस के विपरीत सफलता की कोई उम्मीद नजर न आने के कारण शेरशाह का चैन, नींद, भूखप्यास सब गायब हो चुके थे. वह पिंजरे में कैद शेर की तरह विवश तथा विकल था. अपनी हमलावर योजना को कारगर होता न देख कर उस के माथे पर बल पड़ गए थे. तथापि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उस का संकल्प अडिग था. उस की हिम्मत और लगन में जरा भी कमी नहीं हुई थी. अपनी सफलता के लिए कोई नई योजना की तलाश में उस ने कई रातें आंखों में ही काट दी थीं.

उस रात भी उस का यही हाल था. आधी से अधिक रात बीत चुकी थी. आसमान में टिमटिमाते तारे मानो शेरशाह की महत्त्वाकांक्षा का मजाक उड़ा रहे थे. जंगली जानवरों की डरावनी आवाजें अफगान रक्षकों की कभीकभी होने वाली आवाजों के साथ मिल कर जंगल की शांति को भंग करने की चेष्टा कर रही थीं. परंतु रात के गहरे एवं डरावने सन्नाटे का प्रवेश शेरशाह के खेमे में अभी भी नहीं हुआ था. जलती मशाल की रोशनी और रहरह कर उठने वाली पदचाप की ध्वनि उस की जगी बेचैनी का सुबूत दे रही थी. सफलता की लंबी प्रतीक्षा की घड़ियों ने उसे मर्माहत कर रखा था.

अपने रोबीले चेहरे पर बेचैनी और तनाव के बनतेबिगड़ते भावों को लिए शेरशाह चिंतातुर हो पीछे हाथ बांधे चहलकदमी कर रहा था. भविष्य में अपनी सफलता की कोई संतोषजनक योजना वह अभी तक सोच नहीं पाया था. उस की मुख मुद्रा और गतिविधियों को देख कर खेमे में बैठे सेनापति हांसू और जलाल खां को भी कुछ कहने का साहस नहीं हो रहा था.

''महीने बीत गए. रसद भी खत्म होने की ओर है. किले का घेरा डाले पड़े हमारे 10 हजार सैनिकों में से एक भी अभी तक किले में प्रवेश नहीं कर पाया. हम दुश्मन का एक बाल भी बांका नहीं कर सके. समझ में नहीं आता कि फतह पाने का नुसखा कहां से लाएं?'' मायूसी भरे स्वर में शेरशाह ने बिना सिर ऊपर उठाए कहा.

''हां हुजूर, किले की दीवारें भी तो न जाने किस फौलाद की बनी हैं जो हमारे प्रयासों का जरा भी असर नहीं होता. कमबख्त ऊंचाई भी इतनी कि तारों से बातें कर लें.'' जलाल खां ने काफी दबे स्वर में कहा.

''कहीं ऐसा न हो कि हमें मुंह की खा कर वापस लौटने को मजबूर होना पड़े. हमारी तमाम इच्छाएं चूरचूर हो जाएं. हम कहीं मुंह दिखाने के काबिल न रहें.'' शेरशाह की आवाज में निराशा और हार का अंदेशा झलक रहा था.

''नहीं, जहांपनाह. हमें अपनी मंजिल जरूर मिलेगी. मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती. फिर आप ही ऐसी बातें कहेंगे तो हम सब किस के हौसले से आगे बढ़ेंगे.''

''ठीक है. मगर हम यों कब तक घेरा डाल कर उल्लू बने रहेंगे. फतह का कोई आसान रास्ता जल्दी ही निकलना चाहिए.'' चलतेचलते रुक कर शेरशाह ने उस की ओर देखा.

''आलीजाह, मुझे लगता है कि अपने तोपखाने से किले के भीतर किसी तरह गोलाबारी कर दुशमन को नुकसान पहुंचाया जा सके तो शायद कुछ काम बन जाए.'' कई दिनों से सोची अपनी योजना को जलाल खां ने आखिर सामने रखने का साहस कर ही डाला.

''हां, दुशमन तो केवल तीरधनुष और तलवार, भाले से ही लड़ सकते हैं न? हमारे जैसा तोपखाना तो उन के पास है नहीं. इस हमले से घबरा कर किले का फाटक खोल भी सकते हैं.'' सेनापति हांसू ने जलाल खां का समर्थन किया.

''यह बात कुछ जंच तो रही है. मगर किले की ऊंचाई तक तोपखाना पहुंचेगा कैसे?'' शेरशाह ने अपनी शंका जाहिर की.

''यह भी कोई मुशकिल नहीं हुजूर. इस के लिए उतनी ऊंचाई तक सीढ़ियों वाली एक मजबूत दीवार खड़ी करनी होगी. हमारे तोपखाने और सैनिक उस पर चढ़ कर हमला करेंगे. यों खाली बैठ कर दिन गुजारने से तो यह अच्छा ही है न?'' जलाल खां ने अपनी
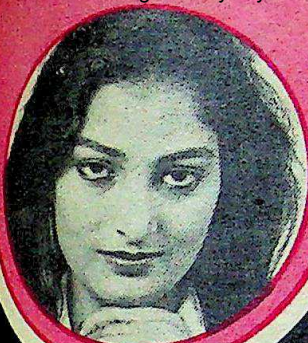
दोस्तों की दुशमनी

राह फूलों से भरी और मंजिल भी पास थी,
पर मेरे पांव के छालों ने परेशान किया.
शुक्र है मैं ने दुशमनों से बिगाड़ी न थी,
वरना तो चाहने वालों ने परेशान किया.

—यश खन्ना 'नीर'

बात का असर देखने के लिए शेरशाह के चेहरे की ओर गौर से देखा.

"मुझे यह उपाय पसंद आया. शायंद हमारी फतह का राज इसी में छिपा हो. इस पर कल से ही अमल किया जाए." शेरशाह के चेहरे पर राहत की एक नई चमक उभर आई. "तुम लोग जाओ. मैं तनहाई में इस पर गहराई से विचार करना चाहता हूं."

सुबह के सूरज ने सैकड़ों मजदूरों को दीवार के काम में भागदौड़ करते देखा. काफी लंबीचौड़ी मिट्टी की मजबूत दीवार तेजी से आसमान की ओर उठने लगी. शाही हुक्म के मुताबिक रातदिन काम चलने लगा. अपनी फौज के अफसरों के साथसाथ शेरशाह खुद भी सामने खड़े रह कर उस नए और अनोखे काम में दिलचस्पी लेने लगा. महीनों निर्माण कार्य अनवरत चलता रहा.

आखिर एक दिन ऐसा भी आया कि उस नई दीवार के ऊपरी हिस्से में बने सब से ऊंचे चबूतरे पर चढ़ कर शेरशाह की आंखों ने उस अजेय किले के गर्भ में बसी रंगबिरंगी दुनिया देख ही ली. राजमहल से ले कर साधारण लोगों तक के आंगन, घर, फाटक, सड़क सब कुछ नंगे हो उठे अफगान सरदार की आंखों के सामने.

राजपूती वैभव को देख कर एक बार तो शेरशाह की आंखें भी चौंधिया सी गईं. लेकिन उस की अनगिनत इच्छाओं को पंख से लग गए. लोभ की सीमा पवन गति से अनंत की ओर बढ़ चली. उसे विध्वंस कर अपनी फतह का झंडा फहराने के लिए उस का पराक्रम मचल उठा.

बड़े परिश्रम से अफगान सैनिकों ने तोपखाना दीवार के सब से ऊपरी हिस्से पर चढ़ाया. शाही हुक्म मिलते ही तोपचियों ने अपनी तोपों में गज लगाए, भलीभांति साफ किया, गोले भर कर बारूद भरा और पलीता लगा कर उस की परीक्षा ली. उन के दागने पर निकलने वाले गोलों ने अपने धमाकों से प्रलय का सा हड़कंप मचा दिया. मकान, मंदिर एवं राजमहल के टूट कर गिरने वाले हिस्सों और उन की अचूक और भयानक मार का शिकार होने वाले स्त्री बच्चों और पुरुषों के सम्मिलित आर्त्तनाद की ध्वनि ने शेरशाह की आंखों में छिपी फतह की अनोखी चमक को कई गुना बढ़ा दिया.

दुशमन की खतरनाक चाल से बेखबर कीर्तिसिंह अपने सुरम्य नगर का अचानक घनघोर विध्वंस देख कर भौचका सा रह गया. निरीह जनता की दुर्दशा ने अनेक राजपूत वीरों की छाती दहला दी. उन का क्रोध बारूद के पलीते में लगी आग की तरह तेजी से भड़क उठा.

मगर बड़ी विवशता थी. उतनी दूर से वे अफगानों को क्षति पहुंचाने में असमर्थ थे. महाविनाश की इस लीला को देख कर भी दांत पीसने, क्रोध से उबलने के अलावा उन के पास कोई चारा न था. इस मौके पर वे क्या निर्णय लें यह समझ ही नहीं पा रहे थे.

तेज धूप से भरी दोपहरी थी. किले के बराबर दीवार के चबूतरे पर खड़े शेरशाह का गर्वीला अट्टहास रहरह कर हवा में गूंज उठता

था. तोप का हर धमाका किले के भीतर विध्वंस का एक नया अध्याय खोल रहा था. उस खूनी लीला में शेरशाह को अपनी फतह तेजी से निकट आती दिखाई दे रही थी. राजपूती गौरव के उड़ने वाले परखच्चे जमीन पर बिखर कर ढेर हो रहे थे. उन ढेरों को बढ़ते देख कर सुलतान की खुशी को पंख से लग गए थे. वह तोप के हर धमाके पर एक जोरदार ठहाका लगा देता था.

तोपखाना उस के बिलकुल निकट ही था. अचानक शेरशाह के निकट एक बेहद तेज धमाका दूरदूर तक गूंज उठा. आग की तेज लपटों और बारूदी धुएं के बादलों ने उसे पूरी तरह अपने आगोश में ले लिया. तोप की अचानक फटने वाली नली ने अनुभवी तोपचियों को पत्थर की तरह जड़ कर दिया. निकट ही लड़ाई में प्रयोगार्थ संग्रहीत बारूद आग और विस्फोट की लपेट में आ कर और भी विध्वंसकारी बन गया. उस की गगन भेदी गंभीर गर्जना ने निकट खड़े सैनिकों के कान के परदे फाड़ डाले.

शेरशाह की प्राणांतक चीख और स्वयं वह भी उस खूनी माहौल में खो कर रह गए. अनेक अफगान सैनिक एवं अफसर तेजी से उसे बचाने के लिए दौड़े. लेकिन समय की दौड़ से भला अब तक कौन आगे जा पाया है?

थोड़ी देर में धुआं अपनेआप साफ हुआ तो शेरशाह की दुर्दशा देख कर अफगान सैनिकों के पैरों तले से धरती खिसक गई.

वह उस चबूतरे पर आग से बुरी तरह झुलस कर बेसुध पड़ा हुआ था. उस का शरीर काला पड़ गया था. शरीर के कई भागों में जलने से गंभीर घाव बन गए थे.

बेहोशी की हालत में ही उसे बड़ी सावधानी से उठा कर आननफानन में दीवार से नीचे उतार कर खेमे में लाया गया. सैंकड़ों सीढ़ियां नीचे उतरना साधारण बात नहीं थी.

शाही हकीमों का दल जी जान से उस की चिकित्सा में जुट गया. जड़ीबूटियां पीसी जाने लगीं.

कई घंटों बाद उन औषधियों ने उस की खोई चेतना को काफी हलके रूप में वापस लौटाया. जलन की टीस से उस के चेहरे पर बने विकृत भावों की तबदीली और हलकी सी कराहट ने बगल में बेहद चिंतातुर बैठे जलाल खां एवं अन्य सैनिक अधिकारियों के चेहरे पर आशा की किरण चमका दी. शेरशाह ने धीरेधीरे अपनी आंखें खोली और कराहट के साथ अपने चारों ओर देखा.

''अब्बा!'' शेरशाह के जलेझुलसे, काले पड़े विकृत चेहरे को निहारते हुए छलछलाती आंखों और रुंधे गले से जलाल खां ने पुकारा.

''हां बेटे! क्या हम ने किला फतह कर लिया है?'' जलन की दर्दनाक पीड़ा को पीते हुए अपने लक्ष्य का ध्यान कर बड़ी मुशकिल से शेरशाह बोल पाया.

''नहीं अब्बा. मगर अचानक यह आप को क्या हो गया? मुझे तो आप की चिंता ने सब कुछ भुला दिया है.'' जलाल खां ने अपने मन की बात कह दी.

''बेटे, मेरी जरा भी चिंता न करो. बस, जरा सा आग से जल ही तो गया हूं न. जल्दी ही ठीक हो जाऊंगा. मगर...''

''मगर जल्दी स्वस्थ होना बहुत जरूरी है.'' बीच में ही उस की बात काट कर चिंतित जलाल खां ने कहा.

''पागल हो तुम. जलने से अधिक पीड़ा तो मुझे अभी तक फतह की खबर न मिलने से हो रही है. लड़ाई के मैदान से हम दोनों के गायब हो जाने से सैनिकों का हौसला पस्त हो जाएगा. उन के दिल छोटे हो जाएंगे. जाओ और किले पर फतह की खुशखबरी ला कर शीघ्र मुझे सुनाओ.''

शेरशाह ने किसी तरह अपनी बात पूरी की और दर्द को झेल न सकने की हालत में आंखें बंद कर चुप होने के लिए मजबूर हो गया.

उसे मौत के करीब देख कर जलाल खां की हिम्मत जवाब दे रही थी. उठने का मन नहीं हो रहा था. आंखों से आंसुओं की धारा वस्त्र भिगो रही थी. वह एक हाथ से आंसू पोंछ रहा था तथा दूसरे हाथ से पंखा झल रहा था.

थोड़ी देर बाद कुछ आराम मिलते ही शेरशाह ने फिर अपनी आंखें खोलीं और जलाल खां की ओर देखा. अब उस की आंखों के आगे धुंधलापन छाने लगा था. फिर भी वह परिचित चेहरों को पहचान रहा था.

''जलाल, तुम अभी तक गए नहीं. यहीं हो?''

''हां, आप की हालत देख कर मैं तो

बिलकुल असहाय हो रहा हूं. समझ में नहीं आता क्या करूं?"

इस बार शेरशाह ने कुछ नहीं कहा. उस ने अपने चारों ओर खड़े हकीमों एवं चिंताग्रस्त सैनिक अधिकारियों की ओर देखा. अपने बिगड़ते भीतरी हालात से उसे मौत की बढ़ती हुई छाया का आभास हो गया था. वह यह भी जान गया था कि बेटे का पितृमोह उस की महत्वाकांक्षा की पूर्ति में बाधक सिद्ध हो रहा है.

"सिपहसालार, मेरी शाही पगड़ी लाओ." उस ने जलाल खां की बगल में खड़े सिपहसालार की ओर देखते हुए कहा. हुक्म का तुरंत पालन हुआ. काफी अदब के साथ शेरशाह की पगड़ी सामने लाई गई. उसे उस की ओर बढ़ाया गया.

शेरशाह ने अपने जले कांपते हाथों से उसे लेते हुए फिर कहा, "जलाल बेटे, मेरे और निकट आओ."

वह उस का मकसद समझ गया. उस ने और निकट आ कर माथा आगे बढ़ाते हुए कहा, "हां, अब्बा."

शेरशाह ने अपने थरथराते हाथों से अपनी शाही पगड़ी उस के मस्तक पर रख कर, कष्ट से कराहते हुए धीमी और अस्पष्ट आवाज में कहा, "बेटे, अब मेरा मोह छोड़ो. मैं अब अपनी आखिरी फतह की खुशखबरी तुम्हारे ही मुंह से शीघ्र सुनना चाहता हूं. मैं तो इस हालत में मैदान में जाने से रहा. लेकिन जब तक फतह की खबर मुझे नहीं दोगे तब तक मैं अपनी मौत को अपने ऊपर फतह नहीं पाने दूंगा. हां, मेरी दुर्दशा की खबर फौज को न लगने देना. मेरी पगड़ी की लाज आज तुम्हारे हाथों में है. जाओ बेटे, तुरंत फतह हासिल कर के लौटो."

सिर पर पगड़ी रखते ही जलाल खां के तन में एक नई शक्ति का संचार हो गया. पराक्रम के प्रदर्शन की आंधी मन में उठने लगी. उस ने झटके से उठ कर शेरशाह को आदाब बजाते हुए कहा, "अब्बा, आप की

पृथ्वी से दूर होता चांद

बहुत से बच्चे चांद को देख कर यह सोचते हैं कि आखिर यह धरती पर क्यों नहीं गिरता. लेकिन ठीक इस के उलटा यह पृथ्वी से दूर हटता जा रहा है.

यह तो सभी जानते हैं कि चांद अपनी कक्षा में घूमते हुए पृथ्वी की परिक्रमा करता है. परिक्रमा करते हुए कभी वह पृथ्वी के पास से गुजरता है तो कभी दूर से. जब चांद पृथ्वी के निकट से गुजरता है तो वह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण तेजी से पृथ्वी की तरफ खिंचता है जिस के कारण समुद्र में ज्वारभाटा उत्पन्न होता है. चांद के इस प्रभाव के कारण विपरीत दिशा में पृथ्वी के बाहरी हिस्से पर एक उभार सा उठता है. चांद इस उभार से पीछे की ओर हटता है, जिस से पृथ्वी के परिभ्रमण की गति धीमी हो जाती है, लेकिन जब उभार चांद की तरफ आगे बढ़ता है तो पृथ्वी के परिभ्रमण को गति मिलती है.

यद्यपि यह प्रभाव नगण्य सा है, फिर भी इसे मापा जा सकता है. चांद के ज्वारीय प्रभाव के कारण पृथ्वी का दिन 62,500 वर्षों के बाद एक सेकंड बढ़ जाता है.

40,000 लाख वर्ष पूर्व एक दिन 22 घंटे 13 मिनट का होता था अर्थात एक वर्ष 395 दिनों का. पृथ्वी के उभार और चांद के बीच होने वाले खिंचाव के कारण चांद के चक्कर लगाने की गति बढ़ जाती है जिस के परिणामस्वरूप वह धीरेधीरे पृथ्वी से दूर हटता जा रहा है. चांद के एक चक्कर के बाद यह एक इंच के दसवें हिस्से के बराबर पृथ्वी से दूर हट जाता है.

लगभग 7500 लाख वर्षों में चांद पृथ्वी से दूर खिसक कर काफी छोटा दिखने लगेगा. तब सूर्य ग्रहण पूरी तरह से नहीं लग पाएगा अर्थात चांद का मंडल पूरी तरह से सूर्य को नहीं छिपा पाएगा.

पगड़ी की लाज सुरक्षित रहेगी. मैं फतह की खुशखबरी ले कर जल्द आऊंगा.

फिर वह तेज कदमों से खेमे के बाहर निकल गया. उस के साथ कुछ सरदार भी निकल गए. उपस्थित लोगों ने शेरशाह के चेहरे के भावों में काफी शांति सी महसूस की.

लड़ाई के मैदान में पहुंच कर जलाल खां ने लड़ाई के बाजे बजाने की अनुमति दे दी. अचानक बजने वाले नगाड़ों की आवाज सुन कर तोपचियों के हाथ फौरन हरकत में आ गए. "अल्लाह हो अकबर" के गगनभेदी नारों ने पुनः सारी पहाड़ी को हिला कर चंदेलों के कान खड़े कर दिए.

उस के बाद तो तोप के गोलों की धुआंधार मार ने किले के भीतर भयानक कहर ढा दिया. भीषण नरसंहार से हाहाकार मच गया. राजपूतों के तीरकमान की बरसात भी अफगानों को काल के गाल में समेटने लगी. मौत का साक्षात रक्तरंजित तांडव दृष्टिगोचर होने लगा. लाशों के ढेर और खूनी लड़ाई के

कुहराम को देख कर जैसे सूरज ही थम गया. लड़ाई के नगाड़ों का शोरगुल अंतिम खेल की पूर्व सूचना देने लगा.

अंत में अस्ताचल की ओर फिसलने वाले सूरज ने स्पष्ट रूप से देख लिया कि कालिंजर के किले पर केसरिया झंडे के बदले अफगानी चांदतारों वाला झंडा फहरा रहा था. कीर्तिसिंह ने जीतेजी किला हाथ से नहीं जाने दिया था. वह अंतिम क्षण तक लड़ता हुआ अपने वीर राजपूतों के साथ रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हो गया था. राजपूतों की लाशों के पहाड़ अफगानी फतह की कहानी कह रहे थे.

फतह के ऐलान ने अफगानों का सारा दुखदर्द भुला दिया. हर्षोल्लास में उन के तोपचियों ने शाम के सूरज को भी तोपों की सलामी दे कर दिशाओं को प्रकंपित कर डाला. वे खुशी मनाते हुए विश्राम की तैयारी करने लगे.

फतह की खुशी से उन्मत्त जलाल खां ने अपने खून से लथपथ कपड़ों और लड़ाई में लगे गंभीर घावों की तनिक भी परवाह नहीं की और शेरशाह को खुशखबरी सुनाने के लिए तेजी से दौड़ पड़ा. उस ने अपने अब्बा की पगड़ी की लाज रख ली थी. उन की आखिरी ख्वाहिश को अंजाम दे डाला था. उस का घायल घोड़ा तीव्र गति से दौड़ता जा रहा था अपने लक्ष्य की ओर.

शेरशाह की हालत लगातार नाजुक होती जा रही थी. चेहरे पर असीम आंतरिक पीड़ा प्रकट हो रही थी. हकीमों का दल उसे बचाने के लिए दिलोजान से लगा हुआ था.

बोलने में कष्ट होने के कारण शेरशाह खेमे में मौजूद शाही हकीमों एवं अपने अधिकारियों की किसी भी बात का जवाब नहीं दे रहा था. मगर उस की खोजी आंखें खेमे में दरवाजे की ओर ही रहरह कर उठ जाती थीं. उस के कान लड़ाई के मैदान में बजने वाले बाजों और तोपों के धमाकों की ओर ही लगे हुए थे.

शेरशाह के खेमे के पास पहुंच कर अपनी सारी पीड़ा और थकावट को भूल कर जलाल खां घोड़े से नीचे उतरा और दौड़ते हुए खेमे में घुस गया. उसे देखते ही शेरशाह के पास मौजूद लोगों ने उस के लिए पूरी जगह बना दी.

"अब्बा हुजूर, कैसी तबीयत है आप की?

पहले से ठीक हैं न?" इतना कहतेकहते उस का गला भर आया.

"कौन? जलाल बेटे, आ गए तुम?"

"हां, अब्बा. देखिए मैं..."

जलाल खां को पहचानते ही उस की बात को बीच में काट कर शेरशाह ने धीमी आवाज में पूछा, "बेटे, क्या कालिंजर के किले की फतह की खुशखबरी ले कर आए हो? क्या उस पर हमारा झंडा फहरा रहा है?"

"हां, अब वह किला हमारा हो गया अब्बा. आप की दुआ से आखिरी फतह का सेहरा हमारे ही सिर बंधा. कीर्तिसिंह अपने सैनिकों के साथ लड़तालड़ता मारा गया. आप की पगड़ी की लाज मैं ने रख ली है."

आवेश में आ कर कहतेकहते जलाल खां शेरशाह के आंखों में बुझती रोशनी को देख कर अपने आंसुओं को रोक न पाया.

"शाबाश बेटे, बस इसी खबर का मुझे अब तक इंतजार था. मुझे पूरा भरोसा था कि आखिर में फतह हमारी ही होगी."

ऐसा लगा मानो शेरशाह के झुलसे चेहरे पर बढ़ती मौत की छाया एक बारगी हट गई हो. एक अदभुत चमक से निखर सा उठा उस का चेहरा.

"मेरी मुराद पूरी हो चुकी है. मगर अब एहसास हो रहा है कि मुझ पर आखिरी फतह भी मौत की ही होगी. कल का सूरज शायद मुझे न देख पाए. मगर मेरी जगह तुम अपनी जिम्मेदारी भी..." शेरशाह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया और एक अंतिम हिचकी के साथ उस की गरदन तकिए पर एक ओर लुढ़क गई. उस की पथराई आंखों और बेजान शरीर को खड़े लोग देखते रह गए.

"अब्बाजान!" जलाल खां जोरों से चीख मार कर पिता की बेजान लाश से चिपक कर फूटफूट कर रोने लगा. बच्चों की तरह बिलखने लगा.

मगर अपनी आखिरी फतह का मालिक उसे सुनने के लिए मौजूद नहीं था. उसे तो अस्ताचल की ओट में छिपता हुआ सूरज अपने साथ लिए उस गंतव्य की ओर जा रहा था जहां से फिर कभी कोई वापस नहीं लौट सकता.

कुरान की आयतों के स्वर उस गमगीन वातावरण में तैरने लगे थे.

क्या युवकों में एक फै

जिंदगी के प्रति मनुष्य का मोह जिस सीमा तक जाता है, जिंदगी से ऊब की दास्तान भी उतनी ही दूर तक पहुंचती है. इस विचित्र विरोधाभास के पीछे छिपे कारण को तलाशना एक बेहद मुशकिल काम है.

अगर जीवन की खुशनुमा उपलब्धियां इनसान में जीने के प्रति लगाव पैदा करती हैं तो, उस की कठोर वास्तविकता आदमी को स्वेच्छा से मृत्युवरण के द्वार तक भी खींच ले जाती है. यह सच है कि विभिन्न परेशानियों से बने अवरोध के समक्ष कई बार आदमी हार मानने को विवश हो जाता है. लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इस विवशता की सीमारेखा क्या हो?

आए दिन समाचार माध्यमों में हम आत्महत्या की खबरें पढ़ते हैं. आश्चर्यजनक रूप से इन खबरों में युवा या किशोर वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वालों की संख्या ज्यादा रहती है. लेकिन ये सभी जीवन की चुनौतियों के सामने खुद को अकेला और असहाय पा कर आत्महत्या करते हैं, इस तथ्य को गले से नीचे उतारने में कई रुकावटें हैं.

दरअसल युवाओं में आत्महत्या की घटनाओं का विस्तृत विश्लेषण करने पर कई चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आए हैं. मसलन यह कि आत्महत्या बहुत से आत्म... किशोरों अथवा युवकों द्वारा एक फैशन की तरह की जाती है और वे महज एक ... सम्मोहन के तहत यह काम करते हैं. ... शताब्दी के आरंभ से ही आत्म... समाजशास्त्रियों एवं मनोविज्ञानियों के गहन अध्ययन का विषय रहा है.

हाल ही में कैलीफोर्निया के ... फिलिप और लुंदी कार्सटेंसन नामक अध्येताओं ने अपनी शोध की लंबी ... बाद यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि ... समाचार माध्यमों द्वारा आत्महत्या की घटनाओं को जितने महत्त्व के साथ ... किया जाता है, उस के प्रभाव में ... युवा मात्र फैशन के बतौर आत्महत्या ... उन्मुख हो जाते हैं.

फिलिप एवं कार्सटिंसन ने अपने मत के ...में मर्लिन मुनरो तथा वर्जीनिया वुल्फ को ...करण किया, जिन की आत्महत्या को ...चारों और दूरदर्शन ने इतना महिमा- ...न कर के प्रस्तुत किया कि उन दिनों ...युवतियों में आत्महत्या की घटनाओं में ... में वृद्धि आ गई. मर्लिन मुनरो द्वारा ...महत्या किए जाने के बाद अमरीकी ...र्शन ने एक शृंखला 'स्यूसाइड एंड ...' प्रसारित की. इसी दौरान एकत्र किए ... आंकड़ों के अनुसार किशोर वय के

साथ ही युवतियों में आत्महत्या के मामले लड़कों के मुकाबले तीन गुना ज्यादा प्रकाश में आए हैं. इस की एक वजह यह हो सकती है कि लड़कियां स्वाभाविक रूप से फैशन के प्रति अधिक आकर्षित रहती हैं. अकसर सुनने में आता है कि अमुक लड़के या लड़की ने प्यार में धोखा खाने पर आत्महत्या कर ली. इस तरह के ज्यादातर मामलों में आत्मघात करने वालों की भावुकता बेवकूफी के दायरे में रखी जा सकती है.

इन में से कई तो महज इसलिए मृत्यु का

...कों में आत्महत्या एक फैशन है ?

वय:संधि पार करते ही किशोर मन की तूफानी सोच उन्हें वह हर काम करने, हर फैशन का अंधानुकरण करने को उद्वेलित करती है जिन का उन के संगीसाथियों में प्रचलन हो. इसी मनोविज्ञान के तहत असफल तथा निराश युवाओं में आत्महत्या भी अब एक फैशन बनती जा रही है. इस संबंध में हमारे मनोवैज्ञानिकों, मनश्चिकित्सकों की क्या राय है?

स्वयं वरण करते हैं कि उन्होंने किसी चलचित्र में नायक-नायिका को ऐसा करते देखा था. किशोर प्रेम से संबंधित कई हिंदी फिल्में अल्पवयस्क दर्शकों पर गंभीर और खतरनाक प्रभाव डालती हैं.

'एस.ओ.एस.' जैसे अंतर्राष्ट्रीय विपत्ति संकेतों का पश्चिमी गायकों तथा अभिनेताओं द्वारा गलत तरीके

...लड़कियों में आत्महत्या के मामले 22 ...त तक बढ़ गए.

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि किशोर ...वर्ग की जनसंख्या का सात प्रतिशत ...आत्महत्या की प्रसिद्ध हो चुकी घटनाओं ...प्रभावित होता है, जबकि प्रौढ़ आयु वालों ...र इस का प्रभाव केवल .45 प्रतिशत तक ही सीमित है.
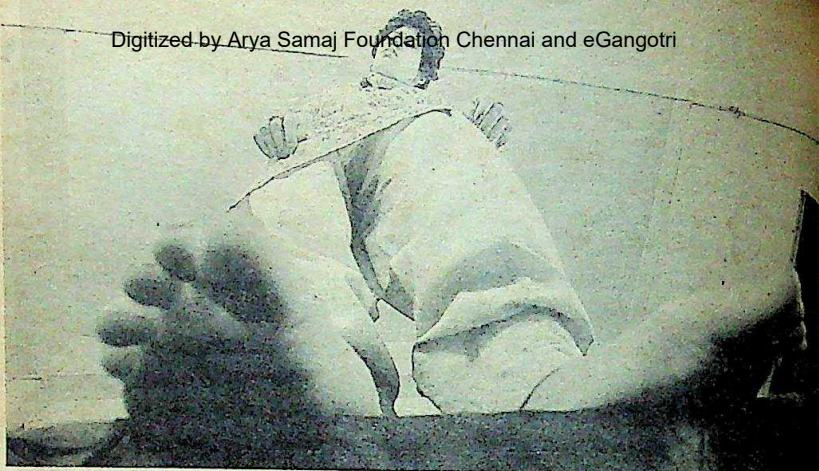
युवतियों में आत्महत्या के मामले लड़कों के मुकाबले तीन गुना ज्यादा प्रकाश में आए हैं.

से प्रस्तुतिकरण भी वहां के युवाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति को बढ़ाता है. इन कार्यक्रमों में अपने पालकों द्वारा लगाई गई पाबंदियों के विरोध में मुक्त आचरण की वकालत जाती है और कई बार युवकयुवतियों को अपनी जान दे देने के लिए उकसाया जाता है.

इस तरह पश्चिमी युवाओं में आत्महत्या के प्रति आकर्षण सा पैदा होने लगता है. दरअसल वयःसंधि को पार कर जो उम्र आगे बढ़ती है, उस में हर नई चीज को जानने की उत्सुकता अपनी चरमसीमा पर होती है. हालांकि ऐसी ही उत्सुकता एक चारपांच वर्ष के बच्चे में भी होती है. लेकिन इस अबोध बालक की अपेक्षा किसी किशोर मन में पल रही आकांक्षा कई बार बेहद घातक सिद्ध हो सकती है क्योंकि मुख्यतः उन में अपने संगीसाथियों से हर तरह की बराबरी का भाव मौजूद रहता है और वे हर ऐसा काम करने को तत्पर रहते हैं जो उन के हमउम्र दोस्तों ने किया हो.

इस लिहाज से आत्महत्या जैसी चीज किशोर अवचेतन में एक तरह के साहसिक और सम्मानजनक काम का दर्जा रखती है, जिसे संपन्न कर के वे अपने परिचितों के बीच 'अमर' होना चाहते हैं. नतीजतन अगर यह कहा जाए कि युवाओं में आत्महत्या के बहु... से प्रयास बतौर प्रतियोगिता के किए जाते हैं तो शायद ज्यादती नहीं होगी.

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उम्र के इस बिंदु पर युवाओं की अपनी गंभीर समस्याएं होती हैं. मसलन कैरियर के प्रति उन की चिंता, समाज में स्व... को प्रतिष्ठित करने का दबाव और बेरोजगारी से उत्पन्न होने वाला पारिवारिक तनाव आदि. लेकिन इस का यह मतलब तो नहीं कि परिवार के बड़े सदस्यों की हलकी फटकार पर या प्रेम में असफलता जैसी बेमानी समस्याओं से उत्प्रेरित हो कर वे आत्महत्या की ओर ही अग्रसर हो जाएं.

इस अर्थहीन कदम से चाहे उन की अपनी समस्याएं खत्म होती जान पड़ें, लेकिन उन की अपरिपक्व हरकत से एक पूरे परिवार और समाज को कितनी मुशकिलों का सामना करना पड़ सकता है, इस का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता. युवाओं को अपना दायित्व अच्छी तरह समझना होगा. उन्हें स्वीकारना होगा यह तथ्य कि स्वयं को खत्म कर लेना कोई समाधान नहीं है. खास तौर पर जब यह कार्य किसी प्रकार के अनुकरण में किया गया हो, तब तो इस अपराध को कतई क्षमा नहीं किया जा सकता. ●

राष्ट्रीय बहुरूपिया सम्मेलन

लेख • डा. अंजना संधीर

अहमदाबाद के जयशंकर सुंदरी हाल में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की तरफ से 17 से 20 जनवरी तक प्रथम राष्ट्रीय बहुरूपिया सम्मेलन का आयोजन किया गया. 17 जनवरी शाम 3 बजे से 5.30 के बीच कल्याण केंद्र रायपुर से जयशंकर सुंदरी नाट्यगृह तक बहुरूपियों द्वारा एक शोभायात्रा निकाली गई जिस में पूरे देश के विभिन्न राज्यों से आए 100 बहुरूपियों ने अपने विभिन्न रूपों का प्रदर्शन कर शहर के लोगों को आकर्षित किया. इन में से कुछ बहुरूपिए लंगूर बने हुए थे और इस कदर उछलकूद कर रहे थे कि उन्हें देख कर बच्चे उन्हें असली लंगूर समझ कर डर गए.

प्रथम राष्ट्रीय बहुरूपिया सम्मेलन में भाग लेने वाले कलाकारों का उद्देश्य यह नहीं था कि उन की राजनीतिक पहचान बने, बल्कि उन की चिंता यह थी कि विलुप्त हो रही एक लोक कला को कुछ तो सरकारी संरक्षण मिले.

शोभायात्रा के बाद शाम को छः बजे जयशंकर सुंदरी नाट्यगृह में जनता के सामने विभिन्न रूपों के प्रदर्शन का कार्यक्रम था जिस में लोगों को बहुत मजा आया.

सम्मेलन
कारों का
उन की
, बल्कि
विलुप्त
को कुछ
ले.

कर डर गए
को छः बजे
नता के सामने
क्रम था जिस

एक सफल बहुरूपिया की सफलता इसी में है कि वह जो भी रूप धारण करे उस में अपने आप को आत्मसात कर ले.

इस में अंधे की दोस्ती, ग्वाले, पागल फकीर, हनुमान आदि के स्वांग लोगों ने बहुत पसंद किए. आंध्र से आए लोगों ने द्रोपदी वस्त्रहरण का दृश्य दिखा कर लोगों को हैरत में डाल दिया.

18-19 जनवरी की सुबह बहुरूपियों

प्रथम राष्ट्रीय बहुरूपिया सम्मेलन में चार कलाकारों द्वारा फकीर के चार रूपों का प्रदर्शन. ▼

बहुरूपिया द्वारा भीख मांगने का प्रदर्शन सब कुछ नकली है पर प्रदर्शन असली जैसा

की समस्याओं, उन के मेकअप, ड्रेस, कार्य आदि पर गोष्ठी हुई. इस में स्वयं बहुरूपियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए. उदाहरण के तौर पर हनुमान के पात्र पर चर्चा हुई. राजस्थान में हनुमान बनने वाले बहुरूपिए के विचार कर्नाटक के हनुमान से बिलकुल अलग थे. उन के चलने का ढंग भी अलग था. राजस्थान के जमनालाल बहुरूपिए ने बताया कि गलियों में जब वह हनुमान का रूप धारण करते हैं तो 'वीर' हनुमान...उछलते हुए सिर्फ 'जय सियाराम' कहते हैं जब कि 'दास' हनुमान चुपचाप बैठते हैं.

कर्नाटक के बहुरूपिए ने बताया कि बकरी के बालों से उन्होंने बंदर के मुंह की दाढ़ी बनाई है तथा पूंछ भी उन्होंने खुद ही बनाई है. ''आप ने यह वेशभूषा क्या नाटक, कलेंडर या टीवी से सिखी'' के जवाब में उन्होंने कहा, ''गुरु से सीखी. कलेंडर वाले तो हमें देख कर चित्र बनाते हैं.''

पश्चिम बंगाल के पूर्ण चौधरी तथा गुजरात के देवा भाई ने बताया कि ''हम बंदर की तरह खाज करते हुए जाते हैं तो लोग पसंद करते हैं. वेशधारण करने से पहले सब बहुरूपिए अपने गुरु का स्मरण करते हैं. बहुरूपिया बनने के लिए गुरु का होना आवश्यक है.''

राजस्थान के शिवराज ने बताया कि ''एक टांग पीछे को मोड़ खड़े रह कर सिर्फ 'जय सियाराम' ही बोलते हैं. टांग मोड़ने का कारण है कि हनुमान के घुटने में भरत का तीर लगा था. अतः यही उन का आदर्श ढंग बन गया है.''

चर्चा बड़ी दिलचस्प रही. भाषा की समस्या अवश्य थी क्योंकि असम, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु के बहुरूपिए काम बता रहे थे मगर बोल नहीं पा रहे थे.

जानकीलाल बहुरूपिया फकीर के रूप में आए. उन्होंने बताया कि बहुरूपिया को 52 प्रकार के रूप धारण करने होते हैं. फकीर में भी दरवेश, मलंग, खड़ा फकीर. खड़ा फकीर दिन में बस किसी एक से ही मांगेगा. दूसरे फकीर गलियों में मांगते फिरते हैं और कुछ मसजिद में रहते हैं.

जयपुर के दाऊदखां ने बताया कि फकीर पांच तरह के होते हैं : जलाली, कादरी, चिश्ती, खाकी और बादी खानदान से. जलाली और कादरी फकीर किसी से मांगते नहीं हैं.

एक संवाद बोले

''याद है तो आबाद है. भूल गया तो बरबाद है.''

कादरी खानदान वाला गाली देगा, रोकेगा और आखिर में जो कह दिया वह व्यक्ति से ले कर ही जाएगा चाहे उस की जान चली जाए. खाकी फकीर मलंग या मिट्टी को पसंद करता है. उस का सवाल भी एक सा ही होता है.

''बहुरूपियों का काम नकल करना है मगर इसलाम में तो संगीत या गानेबजाने को

...नहीं किया गया तो क्या समाज तुम्हें ...कर करता है?'' यह सवाल जब एक ...कलाकार ने किया तो दाऊदखां ने ...विश्वास के साथ कहा, ''हजरत उम्रे यार ...री का बटवा बख्शा था, वह है ...या.'' इस बारे में उस ने लंबा इतिहास ...कि बहुरूपिया और फकीर में जो अंतर ...यह कि बहुरूपिया अंत में यह कह कर 'मेरी बख्शिश पक्की हो गई' अपनी ...न देता है.

परिवार के संबंध में पूछे गए सवालों में ...यों ने बताया कि 'हम अपनी ही जाति ...महिलाओं से विवाह कर सकते हैं और ...री महिलाएं इस पेशे में हमें मदद करती ...गर गलियों या सड़कों पर रूप बदल कर ...रे साथ नहीं चलतीं. वे घर पर ही रहती ...अधिकतर फकीर हिंदी या उर्दू में ही ...ते हैं.

अपनी दाढ़ी को किस तरह चिपकाते हैं, ...बारे में जानकीलाल बहुरूपिए ने कहा, ...पहले तो हम बड़ या गूलर के दूध का ...योग करते थे. अब तो गोंद इस्तेमाल करते ...

अपनी आवाज और शरीर को दुरुस्त व ...रखने के लिए महेश उर्फ महबूब ...रूपिए ने कहा, ''कसरत करते हैं. सुबह ...उठ कर एकडेढ़ घंटा बोलने व आवाजें ...लने का अभ्यास करते हैं. जिस से गला ...हो जाता है. दो ईंटों से वरजिश करते हैं. ...ट खाना नहीं खाते. पान, खटाई, तेल, ...नहीं खाते और जो भी वेश धारण ...ते हैं उसी पात्र में मानसिक रूप से ...अपने आप को ढाल लेते हैं. नहीं तो हम उस ...की भूमिका नहीं कर पाते. एक घंटे में एक ...रूपिया कम से कम चार रूप धारण कर ...ता है.''

बहुरूपियों को क्याक्या परेशानियां ...नी पड़ती हैं व इस लोक कला को बनाए ...ने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए, ...बारे में भी काफी चर्चा हुई.

20 जनवरी को टाउन हाल से जयशंकर ...हाल की शोभायात्रा निकाली गई तथा पूर्णाहुति समारोह में मुख्य मेहमान के रूप में शहर के म्युनिसिपल कमिश्नर श्री पी. बसु उपस्थित हुए.

विलुप्त होती कला

बहुरूपिया कला एक अपनी प्राचीन लोककला है. भवई, रामलीला, नौटंकी के पात्रों में से इस कला का जन्म हुआ. बहुरूपिए एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते रहते हैं. अपनी कला में इतने सफल होते हैं कि उन्हें पकड़ पाना मुशकिल हो जाता है. वे कला प्रेमी हैं. किसी भी स्थान पर एकदो महीने से ज्यादा नहीं ठहरते हैं. महीने के अंत में बख्शिश मांगते हैं. इन्हें कई जगह मीरासी भांड या डोम भी कहते हैं.

पुराने जमाने में बहुरूपिए राजाओं, ठाकुरों, जागीरदारों का संरक्षण पाते थे और उन का मनोरंजन किया करते थे. मगर धीरेधीरे यह कला समाप्त होने लगी. इस लुप्त हो रही कला को बचाए रखने के लिए इन कलाकारों को राज्याश्रय मिले, इस विषय पर भी चर्चा की गई.

इन्हें अपनी गरीबी का दुख नहीं है. इन में से कुछ तो मैट्रिक पास हैं. महेश उर्फ महबूब के पिता की इच्छा थी कि वह उसे पढ़ालिखा कर सरकारी नौकर बनाए. मगर महेश अपनी इच्छा से बहुरूपिया बना.

उदयपुर के बहुरूपिए परसुराम का एक दिलचस्प किस्सा जानने को मिला. एक बार आयकर निरीक्षक का रूप धारण कर वह उदयपुर के एक बहुत बड़े करोड़पति के घर गया. उस की छापा मारने की अदा, उस का बहीखाते देखने का अंदाज ऐसा था कि उद्योगपति अचानक आयकर निरीक्षक के आने से घबरा गया. उस ने जान छुड़ाने के लिए 25 हजार रुपए बहुरूपिए के हाथ में रख दिए. 'वह अपनी कला में सफल हो गया' ऐसा अनुभव करते ही परसुराम ने सेठ को रुपए लौटाते हुए अपनी बख्शिश मांगी. जब सेठ ने जाना कि यह तो बहुरूपिया है तो जान में जान आई. सेठ ने खुश हो कर बख्शिश के रूप में उसे पांच हजार रुपए दे दिए. ●

लेख ● डा. प्रेमपाल सिंह 'वाल्यान'

सेक्स, समाज और शिक्षा

अधकचरे ज्ञान से बढ़ता अपराध

आज समाज में अपराध बढ़ रहा है. ब... अपराधों के कारणों की सूची में सेक्स... एक प्रमुख कारण है. अगर समाज... स्वस्थ रखना है तो यह समय की मांग... कि नई पीढ़ी को सेक्स के बारे में उसी तरह... शिक्षित किया जाए जैसे कि विज्ञान व... तकनीकी जानकारी के लिए किया जा रहा है.

...से हिंसक सेक्स अपराध या फिर बिना सोचे विचारे सेक्स के ... और असंयमित आनन्द लूटने की कोशिश.

इन्हीं दो धुर पंथी खेमों में विभाजित हमारे समाज में सेक्स या तो 'पाप' और 'अपराध' का पर्याय बन चुका है या फिर 'मनोरंजन का साधन', इन दोनों खेमों में लगातार होड़ लगी हुई है.

कोई भी पत्रपत्रिका उठा कर देखिए, ...में औरत किसी वस्तु की तरह बिकती हुई ...र होगी या उस के सामूहिक बलात्कार का ...र होने की घटना का वर्णन अवश्य ... जिन संगठनों, संस्थाओं या सरकारी ...मों की जिम्मेदारी इन अपराधों को ...की है, खुद उन के चेहरों पर कालिख ...नजर आएगी. एक नारी कल्याण संगठन ...ने अपनी रपट में कहा भी था कि 'औरत को ...र और पुलिस दोनों से बराबर का खतरा

सेक्स मनोरंजन और थोड़ी देर सुख पाने ...एक साधन तो स्वीकार्य है ही परंतु ...कता हमारे लिए सतत व्यावसायिक ...है. फिल्म, विज्ञापन, संचार साधन हर ...हिंसक सेक्स और बाजारू रंगारंग ...जा रहा है. नतीजा सामने है–हम ...न पैदा करते हैं उस से दुगुने खाने ...हो रहे हैं. अभी तक तो हमारा देश ...एक आस्ट्रेलिया पैदा करता था परंतु ...दशकों बाद हम हर साल एक ...पैदा करने की स्थिति में पहुंच

...इस भीषण समस्या से न केवल सरकार ...समाज का जागरूक तबका परेशान है ...विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को और ...अंतर्राष्ट्रीय संगठन इस विराट मानवीय ...को सुलझाने के लिए दूरगामी योजनाएं पेश कर रहे हैं. विश्व के समाजशास्त्री शिक्षाविद, चिकित्सक, बुद्धिजीवी और मानवतावादी एक सुर में चिल्ला रहे हैं कि 'ठहरो, हमारे आत्मघात की आखिरी सीढ़ी आ चुकी है. अब मनुष्यता का अगला कदम क्यामत या प्रलय की घड़ी पर पड़ेगा.'

'इंडियन काउंसिल फार चाइल्ड वेलफेयर' और एन.सी.ई.आर.टी. ने अपने सेमिनारों में बराबर चेतावनी दी है कि 'हम बूढ़ों और अधेड़ों को तो सुधार नहीं सकते, लेकिन जो आने वाली पीढ़ी है उस के दिमाग में शुरू से ही सेक्स और इस की सामाजिक प्रभावों की जरूरी जानकारी हमें डाल देनी चाहिए.' अगर अब भी हम सेक्स के ज्ञान और अपने निजी और सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले इस के असर को एक गोपनीय, वर्जित और गर्हित विषय मान कर मुंह सिले बैठे रहे तो भले ही इस समाज के कुछ रूढ़िवादी पोंगापंथी खर्राटे की निश्चित नींद मार लें, लेकिन हमारे समाज के आने वाले दिन अंधकार से आच्छादित होंगे.

निश्चिय ही अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रोत्साहन और समाज के जागरूक वर्गों द्वारा दी गई चेतावनियों के कारण इस दिशा में कुछ सोचा जाने लगा है. 1977 में विश्व स्वास्थ्य संगठन, स्वयं सेवी संस्थाओं तथा जागरूक व्यक्तियों ने नयी दिल्ली में आयोजित एक छः दिवसीय सेमिनार में विभिन्न देशों और समाजों के बीच सेक्स की शिक्षा और सेक्स के प्रति वैज्ञानिक और सामाजिक रुख अपनाने के लिए सहयोग की जरूरत पर जोर दिया था. समाज की असली सेक्स समस्याओं को समझने और जानने के लिए सर्वेक्षणों और अनुसंधानों की जरूरत महसूस की गई थी और सब से महत्त्वपूर्ण यह कि 'सेक्स की शिक्षा के लिए विदेशी पाठ्यक्रमों और विदेशी फार्मूलों को उधार लेने के बजाए अपनी संस्कृति, परंपरा और सामाजिक जरूरतों के तहत खुद रास्ता खोजने' की बात की गई थी.

एन.सी.ई.आर.टी. ने स्कूलों और कालिजों में सेक्स की शिक्षा के लिए जो विशेषज्ञ समिति गठित की थी, उस ने भी
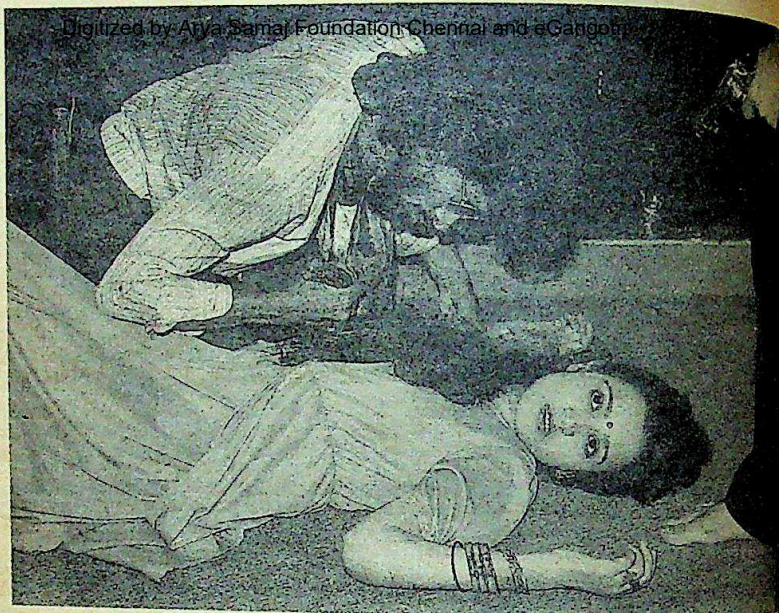
औरत के प्रति युवाओं में दुस्साहस की भावना का एक कारण सेक्स के प्रति अधकचरा ज्ञान भी है.

महसूस किया कि 'सेक्स की शिक्षा को एक अलगथलग विशेष विषय बनाने के बजाए विज्ञान या समाजशास्त्र के साथ जोड़ कर पढ़ाया जाना चाहिए.' लेकिन पढ़ाने की जिम्मेदारी कुल मिला कर अध्यापक पर आती है और हालत यह है कि सेक्स के मामले में अधिकांश अध्यापक खुद अंगूठा छाप तथा तमाम गलत फहमियों और ग्रंथियों के शिकार हैं. इसलिए पहली जरूरत तो 'सेक्स का प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' चलाने की है.

भारत पहली बार 1985 में 'वर्ल्ड कांग्रेस आफ सेक्सोलाजी' का मेजबान बना था. 'बदलते हुए विश्व में काम भावना' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था. यह सम्मेलन 4 नवंबर 85 तक चला. और इस को आयोजित किया था, 'इंडियन एसोसिएशन आफ सेक्स एज्यूकेटर्स, कौंसिलर्स एण्ड थेरापिस्ट्स' ने. इस में विश्व के लगभग 1000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था. इन में अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त यौन विज्ञानी ही थे. सम्मेलन के विभिन्न सत्रों सेक्स के केवल सैद्धांतिक और ऐतिहासिक नहीं, व्यावहारिक और उपयोगी पक्षों पर चर्चा की गई थी.

5 दिनों के इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन दौरान 12 कार्यशालाओं का संचालन कि गया था जिन में ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, इटली आदि बाहरी देशों और भारत के चिकित्सा के विशिष्ट शोधकर्ताओं ने भा लिया था. प्रख्यात कलाचिंतक डा.आर ब्रह्मभट्ट और 'पेंट हाउस' अमरीका उपाध्यक्ष डाक्टर अलबर्ट फ्रीडमैन भी इस शामिल थे. प्रसिद्ध सितारवादक पंडित शंकर जी ने 'संगीत और काम श्रृंगार' अपना भाषण प्रस्तुत किया था. डा. प्र कोठारी और डा. दस्तूर की सूचनाएं तो ही चौंकाने वाली थीं. उन के अनुसार, 'औ और खुद चिकित्सा की पढ़ाई में सेक्स के में गलतफहमियां और भ्रमों से भरी जान दी जाती है.' यानि हमारा एम.बी.बी.

डाक्टर भी उसी मर्ज का मरीज है जिस मर्ज का इलाज उसे करना है.

स्कूलों और कालिजों में तो सेक्स की शिक्षा तभी शुरू हो सकेगी जब हमारा समाज इस की स्वीकृति देगा और समाज सेक्स के बारे में क्या सोचता है? कुछ दिन पूर्व महाराष्ट्र की एक चित्रकारा के बारे में यह खबर छपी थी कि वह अपनी देह का नग्न चित्र बनाती है. इस के विरोध में अनेक पाठकों ने पत्र लिखे और उस की कड़ी आलोचना की. उस के बाद 'चरित्र चर्चा' स्तंभ में कईकई विवाह कर डालने वाले उदयनाथ के बारे में छपा तो अनेक पाठकों ने उस व्यक्ति को फांसी पर चढ़ा देने, उस का अंगभंग कर डालने की धमकी भरे पत्र लिखे.

समाज का दोहरा चरित्र

ये सभी पत्र उसी समाज से आए थे जो अपनी प्रजनन क्षमता के लिए विश्वविख्यात है. ये पत्र उसी समाज के व्यक्तियों के थे, जिन के इतिहास में सोलह हजार शादियां करने का विश्व रिकार्ड दर्ज है. जहां द्रौपदी रही है, नियोग प्रथा चलती रही है. स्त्रियां 'हवा', 'सूरज', 'कान' और 'पसीने' से बच्चे पैदा करती रही हैं. यह वही समाज है जहां बलात्कार और सेक्स अपराध की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं. जहां 'केवल वयस्कों के लिए' फिल्में बाक्स आफिस पर नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं. जहां घटिया सड़कछाप पत्रिकाओं के 'सेक्स अपराध अंक' की प्रतियां लाखों में बिकती हैं, जहां की सड़कों और पटरियों पर छिपकली, गिरगिट और सांडे के तेल, शुद्ध शिलाजीत, तरहतरह की भस्म और जड़ीबूटियों की दुकानें चलती हैं.

कभीकभी लगता है कि यह समाज सेक्स पर वर्जना नहीं लगाता बल्कि सेक्स के बारे में एक तार्किक, समझदार और वैज्ञानिक बातचीत पर रोक लगाता है क्योंकि इस से अज्ञानता और अंधविश्वास के अंधेरे में जारी नारीशोषण का 'स्वर्णयुग' नेस्तनाबूद हो सकता है.

सेक्स के बारे में तमाम प्रश्न हमारे सामने हैं. क्या सेक्स के प्रति हमारे समाज का यह उग्रवादी, आतंकवादी वर्जनात्मक रवैया हमारे अपने इतिहास और परंपरा की देन है या अनजाने ही यह मूल्य व्यवस्था बना कर हमारी चेतना में विदेशियों ने शामिल कर दिए हैं? कहीं यह शुद्धतावादी वर्जना विदेशी गुलामी की देन तो नहीं? कहीं सेक्स को ले कर इसलामी कट्टरता और विक्टोरियाई रवैया हम ने आयात तो नहीं किया है? क्या 'कोणार्क' और 'खजुराहो' हमारे अतीत के बारे में कोई संकेत नहीं देते? क्या कालिदास के 'कुमार संभव' और 'रघुवंश' हमें नहीं बतलाते कि सेक्स हमारे लिए 'पाप' और 'अपराध' नहीं, मानवीय संवेदना और भावना के चरम सौंदर्य का एक प्रतीक रहा है? क्या तांत्रिकों ने अपनी 'साधना' के केंद्र में परमात्मा से संयोग के लिए 'काम' को ही अपना माध्यम नहीं बनाया? क्या शक्ति और शिव की उपासना में जो 'प्रतीक चिह्न' हम इस्तेमाल कर रहे हैं उस से नहीं पता चलता कि 'काम' इसी समाज में पूजा की चीज रहा है? वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' की रचना क्या इसी समाज में नहीं की थी? क्या यह सच नहीं है कि अपने देश की जिन जनजातियों को हम ने अपनी तथाकथित 'सभ्यता' का छूत नहीं लगाया है, वहां अभी भी 'घोटुल' जैसी प्रथाएं जीवित हैं और उन जनजातियों का सेक्स के प्रति दृष्टिकोण हमारे आधुनिक शहरी समाज की तुलना में ज्यादा स्वस्थ, ज्यादा वैज्ञानिक और मानवीय है? क्या सेक्स का विरोध कर के हम मनुष्य की बुनियादी रचनात्मक ऊर्जा का विरोध नहीं कर रहे हैं? 'काम' नहीं होगा तो क्या मनुष्य जाति की संततियां जारी रह पाएंगी, हम समाप्त नहीं हो जाएंगे? सेक्स का विरोध असली अर्थ में मनुष्यता के लिए रचनात्मक है या विध्वंसात्मक?

ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर समाज का सोचना आवश्यक है. अभी बहुत साल नहीं हुए 18वीं शताब्दी में भारत आए अंगरेज पूरब के मुक्त और स्वस्थ समाज की हवा में रचबस गए थे. जबकि 19वीं सदी में जो अंगरेज भारत आए थे वे पश्चिम के

क्या सेक्सी फिल्मों की कामयाबी मानव मन में दबी भावनाओं का प्रतीक नहीं है.

वर्जनापूर्ण विक्टोरियन और कैथोलिक बंधनों और सामाजिक रीतियों के मुकाबले भारतीय समाज को देख कर ठगे रह जाते थे. यूरोपीय स्त्रियों को भी विक्टोरिया काल के इस्पाती हाथों में कसे होने की यंत्रणापूर्ण छटपटाहट से अलग उस 'वर्जित फल' के मुक्त और निर्भय आस्वाद का वरदान भारत में मिलता था.

रुडयार्ड किपलिंग ने इस पूर्वी समाज के सामने कितनीकितनी बार पश्चिम को बौना और परतंत्र महसूस किया था. 'फैनी हिल' का लेखक जान क्लेलैंड भी 1749 में ईस्ट इंडिया कंपनी का मामूली सिपाही बन कर भारत आया था और यहां के जादू में ऐसा डूबा कि उस ने सारी जिंदगी 'एशियाई अध्ययन' को समर्पित कर डाली. 18वीं सदी में राबर्ट पी. नाइट से ले कर 19वीं सदी के एडवर्ड सेलोन के 'अप्स एंड डाउंस आफ लाइफ', चार्ल्स देवेरो की 'वीनस इन इंडिया', कनिंघम का 'क्रोनिकल आफ डस्टी पोर' और वात्स्यायन के 'काम सूत्र' के अनेक अनुवाद इस बात के सुबूत हैं कि जिस 'एरोटिक लिटरेचर' के लिए आज हम विदेश की ओर देखते हैं, कुछ समय पहले तक पश्चिम उसी के लिए हमारी तरफ भागता था. कितना बड़ा बदलाव हो गया है कि हमें अब 'प्ले बाय' 'पेंट हाउस' जैसी पत्रिकाओं और 'ए टू जेड आफ लव' जैसी किताबों में सेक्स की जानकारी मिलती है. हम सड़कछाप तीसरे दर्जे के घोर अवैज्ञानिक 'कोकशास्त्रों' से शिक्षित हो रहे हैं क्योंकि हमारे पास सेक्स की जानकारी और नए तथ्य देने वाली कोई एक भी अच्छी पत्रिका नहीं है. जो हैं भी उन में वैज्ञानिक जानकारी के नाम पर ज्योतिषियों की तरह कल्पित नामों से लिखने वाले अकल्पनीय लेखक हैं.

वास्तव में 'सेक्स' हमेशा से विवाद का विषय रहा है. धर्मशास्त्र इसे 'पाप' कहते रहे हैं. जैविक विज्ञान इसे 'अनिवार्य जरूरत' और मनोविज्ञान सभी प्राणियों की 'बुनियादी वृत्ति' कहता रहा है.

मनुष्य समाज के इतिहास का अध्ययन करने वाले नृतत्व शास्त्रियों का मानना है कि सेक्स 'पाप' तब बना जब समाज ने मनुष्यों के

लिए कुछ नियम बना डाले. इन नियमों का उल्लंघन ही 'पाप' हुआ. जब तक ये नियम नहीं थे, मनुष्य के लिए सेक्स न तो 'पाप' था न ही 'अपराध'.

अभी भी संसार के विभिन्न समाजों के नियम अलगअलग हैं. ऐसे समुदाय और धर्म हैं जहां चचेरेममेरे भाईबहनों के बीच सेक्स संबंध स्वीकृत हैं. सिसली की एक जाति ऐसी भी है जहां सगे भाईबहन के बीच विवाह और सेक्स संबंध मान्य है. दूसरी तरफ ऐसे भी समुदाय हैं जहां ऐसे रिश्तों की कल्पना तक पाप है. बेबीलोन में प्राचीन समय में विवाह के पहले हर स्त्री को वेश्या हो कर सेक्स का प्रशिक्षण लेना पड़ता था.

अगर हम आज आधुनिक सभ्यता की नजर से देखें तो पिछले युगों में सेक्स संबंधों का जो रूप रहा है, वह हमें आदिम और असभ्य रूप लगेगा. वह कई मायनों में बर्बर था भी. खास तौर पर शारीरिक कोमलता के कारण स्त्री की दशा बहुत पहले से ही गुलाम और खिलौने की तरह रही है. ग्रीक और रोमन समाज ने भले ही कला, शिल्प और दर्शन के क्षेत्र में संसार को महान योगदान दिया हो, परंतु स्त्री के प्रति उन का रवैया भी अत्यंत बर्बरतापूर्ण और विलासितापूर्ण रहा है.

हमारे अपने देश में नवाबों और महाराजाओं के हरम में बेगमों रखैलों की संख्या जाहिर करती है कि स्त्री को उस समय कैसा दर्जा प्राप्त था.

औरत की सार्थकता

आधुनिक समय तक में जिस प्रख्यात दार्शनिक नीत्शे से प्रेरणा ले कर जर्मनी का नाजीवाद सामने आया था, उस का स्त्री के प्रति रवैया कम 'फासिस्ट' नहीं था. वह खुलेआम मानता था कि 'मनुष्य की सभ्यता का रहस्य स्त्री और पुरुष की असमानता के मूल में छिपा हुआ है. पुरुष हमेशा शासक और स्त्री गुलाम ही रही है.' नीत्शे ने लोकतंत्र और स्त्रीपुरुष की समानता को मनुष्य समाज के लिए सब से खतरनाक माना था. उस का कहना था, 'लोकतंत्र तो नाक गिनने का पागलपन है.' और 'मर्द को हमेशा मर्द और औरत को हमेशा औरत ही रहना चाहिए. पुरुष की मर्दानगी शासन करने में है और औरत का औरतपन मां बनने में है.'

अगर गंभीरता से देखें तो हमारे समाज में बहुत से पुरुषों के दिमाग में आज भी नीत्शे बैठा हुआ है और अनेक 'हिटलर' हमारे आसपास मौजूद हैं. हर शहर में जो 'रेड लाइट' क्षेत्र हैं, 'कालगर्ल्स' का जो समूचा समानांतर क्षेत्र है तथा आजकल की एक नई खोज 'जलपरियां' भी पैदा हो गई हैं जिस में गंगा के किनारे बसे शहरों में गंगा नदी के पवित्र जल में हाउस बोटों, बजड़ों पर नारी देह का अपवित्र शोषण होने लगा है वह इन्हीं हिटलरों के ऐशगाह हैं जो अभी भी सेक्स पर कोई खुली और सार्थक बातचीत नहीं चाहते.

लेकिन सेक्स है कि अपना रुतबा बरकरार रखे अनेक तरह से खुल कर सामने आ रहा है. दूरदर्शन, फिल्म, रेडियो, वीडियो पत्रिका, अखबार या शहर की दीवारें, हर जगह परिवार नियोजन के विज्ञापनों से ले कर नीमहकीमों द्वारा गुप्त रोगों के इलाज की इबारतों तक में किसी न किसी रूप में सेक्स की ही बिक्री हो रही है. साबुन, कपड़े और सौंदर्य प्रसाधन ही नहीं, मजबूत टायर का विज्ञापन कोमलांगी स्त्री देह करती दिखती है. इस के वीभत्स प्रदर्शन देखने हैं तो किसी भी शहर के प्रसाधन स्थल में चले जाइए और सामने की दीवार पर एक निगाह डाल लीजिए.

कुछ ही अर्सा पहले बुलंदशहर (उ.प्र.) के एक स्कूल में सर्वेक्षण के दौरान पता चला कि चौथीपांचवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे सेक्स के बारे में न सिर्फ जानने के लिए उत्सुक हैं बल्कि उम्र के लिहाज से कुछ ज्यादा ही बातें उन्हें पता हैं. वीडियो गेम और इलेक्ट्रानिक उपकरणों की बाढ़ के साथ जो पीढ़ी सामने आ रही है, वह 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ने में दिलचस्पी नहीं ही रखेगी. इस के पहले कि 'निरोध' और 'लूप' का प्रचार सुनसुन कर, बंबइया फिल्मों और तमाम विज्ञापनों का हिंसक और बाजारू सेक्स देखदेख कर हमारी
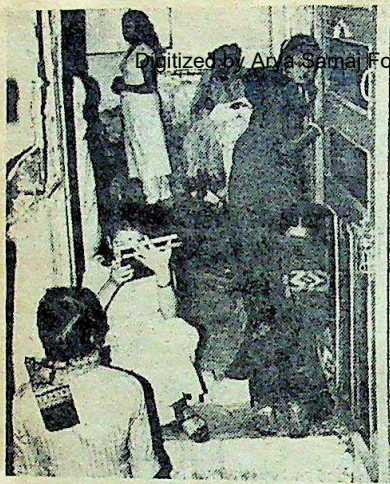
सेक्स की बात करते समय मुंह पर हाथ लगाने वाले लोग अकसर रात अंधेरे में वेश्याओं के कोठे पर जाते देखे जा सकते हैं.

नई पीढ़ी अपने तकिये के नीचे 'असली सचित्र कोकशास्त्र' और 'मस्तरात' की किताबें रखना शुरू करे, मातापिता और सरकार को अपनी हठधर्मिता छोड़ कर उन्हें सेक्स की तथ्यपरक जानकारी देना शुरू कर देना चाहिए. हमें यह भ्रम दिमाग से निकाल देना होगा कि स्कूल जाने वाला या गलियों में खेलने वाला बच्चा सेक्स के बारे में कुछ नहीं जानता वह बहुत कुछ जानता है. और अधिक जानने के फेर में वह गलत गड्ढे में गिरे, उस के अंतर्मन में कोई अपराध भावना पैदा हो, किसी लत का शिकार हो जाए, इस के पहले ही उसे सब कुछ बताना पड़ेगा,

प्रख्यात चिकित्सक डा. इस्राइल के अनुसार 'छोटे परिवार की बुनियादी धारणा और जरूरत को स्कूलों से ही प्रारंभिक शिक्षा के दौरान सेक्स की जानकारी के साथसाथ चालू कर देना चाहिए'. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली ने चिकित्सा छात्रों को सेक्स की थोड़ीबहुत जानकारी देना शुरू किया है. बंबई में भी सप्ताहांत प्रशिक्षण चला कर इस सिलसिले में पहल की जा चुकी है.

कई विशेषज्ञों की राय में अगर विश्व स्वास्थ्य संगठन, परिवार कल्याण मंत्रालय, शिक्षा विभाग और तमाम स्वयंसेवी संस्थाएं मिलजुल कर काम करना शुरू करें तो परिवार नियोजन की योजना सफल हो सकती है. बच्चों और नौजवानों में सेक्स अपराधों की रोकथाम हो सकती है. सड़क की पटरियों से ले कर आलीशान महलों तक गुप्त रोगों का इलाज करने के नाम पर ठगी करने वाले नीमहकीमों का धंधा बंद हो सकता है. लड़की को गुमराह होने या बहकावे में आ कर किसी 'समस्या' में फंस जाने से बचाया जा सकता है.

सेक्स के बारे में अज्ञान और गलत जानकारी का अकूत भंडार चारों ओर भरा पड़ा है. प्रख्यात स्त्रीरोग विशेषज्ञ डा. महेंद्र सी. वास्ता के अनुसार अमेरिका में 1,000 विवाहित 'कुंआरियों' पर किए गए सर्वेक्षण से पता चला था कि अधिकांश विवाहों के असफल और तनावग्रस्त हो जाने का कारण सेक्स से डर या सेक्स का अज्ञान रहा है. डा. वास्ता ने बंबई के एक कंप्यूटर इंजीनियर का उदाहरण भी दिया था जो सात साल से विवाहित होने के बाद भी यह नहीं जान पाया था कि स्त्री और पुरुष सहवास कैसे करते हैं. उस बेचारे को सही सलाह किसी कंप्यूटर तक ने नहीं दी.

डा. वास्ता ही नहीं, कई चिकित्सकों, मनश्चिकित्सकों की राय है कि देश के 15 करोड़ से ज्यादा तरुणों और नौजवानों को सेक्स के संक्रामक रोगों से ले कर स्वाभाविक सेक्स प्रक्रिया अन्य बातों के बारे में बताने की जरूरत है. उन्हें जन्म नियंत्रक उपकरणों, सहवास के तरीकों और उन के परिणामों के बारे में भी साफसाफ बताया जाना चाहिए. हमारे यहां इन तरुणों को बचपन से ही भूलभुलैया का रास्ता दिखाने वाले बहुतेरे हैं, चाहे वे मांबाप हों, अध्यापक हों, बुजुर्ग या दोस्त हों. धार्मिक उपदेशक हों या सड़कछाप किताबें हों.

सेक्स के लिहाज से किसी भी स्त्री या पुरुष का स्वस्थ होना इस बात पर निर्भर करता है कि वह सेक्स पर कितना नियंत्रण रख

सकता है और सेक्स का कितना आनन्द उठा सकता है. नियंत्रण और आनंद दोनों के बीच पारस्परिक पूरक अनिवार्य संबंध हैं. अपराध भावना, शर्म, पाप भावना तथा शारीरिक कमियों से मुक्त हो कर ही समाज को स्वस्थ सेक्स जीवन दिया जा सकता है.

स्त्रीपुरुष की समानता की बात भी सामने आती है. स्त्री को गुलाम, रखैल या खरीदी हुई गुड़िया समझने वाला 'मेल शावनिस्ट' अपने यौन व्यवहार में कभी भी 'नार्मल' नहीं हो सकता. वह सहवास के दोनों भागीदारों की बराबर की भूमिका से उपजे सुख का रहस्य कभी जान ही नहीं सकता. वह भीतर से 'स्वार्थी' होता है. यह सही है कि स्त्री और पुरुष की शारीरिक बनावट में अंतर है. लेकिन यह अंतर ऐसा नहीं है कि यह मान लिया जाए कि स्त्री जन्म से ही 'अधम कोटि' की है. निरंतर गर्भ धारण और आर्थिक पराधीनता ने स्त्री को 'अधम कोटि' का बना रखा था लेकिन अब हम जिस जमाने में रह रहे हैं वहां आर्थिक दृष्टि से स्त्री एक उत्पादक वर्ग में बदल चुकी है. परिवार के बजट में उस की मेहनत और पसीने की बूंदें उतनी ही शामिल हैं जितनी पुरुष की. समाज में वह अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को कई रूपों में प्रकट कर चुकी है. यहां सिर्फ माया त्यागी ही नहीं, लक्ष्मीबाई व इंदिरा गांधी भी हो चुकी हैं.

तमाम सर्वेक्षणों से पता चलता है कि स्त्री के आत्मनिर्भर हो जाने का असर पतिपत्नी के संबंधों पर भी पड़ा है. अब नीत्शे और मनु की बातें मान कर स्त्री पर 'अंकुश' लगाने की बात सोची नहीं जा सकती. महंगाई के भार और मुद्रास्फीति ने महानगरों के परिवारों को मजबूर कर डाला है कि पति और पत्नी दोनों नौकरी करें. मध्यवर्ग में भी यही हो रहा है. कामगार वर्गों में तो शुरू से ही औरत मेहनतकश उत्पादक वर्ग रही है.

जाहिर है कि अब स्त्री के प्रति पुरुष का रवैया पहले जैसा नहीं रह सकता. रहना भी नहीं चाहिए. बदलना पुरुष को है—अगर उसे पारिवारिक शांति बनाए रखनी है. स्त्री को भी बदलना है, क्योंकि अपनी ही जाति के प्रति उस का जो रवैया है वह उसे पुरुष प्रधान पितृसत्तात्मक समाज ने दिया है. उसे इस आत्महीनता से आजाद होना है. हालांकि सर्वेक्षणों में नौकरी करने वाली स्त्रियों में से बमुशकिल आठ प्रतिशत अपने कैरियर की जरूरतों के अनुसार पुरुषों से प्रतिद्वंद्विता करने की महत्वाकांक्षा रखती हैं परंतु बाकी का रवैया आज भी यही है कि 'घर नहीं चलता था सो नौकरी कर ली. उन की तनख्वाह अच्छी हो जाएगी, तो छोड़ देंगे.'

स्वस्थ मानसिकता की आवश्यकता

सेक्स के मामले में स्वस्थ होना तभी संभव होगा जब समाज स्त्रीपुरुष संबंधों के क्षेत्र में भी स्वस्थ हो. पश्चिमी देशों में 19वीं सदी में ही 'सेक्स क्रांति' हो गई थी. 'वीमेन लिब' आंदोलन चले थे. एक से एक दुस्साहसी स्त्रियों के नाम चमके. समलैंगिकों और 'गे' लोगों के कारनामें सामने आए. खुद चर्च के समलिंगी पादरियों ने आपस में शादी रचा डाली. इस सब के बावजूद वहां पूंजीवाद समाज में मौजूद स्त्री के प्रति दृष्टिकोण और पूर्वाग्रहों को नहीं छोड़ा जा सका है.

अभी वर्तमान दशक में ही साझा बाजार के दस देशों में हुए सर्वेक्षण की रपट के अनुसार फ्रांस की हर तीन काम करने वाली महिलाओं में से एक महिला को या तो उस के पुरुष अधिकारी का हमबिस्तर होना पड़ा या उस पर इस के लिए दबाव डाला गया. अफसोस यह है कि वहां कई महिलाओं ने इस दबाव से लड़ने के बजाय आत्मसमर्पण कर देना उचित समझा.

इस की वजह यह है कि 'सेक्स क्रांति' के बावजूद पश्चिमी पूंजीवाद ने सेक्स और स्त्रीपुरुष संबंधों का व्यवसायीकरण कर डाला है. स्त्री का शरीर नैतिक वर्जनाओं से मुक्त होने के बाद भी एक 'बाजारू माल' ही हो कर रह गया है और सब से गंभीर तथा दुखदायी पहलू यह है कि अपनी इस नियति को कुछ स्त्रियों ने स्वीकार भी कर लिया है.

1984 में वियना में एक सम्मेलन में 'इंटरनेशनल एबालिशनलिस्ट फेडरेशन'

(आई.ए.एफ.) और 'इंटरनेशनल एसोसिएशन आफ डेमोक्रेटिक लायर्स' (आई.ए.डी.एल.) द्वारा प्रस्तुत रपट चौंकाने वाली है.

'अश्लील उत्तेजक किताबें, दूसरी उत्तेजक सामग्री तथा वेश्यावृत्ति तो पहले से ही संसार में अरबों डालर का व्यापार रही है लेकिन अब इन की मांग और आपूर्ति का जो आंकड़ा सामने आया है, वह तीसरी दुनिया के गरीबी के साम्राज्यवादी शोषण का दहला देने वाला तथ्य प्रस्तुत करता है. तीसरी दुनिया की लाखों लड़कियां और बच्चे संपन्न देशों के पर्यटकों और ऐयाशों की विलासिता के लिए निर्यात हो रहे हैं. बालव्यभिचार और वेश्यावृत्ति के इस साम्राज्यवादी व्यापार के मददगार तीसरी दुनिया के देशों के [illegible] नौकरशाह, राजनैतिक नेता और न्यायालयों के न्यायाधीश तक हैं' आई.ए.डी.एल. की रपट के अनुसार अमरीका, जापान और आस्ट्रेलिया के माफिया गिरोह इस वासना उद्योग के मालिक हैं.

पश्चिम की विकृति

सेक्स के प्रति उदार और मुक्त रवैया अपनाने के साथसाथ हमें इस खतरे की ओर भी देखना पड़ेगा, पश्चिमी देशों में जहां 'सेक्स क्रांति' के कई अच्छे पक्ष रहे हैं वहीं वहां की पूंजीवादी बाजारू समाज व्यवस्था ने सेक्स और स्त्री बच्चों तक को मंडी का माल बना डाला है.

ऐसी स्थिति में रूढ़िवादी और सेक्स के बारे में कट्टरतावादी रवैया अपनाने वाला वर्ग पश्चिम की ऐसी विकृतियों का उदाहरण सामने रख कर सेक्स की शिक्षा का विरोध कर सकता है लेकिन इस के लिए दोहरे दबाव और चुनौतियों के बीच से ही कोई रास्ता निकालना होगा.

स्वस्थ और स्वतंत्र सेक्स संबंध तभी पैदा हो पाएंगे जब स्त्री का शोषण और व्यभिचार रुकेगा, जब सिर्फ सेक्स की शिक्षा ही नहीं, समाज से हर तरह के शोषण का खात्मा होगा.

रंग बेरंग

फिल्म बनाम जनसेवा

फिल्मों से जुड़े
प्रत्याशी ने
चुनाव के दौरान कहा,
भाइयों एवं बहनों,
आप हमें वोट दीजिए
और इस के बदले में मुझ से
अच्छी सेवा लीजिए.

मैं हर समस्या को
अपने तरीके से निबटाऊंगा
जहां सूखा होगा
वहां फिल्म 'बरसात' दिखाऊंगा.
गरीबों की बस्ती में
'गरीबों का दाता' धूम मचाएगी,
भूखों की बस्ती में
'रोटी' गोल्डन जुबली मनाएगी.
नंगेभूखे बेघरों को
'रोटी कपड़ा और मकान'
उपलब्ध कराऊंगा
पानी की समस्या से निबटने के लिए
गांवगांव, शहरशहर साक्षात
'गंगा जमुना सरस्वती' ले आऊंगा.

—मधुराज
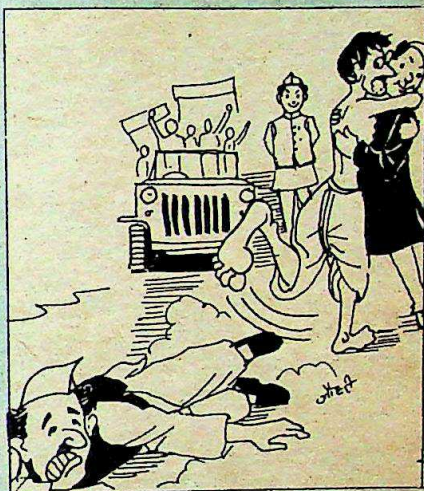
मुजरिम

एक नेता ने
सफाई पेश करते,
झुंझलाते हुए कहा,
दलबदल के लिए
हम बदनाम क्यों?
बिन पेंदी के लोटे का
हमीं पर इलजाम क्यों?
जबकि हकीकत यह है,
केवल हम नहीं बदलते दल
जनता भी
बारबार बदलती है दल.

अब देखिए न वह
वोट, कभी इस को
कभी उस दल को देती है
इस तरह
हमारे अधिकारों पर
कुठाराघात करती है
दोषी हम समझे जाते हैं.
अब तुम ही फैसला करो
और सचसच बताओ
दलबदलू कौन है?
मुजरिम असली कौन है?

—डा. सेवा नंदवाल

याद

आज फिर रेत में उपजा
एक नन्हा अंकुर
आज फिर उम्र की टहनी पर खिले
एहसास के फूल.
आज फिर सांस के चौबारे पर
चमका जुगनूं
जिंदगी मांग के लाई है
संवारी हुई धूप.

दिल की देहरी पर फिर से
जलाया दीपक,
चांद को देख कर फिर से लिखा
प्यार के मुक्तक.
आज फिर उड़ते हैं फिजाओं में
कुंआरे सपने
और पतझड़ में भी गूंजा है
मधुमास का स्वर.

आज फिर खींची है कैनवास पर
एक प्यारी तसवीर
कांपते हाथ से लिखा
हथेली पर कोई नाम
आज की रात चुराऊंगा
अंजुरी भर इजोत
और भर दूंगा तेरी मांग में
सिंदूरी लकीर.

चांद से मांग कर थोड़ी सी
लरजती चांदी
तेरे रुखसार पर मल दूंगा
पिघलता सा गुलाल.
गोद में चुपके से पलकों को
तेरे चूमूंगा
और सहलाऊंगा तेरे गाल का
प्यारा सा वो तिल
हां, ये सच है कि ढले शाम
सितारों के तले
आज फिर उड़ती हुई तितली सी.
तेरी याद आई है.

—प्रियेश वर्मा
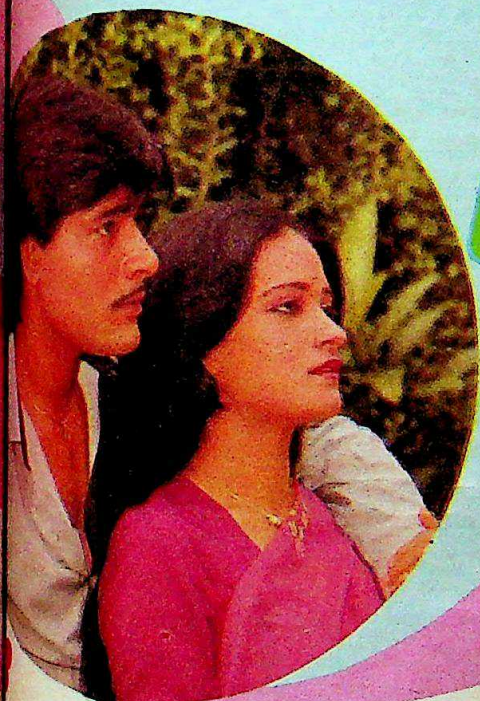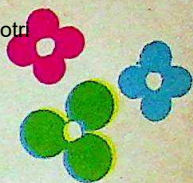
स्वागत

नए पत्तों के स्वागत को
आतुर पौधों को, वृक्षों को,
खोने पड़ते हैं,
भुलाने पड़ते हैं
पुराने पत्ते.
तभी तो स्थान मिल पाता है नए पत्तों को.
नए लोगों से प्यार पाने को
आतुर इनसानों को
भुलानी पड़ती हैं यादें पुराने लोगों की.
तभी तो मन में जगह बन पाती है
नए लोगों के लिए.

नए रिश्ते स्थापित हो पाते हैं तभी तो
कुछ पाने के लिए जरूरी है कुछ खोना.
अगर कुछ खो जाए तुम्हारा तो
निकल पड़ो खोज में कुछ पाने को.

कुछ मिलना होता है नया जब
तब खो जाता है कुछ.
अगर खोए हुए की याद में बहाते रहे आंसू
तो वह जो मिलना है
वह भी खो जाएगा मिलने से पहले ही.

बहार उसी वृक्ष पर आती है
जो आतुर होता है
नए पत्तों के स्वागत को
भुला कर पुराने पत्तों को.
यही वास्तविक स्वागत होता है.

—अरुण पारुनिमा

गुनगुनाना पड़ा

अश्रु पीने पड़े, मुसकराना पड़ा.
प्यार का यह चलन भी निभाना पड़ा.

साज इतने मधुर थे तेरे वाद्य के
मुग्ध हो कर मुझे गुनगुनाना पड़ा.

बज उठे जब हवा में नुपूर पांव के,
पांवड़ा भी पलक का बिछाना पड़ा.

बिंध गया घूमते चक्र का मर्म भी
मीन की आंख पर क्या निशाना पड़ा.

खींच पाया था कांटें नहीं देह के
फल का बोझ फिर भी उठाना पड़ा.

—डा. अशोक स्नेही

नया नया

नयानया प्यार है, मुलाकात बढ़ा
चुप्पी अभी टूटी है कुछ बात बढ़ा

होगा असर बातों का मगर धीरेधीरे
बातें तो ठीक हैं पर जजबात बढ़ा

प्यार की पींगें बढ़ती हैं हौलेहौले,
निशाना तो ठीक है, आघात बढ़ा

दिखने में तो बहुत खूब हो लेकिन
दिल को भा जाएं वो खयालात ब
लाज की दीवार भी पिघलेगी मग
इन आंखों में गरमिए सवालात

—आलो

या ख्

ाकात बढ़ा
छ बात बढ़ा
मगर धीरे धी
जबात बढ़ा
हैं हौलेहौले,
ाघात बढ़ा
ब्र हो लेकिन
ख़यालात ब
घलेगी मग
सवालात ब
—आलो

"मैं सिर्फ दर्शकों के मनोरंजन के लिए ही फिल्में बनाता हूं" —अनिल शर्मा

भेंटवार्त्ता ● मोहनदास

"**सिर्फ** एक्शन फिल्मों और नाचगाने वाली चटपटी फिल्मों से ही मनोरंजन होता है." यह कहना है युवा फिल्म निर्मातानिर्देशक अनिल शर्मा का. हा ही में अनिल शर्मा एक्शन प्रधान फिल्म 'ऐलाने जंग' सफलता के 100 पूरे कर लिए हैं.

लगभग 30 युवा अनिल शर्मा मात्र ऐसे निर्दे साबित हुए हैं, जि इतनी कम उम्र में बड़ीबड़ी फिल्मों निर्माण और निर्दे किया है. उन की
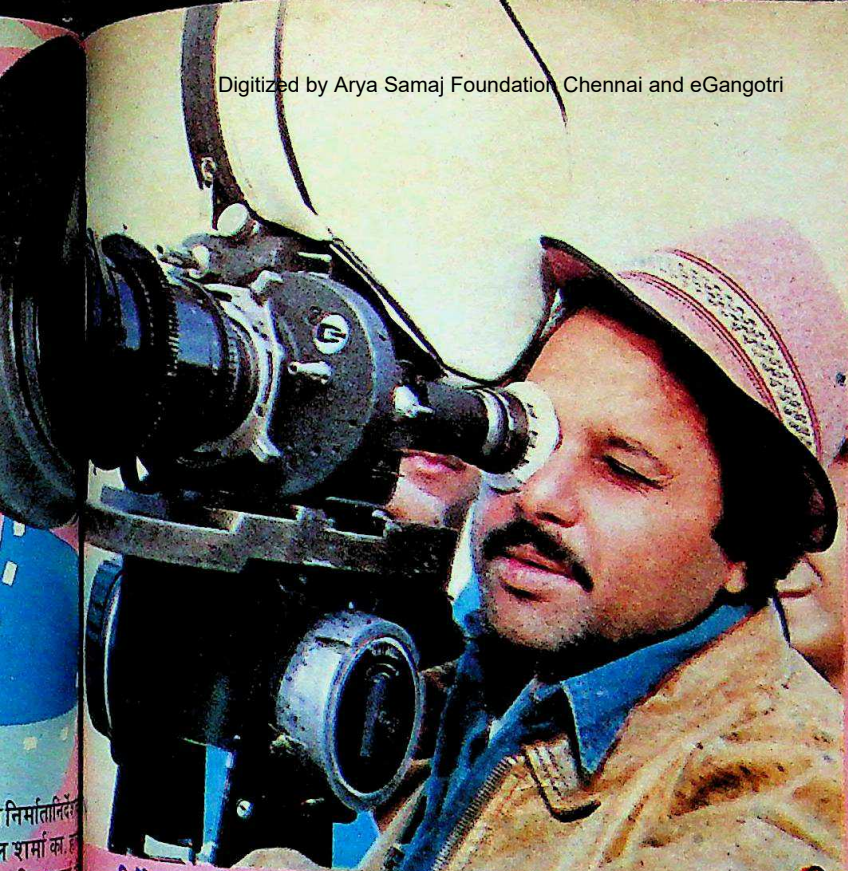
फिल्म 'महाराजा' एक दृश्य: मिल जाए, महाराजा.

निर्देशक अनिल शर्मा ने हालांकि अपनी पहली ही फिल्म 'श्रद्धांजलि' के माध्यम से अपने अंदर छिपी हुई विशेषताओं का परिचय करा दिया था, किंतु अब धड़ाधड़ कई अन्य सफल फिल्मों का निर्माण और निर्देशन कर के उन्होंने अपनी लोकप्रियता का झंडा गाड़ लिया है. फारमूला प्रधान फिल्मों के इस युवा निर्मातानिर्देशक का अपनी इस सफलता के बारे में क्या कहना है?

पहली फिल्म थी 'श्रद्धांजलि'. इस फिल्म में उन्होंने राखी गुलजार के किरदार को बखूबी प्रस्तुत किया था. उन की दूसरी फिल्म थी

'बंधन कच्चे धागों का'. तत्पश्चात उन्होंने फिल्म 'हुकूमत' बनाई और फिर 'ऐलाने जंग'. 'ऐलाने जंग' मल्टीस्टार फिल्म है. हालांकि फिल्म का विषय नया नहीं है, फिर भी फिल्म की पटकथा सशक्त है और फिल्म का निर्देशन इतना अच्छा है कि फिल्म हिट हो गई.

अपनी अगली फिल्म 'फरिश्ता' और 'तहलका' के कुछ दृश्य फिल्माने अनिल शर्मा जब दिल्ली आए तो उन से बातचीत का मौका मिला. प्रस्तुत हैं उन से हुई बातचीत के कुछ अंशः

आप की हर फिल्म एक्शन प्रधान होती है. इस की कोई खास वजह है क्या?

मेरी फिल्मों में एक्शन तो होता ही है, साथ ही नाचगाना तथा मनोरंजन भी होता है. मैं फिल्में सिर्फ मनोरंजन के लिए ही बनाता हूं. एक्शन के अलावा फिल्म में अगर मनोरंजन न हो तो फिल्म पिट जाती है. फिल्में देखने वाले अधिकांश दर्शक साधारण तबके के ही होते हैं. यही वे लोग हैं जो फिल्म को चलाते या फ्लाप करते हैं. इसी लिए मेरी हर संभव कोशिश रहती है कि फिल्म मनोरंजक बने.

लेकिन मनोरंजन के नाम पर हिंसा क्यों दिखाई देती है आप की फिल्मों में?

हिंसा तो पूरे समाज में है. जो कुछ मुझे समाज में नजर आता है वही मैं फिल्मों में डालता हूं. जितनी हिंसा आप को मेरी फिल्मों में नजर आती है वह तो बहुत कम है. वास्तव में हमारे समाज में इस से कहीं अधिक हिंसा है.

आप ने मनोरंजन की बात कही. मनोरंजन के नाम पर नाचगानों की बा

अनिल शर्मा की निर्माणाधीन फिल्म 'तहलका' में संजय दत्त और नसीरुद्दीन शाह : बीच में चार्ली चैपलिन स्टाइल में धर्मेंद्र.
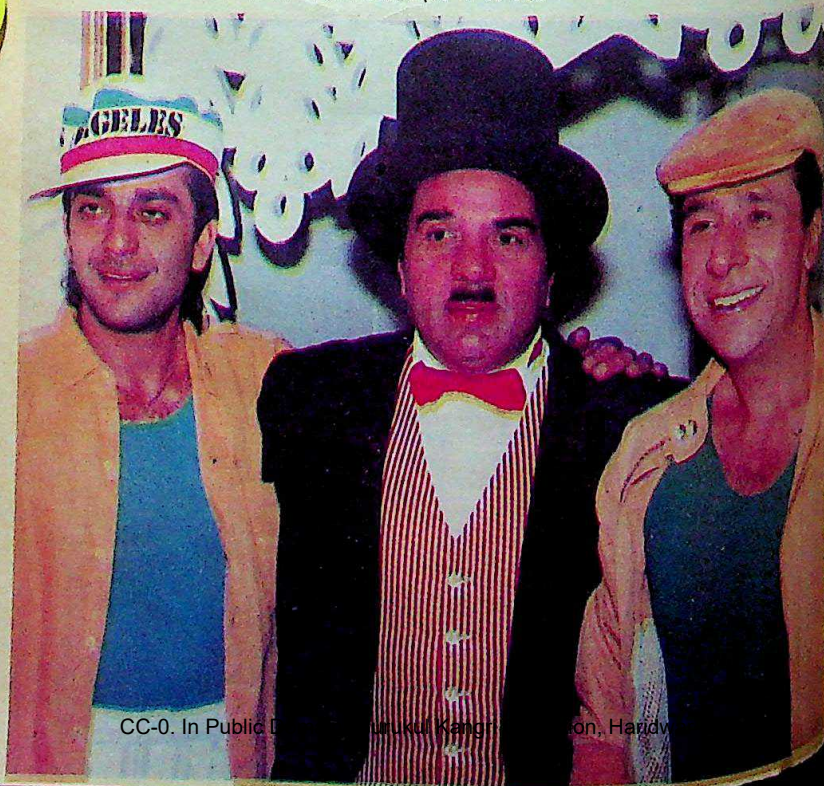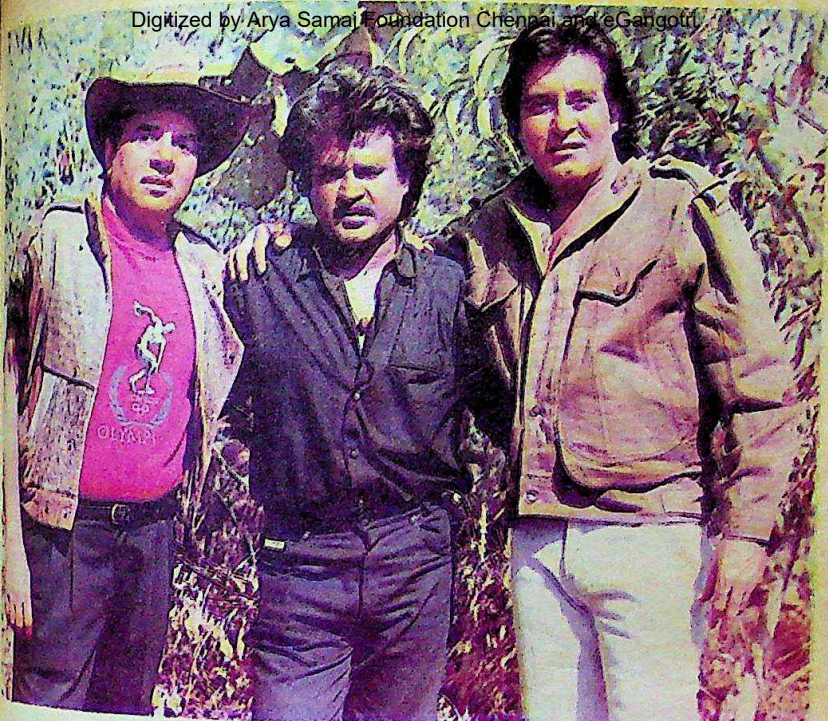
प्रदर्शन की तैयारी में अनिल शर्मा द्वारा निर्देशित फिल्म 'फरिश्ते' में धर्मेंद्र, रजनीकांत और विनोद खन्ना.

नहीं, परंतु प्रेम कथा से भी तो दर्शकों का मनोरंजन होता है.

मैं मानता हूं, पिछले 10 सालों से प्रेमकथाओं का विषय ही हिट होता आ रहा है. लेकिन इस विषय के लिए वक्त बहुत चाहिए. तीन साल बाद मैं भी इस विषय पर जरूर फिल्म बनाऊंगा.

आप जो कुछ फिल्मों में दिखाते हैं उन में कितनी वास्तविकता होती है?

फिल्म में जो कुछ दिखाया जाता है वह सब झूठ... झूठ... झूठ होता है, झूठ के सिवा कुछ नहीं होता. झूठ दर्शकों को सच लगे, यही निर्देशक की सफलता मानी जाती है. दरअसल यथार्थ पर फिल्म बनाना बहुत आसान है, परंतु काल्पनिक कहानी को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना बहुत मुशकिल काम है.

पिछले वर्ष 'इंडियन मोशन पिक्चर्स एसोसिएशन' ने उन सभी अभिनेता अभिनेत्रियों पर यह अंकुश लगाया था कि जिन के पास फ्लोर पर 12 फिल्मों से अधिक फिल्में होंगी उन की फिल्मों के प्रदर्शन पर रोक लगा दी जाएगी. इस अंकुश से क्या आप पर भी कोई प्रभाव पड़ा?

दरअसल अंकुश कलाकारों पर नहीं, निर्माताओं पर लगाया गया था कि वे निर्माता उन कलाकारों को अनुबंधित नहीं कर सकते जिन के पास 12 फिल्मों से अधिक फिल्में हैं. कुछ लोगों ने इस नियम को तोड़ा भी है. जिन लोगों ने इस नियम को तोड़ा है उन्हें कई मुशकिलों का सामना भी करना पड़ा है. मसलन, फिल्म के लिए कच्चा माल उन्हें नहीं मिल पाया. अगर उन्होंने कहीं से कच्चे माल का इंतजाम भी कर लिया तो उन की फिल्म रजिस्टर नहीं हो पाई. दरअसल इस सब के लिए हमारा पूरा तंत्र ही दोषी है.

(शेष पृष्ठ 158 पर)

परदे के आगे परदे के पीछे

सन्नी देओल : पत्नी बनाम प्रेमिका

सन्नी देओल और डिंपल कपाड़िया के छिपछिप कर मिलने की खबरें अब पुरानी हो गई हैं. अब तो वह खुले आम पतिपत्नी की तरह गले में बांहें डाले आते हैं. नए साल की रात में दोनों मदहोश एक पांच तारा होटल में पहुंचे.

वहां डिस्को डांस करने के बाद उन्हें आराम के लिए कमरे की जरूरत पड़ी. पर[illegible] कोई कमरा खाली नहीं था. खैर, किसी त[illegible] कर्मचारियों ने इन प्रेमी सितारों के लिए ए[illegible] कमरे की व्यवस्था की.

इधर सन्नी की पत्नी उसे छोड़ कर [illegible] जमाने से लंदन में रह रही है और धर्मेंद्र [illegible] कह भी नहीं पा रहे हैं. आखिर बेटा बा[illegible] कदमों पर ही तो चल रहा है.

फिल्मों में गोलीबारी के दृश्यों का रहस्य

फिल्मों में गोलीबारी तथा बम के धमाके देख कर दर्शकों के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न होनी स्वाभाविक है कि शूटिंग के दौरान ये दृश्य किस तरह फिल्माए जाते हैं? फिल्मों में असली लगने वाली बंदूकें, रिवाल्वर क्या असली होते हैं? क्या सचमुच बम के धमाके किए जाते हैं? या यह सब सिर्फ बनावटी होता है और दर्शकों को असली होने का आभास कराया जाता है? आइए, हम आप को बताते हैं.

फिल्मों में जितनी भी बंदूकें व रिवाल्वर दिखाए जाते हैं वे सब के सब नकली, प्लास्टिक के बने होते हैं. उन से निकलने वाली गोलियां गोलियां नहीं होतीं, वरन एक इलेक्ट्रानिक मशीन से चिनगारियां निकाली जाती हैं तथा गोलियों की आवाज पैदा की जाती है.

ऐसी फिल्मों में जिस बम से विस्फोट किया जाता है वह एक विशेष प्रकार का बम होता है जो सातआठ हजार रुपए में आता है. इस बम से विस्फोट होने पर धुएं का एक गुबार सा वातावरण में फैल जाता है.

ऐसी फिल्मों में कभीकभी पेट्रोल बमों का प्रयोग भी किया जाता है. पेट्रोल बम फेंकने से पहले उस जगह को, जहां बम फेंकना होता है, पेट्रोल से तर कर देना पड़ता है. तब जा कर धमाके से विस्फोट होता है और आग पकड़ लेती है.

धर्मसंकट में गोलीबारी का एक दृश्य: ऐसे होती है मारधाड़ की शूटिंग.

धर्मसंकट : अब कोई संकट नहीं

एन.डी. कोठारी आज सफल निर्माता-निर्देशक हैं. उन की फिल्म 'खोटे सिक्के' ने काफी अच्छा व्यवसाय किया था. अपनी अगली फिल्म 'धर्मसंकट' की शूटिंग के दौरान वह कुछ प्रसन्न नजर आ रहे थे. पूछने पर उन्होंने बताया कि "अब संकट दूर हो गया है. असल बात यह है कि रेलवे वालों ने पिछले एक साल से मुझे संकट में डाल रखा था. चूंकि मुझे अपनी इस फिल्म का 'क्लाइमैक्स' उमरा स्टेशन के प्लेटफार्म पर करना था. इसलिए मैं रेलवे विभाग के चक्कर काटता रहा. एक साल चक्कर काटने के बाद अब कहीं मुझे शूटिंग करने की अनुमति मिली है, वह भी रेलवे को 8 लाख रुपए देने के बाद..."

"आज जब डाकुओं पर बनी फिल्में असफल हो रही हैं, 'बंटवारा' जैसी फिल्म जिस में विनोद खन्ना नायक था, भी पिट गई है तो आप इसी विषय पर 'धर्मसंकट' क्यों बना रहे हैं?"

इस पर कोठारी साहब हंस कर बोले, "मेरी फिल्म डाकू विषय पर जरूर है, मगर हट कर है. इस फिल्म में सिर्फ क्लाइमैक्स पर ही लगभग 25 लाख रुपए खर्च हो जाएंगे. चरमावस्था का यह दृश्य परदे पर 15 मिनट का होगा. बाकी पूरी फिल्म पर कितना पैसा खर्च होगा, इस का अंदाजा आप लगा सकते हैं.

विनोद खन्ना व साहिला चड्ढा : नकली बंदूक व नकली गोलियां (ऊपर) निर्माता निर्देशक एन.डी. कोठारी
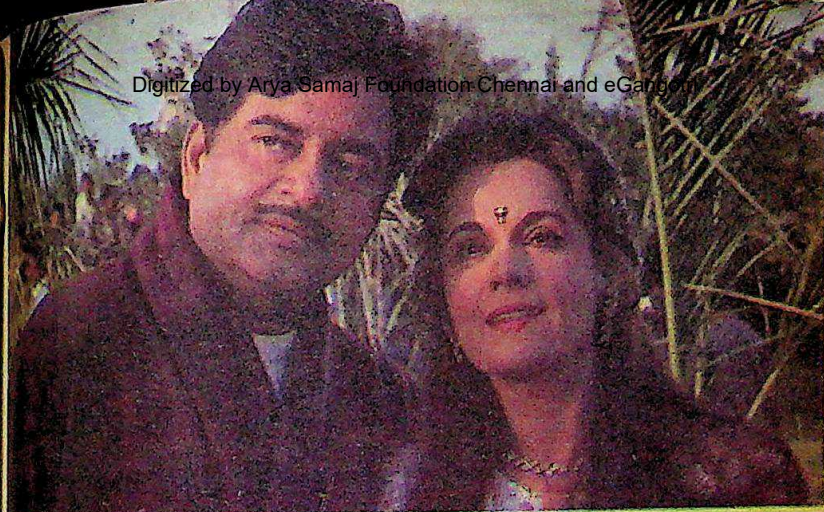
एक दशक बाद फिल्म उद्योग में मुमताज की वापसी.

सिने अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा जिन दिनों अच्छी फिल्में पाने के लिए संघर्ष कर रहा था, उन दिनों की चर्चित अभिनेत्री मुमताज ने उसे 'खिलौना' फिल्म में रोल दिलवा कर उस पर जो एहसान किया था उसे शत्रुघ्न सिन्हा ने अब अपने मित्र पहलाज निहलानी की फिल्म 'आंधियां' में लंदन से कई वर्षों के अंतराल के बाद आई मुमताज को काम दिला कर चुका दिया है. यही नहीं शत्रुघ्न स्वयं भी मुमताज के साथ इस फिल्म में काम कर रहा है.

इस फिल्म की शूटिंग के दौरान शत्रुघ्न सिन्हा ने इस प्रतिनिधि को बताया कि "पहलाज ने पहले इस फिल्म में रेखा को लेने की सोची थी जो इस फिल्म को छः महीने में पूरी करवाना चाहती थी. लेकिन हम दोढाई महीने में ही यह फिल्म बनाना चाहते थे इसलिए पहलाज ने मेरे सुझाव को मानते हुए मुमताज के लिए हामी भर दी. मुझे तो मुमताज में कोई कमी नजर नहीं आती. बाकी दर्शक उसे कैसे लेते हैं यह वही बता सकेंगे."

'कला' और 'राजनीति' के बारे में शत्रु ने बताया कि ये दोनों अलगअलग चीजें हैं. राजनीति में भावना नहीं होती, और कला बिना भावना के कोई अस्तित्व नहीं रखती. फिर भी न जाने क्यों आज सभी नाम चेहरे और पैसे के आधार पर राजनीति में घुसने को ज्यादा उत्सुक रहते हैं.

यह पूछे जाने पर कि नई सरकार में कुछ ऐसे मंत्री हैं जो पिछली सरकार में भी थे तो आज एकाएक उन की छवि कैसे साफ हो गई है, शत्रु ने बताया कि "राजीव की और विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार व उन के नुमाइंदों में अंतर है. हो सकता है कि इस सरकार में भी हसीन सपने देखने वाले मुंगेरीलाल, के.के. तिवारी या कल्पनाथ राय हों, लेकिन सांत्वना की बात यही है कि इस सरकार का 'ग्रुप कैप्टन' स्वयं व उस के मंत्रिमंडल में सभी योग्य व्यक्ति हैं. मुझे लगता है कि यह सरकार देश पर किसी तरह का वंशवाद नहीं थोपेगी. मैं भी सत्ता और सरकार के निकट रह कर किसी पर कोई रोब या दबाव डालने के पक्ष में नहीं हूं. बल्कि मैं तो चाहता हूं कि जिस तरह मैं अच्छी से अच्छी जिंदगी गुजार रहा हूं, अन्य लोग भी वैसा ही अच्छा जीवन गुजारें. यह तभी संभव होगा जब लोग अपने रूढ़िवादी संस्कारों पर अपनी मेहनत की कमाई को लुटाने से बाज आएंगे.

सच झूठ की कसौटी : दैहिक भाषा

• लेख • गिरधारी लाल हेडा

मन के भावों की अभिव्यक्ति दैहिक भाषा के जरिए युगयुग से की जाती रही है. वर्तमान वैज्ञानिक युग में दैहिक भाषा के अध्ययन का सिलसिला जोरों से चल पड़ा है. शोधकर्ताओं का कहना है कि आज भी जितना

जीवन में बहुधा ऐसे क्षण आते हैं जब आप को किसी की अभिव्यक्ति को समझने के लिए खास पैमाने की जरूरत महसूस होने लगती है और आप उस अभिव्यक्ति में छिपे हुए सचझूठ के द्वंद्व में उलझ जाते हैं. यहां कुछ ऐसी ही जानकारी दी जा रही है, जिसे उपयोग में ला कर आप अपनी समस्या का समाधान ढूंढ सकते हैं.

बातचीत करते समय कान को छूने का भी एक खास अर्थ होता है.
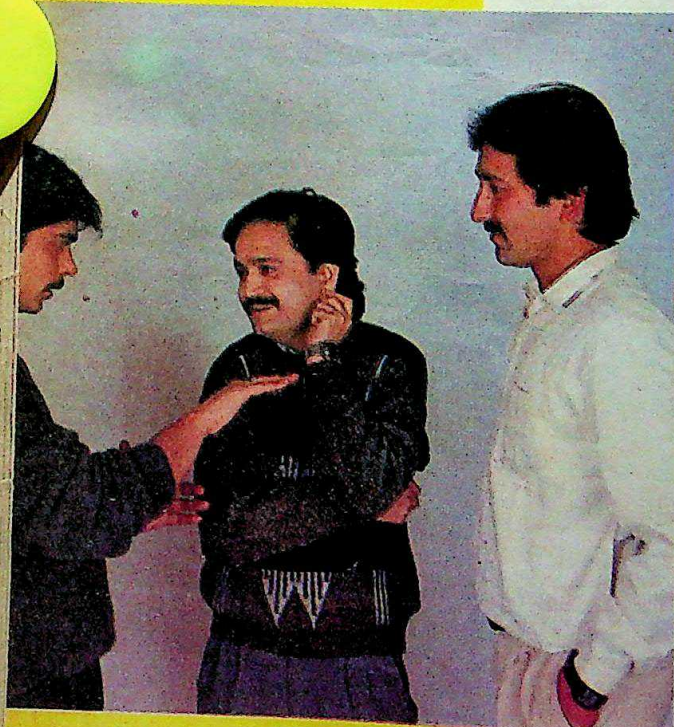
कुछ हम समझते हैं, उस से कहीं बड़े स्तर पर मानवीय अभिव्यक्ति शारीरिक चेष्टाओं, मुद्राओं, आदि के द्वारा ही की जाती है. प्रोफेसर व्हिस्टेल के अनुसार शब्दों के द्वारा महज 40% बातें ही संप्रेषित की जाती है. दैहिक भाषा का आम आदमी के जीवन में बड़ा व्यावहारिक महत्व है मसलन, शारीरिक

हरकतों व मुद्राओं को देख कर आप को सामने वाले व्यक्ति द्वारा बोले गए सचझूठ को समझने में सहूलियत हो जाती है. यहां कुछ ऐसी ही हरकतों, मुद्राओं जैसे मुंह ढकना, नाक छूना, नजरें चुराना, हाथ व हथेली की हरकतें, कान मसलना, गरदन खुजलाना आदि का वर्णन किया जा रहा है जिस से सचझूठ को समझने में सुविधा होगी.

यदि कोई व्यक्ति बात करते समय आंखें चुराए तो समझिए कि वह झूठ बोल रहा है.

मुंह ढकना झूठ बोलते समय की जाने वाली आम चेष्टा है. इस में हाथों द्वारा मुंह ढकना, मुंह पर कुछ उंगलियां रखना, बंद मुट्ठी रखना, अंगूठे का दबाव गाल पर रखना आदि शामिल हैं. संभव है कि यह मस्तिष्क द्वारा अवचेतन अवस्था में हाथ को निर्देश देना है कि वह कपटपूर्ण शब्दों को रोके.

कभीकभी लोग मुंह ढकने की हरकत को भी छिपाने के उद्देश्य से झूठमूठ में खांसना शुरू कर देते हैं. अतः अगर कोई व्यक्ति आप से बात करते समय मुंह ढकने की चेष्टा करे तो वह उस बात का संकेत हो सकता है कि वह झूठ बोल रहा है और यदि वह उस समय भी मुंह पर वैसे ही हाथ रखे रहे जब आप बोल रहे हों तो वह उस बात को झूठ समझ रहा है अथवा वह बात आसानी से उस के गले नहीं उतर रही.

नाक छूना मुंह ढकने का ही ज्यादा विकसित व छद्म रूप माना जा सकता है. इस हरकत में व्यक्ति महज नाक को सहलाता भर है. कई बार हौलेहौले अथवा एक दफे नाक पर हाथ रख कर फिर हटा लेना जैसी क्रियाएं हम इस में शामिल कर सकते हैं. इन चेष्टाओं को हम सचमुच की नाक में खुजली करने की क्रिया से आसानी से अलग कर सकते हैं. सचमुच की खुजली में नाक खुजलाई अथवा रगड़ी जाएगी, केवल छू भर नहीं ली जाएगी. इस चेष्टा का भी मुंह ढकने की तरह दोहरा उपयोग संभव है. अर्थात वक्ता द्वारा झूठ को छिपाना व श्रोता द्वारा वक्ता पर अविश्वास.

नजरें चुराना के अंतर्गत व्यक्ति झूठ बोलते समय या तो आंखें मलते हैं अथवा नजरें कहीं और रखते हैं.

हाथ व हथेली की हरकत के अन्तर्गत व्यक्ति झूठ बोलते समय हाथ पीछे रखते हैं अथवा उंगलियों को आपस में उलझाते रहते हैं. यही नहीं, ज्यादातर हथेली झूठ बोलते समय खुली नहीं रहती.

कान मसलते समय श्रोता द्वारा केवल न सुनने की चेष्टा दिखाना ही नहीं है बल्कि वक्ता व श्रोता दोनों द्वारा धोखा, अनिश्चय, संशय, अतिशयोक्ति या फिर आशंका की भावना से भी संबंद्ध है. इस चेष्टा में प्रायः व्यक्ति कान के निचले हिस्से को खींचता है अथवा संपूर्ण कान को तोड़तामरोड़ता रहता है.

यदि व्यक्ति इन हरकतों पर नियंत्रण करने में सफल भी हो जाए तो भी शरीर के अनेक सूक्ष्म संकेत उस के झूठ को प्रकट कर ही देते हैं. मसलन, चेहरे की मांसपेशियों का संकुचन, पुतलियों का फैलना या सिकुड़ना, भौहों पर पसीना आना, पलक झपकने की गति का तीव्र हो जाना, हलका सा कंपन आदि.

अतः दैहिक भाषा को समझना आज दैनिक व्यवहार के लिए अत्यंत उपयोगी है. मगर इसे समझने की क्षमता पर्याप्त समय साधना और निरीक्षण से ही उत्पन्न होती है. ●
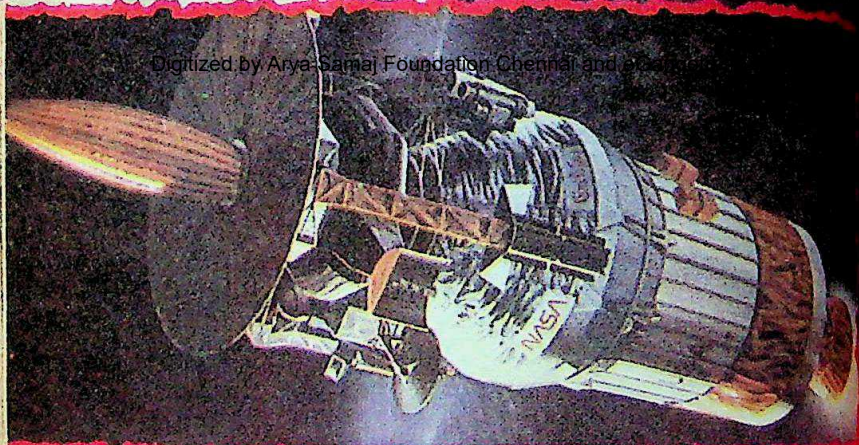
गैलीलियो बृहस्पति ग्रह की यात्रा पर

लेख ● राजेंद्र शर्मा

गत वर्ष 18 अक्तूबर को अमरी[illegible] अंतरिक्ष शटल यान एटलांटिस [illegible] कैलिफोर्निया के एडवार्डस वायु सेना अड्डे से पांच दिन की अंतरिक्ष उड़ान भरी और 23 अक्तूबर को यह शटल यान सुरक्षित लौट आया. इस बार की उड़ान का सब से बड़ा आकर्षण यह था कि इस ने अंतरिक्ष में पहुंच कर गैलीलियो नाम के एक अंतरिक्ष यान को बृहस्पति ग्रह की दिशा में छोड़ा था जो [illegible] अपने गंतव्य पर पहुंचने में छः वर्ष का समय लेगा.

गैलीलियो के निर्माण पर डेढ़ अरब डालर व्यय हुए हैं. इस बार एटलांटिस शटल यान में पांच अंतरिक्ष यात्री थे. इस दल का नेता माईकल जे. मककल[illegible] सेना अधिकारी है.

यह शटल यान जब पृथ्वी को छोड़ कर अंतरिक्ष में तैरता हुआ पृथ्वी की पांचवीं परिक्रमा कर रहा था तो शंकु के आकार के गैलीलियो यान को इस में से निकाल कर [illegible] अंतरिक्ष में छोड़ दिया गया था और अंतरिक्ष यात्रियों का दल एक घंटे तक उसे देखता रहा था. फिर गैलीलियो के बूस्टर राकेट जल उ[illegible] और देखते ही देखते यह अपने रास्ते पर [illegible] [illegible] से उड़ चला.

ढाई टन भार वाले इस अंतरिक्ष यान को ...ु वैज्ञानिक प्यार से अंतरिक्ष यानों की ...लगेयस' की संज्ञा देते हैं. यह यान ...स्पति ग्रह के चार प्रमुख उपग्रहों की ...क्रमा कर के उन फोटोग्राफों पर से रहस्य ...दा हटाएगा जो कि इस के निकट से ... वायजर यान ने लिए थे. गैलीलियो वैसे

भी ऐसा पहला यान होगा जो कि किसी बाहरी ग्रहों के वायुमंडल में प्रवेश कर के उस की इतने नजदीक से जानकारी प्राप्त कर के पृथ्वी पर भेजेगा.

अभी तक हम बृहस्पति की जानकारियां, इसे दूरबीन से देख कर तथा पायनीयर और वायजर यानों से प्राप्त चित्रों से ही ले पाए हैं. ग्रह हमारे सौर मंडल का सब से बड़ा ग्रह है. वैसे हम अगर क्रमानुसार देखें तो यह हमारे सौर मंडल में पांचवें स्थान पर आता है. दूरबीन से देखने पर यह पीले से रंग का दिखाई देता है. इस पर बादल से भी नजर आते हैं.

इस में सब से अधिक अद्भुत चीज तो इस पर बना विशाल लाल धब्बा है जो कि हमारी पृथ्वी से दो गुने से भी बड़े आकार का है. अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए यह आज भी एक रहस्य बना हुआ है.

इस ग्रह की कुल द्रव्यराशि हमारी पृथ्वी से 318 गुना है. इस ग्रह में इतना स्थान है कि हमारी पृथ्वी के आकार के 1300 पिंड इस में आसानी से समा सकते हैं. यही कारण है कि इस ग्रह का गुरुत्वाकर्षण हमारी पृथ्वी से कई गुना अधिक है.

इस विशाल ग्रह के 16 उपग्रह हैं. इस के इर्दगिर्द वलय होने के भी संकेत मिले हैं. इस ग्रह की जानकारियां अभी तक निकट से

अंतरिक्ष के सब से बड़े बृहस्पति ग्रह की रहस्यात्मक परतों को हटा कर इस के बारे में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हाल ही में अति आधुनिक यान गैलीलियो अंतरिक्ष में छोड़ा गया जो ग्रह के तापमान, दबाव, घनत्व, बादलों की स्थिति के साथसाथ इस के अन्य अवयवों की भी नवीनतम जानकारी देगा.

एटलांटिस यान के यात्रियों का दल.

एटलांटिस शटल यान : अपनी पांच दिन की अंतरिक्ष उड़ान पर.

प्राप्त नहीं हुई हैं. इसलिए इस के संबंध में अनेक ऐसे रहस्य हैं जो अभी खुलने बाकी हैं.

यह ग्रह अपनी धुरी पर एक चक्कर लगाने में 9 घंटे 55 मिनट का समय लगाता है. दूसरे ग्रहों की तुलना में चक्कर लगाने की इस की गति सब से अधिक है. सूर्य से इस की दूरी औसतन 78 करोड़ किलोमीटर है. सूर्य की एक परिक्रमा करने में इसे 11.86 वर्षों का समय लगता है.

यह ग्रह मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैसों का बना हुआ है. इस में कुछ मात्रा में मीथेन और अमोनिया के यौगिक भी पाए जाते हैं. यह ग्रह ठोस रूप में नहीं है. इस में 80% तो हाइड्रोजन ही है. कुछ खगोलविदों का अनुमान है कि इस के लाल धब्बे में कार्बनिक अणु हैं, जिस से वहां जीवाणु होने की आशा है.

गैलीलियो अंतरिक्ष यान का नामकरण प्रसिद्ध खगोलविद गैलीलियो के नाम पर किया गया है. इस वैज्ञानिक ने 1610 में केवल दूरबीन से ही इस ग्रह और इस के उपग्रहों की
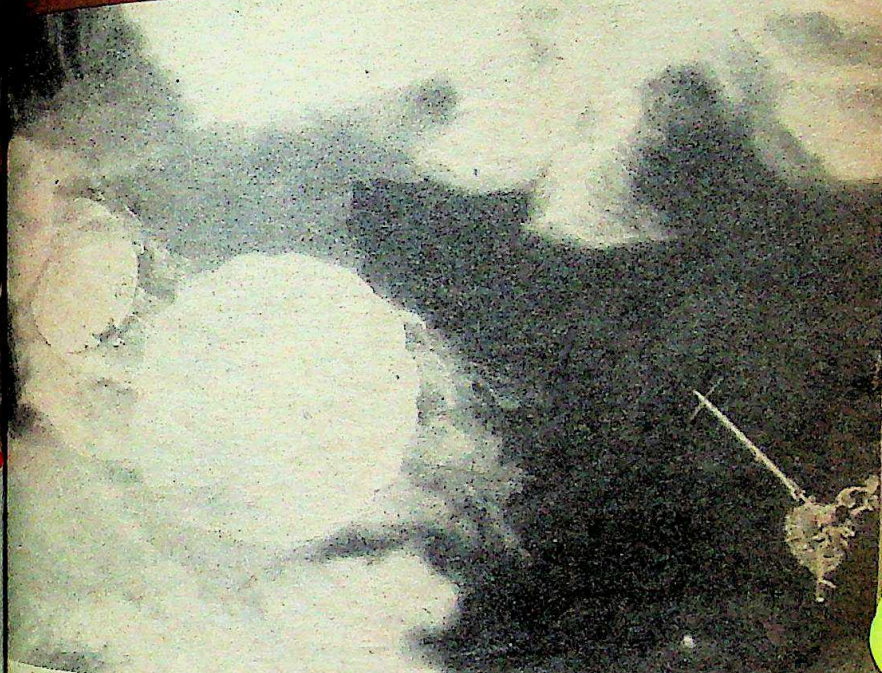
छोटा यान कैपसूल : अंतरिक्ष में गैलीलियो का प्रमुख सहायक.

जानकारी जुटाई थी. उस समय उपलब्ध कम क्षमता दूरबीन की सहायता से गैलीलियो ने ... के चार उपग्रह होने की पुष्टि की थी.

फिर वायजर तथा पायनियर अंतरिक्ष यानों ने वहां पर चुंबकीय क्षेत्र होने के संकेत दिए थे. अब बृहस्पति के 16 उपग्रह होने की पुष्टि हो चुकी है. इस के एक उपग्रह (आयो) पर तो कई ज्वालामुखी भी हैं. जिन से सल्फर डाइआक्साइड निकल कर 300 किलोमीटर की ऊंचाई तक फैली हुई है. गैलीलियो अंतरिक्ष यान इन ज्वालामुखियों की भी जानकारी प्राप्त करेगा.

यह अंतरिक्ष यान बहुत ही जटिल और ...मित यान है. इस के लिए ऊर्जा इस में ... दो प्लूटोनियम इकाइयां देंगी.

बृहस्पति ग्रह के अन्वेषण के लिए इस यान को मई 1986 में छोड़ा जाना था लेकिन उस से कुछ पहले ही अमरीका के अंतरिक्ष यान शटल चैलेंजर में हुए विस्फोट से यह दुर्घटना ग्रस्त हो गया था. इसी कारण से अमरीका के कई अंतरिक्ष परियोजनाएं अपने निर्धारित समय पर न हो कर दो साल तक पिछड़ गईं थीं.

अगर गैलीलियो मई 1986 में अंतरिक्ष में छोड़ दिया जाता तो उस समय बृहस्पति की सौर मंडल में स्थिति ऐसी थी कि यह दो वर्ष में ही वहां पहुंच गया होता. लेकिन अब इसे वहां पहुंचने में छः वर्ष का समय लगेगा क्योंकि अब इसे लंबा रास्ता (400 करोड़ किलोमीटर) तय कर के पहले शुक्र ग्रह की ओर जाना होगा जहां से वह उस के गुरुत्वाकर्षण का अधिक वेग प्राप्त कर के उड़ता हुआ दिसंबर 1995 में बृहस्पति ग्रह के निकट पहुंचेगा. अपनी इस यात्रा के दौरान गैलीलियो शुक्र, चांद तथा पिंडों के चित्रों को नीचे पृथ्वी पर भेजता रहेगा.

बृहस्पति ग्रह पर पहुंचने से लगभग पांच मास पहले गैलीलियो अंतरिक्ष यान में से एक 745 पौंड भार वाला यान (कैपसूल) अलग से निकल कर बृहस्पति की मध्य रेखा (इक्वेटर) की ओर रुख कर के उड़ना शुरू कर देगा.

7 दिसंबर 1995 को यह यान बृहस्पति के अमोनिया के बादलों में एक लाख 15 हजार मील प्रति घंटा की गति से प्रवेश करेगा. इस के वायुमंडल में प्रवेश करने से इतना घर्षण पैदा होगा कि वहां पर प्रघाती तरंगे पैदा हो जाएंगी जिस से यान के बाहरी भाग का तापमान 28 हजार डिगरी फारेनहाइट हो जाएगा. लेकिन यह घर्षण यान के लिए एक ऐसे ब्रेक का भी काम करेगा जिस से यान की गति घट कर केवल 100 मील प्रति घंटा रह जाएगी. यह सब कुछ मिनटों में ही हो जाएगा. इस समय तक इस छोटे यान में से एक पैराशूट भी निकल कर इस पर लग जाएगा. फिर यह गरम और तूफानी हवाओं में से होता हुआ इस ग्रह के घने वायुमंडल में घुस जाएगा.

अनुमान है कि ऐसे वायुमंडल में यह छोटा यान लगभग 75 मिनट तक ही रह पाएगा. लेकिन तब तक यह इस वायुमंडल में 400 किलोमीटर तक घुस कर वहां से मिली सूचनाओं को अपने मुख्य यान गैलीलियो तक बराबर पहुंचाता रहेगा जोकि इन्हें साथसाथ पृथ्वी पर भेजता रहेगा.

छोटे यान में लगे यंत्रोपकरण बृहस्पति के वायुमंडल के तापमान, दबाव, घनत्व बादलों की सही स्थिति, मोटाई आदि की पहचान कर के उन की रासायनिक संरचना की जानकारी देंगे.

इस ग्रह के बारे में प्राप्त नई जानकारियों के आधार पर कुछ वैज्ञानिकों का यह मानना है कि इस के मध्य का एक छोटा भाग चट्टानी है जिस पर तरल हाइड्रोजन की परत इतनी जोर से दबी हुई है कि यह गैस एक धातु का सा काम करती है. अनुमान है कि इस की परतों की हलचल के कारण ही इस ग्रह का चुंबकीय क्षेत्र बना हुआ है. ज्यों ज्यों इस का दबाव ऊपर आतेआते कम होता है वैसे तरल हाइड्रोजन गैस में बदल जाती है. वैज्ञानिक दल का कहना है कि बृहस्पति में 88% हाइड्रोजन, 11% हीलियम और थोड़ीथोड़ी मात्रा में मीथेन, अमोनिया और पानी है.

लगभग 22 मास तक गैलीलियो का मुख्य बड़ा भाग बृहस्पति ग्रह की परिक्रमा करता हुआ, छोटे यान से मिली खबरों को कर पृथ्वी पर पहुंचाने के लिए एक रेडियो रिले स्टेशन का काम करता रहेगा. इस दौरान यह मुख्य यान इस की 10 परिक्रमा करता हुआ इस के चार उपग्रहों के निकट हो कर गुजरेगा.

आधुनिकतम प्रणालीयुक्त यान

इस यान में अतिआधुनिक टेलीविजन कैमरे लगे हुए हैं. साथ में काफी संवेदनशील इलेक्ट्रोनिक इमेजिंग प्रणाली भी लगी हुई है जो कि वायजर अंतरिक्ष यान में लगे उपकरण से 10 गुना अधिक संवेदनशील है.

इस अभियान दल के प्रमुख वैज्ञानिक ओ. नील का कहना है, ''गैलीलियो इस ग्रह के कुछ उपग्रहों के 200 किलोमीटर निकट तक पहुंच कर वायजर यान से लिए गए इन के चित्रों से 100 से 1000 गुना साफ चित्र भेज देगा.''

बृहस्पति ग्रह के अन्वेषण से यह यान हमें उस द्रव्य के वहां होने के बारे में बताएगा जिस से हमारे सौर मंडल (सूर्य तथा ग्रहों) की उत्पत्ति हुई है. हमारे सौरमंडल का जन्म लगभग पांच अरब वर्ष पहले हुआ था.

विगत कुछ दिनों से अमरीकी वैज्ञानिक इस ग्रह का दूरबीन से निरीक्षण कर के, इस में कुछ अनजानी हलचल होने की सूचना दे रहे हैं. जैसे, इस के वायुमंडल में बहुरंगी धारियां दिखाई दे रही हैं. उत्तरी मध्य रेखा वाले भाग का रंग भूरे से सफेद होता जा रहा है तथा ग्रह का लाल धब्बा और भी लाल होता जा रहा है. वैज्ञानिकों का कहना है कि सन 1995 तक जब हमारा गैलीलियो वहां पहुंचेगा, में कई तूफानी बदलाव आ चुके होंगे.

विश्व सुलभ साहित्य

वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर रहे युवकयुवतियों के लिए अनुपम पुस्तकें

युवकों से — रु. 15.00
युवकों को योग्य पति, सफल गृहपति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.

युवतियों से — रु. 15.00
युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए?

पति से — रु. 15.00
विवाहित जीवन में पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.

पत्नी से — रु. 20.00
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन हर पत्नी के लिए अनिवार्य.

कामकला भाग 1 — रु. 14.00
(विवाहित युवतियों के लिए)

कामकला भाग 2 — रु. 19.00
(विवाहित युवकों के लिए)
यौन जीवन को सुखमय बनाने में सहायक प्रस्तुत पुस्तक में सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण. साथ में काम समस्याओं का विस्तृत निवारण भी.

स्त्री और पुरुष — रु. 15.00
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान से ले कर आधुनिक पश्चिमी यौन के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा तथा आप के प्रश्नों के हल भी.

वात्स्यायन कामसूत्र — रु. 25.00
यौन विज्ञान के विषय में प्राचीन भारत का दृष्टिकोण महर्षि वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' से स्पष्ट हो सकता है. विशेष शैली एवं सरल भाषा में अनुवाद के साथ साथ विस्तृत टिप्पणियां दी गई हैं.

यौन मनोविकार — रु. 10.00
क्या आप सुखी हैं?
काश ! आप जान पाते, तो आप की जिन्दगी बहारों से, खुशियों से और सुगन्धि से भर जाती.
आप की यौन समस्याओं और मानसिक उलझनों का समाधान आपको इस पुस्तक के पन्नों में मिलेगा.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:
दिल्ली बुक कंपनी एम- 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

सेट नं. 43

*पूरा अग्रिम भेजने पर सेट न. 43 129 रुपए का, डाक खर्च 2.00 रुपए वी.पी.पी. द्वारा, अग्रिम मूल्य न भेजने पर डाक खर्च 10 रुपए अतिरिक्त अग्रिम भेजें. चुनी हुई पुस्तकें मगाने पर डाक व्यय रु. 4/- अग्रिम भेजें. बकाया राशि वी.पी.पी. द्वारा.

मैनाल
टूटी माला, बिखरे मोती

लेख ● श्याम सुंदर जोशी

ती
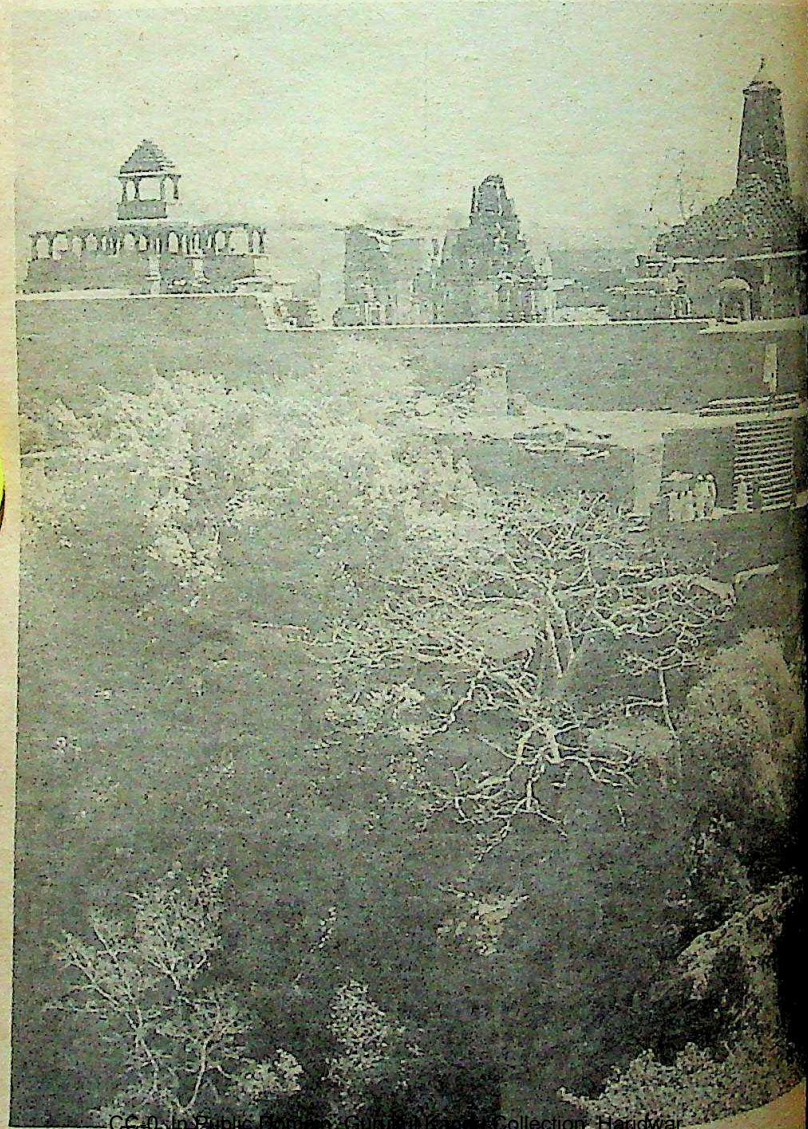
राजस्थान के मेनाल नगर के गौरवशाली मंदिर और राष्ट्रीय महत्व के प्राचीनं वास्तुकला के नमूने आज जिस दुर्दिन के दौर से गुजर रहे हैं, उस की कल्पना करते ही मन क्षोभ से भर जाता है. क्या हमारी इन प्राचीन धरोहरों की सुधिबुधि लेने वाला कोई भी नहीं है?

राजस्थान में भीलवाड़ा कोटा सड़क मार्ग पर भीलवाड़ा नगर से कोई 70 किलोमीटर दूर ऊपरमाल नामक पठारी भू भाग पर प्रकृति की गोद में स्थित मेनाल नगर के गौरवशाली मंदिर आज विनाश के कगार पर खड़े हैं. कलात्मक स्थापत्य सौंदर्य से परिपूर्ण ये देवालय अब अपने अस्तित्व की रक्षा करतेकरते मानो थकहार गए हैं. टूट चुके हैं. कोई इन की सुध लेने वाला नहीं.

मुख्य सड़क मार्ग पर मेनाल बस स्टैंड से दक्षिण दिशा में लगभग दोढाई सौ मीटर चलने पर आता है मंदिर परिसर का प्रवेश द्वार. अंदर प्रवेश करते ही आप को आश्चर्य भी होगा और निराशा भी. एक तरफ जहां महानालेश्वर शिवालय की उत्कृष्ट स्थापत्य कला एवं बेजोड़ मूर्तिशिल्प देखते ही बनती है, वहीं दूसरी ओर टूटी माला के बिखरे मोतियों की मानिंद चूरचूर हो रहे यहां के अनेक मंदिरों की दुर्दशा देखी नहीं जाती.

मुख्य प्रवेश द्वार पर लगे एक सूचनापट्ट के अनुसार यह स्थल 'प्राचीन स्मारक तथा

मेनाल का भव्य महानालेश्वर शिवालय: स्थापत्य कला के बेहतरीन नमूनों में से एक.
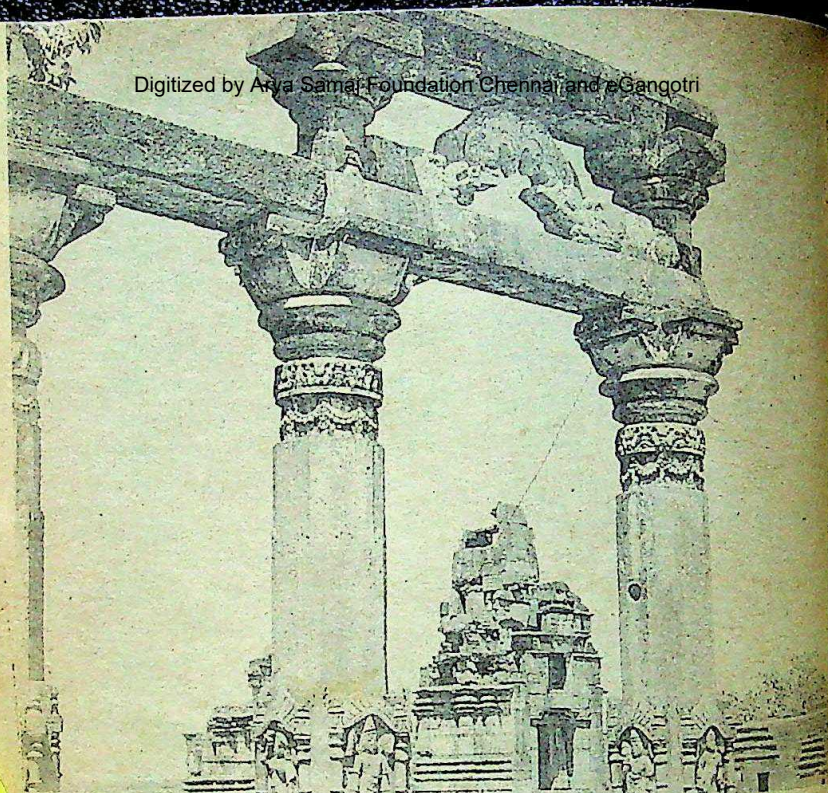
महानालेश्वर शिवालय का मुख्य प्रवेश द्वार : बुरे दिन के आगमन से लुप्त होती कलात्मकता.

पुरातत्त्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958' के अधीन राष्ट्रीय महत्त्व का घोषित किया गया है. सूचना पट्ट पर स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि जो कोई इस स्मारक को नष्ट करता है, हटाता है, हानि पहुंचाता है, बदलता है, विकृत करता है, जोखिम में डालता है अथवा इस का दुरुपयोग करता है तो उसे कारावास व अर्थदंड दिए जाने का प्रावधान है. लेकिन पिछले लंबे समय से किसी के भी खिलाफ ऐसा कोई मामला दर्ज नहीं हुआ है, हालांकि स्मारक को हानि पहुंचाने में कोई कसर नहीं रखी गई है.

मेनाल में छोटेबड़े करीब 25 मंदिर हैं. लेकिन सिर्फ एक महानालेश्वर शिवालय के अतिरिक्त सभी देवालय खंडहरों की शक्ल ले रहे हैं. उचित देखरेख के अभाव में तथा प्रकृति की विनाश लीला के साथ में बड़ेबड़े स्तंभ धंसने लगे हैं. दुर्लभ नक्काशियां चटकने लगी हैं. बेहद नजाकत से तराशी गई आकृतियां टूकटूक हो कर यहांवहां बिखर गई हैं.

पुरातत्ववेत्ताओं के मतानुसार मेनाल के मंदिरों का निर्माण लगभग 12-13वीं शताब्दी में हुआ था. तत्कालीन चौहान शासकों ने यहां अनेक देवालयों व मठों का निर्माण करवाया. कर्नल टाड ने अपनी 'राजस्थान का इतिहास' नामक पुस्तक में मेनाल का उल्लेख करते हुए कहा है कि महानाल (पर्वतीय घाटी) के ऊपर एक ओर कगार की चट्टानों पर अजमेर और दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान ने मंदिर व भवनों का निर्माण कराया तथा दूसरी ओर चित्तौड़गढ़ के राणा रूपाजी द्वारा निर्मित देवालय हैं. यही वह स्थान है जहां दो महान [illegible] अपने परिवार सहित

कुछ दिनों रहा करते थे.

कालांतर में मेनाल 'नाथ संप्रदाय' का महत्वपूर्ण स्थल बन गया. भावब्रह्म नामक योगी ने यहां चौहान राजा पृथ्वीराज द्वितीय के शासन काल में एक सुंदर मठ का निर्माण करवाया. जन कोलाहल से दूर यह अत्यंत शांत और रमणीक स्थल वास्तव में साधकों व योगियों के लिए अत्यंत उपयुक्त है.

यहां का प्रमुख महानालेश्वर मंदिर उत्कृष्ट स्थापत्य कला की एक खुली किताब है. धरातल से पांच फुट ऊंचे ठोस चबूतरे पर निर्मित इस विशाल एवं कलात्मक मंदिर के अग्रभाग में द्वार मंडप, मध्य में सभा कक्ष एवं अंत में गर्भगृह है. मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक ओर गरुड़ पर सवार विष्णु तथा दूसरी ओर अर्धनारीश्वर की प्रतिमा बरबस ध्यान आकृष्ट करती है. मंदिर के सम्मुख विशाल प्रांगण में बने एक मंडप के नीचे वर्गाकार चबूतरे पर नंदी (शंकर की सवारी) की प्रतिमा स्थापित है. अब यह प्रतिमा जगहजगह से खंडित हो चुकी है.

महानालेश्वर शिवालय की बाहरी दीवारों पर उत्कीर्ण देवदेवांगनाओं, अप्सराओं और नर्तकियों की प्रतिमाएं खजुराहो की अनुकृतियां लगती हैं. मंदिर के निचले छोर से शिखर के अंतिम छोर तक शिल्पकार ने छैनीहथोड़ों से सौंदर्य, रतिक्रिया, श्रृंगार, नृत्य, प्रेमीयुगल आदि की आकृतियों को बेहद सुंदरता के साथ उभारा है. लेकिन इन में से एक भी आकृति साबूत नहीं बची है. सब के अंग भंग हो गए हैं.

मुख्य मंदिर के निकट ही अन्य छोटेबड़े कई देवालय खड़े हैं. इन के शिखर ढह गए और गर्भगृह सूने पड़े हैं. इन में चमगादड़ डेरा डाले रहते हैं और उन की बीट से ये दुर्गंध छोड़ने लगे हैं. मंदिरों के आसपास बिखरे पड़े मूर्तिकला के अवशेष अपने गौरवशाली अतीत की याद में आंसू बहा रहे हैं. पास में ही

कल का वैभव आज खंडहर की शक्ल में.
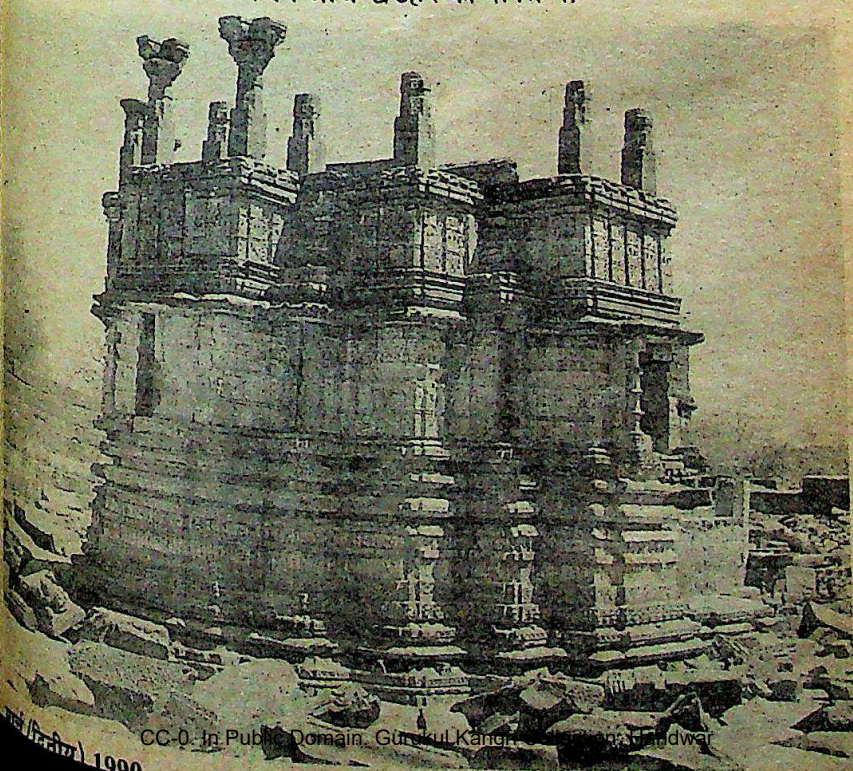
एक कुआं है जो न केवल सूख गया बल्कि जीर्णशीर्ण हो चुका है. इस की बची हुई टूटीफूटी दीवारों पर उकेरी गई मनमोहक कलाकृतियां आज भी लोगों का ध्यान आकर्षित करती हैं.

इसी परिसर में स्थित एक दोमंजिले मठ के भीतर तराशे हुए पत्थरों के खंभों पर उत्कीर्ण सूर्य की प्रतिमा और उस के चारों ओर सर्पों का घेरा सूर्य के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास का प्रतीक है.

मंदिरों के पास ही लगभग 300 फुट गहरी सघन वनाच्छादित घाटी में तीव्र वेग से गिरता सुरम्य जलप्रपात मनोहारी दृश्य उपस्थित करता है. प्रपात के दूसरे छोर पर दूर से ही कुछ खंडहर दिखाई पड़ते हैं. ये रूठी रानी के महल हैं जो अब शनैःशनैः ढहते जा रहे हैं. इन महलों के निकट ही एक शिव मंदिर है जिस पर खुदे शिलालेख के अनुसार मंदिर का निर्माण रानी सुहावा देवी ने सन 1168 ईसवी में करवाया था. सुहावा देवी राजस्थान में रूठी रानी के नाम से जानी जाती थीं.

महलों के निकट बने शिवालय में हजार मुंह वाले शंकर हजारेश्वर की प्रतिमा स्थापित है. अब तो लोग इन महलों के भीतर जाने से भय खाने लगे हैं, पता नहीं ये कब धराशायी हो जाएं. यही हाल हजारेश्वर शिव मंदिर का है.

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के चित्तौड़गढ़ स्थित कार्यालय के चार कर्मचारी यों तो यहां (स्मारक परिसर) हर समय मौजूद रहते हैं लेकिन कभी कोई असामाजिक तत्त्व अथवा मूर्तिचोर इस परिसर में आ जाएं तो उन से मुकाबला करने के लिए इन के पास कोई साधन नहीं है.

अपना नाम न बताने में दक्ष पर काम करने में कामचोर अधिकांश सरकारी कर्मचारियों की तरह एक स्मारक परिचर ने बताया कि कई बार देर रात्रि को लोग शराब के नशे में यहां आते हैं. ऊधम मचाते हैं लेकिन न तो हम उन्हें यहां से भगा सकते हैं और न उन से मुकाबला कर सकते हैं. हम खुद जंगल में परिवार को ले कर बैठे हैं. कभी भी कुछ भी हो सकता है. उस ने आगे बताया कि अगर विभाग की ओर से हमें आत्मसुरक्षा के लिए कुछ हथियार वगैरह दे दिए जाएं और मंदिर परिसर के चारों ओर दीवार खड़ी कर दी जाए तथा मुख्य प्रवेश द्वार पर दरवाजा लगा दिया जाए तो रात के समय खतरे की कोई संभावना नहीं रहेगी.

उस ने यह भी बताया कि टूटते मंदिरों के जिर्णोद्धार की दिशा में करीब 25 वर्ष पहले काम शुरू किया गया था. लेकिन वह काम तब से अब तक अधूरा ही पड़ा है. पिछले 50 सालों में अगर कोई काम हुआ है तो केवल यही कि मुख्य मंदिर के सामने फर्श पर पत्थर के चोके लगाए गए तथा कुछ मंदिरों के शिखर व परिचर की चारदीवारी का काम शुरू किया गया जो बीच में ही बंद हो गया.

स्मारक परिचरों ने बताया कि यहां सैकड़ों पर्यटक रोज आते हैं और वर्षा ऋतु में जब झरना पूरे वेग से गिरता है और घाटी में हरियाली की चादर बिछ जाती है तब प्रतिदिन आने वाले सैलानियों की संख्या हजारों में पहुंच जाती है. ऐसी स्थिति में किसी भी प्रकार की दुर्घटना आदि से सुरक्षा हेतु यहां अस्थायी पुलिस चौकी कायम करने की भी जरूरत है. उन्होंने झरने के ऊपर एक पुलिया का निर्माण करवाने की भी आवश्यकता बताई ताकि अचानक पानी का बहाव तेज होने पर भी लोग इधर से उधर आ जा सकें.

उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष फरवरी माह में जब पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी अपनी राजस्थान यात्रा के दौरान बूंदी से भीलवाड़ा जा रहे थे तो उन्होंने आधे घंटे तक मेनाल का अवलोकन किया. श्री राजीव गांधी ने अपने साथ आई दूरदर्शन की कैमरा टीम को यहां का फिल्मांकन करने के निर्देश दिए. उस समय कुछ शाट लेने के बाद कैमरा टीम ने तीन दिन तक यहां रुक कर फिल्मांकन किया. बस उस के बाद कुछ भी नहीं हुआ. सुना तो यह भी गया था कि यहां पर्यटन विभाग की ओर से 'मिडवे रेस्तरां' बनाया जाएगा लेकिन फिलहाल कोई आसार नहीं लग रहे हैं.

व्यंग्य • रमेश चंद्र छबीला
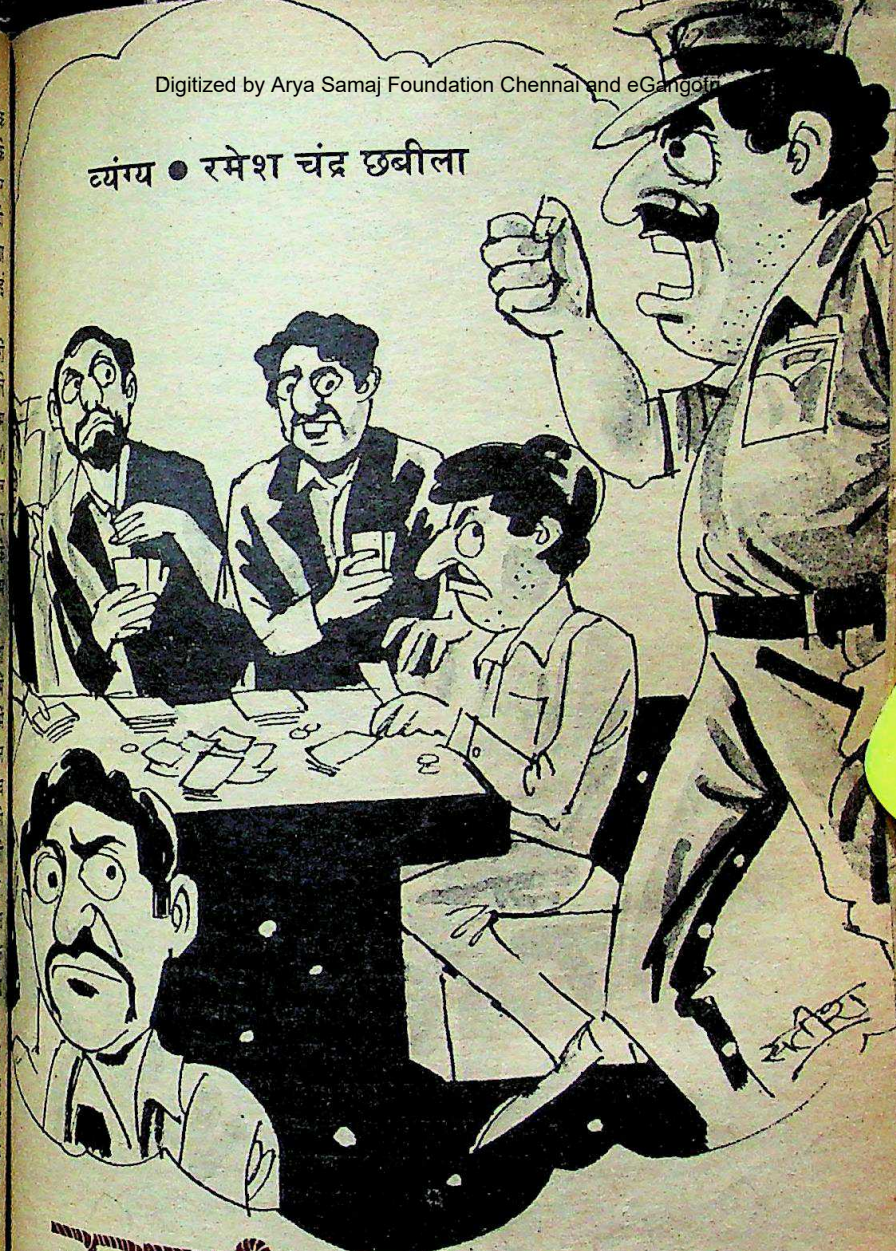
रस्सी का अजगर

पुलिस थाना प्रभारी इंस्पेक्टर गजेंद्र सिंह ने दीवार घड़ी में समय देखा, नौ बज रहे थे. उस ने दूसरी कुरसी पर पैर पसार कर सिगरेट सुलगा ली और कश ले कर धुआं छोड़ा. फिर निकट रखी एक पत्रिका उठाई और पन्ने पलटने शुरू कर दिए.

इंस्पेक्टर गजेंद्र सिंह की आयु लगभग 45 वर्ष थी. कद लंबा था और रंग गेहुआं. कुल मिला कर उस का व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली था.

"सरकार को नमस्कार." एक अधेड़

रस्सी को सांप बनाने की कला में माहिर इंस्पेक्टर गजेंद्र सिंह का सामना जब जुए के एक केस में अखबार वाले से पड़ा तो उन के पैरों की जमीन खिसक गई और उन्हें लगा कि अखबार वाले तो उन से भी दो कदम आगे हैं जो रस्सी से सांप नहीं अजगर बनाते हैं...

व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश करते हुए विनम्र स्वर में कहा.

जानापहचाना स्वर सुन कर इंस्पेक्टर गजेंद्र ने उस की तरफ देखा और कुरसी के निकट रखे पीकदान में ढेर सा पीक थूक कर पान चबाते हुए बोला, "नमस्कार... कहिए, क्या हाल है?"

"बस हुजूर, आप ही का खयाल है."

"बोलो?"

"बहुत बड़ा जुआ चल रहा है." धीमे स्वर में उस व्यक्ति ने कहा.

"जगह?"

"मोहन लाल मार्केट, दुकान नंबर 16... ऊपरी मंजिल पर एक वित्तीय कंपनी है. 'जय हिंद' कंपनी का बोर्ड लगा हुआ है. मोटा जुआ चल रहा है. शहर के कुछ खास लोग जुआ खेल रहे हैं."

"यह हुई न कुछ बात." गजेंद्र के नेत्रों की चमक बढ़ गई. "हमारे इलाके में जुआ और वह भी हम से पूछे बिना. अभी पता चल जाएगा कि जुआ कैसे खेला जाता है."

"अच्छा हुजूर, मैं चलूं?" उस व्यक्ति ने हाथ जोड़ कर कहा.

"अरे कुछ ठंडा गरम तो ले लो..."

"बस सरकार, अब मुझे इजाजत दें."

"तो ठीक है... यह रख लो." गजेंद्र ने जेब से सौ रुपए का एक नोट निकाल कर उस की ओर बढ़ा कर कहा, "कुछ खापी लेना. बहुत रात हो चुकी है. परसों मिलना."

"जी सरकार." कहते हुए वह व्यक्ति चला गया.

मुखबिर के जाते ही गजेंद्र ने सिगरेट का गहरा कश खींचा और बोला, "अरे, पहरा."

बाहर पहरे पर तैनात कांसटेबल ने कमरे में प्रवेश कर पूछा, "जी साहब?"

"सब इंस्पेक्टर प्रकाश चंद व दीवानजी को तुरंत बुला कर पुलिसबल तैयार कराओ. ड्राइवर से कहो कि वो गाड़ियां तैयार रखे. अभी एकदम चलना है."

"जी सरकार." कांसटेबल बाहर आया.

कुछ ही मिनटों के बाद पुलिस की दो गाड़ियां तेजी से दौड़ी जा रही थीं.

दोनों गाड़ियां मोहन मार्केट के सामने रुक गईं. दनदनाता हुआ गजेंद्र ऊपरी मंजिल पर दुकान नंबर-16 के सामने जा पहुंचा. दरवाजा पूरी तरह बंद नहीं था. अंदर से आने वाली आवाजों से वह समझ गया कि जुआ चल रहा है.

गजेंद्र ने जोरदार ठोकर दरवाजे को मारी तो वह खुल गया. वहां कुल आठ व्यक्ति बैठे थे छः खेल रहे थे. मेज पर नोट ही नोट पड़े थे. पुलिस को देखते ही वे सब चौंक उठे. उन की आंखें फटी रह गईं व दिल की धड़कन बढ़ गई. शायद उन्होंने स्वप्न में भी न सोचा था कि पुलिस आ जाएगी.

गजेंद्र सिंह ने कहा, "तो यह बात है. वित्तीय कंपनी की आड़ में जुए का अड्डा चल रहा है. इतना बड़ा अड्डा है और हमें पता ही नहीं. एक बात कहे देता हूं भागने की कोशिश न करना. जिस ने कोशिश की गोली मार दूंगा. वैसे भी पुलिस बल की दो गाड़ियां ले कर आया हूं."

किसी के मुंह से कोई स्वर न निकला.

"इस अड्डे का मालिक कौन है?" गजेंद्र ने पूछा.

"मैं हूं, साहब." एक अधेड़ से व्यक्ति ने कहा.

"क्या नाम है, आप का?"

"मेरा नाम गोविंद लाल है, साहब."

"कब से चला रखा है, यह अड्डा?"

"नहीं साहब, यह तो हम यारदोस्त बैठे ही..."

"क्या दीवाली पर खेलने की रिहर्सल कर रहे थे? अभी तो एक महीना बाकी है दीवाली में. अब तुम लोग थाने चलो." गजेंद्र ने कहा और मेज पर पड़े हुए रुपए एक बैग में भर लिए.

सभी जुआरियों की आयु 35 से 45 वर्ष के बीच थी. पांच सरकारी कर्मचारी, दो व्यापारी

और एक उस कंपनी का स्वामी था.

गजेंद्र ने उन सभी की ओर देख कर कहा, "तुम लोगों के पास जितना भी रुपया है इस बैग में चुपचाप डाल दो."

सभी ने रुपए निकाल कर बैग में डाल दिए. गजेंद्र ने अनुमान लगा लिया कि लगभग एक लाख रुपए बैग में आ चुके हैं. वह उन की तरफ घूरते हुए बोला, "अब आप सब अपना नाम व परिचय बताइए."

"विजय कुमार, विद्युत विभाग में कनिष्ठ अभियंता." एक ने कहा.

"महेंद्र कुमार, लोक निर्माण विभाग में क्लर्क." दूसरे ने कहा.

"राजेंद्र सिंह, बिक्री कर विभाग में बाबू." तीसरा बोला.

"राम पाल, जिला पूर्ति विभाग में इंस्पेक्टर." चौथा बोला.

"जीवन प्रकाश, आयकर विभाग में स्टेनो." पांचवें ने कहा.

"मनमोहन, सीमेंट व्यापारी." छठा बोला.

"अनूप राय, कोयला व्यापारी." सातवां बोला.

आठवां उस कंपनी का स्वामी था.

"ठीक है, चलो. अब तुम्हें सरकारी मेहमाननवाजी में ले चलते हैं. रिश्वत और कालाबाजारी का बहुत रुपया जमा कर रखा है." गजेंद्र सिंह ने कहा.

उन सभी को गिरफ्तार कर दोनों गाड़ियों में बैठाया गया. जब वे थाने पहुंचे तो साढ़े दस बज रहे थे. सभी को हवालात में बंद कर दिया गया. सभी के चालान कर केस तैयार कर दिया गया. जुए में बरामद रुपए 30 हजार ही दिखाए गए.

गजेंद्र वह बैग ले कर अपने निवास में जा घुसा और जल्दीजल्दी नोट गिनने शुरू कर दिए. उस का अनुमान ठीक था, कुल एक लाख बीस हजार रुपए थे.

डब्बा खुलते ही हीरे के हार की चमक के साथ पुलिस अधीक्षक की आंखें भी चमकी और वह धीरे से मुसकराए.

तभी सब इंस्पेक्टर उस के पास आ कर बोला, "साहब, कुछ आदमी इंतजार कर रहे हैं और आप का फोन भी है."

"वह सब तो देख लेंगे... तुम यह 10 हजार रुपए रख लो. पांच तुम्हारे हैं और बाकी के पांच उन को दे देना, जो साथ गए थे." गजेंद्र ने नोट देते हुए कहा.

"जी सरकार."

"फोन किस का है?"

"विधायक साहब का है."

"चलो, मैं आ रहा हूं."

कुछ देर बाद गजेंद्र दफ्तर में पहुंचा तो कुछ व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहे थे. वे सभी उन पकड़े गए लोगों को छुड़ाने के लिए बात करना चाहते थे.

"हैलो," गजेंद्र ने रिसीवर कान से लगा कर कहा, "गजेंद्र बोल रहा हूं."

"मैं शिव प्रसाद हूं," उधर से आवाज आई, "बात यह है गजेंद्रजी कि... जुए के एक अड्डे पर सफल छापा मारने पर बधाई हो."

"धन्यवाद, साहब."

"पकड़े गए लोगों में एक मेरा खास आदमी भी है मनमोहन, सीमेंट वाला. बहुत काम का आदमी है. मैं चाहता हूं कि उसे छोड़ दो."

"मजबूर हूं साहब. मैं ने तो आरोप पत्र तैयार कर मुकदमा कायम कर दिया है. आप तो जानते ही हैं कि अब कुछ हो नहीं सकता."

"ओह, यह बहुत गलत किया, आप ने."

"मैं ने तो अपनी ड्यूटी पूरी की है." कहते हुए गजेंद्र ने रिसीवर रख दिया.

इस से पूर्व कि उन व्यक्तियों में से कोई कुछ कहे, गजेंद्र ने सिगरेट सुलगाई और कश ले कर धुआं छोड़ते हुए कहा, "आप लोग जा सकते हैं. इन सभी को रंगे हाथ जुआ खेलते हुए पकड़ा है. इन पर मुकदमा तैयार हो चुका है. कल अदालत से जमानत करा कर छुड़ा लेना. अब कुछ भी कहना बेकार है."

वे सभी मन मसोस कर रह गए.

प्रातः जब गजेंद्र की आंख खुली तो समाचारपत्र मेज पर पड़ा था. एक समाचार पर उस की दृष्टि रुक गई—

डेढ़ लाख का जुआ व आठ जुआरी पकड़े गए.

जमजम्पुर, विगत रात से लगभग 10 बजे मोहन मार्केट में एक वित्तीय कंपनी की आड़ में चलने वाले एक बड़े जुआखाने पर थाना प्रभारी नेहरू नगर, गजेंद्र सिंह ने दलबल सहित सफलतापूर्वक छापा मारा और आठ व्यक्तियों को जुआ खेलते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया. गिरफ्तार व्यक्तियों में पांच सरकारी कर्मचारी, दो व्यापारी और एक अड्डे का मालिक है.

ज्ञात हुआ है कि प्रायः इस स्थान पर मोटा जुआ खेला जाता है. इस जुए में लगभग एक लाख 50 हजार रुपया पकड़ा गया है. गिरफ्तार व्यक्तियों के नाम इस प्रकार हैं...

आगे नाम दिए हुए थे.

डेढ़ लाख पढ़ कर गजेंद्र ने बुरा सा मुंह बनाया, मानो मुंह में कड़वी दवा घुल रही हो.

दोपहर तक उन सभी पकड़े हुए लोगों को अदालत में भेज दिया गया, जहां उन की जमानत हो गई.

रात नौ बजे के लगभग गजेंद्र ने मोटर साइकिल स्टार्ट की और थाने से बाहर निकला. शीघ्र ही वह पुलिस अधीक्षक की कोठी पर जा पहुंचा.

बाहर खड़े कांसटेबल से पूछा, "साहब हैं क्या?"

"जी हां."

"अकेले ही हैं या कोई और भी है?"

"अकेले ही बैठे हैं."

गजेंद्र पुलिस अधीक्षक के सामने पहुंचा और जोरदार ढंग से सलाम करते हुए बोला, "जय हिंद, साहब."

"जय हिंद." पुलिस अधीक्षक ने उस की ओर देख कर प्रत्युत्तर दिया.

"कब आए, साहब?"

"घंटा भर पहले ही लौटा हूं."

"वहां घर पर सब कुशल है न? क्या बात हुई थी, साहब?"

"हां, बस कुशल ही समझ लो. हमारे भैया अपने परिवार के साथ कार से जा रहे थे. साथ में पिताजी भी थे. दुर्घटना हो गई. सर्दी में कोहरे के कारण ड्राइवर को सामने से आता हुआ ट्रक दिखाई नहीं दिया. ड्राइवर की मृत्यु तो वहीं हो गई. हमारे पिताजी और भैया घायल हो गए. अभी हस्पताल में ही हैं."

"ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ."

"बस यों समझ लो कि जान बच गई. आप सुनाइए, सब कुशल है."

"जी हां.

"पता चला है कि आप ने एक मोटा जुआ पकड़ा है. मैं ने समाचारपत्र में पढ़ा है."

"साहब, हम पुलिस वाले तो रस्सी का सांप बनाने में माहिर होते हैं. लेकिन ये अखबार वाले तो रस्सी का अजगर बना देते हैं. आप तो जानते ही हैं कि कई बार ये लोग एकदम हवा में तीर फेंक कर बकवास छाप देते हैं और फिर अगले अंक में भूलसुधार भी कर लेते हैं." गजेंद्र ने मुसकरा कर कहा.

"तो आप का मतलब है कि..."

पुलिस अधीक्षक की बात बीच में ही काट कर गजेंद्र ने जेब से एक बंडल निकाला और मेज पर रखते हुए बोला, "साहब, तीन दिन बाद मेम साहब का जन्म दिन है. उस दिन मैं तो यहां नहीं रहूंगा... बाहर एक केस के सिलसिले में जाना है. मैं एक छोटा सा उपहार देना चाहता हूं. स्वीकार कीजिए."

पुलिस अधीक्षक ने वह बंडल उठाया और खोल कर देखा. एक सुंदर हार था, जिस में कुछ हीरे भी जड़े हुए थे. अनुमानतः कीमत 30 हजार रुपए थी. देख कर अधीक्षक के चेहरे पर मुसकान फैल गई. नेत्रों की चमक बढ़ गई. वह समझ गए कि गजेंद्र ने कितने का जुआ पकड़ा है.

अधीक्षक मुसकराते हुए बोले, "धन्यवाद, गजेंद्र सिंह. आप ठीक कहते हैं, कई बारे ये अखबारवाले रस्सी का अजगर बना देते हैं. खैर, कोई बात नहीं. हमें अपना काम करना है, उन्हें अपना. आप चिंता न करें."

"आप का हाथ सिर पर हो तो कैसी चिंता, साहब? बस आप की छत्रछाया चाहिए."

"वह तो पिछले चार साल से आप के साथ है. कुछ लेंगे, चाय काफी?" अधीक्षक ने कहा.

"धन्यवाद साहब. अब चलता हूं." कहता हुआ गजेंद्र प्रसन्न हृदय से बाहर निकला और पान मुंह में दबा कर मोटर साइकिल स्टार्ट कर थाने की ओर चल दिया. ●
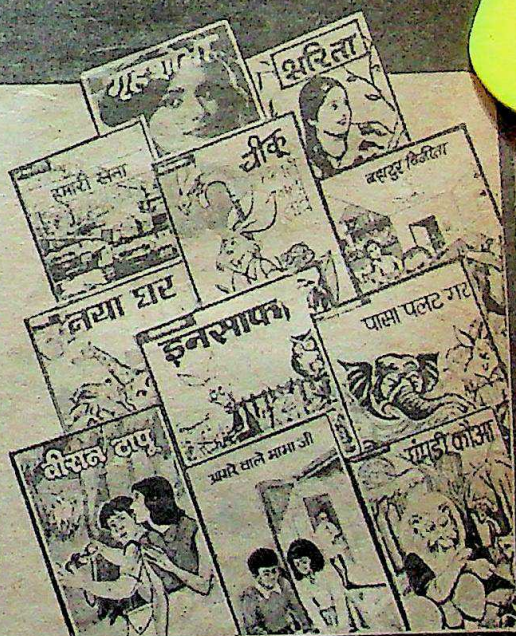
स्टेनोग्राफी सीखें अपना कैरियर बनाएं

लेख • डालचंद गोला

यदि हम अपने देश के शिक्षित बेरोजगारों पर एक दृष्टि डालें तो पाएंगे कि इन में करीब 75% ऐसे हैं जिन्होंने बी.ए. या एम.ए. तो किया है परंतु कोई व्यावसायिक डिप्लोमा या डिगरी प्राप्त नहीं की है. एक समय था जब इन डिगरियों का बहुत महत्त्व था परंतु आज जमाना बहुत बदल गया है और इन डिगरियों की कोई पूछ नहीं रह गई है.

आज हमारे देश में ये डिगरीधारी लाखों की संख्या में बेरोजगार हैं जबकि हाईस्कूल पास व्यावसायिक डिप्लोमाधारी अन्य

आज प्रत्येक संस्था, कंपनी, कारखाने आदि के दफ्तरों में चाहे वह सरकारी हों या सहकारी, सार्वजनिक हों या निजी, आशुलिपिकों की भारी मांग है. आप भी कुछ जरूरी बातों को जान कर भरपूर वेतन के साथसाथ प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकते हैं.

नौकरियों पर लगे हुए हैं. अतः हाईस्कूल या इंटर करने के बाद विद्यार्थियों को चाहिए कि वे किसी मान्यताप्राप्त एवं प्रतिष्ठित संस्थान से किसी व्यवसाय विशेष में डिगरी या डिप्लोमा लेने का प्रयत्न करें.

परंतु समस्या यह है कि इन संस्थाओं में सभी को प्रवेश नहीं मिलता बल्कि कुछ विशेष प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिल पाता है. दाखिला प्रतियोगिता के आधार पर ही होता है जिस के लिए विशेष तैयारी करनी पड़ती है. परिणामस्वरूप ऐसे शिक्षित युवक जिन्होंने किसी कारणवश कोई डिप्लोमा/डिगरी प्राप्त नहीं की है, लिपिकीय वर्ग की नौकरी पाने के लिए संघर्ष करते हैं. इस वर्ग की नौकरियों के लिए सर्वाधिक कड़ी प्रतियोगिता होती है और कुछ ही विद्यार्थी सफल हो पाते हैं और बाकी के नौकरी के लिए संघर्ष करतेकरते निर्धारित आयु सीमा पार कर जाते हैं. इस तरह जो सपना वे विद्यार्थी जीवन में ले कर चले थे वह धूमिल हो जाता है.

अतः विद्यार्थियों को ऐसी स्थिति से बचने के लिए आशुलिपि (शार्टहैंड), जिसे स्टेनोग्राफी भी कहते हैं, सीखनी चाहिए. इस में तेजी से बोले हुए श्रुतलेख (डिक्टेशन) भाषण को संकेत लिपि में लिख लिया जाता है और बाद में टाइपराइटर पर टाइप कर लिया जाता है. इसलिए शार्टहैंड सीखने के साथसाथ टाइप का सीखना भी जरूरी है.

टाइप व शार्टहैंड सरकार द्वारा संचालित/मान्यताप्राप्त स्कूलों या संस्थाओं जैसे आई.टी.आई./पालिटेक्नीक में भी सिखाई जाती है. लगभग हर बड़े शहर में बहुत सी निजी संस्थाएं भी टाइप व शार्टहैंड सिखाने का कार्य कर रही हैं. यहां यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि सरकार द्वारा संचालित या मान्यताप्राप्त संस्थानों का डिप्लोमा या प्रमाणपत्र इस में कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता है. इस में केवल गति महत्त्व रखती है.

उदाहरण के लिए यदि आप के पास किसी संस्थान का डिप्लोमा है परंतु किसी नौकरी के लिए परीक्षा देते समय आप वांछित गति नहीं निकाल पाते हैं तो वह डिप्लोमा आप की कोई मदद नहीं करेगा परंतु यदि आप ने वांछित गति निकाली, भले ही आप के पास डिप्लोमा न हो तो भी आप की नियुक्ति पर अवश्य विचार किया जाएगा.
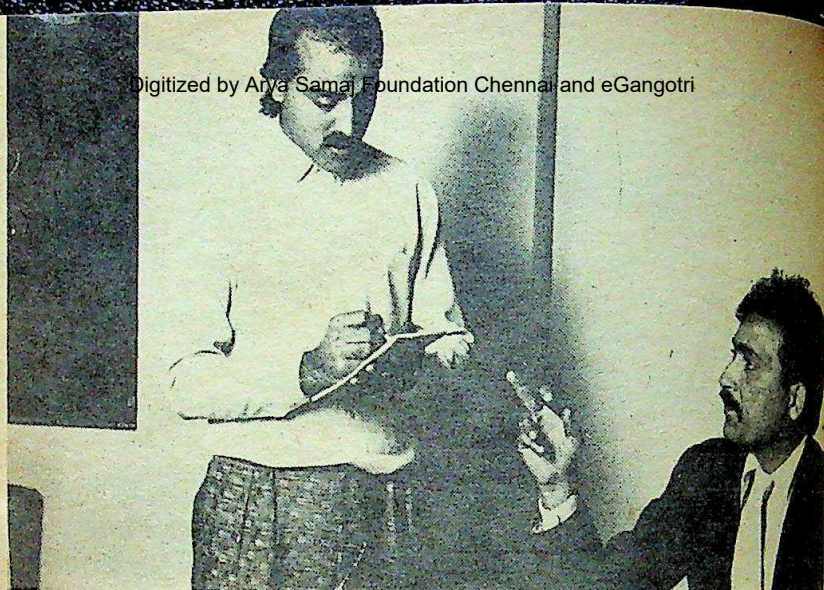
कुशल स्टेनोग्राफर में कार्य के साथसाथ व्यवहार कुशलता के भी गुण होने चाहिए.

यदि कोई विद्यार्थी प्रतिदिन एक घंटा टाइप और चार घंटे आशुलिपि का अभ्यास करे तो वह एक साल में 80 से 120 शब्द प्रति मिनट की गति से बोले हुए श्रुतलेख को लिखने की क्षमता प्राप्त कर सकता है. यही आशुलिपिक के पद के लिए वांछित होता है. यह एक ऐसा कोर्स है जिसे यदि थोड़ी लगन और मेहनत से किया जाए तो न्यूनतम समय में अर्थात एक साल में ही व्यक्ति नौकरी प्राप्त कर सकता है.

विद्यार्थी इसे अपनी स्कूली पढ़ाई के साथसाथ भी सीख सकते हैं. आप को ऐसे बहुत से स्टेनोग्राफर मिलेंगे जिन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में इसे सीखा और हाईस्कूल या इंटर करने के बाद तुरंत आशुलिपिक बन गए. लिपिकीय वर्ग के कर्मचारी भी इसे सीख लें तो वे अपने ही विभाग में उच्च वेतनमान में आशुलिपिक का पद प्राप्त कर सकते हैं.

इस में एक महत्त्वपूर्ण बात और है कि इसे सीखने में ज्यादा खर्च नहीं आता. एक साल तक शार्टहैंड तथा टाइप सीखने की फीस एवं किताबों व लेखन सामग्री पर कुल खर्च एक हजार रुपए से भी कम आता है. अतः आर्थिक रूप से पिछड़े हुए विद्यार्थी भी इसे आसानी से सीख सकते हैं.

वैसे तो आशुलिपि सभी भाषाओं के लिए बन चुकी है परंतु अपने यहां सर्वाधिक महत्त्व अंगरेजी की आशुलिपि और उस के बाद हिंदी की आशुलिपि को दिया जाता है. अंगरेजी आशुलिपिकों की समस्त भारत में तथा प्रत्येक विभाग में मांग है. हिंदी आशुलिपिकों की हिंदी भाषी राज्यों तथा भारत सरकार के विभागों में मांग होती है.

अंगरेजी आशुलिपि की प्रथम और सर्वोत्तम पुस्तक सर आइजक पिटमैन की है जो कि आशुलिपि के आविष्कारक भी थे. यह एक संपूर्ण पुस्तक है. यद्यपि और भी पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं परंतु वे सब पिटमैन प्रणाली पर ही आधारित हैं. हिंदी आशुलिपि की भी बहुत सी पुस्तकें हैं परंतु वे सब भी पिटमैन प्रणाली पर ही आधारित हैं क्योंकि स्वयं पिटमैन की प्रणाली भी हिंदी के ध्वनिग्रामों पर ही आधारित बताई जाती है. आजकल हिंदी में ऋषि प्रणाली काफी लोकप्रिय हो रही है.

अंगरेजी आशुलिपिक बनने के लिए विद्यार्थी को कम से कम अंगरेजी विषय के साथ हाईस्कूल होना चाहिए. हिंदी आशु-

लिपिक के लिए हाईस्कूल होना पर्याप्त है परंतु प्रतिष्ठित सरकारी/निजी विभाग स्नातक आशुलिपिक की मांग करते हैं. अतः यह बेहतर होगा कि आशुलिपि सीखने के साथसाथ शैक्षिक योग्यता भी बढ़ाई जाए. चूंकि सभी प्रणालियों का आधार पिटमैन प्रणाली ही है अतः अंगरेजी आशुलिपि हिंदी आशुलिपिक सीख कर तथा हिंदी आशुलिपिक अंगरेजी आशुलिपि सीख कर अपना कैरियर और उत्तम बना सकते हैं.

आज प्रत्येक संस्था, कंपनी,. कारखाने आदि के दफ्तरों में, चाहे वे सरकारी हों या सहकारी, सार्वजनिक हों या निजी, आशुलिपिकों की भारी मांग है. आप कोई भी राष्ट्रीय स्तर का दैनिक या रोजगार समाचारपत्र उठा कर देखिए, आशुलिपिकों की रिक्तियां अवश्य मिलेंगी.

तेज गति के आशुलिपिक न मिलने के कारण कुछ विभागों को मजबूरन कम गति के आशुलिपिकों की ही भरती कर के काम चलाना पड़ रहा है या उन को इस शर्त पर नियुक्त कर लिया जाता है कि जब तक ये वांछित गति प्राप्त नहीं करते तब तक उन्हें स्थायी नहीं किया जाएगा. आशुलिपिक की नौकरी के लिए कड़ी प्रतियोगिता का सामना नहीं करना पड़ता. जो प्रतियोगी होते हैं उन में से अधिकतर या तो आशुलिपि सीख रहे होते हैं या उन्हें श्रुतलेख का अभ्यास नहीं होता.

आशुलिपि सीखने के बाद उस का अभ्यास बनाए रखना बहुत जरूरी होता है. कुछ प्रतिष्ठित कंपनियां तो योग्य आशुलिपिकों को मुंहमांगा वेतन तथा सुविधाएं देने का विज्ञापन निकालती हैं. एक योग्य आशुलिपिक वह कहलाता है जो आवश्यक शैक्षिक योग्यता रखने के साथसाथ तेज गति से बोले हुए श्रुतलेख, भाषण या किसी बैठक की कार्यवाही को लिख कर सहीसही टाइप कर सके, आवश्यकता पड़ने पर स्वयं पत्रव्यवहार कर सके. महत्त्वपूर्ण सूचनाएं, गुप्त दस्तावेज, रिकार्ड आदि को संभाल कर रख सके. जो विनम्र व मृदुभाषी हो, व्यवहारकुशल हो और अपने नियोजक के प्रति वफादार हो.

यादें

छूने न दो एहसास को, एक दूरी बनाए रखो,
जीने न दो अंधकार को, एक दीप जलाए रखो.
कांटे जो छू लें फूल को तो कोई बात नहीं,
अतीत की यादों को, जिलाए हुए रखो.

—अनिल कुमार 'सुनील'

आज सामान्यतः आशुलिपिक अपनी-अपनी योग्यतानुसार बहुत सी सुविधाओं के साथसाथ 1,500 से 5,000 रुपए तक प्रतिमाह वेतन प्राप्त कर रहे हैं. इस कार्यक्षेत्र में जहां एक ओर भरपूर वेतन मिलता है वहीं प्रतिष्ठा भी मिलती है. सामान्यतः आशुलिपिक किसी विशिष्ट व्यक्ति या उच्च अधिकारी से सलंग्न होता हैं. वह उस विशिष्ट व्यक्ति या अधिकारी का दायां हाथ समझा जाता है. अतः न केवल कर्मचारी बल्कि छोटेमोटे अधिकारी भी उस का प्रभाव मानते हैं. जहां तक पदोन्नति का प्रश्न है, यह आशुलिपिक की योग्यता, विश्वसनीयता और व्यवहार-कुशलता पर निर्भर करता है.

अतः अब और समय बरबाद न करें. आज ही से टाइप व शार्टहैंड सीखना प्रारंभ कर दें. जरूरी नहीं कि आप को सरकारी नौकरी ही मिले. आजकल प्राइवेट कंपनियां भी स्टेनोग्राफरों को आकर्षक वेतन और सुविधाएं देती हैं. आज कोई भी आशुलिपिक (यदि उस की आशुलिपि और टाइप की गति सही है) आप को खाली नहीं मिलेगा.

अधिकतर देखा यह गया है कि विद्यार्थी पहले तो इसे सीखना बड़े उत्साह से शुरू करते हैं परंतु दोचार माह बाद छोड़ देते हैं. कारण बताते हैं कि यह बहुत नीरस काम है. ऐसी बातें केवल वे ही विद्यार्थी करते हैं जो अपने भविष्य के प्रति सावधान नहीं हैं या जिन में लगन, मेहनत और दृढ़ संकल्प की कमी है.

जीवन में बहुत सी ऐसी बातें होती हैं जो नीरस होती हैं लेकिन फिर भी करनी पड़ती हैं. अतः आज ही दृढ़ संकल्प कीजिए और जुट जाइए. फिर आप नौकरी के पीछे नहीं, नौकरियां आप के पीछे भागेंगी.

रूफीना रमजान रमोड़िया

"महिला होना मेरे मार्ग में बाधक नहीं है क्योंकि मेरे मातापिता दर्शक ही नहीं पथ प्रदर्शक भी हैं."
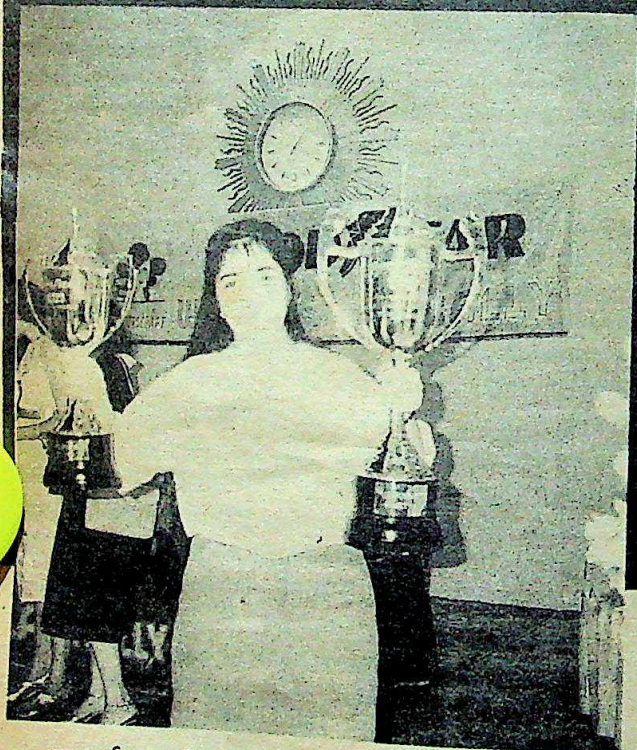
लेख • सुधा कपूर

गुड ईयर वुमेंस ट्राफी के साथ रूफीना रमजान.

'खेलों में महिलाएं भाग नहीं ले सकतीं. या फिर घर के बाहर वे पुरुषों की बराबरी नहीं कर सकतीं,' धीरेधीरे अब यह धारणा समाज से खत्म होती नजर आ रही है. हम देखते हैं, कि आज समाज में महिलाएं पुरुष की तरह हर क्षेत्र में बराबरी से हिस्सा ले रही हैं कोई न्यायमूर्ति बन कर तो कोई पुलिस अधिकारी या फिर पायलट बन कर. परंतु यहां गौरतलब बात यह है कि इन में से कोई भी महिला इस बात से इनकार नहीं कर सकती कि बिना अपने परिवार के सदस्यों के सहयोग से उस ने कोई पद सम्मान या पुरस्कार पाया हो.

हम आप की मुलाकात एक ऐसी ही 19 वर्षीया रूफीना रमजान रमोड़िया से करवाते हैं, जिस ने कार रैली में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया है.

रूफीना का कहना है कि "माना कि मेरे मातापिता एक खानदानी व्यापारी हैं, परंतु वे काफी महत्वाकांक्षी स्वभाव के हैं और घर की

बंबई की 19 वर्षीया रूफीना रमजान रमोड़िया न केवल कुशल कार चालक है बल्कि कार दौड़ जैसे जोखिम भरे खेल की एक सफल खिलाड़ी भी है. हिमालय कार रैली में भाग लेने के बारे में वह क्या सोचती है.

तरफ से मुझे आजादी मिलने का एक कारण यह भी है कि मेरा एक बड़ा भाई गुजर चुका है और अब मैं ही अपने घर की बड़ी संतान हूं, इसलिए मेरे घर वाले मुझ से 'लड़के' जैसा व्यवहार ही करते हैं और मुझे अपने मन मुताबिक हर क्षेत्र में हिस्सा लेने का मौका प्राप्त होता है."

रूफीना गंभीरता से आगे कहती है, "चाहे मैं कितनी ही कार रैलियों में हारी, परंतु आज उसी हार के कारण मुझे थोड़ीबहुत सफलता मिली है और उसी हार के कारण कई बार हारी हुई चीज को हासिल करने की आत्मशक्ति मुझे मिली है. वर्ष 1989 की 'गुड ईयर वुमेंस रैली' में मुझे द्वितीय पुरस्कार मिला है."

रूफीना रमजान रमोड़िया से लिए गए साक्षात्कार में उस ने बताया कि "मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकती कि मातापिता के प्रोत्साहन की वजह से ही मेरा हौसला बढ़ा."

रूफीना बंबई के जयहिंद कालिज में बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा है. उस का कहना है, "आज मुझे 33 प्रतिस्पर्धियों में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है तो अवश्य ही हिमालयन रैली में 333 प्रतिस्पर्धियों में भी एक प्रतिस्पर्धी के रूप में मेरा नाम लिखा जा सकता है. 1989 की उक्त कार रैली में कुल 33 महिलाओं ने भाग लिया था. रैली का उदघाटन बंबई के जुहू क्षेत्र में किया गया था, जिस की मंजिल अलीबाग रखी गई थी. परंतु खास बात यह है कि रैली को दो हिस्सों में बांटा गया था. यानी कि जुहू से खापोली और फिर अलीबाग और अंत में जुहू वापस आना था. मुझे दुख है कि मैं खापोली तक ही हिस्सा ले सकी क्योंकि मेरे परिवार में किसी खास रिश्तेदार की शादी भी उसी दिन थी और उस जिम्मेदारी से चाह कर भी मैं मुंह नहीं मोड़ना चाहती थी."

अपनी विजय का श्रेय रूफीना अपनी सहयोगी कार चालक तथा मार्गदर्शक को देती है. उस का कहना है कि "इन सब रुचियों और गतिविधियों से उसे अपने शैक्षिक जीवन में किसी भी तरह की परेशानी नहीं झेलनी पड़ी."

रूफीना को कार चलाने के अलावा सिक्के इकट्ठे करना, संगीत सुनना तथा डाक टिकट जमा करने में भी रुचि है. कहने का मतलब वह किसी न किसी तरह से हर क्षण व्यस्त रहना चाहती है.

"कार रैलियों में एक प्रतिस्पर्धी को किसकिस दौर से गुजरना पड़ता है," इस की जानकारी देते हुए रूफीना ने बताया कि "सर्वप्रथम उम्मीदवार को एक विशेष प्रकार का लाइसेंस जारी करवाना पड़ता है. इस के अलावा शारीरिक और मानसिक तौर पर स्वस्थ होने का प्रमाणपत्र भी जारी करवाना पड़ता है."

उक्त शर्तों के अनुसार, रूफीना ने अपनी गाड़ी का रंग हरा चुना जबकि वह उस की निजी कार थी और जिस का नंबर एम.एम.सी.सी. 9765 था. रूफीना ने अंत में कहा कि, "जिस दिन उसे हिमालयन कार रैली में हिस्सा लेने का अवसर प्राप्त होगा, वही उस के जीवन का सब से सुखद क्षण होगा."

विजेता घोषित होने के बाद रूफीना को कई बधाई फोन आए और उसी दिन से उस के कई अनजाने रिश्तेदार उसे जानने लगे. उस ने साबित कर दिया है कि काम है तो दुनिया में नाम है. लेकिन 'नाम' पाने के लिए महिलाओं को हर कुरबानी के लिए तैयार रहना चाहिए.

अर्जुन पुरस्कार
क्या राजनीति का शिकार हो रहा है.

लेख • शरद श्रीवास्तव

अर्जुन पुरस्कार हमारे देश का सर्वोच्च खेल सम्मान है, जिसे 1961 में विभिन्न खिलाड़ियों की उपलब्धियों को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता देने के प्रयास के रूप में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया था. लेकिन विडंबना यह है कि प्रारंभ से ही इन पुरस्कारों के साथ कोई न कोई विवाद जुड़ता चला आ रहा है. इस चिर विवादग्रस्तता के कारण आज यह प्रश्न मुखर हो उठा है कि क्या अर्जुन पुरस्कार महज राजनीति का खिलौना बन कर रह गया है और जिस मूल उद्देश्य के साथ इस की स्थापना की गई थी, वह गौण हो गया है?

हालांकि कई लोगों, खास कर खेल संघों से जुड़े लोगों को यह बात बुरी लगेगी, लेकिन यह वास्तविकता है कि स्थापना के वर्ष से ही 'आल इंडिया स्पोर्टस काउंसिल' ने जिस ढंग से इस पुरस्कार के लिए खिलाड़ियों का चयन किया, उस से इस के साथ वह गंभीरता व प्रतिष्ठा नहीं जुड़ पाई जो कि जुड़नी चाहिए थी. सब से पहली गलती तो यह हुई कि पुरस्कार स्थापित करते समय यह फैसला नहीं किया गया कि प्रति वर्ष कितने खिलाड़ियों को यह सम्मान दिया जाना है.

र्जुन पुरस्कार खेल के क्षेत्र का र्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान है. इसे ाना किसी भी खिलाड़ी के लिए ौरव की बात हो सकती है. पर ल संघों व अखिल भारतीय लकूद समिति में राजनीतिक खल अंदाजी ने इस सम्मान को खलौना बना दिया है.

फलस्वरूप आज तक किसी वर्ष 10 ी 15 तो कभी 20 खिलाड़ियों के नाम इस स्कार हेतु घोषित किए जाते हैं. उदाहरण लिए 1963 में सिर्फ सात खिलाड़ियों को पुरस्कार मिला. फिर 1965 में लेफ्टिनेंट

983 के लिए अर्जुन पुरस्कार प्राप्त लाड़ी : सम्मान के साथसाथ आर्थिक बूती की भी आवश्यकता है.

हाकी के लिए बलवीर सिंह अर्जुन पुरस्कार लेते हुए : सेना की नौकरी नहीं होती तो जीवन यापन भी कठिन होता.

एम.एस. कोहली के नेतृत्व में 20 सदस्यीय एवरेस्ट विजेता दल के सभी सदस्यों को इस पुरस्कार हेतु चुन लिए जाने के कारण इस वर्ष कुल पुरस्कार विजेताओं की संख्या 27 हो गई. उस के बाद भी यह संख्या हमेशा इसी तरह अनियमित ढंग से बढ़तीघटती रही है.

अर्जुन पुरस्कार प्रदान करने हेतु सामान्य प्रक्रिया यह बनाई गई है कि पहले विभिन्न खेलों के राष्ट्रीय संघ अपनेअपने कुछ खिलाड़ियों को पुरस्कार हेतु नामजद करते हैं और इन खिलाड़ियों की उपलब्धियों के विवरण के साथ यह सिफारिश 'आल इंडिया काउंसिल आफ स्पोर्टस' को भेजी जाती है. पुरस्कार हेतु खिलाड़ियों की नामजदगी के लिए अधिकृत कसौटी यह है कि 'उस खिलाड़ी ने पिछले तीन वर्षों में काफी अच्छा खेल दिखाया हो और गत वर्ष (पुरस्कार अवधि) के दौरान उस का प्रदर्शन अति विशिष्ट रहा हो. इस के अलावा मैदान के अंदर व बाहर उस का व्यवहार भी शिष्टता की सीमाओं में रहा हो.'

नामजद खिलाड़ियों की सूची को

अर्जुन पुरस्कार लेते हुए पी.टी. उषा : उपलब्धियों के तराजू में पुरस्कार का वजन कितना होगा.

'स्पोर्टस काउंसिल' की एक समिति जांचती है और यह फैसला करती है कि किन खिलाड़ियों की उपलब्धियां वास्तव में सम्मान योग्य हैं. पुरस्कार विजेताओं के नामों के बारे में अंतिम निर्णय यही समिति लेती है. लेकिन अंतिम घोषणा से पूर्व चुने हुए नामों की सूची की पुष्टि भारत सरकार से करवाना आवश्यक है.

इस प्रकार स्पष्ट है कि अर्जुन पुरस्कार के लिए खिलाड़ियों के नाम प्रस्तावित करने की जिम्मेदारी विभिन्न खेल संघों की है लेकिन ये खेल संघ खिलाड़ियों का नामांकन किस आधार पर करेंगे, इस संबंध में कोई स्पष्ट दिशा निर्देश न होने के कारण इस कार्य में भारी अनियमितताएं देखने को मिलती हैं.

विभिन्न राष्ट्रीय खेल संघ, जिन के बारे में अब यह तकरीबन आम राय बन चुकी है कि वे राजनीति व गुटबाजी के अखाड़े हैं, अर्जुन पुरस्कार हेतु खिलाड़ियों का नाम प्रस्तावित करने के लिए किस कसौटी का सहारा लेते हैं, यह आज तक स्पष्ट नहीं हो पाया है.

वस्तुतः अर्जुन पुरस्कार हेतु नामजदगी में भले ही संबंधित खेल अधिकारी कितना ही इनकार करें कि आपसी गुटबंदी का हाथ नहीं होता, यह बात मानी नहीं जा सकती.

उदाहरण के लिए, भारतीय तैराकी संघ को ही ले लिया जाए. 1961 में अर्जुन पुरस्कार के लिए इस संघ ने बजरंगी प्रसाद को नामजद किया, जो कि उस वक्त तक अंतर्राष्ट्रीय तैराकी जगत के लिए एक गुमनाम हस्ती थे. इस के बाद 196[illegible] एक बार पुनः तैराकी संघ की नामजदगी विवाद का विषय बनी जब मशहूर [illegible] पोलो खिलाड़ी तरुण गोस्वामी की [illegible] रेलवे के अरुण साहा का चयन किया गया [illegible] कि संघ के तत्कालीन सचिव पी.एल. [illegible] के खासमखास थे.

मिहिर बोस और आरती साहा [illegible] श्रेष्ठ तैराकों के होते हुए संघ ने वैद्यनाथ [illegible] सामान्य स्तर के खिलाड़ी को और सौ व [illegible] मीटर बैक स्ट्रोक के चैंपियन आशीष [illegible] स्थान पर अपेक्षाकृत कम योग्य व [illegible] महाराष्ट्र के अविनाश सारंग को [illegible] पुरस्कार हेतु नामजद किया.

इसी तरह 'डाइविंग' में मंजू भार्गव [illegible] नामांकित कर के पुरस्कार दिलवाए जाने [illegible] कथित वास्तविक वजह उन के पिता [illegible] राजनीतिक हथकंडे थे, जो कि उस [illegible] राजस्थान तैराकी संघ के सचिव हुआ करते थे.

इसी प्रकार के उदाहरण अन्य खेलों में भी सहज ही देखने को मिल सकते हैं. भारतीय वालीबाल संघ ने चंद्रकांत त्रिपाठी नामक [illegible] खिलाड़ी का नाम लगातार अस्वीकृत [illegible] जाने के बावजूद कई वर्षों तक प्रस्तावित किया. इस खिलाड़ी की सब से बड़ी योग्यता संघ के तत्कालीन अध्यक्ष बी.पी. त्रिपाठी का पुत्र होना था.

...र्जुन पुरस्कार की प्रतिष्ठा पर इस ...से भी काफी विपरीत प्रभाव पड़ा कि ...इस पुरस्कार की स्थापना के काफी ...बाद तक यह फैसला नहीं कर पाई थी ...से सम्मान का रूप दिया जाए अथवा ...स्कार का?

...यह देखते हुए कि हमारे देश का ...धिक वर्ग गरीबी की रेखा के नीचे ...यापन करता है और अधिकांश ...ड़ी इसी वर्ग से आते हैं, हमारे उच्च ...आकाओं को शुरू में ही यह बात समझ ...चाहिए थी कि यदि अर्जुन पुरस्कार को ...में प्रतिष्ठा का प्रतीक बनाना है तो इसे ...पुरस्कार बनाया जाना चाहिए, बजाय ...सम्मान सूचक बनाने के क्योंकि सिर्फ ...से किसी का पेट नहीं भर सकता.

...आज भी हमारे यहां मालवा पहलवान ...धावक माखन सिंह जैसे कई अंतर्राष्ट्रीय ...पदक विजेताओं को मेहनतमजदूरी से ...पेट भरना पड रहा है.

...स्कार प्राप्त खिलाड़ियों को भत्ता

लेकिन यह छोटी सी बात भारत ...ार की समझ में नहीं आई. अंततः काफी ...बाद 1979 में जनता शासन के दौरान ...मंत्री प्रताप चंद्र चंदर ने घोषणा की कि ...पुरस्कार विजेता खिलाड़ियों को ट्रॉफी ...साथ दो वर्ष तक दो सौ रुपए प्रतिमाह ...भत्ता भी दिया जाएगा. लेकिन यह राशि ...'ऊंट के मुंह में जीरे' से अधिक नहीं थी.

...इस सब के अतिरिक्त एक अन्य विवाद ...आलोचना अर्जुन पुरस्कार के संबंध में ...रही है कि इस के जरिए घोड़े, बकरी, ...और खरगोश आदि सब को एक ही ...में रख दिया जाता है.

उदाहरण के लिए, अर्जुन पुरस्कार ...ाओं में एक ओर तो प्रकाश पदुकोण, ...टी. ऊषा, माइकेल फरेरा जैसे नाम हैं तो ...और सुधीर पर्व, जयम्मा श्रीनिवासन ...राम दास जैसे नाम भी हैं, जिन के बारे में ...के इलाके या उन के अपने खेल में रुचि ...वालों के अलावा शायद ही किसी को

अर्जुन पुरस्कार पाने वाले खिलाड़ियों के नामों और उन के चयन में जो धांधली व गड़बड़ी हो रही है उसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है मगर इस के लिए जरूरी है कि स्पष्ट दिशा निर्देश बनाए जाएं तथा उन्हें सख्ती से लागू करने पर बल दिया जाए...

कुछ पता हो.

फुटबाल, हाकी और क्रिकेट जैसे विस्तृत लोकप्रियता प्राप्त खेलों के खिलाड़ियों और खोखो, कबड्डी तथा बाल बैडमिंटन जैसे देसी अथवा सीमित क्षेत्र में खेले जाने वाले खेलों के खिलाड़ियों को एक साथ अर्जुन पुरस्कार द्वारा सम्मानित किए जाने से बड़ी अजीबोगरीब स्थिति उत्पन्न हो गई है. क्या कोई भी व्यक्ति यह स्वीकार कर सकता है कि जो योगदान भारतीय खेल जगत को प्रकाश पादुकोण ने दिया है, वही योगदान कबड्डी खिलाड़ी शांताराम का भी है? यदि नहीं तो फिर इन दोनों खिलाड़ियों को एक ही स्तर का सम्मान कैसे दिया जा सकता है?

उक्त अनियमितता को काफी हद तक अर्जुन पुरस्कार की श्रेणियां बना कर दूर किया जा सकता है. उदाहरण के लिए, विश्व स्तर पर अद्वितीय प्रदर्शन करने वालों को एक श्रेणी में, महाद्वीपीय स्तर की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं (जैसे एशियाड) में अच्छा खेल दिखाने वालों को दूसरी श्रेणी में तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में बेहतरीन प्रदर्शन करने वालों को तीसरी श्रेणी में रख कर सम्मानित किया जा सकता है. इस के अलावा इस पुरस्कार के आर्थिक पहलू को भी आकर्षक बनाने की आवश्यकता है. तभी इस के साथ वह प्रतिष्ठा व गरिमा जुड़ पाएगी,

जिस की उम्मीद में इसे स्थापित किया
थी. जहां तक अर्जुन पुरस्कार
खिलाड़ियों की नामजदगी के पीछे चलने
राजनीतिक कुचक्र का प्रश्न है, इस सिल
को उस समय तक नहीं रोका जा सकता
तक कि भारत सरकार का खेल मंत्रा
अथवा 'स्पोर्टस काउंसिल' इस संबंध
सुस्पष्ट दिशा निर्देश जारी कर के वि
राष्ट्रीय खेल संघों को उन का अनु
सुनिश्चित करने की हिदायत नहीं दे
दिशा निर्देश उदाहरण के लिए इस प्रका
सकते हैं:

श्रेणी एक के लिए ओलंपिक में देश
प्रतिनिधित्व कर चुके अथवा किसी
स्तरीय खेल प्रतियोगिता में बेहतरीन प्र
करने वाले खिलाड़ियों को ही नामजद
जाए.

श्रेणी दो के लिए अंतर्राष्ट्रीय
प्रतियोगिताओं में तीन वर्ष तक देश
प्रतिनिधित्व कर चुके और लगातार अ
खेल दिखा रहे खिलाड़ियों को ही नाम
किया जाए.

श्रेणी तीन के लिए राष्ट्रीय स्तर
पिछले तीन वर्षों से किसी खेल विशे
शानदार प्रदर्शन कर रहे खिलाड़ियों को
नामजद किया जाए.

इस प्रकार के स्पष्ट दिशा निर्देश
कर के यदि उन का कड़ाई से पालन करा
जाए तो संभवतः अर्जुन पुरस्कार के
खिलाड़ियों के नाम प्रस्तावित किए जाने
विभिन्न खेल संघों द्वारा की जा रही धां
और गड़बड़ी को कुछ हद तक नियंत्रित
जा सकेगा. साथ ही तब यह प्रति
पुरस्कार राजनीति का शिकार बन जाने
आपत्तिजनक आरोपों से भी मुक्त हो

तभी यह वास्तव में उस उद्देश्य
पूर्ति में सहायक साबित हो सकेगा, जि
लिए 1961 में इस की स्थापना की गई
यानी विभिन्न खेलों के खिलाड़ियों
बेहतरीन प्रदर्शन को उच्च स्तर पर मा
देना और उन्हें अधिक उत्कृष्ट प्रदर्शन
लिए प्रोत्साहित करना.

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. : निर्देशक
स : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु.पा. : मुख्य पात्र

अग्निपथ : फिल्म की कहानी एक आदर्शवादी अध्यापक मास्टर दीनानाथ (आलोकनाथ) के बेटे विजय (अमिताभ) पर केंद्रित है.

कावा (डैनी) गांव के जमींदार के साथ मिल कर उस के मांबाप की हत्या कर देता है. विजय अकेला ही अपनी बहन दीक्षा (नीलम) को पालतापोसता है. वक्त बदलता है और विजय एक माफिया गिरोह का सरगना बन जाता है. वह एकएक कर सभी से अपना बदला लेता है. अंत में खुद भी गोलियों से छलनी हो जाता है. विजय के साथ जंग में उस का साथ देने वाला मिथुन चक्रवर्ती दीक्षा से शादी कर लेता है. **नि. :** मुकुल आनंद **मु.पा. :** अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती, माधवी, नीलम, आलोकनाथ, रोहिणी हट्टंगड़ी, शक्ति कपूर व डैनी अ

जहरीले : कहानी का आधार है बुराई पर अच्छाई की जीत. इसे दिखाने के लिए निर्देशक ने न केवल फिल्म को तेज गति दी है बल्कि फिल्म का समूचा तानाबाना पश्चिम की फिल्मों के तर्ज पर तैयार किया है. फिल्म की कहानी बासी है. एक हाथ से लाचार जीतेंद्र से इतनी मारपीट करवाई गई है तथा कुछ ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं जो हकीकत में संभव नहीं है. अभिनय की दृष्टि से केवल संजय दत्त का काम अच्छा रहा. **नि. :** ज्योति गोयल **मु.पा. :** जीतेंद्र, भानुप्रिया, संजय दत्त, चंकी पांडे, जूही चावला, विनीता, शफी इनामदार, शरत सक्सेना अ.

बाप नंबरी बेटा दस नंबरी : पूरी फिल्म कादरखान पर टिकी है. जिस ने अपने लटकोंझटकों से दर्शकों को बांधे रखा है. फिल्म में कई प्रसंग ऐसे हैं, जिस से दर्शक हंसने से अपनेआप को रोक नहीं पाते. फिल्म में हास्य लाने के लिए चालू शब्दों के साथ कार्टून का भी सहारा लिया गया है. रमण (कादरखान) एक नंबरी धोखेबाज है. वह अपने लड़के प्रसाद (शक्ति कपूर) को बचपन से ही धोखाधड़ी में माहिर बनाता है. रमण अपनी बहन गायत्री (अंजना मुमताज) को पागल करार कर पागलखाने में डाल देता है तथा उस के बेटे रवि को ट्रेन में बैठा देता है. थोड़ी नाटकीयता के बाद अनिल नामक एक नौजवान रमण से गायत्री का हक मांगता है तो वह बौखला जाता है तथा उसे जान से मारने के लिए रवि का सहारा लेता है जो बस्ती का दादा है. रवि अनिल को मारने जाता है, जहां वह अपनी मां से मिलता है. रवि व अनिल दोनों मिल कर रमण व प्रसाद को कानून के हवाले कर देते हैं तथा गुल्लू बादशाह के आतंक को समाप्त करते हैं. **नि. :** अमीज सजावल **मु.पा. :** जैकी श्राफ, फरहा, आदित्य पंचौली, साबिहा, अंजना मुमताज, असरानी, गुलशन ग्रोवर, शक्ति कपूर और कादर खान. अ.

वफा : जिस तरह की कहानी पर यह फिल्म बनाई गई है उस तरह की कहानी पर टीवी का नाटक तो चल सकता है पर लंबाई की फिल्में नहीं. यही वजह है कि फिल्म की लंबाई को पूरा करने के लिए निर्देशक को फूहड़ हास्य का सहारा लेना पड़ा.

फिल्म की कहानी में राधिका (विजेता पंडित) शादी वाले दिन ही विधवा हो जाती है. काफी समय बाद राधिका पर गर्भावस्था के लक्षण प्रकट होते हैं. वह घबरा जाती है तथा सोचती है कि घर में रह रहे युवक शेखर (फारुखशेख) ने ही बेहोशी की दवा खिला कर उस की यह दशा बनाई है. खानदान की इज्जत बचाने के लिए वह शेखर से प्यार का नाटक करती है तथा चुपचाप विवाह कर लेती है. अंत में पता चलता है कि वह कभी गर्भवती थी ही नहीं. वह शेखर से सब कुछ भूलने के लिए कहती है, पर वह उस की बात नहीं मानता और राधिका मर जाती है तथा शेखर पागल हो जाता है. **नि. :** एस.एम. अब्बास **मु.पा. :** फारुख शेख, करण शाह, विजेयता पंडित, जगदीप, मुकरी आदि. अ.

आवारगी : फिल्म की कहानी दो भागों में बटी है. पहले भाग में प्रेम का त्रिकोण है तो दूसरे भाग में गिरोह युद्ध. आजाद (अनिल कपूर) अनुपम खेर के गिरोह में काम करता है. वह मीना (मीनाक्षी शेषाद्रि) को कोठे से छुड़ाता है तथा उसे गायिका बनाने का प्रयास करता है. मीना को ले कर दूसरे गिरोह के सरगना भाऊ (परेश रावल) से आजाद की ठन जाती है. उधर मीना को गायक धीरेन (गोविंदा) से प्यार हो जाता है. अंत में मीना को बचाने के लिए आजाद भाऊ को मार देता है तथा मीना का हाथ धीरेन के हाथ में दे कर खुद भी मर जाता है. फिल्म का गीतसंगीत अच्छा है. **नि. :** महेश भट्ट, **मु.पा. :** अनिल कपूर, गोविंदा, मीनाक्षी शेषाद्रि, अनुपम खेर, परेश रावल, अवतार गिल व सतीश कौशिक. अ.

रिहाई : इस फिल्म का उद्देश्य पैसा कमाना नहीं बल्कि विवाहेत्तर संबंधों की नई व्याख्या करना है. फिल्म में यह सावित करने की कोशिश की गई है कि शारीरिक भूख नैसर्गिक है और यह पति के प्रति बेवफाई का कोई प्रमाण नहीं है. फिल्म की कहानी गुजरात के एक गांव की है, जहां अमरजी अपने पांचछः साथियों के साथ बंबई काम करने जाता है.

गांव में औरतें व बूढ़े खेतीबाड़ी करने के लिए रह जाते हैं. एक दिन गांव में मनसुख (नसीरुद्दीनशाह) नाम का एक युवक दुबई से वापस आता है, जो गांव की औरतों में चर्चित होता है. कुछ औरतों के साथ उस का शारीरिक संबंध होता है, जिस से वे गर्भवती होती हैं. अमरजी की पत्नी टकूबाई (हेमामालिनी) भी मनसुख के जाल में फंस कर गर्भवती हो जाती है. अमरजी जब बंबई से वापस आता है तो उसे पता चलता है कि उस की पत्नी के पेट में पराए पुरुष का बच्चा है. वह उसे स्वीकारने से मना करता है. अंत में गांव की महिलाएं एकजुट हो कर अपनेअपने पतियों को लताड़ती हैं. कुछ भाषणबाजी के बाद सभी पुरुष अपनीअपनी पत्नियों को माफ कर देते हैं. **नि. :** अरुणा राजे **मु.पा. :** विनोद खन्ना, हेमा मालिनी, नसीरुद्दीन शाह, नीना गुप्ता, रीमा लागू व इला अरुण. अ.

महासंग्राम : हिंसा पर आधारित फिल्म है. फिल्म की सब से बड़ी कमजोरी उस की कहानी है. एक तरफ लगता है कि फिल्म आपसी रंजिश पर आधारित है तो दूसरी ओर प्रेम कहानी भी समानांतर चलती है. गोदा (अमजद खान) व विश्वराज (किरन कुमार) तसकरों के गिरोह के मुखिया हैं. दोनों आपसी दुश्मनी को समाप्त करने के लिए अपने लड़केलड़कियों की शादी आपस में करते हैं. पर गोदा की बेटी पूजा (शाहीन) अर्जुन (गोविंदा) से प्यार करती है. पूजा का खूंखार भाई अर्जुन को जान से मारने की योजना बनाता है. उधर अर्जुन के भाई विशाल (विनोद खन्ना) को जब यह पता चलता है कि उस का भाई मारा गया तो वह बदले की आग बुझाने शहर आता है.

विशाल बदला लेने के लिए सूरज के घर में घुस जाता है जहां सूरज व उस के आदमी उस को मारमार कर अधमरा कर देते हैं. माधुरी दीक्षित विशाल को बचाती है तथा अर्जुन के जिंदा होने की खबर देती है. अर्जुन व विशाल मिल कर बदला लेते हैं. जिस में सभी खलनायक मारे जाते हैं. **नि. :** मुकुल एस. आनंद **मु.पा. :** विनोद खन्ना, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, शाहीन, आदित्य पंचोली, सोनू वालिया, सुमित सहगल, अमजद खान व किरण कुमार. अ.

खतरनाक : इस फिल्म का निर्माता स्वयं मारधाड़ निर्देशक है, इसी लिए अपनी इस फिल्म में उस ने ज्यादा से ज्यादा मारधाड़ ही दिखाने की कोशिश की है. मारधाड़ के अलावा फिल्म में जो कुछ है, सब लचर है. फिल्म की कहानी एक आवारा लड़के सूरज (संजय दत्त) की कहानी है जो संगीता (फरहा) के लिए खूंखार अपराधियों से टकराता है तथा उन्हें समाप्त कर संगीता का हाथ थाम लेता है. फिल्म का निर्देशन बेकार है व संवादों में भी कोई दम नहीं है. **नि. :** भारत रंगाचारी **मु.पा. :** संजय दत्त, फरहा, अनिता राज, किरन कुमार, अनुपम खेर तथा गोविंदा (मेहमान कलाकार). अ.

तकदीर का तमाशा : सत्यदेव (जीतेंद्र) एक ईमानदार व्यक्ति है. एक तसकर शेषनाग (सदाशिव अमरापुरकर) के जुल्मों से तंग आ कर वह भी तसकर बन जाता है. सत्यदेव की पत्नी अपने दो बच्चों को ले कर घर छोड़ कर चली जाती है. दोनों बच्चों के बड़े होने के बाद उन में से एक पुलिस निरीक्षक सत्यप्रकाश बनता है तथा दूसरा गरीबों का मसीहा. देव तथा शेषनाग में टक्कर होती है. देवा तथा सत्य प्रकाश में टक्कर होती है. टक्कर में ही फिल्म समाप्त हो जाती है. अंत में परिवार के सभी सदस्य मिल जाते हैं. **नि. :** आनंद **मु.पा. :** जीतेंद्र, गोविंदा, आदित्य पंचोली, किमी काटकर, मौसमी चटर्जी, सदाशिव अमरापुरकर, सतीश कौशिक, गुलशन ग्रोवर, मंदाकिनी (मेहमान कलाकार). अ.

आग का गोला : फिल्म में सिवा नाटकीयता के और कुछ भी नहीं है. नाटकीयता भी कुछ ऐसी जो अविश्वसनीय लगे. राजा (प्रेम चोपड़ा) शंकर (सनी) को चोरी करने में माहिर बना कर अपने हाथ की कठपुतली बना लेता है पर अंत में शंकर न केवल खुद मर जाता है बल्कि राजा भी मारा जाता है. शंकर का बेटा बड़ा हो कर एक ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर बनता है. सनी देओल दोहरी भूमिका में केवल दर्शकों को उबाता है. बारबार घटनाएं बदल कर निर्देशक ने अपनी अदूरदर्शिता का ही परिचय दिया है. अर्चना पूरनसिंह की उत्तेजक अदाएं भी टिकट खिड़की पर भीड़ नहीं जुटा सकीं. **नि. :** डेविड धवन, **मु.पा. :** सनी देओल, डिंपल कपाड़िया, अर्चना पूरनसिंह, शक्ति कपूर, रजा मुराद और प्रेम चोपड़ा. अ.

मैं ने प्यार किया : किशोर अवस्था के प्रेम पर आधारित इस फिल्म की कहानी में नवीनता नहीं है. फिर भी फिल्म का निर्देशन व पटकथा इतनी मंजी हुई है कि दर्शक पूरी फिल्म में बंधा रहता है. नाचगाने से भरपूर फिल्म में पार्श्व से 'आई लव यू' की गूंज दर्शकों को मदहोश कर देने वाली है. सलमान खान व भाग्यश्री अपनीअपनी भूमिकाओं के साथ न्याय करने में सफल रहे हैं. फिल्म की लोकप्रियता एक बार यही साबित कर रही है कि दर्शकों के लिए बड़े सितारों का नाम भीड़ जुटाने के लिए पर्याप्त नहीं है. **नि. :** सूरज बड़जात्या **मु.पा. :** सलमान खान, भाग्यश्री, राजीव वर्मा, आलोक नाथ, रीमा लागू, अजीत वाछानी, मोहनीश बहल तथा हरीश पटेल म.

पाप का अंत: पुरानी कहानी पर मसालों से भरी एक फिल्म है. फिल्म की कहानी दो हिस्सों में बंटी है. पहले हिस्से में राजेश खन्ना है तो दूसरे हिस्से में गोविंदा व हेमा मालिनी हैं. पहले नायक की हत्या होती है, दूसरा नायक बदला लेता है और पाप का अंत करता है. फिल्म की रफ्तार तेज करने के लिए [illegible] डिस्कोडांस भी है. अभिनय में केवल गोविंदा ही प्रभावित कर पाता है. राजेश खन्ना का मुकाबला

नायक की भूमिका में बेकार लगता है. हेमा मालिनी अधेड़ उम्र में मारधाड़ करते हुए [illegible]. नि. : [illegible], मु.पा. : राजेश खन्ना, हेमा मालिनी, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, [illegible], अनुपम खेर, महावीर शाह, तेज सप्रू. अ.

चालबाज : वर्षों पहले हेमा मालिनी की एक फिल्म आई थी, 'सीता और गीता', जिस में दो जुड़वां बहनों की कहानी थी. चालबाज बहुत कुछ उसी फिल्म की नकल है. इस फिल्म में श्रीदेवी की दोहरी भूमिका है. दोनों भूमिकाओं को श्रीदेवी ने बखूबी जिया है. श्रीदेवी ने फिल्म में जितना बढ़िया नृत्य किया है, उतना ही सुंदर हास्य अभिनय किया है. यद्यपि फिल्म में आगे क्या होगा, जैसी कोई बात नहीं है. फिर भी दर्शक अगर सीटों पर बैठा रहता है तो इस का सारा श्रेय निर्देशक को जाता है. जिस ने पुरानी कहानी को नए मसालों से बेहतर बनाया है. नि. : पंकज पराशर, मु.पा. : श्रीदेवी, सनी देओल, रजनीकांत, अनुपम खेर, रोहिणी हटंगणी, शक्ति कपूर, अन्नू कपूर. म.

मैं आजाद हूं : इस फिल्म को देखने के बाद ऐसा लगता है कि अमिताभ बच्चन अब अपने पुराने चोले को उतार रहे हैं वरना हाकियों व लाठियों की मार के बाद भी उन की आंखों में बदले के अंगारे नहीं दहकते. फिल्म की कहानी एक अखबार के दफ्तर से शुरू होती है. जहां एक लेखिका एक सनसनीखेज खबर को प्रकाशित करती है कि आजाद नाम का एक व्यक्ति शहर की सब से बड़ी इमारत से कूद कर आत्महत्या करेगा और फिल्म के अंत में ऐसा ही होता है. आजाद के रूप में अमिताभ बच्चन इमारत से कूद कर आत्महत्या कर लेता है. फिल्म के मध्य में राजनीतिक दावपेंच के बीच भाषणबाजी को केवल जनता को लुभाने के लिए ठीक उसी तरह के नाटकों के साथ पेश किया गया है, जैसा कि आज के दौर में हो रहा है.

इस फिल्म में मनोहर सिह ने एक बार फिर दामुल की तरह अपने सशक्त अभिनय का परिचय दिया है. इस फिल्म की कहानी पटकथा व संवाद जावेद अख्तर ने लिखे हैं. पटकथा काफी कसी हुई है और संवाद इतने तीखे हैं कि शायद ही किसी फिल्म में सुनने को मिलें. निर्देशक ने फिल्म में भ्रष्ट मुख्य मंत्री के रूप में एक रिश्वतखोर व्यक्ति को दिखा कर भ्रष्ट शासन पर करारी चोट की है. नि. टीनू आनंद, मु. पा. अमिताभ बच्चन, शबाना आजमी, अनुपम खेर, अजीत वछानी, सुधीर, अन्नू कपूर, मनोहर सिंह. म.

घर का चिराग : लगभग 20 वर्ष पूर्व एक फिल्म आई थी 'एक फूल दो माली', जो टिकट खिड़की पर काफी सफल रही थी. 'घर का चिराग' फिल्म पूरी तरह उस की नकल लगती है. उस फिल्म में बलराज साहनी ने अंधे पति की भूमिका व बच्चे के प्रति अपने प्रेम भाव का ऐसा सहज अभिनय किया था कि दर्शक बंध जाता था. पर इस फिल्म में राजेश खन्ना का नाटकीय अभिनय दर्शकों को प्रभावित नहीं कर सका. फिल्म की कहानी को गति देने के लिए निर्देशक ने चालू मसालों को इतना अधिक ठूंस दिया है कि फिल्म [illegible] बिकाऊ बन कर रह गई है. नि. : सिकंदर भारती मु.पा. : राजेश खन्ना, चंकी पांडे और नीलम. अ.

जख्म : बाप और बेटे के बीच बदले की कहानी पर बनाई गई फिल्म में देखने को कुछ भी नहीं है. न तो कलाकारों का अभिनय है. न कहानी, न संवाद और न ही गीतसंगीत. चंकी पांडे परिस्थितियों के कारण सड़क छाप गुंडा बन जाता है. बाप से बदला लेने के लिए उस की तलाश शुरू करता है. बाप की तलाश में वह शत्रुघ्न सिन्हा से टकराता है जो एक ट्रक ड्राइवर है. दोनों में मारपीट होती है और फिर दोनों ही दोस्त बन जाते हैं. अंत में अनुपम खेर और उस के नाजायज बेटे से नायक और उस के दोस्त का टकराव होता है जिस में खलनायक मारा जाता है. नि. : इरफान खान, मु.पा. : शत्रुघ्न सिन्हा, चंकी पांडे, नीलम, अनुपम खेर, एटली ब्रार, विवेक वासवानी, रूबीना व माधवी अ.

लड़ाई : नाम के अनुरूप फिल्म में लड़ाई खूब है. 'जाल' की नकल पर बनी फिल्म में कुछ भी नयापन नहीं है. खलनायक एक व्यक्ति का खून करता है. झूठी गवाही व सरकारी वकील के प्रयास से अपराधी खुद बच जाता है तथा खून का इलजाम एक निर्दोष व्यक्ति पर लगता है. आजीवन कारावास की सजा काट कर आया व्यक्ति सरकारी वकील (रेखा) के सामने आत्महत्या कर लेता है. पश्चात्ताप की आग में जलती रेखा उस के दोनों लड़कों, शेरा व अमर, के सहयोग से असली अपराधी के विरुद्ध लड़ाई छेड़ देती है. असली अपराधी मारा जाता है. नि. दीपक शिवदासानी मु.पा. रेखा, मिथुन, आदित्य पंचोली, डिंपल, मंदाकिनी, अनुपम खेर, गुलशन ग्रोवर, सतीश शाह. अ.

एलाने जंग : फिल्म पूरी तरह दो पात्रों पर आधारित है. एक नायक दूसरा खलनायक. जहां तक जयाप्रदा का सवाल है तो इस मारधाड़ की फिल्म में उस के लिए रोमांस के अलावा बचता ही क्या है. फिल्म की कहानी 'कर्मा' से बहुत कुछ मिलतीजुलती है. फिल्म में हिंसा के दृश्य भरपूर हैं, जो सड़कछाप दर्शकों को आकर्षित करने के लिए भरे गए हैं. निर्मातानिर्देशक ने फिल्म शुद्ध व्यावसायिक लाभ उठाने के लिए बनाई थी, जिस में वे कामयाब रहे हैं. इस फिल्म के साथ अनिल शर्मा का नाम भी उन निर्देशकों की सूची में शामिल हो गया है जो एक्शन फिल्म बनाने में विश्वास रखते हैं. नि. : अनिल शर्मा मु.पा. : धर्मेंद्र, जयाप्रदा, सदाशिव अमरापुरकर, दारा सिंह, सुषमा सेठ और पुनीत इस्सर. स.

कसम वरदी की : विषय अच्छा है पर फारमूले के चक्कर में एक अच्छा विषय भी नाटकीय व घटिया हो गया है. विजय एक ईमानदार पुलिस अफसर है. तसकरों के गिरोह के कुछ लोग राजनीतिक प्रभाव का लाभ उठा कर एक षडयंत्र के तहत उसे जेल भिजवा देते हैं. विजय का छोटा भाई पुलिस की वरदी पहन कर अपने भाई को निर्दोष साबित करता है. अपराधी नायक के भाई की हत्या कर देते हैं. नायक बाद में सभी अपराधियों को एकएक कर खत्म कर देता है. नि. शिबु मित्रा मु. पा. जितेंद्र, भानुप्रिया, चंकी पांडे, फरहा, अनुपम खेर, किरण कुमार, राजकिरण, तेज सप्रू, विक्रम गोखले अ.●

मैं मनोरंजन के लिए...

(पृष्ठ 121 का शेष)

अनिल शर्मा की एक अन्य सफल फिल्म 'ऐलाने जंग' का एक दृश्य : धर्मेंद्र से मोह का कारण?

क्या वजह है, आप की फिल्म का संगीत हिट नहीं हो पाता?

अब तक जितनी भी फिल्में मैं ने बनाई हैं उन के संगीत पर मैं ने कभी विशेष ध्यान नहीं दिया है. संगीतकार ने 10-15 धुनें बनाईं और सुना दीं, उन में से जो धुन पसंद आई, उस पर गाना तैयार करा लिया. लेकिन अब जब दर्शक खास कर संगीत को महत्त्व देने लगे हैं. मैं इस बारे में सजग हो गया हूं. अपनी अगली फिल्म 'तहलका' के लिए मैं संगीतकार अन्नू मलिक के साथ कईकई दिनों तक गानों पर विचारविमर्श करता रहता हूं और मुझे पूरा यकीन है कि फिल्म 'तहलका' का संगीत अवश्य तहलका मचा देगा.

आप की यह फिल्म 'तहलका' किस विषय पर आधारित है?

'तहलका' सेना पर आधारित है. इस फिल्म का नायक धर्मेंद्र सेना का एक भगोड़ा सिपाही है, जिस के चारों ओर लड़कियां घूमती रहती हैं. इस फिल्म में मैं धर्मेंद्र को एक नए अंदाज में पेश कर रहा हूं. उस की भूमिका एक हंसोड़ कलाकार की है. जो चार्ली चैपलिन स्टाइल में दर्शकों का मनोरंजन करता है.

'तहलका' में आप ने और किनकिन कलाकारों का चुनाव किया है?

इस फिल्म में धर्मेंद्र के साथ संजय दत्त, नसीरुद्दीन शाह तथा जावेद जाफरी जैसे कलाकार हैं. नायिका का अभी मैं ने चुनाव नहीं किया है. दरअसल मैं इस फिल्म के लिए तीनचार नई लड़कियों का चुनाव करना चाहता हूं, जिन की तलाश अभी जारी है.

इस फिल्म की शूटिंग आप कहांकहां करेंगे?

इस फिल्म की अधिकांश शूटिंग मैं शिमला तथा सीमावर्ती इलाकों में करूंगा. कुछ दृश्य मैं ने नई दिल्ली में आयोजित सेना दिवस पर भी फिल्माए हैं, जिन्हें जरूरत पड़ने पर फिल्म में जोड़ दूंगा. मथुरा में भी मैं कुछ शूटिंग करूंगा.

आप की पिछली फिल्म 'ऐलाने जंग' नायक धर्मेंद्र था. अब प्रदर्शित होने वाली 'फरिश्ते' का नायक भी धर्मेंद्र है और आने वाली फिल्म 'तहलका' का नायक भी धर्मेंद्र है. इस की कोई खास वजह है?

धर्मेंद्र से मेरे बहुत अच्छे ताल्लुकात हैं. वह बहुत ही सहयोगी किस्म का कलाकार है. समय देने में उस ने कभी हीलहुज्जत नहीं की.

इसी लिए मैं धर्मेंद्र का चुनाव करता हूं. अपनी फिल्मों की कहानियां, जो मैं खुद लिखता हूं, ऐसी होती हैं कि उन के नायक के रूप में मुझे धर्मेंद्र ही अधिक जंचता है.

क्या आप गीत भी लिखते हैं?

नहीं, मैं गीत नहीं लिखता. हां, कभी सोचतेसोचते किसी गीत का मुखड़ा जरूर बन जाता है.

आप ने अपनी फिल्म 'तहलका' में धर्मेंद्र के लिए ऐसा ही एक मुखड़ा लिखा है, जिस की शब्दावली अंगरेजी, हिंदी तथा ...की मिश्रित है.

(हंसते हुए) हां, मैं ने धर्मेंद्र के लिए ऐसा एक मुखड़ा लिखा है 'पुट आन घुंघरू आन ...फीट एंड सी द ड्रामा कि आई एम धरम...' यह सब मैं ने धर्मेंद्र की हंसोड़ भूमिका को ध्यान में रख कर लिखा है.

'तहलका' के अलावा आप और किस फिल्म पर आजकल काम कर रहे हैं?

आजकल मैं राजन सिप्पी की फिल्म 'महाराजा' पर काम कर रहा हूं. इस फिल्म की कहानी, पटकथा, संवाद मेरे ही होंगे तथा मैं ही निर्देशित करूंगा. इस फिल्म का नायक अनिल कपूर होगा तथा साथ होंगे, ...रोशा पुरी, सदाशिव अमरापुरकर, ...न ग्रोवर आदि.

'महाराजा' फिल्म का विषय क्या है?

जिसे प्रेम मिल जाए वही 'महाराजा' यही फिल्म का विषय है. यह फिल्म सभी को अवश्य भाएगी.

आप की लगभग पूरी हुई फिल्म 'फरिश्ते' का क्या विषय है?

'फरिश्ते' बहुत ही अच्छी फिल्म है. इस का विषय हलकीफुलकी कामेडी, रोमांस तथा मनोरंजन है. मुझे पूरा यकीन है कि यह फिल्म शत प्रतिशत लोगों के लिए है और सभी को पसंद आएगी. मैं मानता हूं, मेरी अन्य फिल्में सिर्फ 60-70% दर्शकों के लिए ही होती हैं, मगर 'फरिश्ते' से मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं.

'फरिश्ते' की शूटिंग आप ने कहांकहां की?

'फरिश्ते' की अधिकांश शूटिंग कशमीर के आड़ू गांव में की गई है.

आप अधिकांश एक्शन प्रधान मार-धाड़ वाली फिल्में बनाते हैं. ऐसी फिल्में बनाते समय दुर्घटना का अंदेशा भी बना रहता है. टीपू सुलतान धारावाहिक की दुर्घटना तो जगजाहिर है. ऐसी दुर्घटनाओं से बचने के लिए आप क्या कोई एहतियात बरतते हैं. क्या अपनी यूनिट के सदस्यों का बीमा इत्यादि कराते हैं?

'टीपू सुलतान' वाली दुर्घटना के बाद सरकार ने स्टूडियो के अंदर बमबारी, आग आदि के दृश्यों को फिल्माने पर पाबंदी लगा दी है. अब हमें ऐसे दृश्यों को फिल्माने के लिए बाहर कोई जगह तलाशनी पड़ती है. वैसे मारधाड़ जैसे खतरनाक दृश्यों को करने वाले कलाकारों का मैं बीमा करवा लेता हूं.

अब चलतेचलते आप हमें यह बताइए कि आप फिल्मों में आए कैसे?

मैं मथुरा का रहने वाला हूं. मथुरा के वातावरण में कृष्ण के जीवन की झांकियां, रासलीला आदि मैं बचपन से देखता रहता था. बस, तभी से मुझ में अभिनय करने का शौक पैदा हो गया. यही शौक मुझे बंबई खींच लाया.

हां, आप की एक रुकी हुई फिल्म 'चिनगारियां' थी, उस का क्या हुआ?

उस फिल्म को भी मैं जल्दी ही प्रदर्शित करूंगा, मगर इस फिल्म का नाम मैं ने अब बदल कर, 'फैसला मैं करूंगा' रख लिया है.

इन तीन फिल्मों के बाद आप कैसी फिल्में बनाएंगे?

यह तो समय ही बता पाएगा, साहब. जैसा समय होगा वैसी फिल्में बनाऊंगा. ●
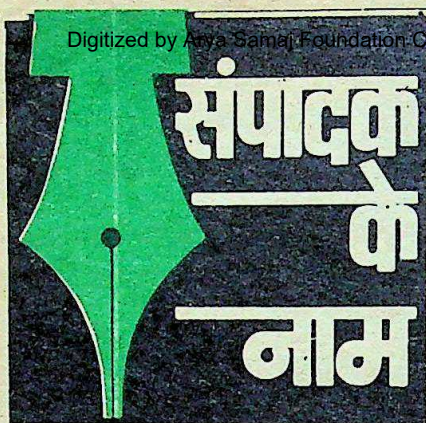
कैसी बराबरी? :

टिप्पणी 'महिला बराबरी' (मुक्त-विचार/फरवरी/प्रथम) में व्यक्त किए गए विचारों ('जिन औरतों को वास्तव में आदमी...अलग करती हैं') से मैं कतई सहमत नहीं हूं.

मैं पूछना चाहता हूं कि यदि कोई महिला उक्त कृत्य कर भी ले तो क्या वह महिला कहलाने लायक रह भी पाएगी. जब वह स्त्रीत्व ही खो देगी तो फिर बराबरी किस से और कैसी?

पुरुषों से बराबरी करने हेतु उस का स्त्री होने के साथ ही स्वतंत्र अस्तित्व भी जरूरी है. महत्त्वाकांक्षी होना एक हद तक उचित है, किंतु इस के लिए अपने नैसर्गिक स्वरूप को खोने की सलाह देना नैतिक रूप से उचित नहीं है.

—राजेंद्र मालवीय 'हरसूद'

*

सामयिक सुझाव :

टिप्पणी 'महिला बराबरी' सामयिक तथा विचारोत्तेजक लगी. वास्तविकता यही है कि औरतें प्रसाधन सामग्री, फैशनेबल कपड़ों तथा सौंदर्य उपचारों का बेहूदा प्रयोग पुरुषों को आकर्षित करने तथा स्वयं को दूसरी स्त्रीं से श्रेष्ठतर साबित करने के लिए ही कर रही हैं.

अतः आप का यह सुझाव उचित है कि जिन औरतों को वास्तव में पुरुषों की बराबरी चाहिए, उन्हें वे ग्रंथियां ही निकलवा देनी चाहिए जो उन्हें पुरुष से अलग करती हैं.

फिल्म अभिनेता प्राण के बारे में जान कर खुशी हुई कि वह दहेज विरो... तथा पूजापाठ के ढोंग को ठीक नहीं मा...

—गोपीनाथ सिंह ...

*

टिप्पणी 'महिला बराबरी' में आ... यह ठीक ही कहा है कि यदि महिलाएं ... शिक्षा को आधार मान कर ही आगे ब... उचित होगा. शिक्षा के साथ यौन अंग... चाहें तो संभव नहीं. यदि वे पुरुषों की बरा... चाहती हैं तो उन्हें शर्मलाज का त्या... करना ही होगा. दोनों चीजें तो एक ... नहीं सकतीं.

'प्रशासनिक सेवाएं' के अंतर्गत ... ठीक कहा है कि इस की आयु सीमा ... स्थान पर 40 वर्ष कर देनी चाहिए. इ... उम्मीदवार पूरे मन से तैयारी कर परी... शामिल होगा तथा उसे उम्र का आतं... नहीं रहेगा. साथ ही, अन्य क्षेत्रों के अनु... लोग भी इस क्षेत्र में आ सकेंगे.

—भुवनेश चंद्र ...

*

कड़वा सच :

टिप्पणी 'महिला बराबरी' में ... विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं. आप ने ... ठीक ही कहा है कि महिलाओं को अच्छे ... तथा सौंदर्य प्रसाधनों से पुरुषों को आक... कर अपनी योग्यताओं से आकर्षित ... चाहिए ताकि वे सही मायनों में पुरु... बराबर आ सकें.

लेख 'प्रेम और यौन संबंध' में ... जानकारी युवाओं को सही मार्गदर्शन ... कहानी 'अस्तित्व की पहचान' काफी ... लगी.

—राजवी...

*

तुच्छ भावनाएं :

'मुक्त विचार' स्तंभ के ... प्रकाशित टिप्पणी 'महिला ब... (फरवरी/प्रथम) पढ़ी. इस में आप ... अनुचित वाक्यों का प्रयोग किया है ... '...स्त्री को अपने प्रजनन अंगों (ग्रंथि... अलग कर देना चाहिए,' आदि. यहा...

…के अंगों का नहीं बल्कि एक व्यक्ति …विचारों का है. आप स्त्री को सिर्फ 'स्त्री' …में न देख कर एक 'व्यक्ति' के रूप में …नहीं देखते?

आप का यह अनुमान सरासर गलत है …पुरुषों को दिखाने हेतु शृंगार करती …अपना शृंगार तो आत्मसंतुष्टि तथा स्वयं …करती हैं. चूंकि आप पुरुषों ने स्त्री को …'भोग्या' के रूप में माना है, अतः इस …आप और कुछ सोच भी नहीं सकते.

…नारी स्वतंत्रता की समर्थक उन …का जिक्र आप ने किया है जो नारी …के नाम पर क्लबों में गप्पें मारने व …के लिए जाती हैं. पर यह …नहीं कि स्त्री को अपने अधिकारों …में सचेत करने वाली अधिकांश …ऐसी ही हों.

…पुरुषों का है जो स्त्री को महज एक …मानते हैं.

—फरीदा आरिफ

*

…के साथ घुन भी :

…टिप्पणी 'महिला बराबरी' पढ़ी. …के संबंध में सत्य बात तो यह है कि …अपना शोषण कर रही हैं. वे खुद ही …पोशाक एवं बनावटी शृंगार के …से अपनेआप में 'स्मार्ट' बन कर सेक्स …फिरती हैं. यदि ऐसे में कोई सड़क …उक्त महिला पर फब्तियां कस दे …किसे दिया जाए?

…'माडर्न' युवतियों के धोखे में …महिलाएं भी कुछ पुरुषों की …में उसी श्रेणी की हो जाती हैं, …अधिकांश महिलाएं अपने स्वार्थ की …अपना नैतिक चरित्र भी गिरा देती हैं.

…वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं को …जीवन उच्च विचार' की भावना से …के साथ निस्संकोच कंधे से कंधा मिला …चाहिए ताकि पुरुषों में स्त्रियों के …दुर्भावनाएं निकल जाएं और वह …के सिर्फ वासनामयी दृष्टि से न …मातापिता का भी कर्तव्य है कि …बहूबेटियों को स्वच्छंद वातावरण में रहने दें तथा मात्र घरेलू कामकाज और परदे में रहने की रूढ़िवादी शिक्षा ही न दें.

महिला मुक्ति आंदोलन को चाहिए कि वह सड़क पर शोर मचाने की बजाए शहर से ले कर गांवों तक की महिलाओं को जाग्रत करे, ताकि पुरुषों और महिलाओं में कोई भेदभाव न रह जाए. **—सुनील जैन विद्यार्थी**

*

गंभीर समस्या

लेख 'यह सरकारी दफ्तर है' (फरवरी/प्रथम) पढ़ा. सरकारी दफ्तरों में भ्रष्ट कर्मचारी देश और समाज के लिए गंभीर समस्या बना हुआ है. सरकार को चाहिए कि वह कुछ ऐसे कानून बनाए, जिस से निकम्मे और आलसीपन के बुतों को अपदस्थ कर उन की जगह कर्मठ लोगों को मौका दिया जा सके.

—राधेश्याम मित्तल

*

लेख 'यह सरकारी दफ्तर है' में जो कुछ व्यक्त किया गया है, उसे झुठलाया नहीं जा सकता. पर लेखक ने यहां केवल एक पक्ष ही रखा है. संभवतः या तो लेखक मातहतों से परेशान है अथवा उस ने किसी ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी के दफ्तर का सूक्ष्म निरीक्षण किया हुआ है. तसवीर का दूसरा पक्ष
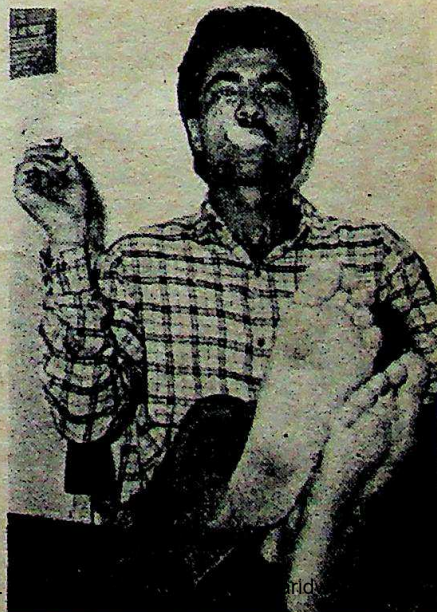
लेखक ने यदि देखा होता तो वह यह भी पूछता कि कर्मचारी 'बास' से कैसे निबटे?

बहरहाल, यदि बास 100% ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ तथा व्यक्तित्व का धनी है और किसी प्रकार के दबाव में नहीं आता तो कर्मचारियों के मनोविज्ञान को समझ कर धनात्मक दृष्टिकोण अपना कर उन से काम लिया जा सकता है. पर अधिकारी यदि स्वयं को 'विशिष्ट जंतु' समझ कर मातहतों के साथ पेश आए तो प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है.

समझानेबुझाने, डांट, चेतावनी, अनुपस्थिति आदि के बावजूद कर्मचारी नहीं सुधरता है तो अधिकारी उसे इस प्रकार सजा दे कि वह आजीवन पछताता रहे. किंतु बहुत ज्यादा बिगड़ैल कर्मचारियों (खासकर यूनियन के पदाधिकारी तथा राजनीतिक पहुंच वाले) से निबटना अधिक कठिन है.

बेईमानी और भ्रष्टाचार हमारे राष्ट्रीय चरित्र बनते जा रहे हैं. ऐसे में हजार में से दोचार ईमानदार अधिकारी या दोचार मातहत ईमानदार हों तो उन्हें परिस्थितियों से समझौता करना पड़ता है अथवा तनाव, कुंठा, घुटन झेलनी पड़ती है.

मेरा मानना है कि अधिकारी वर्ग में एक प्रतिशत से ज्यादा ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ नहीं मिलेंगे, क्योंकि 100% ईमान... कर जीवन गुजारना आज के युग में... कठिन काम है. और मुसीबतें बुला... पसंद करेगा? ध्यान रहे, नैतिकता ... नीचे चलती है. ऊपर वालों का ही अ... नीचे वाले किया करते हैं.

—डालचंद '...

*

वास्तविक चित्रण :

लेख 'यह सरकारी दफ्तर ...' वास्तविकता का सही ढंग से चित्रण कि... है. कहींकहीं तो लेख में दिए गए उदा... भी हालात बदतर हैं, जहां कर्मचारी ... की उपस्थिति एकसाथ लगाते हैं व ... के समय अपना निजी काम करते हैं.

इन कर्मचारियों से निबटने के ... प्रबंध वर्ग को चाहिए कि वह आफि... पर आने के कड़े निर्देश जारी करे तथ... आने पर आधा दिन की ही उपस्थिति द... नियमित तथा अच्छे कार्य करने ... कर्मचारियों को उचित पुरस्कार ... प्रोत्साहन दे. अनुशासन का पालन क... हेतु वरिष्ठ अधिकारियों को पर्याप्त अ... दिए जाएं तथा छुट्टियों की संख्या क... जाए.

लेख 'पंजाब में आतंकवाद के ... पिछड़ता उद्योग' काफी विचारोत्तेजक ... इस का मूल कारण धर्म है. धर्म के नाम ... मनुष्य में आपस में द्वेष उत्पन्न कराया ... है.

अगर हमारे 33 करोड़ देवता... सचमुच कोई अस्तित्व है तो पंजाब में ... व्यक्तियों की हत्याएं क्यों हो रही हैं? ... सब ईश्वर की इच्छा से हो रहा है और ... हां, तो ईश्वर का बेकुसूरों की हत्याएं क... क्या उचित है? क्या सर्वशक्तिमान ... निर्दोष तथा ईमानदार लोगों का ... वाला है?

उपरोक्त प्रश्न ईश्वर के अस्ति... सुबूत मांग रहे हैं. इन प्रश्नों का उत्तर ... हमारे धर्मगुरुओं के पास नहीं है.

—हेमंत कुमार '...

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो, पत्र इस पते पर भेजिए.

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

विश्व बाल साहित्य
मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक पुस्तकें
योगीराज
अनमोल शंख
दुश्मनों के बीच
संकट के साथी
सत्य का बल
अज्ञात द्वीप
दाढ़ी की टिकटिक
सेट नं. 23
रु. 2.00
योगी राज रु. 2.50
बलवान हारा रु. 2.50
की टिकटिक रु. 2.50
रु. 2.50
को बता देना रु. 2.50
की सैर रु. 3.00
वैज्ञानिक रु. 3.00
मित्र रु. 3.00
रु. 3.00
आदमी की कहानी रु. 3.00
अज्ञात द्वीप रु. 3.00
हमारी सेना रु. 3.00
घाट का चोर रु. 3.50
सत्य का बल रु. 3.50
राजा की अंतरिक्ष यात्रा रु. 3.50
अनमोल शंख रु. 4.00
शुक्र की खोज रु. 4.00
संकट के साथी रु. 4.00
दुश्मनों के बीच रु. 4.00
पूरा सैट केवल 50 रुपए में.
आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:
दिल्ली बुक कंपनी
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.
सैट का मूल्य 50 रुपए अग्रिम
डाक खर्च केवल दो रुपए • यही सैट वी.पी.पी. द्वारा
डाक व्यय सहित मूल्य 57 रुपए • सैट के बजाए चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 15 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें,
कृपया सैट का नंबर अवश्य दें • अग्रिम राशि चैक द्वारा नहीं, केवल

सजग, सफल, सरस जीवन की पाक्षि...

अंतर्राष्ट्रीय

कथा साहित्य

व्यवहार

खेल, फैशन

विज्ञान

फिल्म, मनोरंजन

स्वास्थ्य

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय:
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. ... दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि.
साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

अप्रैल (प्रथम) 1990
अंक : 567

विविध

कैरियर, जानकारी

कविताएं

स्तंभ

...कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस ...अपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. ...कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस ...150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. पटना : 111, आशियाना टावर, ...रोड, पटना-800001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सेंटर ...116 पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

...मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'मुक्ता' के नाम से ई-3 ...झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. ...स्वीकार नहीं किए जाते.

मूल्य : यह प्रति 6.00 रु.
वार्षिक : 120 रु.
विदेशों में–
समुद्री डाक से : 225 रु. हवाई डाक से 550 रु.

संपूर्ण भारत के 60 से
भी ज्यादा पर्यटन स्थलों की
सचित्र जानकारी घर बैठे ही
सरिता
पर्यटन विशेषांक
अप्रैल (प्रथम) व मई (प्रथम)
इन गरमियों में आप चाहे कहीं का भी कार्यक्रम बना रहे
सरिता के पर्यटन विशेषांक कार्यक्रम बनाने में
योगदान देंगे. प्रमुख स्थलों से पर्यटन स्थल की
वहां पहुंचने के साधन, प्रमुख होटलों के
तथा उन के किराए ताकि आप अपना
बना सकें. पर्यटन की ऐसी जानकारी
आप के पर्यटन को सफल व
बनाने में सहायक होगी.
CAFETERIA
पृष्ठ 210
मूल्य 7.00 रु
सरिता के पर्यटन
और अपनी यात्रा को सुखद
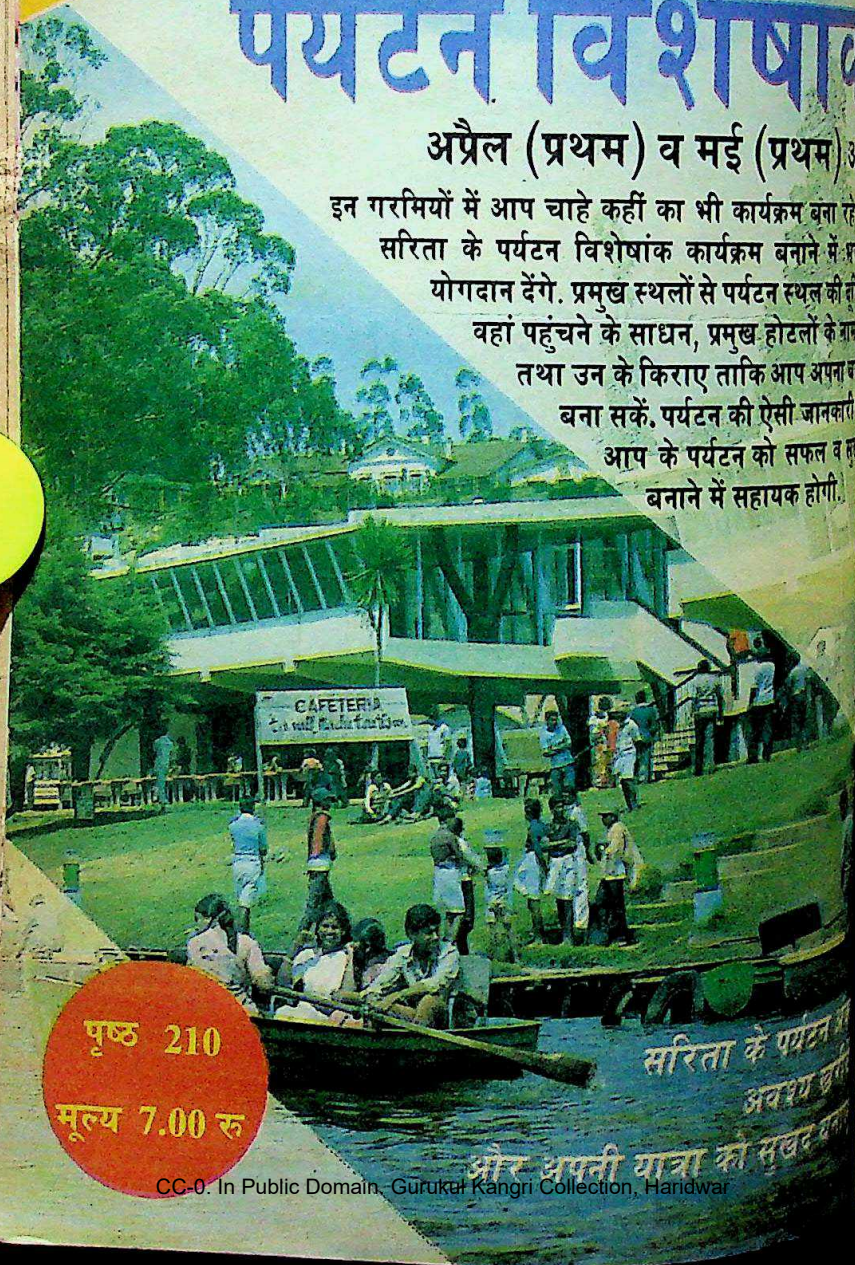
बस चाहिए केवल भरपूर केयो-कार्पिन केश
देख लीजिए, बालों का यह स्टाइल कैसे बनता है :
बालों में अच्छी तरह कंघी करके एक गुच्छ बाल लीजिए ।
समान माप के रंगीन ऊन के टुकड़ों में से एक लीजिए । बीच से बालों पर गांठ बांधिए ।
ऊन के टुकड़े से एक 'बो' बांधिए ।
पूरा सिर इसी प्रकार से रंगीन ऊन के फूलों से भर दीजिए
आपकी लाडली बिटिया के बालों का स्टाइल उसके बारे में बहुत कुछ कह देता है। लेकिन कोई भी स्टाइल तभी सुन्दर बनेगा जब सिर पर होंगे भरपूर बाल। और भरपूर बालों के लिए चाहिए केयो-कार्पिन हेयर ऑयल।
केयो-कार्पिन हेयर ऑयल से बाल होते हैं घने, काले, रेशमी। खुश्की नहीं होती, बालों के सिरे भी नहीं फटते। हर रोज केयो-कार्पिन हेयर ऑयल लगाने से बालों का झड़ना रुक जाता है।
अब अपनी लाडली बेटी के भरपूर केयो-कार्पिन केश को मनचाहे स्टाइल में सजाइए-सँवारिए। फिर देखिए उसका चंचल-चपल सुन्दर रूप!
केयो-कार्पिन
भीनी-भीनी सुगंधयुक्त
TSA/C/DMHO/389/HN

अप्रैल 1990

हाबी विशेषांक

प्रमुख आकर्षण

एरो माडलिंग

रोमांचकारी हवाई खेल 'एरो माडलिंग' के बारे में अनूठी जानकारी.

क्ले माडलिंग

मिट्टी से कलाकृतियां बनाने की अद्भुत तकनीकें.

वुड क्राफ्टिंग

लकड़ी की दस्तकारी से घर में सजावटी वस्तुएं कैसे बनाएं?

हैंडी क्राफ्ट

हस्तकलाओं द्वारा वस्तुएं बनाने की रोचक जानकारी.

फिश ऐक्वेरियम

ऐक्वेरियम में वैज्ञानिक ढंग से मछलियां पालने की जानकारी.

इस के अलावा मज़ेदार कहानियां ज्ञानवर्धक लेख, चुटीली कविताएं, मजेदार चित्रकथाएं व सभी स्थायी स्तंभ.

25% की विशेष छूट

60/- रु. के स्थान पर केवल 45/- रु. भेजें.

सुमन सौरभ

ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली- 110055

नाम..........
पता..........
....
पिन कोड..........
हस्ताक्षर..........
पोस्टल आर्डर/बैंक ड्राफ्ट नं..........

अपनी प्रति आज ही खरीदें.

लीजिए
125 नए रोमांचक ढंग
चाहे जब बदलिए मेल मिलाकर पहनिए
ALLWYN ®
TRENDY
QUARTZ
Co-ordinates
मज़बूत व हल्की
पानी से प्रतिकार करती
कीमत भी किफ़ायती
केस बदलिए स्ट्रैप बदलिए
और हर बार पहनने का नया
ढंग अपनाईए...बार बार.. कई बार,
बस आपको चाहिए एक सेट
ऑल्विन ट्रेन्डी क्वार्ट्ज़ कोऑर्डिनेट्स
जो करेगा अनेक काम
लिबास चाहे
कुछ भी हो,
मूड जैसा भी हो
आपके पास होगी वो घड़ी
जो हर ढंग में या रंग से
मेल मिलाएगी...
खूबसूरती बढ़ाएगी
ट्रेन्डी से कदम मिलाकर चलें
ऑल्विन ट्रेन्डी क्वार्ट्ज़ कोऑर्डिनेट्स के एक सेट का
दाम रु. ५१०/- स्थानीय कर अतिरिक्त
R K SWAMY/HAL/7655/HIN

मुक्त विचार

बजट का मायाजाल

जनता दल के वित्त मंत्री मधु दंडवते ने अपने पहले वार्षिक बजट में कोई भी ऐसा इशारा नहीं किया है कि दिल्ली के सिंहासन पर कोई नया व्यक्ति बैठा है. मधु दंडवते और उन के सहयोगियों के पास नए विचारों का अभाव है या वे पिछली सरकार के बिछाए गए जाल से निकलने में असमर्थ रहे हैं.

उन का बजट भाषण, उन के नए करों के प्रस्ताव, उन का व्यय के अनुमान सभी पुराने ढर्रे पर हैं और आम व्यक्ति के लिए वही घोड़ी, वही चाल का हाल है. यह संभव है कि इतने विशाल देश में परिवर्तन लाना आसान नहीं. जनता दल तो वैसे भी अपनेआप को संभालने में ढीलढाल कर रहा हैं. ऐसे में जनता दल मिल कर देश की आर्थिक व्यवस्था को नई दिशा व गति देने के बारे में सोच पाता, यह अव्यावहारिक था.

मधु दंडवते के बजट में करों में हेरफेर कम की गई है. यह इस का उज्ज्वल पक्ष है. कांग्रेसी बजटों की विशेषता यह थी कि हर वर्ष सैकड़ों छोटेबड़े परिवर्तन किए जाते थे. नतीजा यह होता था कि बजट के तुरंत बाद काफी समय तक कर अधिकारी अपने मंतव्य ही स्पष्ट करते रहते थे.

मधु दंडवते ने व्यक्तिगत आय कर की सीमा 18,000 से बढ़ा कर 22,000 कर कोई एहसान नहीं किया है. महंगाई के कारण आज के 22,000 की कीमत वही है, जो दोतीन वर्ष पहले 18,000 की थी. इसी तरह 30,000 रुपए तक की आय पर कर भार कम करने में भी कोई रियायत नहीं दी है. उलटे पेट्रोल, पत्रव्यवहार, रेफ्रीजरेटर जैसी बहुपयोगी वस्तुओं के दाम बढ़ा कर एक हाथ से दिया दिया गया, दूसरे हाथ से चौगुना निकाल लिया गया.

मधु दंडवते का दावा कि किसानों के लिए बजट में कुछ किया जाएगा, थोथा है
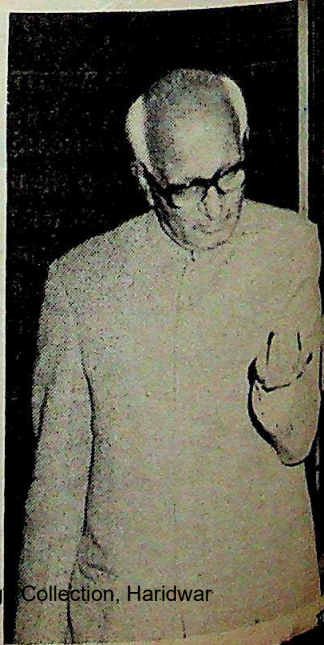
असल में अधिकतर राजस्व तो सरकारी कर्मचारी वेतन में हड़प कर जाते हैं. पिछले सालों में तो पेंशन का बिल भी भारी होने लगा है—यानी सरकारी कर्मचारी कब्र में जाने तक देश का दामाद बना रहता है. केंद्र में डेढ़ करोड़ के करीब ये मेहमान कुछ छोड़ें तो गांवों और शहरियों को मिले.

गांवों तक पैसा पहुंचाना वैसे भी कठिन है. नौकरशाही हमारी इतनी चुस्त है कि वह सारा पैसा रास्ते में हड़प कर जाएगी. इसलिए अगर मधुजी ने यह कह कर लोगों पर कर लगाएं हैं कि इस से गांव खुशहाल होंगे तो यह राजनीतिक छलावा है. पैसा न गांवों को मिलेगा, न शहरों को. यह तो सिर्फ सरकार से मिलेगा.

सरकार का 58,000 करोड़ का कर राजस्व, 7,200 करोड़ रुपए के नए नोट और कई हजार करोड़ रुपए की उधारी सब अंततः नष्ट होनी है. अगर विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार देश का भला चाहती है तो उसे मंत्रालयों के खर्च 15 से 20 प्रतिशत तक काटने थे, चाहे इस से कितने ही काम रुकते और कितने ही बेकार होते. महंगाई रोकने का एक अकेला तरीका सरकारी खर्च रोकना है, जिस बारे में इस बजट में मरघटी शांति रही है.

पटरी से उतरा रेल बजट

जनता दल सरकार के पहले आर्थिक प्रहार ने ही जनता पर गाज गिरा दी. पहला बजट रेल मंत्री का था और उन्होंने सामान और यात्रियों पर टिकट की दरें बढ़ा कर सिद्ध कर दिया कि सरकार चाहे कांग्रेस की हो या अन्य दल की, जनता की जेब खाली करने में उन का रवैया एकसा ही रहता है.

असल में अब देश का शासन नौकरशाही चलाती है. विशाल नौकरशाही के सामने मंत्री इतने अदने से हो जाते हैं कि वे चाहें तो भी कुछ नहीं कर सकते. जैसा नौकरशाही ने कहा वैसा उन्होंने कर दिया. अगर वे नानुकर करें तो नौकरशाह कंधे
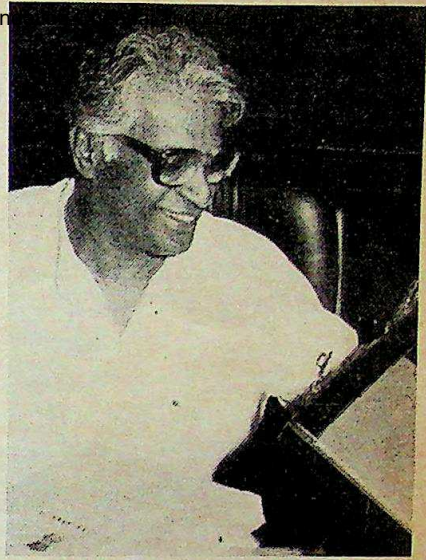
उचका कर कहेंगे, "हम से तो यही हो सकता है, आप के बस का कुछ और है तो कर लें."

मंत्री बेचारा जानता है कि वह तो मंत्रालय में चार दिन का मेहमान है. वह क्यों बेकार में उलझे, इसलिए वह दोचार बातें अपनी हित की करा कर संतुष्ट हो जाता है.

जलसों, जलूसों, हड़तालों में आग उगलने वाले रेल मंत्री जार्ज फर्नांडीस की घिग्घी भी इन आला 'जी हजूर, हजूर' कहने वाले अफसरों के सामने बंध गई होगी और उन के लिए बजट पर स्वीकृति की मोहर लगाए बिना कुछ करना संभव न रहा होगा.

रेलवे ने 1990-91 में 12,060 करोड़ रुपए की आय का अनुमान लगाया है जबकि 1989-90 में आय 10,732 करोड़ रुपए थी. इस अंतर में लगभग 900 करोड़ रुपए दाम बढ़ा कर वसूल किए जाएंगे. इस का अर्थ है कि रेलवे का कार्य शुद्ध रूप से सिर्फ 300-325 करोड़ रुपए का बढ़ेगा जो 3% से भी कम है. जिस देश में जनसंख्या की वृद्धि दर ही 2.5% हो तथा सरकारी आंकड़ों के अनुसार विकास दर 4% से 7% हो वहां रेलवे की 3% की वृद्धि नई सरकार के लिए भी शर्मनाक है.

सब से बड़ी निराशा यह जान कर हुई कि रेल मंत्री ने पिछले सालों के मुकाबले कहीं भी बचत करने का वायदा नहीं किया. अब

तक यह समझा जाता था कि कांग्रेसी शासन में मंत्री, सरकार और नौकरशाही अपने ऊपर अंधाधुंध खर्च करते हैं जिस का दुष्प्रभाव सारे ढांचे पर पड़ रहा है. और गरीब जनता की गाढ़ी कमाई बरबाद हो रही है. नए रेल मंत्री ने भी ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं प्रस्तुत किया जिस से लगे कि यह बजट एक नई सरकार का है जो व्यवस्था में आमूल परिवर्तन के लिए कटिबद्ध है.

भाड़े में वृद्धि लगभग सभी वस्तुओं के मूल्यों में 4% की वृद्धि कर देगी. कई सामानों पर तो यह वृद्धि और ज्यादा भी हो सकती है. यात्रियों के लिए तो यह बजट भारी पड़ेगा यद्यपि निचली श्रेणियों का भाड़ा नहीं बढ़ाया गया है, ऊंची श्रेणियों का भाड़ा इतना अधिक कर दिया गया है कि यह कुल मिला कर राजस्व को भी हानि पहुंचा सकता है. वैसे ही लोग आतंकवादियों और डाकुओं के डर से ऊंची श्रेणियों में चलने से कतराते हैं. इस वृद्धि से हो सकता है कि चलने वालों की संख्या इतनी कम हो जाए कि जिस अतिरिक्त आय का आकलन रेलवे ने किया वह पूरी न हो.

रेलों को आज आवश्यकता है कार्य कुशलता की. रेल मंत्री रेल कर्मचारियों की नसनस से वाकिफ हैं तो उन्हें रेलों की व्यवस्था में सुधार कर अतिरिक्त आय खोजनी चाहिए थी. वह यदि कर्मचारियों से अतिरिक्त कार्य करा कर उन्हें अतिरिक्त वेतन और सुविधाएं दें तो ठीक है. पर इस बजट में उन्होंने रेल कर्मचारियों को यात्रियों और देश की आवश्यकताओं से ऊपर समझा है और अतिरिक्त आय का काफी बड़ा हिस्सा उन्हीं को सौंप दिया. यानी पहले देश राजीव गांधी के लिए काम करता था, अब कर्मचारियों के लिए करे.

जनमतसंग्रह कहांकहां का

पाकिस्तान ने कशमीर की स्थिति का लाभ उठा कर जनमतसंग्रह की बात करनी शुरू कर दी है. 1947 में जवाहरलाल नेहरू को अपने कशमीरी खून पर इतना गर्व था कि उन्होंने कह दिया था कि वह कशमीर में जनमतसंग्रह करा देंगे और यदि बहुमत पाकिस्तान से मिलना चाहेगा तो उसे जाने देंगे. बाद में उन्हें एहसास हुआ कि यह जोखिम भरा कदम है और इस से अनेक कठिनाइयां हो सकती हैं. अतः उन्होंने फिर इस बात पर लीपापोती कर दी.

पाकिस्तानी शासक तभी से भारत की इस कमजेरी का लाभ उठा रहे हैं और हर विवाद पर जनमत संग्रह की बात करना शुरू कर देते हैं.

जनमत संग्रह की मांग मानी जा सकती है लेकिन तब जब उस सिद्धांत को विश्वव्यापी माना जाए. क्या पाकिस्तान इस सिद्धांत को सिंध, ब्लूचिस्तान और सरहदी प्रांतों के लिए मानेगा? क्या पाकिस्तान का मित्र चीन इस को तिब्बत के लिए मानेगा? क्या ईरान और इराक कुर्दों को जनमत का अधिकार देंगे? क्या अमरीका न्यूयार्क के कालों को हक देगा कि वे जनमत कर न्यूयार्क को अमरीका से अलग कर लें जहां उन का बहुमत है.

अगर जनमत संग्रह के माध्यम से ही दुनिया चलानी हो तो किसी भी देश में स्थिरता न रहेगी. हर देश की सीमाएं बनतीबिगड़ती रहेंगी. कशमीर में भी ऐसे कई कबीले होंगे जो अपने छोटे क्षेत्र में ही सार्वभौमिकता चाहते होंगे. सिर्फ मुसलमान होने पर सभी एकमत हो जाएं, यह आवश्यक नहीं. अफगानिस्तान के मुजाहिदीन जो वर्षों तक रूस के साथ कंधे से कंधा मिला कर लड़ते रहे, आज आपस में लड़ रहे हैं.

दूर क्यों, स्वयं पाकिस्तान में भारत से गए शरणार्थी (मोहाजिर) आज भी अपनी अलग जमात बनाए हुए हैं और उन का बस चले तो वे करांची और उस के आसपास के क्षेत्रों को अलग देश बनाना चाहेंगे, क्या पाकिस्तान इस के लिए राजी होगा?

किसी भी देश की भौगोलिक सीमाएं उस का इतिहास तय करती हैं, लोगों की इच्छा नहीं. कशमीर भारत का हिस्सा है, इसलिए नहीं कि कशमीरी चाहते हैं, बल्कि इसलिए

इतिहास ने उसे ऐसा बना दिया, जैसे भारत के लिए पाकिस्तान अधिकृत कशमीर को वापस पाना असंभव सा है, वैसा ही पाकिस्तान के लिए भारतीय कशमीर को. अगर भारत के कशमीरी दंगों, हड़तालों, हत्याओं से कुछ पाना चाहेंगे तो उन्हें सिवाए दूसरे लेबनान के कुछ न मिलेगा, जिस में गरीबी और बेरोजगारी इतनी अधिक हो जाएगी कि वहां से भाग कर आने वालों में हिंदू ही नहीं मुसलिम औरतें व बच्चे भी होंगे.

अभी तो कशमीर में पुराना पैसा और पुराना उत्पादन काम आ रहा है, पर जैसेजैसे पर्यटन व्यवसाय के बंद होने का असर पड़ना शुरू होगा, असली कठिनाई आएगी. पंजाब में यह इसलिए नहीं हुआ क्योंकि पंजाब अपनेआप बहुत सी वस्तुओं का उत्पादन करता है और विवादों से पहले वह भारत का सब से अधिक समृद्ध राज्य था. वहां अभी भी उत्पादकता कम नहीं हुई है. कशमीर में सिवाए छोटीमोटी खेती के कुछ नहीं होताा और उस के सहारे दंगों और हड़तालों को ज्यादा दिन नहीं चलाया जा सकता.

अत्याचार अविवाहिताओं पर

बहुओं पर अत्याचार होने पर महिला मुक्ति आंदोलन की ठेकेदार पतियों के घरों को घेर कर नारेबाजी, तानाकशी शुरू कर देती हैं. क्या वे यही काम तब करेंगी जब

अविवाहित लड़कियों को परेशान किया जाए और उन्हें अपनी मरजी से जीने की अनुमति न हो जिस से उन्हें घर से भागना पड़े या आत्महत्या करने पर उतारू होना पड़े?

महिलाओं की स्वतंत्रता की ठेकेदार महिलाएं क्या दिल्ली के आर्मी पब्लिक स्कूल के सामने धरना देंगी, जिस की तीन छात्राओं को घर छोड़ कर भागने को मजबूर होना पड़ा? दीपाली भाटिया, दीप्ति नरुला और विष्णु प्रिया नाम की ये तीनों लड़कियां कक्षा में कुछ उद्दंडता दिखा रही थीं पर जैसे महिला ठेकेदार बहुओं को दूध का धुला मानती हैं, हम इन किशोरियों को भी दूध का धुला मानेंगे.

महिला मुक्ति आंदोलन की विचार धारा के अनुसार यदि ये किशोरियां कुछ उद्दंड थीं तो यह जिम्मेदारी समाज की है जिस ने पुरुष प्रधान माहौल में लड़कियों को बराबरी का हक नहीं दिया. और इस उद्दंडता का अर्थ यह तो नहीं कि कक्षा की अध्यापिका सास की तरह उन को डांट पिलाने लगे? यह किशोरियों की स्वतंत्रता का हनन है. आज की जागृत महिला अपने प्रति उत्तरदायी है, घर, ससुराल या कक्षा के प्रति नहीं. अतः कक्षा में ठीक ढंग से व्यवहार न करने का अर्थ यह तो नहीं कि सासबहू विवाद की तरह कक्षा अध्यापक कह दे कि जाओ अपने पिताजी को बुला कर लाओ. दहेज मांगने की प्रवृत्ति असल में यहीं से शुरू होती है जब लड़कियों को उन के मातापिता के अनुशासन में रहने को बाध्य किया जाए और उन के अपने व्यक्तित्व को नकार दिया जाए.

महिला नेताओं के अनुसार अगर ये तीन किशोरियां घर से पैसा चुरा कर बंबई भाग गईं तो उन्होंने कोई गुनाह नहीं किया बल्कि पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध विद्रोह कर के महान साहस का कार्य किया है. यह सामाजिक रूढ़िवादिता है कि मातापिता और पुलिस उन्हें अंततः पकड़ कर ले आए और फिर पुरुष समाज के प्रधान पिता की गिरफ्त में डाल दिया

महिला अधिकारों के ठेकेदारनियों को चाहिए कि वे उस स्कूल और उन

मातापिताओं के घरों के सामने धरने दें जिन्होंने तीन किशोरियों की स्वतंत्रता पाने की कोशिश को नाकाम कर दिया. ये ठेकेदारनियां वैसे भी घरों को तोड़ने में अब माहिर हो चुकी हैं. तीन घर और तोड़ने में उन्हें क्या महान आत्मसंतोष नहीं मिलेगा?

सर्वदलीय आवरण छोड़ें

नई केंद्र सरकार कशमीर के मामले को हल करने में स्वयं को असहाय पा रही है, इस में अब कोई संदेह नहीं है, विश्वनाथप्रताप सिंह ने इस मामले को सर्वदलीय समिति के सुपुर्द कर के अपने अधिकार भी छोड़ दिए थे और अपनी पहल भी. उन्होंने यह भी स्वीकार कर लिया था कि उन के पास इस समस्या को हल करने का कोई विशेष उपाय नहीं है.

सर्वदलीय समिति का अर्थ सिर्फ कांग्रेस को शामिल करना है. वह कांग्रेस जो वर्षों के शासन में इस स्थिति को सुधार ही नहीं पाई उलटे जिस ने इसे इस कदर उलझा दिया कि आज यह बेकाबू है. इस कांग्रेस के प्रतिनिधि भला इस समस्या को हल करने में क्या कर सकते हैं. यह समझ से परे है.

राजीव गांधी ने विश्वनाथप्रताप सिंह की कमजोरी को अच्छी तरह भांप लिया है और श्रीनगर की यात्रा में उन का मजाक
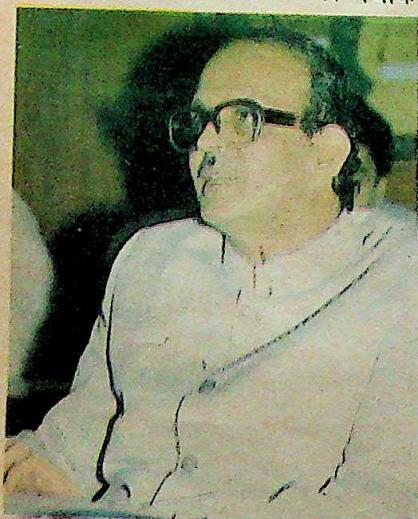
उड़ाने की कोई कोशिश नहीं छोड़ी है. नतीजा यह है कि राष्ट्रीय मोरचा सरकार सर्वदलीय समिति से कुछ न पा सकी. उलटे इस की प्रतिष्ठा और कम हुई है.

कशमीर के मामले को सुलझाना आसान नहीं, इस में संदेह नहीं. लेकिन इस तरह तो मंहगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, कामचोरी और अनुशासनहीनता जैसी समस्याएं भी नहीं सुलझाई जा सकतीं. इस को सुलझाने के लिए भी यदि विश्वनाथप्रताप सिंह सर्वसम्मति के नाम पर कांग्रेस को बारबार बुला कर बात करने लगे तो सत्ता परिवर्तन का अर्थ ही क्या रह जाएगा? अगर हर काम राजीव गांधी से पूछ कर ही करना है तो प्रधान मंत्री पद किसी और को देने का क्या अर्थ है.

समस्या काशमीर की हो या पंजाब की उन्हें हल करने का दायित्व विश्वनाथप्रताप सिंह पर ही है. वह सर्वदलीय राय की आड़ में इस जिम्मेदारी से बच कर भाग नहीं सकते. न ही वह इन प्रश्नों को मंत्रिमंडल को सुपुर्द कर के बैठ सकते हैं. हमारे देश में चाहे राष्ट्रपति पद्धति न हो, पर इस में संदेह नहीं कि हमारे प्रधान मंत्री के अधिकार अमरीकी राष्ट्रपति से कम नहीं. जब अधिकार हैं तो कर्तव्य भी हैं.

यह माना जा सकता है कि विश्वनाथप्रताप सिंह ने नयानया कार्यभाल संभाला है और वह इन समस्याओं की गहराई से पूरी तरह परिचित नहीं हैं. पर इस का हल है वह नौकरशाही जो उन्हें विरासत में मिली है. उन्हें जनता के प्रतिनिधि के रूप में उस नौकरशाही से काम लेना है और इस में वह किसी और से सहायता की अपेक्षा नहीं कर सकते.

सत्ता के प्रति मोह या आसक्ति बुरी है, पर जब एक बार सत्ता मिली हो तो उस का बोझ तो उठाना ही है. यदि साथियों का सहयोग न मिल रहा हो, विरोधी प्रबल हों, जनता गुस्से में हो तो इस का मतलब यह नहीं कि पदत्याग करने की बात शुरू कर दी जाए. समस्याएं तो प्रधान मंत्री पद से जुड़ी हैं और हर नेता को उन से जूझना ही है. तभी तो पद

लगेगा कि नेता कागजी शेर है या वास्तव में विश्वसनीय शासक.

बुद्ध ले डूबे

भगवान बुद्ध के दर्शन मुक्ति और निर्वाण देंगे, ऐसा बहुतों का अंधविश्वास है पर वह इतनी आसानी से देंगे, इस का अंदाजा नहीं था. शायद यह इसलिए हुआ कि भगवान जरा बड़े थे—300 टन के और उन्होंने सोचा कि उन के भक्तों को ज्यादा कष्ट न हो, अतः हाथ के हाथ मुक्ति दे दी. यह बात दूसरी है कि मुक्ति देने के बाद वह स्वयं गहरे पानी में विराज गए.

भगवानों का पानी में गिरना हमारे यहां एक सामान्य बात है. श्रीराम व भाई लक्ष्मण भी सरयू नदी में जा कर समाधि ले कर विदा हुए थे. हर साल लाखों काली, दुर्गा और गणेश की मूर्तियों को पानी के हवाले किया जाता है. 300 टन के बुद्ध भी अगर पानी में चले गए तो नाकभौंहे चढ़ाने की कोई बात नहीं.

उस बुद्ध की जिन्होंने मूर्तिपूजा का जीवित रहते खासा विरोध किया था, यह मूर्ति आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद में हुसैन सागर झली में एक टापू पर लगाई जा रही थी. एक पत्थर से बनी 6 फुट की यह मूर्ति बिहार में बनाई गई थी और बहुत अड़चनों के बाद हैदराबाद पहुंची थी. जब इसे एक विशेष नौका पर लादा गया तो नौका के उलटने से यह 20 फुट पानी में डूब गई और साथ ही 10 व्यक्ति जो इस नौका में थे डूब गए.

मूर्तियों को बनाना और उन की पूजा करना मानव का हमेशा से प्रिय फितूर रहा है. लोग यह सोचते रहे हैं कि मूर्ति में असल व्यक्ति की आत्मा आ जाएगी और असल व्यक्ति की भांति वह जनकल्याण करेगी. असल में इस अंधविश्वास ने न केवल काम करने वालों के अब तक अरबों, खरबों घंटे बरबाद किए हैं, मूर्ति के सहारे पैसा कमा कर मौज करने वालों की एक जमात भी पैदा कर दी है. मूर्ति से ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह जमात रही है.

किसी भी व्यक्ति का असली योगदान उस के जीवित रहते होता है. वह जो भी छाप जनता पर छोड़ जाए, वही उस की विशिष्टता है. उसे मूर्ति के रूप में पूजना उस के असल योगदान को गौण करता है.

बुद्ध की यह मूर्ति, हो सकता है, विश्व की एक ही पत्थर की विशालतम होने के कारण दर्शनीय हो पर चूंकि इस के पीछे भावना यह रहती कि इस के दर्शन हमारी जेबें भारी करेंगे, हमारे कष्ट दूर करेंगे, यह मायाजाल से अधिक न होती.

सब से बड़े खेद की बात है कि हमारे राजनीतिबाज जिन्हें देश को धर्म के जंजालों से निकालना चाहिए, खुद ही उस के दुष्चक्र में फंसे हैं. आंध्र प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री नंदमुरी तराका रामाराव तो बेहद दुखी हो गए. उन्होंने इस मूर्ति को बनवाने और लगवाने के लिए काफी पैसा दिया था—अपनी जेब का नहीं, जनता का कर से वसूला हुआ. उन्होंने ही इसे हैदराबाद में लगाने का आदेश दिया था.

शायद वे सोच रहे थे कि रामकृष्ण विश्वामित्र के साथ बुद्ध भी आ कर उनके सिंहासन को बनाए रखेंगे. जिन भगवानों की भक्ति भक्त का सिंहासन तक न बचा पाई, ऐसे भगवान के प्रति आंसू बहाने का क्या लाभ.

वर्तमान मुख्य मंत्री चिन्ना रेड्डी भी ऐसे चिंतित थे मानो देश डूब कर रसातल में चला गया. मूर्ति के साथ डूबे लोगों की मृत्यु पर खेद व्यक्त करना ठीक है पर मूर्ति को भगवान समझ कर अपशकुन की बातें कर राजनीतिबाज जनता को और अंध- विश्वासी ही बनाते हैं.

●

प्रेम में अतिभावुकता
लेख • इंदिरा चंद्रा
प्रेम एक ऐसी सरिता का नाम है, जिस की धाराओं में मन को तृप्त कर देने
मिठास भी है और भावनाओं को पुलकित कर देने की सामर्थ्य भी, संभवतः
लिए समय के हर मुकाम पर कवियों और शायरों ने इस की मीठी
परिभाषाएं व्यक्त कीं. किंतु इस वर्तमान समय में प्रेमी और प्रेमिकाओं
भावुकता के कारण प्रेम का स्वरूप कुछ गड़बड़ा सा गया है और लगता है कि
प्रेम के नाम पर कुछ और ही करते चले जा रहे हैं.

Important

प्रेम एक प्रकृति प्रदत्त संवेग है. कवियों, शायरों, मनोवैज्ञानिकों और विचारकों ने प्रेम की विभिन्न परिभाषाएं दी हैं जिन का सार यही है कि प्रेम तो व्यक्ति की नैसर्गिक धरोहर है जिस का आदानप्रदान दूसरे, विशेषकर विपरीत सेक्स के व्यक्ति से किया जाना प्राकृतिक है.

प्रेम करने या होने की वैसे तो कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती, पर किशोरावस्था में प्रेम भावना का उदय होना एक नैसर्गिक प्रक्रिया है. लड़केलड़की के परस्पर आकर्षण को किसी भी मानव सभ्यता

में न कभी रोका जा सका और न ही उसे रोका जाना चाहिए. स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए प्रेम करना तथा विपरीत सेक्स के प्रति आकर्षित होना स्वाभाविक भी है.

नारी प्रगति के इस युग में जब लड़कियां घरों के बाहर निकलने लगी हैं, पुरुष संसर्ग में आने के अनेक अवसर उन के लिए अपरिहार्य हैं तब उन का लड़कों से प्रेम करने लगना भी काफी स्वाभाविक है. यहां प्रेम के दोहरे अर्थ सामने आते हैं— एक तो वह प्रेम है जो बारबार दो व्यक्तियों के आपसी संपर्क के कारण बढ़ता है. इसे आकर्षण भी कहा जा सकता है. ऐसा प्रेम समय के साथ घटबढ़ सकता है. इसे अंगरेजी में 'इनफैचुएशन' कहा जाता है अर्थात सम्मोहन. दूसरा वह प्रेम है जो हृदय के कोने में सदा के लिए वास कर लेता है. ऐसे प्रेम की परिणति प्रायः विवाह के रूप में सामाजिक मान्यता प्राप्त कर के होती है. पर दोनों ही स्थितियों में परस्पर आकर्षण पहली स्थिति है.

प्रेम करना कभी भी और कैसे भी कोई अपराध या अनुचित कार्य नहीं है. पर हमारे समाज में प्रेम को न जाने क्यों तिरछी दृष्टि से देखा जाता है. यदि हम इसे एक स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में लें तो बहुत ही कोमल और सुंदर भाव है प्रेम. पर प्रायः होता क्या है कि कुछ तो अपरिपक्व आयु में उतावलेपन के कारण और कुछ परंपरागत मान्यताओं की वजह से प्रेमियों की भावना पर जरूरत से ज्यादा बंदिशें लगाई जाने लगती हैं. तब प्रेम का यह भाव जैसे बंद हुए बरतन में से छलकछलक पड़ता है और तभी प्रेमी के अति भावुक होने का प्रमाण मिलता है. यही अतिभावुकता कभीकभी व्यक्तित्व का विनाश भी कर सकती है. तब पैदा होते हैं, आत्मघाती या उन्मादी विकार या फिर नशीली दवाइयां खा कर वास्तविकता से मुंह फेरे रहने का घातक प्रयास.

प्रेम करना उचित है या अनुचित, यह प्रश्न बारबार हर व्यक्ति हर समाज अपने आप से पूछता आया है. पर निस्संदेह हर प्रक्रिया को सीमाबद्ध होना चाहिए ताकि सीमोल्लंघन के उपर्युक्त घातक परिणामों से बचाव हो सके.

प्रेम के सीमाबद्ध होने के औचित्य को भी नकारा नहीं जा सकता, तभी प्रेम सुरक्षित रह सकता है अन्यथा प्रेम की पतंग ने जहां ऊंची उड़ान भरी नहीं की डोर टूटने का भी उतना ही भय रहता है. प्रेम की ऊंची उड़ान

प्रेम को सुरक्षित रखने के लिए प्रेम में सीमाबद्ध होना जरूरी है.

को अति भावुकता कह सकते हैं. प्रेम के विषय में भावुकता शब्द का प्रयोग चंदन और सुगंध की तरह किया जा सकता है. प्रेमी सदा भावुक ही होते हैं जैसे नवनीत हो गया था.

उस दिन अचानक सुमन के घर पहुंची तो पता चला नवनीत आया हुआ है, सुमन का इंजीनियरिंग कालिज के तृतीय वर्ष में पढ़ने वाला बेटा. कितना हंसमुख व चंचल युवक. लंबा, सांवला किंतु चुस्त एवं प्रतिभाशाली. पर वही नवनीत आज तो पहचाना नहीं गया. छुट्टियां भी नहीं तो यह कैसे आया? सुमन से पूछा तो उदास हो गई.

तभी नवनीत कमरे में दाखिल हुआ—बढ़ी हुई दाढ़ी, धीरे धीरे चलता हुआ फीकी मुसकान से नमस्ते कह कर अपने कमरे में जा कर दरवाजा बंद कर बैठ गया.

मैं और सुमन जरा देर चुप रहे, फिर सुमन ने ही सारा किस्सा बताया. नवनीत को प्रथम वर्ष में दाखिला लेने वाली किसी लड़की से प्रेम हो गया है. सारी बातों का यही सार था तो क्या गलत हुआ जो नवनीत जैसे युवक की यह दशा हुई.

"लड़की के चक्कर में पड़ गया है," स्वयं मां बेटे के लिए कह रही थी. दुख हुआ सब देख कर. पर क्या प्रेम करना अपराध है, अनुचित है? ऐसा कैसा प्रेम जो यह दशा कर दे.

असल में नवनीत अति भावुकता का शिकार हो गया. अतिभावुकता के अतिरिक्त हैं कामनाएं और आकांक्षाएं जो किशोरावस्था की बुनियादी जरूरतें भी हैं. प्रेमी ने प्रेमिका से कुछ आकांक्षाएं रखी होंगी, शारीरिक और मानसिक स्तर पर. किंतु प्रेमिका प्रत्युत्तर में सहयोग देने का साहस नहीं कर सकी या फिर उस के भीतर अतिभावुकता का इतना गहरा एहसास उत्पन्न ही नहीं हुआ होगा, जैसा कि प्रायः भारतीय युवतियों में देखा गया है, कुछ बचपन में डाले गए संस्कारों के कारण और कुछ परिस्थितिवश भी वे प्रेम की डोर

लड़कों का शारीरिक स्तर पर आसानी से साथ नहीं दे पातीं, यानी शारीरिक समर्पण नहीं करतीं, तब प्रेमी को बेहद निराशा घेर लेती है और वह उदास व दुखी हो जाता है. यहीं अति भावुकता के चिह्न दिखने लगते हैं, जैसे भूख नहीं लगती, नींद नहीं आती, अकेलापन अच्छा लगता है, कविताशायरी में दिलचस्पी होने लगती है...

तो क्या लड़कियां भावुक या अतिभावुक नहीं होतीं. ऐसा नहीं है. लड़कियां तो प्राकृतिक रूप से ही कुछ अधिक संवेदनशील होती हैं. पर वे अपने देश की संस्कृति, पारिवारिक संस्कारों के कारण अपने मनोभाव दबा सकने में सक्षम होती हैं. फिर भी कई लड़कियां अति भावुकता का शिकार हो ही जाती हैं जैसे कि शैलजा हो गई.

एक दिन नीना बाजार में मिली. बेहद जल्दी में थी. फोन पर बात करने का वादा कर बड़े ही रहस्यमय तरीके से हाथ दबा कर चली गई. दोपहर को उस ने फोन किया भी. बहुत परेशान थी. उस की छोटी बहन शैलजा आई हुई थी. मातापिता ने माहौल बदलाव के लिए उसे नीना के पास भेजा था. कारण, वहां किसी लड़के के प्रेम में सब कुछ हराम हो गया था. वह लड़का दिन में पांचछः बार फोन करता. कईकई प्रेम पत्र भी लिखे. अब यह हालत थी कि दोनों शादी के लिए उतावले हो रहे थे जबकि अभी लड़के की आयु छोटी थी. पढ़ाई भी पूरी नहीं हो सकी थी. इधर यह शैलजा भी कम नहीं थी. छिपछिप झूठ बोल कर लड़के से मिलती रही थी. तब क्यों न लड़का दीवाना बने... नीना बताने लगी कि शैलजा ने लड़के को नीना का फोन नंबर लिख कर भेजा है. अब शैलजा पर पहरा कस दिया गया है...आदिआदि.
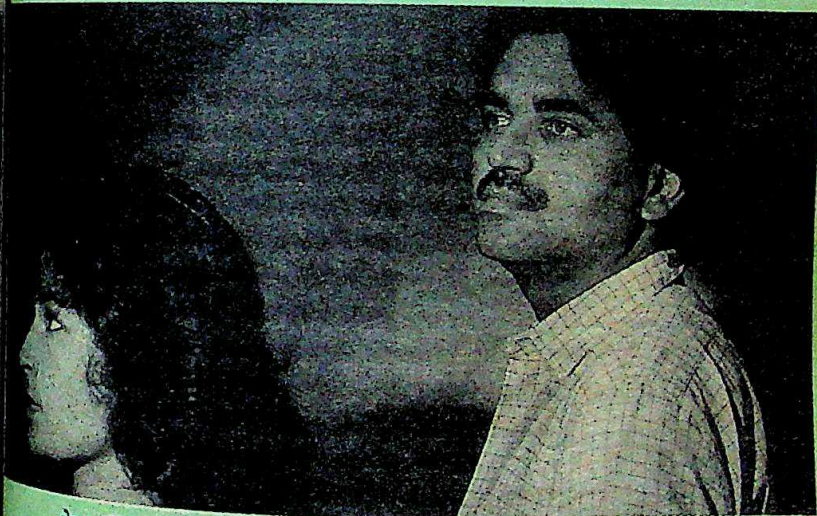
प्रेम यदि भावनात्मक स्तर पर ही किया जाए तो ही बेहतर होता है.

इस तरह के अतिभावुक प्रेम को रोकने का उपाय क्या हो? नवनीत और शैलजा दोनों ही उदाहरणों में एक बात मुख्य है—आयु की अपरिपक्वता. इस के कारण ही ये प्रेमीयुगल अतिभावुकता के शिकार हुए. नवनीत छात्रावास में रहता था पर वह लड़की उसे कालिज में मिली यानी छात्रावास में न भी रहता तो किसी लड़की को इस सीमा तक प्रेम कर सकने का साहस या क्षमता उस में कैसे आई? या फिर शैलजा की कहानी में लड़की को मातापिता की निगरानी में भी इतनी छूट कैसे मिली कि वह प्रेम की पेंगें अति भावुकता की सीमा तक बढ़ाने में सफल रही?

बालक जब किशोर अवस्था में प्रवेश करता है तब मातापिता को, विशेषकर माता

प्रेम में शारीरिक निकटता की अपेक्षा : प्रेम में गलत दृष्टिकोण.

को, उसे सब से पहले विपरीत सेक्स संबंधी मान्यताओं, विषमताओं, अच्छाइयों, बुराइयों से भलीभांति अवगत करा देना चाहिए. अपनी इच्छाओं को वश में करना सहीगलत का ज्ञान कराना मातापिता के मार्गदर्शन द्वारा ही तो संभव होता है.

सुमन ने नवनीत को पहले से ही समझाया होता तो वह इस सीमा तक दीवाना शायद न बन पाता. चलो, जो हो गया सो हो गया. पर अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा. स्थिति पर नियंत्रण किया जा सकता है, जैसे शैलजा के मातापिता ने किया कि उसे शहर के बाहर दूसरे शहर में बहन नीना के पास भेज दिया.

दूरी से प्रेम भावना में कमी या बढ़ोतरी शीघ्र ही प्रकट भी हो जाती है. यदि किसी भी दशा में यह कमी न आ पाए तो दोनों पक्षों के मातापिता या अभिभावकों को मिलजुल कर समाधान निकालना चाहिए और यदि समस्या इतनी गंभीर रूप धारण न करे तो ठीक ही है, किस्सा वहीं समाप्त हो जाएगा.

प्रायः देखा गया है कि किशोर अवस्था का प्रेम सान्निध्य, शारीरिक निकटता की अपेक्षा करता है. लड़कियों को यहीं खतरा होता है. लड़कों के लिए तो हमारे समाज में यही कहा जाता है कि 'उन के तो सौ खून माफ हैं' या फिर 'लड़के का कुछ नहीं बिगड़ता.'

उसे तो शारीरिक या यौन तृप्ति प्रेम में सबसे आवश्यक बात लगती है. अधिकतर 'प्रथम दृष्टि' वाला प्रेम यौन तृप्ति के बाद समाप्त होने लगता है. तब लड़का कन्नी काटने लगता है.

उधर लड़की को हमारे समाज में बचपन से ही समझाया जाता है कि 'प्रेम एक बार किया जाता है वह भी विवाहोपरांत पति से...' यानी शारीरिक समर्पण केवल पति को. अब यदि भावुकता में अति के कारण विवाह से पहले लड़की किसी लड़के को समर्पण कर दे और उस का परिणाम लड़की को अविवाहित मातृत्व के रूप में भोगना पड़े तो उस का जीवन बरबाद हो जाएगा क्योंकि कोई विरला ही प्रेमी पुत्रवती से विवाह करने को तैयार होगा. इस के विपरीत यदि शारीरिक समर्पण कर के मातृत्व न भी भोगे तो भी लड़कियों को जीवन पर्यंत एक अपराध बोध घेरे रहेगा. फलस्वरूप वे कभी भी स्वस्थ मानसिकता से शेष जीवन नहीं जी सकेंगी.

तब इस का उपाय केवल यही है कि अव्वल तो लड़कियों को प्रेम की सही परिभाषा बचपन में ही बतला दी जाए, भावनात्मक स्तर पर प्रेम करने की शिक्षा दी जाए, जीवन भर साथ निभाने की कसम खा... समय पर प्रेमी से विवाह कर सही व उपयुक्त

...में बांधा जाए, न कि शारीरिक स्तर के ...र्षण को उकसाया जाए.

किशोर वय में लड़के व लड़की दोनों के सम्मोहनभाव को सीमाओं में रखने के लिए मातापिता को सतर्क व सजग रहना चाहिए. इसीलिए अपने भारतीय परिवेश में लड़कियों को पुरुष संसर्ग से थोड़ी दूरी रखने की शिक्षा दी जाती है, जो उचित भी है. यह दूरी न रखी जाए तो केवल लड़की को ही नहीं बल्कि लड़के को भी मानसिक संताप होता ही है जब उस की कामनाएं तृप्त नहीं हो पातीं. जैसा कि शैलजा के उदाहरण में उस की मां ने देर में सही परंतु उसे उस के प्रेमी से दूर कर के सही कदम उठाया.

उस का परिणाम अच्छा ही निकला क्योंकि अगली बार कुछ ही महीनों बाद नीना अपनी बहन शैलजा को ले कर मेरे घर आई तो रंगत ही बदली हुई थी. दोनों बहनें चहक रही थीं. नीना ने बातोंबातों में बताया, अब शैलजा का इधर मन लग गया था. उस लड़के के भी फोन आने बंद हो गए. तभी उस की मां ने चिट्ठी में लिखा कि सुना है वह 'मजनूं' अब राह पर आ गया है. उस के पिता ने उसे भी किसी दूर के कालिज के छात्रावास में भरती करा दिया है.

यानी शैलजा का प्रेम केवल अतिभावुकता का शिकार था जो दूरी या जुदाई के कारण हवा भरे गुब्बारे की भांति पिचक गया. यह प्रेम सतही था. केवल शारीरिक आकर्षण से उपजा. जो जितनी जल्दी और तेजी से उत्पन्न हुआ उतनी ही शीघ्रता से समाप्त भी हो गया.

अतिभावुकता से मानसिक विकार उत्पन्न होते हैं. तब केवल साथी के साथ की कामना, उठतेबैठते, सोतेजागते रहती है. उन्माद ही जीवन बन जाता है. तब इस विकार को रोकना ही एकमात्र उपाय रह जाता है. यह उपाय है दूर रखना या समझानाबुझाना.

वैसे लड़कियां आजकल अपेक्षाकृत अधिक विवेकशील व जागरूक हो रही हैं. उच्च शिक्षित बन कर जीवन का कोई लक्ष्य बना रही हैं और उस लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास में उन्हें अतिभावुक होने या प्रेमोन्माद के लिए एक तो समय ही नहीं मिलता और यदि कोई इस अति का शिकार हो भी जाए तो विवेक, तर्क व समझबूझ से स्वयं पर काबू पा सकती हैं.

लड़कियों को विशेषकर अपनी कोमल भावनाओं को इतना सतही न बनने देना चाहिए. अव्वल तो सरलता से किसी से 'आंखें चार' ही न होने दें, यदि हो भी जाएं तो आंखें

प्रेम में प्रेमीप्रेमिकाओं की एक अनोखी अदा : एकांत में भावनाएं नहीं भड़केंगी तो और क्या होगा.

इतनी मजबूत रहने दें कि सरलता से झुकें नहीं, न ही उस पुरुष के सपने देखती रहे कि स्वयं का अस्तित्व ही समाप्तप्राय हो जाए.

भारतीय संस्कृति में लज्जा को स्त्री का विशेष गुण कहा गया है. वह एकदम सही है. चारित्रिक दृढ़ता लज्जा के बल पर कायम रह सकती है. हवा के झोंके की तरह आती भावुकता के कारण लड़की डगमगाए भी तो पलंग पर औंधी पड़ कर अपने आप को कोसने के बजाए अपना मानसिक संतुलन न खोए. दृढ़निश्चय, पक्का मन और अपने साथ घटी किसी भावुक घटना को जितनी जल्दी हो सके भुलाने का प्रयत्न करे.

इसी तरह लड़कों में भी यही चारित्रिक सुदृढ़ता हो कि वे परिवार, समाज के हित की ओर पहले ध्यान दें. प्रेम करना तो सभी का जन्मसिद्ध अधिकार है पर प्रेम को इतना तूल न दें कि उन के जीविकोपार्जन का मार्ग ही अवरुद्ध हो जाए. लड़के को 'कमाऊ पूत' कहते हैं. एक पूरा परिवार उसी की ओर टकटकी लगाए रहता है. तब लड़कों को तो विशेष जिम्मेदारी निभाने की सोचनी चाहिए, न कि इश्कमुहब्बत के सतही ज्वार में बह कर स्वयं को नष्ट कर दें.

प्रेम करने से इनकार नहीं. पर सही समय पर, सही पात्र से, सही तरीके से प्रेम, जिस में शारीरिक व मानसिक आकर्षण का अनुपात बराबर का हो, करना चाहिए. जैसा कि बाद में नवनीत ने किया. सुमन सुसंस्कृत पढ़ीलिखी माता है. नवनीत प्रेमपाश में फंस गया. कोई अपराध नहीं किया था बेटे ने. बस थोड़ी जल्दी कर दी थी. वह भी आयु की मांग के कारण क्षम्य थी. फिर सुमन ने क्या किया जो अब नवनीत सफल इंजीनियर व सुखी दांपत्य जीवन जी रहा है?

सुमन ने सब से पहले उस लड़की से संपर्क किया, उस से मिली. उसे समझाया. न तो प्रेम करना छोड़ने की राय दी, न डांटफटकार, बल्कि दोनों को अपनी सीमा में रहने की सलाह दी और उपयुक्त समय आने पर लड़की के मातापिता से संपर्क कर दोनों का विवाह कर दिया.

समय हर तरह का घाव भर देता... थोड़ी सी तर्कपूर्ण विचारधारा हो, समझ... का तरीका मैत्रीपूर्ण हो, स्वयं मातापि... अपनी अरथी उठाने का वास्ता न दें... किशोर प्रेमी अति भावुकता से बच... सकते हैं. यहां धोखे की बात भी आ ... है:

कभीकभी देखा गया है कि प्रेमी ... शिकवा रहता है कि उसे धोखा दिया ग... यानी साथी ने निबाहा नहीं. किसी दूसरे... हो लिया. तब तो और भी सीधी बात ... कोई चिंता ही नहीं, क्योंकि यह सोच ... चाहिए कि मेरी जरूरत उधर उतनी ... थी. कच्चा प्रेम था. जान बची.

लैलामजनू, शीरीफरहाद का युग न... है यह. आजकल जीवन इतना सक्रिय ... गया है कि केवल प्रेम करने वाले प्रा... असफलता की डगर अपनाने को तैयार ... न हों. प्रेम को जीवन का एक दौर समझ... चाहिए. एक झोंका, जो आया, थमा ... फिर या तो थमा रह गया या आगे बढ़ ग... पर स्वयं को अडिग रहने देना चाहि... दूसरों के उदाहरणों से भी शिक्षा ले... चाहिए.

कोई प्रेम की बलिवेदी चढ़ गया ... आप तो अकल से काम लें. भावुकता ... विजय पा कर इधरउधर के रचनात्म... कार्यों में मन लगाएं. विशुद्ध मित्रता के ... में विपरीत सेक्स से निबाह करें. सीमा ... स्वयं रहें व दूसरे को भी उस की सीमा ... दें.

मातापिता भी अपने किशोर ब... को अतिभावुकता से बचाएं. यदि कोई ... दौर में फंस गया हो तो उसे उबारें ... सहायक बनें न कि उन्हें मारेंपीटें, को... ताना मारते रहें. मातापिता अपने कि... वय के बच्चों पर निगरानी रखें और ... तक संभव हो भावुकता की ब... व्यावहारिक होने की शिक्षा दें तो वे ... भावुकता के शिकार होने से अवश्य ही ... जाएंगे.

नेपाल में राजशाही के दरवाजे पर लोकतंत्र की दस्तक

इस वर्ष जनवरी के महीने में नेपाली राजशाही की तमाम नाकेबंदियों के बावजूद नेपाल में प्रतिबंधित नेपाली कांग्रेस द्वारा बुलाए गए राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल होना ही इस बात का संकेत है कि नेपाल की जनता अब अपने कंधों पर राजशाही का जुआ पहनने को तैयार नहीं है.

इस सम्मेलन में 'राजशाही' की जगह पर 'लोकशाही' और पंचायती व्यवस्था के स्थान पर 'बहुदलीय शासन प्रणाली' की मांग ही ऐसी मुख्य बातें थीं जिन से नेपाली राजशाही की नींद उड़ती दिखाई दी.

इतना तो तय था कि अब नेपाली कांग्रेस और नेपाल के 13 छोटेबड़े वामपंथी संगठनों से मिल कर गठित हुआ संयुक्त वाम मोर्चा यहां 18 फरवरी से अपना लोकतंत्र बहाली आंदोलन चलाएगा तथापि राजशाही ने भी आंदोलनकारियों के पर कुतरने की तमाम व्यवस्थाएं कर रखी थीं. लेकिन यह यकीन नहीं था कि नेपाली सरकार अपनी जनता का

...दरबारी को इतना क्रूर दमन करेगी क्योंकि ...क्षा की जा रही थी जिस तरह फ्रांसीसी राज्य क्रांति ने राजारानियों के वैभवविलास को इतिहास के पन्नों तक ही सीमित कर दिया था और जिस तरह की घटनाएं गत वर्ष पूर्वी यूरोप में मोड़ ले रही थीं, उन से सबक ले कर यहां की राजशाही भी अपनी सोच को बदलेगी. लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

लोकतंत्र समर्थकों की आवाज को दबाने के लिए नेपाल की पुलिस व सेना ने काठमांडू के विभिन्न क्षेत्रों में जो दमनचक्र
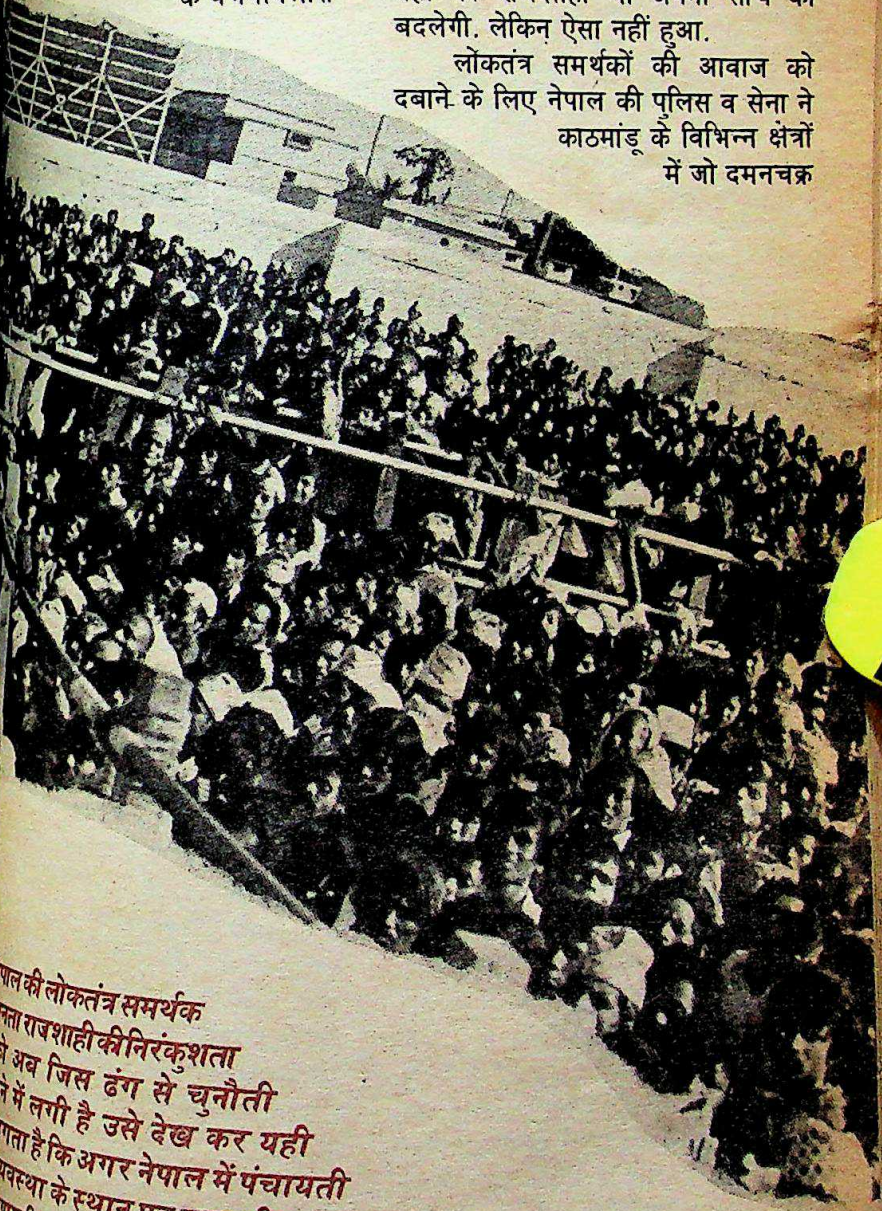
नेपाल की लोकतंत्र समर्थक जनता राजशाही की निरंकुशता को अब जिस ढंग से चुनौती देने में लगी है उसे देख कर यही लगता है कि अगर नेपाल में पंचायती व्यवस्था के स्थान पर बहुदलीय शासन प्रणाली लागू नहीं की गई तो जनता भी राजशाही के प्रतीकों को अपने क्रोध की सूली पर चढ़ाने से गुरेज नहीं करेगी...

प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के साथ नेपाल के विदेश मंत्री शैलेंद्र कुमार उपाध्याय : मुलाकात ने संबंधों की बुनियाद को कितना मजबूत किया.

आरंभ किया है उस से यहां अब तक तकरीबन तीन दरजन लोग मौत के घाट उतारे जा चुके हैं. दो सौ से ज्यादा घायल हो कर जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे हैं तथा गिरफ्तार व नजरबंद हुए लोगों की संख्या भी हजारों में बताई जाती है.

पुलिस अत्याचारों के विरुद्ध 'काला दिवस' मनाने व देशव्यापी हड़ताल आयोजित करने की जो सजाएं नेपाली नागरिकों को दी जा रही हैं, वे भी कम हृदयविदारक नहीं हैं. बावजूद इस के आंदोलनकारियों के हौसले बुलंद हैं तथा हितावदा, विराटनगर जनकपुर, झापा, पालवा, बटवाल, बीरगंज व धारन आदि छोटेबड़े नगर धीरेधीरे 'कुरुक्षेत्र' में बदलते जा रहे हैं.

लगता है कि नेपाली सरकार लोकतंत्र के समर्थन में चलाए जा रहे इस आंदोलन को मिल रहे व्यापक समर्थन से इतनी आतंकित हो गई है कि उस ने नेपाली कांग्रेस से सहानुभूति रखने वालों को भी चुनचुन कर बंदी बनाना शुरू कर दिया है. भारत से प्रकाशित कई समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं पर तो पहले से ही वहां की राजशाही ने रोक लगा रखी थी. लेकिन अब इस आंदोलन के समर्थक नेपाली अखबारों पर भी सेंसरशिप लागू कर दी गई है. नेपाली कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे गिरिजा प्रसाद कोइराला व गणेशमान सिंह जैसे नेता अब राजशाही की आंखों का कांटा बन गए हैं.

देखा जाए तो नेपाल में राजशाही की समाप्ति की मांग अभी हाल ही के अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तनों का नतीजा नहीं है बल्कि इस की जड़ें वर्षों पुरानी हैं. नेपाल की वास्तविक बागडोर भी 102 वर्षों तक उस राणा परिवार के हाथों में थी जिस के काल में नेपाल नरेश केवल शोभा की वस्तु थे. अंगरेजों ने भारत से जाते समय जब नेपाल पर से अपना जाल हटाया तो इस का लाभ उठा कर नेपाल के राणा परिवार ने तत्कालीन राजा त्रिभुवन वीर विक्रमशाह को बंदी बना लिया था और इस प्रकार सत्ता की बागडोर प्रधान मंत्री शमशेर जंग बहादुर ने अपने हाथों में ले ली थी.

1950 में राजा त्रिभुवन वीर को अपनी सुरक्षा के लिए भारत में शरण लेनी प्ड़ी. बाद में जब नेपाली कांग्रेस की सशस्त्र क्रांति ने वहां की राणाशाही को उखाड़ फेंका तो नेपाली कांग्रेस देश में संवैधानिक राजतंत्र के अंतर्गत उत्तरदायी शासन की स्थापना की

...भर थी. बाद में जवाहर लाल नेहरू की मध्यस्थता से राजा त्रिभुवन वीर विक्रमशाह और नेपाली कांग्रेस में समझौता हुआ. राजा त्रिभुवन नेपाल में संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली लागू करने के लिए सहमत हुए और इस तरह 13 फरवरी 1951 को काठमांडू पहुंच कर उन्होंने जो माहौल बनाया उस से नेपाल के इतिहास में पहली बार जो शासकीय मंत्रिमंडल बना, उस में मातृका प्रसाद कोइराला इस मंत्रिमंडल के प्रधान तथा देश के पहले लोकतांत्रिक प्रधान मंत्री बने थे.

कुछ समय बाद जब राजा त्रिभुवन की मृत्यु हुई तो यहां राजशाही के तेवर लोकतांत्रिक न जान कर नेपाली कांग्रेस ने अहिंसक सत्याग्रह शुरू कर दिया. परिणामतः 1959 में जब नेपाल में आम चुनाव हुए तो 109 सीटों में से 76 पर नेपाली कांग्रेस विजयी रही थी और बी.पी कोइराला प्रधान मंत्री बने.

बी.पी. कोइराला की सरकार ने देश को राजशाही के शोषण से मुक्त कर के पुनर्निर्माण की जो नीति बनाई, उस से राजा की शक्ति भी राजमहल तक सिमट गई. यह स्थिति राजशाही को स्वीकार्य नहीं थी अतः 18 महीने बाद ही सेना के बलबूते पर कोइराला की लोकप्रिय सरकार गिरा दी गई. 1960 में कोइराला मंत्रिमंडल को बरखास्त कर तथा फिर से शासन शक्ति अपने हाथों में ले कर राजा महेंद्र ने एक पार्टीविहीन लोकतांत्रिक संविधान की परिकल्पना की.

यह परिकल्पना लोकतंत्र समथर्कों के लिए एक झांसा और राजशाही को बरकरार रखने के लिए संवैधानिक ढाल मात्र थी. 1962 में नए संविधान के तहत पंचायती व्यवस्था शुरू करने की घोषणा के साथ पंचायतों के चुनाव हुए और तभी से नेपाली पंचायत को शासकीय धांधलियों की बदौलत जो विजय प्राप्त हुई, उस से अभी तक नेपाल में राजशाही काबिज है. यहां तक कि अब नेपाली लोगों को भी इस बात का एहसास हो चुका है कि राजशाही की पंचायत व्यवस्था में वे आंख मूंद कर राजा की नई व्यवस्था का समर्थन करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते.

नेपाल की जनता अब महसूस करती है कि पंचायत प्रणाली की आड़ में यहां की संवैधानिक राजशाही ने नेपाल के अर्थतंत्र को

नेपाल नरेश व राजीव गांधी : दो पड़ोसी नेताओं के एक जैसे विचार.
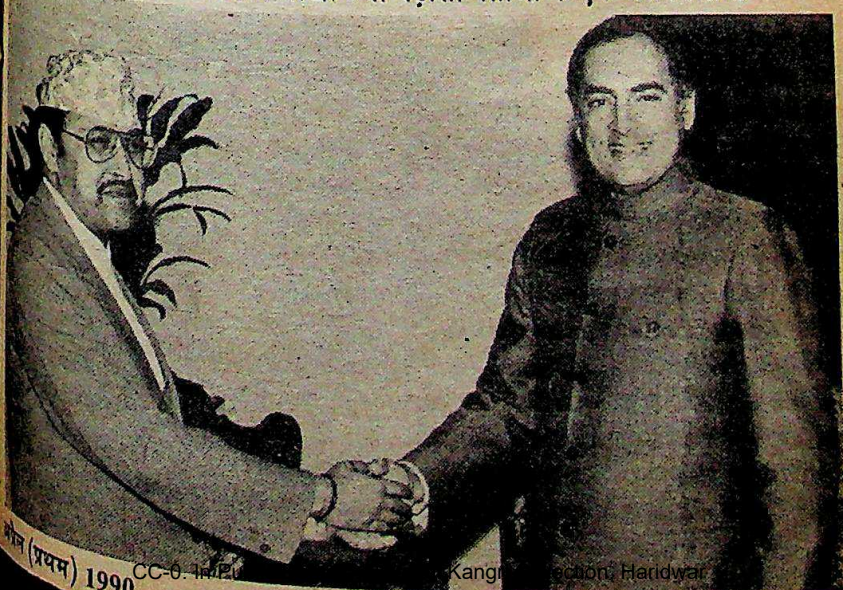
भी दिवालिएपन के कगार तक ला खड़ा किया है व राजशाही की गलत व निरंकुश नीतियों के कारण ही नेपाल की गणना अब दुनिया के सर्वाधिक गरीब देशों में होती है.

ज्ञातव्य है कि नेपाल का 63% बजट आज भी बाहरी अनुदानों पर निर्भर करता है. विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार 'गरीब से गरीब देश में जीवनप्रत्याशा 50 साल होनी चाहिए. लेकिन नेपाल में 45 साल है. गरीब देशों में भी प्रत्येक आदमी को 192 कैलोरी के आसपास भोजन मिलता है लेकिन नेपाल में औसत प्रति व्यक्ति को केवल 86 कैलोरी के बराबर आहार बड़ी मुशकिल से मिल पाता है. दूसरे शब्दों में भुखमरी का जीवन जीने वाली जनता के दम पर ही यहां की राजशाही व उस से जुड़ा विशिष्ट वर्ग, जो लगभग 2 प्रतिशत है, अन्य सभी सुखसुविधाओं को डकारने में लगा है.''

नेपाल के एक समाजवादी नेता के अनुसार, ''भारत नेपाल संधि समाप्त होने के बाद तो नेपाल में जरूरी चीजों की कीमतों पर कोई नियंत्रण नहीं रह गया है. आज खाद्यपदार्थों के भाव भी यहां आसमान को छूते नजर आते हैं. लेकिन इस से राजशाही के माथे पर चिंता की सिलवट तक नहीं देखी जाती. नेपाल में थोक व्यापार पर राज परिवार के लोगों का ही वर्चस्व है और यही लोग अपनी तिजोरियां भरने में लगे हैं. यहां तक कि पशुपति नाथ मंदिर, जिस की प्रबंध समिति की अध्यक्षा स्वयं रानी ऐश्वर्य हैं,

भारत नेपाल व्यापार

करोड़ रुपए में

आयात
निर्यात

वर्ष	निर्यात	आयात
1986-87	102.83	64.36
1987-88	93.68	44.66
1988-89	75.27	25.03
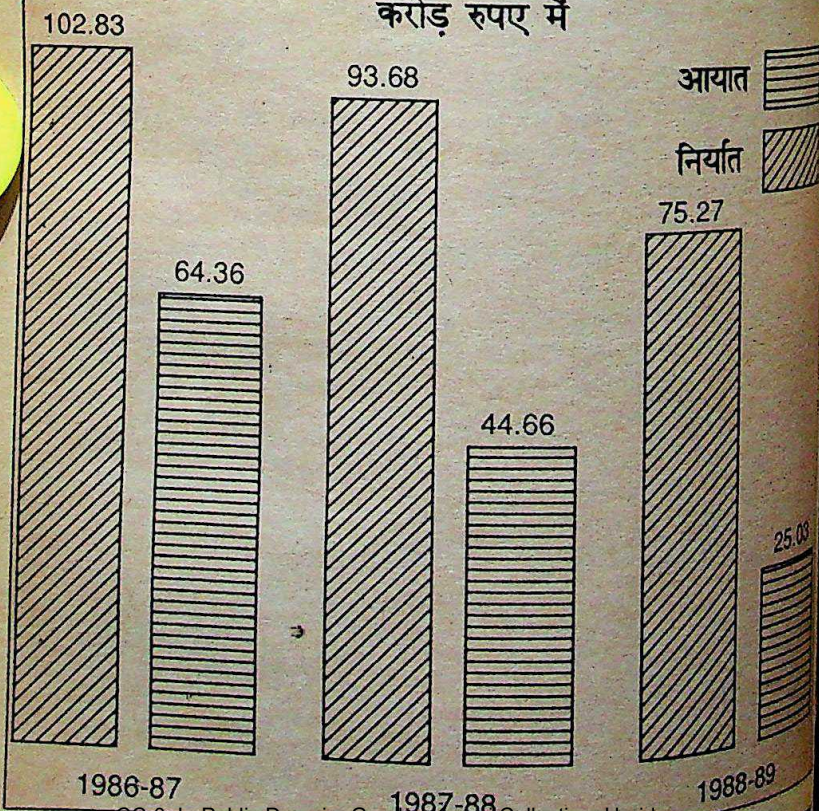
बढ़ाया जाने वाला सोना और संपत्ति किस की बैंक में चला जाता है, किसी को पता नहीं है. राजपरिवार के लोग, जिन की जुआघरों से ले कर शराब के कारखानों तक में भगीदारी है, किस तरह देश की दौलत को बटोरने में लगे हैं, यह भी एक जांच का विषय है.''

आज भारत आने वाले नेपालियों से पता चलता है कि वहां के सरकारी प्रचार माध्यम रेडियो व टीवी राजशाही की विरदावली गाने में लगे हैं और किस तरह स्कूल में पढ़ाई जा रही पुस्तकों के जरिए राजा को 'देवता' कह कर उस की स्तुति कराई जाती है. अपने राजनीतिक विरोधियों को झूठे मामलों में फंसा कर फांसी के फंदे तक पहुंचाने के उदाहरण भी नेपाल में मौजूद हैं. जिस पर नेपाली कांग्रेस तथा संयुक्त वाम मोर्चे के आंदोलन से बिफरी राजशाही को भरोसा है कि वह लोगों के असंतोष को अपनी बंदूक की नाल से दबा लेगी.

लेकिन नेपाल की लोकतंत्र समर्थक जनता राजशाही की सामंती निरंकुशता को अब जिस ढंग से चुनौती देने में लगी है, उस से लगता है कि यदि इस बार यहां पंचायती व्यवस्था के स्थान पर बहुदलीय शासन प्रणाली को लागू नहीं किया गया तो जनता भी राजशाही के प्रतीकों को अपने क्रोध की सूली पर चढ़ाने से बाज नहीं आएगी. इस प्रकार नेपाल की स्थिति काफी विस्फोटक बनी हुई है.
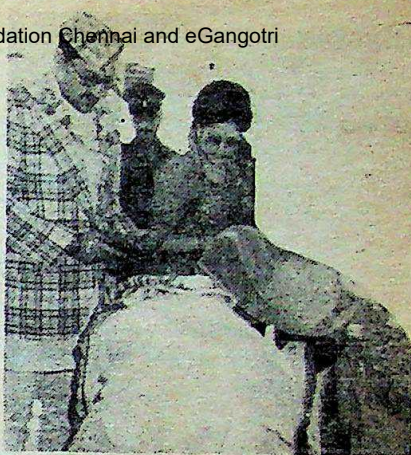
गरीब नेपाल की जनता राजा व रानी को कथित भगवान की तरह पूजती है पर बदले में राजपरिवार देता क्या है.

भारतीय नेताओं की प्रतिक्रिया

भारत में जनता दल के नेता व सांसद चंद्रशेखर सहित भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं ने भी नेपाल के लोकतंत्र बहाली आंदोलन को अपना समर्थन देते हुए कहा है कि हम नेपाल की स्थिति से अवगत हैं और नहीं चाहते कि वहां की जनता को गोलियों से भूना जाए. जो जनता वहां पिछले 30 सालों से लोकतंत्र के लिए लड़ रही है, प्रभुसत्ता अब उसी के हाथ में होनी चाहिए, राजशाही के हाथ में नहीं.

इधर भारत के प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह भी यह स्पष्ट कह चुके हैं कि नेपाल में इस समय चल रहा आंदोलन उस देश का अंदरूनी मामला है और उस में दखलअंदाजी करने का भारत का कोई इरादा नहीं है.

पढ़नेसुनने में उपरोक्त दोनों वक्तव्य एकदूसरे के विपरीत जान पड़ते हैं तथापि नेपाल के नेलशन मंडेला कहे जाने वाले मोहन चंद्र अधिकारी, जो 17 साल तक राजशाही की जेलों में बंद रह कर इसी महीने रिहा हुए हैं, ने इस प्रतिनिधि को बताया कि नेपाल में चलाए जा रहे लोकतंत्र बहाली आंदोलन में भारत सरकार की क्या भूमिका होगी, यह तो अभी नहीं कहा जा सकता. लेकिन मैं समझता हूं कि यदि भारत की सरकार इस आंदोलन के प्रति अपना समर्थन नहीं दर्शाएगी तो नेपाल के लोग समझेंगे कि वह जनतांत्रिक नहीं है.'' ●

दुनिया में लोकतंत्र के पक्ष में बह रही हवा के मुकाबले नेपाल की राजशाही क्या अपनी कमजोर पंचायत व्यवस्था को टिका पाने में सफल होगी, इस पर भी पर्यवेक्षकों को प्रश्नचिह्न लगा दिखाई देता है. दरअसल नेपाल आज तीन समस्याओं से टकरा रहा है.

पहली समस्या नेपाल की जनता की है जो गरीबी, अशिक्षा और वर्गभेद के कारण खुद को पिछड़ा हुआ मानती है और समझती है कि राजशाही ने इन को बढ़ाने में ज्यादा भूमिका निभाई है. दूसरी समस्या भारत के साथ व्यापार व पारगमन संधि का समाप्त होना रहा है, जिस से आम नेपाली नागरिक को कष्टकारी महंगाई और मुसीबतों को झेलना पड़ा तथा जिस के कारण यहां के विदेश मंत्री शैलेंद्र कुमार उपाध्याय तथा प्रधान मंत्री मारीच मान सिंह श्रेष्ठ तक ने भारत से संबंध न सुधारने के लिए एकदूसरे पर आरोप लगाने शुरू कर दिए थे. तीसरी समस्या राजनीतिक है यानी नेपाल की जनता सोचती है कि जब पूर्वी यूरोप की कम्यूनिस्ट व्यवस्था भी लोकतंत्र की तेज आंधी के सामने नहीं ठहर पाई तो क्यों न नेपाल से राजशाही के पांवों को उखाड़ा जाए.

बस यही प्रश्न यहां के लोकतंत्र समर्थकों को मजबूर कर रहा है कि नेपाल में भी बहुदलीय प्रणाली की व्यवस्था हो. लेकिन नेपाली जनता की अस्मिता से जुड़े इस सवाल पर अपनी दमनकारी लाठियां भांजने वाली राजशाही समय की नजाकत को नहीं समझ रही है.

इस समय जब कि दुनिया के सभी साम्यवादी देशों ने एकएक कर के अपने बंद गढ़ों की खिड़कियां खोल दी हैं या फिर जनता ने स्वयं उन बंद खिड़कियों को तोड़ डाला है तो ऐसे परिवर्तन काल में नेपाल अपनी अधखुली खिड़कियों को भी बंद करने का मूर्खतापूर्ण प्रयास कर रहा है. अब कल अगर उस का यही प्रयास राजशाही की कब्र खोदे तो कोई आश्चर्य भी नहीं होगा.

—जगदीश चावला ●

विज्ञान के नए कदम

बौने डाक्टर की खोज

अगर कोई डाक्टर आप के शरीर के भीतर घुस कर आप का इलाज करे तो आप को कैसा लगेगा? आप कहेंगे कि ऐसा हो ही नहीं सकता. भला कोई डाक्टर किसी रोगी के शरीर में कैसे प्रवेश कर पाएगा.

मगर आज जापानी वैज्ञानिक ऐसा ही एक सूक्ष्म यंत्रमानव यानी रोबोट बनाने में जुटे हैं जो रोगी के शरीर की रक्तवाहिनियों तथा अंगतंत्रों में टहल कर रोगग्रस्त कोशिकाओं का पता लगाएगा और उन का इलाज शायद किसी डाक्टर से भी बेहतर तरीके से करेगा. वह ट्यूमर आदि की लाइलाज कोशिकाओं को नष्ट करने में भी समर्थ होगा.

इतना ही नहीं, यह बौना डाक्टर शरीर के भीतर का आंखों देखा हाल भी प्रसारित करेगा ताकि डाक्टर/वैज्ञानिक वस्तुस्थिति का सही अध्ययन कर सकें और जरूरत पड़ने पर उचित निर्देश दे सकें.

टोकियो विश्वविद्यालय के उन्नत विज्ञान एवं तकनीकी अनुसंधान केंद्र के प्रोफेसर वाओ यूजी नासा के अनुसार आकार में एक मिलीमीटर से भी छोटा यह रोबोट इसी वर्ष तैयार हो जाएगा.

*

अपंग बना देने वाले विषाणुओं की खोज

अमरीका में रहने वाले भारतीय मूल के भौतिकविज्ञानी डा. ई. प्रेमकुमार रेड्डी ने ऐसे विषाणुओं की खोज की है, जो शरीर के ऊतकों को निष्क्रियता की हद तक कठोर बना देते हैं. फिलाडेलफिया के विस्टार इंस्टीट्यूट में पिछले दो वर्षों के शोध के पश्चात डा. रेड्डी ने पोलैंड मूल के वैज्ञानिक डा. हिलेरी कोपरोस्की के सहयोग से इन विषाणुओं की खोज की. इस बीमारी की वजह से अब तक विश्व में लाखों लोग अपंगता के शिकार हो चुके हैं.

—स्टेट्समैन कलकत्ता

*

आकाशीय टेलीफोन

विश्व में पहली बार ब्रिटेन के अंदर एक अनोखी आकाशीय टेलीफोन व्यवस्था का परीक्षण किया गया है. इस का इस्तेमाल विशेष रूप से विमान चालन के दौरान किया जाएगा. इस की सब से बड़ी खूबी यह होगी कि विमान चालक दल इस के जरिए पूरे विश्व के साथ संपर्क स्थापित कर सकेगा. यात्री भी इस सुविधा का लाभ उठा सकेंगे. **—विज्ञान प्रगति पत्रिका**

*

अंगूरों के लिए सौर ऊर्जा चालित ड्रायर

अब किसानों को अंगूरों को सड़ने से बचाने के लिए अधिक समय तक सूर्य के प्रकाश पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा. भाभा अनुसंधान केंद्र ने अंगूरों को सड़ने से बचाने के लिए सौर ऊर्जा चालित 'ड्रायर' बनाया है. यह ड्रायर एक बार में 20 किलोग्राम अंगूरों को सुखा सकेगा.

—विश्वामित्र कलकत्ता •

लेख • सुमन गर्ग

आज हड़ताल है

अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति हेतु निरंतर हड़ताल की धमकी देना या हड़ताल कर के अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर देना निकम्मे बैंक कर्मियों का एक ऐसा शगल बन गया है, जिस का समय रहते इलाज करना जरूरी है.
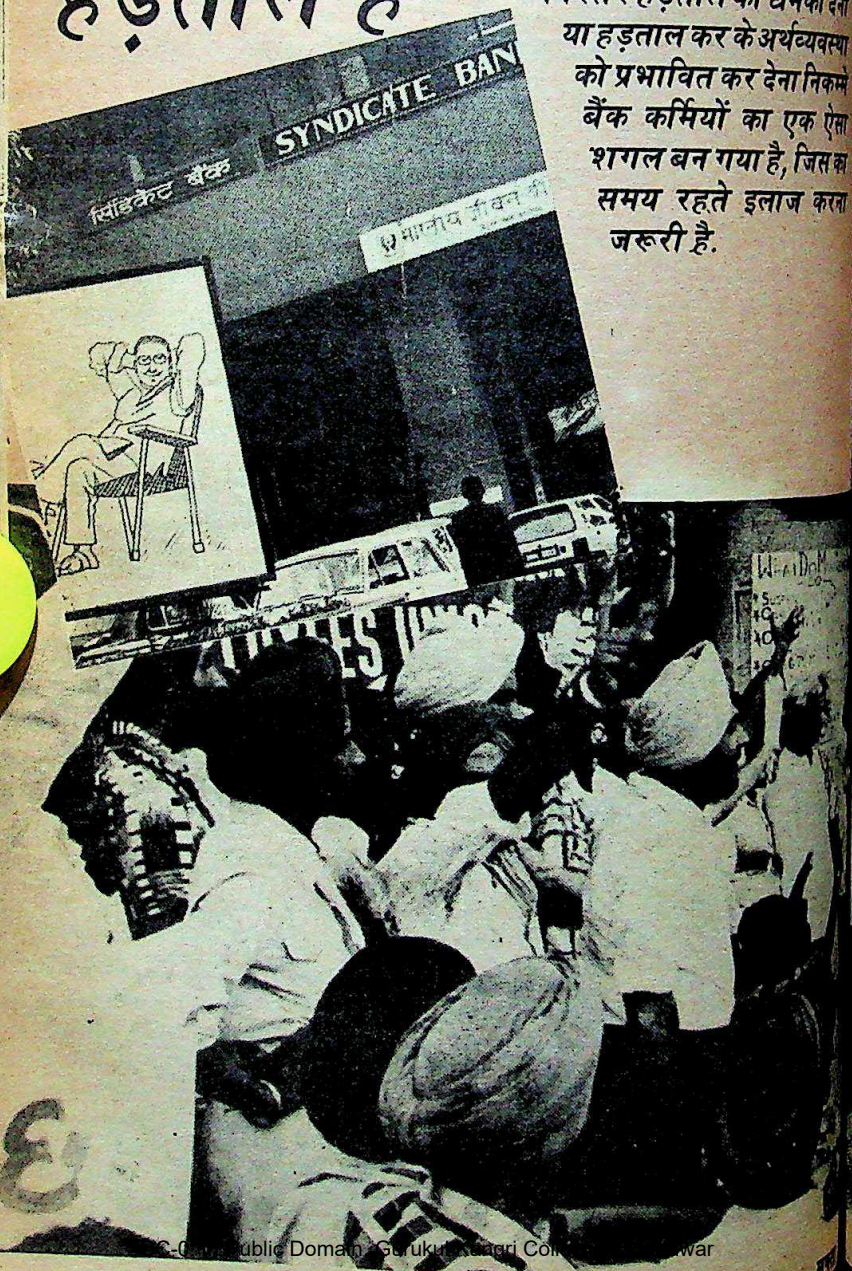
अब फिर हड़ताल है. बैंक कर्मियों की यूनियन का एक परिपत्र अभीअभी आया है. एवं उस में पूरे देश के सभी बैंकों के सभी अवार्ड स्टाफ के सदस्यों से 21 फरवरी से होने वाली बैंक कामगारों की हड़ताल में भाग लेने का आह्वान किया गया है. मैं इस समय एक छोटे से कसबे में कार्यरत हूं. अतः अपने यहां के छुटभैए नेताओं से इस हड़ताल का सबब पूछता हूं तो वे कतरा जाते हैं, कहते हैं, "ऊपर से 'काल' आई है, सो हड़ताल पर जाना ही होगा." मैं पुनः कुरेदता हूं, "मगर क्यों" इस का उत्तर मिलता है, "यह तो देश स्तर के नेता जानें. अभी विस्तृत परिपत्र आने को है."

अब इन छुटभैयों को कौन समझाए कि भेड़चाल या अंधानुकरण इसी को कहते हैं, जबकि यह तो बाबू जयप्रकाश नारायण का कार्यक्षेत्र है, उन्हीं ने तो कहा था कि किसी आदेश को मानने से पूर्व उस का औचित्य भी देख लो, वह सही है या नहीं, जरा इस की भी जांच कर लो.

यह महज परिहास की बात नहीं है कि एक बार जब हड़ताली कर्मचारियों की समूची मांगें प्रबंधक वर्ग ने मान ली तो कर्मचारियों के नेता ने देखा कि उन की तो नेतागिरी ही ठप हो जाएगी. अतः उन्होंने दूसरे ही दिन फिर से नारेबाजी चालू कर दी.

इस अप्रत्याशित आंदोलन से चौंक कर वरिष्ठ प्रबंधक महोदय बाहर आए तो नेताजी को यह कहते हुए सुना, "प्रबंधक वर्ग हमारी सारी मांगें मान कर हमें काहिल बना देना चाहता है. वह हड़ताल करने के हमारे अधिकार को ही छीन लेना चाहता है, इसलिए पहले स्वीकृत की गई कुछ मांगों को रद्द करो-रद्द करो. प्रबंधक वर्ग की यह

हड़ताल में शरीक बैंक कर्मी : क्या इस 'नाटक' का अंत नहीं हो सकता?

बैंक यूनियनों के आह्वान पर कर्मचारियों का हड़ताल में बिना कारण जाने कूद जाना किस भावना का परिचायक है?

तानाशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी.''

मैं यह समझने में असमर्थ हूं कि यदि प्रबंधक वर्ग अपनी आय का सारा का सारा हिस्सा इन कामगारों पर खर्च नहीं कर सकता या इन की बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने में सर्वथा असमर्थ पाता है तो कर्मचारीगण इन संस्थानों की सेवा से इस्तीफा दे कर ऐसे दूसरे बेहतर नियोजक को क्यों नहीं ढूंढ़ लेते, जो उन की दिन पर दिन बढ़ने वाली मांगों की सहर्ष पूर्ति कर सके. यह कैसी जबरदस्ती है कि हम आप के कर्मचारी भी बने रहेंगे, काम भी हम अपनी शर्तों पर करेंगे, जब मरजी हो, तब आएंगे और जितना चाहेंगे, उतना काम करेंगे.

ज्यादा दुख तो इस बात का है कि काम को रोक कर, तोड़फोड़ कर, हिंसा का सहारा ले कर ही ये लोग अपनी मांगों को पूरा करवाना चाहते हैं. हर वेतन वृद्धि के साथ अधिक उत्पादन, अधिक 'आउटपुट' की शर्त क्यों नहीं जोड़ी जाती? विडंबना यह है कि आज देश में लाखोंकरोड़ों ऐसे लोग भी मौजूद हैं, जो आज के कामगारों की तुलना में उन से आधा वेतन ले कर भी उन से दोगुना कार्य करने को सहर्ष तत्पर हैं. वह भी विनम्रतापूर्वक, शालीनता के साथ एवं अनुशासन में रहते हुए, एक [illegible] यदि एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए एक सौ रुपए मांगता है एवं दूसरा चालक कुछ कम, तो निश्चय ही मुझे इस बात की छूट है कि मैं अपनी मनमरजी का वाहन चुनूं, पर यह अफसोस की बात है कि हमारे सरकारी एवं नागरिक क्षेत्र के नियोजकों को इतनी सी छूट भी नहीं है.

बैंक कामगारों एवं भारतीय बैंक संघ के बीच गत वर्ष ही तो एक पांच वर्षीय समझौता हुआ था, जो नवंबर, 1988 से प्रभावी है. जब बैंक कामगार इस समझौते पर हस्ताक्षर कर देते हैं तो उन्हें उस के प्रभावी रहने तक कोई भी नई मांग पेश करने का कोई हक नहीं बनता. विशेषत: कोई ऐसी मांग जो वित्तीय दृष्टि से भारी हो. कल यदि प्रबंधक वर्ग खुद इस समझौते को तोड़ता है एवं नई सेवा शर्तें लागू करता है तो ये ही कर्मचारीगण होहल्ला कर आसमान को सिर पर उठा लेंगे, पर जब वे खुद अपने करार से पीछे हटते हैं तो उन्हें कहने वाला कोई नहीं है.

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के अधीन बहुत से सार्वजनिक प्रतिष्ठान हैं, जिन की अपनीअपनी यूनियनें हैं. जीवन बीमा निगम, सामान्य बीमा निगम, बैंक, अन्य सरकारी उपक्रम आदि. इन में अफसरों की अपनी अलग यूनियनें होती हैं तो लिपिक वर्ग

ई अपनी अलग, एक भी; एकाधिक भी.

भारतीय रिजर्व बैंक के अधिकारियों, लिपिकों एवं अधीनस्थ कर्मचारियों के अपने अलगअलग श्रमिक संघ हैं. अभी तक इन सभी के वेतनमानों के समझौते चारचार वर्ष की अवधि के लिए होते आए हैं एवं जब भी पुराने समझौतों की अवधि समाप्त हुई है, नई सेवा शर्तों को ले कर लंबीचौड़ी चर्चाएं चलती हैं, बहस होती है, प्रदर्शन होते हैं, आंदोलन होते हैं. हड़तालें होती हैं एवं शुरू में 'दृढ़ता' दर्शाने वाला एवं दबाव व आंदोलन की धमकी से न झुकने की घोषणा करने वाला प्रबंधक वर्ग अंततः इन हड़ताली कर्मचारियों के सामने घुटने टेक देता है. पहले यही प्रबंधक वर्ग समाचारपत्रों में बड़ेबड़े विज्ञापन दे कर कहता है, "देखो, देखो, कर्मचारियों को तो पहले से ही ज्यादा मिल रहा है और उन की अमुकअमुक मांगें गैरवाजिब हैं. एवं इन्हें मानने से संस्थान पर इतना भार पड़ेगा और संस्थान इस का बोझ नहीं उठा सकेगा." लेकिन बाद में यही प्रबंधक वर्ग खिसिया कर कहता है, "चलो, सस्ते में छूट गए." या "चलो, औद्योगिक शांति तो हुई." हां, यह औद्योगिक शांति होती तो है, पर किस कीमत पर.

हर वेतन वृद्धि का भार उन लाखोंकरोड़ों ग्राहकों को भी उठाना पड़ता है, जो इस संस्थान से किसी भी तरह नहीं जुड़े हुए होते हैं, अर्थात जो न तो बैंकों के ग्राहक होते हैं, और न ही उन की सेवाओं के उपभोक्ता ही. वे भी हर जायजनाजायज मांग से प्रभावित होते हैं क्योंकि हर समझौता बैंकों द्वारा प्रदत्त 'सेवा' को और भी ज्यादा महंगा बना देता है. फलतः बैंकों की सेवाओं का लाभ उठाने वाले संस्थान इस अतिरिक्त भार को जनता की ओर सरका देते हैं. बैंक शुल्क 10 रुपए बढ़ता है तो व्यवसायी वर्ग जनता से 50 रुपए झटक लेता है, काश! वेतन वृद्धि से पूर्व इन दीनहीन जनों की भावनाओं एवं स्थिति का जायजा लिया जाता, कोई तो इन का मीत होता!

अब समस्या यह है कि यदि किसी एक संस्थान का कोई कर्मचारी वर्ग अपने प्रबंधक वर्ग से कहीं अधिक बेहतर सुविधाएं झटक लेता है तो न केवल दूसरे संस्थान का उसी संवर्ग का कर्मचारी वर्ग, बल्कि खुद उसी संस्थान के दूसरे संवर्ग के कामगार भी यह सहन नहीं कर पाते. यह असमानता उन्हें किसी भी तरह सहन नहीं होती और वे इन्हीं असहिष्णुताओं, अनुदारताओं, संकीर्णताओं

कर्मचारियों को हड़ताल में शरीक होने की दावत देते कुछ बैंक यूनियनों के पोस्टर
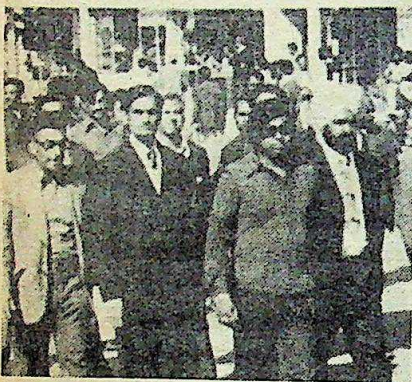
रोज नए आंदोलन की शुरुआत : काम में चोर, मांग में जोर.

एवं अनैतिकता की बुनियाद को आधार बना कर हड़ताल का नारा लगा देते हैं.

वाणिज्यिक बैंकों के इन कामगारों को शिकायत यह है कि भारतीय रिजर्व बैंक एवं कुछ अन्य संस्थानों के कर्मचारियों को महंगाई भत्ता कुछ अधिक मिल रहा है, भारतीय स्टेट बैंक वालों को एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि दे दी गई है, अधिकारियों को वाहनभत्ता मिलता है, तो इन कर्मचारियों को नहीं मिलता. बैंक यूनियनें एक ओर तो अपनी तुलना उन कामगारों की सेवा भत्तों से करती हैं, जो किन्हीं कारणों से या किन्हीं परिस्थितियों में या अपने नियोजकों की "बेहतर भुगतान क्षमता" के कारण या अपनी सेवाएं ठप होने से जनता को होने वाली कहीं अधिक असुविधा की अपनी "मारक शक्ति" के कारण कुछ अधिक हासिल करने में समर्थ हो गए हैं.

दूसरी ओर यही यूनियनें समानता का ढोंग रचते समय बड़ी आसानी से यह भूल जाती हैं कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक या राज्यों के वित्त निगम भी लगभग उन जैसी ही सेवाएं दे रहे हैं, पर उन के वेतनमान व्यावसायिक बैंकों के कामगारों की तुलना में बदतर एवं शोचनीय हैं. पर इस के बावजूद हाल ही के तारे समझौते को ठुकरा कर, ये लोग ललचाई दृष्टि से मुंह फाड़ रहे हैं. वस्तुस्थिति यह है कि हम समानता के सिद्धांत का चाहे जितना राग अलापते रहें, कभी भी दो संस्थानों के एक संवर्ग के या एक ही संस्थान के दो संवर्गों के कर्मचारी न तो कभी एक समान हुए हैं और न हो ही सकते हैं.

यदि समानता ही हमारा नारा होता एवं यदि 'दुनिया भर के मजदूरों, एक हो जाओ' के नारे में हमारे इन कामगारों का वास्तव में तनिक भी विश्वास होता तो ये अपनी नित नई मांगें प्रस्तुत करने के स्थान पर अपने ही इन दीनहीन पिछड़ें साथियों को अपने साथ ले कर चलते, उन के भी हिताहित की चर्चा करते एवं उन्हें अपने बराबर लाने तक अपने लिए एक भी बढ़ा हुआ पैसा स्वीकार नहीं करते, उसे हेय दृष्टि से देखते. पर हाथी के दांत खाने के अलग होते हैं, दिखाने के अलग.

यदि इस तरह से बंद समझौतों के खोलने का दूषित सिलसिला चालू हो गया तो न तो दीर्घकालीन योजनाएं ही बन सकेंगी और न इन समझौतों की गरिमा, पवित्रता और विश्वसनीयता ही बनी रह सकेगी. यदि आज के नेता यह महसूस करते हैं कि वे अपनी 'न्यायोचित' मांगों को नहीं मनवा सके हैं या दूसरे संस्थान के दूसरे नेतागण या उसी संस्थान के अन्य संवर्ग के नेतागण बाजी मार गए हैं तो ईमानदारी का तकाजा यह है कि वे अपनी अयोग्यता को तत्काल स्वीकार कर अपने नेता पद को तुरंत त्याग दें, क्योंकि वे न तो अपने सदस्यों के विश्वास को निभा पाए हैं और न उन की अपेक्षाओं के अनुरूप ही खरे उतर सके हैं.

यदि समझौतों को खोलने का दूषित चक्र एक बार चल पड़ा तो इस के परिणाम अत्यंत ही घातक होंगे और यह सिलसिला कहां पर जा कर रुकेगा, इस का तो अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता. अपने घर एवं परिवार में भी एक ही पिता के दो पुत्रों में से एक पुत्र अधिक कमाता है, दूसरा पुत्र कम

कमाता है. किसी के चारचार लड़के होते तो किसी के सिर्फ लड़कियां ही लड़कियां. अतः असमानताओं का रोना कहांकहां रोएगा और भला कब तक! यदि आज किसी चीज की जरूरत है तो वह बेतहर सोच एवं समझ की है.

अन्यथा आज यदि सरकारी क्षेत्र के बैंकों के कामगार इस बात को ले कर आंदोलित हैं कि भारतीय स्टेट बैंक वालों को एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि दे दी गई है तो निश्चय ही कल के आंदोलन में भारतीय स्टेट बैंक वाले अलगथलग हो जाएंगे एवं कल वे भी यह मांग करेंगे कि हम देश के सब से बड़े बैंक समूह हैं, अतः 'स्टेट बैंक समूह' वालों को राष्ट्रीयकृत बैंकों के कामगारों से अधिक ही मिलना चाहिए. क्योंकि उन का बैंक सब से बड़ा है, उन की शाखाएं भी सर्वाधिक हैं एवं उन का राष्ट्रीयकरण भी सब से पहले हुआ था.

हो सकता है, आने वाले कल को यह भी हो जाए तो फिर रिजर्व बैंक के कर्मचारी भी परसों से एक नया आंदोलन शुरू कर सकते हैं एवं यह कह कर और भी बेहतर वेतनमान की मांग कर सकते हैं कि हम तो नोट छापने वाले हैं, हम तो बैंकों के भी बैंक हैं, हमारी और उन की तो कोई तुलना ही नहीं है, आदिआदि.

फिर इस के बाद बैंकों का अधिकारीवर्ग भी कहेगा, 'अजी साहब, काम तो वास्तव में हम ही करते हैं. बाबू लोग तो चाहे जब आते हैं, चाहे जब चले जाते हैं. हम लोग तो देर रात तक काम करते हैं, छुट्टियों में भी काम करते हैं, हमारा तो कहीं भी स्थानांतरण हो सकता है. सारी 'जवाबदारी' हमारी होती है. असली 'जोखिम' तो हम ही उठाते हैं. इन लोगों की भी गालियां सुनते हैं. सरकार की भी गालियां सुनते हैं, प्रबंधक वर्ग का डंडा ऊपर से अलग होता है. अतः हमें इन लोगों के बराबर तो कदापि नहीं रखा जा सकता.'

कहने का तात्पर्य यह है कि आज बढ़ती हुई मांगों के संदर्भ में 'आत्मसंयम' की कहीं अधिक आवश्यकता है. देश की आर्थिक-स्थिति हमें इन खिलवाड़ों की अनुमति नहीं देती.

निश्चय ही हमारी केंद्रीय सरकार को काफी अधिक दृढ़ता से काम लेना होगा, अन्यथा एक गलत शुरुआत देश की अर्थव्यवस्था को छिन्नभिन्न कर देगी एवं न तो कोई नई योजनाएं ही बन सकेंगी और न कोई अनुमान ही, क्योंकि हर घड़ी हर समय यह अंदेशा लगा रहेगा कि न जाने कब कोई नई मांग सामने रख दी जाए एवं प्रबंधक वर्ग 'दबाव' के सामने झुकने को मजबूर हो जाए.

आज तो 'मृत्यु' एवं 'टैक्स' से कहीं अधिक निश्चित है 'नित नूतन मांग'. न जाने कौन नेता कब अपनी मांग प्रस्तुत कर दे. अतः आज वित्तीय मोरचे पर कहीं अधिक जागरुकता एवं दृढ़ता की आवश्यकता है. सावधानी हटी और दुर्घटना घटी. ●

धूम्रपान छोड़िए : निकपिट लीजिए

धूम्रपान की विश्वव्यापी समस्या से अमीरगरीब सभी पीड़ित हैं. जिन्हें बीड़ीसिगरेट पीने की लत लग जाती है. वे उसे तमाम कोशिशों के बाद भी नहीं छोड़ पाते.

लेकिन अब फ्लोरिडा स्थित एक भारतीय डाक्टर अब्दुल्ला फतह ने 'निकपिट' नामक एक ऐसी गोली बना ली है जिस के सेवन से डेढ़ माह में सिगरेट की लत छूट सकती है. गोली का मुख्य तत्त्व लोबलीन सल्फेट है. जो सिगरेट छुड़ाने की प्रायः सभी दवाओं में प्रयोग किया जाता है. लेकिन इस के तल्ख स्वाद के कारण प्रायः लोग उन दवाओं का नियमित सेवन नहीं कर पाते हैं. लेकिन निकपिट का स्वाद, रूप व गंध सब अच्छे हैं. ●

कहानी ● नीर शबनम

विचित्र संयोग था, चौधरी महाशय वरपक्ष के लोगों की अभ्यर्थना करने के लिए घंटे भर से व्याकुल हो कर चहलकदमी कर रहे थे. उन की नजर बारबार दरवाजे से टकरा कर वापस लौट आती थी. उन की इकलौती कन्या को देखने और उस को पसंद करने के लिए लोग आने वाले थे. यदि मामला बन जाए तो बरसों से मनमस्तिष्क पर लदी चिंता से वे एकबारगी मुक्त हो लें. पर यह प्रतीक्षा जानलेवा साबित हो रही थी.

तभी किसी ने बाहर से आवाज दी. वे प्रसन्नमुख बाहर निकले और आगंतुक के स्वागतार्थ हाथ जोड़ कर खड़े हो गए. पुकारने वाले सज्जन ने कहा ''आप के मकान के सामने ही मेरा मित्र दुर्घटनाग्रस्त हो कर गिर पड़ा है, क्या आप एक गिलास पानी देने का कष्ट करेंगे?''

चौधरी महाशय ने ठंडी सांस ली और नौकर के हाथ पानी बाहर भिजवा दिया.

नियत समय पर वरपक्ष के लोगों द्वारा प्रस्ताव ठुकरा देने की वजह से आरती के पिता चौधरी महाशय इतने हताश हो गए थे कि उन्हें कुछ सूझ ही नहीं रहा था. किंतु तभी परिस्थितिजन्य घटनाओं के वशीभूत हो कर आरती ने एक ऐसा फैसला सुना दिया कि सब कुछ बनाबनाया सा महसूस होने लगा. आखिर कैसा फैसला था आरती का?

गैलरी में खड़ी उन की पुत्री आरती ने भी दुर्घटना का दृश्य देखा था. दौड़ते हुए नीचे आ कर उस ने नौकर के हाथों रुई और टिंचर आयोडीन बाहर सड़क पर भिजवा दिया था और उन लोगों से अंदर आ कर पानी आदि लेने के लिए निमंत्रण भी दे डाला था.

सुदीप और मिलिंद दोनों मित्र नौकर के आग्रह पर मकान के अंदर आए. चौधरी महाशय बेचैन तो थे ही, अब और उद्विग्न हो उठे. पर उन की बेटी आरती ने धैर्य नहीं खोया. अंदर से दो कप गरमागरम काफी बना कर बैठक में भिजवा दी थी.

बाद में तो बहुत ही हो हल्ला हो उठा था. आरती की मां, जल्द से जल्द आगंतुकों को भगा कर, चौधरी महाशय से बैठक की गद्दियां साफ करवाने के लिए हायतोबा मचा रही थी.

चौधरी महाशय ने सौजन्यतावश पूछा था, ''कहिए तो फोन कर के हस्पताल से एम्बुलेंस मंगवा लूं.''

''नहीं महाशय, चोट तो इतनी अधिक आई ही नहीं है मुझे. आप ने मुझे लंगड़ाते हुए जो देखा है, वह अभी की किसी चोट का परिणाम नहीं हैं, मैं तो जन्म से ही थोड़ा लंगड़ाता हूं. वास्तव में मेरे बाएं पांव के पंजे की उंगलियां अंदर की ओर मुड़ी हुई हैं.''

जब सुदीप और मिलिंद जाने के लिए उठे तब सुदीप ने अचानक पूछ लिया, ''आप तो इसी महल्ले के हैं. क्या आप बता सकेंगे यह पता? हम घंटे भर से चंद्रनगर के रहने वाले यामिनीराय चौधरी का मकान ढूंढ़ रहे हैं. लोग कहते हैं चंद्रनगर के यामिनीराय चौधरी को वे जानते ही नहीं.''

चौधरी महाशय हंस पड़े. ''वाह, कमाल की बात है, मैं ही चंद्रनगर का यामिनीराय चौधरी हूं. पर यहां 60-70 वर्षों से मेरे पुरखे रहे हैं और हम लोग दादामोनी चौधरी के नाम से ही अब भी जाने जाते हैं. मेरे दादाजी को

यहां सभी बड़े भाई की तरह माना करते थे. वे बड़े परोपकारी जीव थे, उन के सतनाम के सामने हमारे सुकर्म तो क्या हमारा अस्तित्व भी नगण्य है." कहते हुए चौधरी महाशय फफक मार उठे.

सहसा उन के मस्तिष्क में बिजली सी कौंध उठी और हंसतेहंसते अचानक वे खामोश हो उठे, उन्होंने पूछा, "पर आप का कामिनीराय चौधरी से मिलने का प्रयोजन क्या है?"

"हम दोनों मित्र यहां फैक्टरी के काम से आए हुए हैं, हम चक्रधरपुर निवासी हैं, वहां के श्री प्रणव सान्याल का पत्र हम साथ लाए हैं."

"क्या कह रहे हैं आप? प्रणव सान्याल का पत्र? उन की तो आज यहां आने की बात थी..."

पत्र हाथ में ले कर, उसे पढ़ते ही चौधरी महाशय के चेहरे का रंग स्याह पड़ गया.

सुदीप ने कहा "तो अब हमें आज्ञा दीजिए. मेरे मित्र को हस्पताल ले जा कर मरहमपट्टी करवानी है." कह कर दोनों मित्रों ने चौधरी महाशय से विदा ली.

सप्ताह भर बाद ही अचानक न्यू मार्किट में चौधरी महाशय की भेंट सुदीप से हो गई थी और औपचारिकतावश चौधरी महाशय ने सुदीप को अपने घर आने का निमंत्रण दे डाला था.

सुदीप ने अपने मित्र मिलिंद से एक बार यह बात छेड़ी भी थी कि चौधरी महाशय ने उन्हें बुलाया है, तब एकबार जरूर उन के घर हो आना चाहिए, पर उन्हें समय नहीं मिला
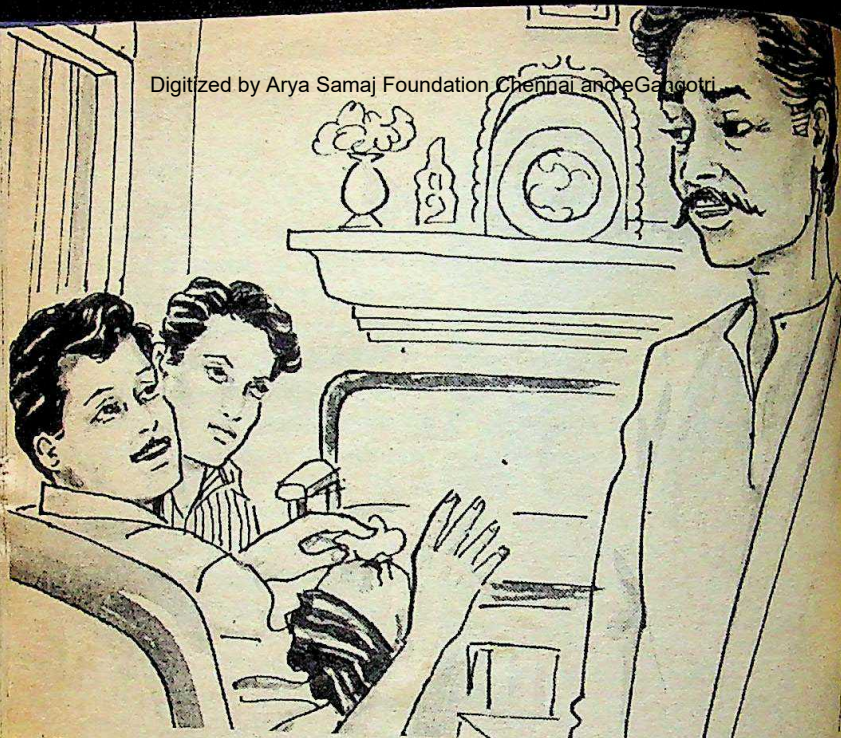
"अब प्रणवबाबू को पत्र देने का सवाल ही कहां उठता है? सारा खेल तो खत्म हो गया." चौधरी महाशय ने कहा.

और मिलिंद तो इस बात को लगभग भूल चुका था. फिर वह, वहां जाने का कोई प्रयोजन है, यह नहीं मानता था. प्रणय सान्याल महोदय ने जो काम बताया था, वह कर्तव्य तो पूरा हो ही चुका था.

एक दिन सुदीप किसी कार्यवश टालीगंज जा रहा था. अब उन के चक्रधरपुर लौटने में केवल दो ही दिन रह गए थे. अतः टालीगंज का कार्य वह निबटा लेना चाहता था कि उसे एक पुराना मित्र मिल गया. उसी के साथ बातें करतेकरते वे दुलाल लेन तक पैदल ही पहुंच गए थे. जब सौमित्र ने सुदीप से विदा ली तो सुदीप को अचानक चौधरी महाशय की याद हो आई, जिन का मकान सामने की गली में ही था. सहसा उस के कदम उसी ओर बढ़ने लगे. सोचा शायद चौधरी महाशय प्रणव सान्याल के नाम कोई पत्र ही देना चाहें उसे.

चौधरी महाशय पहले दिन की अपेक्षा सुदीप को बहुत चिंतित और उदास दिखाई दिए. वार्त्तालाप के दौरान अचानक सुदीप ने पूछ लिया, "हम लोग परसों चक्रधरपुर के लिए रवाना हो रहे हैं. यहां का हमारा कार्य समाप्त हो चला है, यदि आप प्रणव बाबू के लिए कोई संदेश या पत्र देना चाहें तो मैं आप की सेवा करना अपना अहोभाग्य समझूंगा."

"अब प्रणव बाबू को पत्र देने का सवाल ही कहां उठता है?, सारा खेल तो खत्म हो गया. उन के झूठे आश्वासन ने मुझे साल भर जिलाए रखा था किसी तरह, अब तो जीने की उम्मीद भी जाती रही. वह पत्र नहीं था उन का, मेरी मौत का मानो अग्रिम पैगाम था, सुदीप बाबू."

"यह आप क्या कह रहे हैं चौधरी महाशय? आप तो बुजुर्ग है, आप को इतनी निराशा शोभा नहीं देती. मैं तो अज्ञानी हूं, आप से अनुभव में भी छोटा हूं, आप को क्या सांत्वना दे सकता हूं भला? पर किस बात ने आप को इतना चिंतित कर रखा है, वह जान पाने का अधिकारी हूं या नहीं, इतना आप कह सकें तो अनुगृहीत होऊंगा. मैं आप की मदद तो क्या कर सकूंगा पर शायद आप अपना दुख मुझ से कह सकें तो आप का हृदय हलका हो

...र, जिस दुख ने आप को महीने भर से अपने ...तले दबा रखा है, शायद अंशतः वह कम हो जाए."

"हां, सुदीप बाबू, आप से कहने में मुझे संकोच कैसा? बात यह है कि जिस दिन आप ने प्रणव बाबू का वह पत्र मुझे दिया था, ठीक उसी दिन, उसी समय प्रणव बाबू के यहां हमारे घर मेरी कन्या को देखने की बात थी, उन के पुत्र के लिए. देखने के बाद वे क्या कहते, यह तो ईश्वर जाने. शायद वह दुख सहने में आसानी होती. पर वह तो वायदा कर के भी आए नहीं. अब ऐसी स्थिति कितनी दुखदायी होती है, क्या समझ पाएंगे आप सुदीप बाबू? लड़की का पिता होना अपने आप में एक अभिशाप होता है सुदीपबाबू."

"ओह! अब समझा आप के दुख का कारण. एक बात कहूं आप से?"

"कहिए न."

"छोटे मुंह बड़ी बात तो नहीं कहेंगे?"

"नहीं, नहीं." अब तो जले पर नमक सहने की आदत सी हो गई है. जलने वाली दवा सहना, कठिन काम तो नहीं है. थोड़े धैर्य की ही आवश्यकता होगी और वह मुझ में है."

"तो आप मेरे मित्र मिलिंद को तो देख ही चुके हैं, वह आप को कैसा लगता है? दिखने में सुंदर, हृष्टपुष्ट, गौरवर्ण तो है ही, मन से भी बहुत कोमल, सुसंस्कृत, विचारशील, उदार और ऊंची शिक्षा प्राप्त, ऊंचे कुल का युवक है. जानते हैं, वही चक्रधरपुर की सीमेंट फैक्टरी का मालिक है. बताए बिना कोई सच नहीं मानेगा क्योंकि घमंड तो उसे छू तक नहीं गया है."

"क्या कह रहे हैं आप?"

"आप की बेटी को राजरानी बना कर रखेगा महाशय, आप इस संबंध में अभी से सोचना प्रारंभ कर दें, आप की सारी चिंता कपूर की तरह उड़ जाएगी."

"पर आप के मित्र मिलिंद बाबू को कोई आपत्ति नहीं होगी, यह मैं कैसे मान लूं?"

"हां, एक बात है, मेरे मातापिता एक दुर्घटना में चल बसे, तब मैं मिलिंद के साथ सातवीं कक्षा में पढ़ता था. मिलिंद ने अपने पिता के साथ मेरे घर आ कर मुझे ढांढस बंधाया और मुझे और मेरी बहन संध्या को

"पिताजी तो अपनी बेटी की खुशी के लिए स्वार्थ में अंधे हो रहे हैं, सुदीप बाबू," आरती ने उत्तर दिया.
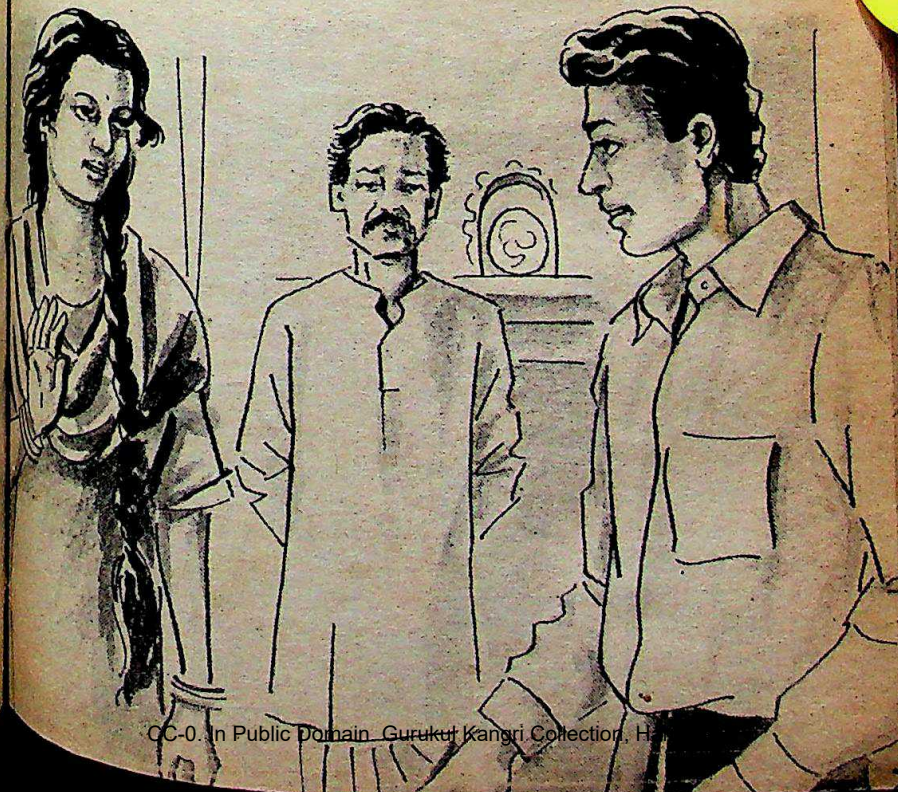
उसी दिन अपने घर ले गया. तब से वह मुझे और मैं उसे कभी अकेला नहीं छोड़ता. वह तो हद दर्जे से अधिक मुझे प्यार करता है, चौधरी महाशय. इतना ही नहीं, वह मेरी मित्रता के वशीभूत हो कर ही मेरी बहन संध्या से विवाह करना चाहता है. पर आप ही बताइए चौधरी महाशय, मेरा भी कोई कर्तव्य है या नहीं? मैं कैसे यह बात मान लूं? पहले ही उस के मुझ पर क्या कम उपकार हैं? मेरी बहन न तो अधिक पढ़ीलिखी है, न ही इतनी सुंदर.. मैं मिलिंद के साथ ऐसा अन्याय नहीं होने दूंगा.

''मेरी बहन संध्या भी अपने आप को मिलिंद के अयोग्य समझती है. मैं ने आप की बेटी आरती को देखा है. पहले ही दिन, उन्हें देखते ही मेरे मन में यह इच्छा जागी थी कि यदि ऐसा संयोग हो और आरती जैसी पत्नी मिलिंद को जीवनसाथी के रूप में मिल जाए तो मैं अपने चिताभार से मुक्त हो सकूंगा.''

''वाह! अति सुंदर सुदीपबाबू. ऐसी मित्रता के विषय में तो केवल किताबों में ही पढ़ने को मिलता है. आप का हृदय तो स्वच्छ दर्पण की तरह है. ऐसा मित्रप्रेम देख कर तो मेरी आंखें जुड़ा गईं. पर आप ने यह नहीं बताया कि आप के मित्र, मेरी बेटी का रिश्ता क्यों कर स्वीकार कर पाएंगे भला? हम ठहरे सामान्य जन और वे...''

''यह जिम्मेदारी आप मुझ पर छोड़ दें. संध्या को सचाई बताते ही संध्या सारा इंतजाम स्वयं कर लेगी. आखिर वह भी तो यही चाहती है कि मिलिंद को उस के योग्य लड़की से ही विवाह करना चाहिए.''

''वाह! वाह! धन्य हैं तुम्हें जन्म देने वाले तुम्हारे मातापिता. तुम दोनों भाईबहन धन्य हो.''

''पिताजी!'' कह कर अचानक बैठक में आरती प्रकट हो गई. जिस तरह वह चीख पड़ी थी, उस आवाज से सुदीप चौंक कर कुर्सी छोड़ कर उठ खड़ा हुआ.

''पिताजी तो अपनी बेटी की खुशी के लिए, स्वार्थ में अंधे हो रहे हैं, सुदीपबाबू. वे

मार्च (द्वितीय) 1990 अंक में प्रकाशित शब्द पहेली : 10 का उत्तर

1 वा	क	2 यु	द्ध	■	3 क्ष	4 ति	ग्र	5 स्त
र्षि	■	व	■	6 ब	■	र	■	म्भ
7 क	8 न	क	■	डे	■	9 छा	10 दि	त
■	ब	■	11 अ	बो	ध	■	ल	■
12 स	जी	व	■	ल	■	13 अ	ट्ट	ट
■	व	■	14 सु	बो	ध	■	ट	■
15 भु	न	16 गा	■	ल	■	17 त	ना	18 व
जं	■	ग	■	ना	■	त्प	■	न्द
19 ग	द	री	ला	■	20 ट	र	का	ना
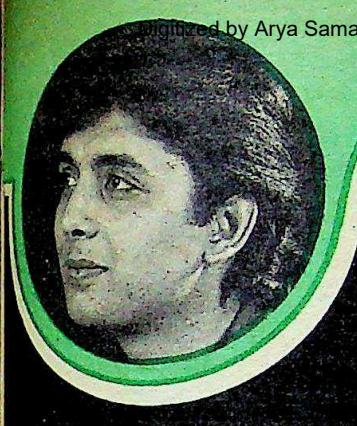
प्यार के लिए

हम ने भी किया है
पलकों पे सितारों को रोशन
तुम भी आंखों में
प्यार को जगाए रखना.

—उषा तनेजा

किसी अन्य का विचार न कर केवल मेरे सुखों का विचार कर खुश हो रहे हैं. पर आप.... आप को पिताजी धन्य कह रहे हैं लेकिन मैं आप को अपनी बहन का हितैषी नहीं समझती."

"आरती यह तू क्या कह रही है बेटी?" चौधरी महाशय की आवाज कांप उठी.

"हम एक सामान्य परिवार के लोग हैं, आप की तरह ही मध्यवर्गीय हैं. मेरा ब्याह आप ऊंचे कुल वर्ण और सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुंदर तथा धनी व्यक्ति से क्यों कराना चाहते हैं? मैं ने तो ऐसा कभी स्वप्न भी नहीं देखा सुदीपबाबू. यदि आप के मित्र आप की बहन से विवाह करना चाहते हैं तो आप को इस में आपत्ति क्यों है? हो सकता है बचपन से साथ खेलतेरहते उन दोनों में प्यार का भाव भी जागृत हो गया हो.

"प्रेम तो रूप और वर्ण को नहीं देखतासमझता. प्रेम तो बस प्रेम की भाषा ही समझता है, सुदीपबाबू. हो सकता है, आप के स्वभाव के कारण आप की बहन भी मिलिंद के सामने अपने प्यार को व्यक्त नहीं कर पा रही हो. उस के प्यार का गला घोंटने का आप को कोई अधिकार नहीं है. खैर, मुझे आप के मित्र मिलिंद बाबू की शादी के विषय में बोलने का कोई अधिकार नहीं है. वे जिस से चाहें, शादी कर सकते हैं, यह उन के अपने अधिकार की बात है. मैं आप से एक छोटा सा प्रश्न करना चाहती हूं."

सुदीप ने अपनी पलकें उठा कर आरती की ओर देखा.

"आप इस बात से तो इनकार नहीं करेंगे न, कि मेरी शादी मेरी अपनी मर्जी से होनी चाहिए."

"हां, वह तो आप के अधिकार की बात है."

"तो आप यह मानते हैं कि अपना वर मुझे स्वयं ही चुनना चाहिए?"

"बिलकुल ठीक कह रही हैं आप, आरतीजी.

"तो आप ही मेरा हाथ क्यों नहीं थाम लेते? मैं आप के मित्र मिलिंद से अधिक आप को अपने उपयुक्त पाती हूं. आप को ही मैं सुयोग्य वर के रूप में देख रही हूं क्योंकि आप जिस कुल, जिस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसी कुल, उसी वर्ग की मैं भी एक सदस्या हूं. इसलिए मैं समझती हूं कि आप मेरी भावनाएं, मेरी कमजोरियां, मेरी इच्छाआकांक्षा को भलीभांति समझ पाएंगे, सुदीपबाबू."

सुदीप कशमकश में पड़ गया था. सहसा उस ने चौधरी महाशय को पुकारा, मानो उन से सहारा पाना चाहता हो, "चौधरी महाशय देख रहे हैं आप? मैं एक सामान्य व्यक्ति हूं. गरीब और...."

"हां सुदीपबाबू, मैं देख भी रहा हूं और सुन भी रहा हूं. अब मैं तुम दोनों के बीच बोल भी क्या सकता हूं? आरती ने तुम्हें स्वयं वरा है..." वे मुसकरा उठे.

"मैं धन्य हुआ आरती, कि तुम ने मुझे अपने योग्य समझा, मैं सहर्ष तुम्हारा पाणिग्रहण करता हूं," कह कर सुदीप ने आरती का हाथ अपने हाथों में ले लिया और दोनों एकसाथ चौधरी महाशय का आशीर्वाद लेते उन के चरणों में झुक गए. ●

विश्व बाल साहित्य
मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक,
प्रेरक पुस्तकें
वीरान टापू
मंगल की सैर
अनमोल शंख
योगीराज
दुश्मनों के बीच
संकट के साथी
सत्य का बल
अज्ञात द्वीप
घड़ी की टिकटिक
सेट नं. 23
वीरान टापू रु. 2.00
योगी राज रु. 2.50
चीकू से बलवान हारा रु. 2.50
घड़ी की टिकटिक रु. 2.50
दो नारे रु. 2.50
मां को बता देना रु. 2.50
मंगल की सैर रु. 3.00
प्रसिद्ध वैज्ञानिक रु. 3.00
अनोखा मित्र रु. 3.00
पहेली रु. 3.00
आदमी की कहानी रु. 3.00
अज्ञात द्वीप रु. 3.00
हमारी सेना रु. 3.00
घाट का चोर रु. 3.50
सत्य का बल रु. 3.50
राजा की अंतरिक्ष यात्रा रु. 3.50
अनमोल शंख रु. 4.00
शुक्र की खोज रु. 4.00
संकट के साथी रु. 4.00
दुश्मनों के बीच रु. 4.00
पूरा सैट केवल 50 रुपए में.
आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:
दिल्ली बुक कंपनी
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

पारिवारिक यौन संबंध

लेख ● डा. उषा अरोड़ा

आधुनिकता के बदले प्रभाव के कारण भाई बहन का पवित्र रिश्ता अब वासना की भूख में बदलने लगा है, जो निश्चित तौर पर घर परिवार के साथसाथ समाज के लिए भी एक समस्या है. पारे की तरह बढ़े इस समस्या का निदान कैसे करें?

मेरी सहेली माला के आंसू थम ही नहीं रहे थे. उस की आंखें सूज कर लाल हो गई थीं और रोतेरोते उस का गला बैठ गया था. बहुत समझाया, कई बार पूछा, "आखिर क्या बात है?" बारबार माला का यही उत्तर था, "मैं तुम से कैसे कहूं? क्या कहूं?" जब दोतीन बार उस ने यही उत्तर दिया तो तब मैं ने पलट कर पूछा, "आखिर ऐसी कौन सी बात है जो गले तक आ कर रुक जाती है, बोलो तो, जब बोलोगी तभी मन हल्का होगा. मुझ पर विश्वास है तो बताओ क्या हुआ है."

बड़े प्रयास से माला के मुंह से निकला, "आरती और राकेश को मैं ने रंगे हाथों पकड़ लिया है." मैं ने बीच में ही टोका, "मतलब अपनी आरती और..."

"हां और मेरे जेठ का लड़का." माला ने यह कहते हुए वाक्य पूरा किया.

एक बार तो सुन कर स्तब्ध रह गई, क्या भाईबहन में भी ऐसा हो सकता है. फिर माला को सांत्वना देते हुए बोली, "तुम अपनी जेठानी से इस बारे में बात करो." माला ने कुछ बुझे स्वर में कहा, "आरती तो मां बनने वाली है और राकेश रंगे हाथ पकड़े जाने पर हफ्ते भर से गायब है."

अपनी सहेली माला की ये बातें सुन कर
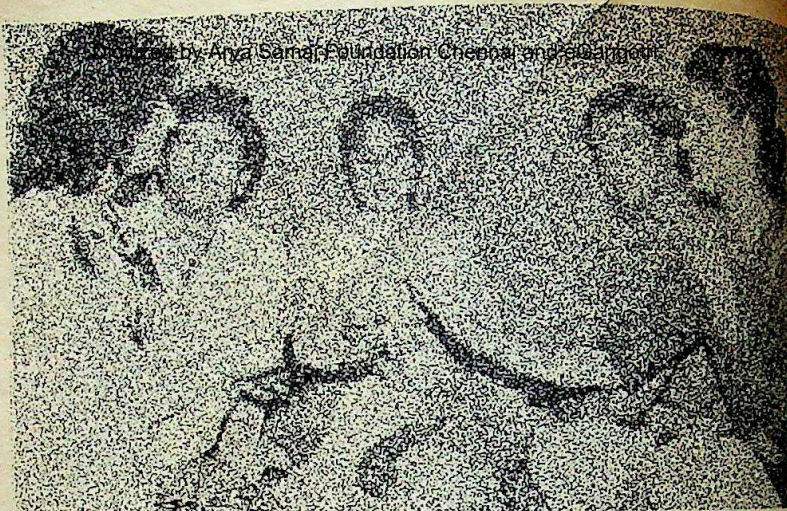
एक साथ बैठ कर उन्मुक्त बातचीत करना भी मानसिक परिवर्तन को बढ़ावा देता है.

मैं कुछ परेशान हो गई. इतनी परेशान कि माला को क्या राय दूं? चुप रहना ही उचित समझा. माला के जाने के बाद एक ही प्रश्न मेरे सामने आता था, 'इस पवित्र रिश्ते में भी ऐसा होता है? इस के लिए दोषी कौन है?'

हिंदू संस्कारों के अंतर्गत भाईबहन का रिश्ता एक पवित्र रिश्ता माना गया है. भाईबहन का संबंध शारीरिक सीमाओं और वासना से दूर हट कर है. भाईबहन का प्यार निर्मल, स्वच्छ और वासना रहित हो, इस के लिए हिंदुओं में कई ऐसे त्योहार हैं. बहन का भाई को राखी बांधना, भैया दूज को भाई के टीका लगाना इस बात की याद दिलाता है कि भाई की जिम्मेदारी है कि वह बहन की रक्षा करे.

हर आदर्श अपने आप में एक अपवाद भी होता है. सगे भाईबहनों में यौन रिश्ते पहले की अपेक्षा अब बहुत होने लगे हैं. पर प्राचीन से प्राचीन ग्रंथों में भी हमें इन का उल्लेख मिलता है. ऋग्वेद (6-5-55-4) में बताया गया है कि पूषा देव अपनी बहन ऊषा का प्रेमी है.

ऋग्वेद में ही (10-1-10/7-11) भाईबहन का एक संवाद मिलता है जिस में बहन यमी अपने भाई यम से सहवास करने को कहती है. यम ने यह प्रस्ताव अस्वीका[र] कर दिया तो बहन बोली "भाई के रहते [भी] बहन का मनोरथ पूर्ण न हो सका तो उस [भाई] से बहन को क्या फायदा? यदि भाई भी [बहन] के रहते काम संतुष्टि प्राप्त नहीं करता तो [उस] बहन का क्या उपयोग?" इस पर यम ने [यमी] को बहुत फटकारा. पर यमी की समझ में [कोई] तर्क नहीं आया.

ऐसे कई उदाहरण और ग्रंथों में [भी] मिल सकते हैं, पर आज ये संबंध बड़ी तेजी [से] बढ़ते जा रहे हैं. यह समाज के लिए ए[क] चेतावनी है. चचेरेममेरे भाईबहनों में तो [इन की] संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है. मुसलमान [लोग] तो अपने इन रिश्तेदारों में शादी करना [बहुत] अच्छा मानते हैं. पर हिंदुओं में चाचा [के,] मामा के, मासी के बच्चों को बहनभाई [का] रूप ही दिया जाता है.

कई विश्वविद्यालयों के समाजशास्त्र [के] विभागों ने सर्वेक्षण किया और यह निष्क[र्ष] निकाला कि 2% सगे भाईबहनों में और 20% चचेरे भाईबहनों में यौन संबंध होते हैं.

शारीरिक भूख बड़ी प्रबल होती है. यौवन की दहलीज के आसपास लड़का हो [या] लड़की, दोनों में शारीरिक परिवर्तन होने [के] साथसाथ मानसिक परिवर्तन भी होने ल[गते]

…उस समय विचारों में उथलपुथल होती है. …ली अवस्था होती है, जब अपने शरीर से …ार होने लगता है. अपने शरीर को आईने के सामने निहारना, ढंग से पहननाओढ़ना, …बनासंवारना अच्छा लगता है. उस के बाद …परीत लिंग के प्रति आकर्षण होता है. यौन …वना उभरने लगती है और जब यौन …बंधी भूख अपनी चरम सीमा पर होती है …ब रिश्तेनाते सब शिथिल हो जाते हैं.

…ाईबहन में यौन संबंध बढ़ने के कारण

लड़का हो या लड़की, जब आपस में …ाथ रहते हैं तो एकदूसरे के प्रति आकर्षित …ते ही हैं. चचेरे भाईबहन यदि साथ रहते हैं …तो यह आकर्षण बहुत सीमा तक एकदूसरे को …भावित करता है. मन में उठती भावनाओं …से शुरू में अभिव्यक्ति देने में परेशानी होती …है. पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, अंगरेजी …फिल्म, वीडियो, टेलीविजन, नशीले पदार्थ, …आदि कई चीजें मन में उठती उमंगों, तरंगों …को उकसाती हैं और भाईबहन आपस में ही …एकदूसरे को इस दृष्टिकोण से देखने लगते हैं.

एक बार देखने का तरीका बदला नहीं …कि भाईबहन का बौद्धिक रिश्ता वासना की …रुख में बदलने लगता है. यह आपसी …आकर्षण या यौन भावना का पनपना एक दिन में नहीं होता. घर में जब बारबार मौका मिलता है तो सेक्स की भावना और उभरने लगती है और इस से दोनों को बहुत बढ़ावा मिलता है.

घर एक ऐसी सुरक्षित जगह है जहां आराम से दोनों बात कर सकते हैं और यदि मातापिता दोनों नौकरी वाले हैं तब तो दोनों को बहुत सुविधा हो जाती है. आजकल छोटे परिवार होते हैं. मातापिता अपनेअपने काम पर चल देते हैं तो पीछे घर खाली रहता है. इस से डर या स्थान ढूंढ़ने की परेशानी आदि समस्याएं नहीं आतीं और घर में ही यौन संतुष्टि हो जाती है. किसी को शक भी नहीं होता.

मांबाप का आपसी व्यवहार भी इस में बहुत सहायक होता है. पहले संयुक्त परिवार थे, परदा था. पतिपत्नी सब के सामने एकदूसरे से बोल भी नहीं सकते थे. पर अब ऐसा नहीं होता. खुले माहौल में जीने के कारण मांबाप अपनी आजादी और मस्ती का ध्यान अधिक रखते हैं. उन के पास बच्चों के लिए समय बहुत कम होता है. इस से बच्चे अपनी मस्ती में जीने लगते हैं. अपने ढंग से रहने लगते हैं.

परिवार नियोजन संबंधी सामग्रियों का भी इस में बहुत बड़ा हाथ है. एक घटना याद

मांबाप का आपसी व्यवहार भी बच्चों में सेक्स की भावना को विकसित करता है.

आती है. मेरे ताऊजी का लड़का और मेरे चाचा की लड़की अक्सर गरमियों में एकदूसरे के घर आतेजाते थे. मेरठ से दिल्ली दूर भी नहीं है. जब छुट्टी हुई तो ताऊजी का लड़का मेरठ पहुंच गया. धीरेधीरे वह बहुत ही रहने लगा. हर शनिवार इतवार को आ जाता.

सारी गरमियों में रहता. सब सोचते बराबर के बच्चे हैं. आपस में अधिक पटती है. कई सालों तक किसी को कोई आशंका ही नहीं हुई.

एक दिन रात को वह लोग ताश खेल रहे थे. मेरी मां अचानक पानी पीने के लिए उठीं तो उन्होंने देखा कि ताश के पत्ते हाथ में लिए दोनों एकदूसरे से लिपटे हैं. मेरी मां एकदम डर सी गईं और वे दोनों सकपका गए. अचेत अवस्था से जैसे वे दोनों चेतन में लौटे और मेरी मां के पैर पड़ने लगे.

परिवार नियोजन का प्रभाव

आजकल परिवार नियोजन के दौर में एक लड़का और एक लड़की का फैशन हो गया है.

इस से जब बच्चे बड़े होते हैं तो मांबाप अपना सोने का कमरा अलग कर लेते हैं और बच्चों को एक कमरा दे देते हैं. यदि लड़का बड़ा है और लड़की छोटी है तो समस्या अधिक है. लेकिन लड़की के बड़े होने पर इतनी सावधानी की आवश्यकता नहीं होती.

यह विचार कैसे आया? मेरी हमउम्र सहेलियां जब मुझ से मिलतीं तो मैं ने पाया कि जिन के दो लड़कियां हैं वे जल्दी घर लौटने के लिए परेशान नहीं होती, जिन के लड़की बड़ी है और लड़का छोटा है वे सहेलियां भी इतनी जल्दी घर लौटने के लिए व्याकुल नहीं होतीं, पर जिन के लड़का बड़ा है और लड़की छोटी है वे या तो लड़की साथ ले कर आतीं या फिर थोड़ी देर बाद ही कहने लगतीं कि बहुत देर हो गई, दोनों को अकेला छोड़ कर आए हैं.

कई सालों से मैं इस बात का विश्लेषण करती आई हूं. वैसे लड़की अधिक समझदार होती है और उस के प्यार में ममता की पु[illegible] होती है. सेक्स की भावना भी लड़की में [illegible] नहीं उभरती. लड़की बड़ी है तो भाई पर अंकुश रख सकती है.

यह समस्या जो इतनी बढ़ रही है इस के लिए वातावरण तो दोषी है ही पर मांबाप भी कम जिम्मेदार नहीं हैं. बच्चों को स्वतंत्रता दें पर देखें चुपचाप कि हमारे बच्चे क्या कर रहे हैं? बच्चों के लिए समय दें. उन्हें अच्छा साहित्य पढ़ने के लिए दें. बच्चों को हर विचार तो दें पर अपने संस्कार के अंकुर उन में बोते रहें. केवल मांबाप का प्यार ही पर्याप्त नहीं है. बल्कि बच्चों का सही मार्गनिर्देशन करना भी आवश्यक है.

इस संबंध में डाक्टरों का यह कहना है कि ये यौन संबंध प्यार का या सोचने का एक दृष्टिकोण ही हैं. लेकिन यौन संबंध भाईबहन में या निकट संबंधियों में नहीं होने चाहिए, क्योंकि ऐसे बच्चों का मानसिक विकास कम होता है, वे बीमार अधिक होते हैं और उन की बचपन में ही मृत्यु की संभावना अधिक होती है.

वैज्ञानिक तथ्य

एक प्रसिद्ध महिला डाक्टर का कहना है कि जितने दूर के संबंधी से विवाह होगा बच्चा उतना ही स्वस्थ होगा. इस दृष्टि से अंतर्जातीय विवाह बहुत उत्तम हैं. विदेशों में तो आपसी निकट के संबंधों में विवाह करने के मामलों में परामर्शदाता होते हैं, जो शादी से पहले यह बता देते हैं कि यह बच्चों के लिए हितकर हैं या नहीं.

निकट के संबंधों में कुछ प्रमुख बीमारियां जैसे वर्ण अंधता और हीमोफीलिया (अधिरक्तस्राव) आदि होने का बहुत डर रहता है. यहां तक कि निकट संबंधों में विवाह होने के पश्चात उन के बच्चे होने पर उन में 75% मामलों में ये बीमारियां हो सकती हैं. डाक्टरों की ही तरह कानून भी निकट के संबंधों को अवैध मानता है. यह [illegible] गैरकानूनी हैं और समाज को स्वस्थ रखने के लिए वर्जित है.

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरज द्वारा आप की समस्याओं का समाधान किया जाता है.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

मैं 29 वर्षीय विवाहिता हूं तथा मेरा एक डेढ़ वर्षीय बच्चा भी है, जो सीजेरियन आपरेशन से हुआ था. आपरेशन के बाद मेरी कमर व पीठ में बहुत दर्द होता है, यहां तक कि सुबह पलंग से उतरने की हिम्मत भी नहीं रहती. इस के लिए मैं ने अनेक दवाइयां लीं पर वांछित लाभ नहीं हुआ. बताइए मैं क्या करूं?

सीजेरियन आपरेशन के बाद प्रसूता को डाक्टरों द्वारा आराम व संतुलित आहार की सलाह दी जाती है, लेकिन लगता है कि आप यह दोनों कार्य नहीं कर सकीं और आप ने स्वयं को घरेलू कामों में व्यस्त कर लिया. आप की कमर व पीठ के दर्द का कारण आपरेशन नहीं, बल्कि आप की शारीरिक कमजोरी हो सकती है जिस के लिए आप किसी स्त्री विशेषज्ञ से परामर्श करें और यदि वह संतुलित आहार के साथसाथ टानिक आदि लेने की सलाह दे तो टानिक अवश्य लें.

मेरी आयु 26 वर्ष है तथा 13 वर्ष की आयु से मैं ने हस्तमैथुन कर अपना स्वास्थ्य गिरा लिया है. अब मेरे घर वाले मुझ पर शादी के लिए दबाव डाल रहे हैं. बताइए कि क्या मेरी इस गलत आदत का मेरे भावी दांपत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव पड़ सकता है?

हस्तमैथुन क्रिया का भावी दांपत्य जीवन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता. आवश्यकता यहां भी 'अति सर्वत्र वर्जयेत' का ही नियम लागू होता है. जहां तक संभव हो, आप हर प्रकार के उत्तेजक साहित्य, चित्रों व वातावरण से परहेज रखें और अपने चित्त को रचनात्मक कामों में लगाएं. आशा है ऐसा करने से आप को वांछित लाभ मिलेगा.

मैं 21 वर्षीय एम० ए० का छात्र हूं तथा अपने से निम्न जाति की लड़की से प्यार करता हूं. हम दोनों शादी करना चाहते हैं पर हम दोनों के घर वाले हमारी शादी के हक में नहीं हैं. बताइए हम क्या करें?

शादीब्याह के मामले में आप की आयु के लोग अकसर भावुक ज्यादा होते हैं, जबकि ऐसे मामले में व्यावहारिक और दूरदर्शी होना जरूरी है. आप के मातापिता संभवतः जातिगत कारणों से आप का समर्थन नहीं करते होंगे. उन्हें विनम्रतापूर्वक उचित तर्कों द्वारा अपने पक्ष में मोड़ने का प्रयास करें और यदि वे फिर भी न मानें तो वयस्क आयु के हो जाने पर आप दोनों 'कोर्ट मैरिज' भी कर सकते हैं. यहां धर्म, जाति आदि के बंधनों को नहीं स्वीकारा जाता.

मैं 32 वर्षीय बी. एससी. पास शादीशुदा तथा दो लड़कियों का पिता हूं. समस्या यह है कि मेरी पत्नी अनपढ़ व अशिक्षित है. वह सिनेमा देखने का शौक तो रखती है परंतु सिनेमा हाल या फिल्म का नाम तक नहीं बता पाती. सहवास में भी वह काफी ठंडी है. मुझे उस से न तो शारीरिक और न ही मानसिक संतुष्टि मिल पाती है. बताइए क्या करूं?

शादी से पूर्व यदि आप अनपढ़ पत्नी से ब्याह न करने का तर्क अपने मातापिता को देते तो वे संभवतः आप की बात पर विचार भी करते. अब शादी कर के व दो पुत्रियों के पिता बन कर पत्नी के अशिक्षित होने का शिकवा करना कतई उचित नहीं है. आप तो पढ़ेलिखे हैं. आप चाहें तो इस अवस्था में भी

अपनी पत्नी को अक्षर ज्ञान करा सके और वह भी लिखनापढ़ना सीख सके क्योंकि लिखनापढ़ना सीखने की कोई [illegible] नहीं होती.

दो बच्चों को जन्म देने वाली आप की पत्नी किस तरह से ठंडी है या आप को [illegible] नहीं दे पाती, इस का आप ने कोई विवरण नहीं लिखा. तथा रति क्रिया में यदि आप को पत्नी का वांछित सहयोग नहीं मिलता तो स्वयं भी आत्मावलोकन कर पत्नी को कामकला के वे सूत्र बताएं जो किसी भी दांपत्य जीवन को मधुर बनाने के लिए ज़रूरी हैं. तब आप की पत्नी आप से अवश्य सहयोग करेगी.

मैं 20 वर्षीय युवती हूं तथा जिस युवक से प्रेम करती हूं वह अभी तक बेरोजगार है और बचपन से ही मातापिता की मृत्यु हो जाने से अपने एक रिश्तेदार पर आश्रित है. वह मुझे यकीन दिलाता है कि एक वर्ष में वह अवश्य कोई धंधा जुगाड़ लेगा, पर घर में किसी को उस पर यकीन नहीं हो रहा. मैं भी उस के बिना जीवित नहीं रह सकती. बताइए क्या करूं?

यदि आप को विश्वास है कि लड़का सचमुच गुणी है और वर्ष भर में नौकरी या व्यवसाय का कोई न कोई जुगाड़ कर ही लेगा तो आप स्वयं भी धैर्य रखें और अपने मातापिता से भी तब तक धैर्य रखने को कहें. इसी बीच यदि आप के मातापिता को लगे कि लड़का अपने लिए आर्थिक आधार ढूंढ़ने के लिए सचमुच गंभीर है तो हो सकता है कि वे स्वयं भी उस की कोई मदद कर उसे अपने लक्ष्य पाने में सहायता या परामर्श दें और यदि आप को लगे कि लड़के की गंभीरता आप के मातापिता को प्रभावित नहीं कर पाएगी और वे उस से आप का विवाह नहीं करेंगे तो वयस्क आयु में आप दोनों विशेष विवाह अधिनियम 1954 के अंतर्गत अदालती शादी भी कर सकते हैं. बाकी उचित यही रहेगा कि जब वह लड़का खानेकमाने व घरगृहस्थी का भार उठाने लायक नहीं हो जाता, आप अपने वैवाहिक निर्णय को स्थगित रखें.

वन रेंजर कैसे बनें?

लेख ● गोपालकृष्ण गोयल

वन रेंजर का पद जितना अधिक सम्माननीय है उतना ही अधिक चुनौतीपूर्ण भी है. इसीलिए इस की प्रतियोगी परीक्षाएं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं से कुछ भिन्न होती हैं. अगर आप दिल और दिमाग से मजबूत हैं तो क्यों न वन रेंजर बनें...

बेरोजगारी की भयावह स्थिति में आज प्रतियोगियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है, क्योंकि रिक्त स्थान कम तथा प्रतियोगी ज्यादा हैं. इसलिए यदि वर्तमान समय को प्रतियोगिता का युग कहा जाए तो कोई अनुचित नहीं होगा, यही कारण है कि भारत का संघ लोक सेवा आयोग प्रतिवर्ष तीन चरणों में भारतीय असैनिक सेवा परीक्षा का आयोजन करता है. इस के अंतर्गत भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय विदेश सेवा, भारतीय पुलिस सेवा एवं अन्य अनेक सेवाएं शामिल हैं. इन में से भारतीय वन सेवा एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं सम्माननीय सेवा है. इस में भरती होने वाले प्रतियोगी को सर्वप्रथम वन रेंजर के रूप में देश के किसी एक वन की देखभाल एवं रखरखाव का भार सौंपा जाता है.

आज मानव का अस्तित्व बहुत कुछ वनों पर निर्भर है. पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए भी वन महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं. इस के अतिरिक्त वन मौसम के बदलाव, मिट्टी के कटाव, बाढ़ आदि को भी रोकते हैं. वनों से और भी अनेक आर्थिक लाभ हैं. इस लिए वनों की रक्षा करना सरकार का प्रथम कर्त्तव्य बन जाता है.

स्वतंत्र भारत की वन नीति के अनुसार पहाड़ी हिस्से का 60% मैदानी भागों का 20% एवं कुछ इलाकों का 33.3% भाग वनों से आच्छादित करना है. सामाजिक वानिकी को

प्रतियोगी परीक्षा की सफलता के बाद वन रेंजर को ... कार्यों का प्रशिक्षण भी लेना पड़ता है.

जंगल के कठिन जीवन में ऐसे कितने दौर आते हैं जब आगे का रास्ता आप को खुद बनाना पड़ता है.

भारतीय विकास कार्यक्रमों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है, वनों के इस बढ़ते महत्त्व को देखते हुए आज के नवयुवकों में भारतीय वन सेवा के प्रति काफी आकर्षण पैदा होने लगा है. हर वर्ष भारी संख्या में प्रतिभाशाली उच्च शिक्षा प्राप्त उम्मीदवार इस प्रतियोगी परीक्षा में बैठते हैं. यह प्रक्रिया इतनी बोझिल और कठिन है कि उम्मीदवारों को सफलता पाने के लिए सालोंसाल मेहनत करनी पड़ती है. उम्मीदवारों को चाहिए कि इस परीक्षा में बैठने से पहले पूरी तन्मयता के साथ तैयारी करें. कर्मठ, योग्य एवं प्रतिभाशाली उम्मीदवारों को प्रतियोगिता के हर पहलू को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए. इस में सफल होने के लिए गहरी लगन, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा पूर्ण आत्मविश्वास का होना अत्यंत आवश्यक है.

वन रेंजर का पद वैसे तो बड़ा चुनौतीपूर्ण, रोमांचकारी, सम्माननीय ... जिम्मेदारियों वाला प्रथम श्रेणी का राज... पद है पर इस का कार्य क्षेत्र अकसर शहरों ... दूर जंगलों में होता है, जहां बहुत कम लोगों ... ही वास्ता पड़ता है. इस में सामाजिक जी... इतना सक्रिय नहीं रहता जितना अन्य सेवा... में अधिकारियों का होता है. इस के लिए ... कठोर प्रकृति वाला व्यक्ति चाहिए जो विप... परिस्थितियों का सामना भी साहस के सा... कर सके. यही वजह है कि इस पद के लिए ... स्वस्थ, मेहनती तथा शारीरिक परिश्रम से ... घबराने वाले व्यक्ति को प्राथमिकता दी जा... है, क्योंकि बीहड़ जंगलों में न जाने कब, ... अथवा कौन सी मुसीबत अचानक आ प... ऐसी संकट की घड़ी में मानसिक संतुल... बनाए रखना आवश्यक होता है तथा ... निर्णय लेने की शक्ति तथा विवेकपू... समस्या का हल निकालने की क्षमता ... अपेक्षित है.

इस प्रतियोगिता के पुरुष उम्मीदवा... को अंतिम रूप से सफल होने के लिए ... किलोमीटर की लंबी पद यात्रा चार घंटे में ... करनी होती है. महिला उम्मीदवार को ... अवधि में सिर्फ 14 किलोमीटर पैदल च... पड़ता है. इस परीक्षा से उम्मीदवारों ... शारीरिक शक्ति और पैदल चलने की क्ष... का पता चल जाता है.

आवेदन की विधि : इस परीक्षा के लि... संघ लोक सेवा आयोग प्रति वर्ष ... पत्रपत्रिकाओं में विज्ञापन देता है. यह प... प्राय: जुलाई के अंतिम सप्ताह में होती है ... मार्च के मध्य में आवेदन पत्र मांगे जाते हैं. ... परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार के ... भारत के किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्या... या समकक्ष संस्थान से वनस्पति विज्ञा... रसायन विज्ञान, भूविज्ञान, गणित, भौति... सांख्यिकी और प्राणिविज्ञान में से किसी ... विषय के साथ स्नातक की डिगरी या कृ... विज्ञान, वानिकी या कृषि इंजीनियरिंग ... स्नातक डिगरी अवश्य होनी चाहिए.

सन 1984 से अब यह प्रतिबंध ... दिया गया है कि जिन उम्मीदवारों का ...

न परीक्षा फल प्रकाशित नहीं हुआ है वे प्रतियोगिता में नहीं बैठ सकते, परन्तु यह अनुसूचित जाति तथा जनजाति के दवारों पर अभी भी लागू नहीं होती है.

इस प्रवेश परीक्षा में बैठने वाले दवारों की आयु परीक्षा वर्ष की पहली ई को कम से कम 21 वर्ष और अधिक से क 26 वर्ष होनी चाहिए पर अब ग्रामीण के उम्मीदवारों के लिए इस आयु सीमा में और छूट दी जा रही है, ताकि उन को की अपेक्षा ज्यादा अवसर मिल सकें.

वैसे अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अन्य वर्गों के उम्मीदवारों के लिए तो भी अधिकतम आयु सीमा में 5 वर्ष की ट का प्रावधान है.

यह परीक्षा दो भागों में होती है लिखित साक्षात्कार. पहले भाग में सामान्य जी तथा सामान्य ज्ञान के प्रश्नपत्र होते नों ही अनिवार्य प्रश्नपत्रों में प्रत्येक के 50 अंक होते हैं. इस के अतिरिक्त दो ल्पिक विषयों की भी परीक्षा ली जाती है. में प्रत्येक विषय के 200 अंक होते हैं. इन में वनस्पतिविज्ञान, रसायन, भूविज्ञान, त, भौतिकी, सांख्यिकी, प्राणिविज्ञान, की, कृषि इंजीनियरी शामिल हैं. दनपत्र भरने से पहले विषयों का चयन सोचसमझ कर करना चाहिए. सिर्फ वैकल्पिक विषयों को लें, जिन में आप पूरी गति व रुचि हो.

भारतीय वन सेवा परीक्षा पिछले कई से हो रही है, इसलिए पिछले कुछ वर्षों के नपत्र उठा कर देखने से पता लग जाता है किस ढंग व स्तर के प्रश्न पूछे जाते हैं. इन में प्रमुख रूप से भौगोलिक स्थिति तथा से संबंधित समस्याओं के बारे में अधिक जाता है. सामान्य अंग्रेजी के प्रश्नपत्र में ही किसी एक विषय पर निबंध लिखना है जो तथ्यपूर्ण होना चाहिए. इस के साथ करण ज्ञान एवं शब्दों के सही प्रयोग की च अच्छी तरह की जाती है.

सामान्य ज्ञान के प्रश्नपत्र में राष्ट्रीय हत्त्व की सामाजिक समस्याओं, घटनाओं व्यावहारिक विज्ञान, भारतीय इतिहास एवं भूगोल तथा संविधान पर आधारित प्रश्नों का समावेश होता है. सामान्य ज्ञान के प्रश्नपत्र केवल वस्तुनिष्ठ (आब्जैक्टिव) परक होते हैं.

वैकल्पिक विषय के प्रश्नपत्र स्नातक स्तर के होते हैं. लिखित परीक्षा के सभी विषयों में इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि उत्तर कम से कम शब्दों में, क्रमबद्ध और अधिक से अधिक सारगर्भित एवं प्रभावशाली हों.

परीक्षा की तैयारी : यह एक प्रकार की अनुवीक्षण (स्क्रीनिंग) परीक्षा है जिस के द्वारा उम्मीदवारों की संख्या में यथोचित सीमा तक कटौती कर दी जाती है. यही कारण है कि इन परीक्षाओं के लिए तैयारी कुछ अलग ढंग से करनी होती है. इस की तैयारी में यह नहीं देखा जाता कि आप कितना पढ़ते हैं, बल्कि यह देखा जाता है कि आप क्या और कैसे पढ़ते हैं?

इस के अलावा उम्मीदवार को बचपन से ही अपनी रुचि को इस दिशा में बढ़ाते रहना चाहिए. प्रतिवर्ष हर कक्षा में अच्छे अंकों से पास होते रहना चाहिए. सामान्य ज्ञान तथा अच्छे लेखकों की पुस्तकें भी पढ़ते रहना आवश्यक है. इस से प्रतियोगिता के लिए आवश्यक गुणों का प्रादुर्भाव होता है.

सफलता पाने के लिए

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित इस परीक्षा में उत्तर देने की कला प्रश्नों के तथ्यों से जुड़ी होनी चाहिए. इसलिए अच्छे अंक लाने के लिए दो विषयों पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए. निबंध के विषय का चुनाव भी एक विशेष महत्त्व रखता है. सामान्य ज्ञान में वृद्धि के लिए ताजा खबरों के अलावा पारंपरिक प्रश्नों की भी तैयारी करनी होती है, जिस के लिए सामान्य ज्ञान विषयक अनेक पुस्तकें बाजार में मिलती हैं. इन पुस्तकों से विज्ञान तथा इतिहास के प्रश्नों की तैयारी करने में बड़ी आसानी रहती है.

अंगरेजी की तैयारी 10वीं तथा 12वीं कक्षा की अंगरेजी पुस्तकों के अलावा किसी अनुभवी व्यक्ति की लिखी 'गाइड' से भी की

जा सकती है. अंगरेजी के व्याकरण की शुद्धियों पर विशेष बल देना होता है. इस के लिए अंगरेजी के प्रसिद्ध वैयाकरण नेसफील्ड तथा मारटीन की पुस्तकें उपयोगी सिद्ध हुई हैं. निबंध अकसर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से जुड़ा होता है.

लिखित परीक्षा में जो उम्मीदवार आयोग द्वारा निर्धारित न्यूनतम अंक प्राप्त कर लेता है उसे मौखिक परीक्षा (साक्षात्कार) के लिए बुलाया जाता है जो कि 150 अंक की होती है. इस साक्षात्कार के लिए उन घटनाओं की जानकारी का होना बड़ा जरूरी होता है जो आप के चारों तरफ देश और विदेशों में घट रही हैं. उम्मीदवार का दृष्टिकोण विश्लेषणात्मक एवं तर्कसम्मत होना चाहिए. इस से उस के मानसिक गुणों और समस्याओं को समझने की शक्ति का पता चलता है.

साक्षात्कार मंडल द्वारा उम्मीदवार की मानसिक सतर्कता, आलोचनात्मक ग्रहण शक्ति, संतुलित निर्णय, सामाजिक संगठन की योग्यता, चारित्रिक विशेषता, नेतृत्व की पहल एवं क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है. ये गुण इस चुनौतीपूर्ण पद के लिए अनिवार्य हैं. इस प्रक्रिया के अंतिम चरण में उम्मीदवारों की योग्यताक्रम से सूची (मैरिटलिस्ट) तैयार की जाती है और विज्ञापित पदों के लिए चयन किया जाता है. इस बार यह परीक्षा 5 अ... 1990 को होने जा रही है. रिक्त ... लगभग 100 हैं.

वन सेवा परीक्षा के उम्मीदवारों से ... राजपत्रित पदों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही ... ड्यूटी की आशा की जाती है. इस पद ... प्रकृति ही कुछ ऐसी है जिस में अच्छे स्वास्थ्य का विशेष महत्त्व होता है. अतः दिल, फेफड़े, दिमाग, रक्तचाप, दृष्टि की जांच पर ज्यादा जोर दिया जाता है. इस सेवा में अधिकतर ... जंगलों में रह कर विपरीत परिस्थितियों से लड़ना होता है, इसलिए इस में मानसिक ... शारीरिक गठन पर विशेष ध्यान दिया जाता है.

भारतीय वन सेवा के अधिकारी ... प्रारंभिक वेतनमान 2,200-75- 2,8... 100-4000 रुपए है. इस के अतिरिक्त भविष्य निधि अवकाश, डाक्टरी परि... तथा सेवा निवृत्ति लाभ की भी सुविधाएं हैं.

अगरतल्ला, अहमदाबाद, इलाहाबाद, एजल, बंगलौर, भोपाल, बंबई, कलकत्ता, दिसपुर, गंगटोक, हैदराबाद, इंफाल, ईटानगर, जयपुर, जम्मू, जोरहाट, कोहिमा, लखनऊ, मद्रास, नागपुर, पणजी, पटना, पोर्टब्लेयर, रामपुर, शिलांग, शिमला, श्रीनगर, तिरुपति, त्रिवेंद्रम, उदयपुर तथा विशाखापत्तनम ऐसी जगहें हैं, जहां इस की प्रवेश परीक्षा केंद्र हैं.

अन्य विवरण : इस परीक्षा से संबंधित विवरण और प्रपत्र सचिव, संघ लोक सेवा आयोग को दो रुपए का मनीआर्डर या सचिव, संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली के नाम ... प्रधान डाकघर पर देय रेखित भारतीय पोस्टल आर्डर भेज कर अथवा दफ्तर के काउंटर पर दो रुपए नकद दे कर प्राप्त किए जा सकते हैं. विशेष ब्योरे के लिए एंप्लायमेंट न्यूज/रोजगार समाचार के अंक देखते रहना चाहिए, जो प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, ... खंड-4, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-1100... द्वारा प्रकाशित किया जाता है.

विश्व सुलभ साहित्य

वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर रहे युवकयुवतियों के लिए अनुपम पुस्तकें

युवकों से — रु. 15.00
युवकों को योग्य पति, सफल गृहपति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.

युवतियों से — रु. 15.00
युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाएं?

पति से — रु. 15.00
विवाहित जीवन में पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.

पत्नी से — रु. 20.00
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन हर पत्नी के लिए अनिवार्य.

कामकला भाग 1 — रु. 14.00
(विवाहित युवतियों के लिए)

कामकला भाग 2 — रु. 19.00
(विवाहित युवकों के लिए)
यौन जीवन को सुखमय बनाने में सहायक प्रस्तुत पुस्तक में सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण. साथ में काम समस्याओं का विस्तृत निवारण भी.

स्त्री और पुरुष — रु. 15.00
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान से ले कर आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा तथा आप के प्रश्नों के हल भी.

वात्स्यायन कामसूत्र — रु. 25.00
यौन विज्ञान के विषय में प्राचीन भारत का दृष्टिकोण महर्षि वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' से स्पष्ट हो सकता है. क्लिष्ट शैली एवं सरल भाषा में अनुवाद के साथ साथ विस्तृत टिप्पणियां दी गई हैं.

यौन मनोविकार — रु. 10.00
क्या आप सुखी हैं?
काश! आप जान पाते, तो आप की जिन्दगी बहारों से, फूलों से और सुगन्धि से भर जाती.
आप की यौन समस्याओं और मानसिक उलझनों का समाधान आपको इस पुस्तक के पन्नों में मिलेगा.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:

दिल्ली बुक कंपनी एम- 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

सेट नं. 43

*मूल्य अग्रिम भेजने पर सैट नं. 43 पूरा 129 रुपए का, डाक खर्च 2.00 रुपए वी.पी.पी. द्वारा, अग्रिम मूल्य न भेजने पर डाक खर्च 10 रुपए अतिरिक्त अग्रिम भेजें. चुनी हुई पुस्तकें मंगाने पर डाक व्यय रु. 4/- अग्रिम भेजें. बकाया राशि वी.पी.पी. द्वारा.

एक और आरंभ

धारावाहिक उपन्यास • पांचवी किस्त • भक्ति चौधरी

अब तक आप ने पढ़ा : सुरक्षित भविष्य, ज्यादा छुट्टी और अधिक सुविधाओं के लालच में स्वच्छ वातावरण के एक निजी संस्थान की नौकरी छोड़ कर गोपा जब मंडल अभियंता टेलीफोन के कार्यालय में निजी सचिव की हैसियत से काम करने पहुंची तो वहां का भ्रष्ट माहौल देख कर वह सकते में आ गई. फिर भी वह धीरेधीरे इस नए वातावरण में अभ्यस्त होने की कोशिश करती रही और संजय नाम का एक अन्य सहयोगी उस की इस कोशिश में हाथ बंटाता रहा. एक दिन वह समय भी आ पहुंचा, जब गोपा संजय को ले कर मीठीमीठी भावनाओं में गुम होने लगी. अचानक एक दिन बिन बुलाए मेहमान की तरह जतिन ने वहां आ कर गोपा के सामने एक नई समस्या खड़ी कर दी. **अब आगे पढ़िए**

संजय ने जो कहा था, वह कर दिखाया एक सप्ताह के भीतर जतिन काम पर लग गया. दिहाड़ी पर लगे मजदूरों की मासिक तनख्वाह सातआठ सौ रुपए से अधिक नहीं होती. फिर भी गोपा के पिता ने उस मे अलग कमरा ढूंढ लेने को कह दिया तो गोपा ने चैन की सांस ली.

अंगरेजी निबंध की पुस्तक को गोपा

घर, दफ्तर के साथसाथ संजय की प्रेम भरी अनुभूतियों में खोई गोपा समय की रफ्तार के साथसाथ चल रही थी मगर तभी प्रभात इंटरनेशनल की गोपनीय फाइल में ऐसी उलझी कि अपनी प्रिय सहेली से भी हाथ धो बैठी...

ध्यान से पढ़ रही थी. अगले महीने 'ग्रामीण प्रबंध' में स्नातकोत्तर उपाधि के पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए लिखित परीक्षा थी. नौकरी के नाम पर फाइलों के पन्ने पलटने और नीरस काम में लगे रहने का खयाल आते ही गोपा का दिल डूबने लगता. पर इस का कोई विकल्प भी नहीं दिख रहा था. पिछले महीने समाचारपत्र में इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए विज्ञापन देखा तो मन को भा गया.

परंतु नौकरी छोड़ कर दोबारा पढ़ने की बात गोपा के पिताजी के पल्ले न पड़ी तो उस ने उन का संदेह दूर कर दिया, "पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद नौकरी का प्रबंध भी संस्थान स्वयं करेगा."

"पर इन दो वर्षों में अगर तुम्हारी शादी हो गई तो?" मां ने चिंता प्रकट की थी.

मां का चेहरा याद करते ही गोपा मुसकराई. दिनरात उन्हें सर्वदा उस के विवाह की चिंता सताती रहती थी. कई बार गोपा ने सोचा था कि मां को संजय के बारे में बता कर उन की परेशानी कम कर दे. पर फिर यह सोच कर स्वयं को रोक लिया कि संजय के बारे में सुन कर मां की एक चिंता दूर हो न हो, अन्य कई चिंताएं आरंभ हो जाएंगी.

"कौन सी परीक्षा की तैयारी हो रही है?" सुदेश ने तीनचार फाइलों समेत प्रवेश किया.

"आज चपरासी को छुट्टी दे दी क्या?"

"कौन सी परीक्षा की तैयारी हो रही है?" सुदेश ने तीन चार फाइलों समेत प्रवेश करते ही गोपा से पूछा.
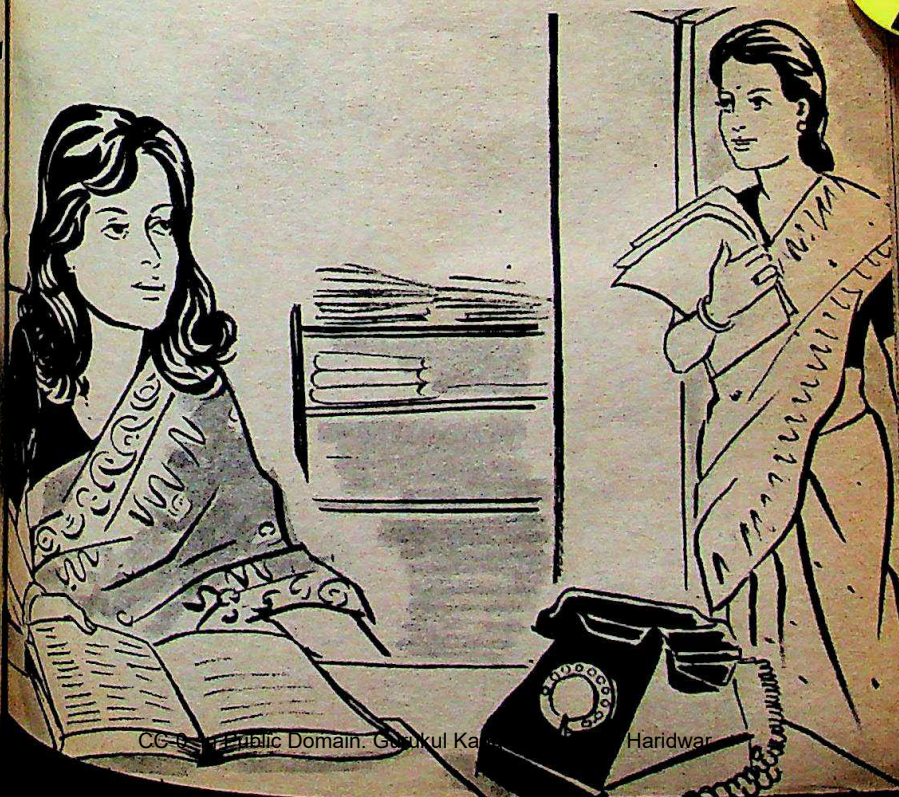
गोपा ने मुसकरा कर पूछा,

"मुझ से अधिक तुझे चपरासी पसंद है?"

सुदेश की बात सुनते ही गोपा के तनबदन में आग लग गई. लेकिन वह खामोश ही रही.

"ओवर टाइम की फाइलों में जरा जल्दी साहब के हस्ताक्षर करवा देना." सुदेश ने कहा तो गोपा ने कोई जवाब न दिया.

"बता न, क्या पढ़ाई कर रही है?" सुदेश ने फिर पूछा.

"यों ही एक प्रतियोगी परीक्षा देनी है."

"अच्छा है. जल्दीजल्दी परीक्षाएं पास करो और यहां से निकलो. टेलीफोन विभाग में तो वही आता है, जिसे और कहीं नौकरी नहीं

...नती." सुदेश सचमुच ... ...ती थी या उस के विभाग से जाने की ...वना पर प्रसन्न हो उठी थी, यह गोपा ... न पाई.
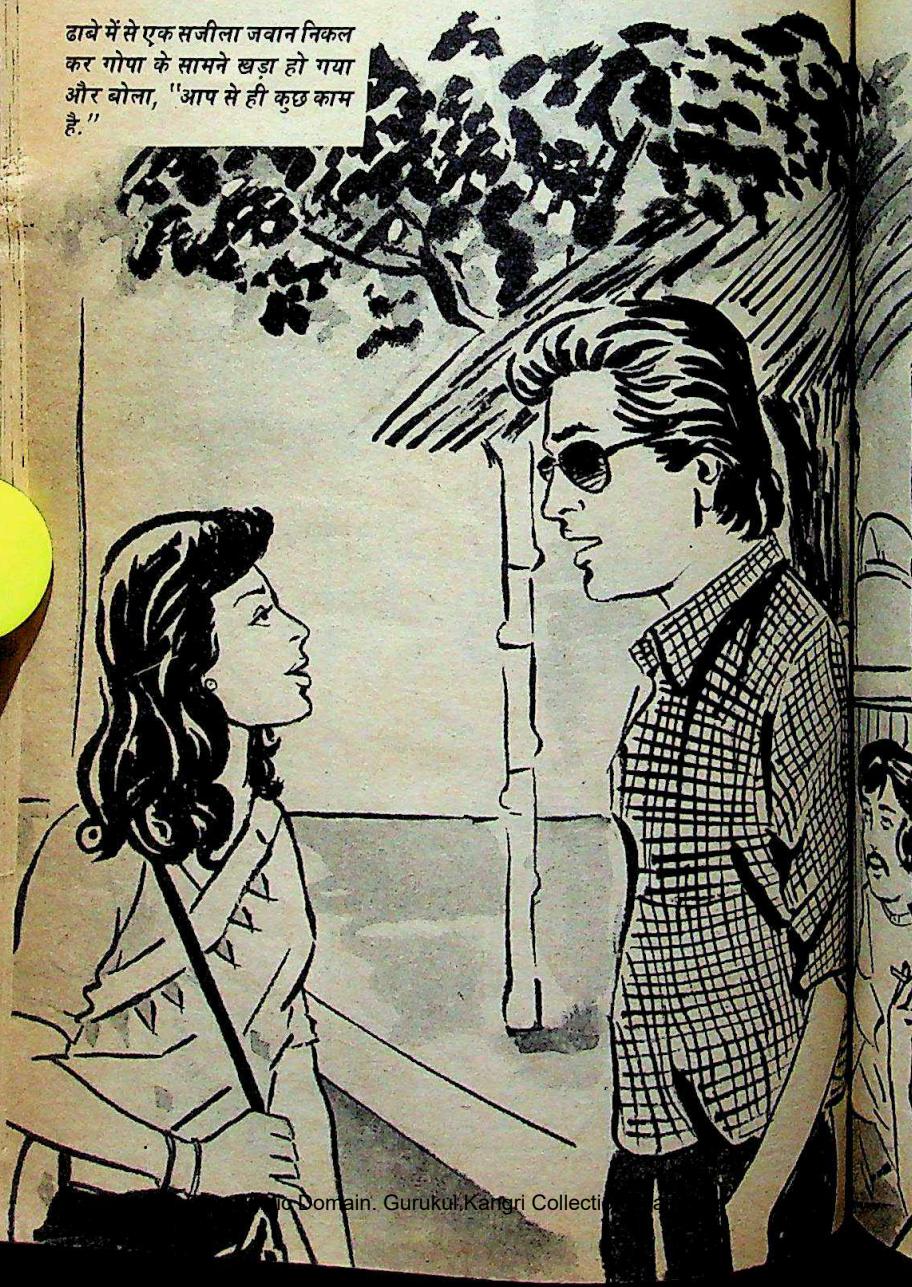
तभी बजर बजने लगा और सुदेश उठ ...ई. मंडल अभियंता ने कलकत्ता का एक नंबर ...लाने को कहा. एकदो बार डायल करते ही क्रास कनेक्शन हो गया. किन्हीं दो आदमियों के बीच नीरस बातचीत हो रही थी. गोपा ने रिसीवर पटक दिया. तभी चपरासी ने आ कर कहा, "साहब पूछते हैं कलकत्ता का नंबर मिला या नहीं?"

"मिलता तो क्या मैं उन्हें लाइन न देती?" गोपा ने गुस्से से कहा और दोबारा फोन उठा कर एक्सचेंज का बटन दबाया. अभी तक वही बातचीत चल रही थी. गोपा ने दूसरा रिसीवर उठाया. उस पर साहब पहले ही बात कर रहे थे.

"नमस्कार मैडम." कनिष्ठ अभियंता विजय सिंह ने आ कर विनयी स्वर में कहा.

"नमस्कार." गोपा का स्वर निर्लिप्त था.

"लगता है, परेशान हैं." विजय सिंह को न जाने गोपा की खुशामद करने की कौन सी आवश्यकता पड़ गई थी.

"परेशानी जैसी कोई बात नहीं." गोपा ने टालना चाहा.

"फिर भी, मुझे बताएं तो सही."

"टेलीफोन लाइन से क्रास कनेक्शन हटा सकते हैं?"

"जी, विजय सिंह हैरानी से बोला." मैं समझा नहीं.

"कलकत्ता का नंबर मिलाना है. बारबार क्रास कनेक्शन हुआ जा रहा है."

"खेद है मैडम, हमारे यहां कुछ महत्त्वपूर्ण उपभोक्ताओं के पास चलतेफिरते टेलीफोन किट उपलब्ध हैं जो उन की कारों में लगे हैं. वे कार चलातेचलाते दुनिया भर के एस.टी.डी. काल कर सकते है. पांच तारा होटलों में ऐसे स्वचालित टेलीफोन यंत्र है जो व्यस्त नंबरों को बारबार डायल करते हैं. आने वाली काल को उपभोक्ता की मरजी से अन्य कमरों या अन्य टेलीफोन नंबरों में स्थानांतरित कर देते हैं. पर इतने तकनीकी विकास के बावजूद हमारे पास क्रास कनेक्शन का इलाज नहीं."

"समझी." गोपा ने कलकत्ता का नंबर डायल करते हुए कहा. लाइन में बहुत सी यांत्रिक आवाजें एक साथ सुनाई दे रही थीं.

"जरा 399 डायल कर के देख लें, कहीं जंक्शन लाइन डाउन न हो." विजय सिंह ने सलाह दी.

399 पर घंटी बजती जा रही थी. लगता था, आपरेटर किसी और काम में व्यस्त है.

गोपा रिसीवर कान से लगाए उस ओर की घंटी सुनती रही. दोतीन मिनट तक बजने के बाद घंटी बंद हो गई.

"कृपया प्रतीक्षा कीजिए. आप कतार में हैं." चारपांच बार टेप किया वाक्य सुनने के बाद आपरेटर ने बात की.

"नमस्कार."

"कलकत्ता का एक नंबर मिलाना था."

कलकत्ता जंक्शन लाइन डाउन है, एक घंटे से." पूछने के साथ ही उत्तर मिल गया.

"पक्का?" गोपा ने निश्चित करना चाहा, पर लाइन उधर से कट चुकी थी.

"मैडम, मेरे केस का क्या हुआ? विजय सिंह ने मौका देख कर पूछा. "अभी तक तो कोई चिट्ठी नहीं आई." गोपा ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"साहब से बात करूं? बैठे हैं क्या?"

"हां बैठे हैं."

विजय सिंह कुछ झिझकते हुए मंडल अभियंता के केबिन में घुस गया.

अगले क्षण बजर बज उठा, "कलकत्ता नहीं मिला?"

"जी, व्यस्त मिल रहा है."

"जरा ढंग से मिलाइए."

"मगर 399 वाले कहते हैं कि जंक्शन..."

"कलकत्ता की कोई जंक्शन डाउन नहीं है." मंडल अभियंता ने रिसीवर रख दिया.

प्रतिपल का अपमान, अवमानना और अवहेलना सहना गोपा के लिए कठिन होता जा रहा था. वह जड़वत कुरसी पर बैठी रही. काम करने की इच्छा ही मर चुकी थी.

कई दिनों तक गोपा के मस्तिष्क में मंडल अभियंता का स्वर मंडराता रहा, "जरा ढंग से मिलाइए." अपने मन के भाव छिपाने में गोपा सदा असफल रही थी. राजबीर, रूपसिंह सभी उस के तनाव को भांप गए थे. इस बीच एक अप्रत्याशित घटना घट गई.

शाम को छुट्टी के बाद घर जाते समय टेलीफोन केंद्र के अहाते से कुछ दूरी पर जामुन के पेड़ के नीचे जो ढाबा था, उस जगह को गोपा तेजी से पार करती थी. सड़कछाप कुछ लड़के वहां बैठे चाय पिया करते थे और बीड़ीसिगरेट फूंकते हुए आनेजाने वालों पर फब्तियां कसते रहते. उन्हीं में से एक दिन एक लंबा, गोरा, सजीला जवान निकल कर गोपा के सामने आ खड़ा हुआ. उसे पहले उस ने कभी वहां नहीं देखा था, फिर भी चेहरा जानापहचाना सा लगा.

"आप से कुछ काम है." युवक ने बेझिझक कहा.

इसी से गोपा समझ गई है कि वह बैठा उस के बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था. गोपा मन ही मन बेचैनी महसूस करने लगी.

"आप के दफ्तर में एक फाइल है, 'प्रभात इंटरनेशनल' नाम की एक कंपनी की. तीन वर्ष पहले कुछ निर्माण कार्य करने के लिए हम खुदाई का काम करवा रहे थे. इस दौरान टेलीफोन विभाग के कुछ महत्त्वपूर्ण केबल क्षतिग्रस्त हो गए थे."

गोपा को याद आ गया कि वह किस फाइल के बारे में कह रहा है और क्या कहना चाहता है. वह बेरुखी से बोली, "यह कोई तरीका नहीं है बात करने का, आप कल दफ्तर में आइए."

"लेकिन यह बात दफ्तर में कैसे हो सकती है." वह गोपा के आगे आ कर खड़ा हो गया. उस की छोटीछोटी आंखें गोपा के चेहरे पर घूम रही थीं.

"जो बात दफ्तर में नहीं हो सकती, उस से मेरा कोई सरोकार नहीं." कहते हुए गोपा सोच रही थी कि अब भी वह सामने से न हटा तो क्या होगा.

लेकिन वह तुरंत मान गया. "ठीक है. तब दफ्तर में ही सही."

चैन की सांस ले कर गोपा ने चलना शुरू किया. उसे अच्छी तरह याद था 'प्रभात इंटरनेशनल' का मामला. जमीन खोदते समय टेलीफोनकेबलों को क्षति पहुंचाने के जुर्म में तत्कालीन मंडल अभियंता ने कंपनी को 80 हजार रुपए जुर्माना भरने का आदेश दिया था जिस के लिए कंपनी तैयार न थी. अब मामला कचहरी तक जाने वाला था. कंपनी वाले यह चाहते थे कि विभाग वालों को पटा कर और खिला कर फाइल ही गायब करवा दी जाए. इस से खर्चा व परेशानी दोनों कम हो जाएंगे.

गोपा ने मन ही मन निर्णय किया कि कल साहब से आज की घटना के बारे में अवश्य बताएगी. पर इस आदमी को कहां देखा था, मस्तिष्क पर जोर डाल कर भी उसे याद न आ

घर पहुंचने पर मां ने सूचना दी, "...पुर से छोटे भैया तेरे लिए एक रिश्ता लाए हैं."

"कब आए छोटे मामा?" प्रसन्न होना तो दूर, सुनते ही गोपा का हृदय धड़क उठा. इस से पहले भी छोटे मामा कई रिश्ते भेज चुके थे, पर गोपा ने हर बार चुप्पी साध ली थी.

"दोपहर को आए हैं. दफ्तर का कुछ काम है. दो दिन बाद लौट जाएंगे."

"ओह, दो दिन तक इस विषय में झेलना होगा." गोपा ने मन ही मन सोचा.

"लड़का अहमदाबाद में बैंक में नौकरी करता है." मां ने उसे लड़के का फोटो दिखाया.

"फिर तो शादी का सवाल ही नहीं उठता. मेरी नौकरी स्थानांतरित नहीं हो सकती." कहते हुए गोपा ने पिंड तो छुड़ा लिया, पर तसवीर देखने की जिज्ञासा रोक न सकी. एक दृष्टि डालते ही गोपा को शाम को मिले प्रभात इंटरनेशनल वाले आदमी की सूरत याद आ गई और यह भी कि वह ज्योति का पति आनंद है. तसवीर वाले युवक की शक्ल आनंद से मिलतीजुलती थी. आठदस महीने बीत चुके थे ज्योति की शादी हुए. फिर उस दिन तो उसे सेहरे और पगड़ी की आड़ में दूल्हे के वेश में देखा था, इसीलिए आसानी से याद न आ रहा था.

'क्या आनंद भी गोपा को पहचान गया होगा? असंभव. शादी की भीड़भाड़ में उस ने कहां ध्यान दिया होगा एक मामूली सी लड़की की तरफ.' ज्योति को गोपा की इस नौकरी के बारे में कुछ विशेष पता नहीं था. आनंद का उस से मिलना संयोग ही था. अपने रिश्ते की बात भूल कर वह आनंद की बातों में उलझ गई.

कहने के बावजूद जब दो दिन तक आनंद दफ्तर में नहीं आया तो गोपा ने राहत की सांस

प्रभात इंटरनेशनल की गोपनीय फाइल को ले कर गोपा मंडल अभियंता के कमरे में गई और बोली, "इस फाइल को अपने पास रख लीजिए."

ली. ज्योति के पति के साथ उस की अप्रिय बातचीत हो, यह गोपा मन से न चाहती थी. फिर भी यह स्पष्ट था कि 'प्रभात इंटरनेशनल कंपनी' सरकारी दबाव में आ कर जुर्माने का भुगतान कभी नहीं करेगी. आनंद से मुलाकात के बाद गोपा ने फाइल को ध्यान से पढ़ा था. यह एक भवन निर्माण कंपनी थी.

"मैडम, फोन है, आप का." राजबीर ने चोगा उस की ओर बढ़ाया.

"कौन है?" गोपा ने लापरवाही से पूछा.

"आप की कोई सहेली, ज्योति."

"ओह." गोपा कुछ पल हक्कीबक्की रह गई. स्वयं न आ कर आनंद ने ज्योति से फोन करवाया था. यानी उसे पता लग गया है कि गोपा ज्योति को जानती है.

"आनंद ने जैसे ही बताया कि एक्सचेंज की लड़की बहुत अकड़ू है तो मुझे तेरा ध्यान आया.

बस, मैं ने उस से नाम पता मालूम करवा लिया." ज्योति की गर्मजोशी में कोई कमी न आई थी.

"कैसी निभ रही है?" गोपा ने दूसरी बात की."

बढ़िया, तू ने कोई फंसाया या नहीं."

"अभी नहीं." गोपा खुले मन से बात नहीं कर पा रही थी

"सुन, क्या तू सचमुच उस फाइल को गायब नहीं कर सकती?" ज्योति ने बिना किसी भूमिका के निस्संकोच कहा.

"नहीं." गोपा ने सपाट स्वर में कहा.

"मैं ने तो सोचा था कि तेरे कारण काम आसान हो जाएगा."

"पर मैं ने सोचा नहीं था कि तू मुझ से इस प्रकार के गैरकानूनी काम की अपेक्षा कर सकती है." गोपा ने गंभीर स्वर में कहा.

"तुम्हारे विभाग में तो इस से भी बड़े गैरकानूनी काम होते हैं." ज्योति ने चिढ़े हुए स्वर में कहा.

"इस का अर्थ यह नहीं कि मैं भी उस भेड़चाल में सम्मिलित हूं."

"इस के लिए साहस चाहिए. रिश्वत ले कर गैरकानूनी काम तेरे जैसे कायर नहीं कर सकते." ज्योति ने जैसे उस की ईमानदारी को चुनौती दी थी.

"रिश्वत लेने में साहस का प्रदर्शन होता है या न लेने में, यह तो विचार योग्य विषय है."

"तू क्या समझती है, तेरी सहायता के बिना हमारा काम अटक जाएगा?"

"ऐसा सोचने की भूल मैं नहीं कर सकती. मेरी औकात ही क्या है." गोपा ने यथासंभव विनयी स्वर में कहा.

इतना सुनते ही उस ओर से ज्योति ने फोन पटक दिया.

अव्यक्त क्रोध और अपमान से गोपा की आंखें भर आईं. वर्षों से चली आ रही दोस्ती जरा सी बात पर समाप्त हो गई थी.

उसी समय गोपनीय फाइलों की अलमारी खोल कर 'प्रभात इंटरनेशनल' की फाइल निकाल कर वह मंडल अभियंता कक्ष में गई, "इस फाइल को आप अपने पास रख लीजिए."

साहब विशेष हैरान न हुए क्योंकि अधिक गोपनीय फाइलें उन्हीं के पास होती थीं. धीरे से बोले, "कोई परेशानी है क्या?"

"कहीं खो न जाए. राजबीर, रूपसिंह भी उस कमरे वाली अलमारी को खोलते रहते हैं."

"ठीक है."

राहत की सांस ले कर गोपा अपनी सीट पर आ बैठी. एक माह के भीतर महा प्रबंधक के आदेश आ गए, 'प्रभात इंटरनेशनल का पूरा जुर्माना बिना किसी शर्त के माफ कर दिया जाए.'

"क्या महाप्रबंधक को यह नहीं बताना चाहिए कि वह किस आधार पर यह जुर्माना माफ कर रहे हैं?" गोपा ने संजय से पूछा था.

"वह अपने अधीन अधिकारी को यह बताने के लिए बाध्य नहीं हैं."

"पर नुकसान कौन भरेगा?"

"टेलीफोन प्रयोग करने वाले और अन्य करदाता भरेंगे."

"साहब भी यह नहीं पूछ सकते कि उन के आदेश का कोई महत्त्व क्यों नहीं?"

"पूछ कर उसे मरना है क्या? उसे अपनी गोपनीय रिपोर्ट की चिंता नहीं होगी? किसी ऐसीवैसी जगह स्थानांतरण कर दिया तो क्या होगा? बीवीबच्चों की सूरत देखने को तरस जाएगा." फिर संजय ने कई बार दिया हुआ अपना सुझाव दोहराया, "तुम यह सब बेकार की बातें क्यों सोचा करती हो?"

—क्रमशः

ईमानदारी हो तो ऐसी

शिमला से जुखाला जाने वाली बस में यात्रा करने वाली सरिता भारद्वाज गलती से अपना पर्स बस में ही भूल गई. उस पर्स में उस के स्वर्ण आभूषण भी थे. बाद में काफी भागदौड़ करने पर भी पर्स का कुछ पता न चला.

अचानक एक दिन सत्यजीत नामक युवक सरिता भारद्वाज का घर पूछता हुआ आया और उन का आभूषणों से भरा पर्स लौटा गया. सत्यजीत को वह पर्स बस में मिला था और उस में दवाइयों की एक परची पर मिले अधूरे पते की मदद से वह वहां तक पहुंचथा.

—पंजाब केसरी

*

उप निरीक्षक पुलिस पदक से सम्मानित

उप निरीक्षक वीरसिंह को उस के साहस एवं विषम परिस्थितियों में भी सूझबूझ का परिचय देने के कारण पुलिस पदक से सम्मानित किया गया.

जब दक्षिण दिल्ली के एक मकान में छः लुटेरे लूटपाट कर के भागने की तैयारी कर रहे थे तभी वीरसिंह ने लुटेरों को ललकारते हुए आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी. एक लुटेरे की गोली वीरसिंह को छूती हुई निकल गई लेकिन वीरसिंह की गोली लुटेरे की जांघ पर लगी.

दो फरार लुटेरों को माल समेत वीरसिंह की मदद से पकड़ लिया गया.

—विश्वमित्र, कलकत्ता

*

जान दे कर जान बचाई

एक गांव के पास के जंगल में कुछ अपराधी किस्म के लोग एक महिला के बकरे को ले जा कर मारने और उस का मांस खाने की मजेदार योजना बना रहे थे. संयोग से वह महिला वहां आ पहुंची.

अपराधियों ने महिला को घातक हथियारों से घायल कर दिया. फलस्वरूप एक जान बचाने के लिए एक जान गवानी पड़ी.

*

छः महीने बाद लेटरबाक्स खुला

कंकालीपारा वार्ड के लोगों को जब अपने किसी पत्र का उत्तर न मिला तो वे चिंता में पड़ गए. आखिर झुंझला कर लोगों ने लेटर बाक्स का घेराव कर दिया और पुलिस तथा डाक अधिकारियों की मौजूदगी में उसे खुलवाया.

जब यह लेटर बाक्स खुला तो इस में से 2500 चिट्ठियां निकलीं, जिन में से कुछ तो छः महीने पुरानी थीं. ●

जितना पैसा उस से अधिक व अच्छा काम

लेख • कि.स. भटनागर

पैसे से अधिक व अच्छा काम करने की आदत जीवन में सफलता रूपी नींव में एक महत्त्वपूर्ण पत्थर साबित होती है. इस से जहां आप की विचारधारा सकारात्मक बनती है, वहीं दूसरे गुण भी स्वतः चले आते हैं. अधिक सेवा का भुगतान न हो, यह हो ही नहीं सकता.

हर कोई चाहता है कि उस की पदोन्नति हो. वेतनभोगी है तो सर्वोच्च अधिकारी बने. व्यापारी है तो लाभ अधिक हो. वकील है तो हाईकोर्ट का एडवोकेट या जज बने. डाक्टर है तो उस के यहां मरीजों की भीड़ रहे. जनसेवक हो तो मंत्री बने और हो सके तो मुख्यमंत्री या प्रधान मंत्री बने.

उसी उपलब्धि को हर कोई अपनी

कार्य के प्रति ईमानदार रह कर ही व्यक्ति जिम्मेदार हो सकता है.
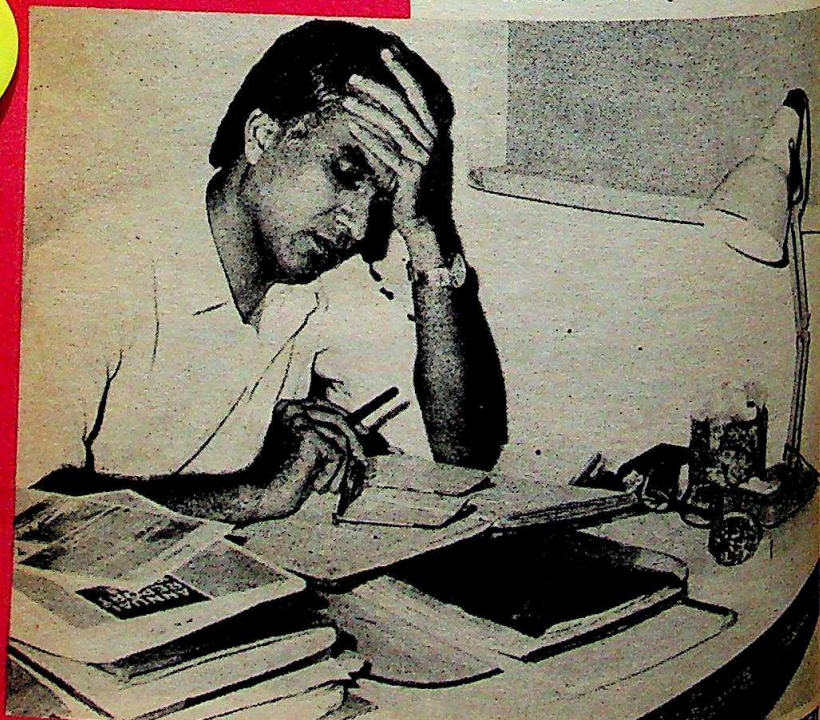
सफलता कहता है. लेकिन दुनिया उसे तभी सफल मानती है जब इस उपलब्धि के साधन स्वच्छ हों और जो कुछ भी पाया गया है वह दूसरों के अधिकारों का हनन कर के या दूसरों की लाशों पर चल कर नहीं.

दुनिया के हजारों सफल व असफल व्यक्तियों का अध्ययन किया गया है. इस अध्ययन से दो बातें स्पष्ट रूप से सामने आई हैं, जिन में से पहली यह है कि सफल व्यक्ति हमेशा सामने लक्ष्य रख कर काम करते थे. बिना प्रतिफल की आशा से पैसे से कुछ अधिक व अच्छा काम देते थे. दूसरी ओर असफल व्यक्ति बिना लक्ष्य काम करते थे और पैसे के बदले उतना ही या उस से भी कम काम देते थे. अधिक काम का अवसर आने पर उस से मिलने वाले लाभ को कल्पनाशक्ति के सहारे तौल लेते थे और लाभ की पूरी संभावना होने पर ही करते थे. अलाभकर स्थिति होने पर अपना हाथ खींच लेते थे.

जरा अपने जीवन की कुछ घटनाओं का विश्लेषण कर के देखिए. ऐसे अनेक अवसर आए होंगे जब आप ने अनजाने ही पहले गुर से काम किया होगा. उस से आप को क्या लाभ देरसबेर मिला होगा, आप को मालूम होगा.

जब भी आप को नौकर की आवश्यकता होती है तो आप अपने दोस्त से यही कहते हैं, 'भाई, एक नौकर चाहिए पर कामचोर न हो, ईमानदार हो.' जब आप को कोई सामान खरीदना होता है तो आप पूछते हैं, 'ऐसी दुकान बताओ भाई, जहां मिलावट न होती हो और आंख बंद कर सामान खरीद सकूं.'

सवाल उठता है कि जब आप अपने लिए अच्छा काम करने वाले नौकर और बेहतर माल की तलाश करते हैं तो आप से यह अपेक्षा करना क्या उचित न होगा कि जो सेवा आप दूसरों को दें उसे पूरी ईमानदारी से दें. यह कहने से काम नहीं चलता कि आजकल जमाना बदल गया है, ईमानदारी को कौन पूछता है. सच तो यह है कि हम आज भी ईमानदार आदमी तलाशते हैं. मिले या न मिले यह बात दूसरी है. कामचोर दूसरे के कंधे अपना कर भले ही थोड़ी देर के लिए
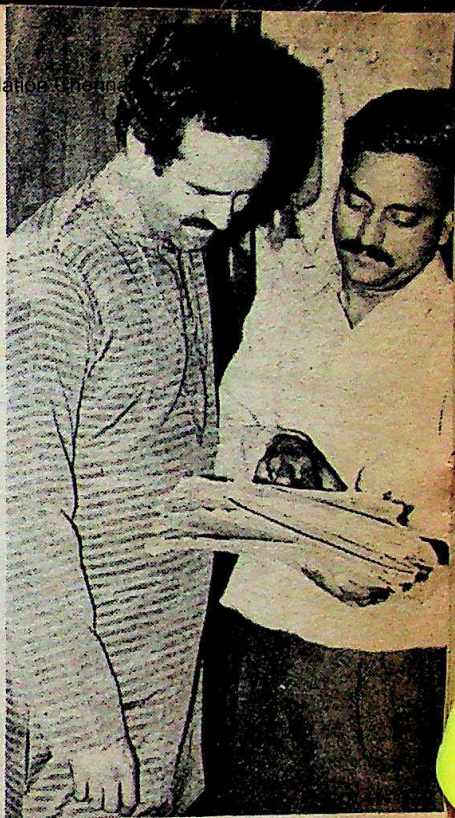
मेहनत से काम करने पर कम से कम तनाव की स्थिति तो पैदा नहीं होती.

जुगनू की तरह चमक ले पर अंततः नकाब उलटती ही है. यदि एक बार किसी की ईमानदारी पर विश्वास हो जाता है तो हम तब तक उस का विश्वास करते हैं जब तक वह विश्वास तोड़ा नहीं जाता.

मेहनत कभी बेकार नहीं जाती

हमारा एक साथी जिस ने एक कार्यशाला में लिपिक का काम करते हुए एम.ए. पास किया था. उस ने सोचा कि एक पत्रिका निकाली जाए. अपनी लगन से उस ने एक हस्तलिखित पत्रिका तैयार की. मुख पृष्ठ बड़ा आकर्षक बनाया और अपने मैनेजर को पेश की . वह प्रसन्न हुए. संयोगवश उसी समय मंत्री का दौरा लगा. मंत्रीजी उस पत्रिका से इतने प्रभावित हुए कि एक मासिक पत्रिका निकालने का आदेश दे गए. मैनेजर ने उसे संपादक बना दिया. वेतन चार गुना हो गया.
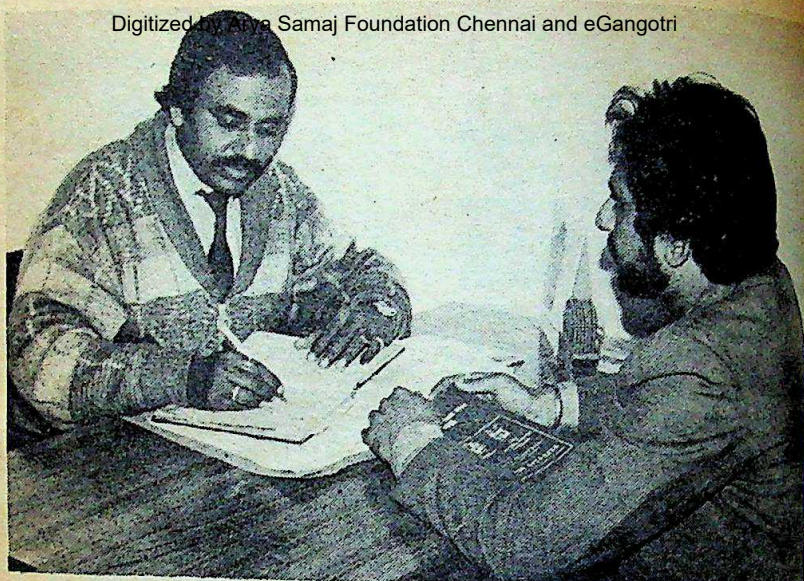
कार्य के समय अपनी एकाग्रता को अपने लक्ष्य की ओर ही रखिए, क्योंकि जरा सी भूल भी आप के बने विश्वास को तोड़ सकती है.

सम्मान भी मिला. बिना किसी प्रतिफल की आशा से किया गया काम इतना सुंदर परिणाम ले कर आया. फिर तो रास्ता खुल गया. आज वह पी.एच.डी. कर एक कालिज का प्रधानाचार्य है.

हमारे ही दफ्तर में एक लिपिक ने आशुलिपि सीख रखी थी पर कोई रिक्त स्थान न होने से उसे कोई लाभ नहीं मिल रहा था. तभी उस ने अपने काम के साथ ही स्वेच्छा से एक उच्च अधिकारी को अपनी आशुलिपिकीय सेवाएं देनी शुरू कर दीं. साथी उस का मजाक उड़ाते, "अरे, कुछ मिलता भी है या यों ही खटता है." उन्हें क्या पता था कि उस की सदाशयता का भंडार भरता जा रहा था. कुछ समय बाद उस उच्च अधिकारी के एक मित्र को आशुलिपिक की जरूरत हुई. जिक्र चला तो उच्च अधिकारी ने उस की सिफारिश कर दी. वह दुगने वेतन पर चला गया और आज अपने संस्थान में एक महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्त है. यदि उस ने अपने काम से काम रखा होता तो आज भी वह लिपिक ही होता.

प्रतिदिन हमें अनेक लोगों से वास्ता पड़ता है. कोई हमारे बगीचे में काम करता है, कोई सफाई करने तो कोई बरतन साफ करने आता है. यदि माली से कहो कि कटाईछंटाई कर के कूड़ा बाहर फेंक देना तो झट कह देगा, यह मेरा काम नहीं. सफाई वाले से जरा सा अतिरिक्त काम करने को कहो तो झट इनकार कर देगा. यदि मेहमान आने से बरतन अधिक हो जाते हैं तो उन्हें पटकपटक आप को अपनी अप्रसन्नता जतला देगा.

ऐसे सभी लोग जीवन भर वहीं काम करते रहेंगे जो आज कर रहे हैं, यह एक ध्रुव सत्य है. यदि वे तनिक अच्छा और अधिक काम बिना उज्र किए मन से करें तो हो सकता है आप उन्हें बेहतर काम दिलवा दें. पर जब वे अपना ही काम ठीक से नहीं करते तो अवसर आने पर आप उन की सिफारिश क्यों करेंगे.

संसार में 95% लोग पैसे के बराबर या उस से कम काम देने में विश्वास रखते हैं. अतः केवल 5% लोग जो अच्छा और अधिक काम देने को तत्पर रहते हैं, उन के मुकाबले चमक जाते हैं. उन की सेवाएं पाने की होड़ सी लग जाती है. चारों ओर उन की कर्तव्यनिष्ठा

की महक फैलती है. यदि मालिक पदोन्नति नहीं देता तो दूसरे अधिक पैसा दे कर उन्हें ले जाते हैं.

पैसे से अधिक और अच्छा काम कर हमें आत्मसंतोष मिलता है. चरित्र बल बढ़ता है. मनोबल ऊंचा होता है. मानसिक शांति मिलती है. शांत मन एवं उच्च मनोबल से हम और अनेक कार्य कर सकते हैं. तनाव की स्थिति तो पैदा ही नहीं होती.

किसी भी काम को करने से हमें दोहरा लाभ मिलता है. प्रथम है धनप्राप्ति. यह लाभ कम या अधिक हो सकता है. दूसरा लाभ यह कि दूसरे की पूंजी पर आप अपनी प्रतिभा का विकास करते हैं. यह बहुत महत्त्वपूर्ण एवं स्थायी लाभ है. काम छूटने पर आप अपने संचित अनुभव से अपना काम जमा सकते हैं. नौकरी तो मालिक छीन सकता है पर हुनर तो आप के ही पास रहता है.

परिश्रम से अधिक परिणाम मिलता है, यह एक प्राकृतिक नियम है. बस शर्त यह है कि काम मन से, बिना लाभ की आशा के किया गया हो. किसान का उदाहरण लीजिए. फसल तो कटती है चार माह बाद पर उस के पहले जमीन तैयार करनी पड़ती है. उसे जोतना, बोना, खाद देना, निराई, गुड़ाई आदि काम करने होते हैं फिर उसे प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता है. मौसम ठीक रहा तो भरपूर फसल, नहीं तो कम या अधिक वर्षा होने से फसल को नुकसान भी हो सकता है. पर किसान इस की चिंता किए बगैर अपना काम करता रहता है. जो जितनी सेवा करता है उसे उतना ही मेवा मिलता है. जो भावी संभावनाओं को देख कर कम काम या श्रम करता है, कम फसल पाता है. भविष्य में क्या छिपा है इस की चिंता किए बगैर जो मनोयोग से काम करता है, वह घाटे में कभी नहीं रहता.

किंतु हम मनोयोग से काम कैसे करें,यह समस्या है. यदि काम में मन नहीं लगता तो काम अच्छा होने से रहा. यदि हम कार्य को प्यार से करते हैं,जैसा कि कलाकार करता है, तो हम उस काम को अधिक समय तक बिना थके कर सकते हैं. यदि हम किसी दूसरे के लिए काम करें जिसे हम प्यार करते हैं तो भी हम अधिक अच्छा काम कर सकते हैं. काम से

आप की योग्यता और कार्य के प्रति निष्ठा ही आप को पद और प्रतिष्ठा दे सकती है.

प्यार होने से वह और अधिक अच्छा होता है.

अकसर यह पाया गया है कि जिस काम से हमारी रोटी चलती है उस से हमें प्यार नहीं होता. उसे हम गले पड़ा ढोल समझ कर बजाया करते हैं. पर इस से तो काम नहीं चलता. इस मनोवृत्ति से नीरसता पैदा होती है जिस से तनाव उत्पन्न होता है. यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है. इस स्थिति से बचने के लिए हमें कार्य से प्यार करना होगा.

यदि काम अपनी रुचि का नहीं है और अब समय नहीं है कि उसे बदला जा सके तो उस से समझौता कर प्यार करना होगा. दुनिया में हर तबके के आदमी की जरूरत होती है. जो भी परिश्रम से, मन लगा कर काम करता है, संसार उसे अपना खजाना सौंप देता है.

संसार में तीन तरह के प्राणी होते हैं. एक तो वे जो काम में पहल करते हैं. बिना किसी के कहे स्वयं निर्णय ले कर काम करते हैं. इन्हें मानसम्मान, धन आदि प्रचुरता से मिलता है.

दूसरी श्रेणी के लोग केवल आज्ञापालन करना जानते हैं. उन्हें अपनेआप कुछ नहीं सूझता. इन्हें धन तो मिलता है पर मानसम्मान नहीं मिलता.

तीसरी श्रेणी के लोग केवल मजबूरी या दबाव में काम करते हैं. इन्हें दो जून की रोटी किसी तरह मिल जाती है पर मान तो मिलता ही नहीं.

पैसे से अधिक व अच्छा काम करने की आदत पड़ जाने से सफलता की नींव में एक महत्त्वपूर्ण पत्थर लग जाता है. इस से विचारधारा सकारात्मक बनती है. फिर दूसरे गुण स्वतः ही चले आते हैं. अधिक सेवा का भुगतान न हो, यह हो ही नहीं सकता.

प्रकृति का नियम है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है. कभी प्रतिफल सीधे रास्ते से आता है कभी अनजाने से, पर आता अवश्य है. जितनी देर से आता है उतना ही अधिक व अच्छा होता है. यदि काम के बदले फौरन पैसा मिल गया तो चक्कर पूरा हो गया. कुछ और मिलने का सवाल ही नहीं रहा. काम किया था पैसा मिल गया, हिसाब चुकता हो गया.

यदि पैसा उस समय नहीं मिलता, पारिश्रमिक उसी समय नहीं ले लिया जाता तो दूसरे पर उस का बोझ रहता है. वह उस बोझ को किस प्रकार उतारेगा, कोई नहीं जानता, पर उतारेगा जरूर.

एक पत्रिका के संपादक एक कालिज में भाषण देने गए. पारिश्रमिक तय हो चुका था. वह उस कालिज से अत्यंत प्रभावित हुए. उन्होंने ही कुछ सीखा भी. उन के भाषण ने भी सब को प्रभावित किया. जब चेक दिया गया तो लेने से इनकार कर दिया. कहा, "यहां आ कर मैं ने जो कुछ सीखा है उस की कीमत इस चेक से बहुत अधिक है. पारिश्रमिक मिल चुका है." उन के इस उदार व्यवहार की चर्चा रही. प्रिंसिपल ने पत्रिका की चर्चा विद्यार्थियों से की. ढेर सारे विद्यार्थी उस पत्रिका के ग्राहक बन गए.

उदारता से मदद करो

यदि हम अपने किसी भी लाभप्रद कार्य का विश्लेषण करें तो पाएंगे कि इस के बीज किसी अच्छे कार्य के रूप में कुछ समय पहले बोए गए थे. उस समय बिना किसी प्रतिफल की आशा के किसी की सहायता की थी, वही बीज आज वृक्ष का रूप ले कर फल देने लगा है.

नियम है, जितना दोगे उतना या उस से अधिक पाओगे. देना बंद कर दोगे तो मिलना भी बंद हो जाएगा. उदारता से दोगे, प्रचुरता से मिलेगा. देना पहले होगा, पाना बाद में. कहावत भी है, 'इस हाथ दें उस हाथ लें.'

असली आनंद भौतिक वस्तुओं के स्वामित्व में नहीं मिलता. वह तो मानव मात्र को अपनी सेवाएं अर्पित करने से मिलता है. क्या दिया जा सकता है, कितना दिया जा सकता है, इस की कोई सीमा नहीं है. यह कहना कि हमारे पास देने को कुछ नहीं है क्या दें, गलत है.

धन तो मामूली वस्तु है, हाथ का मैल है. उदारता से मदद दो. बिना मांगे अपनी सेवा दो. आप का अपना धंधा है उस में लोगों को ईमानदार बनाने में चलो. यदि 10 सेवाएं पैसा ले सकता

...देते हो, एक बिना पैसे के दो. यदि दस चीजों से पैसा लिया है तो दोतीन का मुफ्त ...कर दो.

यदि तत्काल लाभ नहीं मिलता तो भी ...म किए जाओ. नियम बना लो कि प्रतिदिन एक व्यक्ति को बिन मांगे अपनी सेवा प्रदान करनी है. सेवा के बदले पैसा मत लो. यदि कोई दे भी तो टाल दो. इस एक रवैए से ...दाशयता का भंडार भरेगा.

महान चिंतक इमरान ने कहा है, ''कार्य ...रण, साधन परिश्रम, बीज व फल एकदूसरे से अलग नहीं किए जा सकते, क्योंकि परिणाम तो कार्य ही में छिपा रहता है और बीज फल में. यदि आप का मालिक कृतघ्न है तो उस की सेवा और करो. प्रकृति को अपना कर्जदार बनाओ. हर सेवा का फल मिलेगा. जितनी देर ...का रहेगा आप के लिए अच्छा है, क्योंकि इस बैंक में ब्याज चक्रवृद्धि दर से मिलता है.''

हर व्यक्ति स्वार्थी होता है. जीवन संग्राम में विजय पाने के लिए स्वार्थ आवश्यक भी होता है. हां, सीमा से अधिक स्वार्थी होने से हानि भी हो जाती है. यदि आप का मालिक स्वार्थी है तो कोई आश्चर्य नहीं. आप अपनी सेवाएं इस तरह अर्पित करें कि आप उस के लिए अनिवार्य व अत्यावश्यक व्यक्ति बन जाएं. ऐसा होने पर उस का इसी से स्वार्थ सिद्ध होगा कि वह आप को अपने पास रख कर मुंहमांगी कीमत दे. जब उसे आप की आवश्यकता होगी तो आप अपना वेतन स्वयं ही तय करने की स्थिति में होंगे.

एक बात और ध्यान में रखने की है कि किसी भी माहौल में कुछ भी करने से लाभ होता है. दो हजार साल पहले बेनहर नामक एक गुलाम था. मालिक दुष्ट था. वह उसे जंजीर से बांध कर चौबीसों घंटे उस से पतवार चलवाता था. चाबुक ले कर सिर पर सवार रहता था. गुलाम अपना काम मनोयोग से करता था इस से उस के शरीर का गठन सुंदर हो गया था. भुजाएं बलिष्ठ हो गई थीं.

एक बार रथों की दौड़ के समय उस के मालिक का सारथी बीमार हो गया. मालिक परेशान हुआ. उस की नजर बेनहर पर पड़ी. उसे ही सारथी बना कर प्रतियोगिता में दौड़ा दिया गया. बेनहर जीत गया. पारितोषिक के रूप में उसे गुलामी से मुक्ति मिली.

जीवन स्वतः रथों की दौड़ है. सफल वे ही होते हैं जिन के चरित्र की दृढ़ता व विनम्रता ने विजय की अदम्य इच्छा जाग्रत कर ली हो. शक्ति हमेशा प्रतिरोध व संघर्ष से ही पैदा होती है. दो पत्थरों को रगड़ने से आग पैदा होती है. नियम है, कार्य करो शक्ति प्राप्त होगी जो कार्य नहीं करेगा उसे शक्ति नहीं मिलेगी. यह कार्यपद्धति हमें सफलता की ओर ले जाने वाला अजेय रथ है.

इस मनोवृत्ति को अपनाने से हमारी विचारधारा सकारात्मक हो जाती है. हम उन की नजर में आ जाते हैं जो हमारी पदोन्नति कर सकते हैं, हम अत्यावश्यक व्यक्ति की श्रेणी

अब सौर विद्युत उत्पादन का उज्ज्वल भविष्य

सूरज की ऊर्जा से बिजली पैदा करना अभी तक पुराने तरीके के मुकाबले महंगा है. फिर भी व्यापारिक सौर विद्युत केंद्र चलाना असंभव नहीं है. केलीफोर्निया की 'लुज' कंपनी ने 1983-84 में अपना पहला सौर विद्युत उत्पादन संयंत्र स्थापित किया था और इस समय उन का आठवां संयंत्र निर्माणाधीन है.

'लुज' कंपनी की 'परवलीय-खांचों की' तकनीकी इतनी उत्तम है कि यह उद्योगपतियों को पूंजी के निजी निवेश के लिए प्रेरित करती है. संयंत्र में पैदा की जाने वाली कुल बिजली का 76% उत्पादन सौर ऊर्जा द्वारा और शेष 24% गैस द्वारा किया जाता है.

में आ जाते हैं. वेतन तो फिर बढ़ता ही है, हमारी मानसिक प्रगति भी होती है. कार्य कुशलता बढ़ती है. अर्जन शक्ति बढ़ती है. नौकरी से निकाले जाने का भय नहीं रहता. साथ ही बेहतर नौकरी पाने का सिलसिला बनता चलता है.

हम इन नियमों पर अमल करने से चमक उठते हैं. हमारी शक्ति का विकास होता है. हम में आत्मविश्वास, साहस व उत्साह भरता है. टालू प्रवृत्ति से छुटकारा मिलता है. अपना लक्ष्य निर्धारण करने में मदद मिलती है. लक्ष्यहीनता के अभिशाप से बचते हैं. हमारे मस्तिष्क का पैनापन बढ़ता है. हम दूर क्षितिज तक स्पष्टता से देख सकते हैं.

किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए लक्ष्य निर्धारण, आत्मनियंत्रण, आत्म-विश्वास, सहनशीलता, लगन, उत्तम मनोवृत्ति, संयम व धन की बचत की आदत, उत्साह एवं सहयोग आदि गुणों की आवश्यकता होती है. पर यदि हम में केवल एक गुण यानी बिना प्रतिफल की आशा के अधिक व अच्छा काम देने की वृत्ति आ जाए तो बाकी सब स्वतः ही प्राप्त हो जाएंगे.

पैसे से अधिक और अच्छा काम देने में हमारा अपना स्वार्थ है. इस गुण को हम विकसित करें. आज ही निर्णय लें कि प्रतिदिन बिना प्रतिफल की आशा के किसी न किसी को अपनी सेवा देंगे. एक माह में हमारी सदाशयता का भंडार इतना भर जाएगा कि उदारता से उलीचने पर भी रिक्त नहीं होगा.

ब्रांडेनबर्ग दरवाजा खुलने पर लोगों में खुशी की लहर

ब्रांडेनबर्ग दरवाजा टूटने से पूर्व और पश्चिम के हजारों जरमनों में खुशी की लहर दौड़ गई. वे खुशी से नाचने झूमने लगे. यह दरवाजा बर्लिन दीवार बनने के साथ ही 20 वर्षों तक बंद रखा गया था. अब दीवार टूटने के साथ ही इसे भी खोल दिया गया है तथा पूर्व और पश्चिम जरमनी के नागरिक बिना किसी रोकटोक के एकदूसरे के यहां आ जा रहे हैं. समस्त यूरोप में शांति और स्वतंत्रता की स्थापना ही उन का मुख्य संदेश है.

500 किलोमीटर प्रतिघंटे चलने वाली 'होवरट्रेन'

500 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ने वाली 'ट्रांसरैपिड' नाम की एक अति आधुनिक रेलगाड़ी (होवरट्रेन) का निर्माण किया गया है. वर्तमान में यह 100 किलोमीटर तक बिछाई गई विशेष पटरी पर चल रही है. इस के यात्री मात्र 15 मिनट में ही यह दूरी तय कर लेते हैं. इस नई 'होवरट्रेन' से भविष्य में काफी आशाएं बनी हैं. विश्व बाजार में भी लोग इस 'होवरट्रेन' के बारे में महत्त्वपूर्ण रुचि ले रहे हैं. इस समय इस 'होवरट्रेन' ने अधिकतम गति 430 किलोमीटर प्रतिघंटे कायम कर ली है.
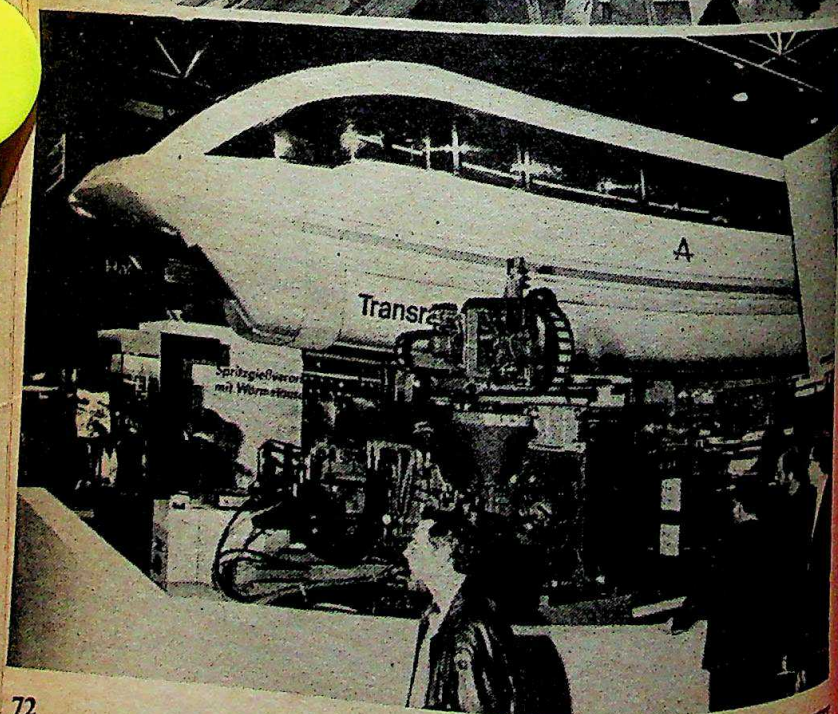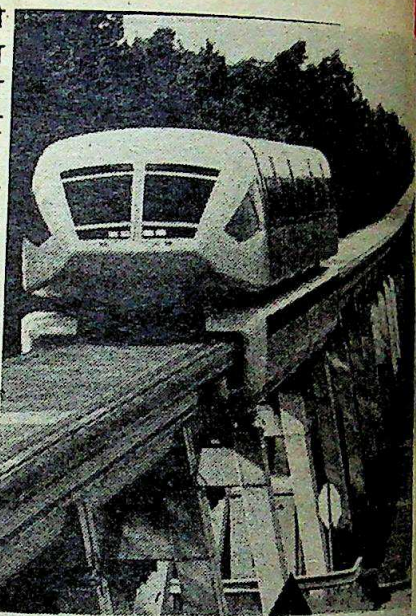
कशमीर की आग बुझाने में विपक्षी पहल

कशमीर की बिगड़ती स्थिति को संभालने के लिए प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की पहल पर प्रमुख राजनीतिक दलों के नेता 8 मार्च को श्रीनगर गए थे.

श्रीनगर में कर्फ्यू होने के कारण दिल्ली से गए नेता कुछ तो करते ही अतः होटल के कमरे में बैठ कर राष्ट्र की प्रतिष्ठा पर बहस करने लगे. जसवंतसिंह और राजीवगांधी सिर्फ इस बात पर बहस कर रहे थे कि जगमोहन उपप्रधान मंत्री देवीलाल के बाएं क्यों बैठे?

देश के हाल पर बेहाल राजनीतिबाज पांचतारा होटल में और करते भी क्या. खास कर उस स्थिति में जब प्रतिद्वंद्वी सामने हैं.

शायद नहीं

कहानी ● राका
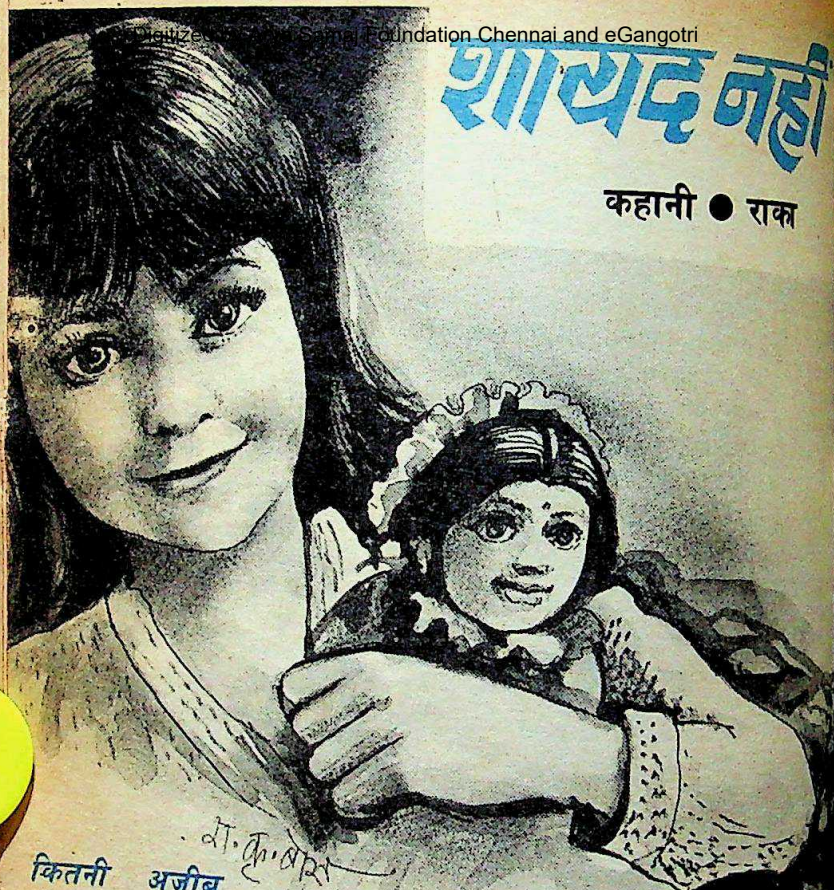
कितनी अजीब दोस्ती थी झंकार से मेरी. न मैं ने कभी उस के बारे में जानने की कोशिश की और न ही कभी उस ने कुछ बताया. पर एक दिन जब असलियत को जाना तो मैं हक्कीबक्की रह गई...

...त्रावास

में आए मुझे दोतीन दिन ही हुए थे.

...शुरू में कुछ भी अच्छा नहीं लगता था, न ...न और न ही माहौल. छात्रावास में रह कर ...ने का उन्माद तो अगले दिन ही खत्म हो ...था, जब निहायत अजनबी लोगों में अपने ...कला पाया था. बस हर वक्त घर की याद ...घेरे रहती थी. कालिज और छात्रावास ...में जगह हरदम रैगिंग का खौफ मन में ...बना रहता. न यहां स्नेहिल मां थी, जो हर ...ध्यान रखती न ही पिताजी का सशक्त ...था, जिस पर झूल कर जो चाहे बात ...मना लेती.

ऐसे माहौल में अगर कुछ अच्छा लगता था तो वे थीं रात को झील में झिलमिलाती बत्तियां या फिर दूर ऊंचेऊंचे मखमली पहाड़ों पर जटाओं की तरह फैले रंग से रंग मिलाते पेड़, जिन के बीच लाल रंग की पहाड़ी मकानों की छतें एक अलग ही समां बांध लेती थीं. मौसम इतना अनिश्चित कि कभी भी बारिश शुरू हो जाती और सड़कें रंगबिरंगी छतरियों से भर जातीं. बारिश थमती तो नावों की भागदौड़ से झील में हलचल मच जाती.

इसी प्राकृतिक सौंदर्य व अपनी उदासियों के संधिस्थल में अचानक गैलरी में एक प्यारी, गुड़िया सी मुसकराती बच्ची लाल ऊनी कोट व टोपा पहने घूमती दिखाई दी. उस के नन्हे गुलाबी गालों पर मानो पहाड़ी हवाओं ने मुट्ठी भर अबीर फेंक दिया था. उस के आगे के सुनहरी बाल उस की टोपी से निकल कर माथे पर अठखेलियां कर रहे थे और दो नन्हीं चोटियां पीछे झूल रही थीं. उस की बड़ीबड़ी गोल आंखों में जहां खामोश मासूमियत थी, वहीं बाल सुलभ उत्सुकता भी थी.

पहाड़ों में इतना गोरा रंग कोई आश्चर्य की बात नहीं, पर उस के नैननक्श किसी भी राजकुमारी का एहसास कराते थे, उस की मौनचंचल आंखें मेरी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा रही थीं. न जाने उस अजनबी चेहरे में क्या आकर्षण था कि मैं ने भी उदासी को परे ढकेल अपना हाथ उस की ओर बढ़ा दिया. नाम था, उस का झंकार. वैसे प्यार से उसे सब बिट्टू कहते थे.

फिर दोतीन दिन उस का कहीं पता न चला. यों भी मैं छात्रावास व कालिज के नए वातावरण में व्यस्त हो गई थी. एकदो बार उस के बारे में पूछा भी तो कुछ पता न चल सका.

अचानक एक दिन फिर बिट्टू मेरे कमरे के बाहर बैठी आंसू बहा रही थी. पूछने पर पता चला कि उस की किसी सहेली ने उस की गुड़िया की साड़ी खराब कर दी है जो उस ने बड़ी कठिनाई से बांधी थी. खैर, किसी तरह उसे टाफी बिस्कुट दे कर चुप कराया और उस की गुड़िया मनपसंद तरीके से सजा दी. झंकार को दिया गया यह सहयोग हमारी दोस्ती को और पक्का कर गया. पुरस्कार स्वरूप मेरे गाल पर दोस्ती का नन्हा सा चिह्न दे कर चली गई.

अब तो झंकार हमारे लिए एक तरह से रोज की दिनचर्या बन गई. कभी अपने नन्हे

असलीनकली बापों के बीच नन्ही झंकार किसी गुड़िया से कम नहीं थी.

हाथ मटका कर मुझे अपनी याद की हुई कविताएं सुनाती तो कभी पहाड़ी नृत्य दिखाती. इस बीच कई बार मैं ने उसे अपनी साड़ी पहना कर हलका सा मेकअप कर दिया तो वह नन्हीं दुलहनिया सी इठलाती फिरी. झंकार किसी महंगे अंगरेजी स्कूल में पढ़ती थी. स्कूल जाते समय वह विट्टू का चोला उतार कर स्कर्ट ब्लाउज व बलेजर का लाल कोट पहन, जूतेमोजे कस, टाई लगाए हमें दूर तक हाथ हिलाती निकल जाती.

कितनी अजीब दोस्ती थी झंकार से मेरी. न मैं ने कभी उस के बारे में जानने की कोशिश की और न ही कभी उस ने कुछ बताया. पर वह अकसर अपने एक बाबा का जिक्र किया करती थी. मैं तो सोचती थी कि वह कहीं आसपास के मकानों में रहने वालों की बेटी होगी. पर बाद में पता चला कि झंकार हमारे होस्टल में भोजन की व्यवस्था करने वाले ठेकेदार की बेटी थी. यह बड़ी बेमेल सी बात लगी. कहां तो यह प्यारा सा नटखट चेहरा, कहां उस के बाप का निपट उजड्ड सा व्यक्तित्व जिस की भावहीन कठोर मुद्रा किसी को भी प्रसन्नता नहीं दे सकती थी. उस के

…बूढ़े चेहरे की रेखाएं भोजनालय में
…करने वाले नौकरों को डांटते हुए और भी
…हो जाती थीं. टेढ़ेमेढ़े बड़ेबड़े
…नियम के भगौनों में घंटों जोरजोर से
…चलाने के बावजूद उस के द्वारा तैयार
…गया भोजन भी उस के चेहरे की
…ता सा स्वादहीन ही होता था. अकसर
…दाल में दाना ढूंढ़ने के लिए छात्राओं से
…की झड़प भी हो जाया करती थी.

…महीने में एकआध बार खाने में से
…या कीड़ा निकलना आम बात हुआ
…थी. ऐसा होने पर हम सब बिना किसी
…सूचना के खाना बनने के बाद हड़ताल कर
… जिस से एकदो रोज भोजनालय के खाने से
…मिल जाया करती और हमें नीचे जा कर
…खाने की इजाजत. फिर वह आगे से
…खाना देने की कसमें खाता. कई मीनू
…करता तब जा कर समझौता होता.

पर दो दिन बाद फिर वही पुराना ढर्रा
…जाने लगता. खैर 'यह सब चलता है,'
…कर मैं मस्त थी. इस से न तो विट्टू और
…दोस्ती में फर्क आना था न आया ही.

एक दिन मैं कमरे में बैठी पढ़ रही थी कि
…परदे को हटाती कुछ सकुचाती शरमीली
"मुझको देखो" कहती विट्टू मेरे सामने खड़ी
…उदास पलों में खिलखिलाहट देने वाली
…का बदला हुआ रूप देख कर मैं तो सकते
…गई. उस के रंगबिरंगे लहंगे ओढ़नी की
…गुलाबी फ्रिल वाले कीमती विदेशी फ्राक
…ली थी. उस के पायल छमकाते पैर, घुटने
…के सफेद झक जालीदार मोजों व सफेद
…में लिपटे थे. उस की नन्हींनन्ही चोटियां
…प्यारे से पोनीटेल में साटिन के रिबन से
…से बंधी थीं. लगा या तो यह गुड़िया
…ड्रीम शो में जा रही है या मैं सपना देख
…हूं.

मुझे सोच में पड़े देख वह कहने लगी कि
…के असली पिताजी आ गए हैं. अब वह
…से ले कर विलायत चले जाएंगे. वह उस
…ढेर सारे खिलौने, चाकलेट, कीमती
…और न जाने क्याक्या लाए हैं.

'असली पिताजी,' मैं हैरान सी उसे देख
…न जाने क्या बोल रही थी वह पर
…पता चला कि वह सच कह रही थी.
…तक तो सिर्फ सुना ही था कि सच कड़वा
…है पर कितना कड़वा होता है यह तभी
जाना था. बड़ा अजीब लगा सुन कर सब. उस
पल लगा कि आदमी अपनी महानता की हद
को किसी भी रूप में छू सकता है. बाहर से
कठोर चेहरे पर पड़ी झुर्रियां किसी कोमल हृदय
पर पड़ी खराशें भी हो सकती हैं. यों तो हर
शख्सीयत खुद में एक किताब होती है पर जब
तक किसी किताब के पन्ने पलट कर न देखें
तब तक उस का एहसास कर पाना कठिन
होता है.

अपने सोच के समुद्र में गोते खातेखाते
विट्टू की विदाई का दिन भी आ गया और
जातेजाते उस ने फिर मुझे झंझोर कर इसी
दुनिया में घसीट लिया. अपनी प्यारी नन्ही
बांहों के घेरे में ले कर बोली, "जब बहुत जोर
से हवाई जहाज छात्रावास के ऊपर से गुजरेगा
तो मैं बाबा व आप सब को 'बाइबाइ'
करूंगी."

सारा छात्रावास उसे विदा करने के लिए
जुटा था. वहां हर लड़की से उस की रिश्तेदारी
थी. अकसर हम उसे 'छात्रावास की बिटिया'
कहा करते थे.

"वहां से मैं आप को खत लिखूंगी. मेरे
पिताजी मुझे बहुत से बड़ेबड़े खिलौने दिलाएंगे.
चाबी से चलने वाले... बोलने वाली गुड़िया भी
और..." न जाने क्याक्या वह सब के गले मिल
कर बोल रही थी. न जाने कितने रंगीन सपने
उस की आंखों में आ कर बस गए थे.

पर वह नन्ही सी जान यह न समझ सकी
कि कोई ऐसा भी है इस संसार में जो
अपनी दुनिया की अमूल्य निधि सचमुच की
गुड़िया किसी को चाबी से चलने वाली गुड़िया
दिलाने के लिए भी दे सकता है. वह गुड़िया जिस
के लिए वह जीता है, जागता है, सोचता है जो
उस की दुनिया की राह भी है और मंजिल भी.

सच ही वह उस ठेकेदार की सब कुछ
थी. जब वह अपने किसी अंगरेज साहब का
खानसामां था जो कुछ दिनों के लिए अपनी
भारतीय बीवी के साथ भारतदर्शन के लिए
आया था. पर कुछ कारणों से उन्हें यहां और
रुकना पड़ा और उसी बीच वह सब घट गया.
मेम साहब एक नन्ही गुड़िया को जन्म दे कर
इस संसार में उसे अकेला छोड़ गईं. एक
विदेशी से शादी करने के कारण यहां के उस
के परिवार वाले उसे पहले ही मरा मान चुके
थे. अंगरेज साहब तब इस नन्ही बच्ची को

खुशियों की लाली

जाने कितने दिल टूटे
तब ऐसी घड़ी आई है
मंजिल पर अब खुशियां बांटें
प्यार की लाली छाई है.
—बृजेश कुमार गुप्ता

भावी जिंदगी के लिए बोझ समझ कर कुछ रुपयों के साथ अपने खानसामें को सौंप वापस अपने देश उड़ गया था.

नन्हीं झंकार की उस के असली पिता ने कोई खोजखबर नहीं ली. ठेकेदार का सारा परिवार भी गांव में फैली महामारी का शिकार हो गया. विट्टू को ही अपना सहारा मान कर अपनी गुदड़ी में लपेटे सीने से लगाए वह मांबाप दोनों का प्यार उसे देता रहा. उस ने अपनी हैसियत से ज्यादा उस बच्ची का पालनपोषण कर उसे अपने से भी ज्यादा अपना बना लिया था. स्वयं मोटाझोटा पहन कर भी उसे अच्छे से अच्छा पहनाता. अच्छे स्कूल में पढ़ाता. अपने खाने पहनने पर ध्यान न दे कर विट्टू का ध्यान रखता. तब मानो ठेकेदार के शरीर के हर जर्रे में वात्सल्य की खुशबू उड़ती रहती.

ठेकेदार के असली रूप को जान कर अपने बौनेपन का एहसास हमें सालता रहा. सोच कर कि हम उस से दाल में पानी मिलाने की छोटी सी बेईमानी के लिए क्यों झगड़ा करते थे. आज लगा, कितनी ईमानदारी छिपी हुई थी उस की इस बेईमानी में. उस दिन हम सब का मन ठेकेदार के प्रति अचानक कितने आदर से भर गया जब हम ने सुना कि विट्टू का असली बाप न जाने क्यों अचानक प्रकट हो कर अपनी बच्ची की मांग कर बैठा और ठेकेदार इसलिए उसे सौंपने को तैयार हो गया कि वह बच्ची पढ़लिख कर बहुत ऊंची उठेगी. उसे महलों का सुख मिलेगा. जिन चीजों के बारे में वह सोच भी नहीं सकता वह उस बच्ची को मिलेंगी.

"फिर मेरी उम्र का क्या भरोसा. कब कहीं टूट जाए." भरी आंखों से अपने [illegible] की समीक्षा सी करते बोला था वह.

कहां से जुटाया होगा उस ने इतना बड़ा कलेजा? कैसे रोका होगा उस ने अपने आंसुओं का सैलाब? कैसे अपनी नन्ही सी कोठरी में घुस पाया होगा जो कभी ढेर नन्हें खिलौनों, रंगबिरंगी किताबों, नन्हे लहंगों ओढ़नी से भरी रहती थी जिन्हें रोज रात को एक कोने में सरकासरका कर उस मासूम टुकड़े को कलेजे से लगा कर सोता था.

विट्टू को तो जाना था सो वह चली गई पर शायद उसे भी कुछ अनहोनी का एहसास हो गया था. वह खूब रोई. अपने बाबा के आंसू अपने नन्हे हाथों से पोंछ कर चुप कराती रही कि जल्दी ही वापस आ जाएगी. पर शायद नहीं जानती थी कि आने वाले कल में उस के आज के पिता के लिए बीते हुए कल के बाबा से मिलना मानसम्मान का हिस्सा बन जाएगा. वैसे भी जितनी दूर वह जा रही थी वहां से लौट कर आना कौन सी सहज बात थी.

विट्टू के जाने के अगले ही दिन ठेकेदार छात्रावास से अपना हिसाब चुकता कर हम से अपनी गलतियों की माफी मांगता न जाने किन पहाड़ी वादियों में गुम हो गया. उसे बहुत रोकने की कोशिश की गई पर वह बोला "दीदीमनी, अब किस के लिए कमाना है? यहां हर आहट पर विट्टू का खयाल मुझे जीने नहीं देगा. उस की हंसी की खनक, उस की पायल की झनक मुझे रुलाती रहेगी." हम उसे रोक न सके. जाते समय भी उस के सीने में एक नन्हीं सी पुरानी गुड़िया चिपकी हुई थी. [illegible] कई बार मैं साड़ी पहना चुकी थी. अपना सुखचैन तो खुद ही उस ने दूसरे को सौंप दिया था. वह कभी आंसुओं से भीगी थी. अपना सुखचैन तो खुद ही उस ने दूसरे को सौंप दिया था. वह कभी आंसुओं से भीगी उस लाल चुनरिया को सुखा पाया होगा कि नहीं, जो दिनभर उस की विट्टू ओढ़े दुलहन बन कर ठुमकती सी फिरती थी.

और वह विट्टू? क्या वह हवाई जहाज में अपने असली पिता के पास फोम की सीट पर बैठी उसी स्नेह की गरमाहट महसूस कर रही होगी जो कभी उसे अपने बाबा की हलदीमसालों से महकती गोद में बैठ कर कहानी सुनने में मिलती थी?

आप अपने बच्चे को पढ़ने के लिए क्या देना चाहेंगे?

रहस्य, रोमांच, मारधाड़, परीलोक व भूतप्रेतों के झूठे किस्से सुना कर बच्चों को कायर, अज्ञानी, उजड्ड और अंधविश्वासी बनाने वाली बेजान पत्रिकाएं.

या

बच्चों को जागरूक, उत्साही, अनुशासित व सही नागरिक बनाने वाली पत्रिका चंपक.

चंपक

नन्हे नागरिकों का मनोरंजक

पाक्षिक
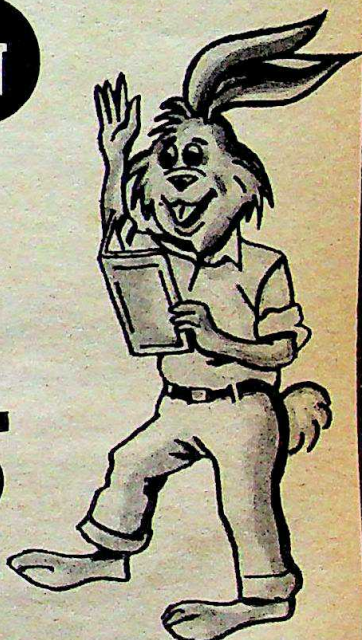
अपने नन्हेमुन्नों को पढ़ने के लिए आज ही दें, चंपक का मनमोहक उपहार.

एक प्रति का मूल्य रुपए 3.50

मद्रास बोट क्लब

पहचान बना रहा है नौकायन में

लेख • सुलक्षणा

1989 में चंडीगढ़ में संपन्न हुए एशियाई नौकायन प्रतियोगिता में मद्रास बोट क्लब की लड़कियों ने दो रजत पदक जीत कर एशियाई स्तर पर अपनी जो पहचान बनाई है उसे आगे भी बरकरार रखने के लिए कैसीकैसी तैयारियां कर रही हैं.

जमाना बदल रहा है. जमाने की चाल बदल रही है. नाव खेने और पार उतारने के किस्से बहुत पुराने हैं. चाहे नदी पार करने का काम हो या सागर पार जाना हो, यह कार्य केवल पुरुषों का ही माना जाता रहा है, लेकिन 'मद्रास बोट क्लब' की पांच युवतियों ने इस क्षेत्र में भी अपने प्रवेश से यह परंपरा तोड़ी तथा 1989 में संपन्न नौकायन के एशियाई खेलों में भारत की नैया को पार लगाया और दो रजत पदक भी जीते.

भारत में सब शहरों में 'बोट क्लब'

अपने कोच चाको कंडातिल के साथ प्रसन्न मुद्रा में मद्रास बोट क्लब की पांच युवतियां.
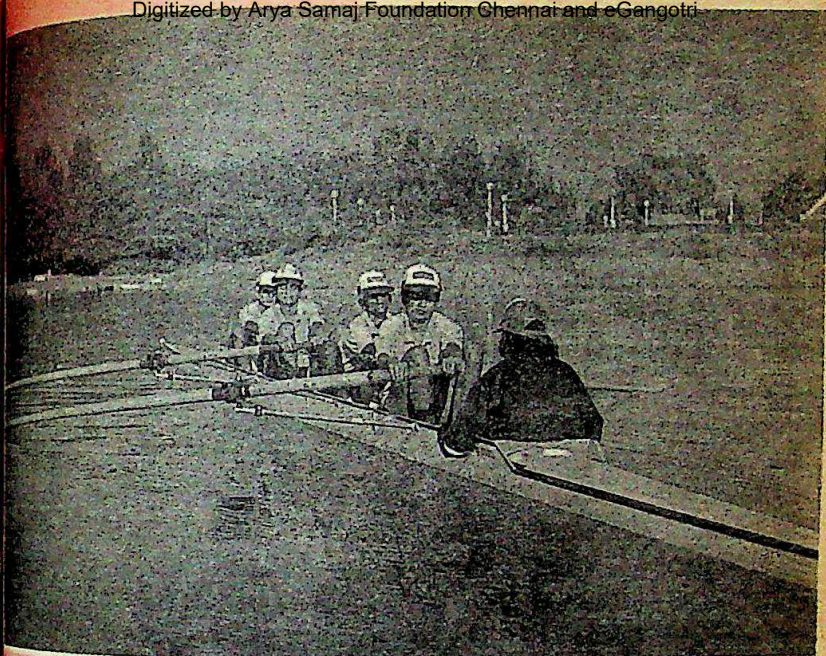
मद्रास बोट क्लब में अभ्यास का दौर : एशियाड़ की तैयारी.

...हैं, केवल छः शहरों में ही ...युवतियों को नाव चलाना सिखाया ...ता है. ये शहर हैं, मद्रास, हैदराबाद, ..., कलकत्ता, चंडीगढ़ और लखनऊ. ... विधिवत प्रशिक्षण दिया जाता है.

1989 में हुए नौकायान के एशियाई ...ों का आयोजन चंडीगढ़ में हुआ था. इस ...योजन में भारत की ओर से भी युवतियों ... भाग लिया. भारत के छः शहरों की ...शिक्षित युवतियां वहां पहुंचीं और जिन ... युवतियों का चुनाव किया गया, वे ...ों ही मद्रास की थीं. 'मद्रास बोट क्लब' ... टीम ने ही भारत का प्रतिनिधित्व किया ...र भारत के सिर पर विजय का सेहरा ...धा.

मद्रास बोट क्लब की इन पांच ...तियों के नाम हैं विजया चारी, ...माराव, आरती राव, गायत्री आचार्य ...र चतुरा राव. चंडीगढ़ से जब विजयी हो ... यह टीम मद्रास वापस आई तो वे ...यंत खुश थीं, क्योंकि डेढ़ महीना चंडीगढ़ में बिताने के बाद वे घर लौटी थीं. चंडीगढ़ में उन के रहने की व्यवस्था वहां के 'स्पोर्ट्स होस्टल' में की गई थी और उन की देखरेख का भार श्रीमती मिल्खा सिंह के ऊपर था. श्रीमती मिल्खा सिह वहां स्पोर्ट्स निदेशिका हैं. मद्रास टीम उन के व्यवहार से बहुत खुश थी. उन का कहना है कि चंडीगढ़ कैंप में उन्हें किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं हुई, क्योंकि श्रीमती मिल्खा सिंह बहुत अच्छी तरह से उन की देखभाल करती थीं.

चंडीगढ़ में बिताए डेढ़ महीने के दौरान उन युवतियों को कड़ी मेहनत करनी पड़ी. उन का दिन सुबह छः बजे आरंभ हो जाता था. साढ़े छः बजे वे एक बस द्वारा 'सुखना लेक' पहुंच जाती थीं, जहां अभ्यास होता था. वहां से 12 बजे वे होस्टल लौटतीं और नाश्ता करतीं. दो बजे खाना मिलता और एक घंटे का आराम होता. चार बजे फिर से नाव खेने का अभ्यास शुरू हो जाता था. खाना भी उन को नपातुला ही मिलता,

क्योंकि नाव खेने के लिए शरीर के वजन पर नियंत्रण रखना आवश्यक समझा जाता है.

नाव खेने के लिए कड़ी कसरत की आवश्यकता होती है. भार उठाना, दौड़ना और उठकबैठक लगाना अनिवार्य कसरतें हैं. डेढ़ घंटे रोज नाव चलाने का भी अभ्यास आवश्यक है. इतनी कसरत से शरीर छरहरा, परंतु मजबूत रहता है.

इन खेलों में युवतियों की नाव दौड़ में तीन देशों की टीमों ने भाग लिया. ये देश हैं, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया और भारत. भारत की ओर से मद्रास टीम ने दो रजत पदक जीते. 'हेवीवेट' और 'लाइटवेट' दो प्रकार की दौड़ होती है. 'हैवीवेट' में इंडोनेशिया प्रथम रहा और 'लाइटवेट' में दक्षिण कोरिया प्रथम रहा. दोनों प्रति-योगिताओं में भारत द्वितीय स्थान पर रहा.

मद्रास की टीम अपनी विजय का पूरा श्रेय अपने कोच चाको कंडातिल को दे... चाको कडातिल राष्ट्रीय प्रशिक्षक हैं... इन्हीं के प्रशिक्षण से मद्रास की टीम ... के लिए रजत पदक जीत पाई. मद्रास ... टीम नाव खेने के लिए ऐल्युमिनियम के ... मद्रास से अपने साथ ले गई थी, क्योंकि ... इन्हीं के साथ उन्हें नाव खेने का अभ्यास ... डेढ़ महीने के कैंप के दौरान टीम ... 'स्पोर्ट्स अथारिटी आफ इंडिया' की ओर ... 50 रुपए प्रतिदिन मिलतें थे.

मद्रास टीम ने 250 मीटर की दौड़ ... मिनट और 24 सेकंड में पूरी की. चंडीगढ़ ... से लौटने के बाद यह टीम फिर से अभ्यास ... जुट गई है. अब उन्हें आगामी सितंबर ... एशियाई खेलों में हिस्सा लेने चीन जाना है ... 1990 के एशियाई खेल बीजिंग में ... आयोजित होंगे. अब वे स्वर्ण पदक जीतने ... की आशा से तैयारी कर रही हैं.

तिल को देखी
प्रशिक्षक है
त की टीम
पाई. मद्रास
मिनियम के
गई थी,
ने का अभ्यास
दौरान टीम
डिया' की ओर
ये.
मीटर की दौड़
री की. चंडीग
फिर से अभ्यास
गामी सितंबर
ने चीन जाना
ल बीजिंग
वर्ण पदक जी
ही हैं.

म उपहार

फगान कैदी 'शरणार्थी' मानवीय समस्या

लेख • चंद्रकुमार मिश्र

बात बहुत पुरानी नहीं है, उन दिनों अफगानिस्तान में जहीरशाह का शासन था. काबुल में मेरे फ्लैट के सामने के फ्लैट की पाकिस्तानी गृहिणी एकाएक बदहवास सी मेरे फ्लैट में घुस आई और बोली, "मेरे शौहर को अभी अफगान पुलिस पकड़ ले गई है. सुना है कि आप की दोस्ती गृह मंत्रालय के उप मंत्री से है, जरा कोशिश कीजिए कि मेरे शौहर थाने में ही रहें, जेल न भेजे जाएं. मैं सब हरजाना दे दूंगी.

मुझे आश्चर्य हुआ कि वह गृहिणी जेल से इतनी भयभीत क्यों है. भारत या पाकिस्तान में तो पुलिस की हवालात से जेल की हवालात अच्छी समझी जाती है. जेल में कैदी सुरक्षित रहता है. कैदी को रूखासूखा ही सही किंतु भोजन मिलता तो है. पढ़ेलिखे कैदियों से उन के अनुरूप ही कार्य करवाया
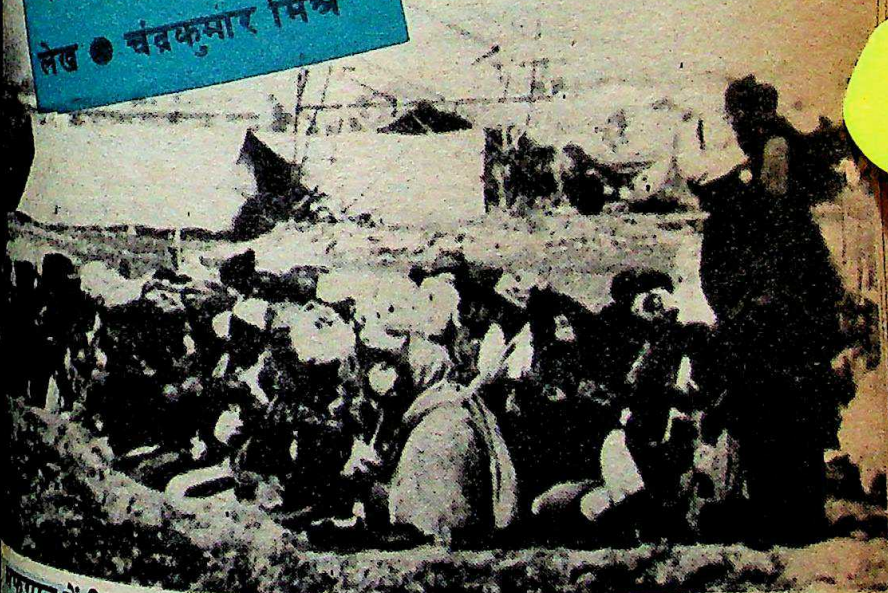
फगान में दिन ब दिन बढ़ते राजनीतिक अस्थिरता के कारण वहां के गरिक कैद में घुटघुट कर मरने के बजाए दूसरे देशों में शरणार्थियों जीवन जी रहे हैं. भारत पाकिस्तान व ईरान के साथसाथ समूचे विश्व लिए एक समस्या बने अफगानों की मानवीय समस्याओं का हल ढूंढने बजाए पाकिस्तान व ईरान किस प्रकार अब इन्हें मोहरा बना रहे हैं.

जाता है. कुछ विशेष प्रकार के कैदियों को छोड़ कर शेष को शारीरिक यातना भी नहीं दी जाती है.

किंतु अफगानिस्तान में जो सुना वह अत्यंत दुखद था. कैदी को भोजन, वस्त्र इत्यादि पहुंचाने की जिम्मेदारी परिवार की है. सरकार कैदियों को भोजन नहीं देती है. अतः परिवार प्रतिदिन कैदी का भोजन जेल के द्वार पर पहुंचाता है जिसे जेल का कर्मचारी लेता है और कैदी तक पहुंचाता है. कितना भोजन कैदी तक पहुंच पाता होगा, यह कल्पना करना कठिन नहीं है.

उन्हीं दिनों एक घटना का खूब प्रचार हुआ. एक दिन काबुल जेल से 40 कैदी किसी स्थान पर कार्य करने के लिए ले जाए गए. उन में एक कैदी भाग गया. सायंकाल जब एक कैदी कम पाया गया तो पास में ही घूम रहे एक व्यक्ति को पकड़ कर संख्या पूरी कर दी गई. कुछ दिनों बाद जब अधिकारी ने उस से पूछा कि "तुम्हारा अपराध क्या है" तो उस ने उत्तर दिया 'मैं चालीसवां हूं.'

यह किस्सा काबुल में बहुत प्रचलित है. इस से अफगानिस्तान की न्यायप्रणाली को समझने में बहुत सहायता मिलती है. का... प्रवास के दौरान मेरे फ्लैट पर काम क... वाले लड़के ने मेरी घड़ी चुरा ली. मैं ने म... मालिक से इस की शिकायत की. उ... लड़के के पिता को बुलाया और धमका... दो घंटे में घड़ी मिल जाए अन्यथा वह ... और बेटे को पुलिस के हवाले कर दे... वास्तव में घड़ी दो घंटे में मिल गई... बारबार वह बाप मकान मालिक से वि... करता रहा कि वह लड़के को पुलिस के ... न करे.

यद्यपि कठोर दंड से जहां एक ... काबुल शहर में चोरीचकारी या राहजनी ... होती थी वहीं दूसरी ओर ऐसे अनेक कै... भी जेलों में सड़ कर मर जाते थे जो के... संदेह में पकड़े गए थे, अथवा जिन ... अपराध नहीं के बराबर था.

उन्हीं दिनों यह सुनने में आया कि अं... अंतर्राष्ट्रीय मानवीय अधिकार संगठ... तत्कालीन सरकार से अनुरोध किया कि... जेल में बंद कैदियों के लिए भोजन तथा ... इत्यादि के लिए सहायता दे सकते हैं. कि... अफगान सरकार कभी भी ऐसी सहायता ...

नए पुराने हथियारों से लैस अफगानिस्तानी मुजाहिदों का एक दल.
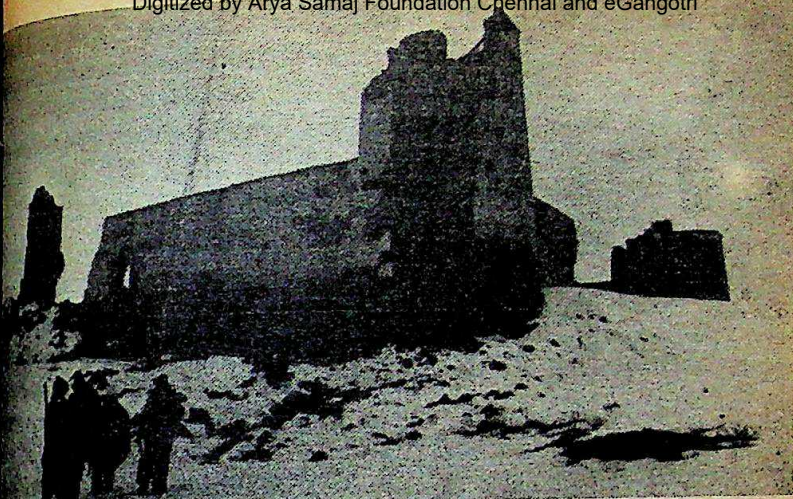
भीषण युद्ध के दौरान क्षतिग्रस्त एक मकान : ऐसे हुए अफगान नागरिक घर से बेघर.

ने के लिए तैयार न हुई. उस का तर्क था कि अपराध की सजा तो उस व्यक्ति या परिवार को भुगतनी चाहिए, न कि समाज या शासन को. पहले अपराध कर अपराधी समाज को क्षति करे तथा उसे आर्थिक क्षति पहुंचाए और फिर समाज उस अपराधी का भरणपोषण कर और अधिक आर्थिक क्षति उठाए, यह क्या न्याय है.

जहीरशाह की सरकार का रवैया आज की काबुल सरकार भी अपनाए हुए है. अफगान जेलों में अनेक राजनीतिक कैदी बंद पड़े हैं जिन की कोई सुनवाई नहीं होती है. इन कैदियों पर मुकदमा चलाने के लिए 'ऐमनेस्टी इंटरनेशनल' तथा अन्य सामाजिक संगठनों ने कई बार काबुल सरकार से अनुरोध किया. किंतु अफगान सरकार टस से मस न हुई. राजनीतिक कैदी तो वैसे ही सरकार की दृष्टि में खतरनाक होते हैं. अतः जब सामान्य कैदी को भी भोजन इत्यादि नहीं मिलता है तो राजनीतिक कैदी को भोजन कैसे मिलता होगा. काबुल में कड़ाके की सर्दी पड़ती है. शीतकाल में भूमि का तापक्रम शून्य से 20° सेल्सियस नीचे तक पहुंच जाता है. ऐसी सर्दी में कैदी कैसे जीवित रहते होंगे, यह कल्पना के बाहर है.

अफगान समस्या का यह एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है. राजनीतिक कैदियों की यह समस्या सदैव बनी रहेगी, चाहे जो सरकार काबुल पर शासन करे.

अफगान समस्या का दूसरा महत्त्वपूर्ण आयाम अफगान शरणार्थियों की समस्या है. एक अनुमान के अनुसार लगभग 40 लाख शरणार्थी पाकिस्तान तथा ईरान में हैं. भारत में भी विशेषकर दिल्ली में लगभग 10 हजार शरणार्थी हैं. कुछ शरणार्थी दिल्ली के बाहर अन्य नगरों में भी हैं. लगभग 25 लाख ऐसे शरणार्थी हैं जो अफगानिस्तान के विभिन्न नगरों, कसबों तथा गांवों से निकल कर अफगानिस्तान के बड़े शहरों जैसे काबुल, हेरात, कंधार तथा जलालाबाद में रह रहे हैं.

पाकिस्तान तथा ईरान के पास के क्षेत्रों में रहने वाले अफगान लोग पाकिस्तान या ईरान में शरणार्थी हैं. जो अंदर के क्षेत्रों जैसे बामियान, नूरिस्तान या काबुल के अफगान हैं वे अफगानिस्तान के बड़े शहरों में आ कर शरणार्थी बन गए हैं. कुल दो करोड़ों की जनसंख्या वाले अफगानिस्तान के एकतिहाई लोग देश या विदेश में शरणार्थी हैं.

अफगानिस्तान में चल रहे गृहयुद्ध के कारण अभी भी अफगान अन्य देशों को भाग
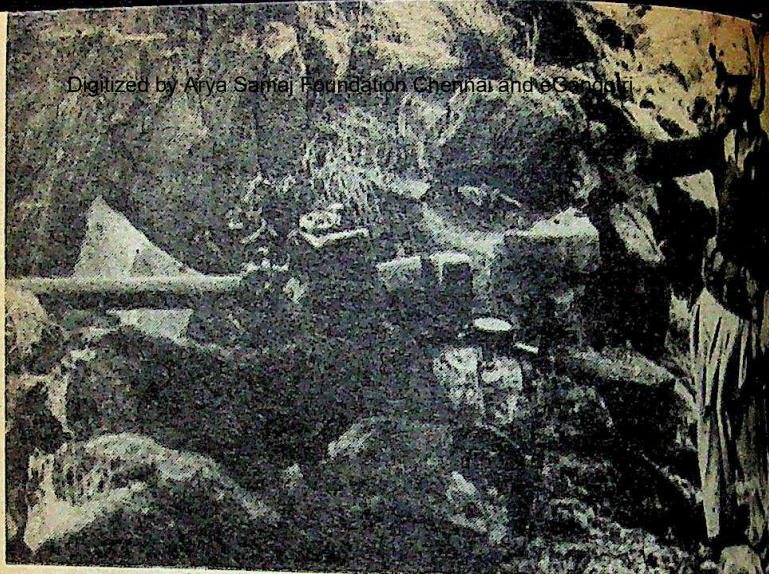
अफगानिस्तान के गृहयुद्ध से जितना फायदा पाकिस्तान ने उठाया, उतना खुद अफगानिस्तान भी नहीं उठा सका.

रहे हैं, जो शरणार्थी कुछ धनवान हैं वे भारत आ जाते हैं और भारत से अन्य देशों, विशेषकर अमरीका, इंगलैंड, फ्रांस जरमनी चले जाते हैं. जो अन्य देशों को भाग नहीं सकते हैं वे भारत में ही रह जाते हैं. चूंकि काबुल के माध्यमिक स्कूलों में चार भाषाओं (अंगरेजी, जरमन, फ्रैंच तथा रूसी) में शिक्षा दी जाती है, अत: रूसी को छोड़ कर शेष भाषाओं को जानने वाले लोग उन देशों में खप जाते हैं.

शरणार्थी समस्या की शुरुआत उस समय हुई जब अफगान कम्यूनिस्टों ने सरदार मुहम्मद दाऊद की सत्ता पलट कर काबुल पर नूर मुहम्मद तराकी की सत्ता स्थापित कर दी. उस समय से ही थोड़ेबहुत शरणार्थी पाकिस्तान की ओर बढ़ने लगे थे. पाकिस्तान स्थित मुजाहिदीन ने अफगानों को सब्जबाग दिखलाने प्रारंभ किए और अनेक अफगान उन के कैंपों में रहने भी लगे जिन्हें सैनिक शिक्षा दी जाने लगी.

अफगानिस्तान के कम्यूनिस्ट शासन से ऊबे अफगान व्यापारियों, शिक्षित वर्ग तथा धार्मिक नेताओं ने भी पाकिस्तान की राह पकड़ी. इन लोगों को [illegible] सीमा पर बसे कबीलों ने पैसा ले कर सीमा पार करवाई. लेकिन ये अफगान पाक शरणार्थी शिविरों में नहीं रहे वरन पूरे पाकिस्तान में फैल गए तथा अनेक प्रकार के व्यापार व व्यवसाय में जुट गए, जैसे ट्रक तथा यात्री बसें चलाना, अफगानिस्तान से विदेशी वस्तुओं की तस्करी, अफीम का उत्पादन व पकाना, बंदूकों तथा अन्य अस्त्रशस्त्रों का उत्पादन और बिक्री आदि.

अफगानपाक सीमा पर ऐसे अनेक कबीले हैं जो जाड़े में अफगानिस्तान को छोड़ कर पाकिस्तान आ जाते हैं तथा जाड़े की समाप्ति पर फिर अफगानिस्तान पहुंच जाते हैं. किंतु काबुल पर कम्यूनिस्टों का शासन हो जाने पर इन कबीलों के नवयुवकों को 'इसलाम खतरे में है' का नारा लगा कर तथा बंदूक और राइफल का लालच दे कर 'शरणार्थी शिविरों में आश्रय दिया गया. इन शिविरों में उन्हें सैनिक शिक्षा दी गई और उन्हें 'मुजाहिदीन' का नाम दिया गया. इन मुजाहिदीन के नाम पर पाकिस्तान सरकार ने अमरीका तथा सऊदी अरब से काफी धन वसूला. शायद यह घटनाक्रम ऐसा ही चलता रहता, यदि दिसंबर 1979 में रूसी सैनिक

हस्तक्षेप न होता.

एक बार पुनः इतिहास की पुनरावृत्ति हुई. प्रारंभ में रूसी फौजों ने बगैर किसी प्रतिरोध के अफगानिस्तान के बड़े शहरों जैसे काबुल, कंधार, मजार शरीफ और जलालाबाद पर कब्जा कर लिया और लगा कि इस बार वास्तव में विदेशी फौजों ने अफगानिस्तान को अपने शिकंजे में जकड़ लिया है. लगभग वही स्थिति थी जैसी प्रथम अंगरेज अफगान युद्ध (1839 ई.) के उपरांत हुई थी.

प्रथम अफगान अंगरेज युद्ध में अंगरेज तथा पंजाबी फौजों ने फरवरी 1839 में अफगानिस्तान में प्रवेश किया और अगस्त 1839 में उन्होंने काबुल की गद्दी पर शाहशुजा को बिठा दिया. शाहशुजा की 'सुरक्षा' के लिए काबुल तथा कंधार में छावनियां बनाई गईं और सैनिक अफसर अपनी पत्नियों के साथ मौज की जिंदगी बिताने लगे. लेकिन आजादीपसंद अफगानों को यह रास नहीं आया और अक्तूबर 1841 में काबुल में विद्रोह हो गया और काबुल से लौटती अंगरेज पंजाबी फौजों को गाजरमूली की भांति काट डाला गया.

आजाद तबीयत के अफगान

रूसी फौजों को भी लगभग ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा. सन 1982 तक ऐसा लगता था कि रूसी फौजें सदैव के लिए काबुल में जम गई हैं और अफगानिस्तान रूस का एक अन्य 'गणतंत्र' बन जाएगा. अंगरेज फौजों के अफसरों के समान रूसी अफसर भी अपनी पत्नियां काबुल ले आए थे और अफगानों की 'मेहमाननवाजी' कुबूल कर खुशगवार जिंदगी बसर करने लगे थे. लेकिन शीघ्र ही रूसियों को अफगानियों के प्रतिरोध तथा विद्रोह का सामना करना पड़ा और अंततः फरवरी 1989 में रूसी फौजों को अफगानिस्तान छोड़ना पड़ा.

किंतु रूसी फौजों के नौ साल के प्रवास के दौरान शरणार्थियों की समस्या भीषण हो गई. शुरू में तो शरणार्थी समस्या काबुल में कम्युनिस्ट शासन के कारण उत्पन्न हुई थी किंतु बाद में रूसी सैनिक हस्तक्षेप के कारण यह समस्या और अधिक उग्र हो गई. अफगानिस्तान के आंतरिक विद्रोह को दबाने के लिए रूसी फौजों ने 'एयरशिप' से बमबारी की जिस के कारण भीषण बरबादी हुई और गांवों तथा कसबों से शरणार्थी प्रांतों की राजधानियों और काबुल की ओर भागने लगे.

लेकिन रूसी फौजों की वापसी से शरणार्थी समस्या में कोई सुधार नहीं हुआ. रूसी फौजों की वापसी से पहले तो ऐसा लगा कि संभवतः अफगानिस्तान समस्या का हल वार्ता से निकल आएगा. वास्तव में मुजाहिदीन ने यह सोचा था कि रूसी फौजों के हट जाने से नजीबुल्लाह का शासन ताश के पत्तों के महल की तरह गिर कर बिखर जाएगा किंतु ऐसा नहीं हुआ.

मुजाहिदीन ने राष्ट्रपति नजीब की सरकार को अपदस्थ करने के उद्देश्य से काबुल तथा अन्य शहरों पर राकेटों के हमलों को और तीव्र कर दिया है और इन राकेटी हमलों से भी शरणार्थी समस्या भीषण हो गई है. किंतु एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन हमलों से कुछ समय के लिए ही जनजीवन अस्तव्यस्त होता है और फिर लोग अपनेअपने कामों में जुट जाते हैं.

अफगानों ने यद्यपि गत 1000 वर्षों में अनेक युद्ध देखे हैं, हमले सहे हैं और आज तक बामियान की घाटी चंगेजखां के हमले के कारण हुए विनाश से उबर नहीं पाई है, फिर भी उन में जन्मजात बेफिक्री है, मस्ती है. अफगान हर वाक्य के साथ 'परवाहनिस्त' (कोई परवाह नहीं) जोड़ देता है और बेफिक्री से 'खुदा मेता' (ईश्वर देगा) कह देता है. यह दोनों शब्द अफगान जीवनदर्शन के मूलमंत्र हैं.

गत 10 वर्षों में हजारों मकान बरबाद हो गए हैं तथा उपजाऊ जमीन बंजर हो गई है. लगभग 10 लाख लोग मारे गए हैं और 5 लाख अपाहिज हो गए हैं. अफगानों का

विश्वविख्यात कालीन उद्योग भी चौपट हो गया है.

एक समाचार के अनुसार गांवों तथा कसबों में चप्पेचप्पे पर गुप्त बारूदी सुरंगें बिछी हैं. ऐसी स्थिति में कसबों तथा गांवों के अफगानों के लिए घरबार छोड़ कर शरणार्थी बनने के अलावा और कोई चारा नहीं था. ऐसे अनेक शरणार्थी पाकिस्तान अथवा ईरान चले गए. किंतु जब पाकिस्तान ने उन्हें सैनिक शिक्षा दे कर फिर अफ़गान युद्ध में ढकेलना चाहा तो उन में से अनेक अफगान शरणार्थी शिविरों से भाग कर कशमीर के रास्ते भारत आने लगे या फिर काबुल वापस जाने लगे.

गत मार्चअप्रैल में जलालाबाद शहर पर अफगान मुजाहिदीन के घेरा डालने तथा आक्रमण और अंततः हार के फलस्वरूप न केवल जलालाबाद शहर बरबाद हुआ वरन लगभग 70,000 शरणार्थी पाकिस्तान तथा अन्य देशों के लिए चल पड़े.

काबुल में सरदार मुहम्मद दाऊद को अपदस्थ कर नूर मुहम्मद तराकी की कम्यूनिस्ट सरकार बनने से ही अफगान शरणार्थियों का पाकिस्तान आना प्रारंभ हो गया था. उस समय पाकिस्तान [illegible] शरणार्थियों के आने से प्रसन्न था क्यों [illegible] बहुत समय बाद पाकिस्तान को अफगानिस्तान में हस्तक्षेप करने का मौका मिला था. तराकी के द्वारा सत्ता संभालने के पूर्व पाकिस्तान लगातार प्रयास करता रहा कि उसे ब्रिटिश भारत का वारिस मान कर अफगानिस्तान उसे उसी प्रकार महत्त्व दे जैसा कि [illegible] स्वतंत्रता से पूर्व भारत को देता [illegible] किंतु भौगोलिक और आर्थिक परिस्थितियों और प्रतिबंधों से घिरे रहने पर भी अफगान सरकार ने पाकिस्तान सरकार को कभी [illegible] 'दोस्त' का दर्जा नहीं दिया.

सन 1965 में 'पाकभारत' युद्ध के [illegible] जब भारत ने अफगान सरकार से आर्थिक तथा तकनीकी सहायता देने का प्रस्ताव किया तो अफगान सरकार ने भारतीय अध्यापकों की मांग की. भारतीय अध्यापकों के काबुल पहुंचने पर पाकिस्तान सरकार ने भी [illegible] अध्यापकों की मदद देने का प्रस्ताव किया किंतु अफगान सरकार ने उस के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया. यही नहीं, अफगान सरकार ने यद्यपि रूस, अमरीका, चीन

अफ़गानिस्तान के विदेश मंत्री अब्दुल करील प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के साथ: दोस्ती का आश्वासन.

खूबसूरत अफगान महिलाएं भी शरणार्थी शिविरों की एक समस्या बनी हुई हैं.

पश्चिम जरमनी, जापान, ब्रिटेन, फ्रांस तथा अन्य सरकारों से सहायता स्वीकार की है किंतु क सरकार से कोई भी आर्थिक या तकनीकी सहायता न मांगी, न ही स्वीकार की.

इसलिए दाऊद सरकार के अपदस्थ हो जाने तथा कम्यूनिस्ट शासन काबुल में स्थापित हो जाने और अंततः रूसी फौजों के अफगानिस्तान में प्रवेश से पाकिस्तान को वह स्वर्णिम अवसर मिल गया जिस की आकांक्षा वह अपने निर्माण के समय से ही कर रहा था.

कम्यूनिस्ट शासन तथा रूसी हस्तक्षेप जनित शरणार्थी समस्या को पाकिस्तान सरकार ने खूब भुनाया और काफी मात्रा में अस्त्रशस्त्र तथा आर्थिक सहायता विभिन्न देशों जैसे अमरीका, ब्रिटेन तथा सऊदी अरब से प्राप्त की.

किंतु फिर भी शरणार्थी समस्या के और अनेक आर्थिक तथा सामाजिक दुष्परिणाम पाकिस्तानी जनता को झेलने पड़ रहे हैं. उदाहरणार्थ, अफगान शरणार्थियों ने सब से पहले पाकिस्तान के मोटर यातायात को अपने कब्जे में लिया, पंजाब, सिंध, उत्तरपश्चिमी सीमा प्रांत की अनेक बस और ट्रक सेवाएं अफगान शरणार्थियों की हैं. उन बसों व ट्रकों में कंडक्टर, मोटर मैकेनिक, ड्राइवर, क्लीनर इत्यादि सब अफगान होते हैं. चूंकि अफगानिस्तान में रेल यातायात नहीं है इसलिए मोटर यातायात में वे बहुत निपुण हैं. सस्ते किराए तथा अच्छी सेवा के कारण अफगानों ने पाकिस्तानियों को उन्हीं की जमीन पर मात दे दी है.

मोटर यातायात का लाभ ले कर अफगान शरणार्थियों ने और अनेक सामाजिक समस्याएं उत्पन्न कीं. एक समाचार के अनुसार सिंध से लड़कियों को फुसला कर भगाने और कबायली क्षेत्रों, ईरान तथा अरब देशों में बेचने के कार्य में भी कुछ अफगान शरणार्थी लिप्त हैं. इस कार्य में अफगान मोटर यातायात बड़ी सहायता करता है.

एक अन्य समस्या सस्ते अफगान श्रमिकों के कारण उत्पन्न हो गई. अफगान मजदूरों ने कम मजदूरी पर काम कर के स्थानीय श्रमिकों को बेकार कर दिया. अतएव जहां एक ओर अफगान शरणार्थियों को कार्य मिला वहां दूसरी ओर पाकिस्तानियों में बेकारी बढ़ी.

तीसरी समस्या तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है. अफगानिस्तान के कबायली क्षेत्र में अफीम तथा चरस के उत्पादन एवं बिक्री के कार्य में अनेक शरणार्थी फंसे हैं. इन क्षेत्रों पर किसी भी अफगान सरकार का नियंत्रण नहीं था. खुले आम यहां पर अफीम पैदा की जाती है और उस अफीम को अफगान शरणार्थी ट्रकों से पाकिस्तान के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचाया जाता है जहां से अमरीका तथा अन्य विकसित राष्ट्रों को चोरीछिपे भेजा जाता है. स्वयं पाकिस्तान में इस अफीम की काफी खपत हो

रही है और पाकिस्तान सरकार के लिए वहां के बढ़ते अफीमची सिरदर्द बन रहे हैं.

खूबसूरत अफगान औरतों के कारण भी सामाजिक समस्या पैदा हो गई है. अफगानिस्तान में परदा प्रथा के समाप्त कर दिए जाने के कारण तथा वहां पर लड़की के पिता को लड़की की शादी के लिए लड़के के परिवार से धन प्राप्त होने के रिवाज के कारण अफगान स्त्रियों में एक अजीब सी आजादी और चंचलता है. इस चंचलता से वे अपने पड़ोसियों का दिल जीत लेती हैं. इस के कारण अकसर शरणार्थी शिविरों तथा कसबों में खूनी झड़पें हो जाती हैं.

भारत में अफगान शरणार्थी बहुत नहीं है. सरकारी अनुमान के अनुसार लगभग 10,000 अफगान शरणार्थी दिल्ली में हैं. कुछ शरणार्थी अन्य नगरों में भी हैं.

भारत के अफगान शरणार्थी मध्यम तथा उच्च वर्ग के हैं जो या तो सरकारी नौकरियों में थे या जिन का अपना व्यापार था. इन शरणार्थियों में से अनेक व्यक्तियों ने बीमारी दिखला कर वीजा प्राप्त किया है तथा वे भारत से और देशों को जाना चाहते हैं. क्योंकि पाकिस्तान से उन का अन्य देशों को पलायन आसान नहीं है.

भारत में अफगान शरणार्थियों के आने का एक अन्य कारण यहां पर उन्हें मिलने वाला भत्ता भी है. पाकिस्तान में शरणार्थियों को दैनिक राशन तथा 50 रुपए प्रतिमास भत्ता मिलता है जबकि भारत में संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त के द्वारा शरणार्थी परिवार के मुखिया को 830 रुपए तथा प्रत्येक सदस्य को 415 रुपए प्रतिमास की दर से भत्ता मिलता है.

कुछ ही अफगान शरणार्थी भारत वायुयान से आते हैं जबकि अधिकतर शरणार्थी पाकिस्तान से आजाद कशमीर होते हुए कशमीर में प्रवेश करते हैं और फिर दिल्ली आ जाते हैं. उन्हें सुरक्षित दिल्ली पहुंचाने का ठेका पाकिस्तानी और आजाद कशमीरी लेते हैं. एक जैसा नाकनक्श होने के कारण अफगान कशमीरियों में आसानी से खप जाते हैं.

वर्तमान कशमीर समस्या को उग्र बनाने में अफगान विद्रोहियों के सहयोग को नकारना संभव नहीं है. एक मजे की बात यह है कि सन 1977 में पाकिस्तान स्थित बंगलादेशियों को अफगास्तिान के मार्ग से बंगलादेश पहुंचाने के लिए अफगानों ने बंगलादेशियों से काफी धन वसूला था.

दिल्ली में अफगान अधिकतर लाजपत नगर, ग्रेटर कैलाश तथा पश्चिमी दिल्ली की कुछ बस्तियों में रह रहे हैं. सामान्यतः वे खुश हैं. किंतु अनिश्चिंतता तथा अफगानिस्तान में छूटे सगेसंबंधियों की याद उन्हें बेचैन बनाए रखती है. एक नए देश में नए सामाजिक वातावरण के अनुरूप ढलना इतना आसान नहीं होता. सूखे मेवे (बादाम, चिलगोजे इत्यादि) तथा ताजे फलों (विशेषकर अंगूर, सर्दा, सेब, तरबूज) और नान से खुशनुमा जिंदगी बसर करने वाले अफगान चपाती और दाल से कैसे जिंदगी बसर करते होंगे?

भारत क्या करे?

इन शरणार्थियों के कारण दिल्ली की उन बस्तियों में जहां शरणार्थी रह रहे हैं तनाव उत्पन्न हो सकता है. अफगानों में स्त्रीपुरुष, पुरुषपुरुष तथा स्त्रीस्त्री के मध्य हाथ मिलाना, आलिंगन तथा चुंबन अभिवादन की सामान्य विधियां हैं. किंतु अपने यहां यह मान्य नहीं है. सार्वजनिक रूप से चुंबन तथा आलिंगन को हेय दृष्टि से देखा जाता है.

इन परिस्थितियों में यह उचित होगा कि भारत भी शरणार्थियों को समस्या मान कर उस का समुचित हल ढूंढ़े. वैसे भी भारत में गत 150 वर्षों से अनेक अफगान राजनीतिक शरणार्थी रहते रहे हैं और अब भी भूतपूर्व बादशाह जहीरशाह के चचेरे भाई तथा उन का परिवार देहरादून में रह रहा है. इस से यह लाभ होगा कि जब ये शरणार्थी वापस जाएं तो अपने भारत प्रवास की मधुर यादें साथ ले जाएं, कटु अनुभव नहीं. ●

वह

आज मुझे फिर देर हो गई. कितनी भी कोशिश क्यों न करूं देर हो ही जाती है. चलो पौने 11 बजे वाली बस तो मिल ही जाएगी और अगर प्रोफेसर चंद्रकांत 10 मिनट भी कक्षा में देर से पहुंचे तो हाजिरी अवश्य लग जाएगी.'

मैं अभी यह सोच ही रही थी कि बस स्टैंड पर बस आ पहुंची. मैं हड़बड़ा कर बस की ओर भागी. आज बस अपेक्षाकृत खाली थी, शायद इसलिए कि दफ्तर जाने का समय गुजर चुका था. वैसे जब मेरी पहली कक्षा नहीं होती है, तब मैं इसी बस से जाना पसंद करती हूं.

नगरीय कोलाहल, धक्कामुक्की के मध्य बस में बैठने की थोड़ी सी जगह और खिड़की से आती हुई तेज हवा मुझे अमृत सदृश प्रतीत

दुबली पतली, लंबी, मनोहारी देहदृष्टि वाली यह कोमलांगी बिहारी की किसी नायिका के सदृश सुंदर थी.

हो रही थी. मैं ने अभी तक अपने आसपास के वातावरण पर दृष्टिपात नहीं किया था. अब मुझे भीनीभीनी खुशबू का एहसास होने लगा था. मैं ने गरदन घुमा कर अपनी बगल वाली सीट पर बैठी महिला की ओर देखा तो मुझे वही चिरपरिचित सलोनी स्त्री बैठी हुई दिखी.

मैं ने जब से विश्वविद्यालय में दाखिला लिया था, यह युवती मेरे लिए एक आदर्श या स्वप्न ही रही थी. सत्र शुरू होने के प्रारंभिक दिनों में जब मैं प्रायः देर से विश्वविद्यालय जाया करती थी, यह युवती तभी से मुझे मोहती आई थी.

दुबलीपतली लंबी, मनोहारी देहयष्टि वाली यह कोमलांगी बिहारी की किसी नायिका के सदृश सुंदर थी. उस के तन से हमेशा एक भीनीभीनी सी खुशबू उठा करती थी जो मुझे बेहद प्रिय थी. उस की लंबी चोटी तथा तनी हुई गरदन का झुकाव बस में चढ़ने वाले प्रत्येक स्त्रीपुरुष को अपनी ओर आकर्षित करती थी. मुझे उस के चलने का तरीका बड़ा ही मनमोहक और प्रिय प्रतीत होता था. वह प्रायः मेरे बस से उतरने के स्थान से दोतीन स्टाप पहले ही उतर कर सीधी गली की ओर चली जाती थी. बस में मैं किसी भी स्थिति में खड़ी या बैठी क्यों न रहूं, उस का रूपरंग मुझे उस की ओर देखने के लिए विवश कर देता था. उस की यह उज्जवल छवि कईकई दिनों तक मेरी आंखों के समक्ष तैरती रहती.

आज जब वह मुझे अपनी बगल में उन्हीं विशिष्ट अंदाज में बैठी हुई, उन्हीं मुसकराती

उस औरत की खूबसूरती और उस के शरीर से उठती हुई भीनीभीनी खुशबू के सुहाने अंदाज ने मुझे इतना प्रभावित कर दिया था कि मैं उस के बारे में बहुत कुछ जाननेसमझने को उतावली हो गई थी. किंतु एक संक्षिप्त सफर के दौरान जब उस से मेरी मुलाकात हुई तो मेरी जिज्ञासा इस तरह से शांत हो गई कि मैं खुद हैरत में पड़ गई. आखिर कौन थी वह?

आंखों से बाहर की ओर और कभी अपने हाथ में पकड़े पैकेट की ओर देखती हुई मिली तो मैं कई क्षणों तक मंत्रमुग्ध सी रह गई.

मैं नजरें झुकाए उस युवती से सटी बैठी थी. मेरे हाथ उस के हाथ को छू रहे थे. मेरे पैर उस की साड़ी के मृदुल स्पर्श से जड़ से हो गए थे. उस की एक लट कभीकभी हवा के झोंके से आंदोलित हो कर मेरे चेहरे को सहला रही थी. मैं कनखियों से कभी उस के बेहद कोमल हाथों को देखती, जो बड़े ही निर्लिप्त भाव से पैकेट के ऊपर पड़े थे. कभी उस के पैरों की ओर देखती जो काली चप्पलों के मध्य रोशनी सी बिखेर रहे थे. मैं उस के संपूर्ण अस्तित्व को महसूस कर आनंदित हो रही थी.

उस ने शायद मेरी आंखों में अपनी प्रशंसा के भाव देख लिए थे. यही कारण था कि जब आज उस से मेरी आंखें मिलीं तो वह मुसकरा पड़ी. मैं ने पहली बार किसी स्त्री को इतनी मनमोहक मुसकान में मुसकराते देखा. उस की मुसकराहट में एक सख्य भाव था. मैं ने हिम्मत से काम लेते हुए उस की ओर आहिस्ता से देखा और देखती चली गई.

उस ने मुझ से बड़े कोमल और वत्सलतापूर्ण स्वर में पूछा, ''तुम्हें बैठने में तकलीफ हो रही है?'' और इतना कह कर उस ने सरक कर मेरे लिए थोड़ी और जगह बना दी. कुछ क्षणों के लिए मैं स्तंभित सी रह गई.

मैं ने बड़ी मुशकिल से अपनेआप को संभालते हुए 'नहीं' में अपनी गरदन हिला दी और आहिस्ता से मुसकरा दी. धन्यवाद, थैंक्यू या शुक्रिया जैसे शब्दों का प्रयोग मेरी आदत न है. मैं प्रायः इन शब्दों के स्थान पर इस मुसकराहट से ही काम लिया करती हूं. मुसकराहट के इस आदानप्रदान के साथ हम अनजाने में ही घनिष्ट हो गए.

उस ने मुझ से फिर पूछा, ''पढ़ती हो?''

''हां, एम.ए. में हूं.''

''किस विषय में कर रही हो?''

''हिंदी में,'' मैं ने आहिस्ता से कहा. उस ने धीरे से गंभीरतापूर्वक गरदन को झटक कर फिर अजीब सी मुसकान के साथ मेरी ओर देखते हुए कहा, ''मास्टर डिगरी भी आज मूल्यहीन हो गई है.''

जीविकोपार्जन या नौकरी की दृष्टि से यह डिगरी कितनी निष्क्रिय है, यह बात मुझ से बेहतर शायद कोई न जानता हो. मैं ने भी आहिस्ता से अपने सिर को हिला कर सहमति प्रदान की. पर मैं इस नीरस और भयावह विषय पर और आगे चर्चा नहीं करना चाहती थी. यही कारण था कि मैं ने विषय को तुरंत बदलने के लिए पूछा, ''आप क्या हमेशा ही पौने 11 की बस से जाती हैं? वैसे यह बस है, सुविधाजनक. भीड़ कम होती है इस में.''

उस ने अपनी गरदन हिला कर सहमति व्यक्त की. मैं ने फिर पूछा, ''वैसे आप कहां कार्यरत है?''

उस ने मुसकरा कर एक बार मेरी ओर देखा और फिर आहिस्ता से बाहर की ओर दृष्टि घुमा कर बोली, ''वहीं, जहां हर स्त्री कार्यरत हो सकती है.'' और फिर घूम कर एक गहरी दृष्टि मेरे ऊपर डाल कर उठते हुए बोली, ''मेरी मंजिल आ गई. अच्छा.''

और उस के सफेद कोमल हाथ विदा लेने वाले अंदाज में उठ गए. उस की यह हाथों की भाषा मेरे मन में अंकित हो गई. मैं एकटक उस की विशिष्ट चाल देखती रही और जब वह मेरी आंखों से ओझल हो गई तो मैं ने सामने एक महिला को खाली हुई सीट पर बैठने के लिए बेचैनी से आते हुए देखा.

अभी तक मैं बस और बस में बैठे अन्य
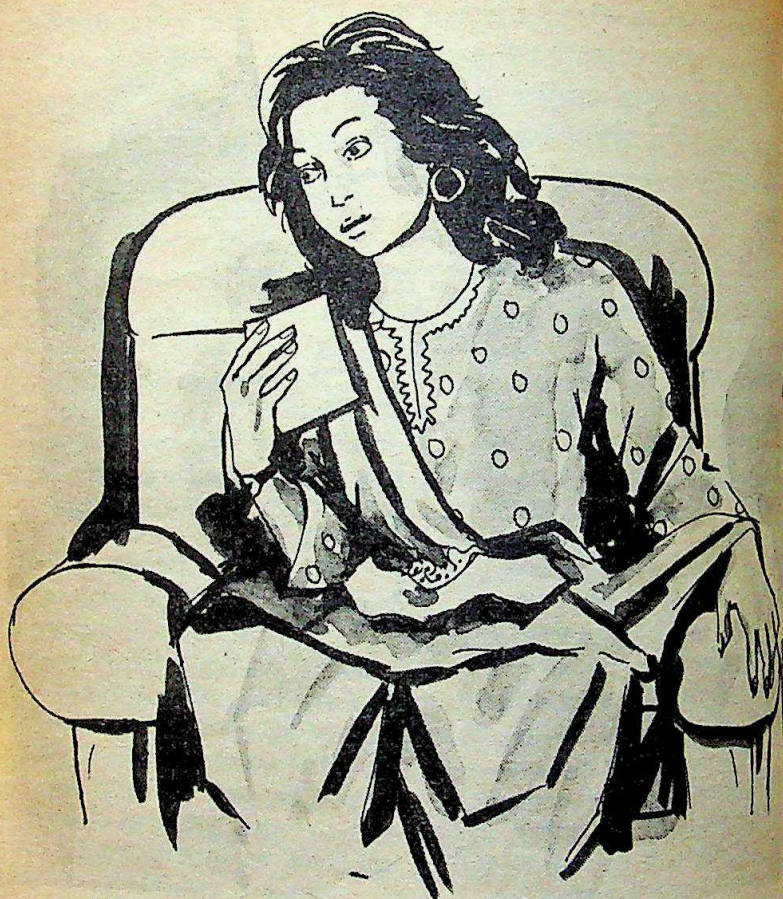
मैं ने दरवाजा बंद किया. सोफे पर बैठ गई. चोरों की भांति कार्ड की ओर देखा.

यात्रियों से बिलकुल अनभिज्ञ थी. मैं ने जरा सरक कर, उस मोटी महिला के लिए और जगह बना दी. उस महिला ने सीट में बैठने से पूर्व, उस पर रखा सफेद पैकेट मेरे ऊपर साधिकार डाल दिया. मैं ने चिहुंक कर उस पैकेट को देखा, यह तो उस युवती का पैकेट था. मैं कई क्षणों तक स्तंभित सी बैठी रही.

मैं अगले दोतीन मिनट तक इसी ऊहापोह में रही कि उस पैकेट को कंडक्टर को दूं या फिलहाल अपने पास रख लूं. पर अंत में मैं उस युवती से फिर से मिलनेबोलने का लोभ न संवरण कर सकी और पैकेट को यह सोच कर पास रख लिया कि कल, परसों या फिर दोचार दिनों में कभी तो वह मुझे पान [illegible] की बस में मिलेगी ही, तब उसे लौटा दूंगी.

उस दिन मैं दिन भर एक अजीब सी सिहरन और खुशबू महसूस करती रही. मैं मन ही मन सोचती रही, "तो महाशया गृहिणी हैं." फिर मन ही मन विभिन्न पुरुषों के नामों के साथ उस के नाम का अंदाज लगाने लगी. 'वह क्या होगी, श्रीमती राजेश या श्रीमती राहुल या फिर ऐसा ही कुछ.'

लौटतेलौटते आज मुझे पांच बज गए. बस में काफी भीड़भाड़ थी. मैं उस सफेद पैकेट को हर धक्के से बचाती तथा संघर्ष करती हुई घर लौटी. मैं ने उसे उठा कर अलमारी के एक सुरक्षित कोने में रख दिया. कपड़े बदल कर पंखा तेज कर के लेट गई.

मां के करीब पहुंचते ही मैं ने उन से कहा, "अम्मां पानी." मां ने मुझे पानी दिया और कम्मो को आवाज देते हुए चाय बनाने को कहा.

मैं पानी पी कर सोफे पर ही लेट गई. चाय ले कर आई कम्मो ने मुझे 20 मिनट पश्चात झकझोर कर उठाया. मैं ने देखा कि चाय और अम्मां के हाथ के बने पनीर के पकौड़े सामने रखे थे.

मैं थकीथकी सी उठी, सीधे स्नानघर में घुसी, अच्छी तरह से हाथपांव धोए और बैठ कर चाय पीने लगी. चाय पीतेपीते मेरी नजर अलमारी की ओर उठ गई. अलमारी मेरे लिए पारदर्शी हो उठी और मुझे उस में पड़े पैकेट की याद हो आई. मन एक अजीब सी उत्कंठा से भर गया और उसे खोल कर देखने की मेरी इच्छा बलवती हो उठी.

मैं पैकेट को अलमारी से निकाल लाई और उसे मेज पर रख दिया. उसे खोल कर देखने की मेरी इच्छा उत्तरोत्तर बलवती होने लगी पर नैतिकता ने मेरे हाथों को रोक दिया. मैं आवतन किसी की कोई चीज या चिट्ठी उस व्यक्ति की इजाजत के बिना पढ़ने या देखने के खिलाफ हूं.

पर पता नहीं क्यों, आज मुझे अपने समस्त आदर्श तोड़ देने की इच्छा पर कोई गम न था. अपने आदर्शों के खोखलेपन का एहसास मुझे इतनी तीव्रता से सालेगा, मैं ने इस से पहले कभी न सोचा था. मैं ने ठंडी चाय को जल्दीजल्दी गले से नीचे उतारा. दरवाजा बंद किया और सोफे पर बैठ गई. चोरों की भांति पैकेट की ओर देखा, उस की खुशबू का एहसास मुझे तब भी हो रहा था. मैं ने एक आकर्षण के वशीभूत हो कर, उस पैकेट की ओर हाथ बढ़ाया और उस के रैपर के बटन खोल डाले. खुशबू तीव्र होती चली गई. उस पर्स के पैकेट में मुझे एक लिपस्टिक, रुमाल और एक कागज का चौकोर दफ्तीदार टुकड़ा तथा दो चार नकली आभूषण मिले.

मैं मन ही मन भ्रमित हो उठी. उस युवती को मैं ने कभी लिपस्टिक लगाए हुए न देखा था, न ही उस की देह पर आभूषणों की बहुलता देखी थी.

मैं ने आहिस्ता से उस सफेद झक रुमाल को उठाया, जिस पर एक छोटी सी कोमल 'कमल की कली' अंकित थी. मैं ने उसे सूंघने का प्रयास किया, वही चिरपरिचित मनमोहक खुशबू मेरे नथनों में समाती चली गई.

मैं कुछ क्षणों के लिए भावविभोर हो उठी. फिर मैं ने आहिस्ता से उस कागज के टुकड़े को उठाया, मैं ने देखा उस पर उस युवती का एक छोटा सा चित्र लगा था तथा उस का नाम उम्र व पेशा भी लिखे हुए थे.

नाम: अपरिमिता

उम्र: 35 वर्ष

मैं चौंक उठी उस बेहद निर्मल और कोमल युवती की उम्र पढ़ कर.

पेशा: वेश्यावृत्ति.

वह कार्ड उस युवती का शरीर बेचने का लाइसेंस था. मैं कई क्षणों तक स्तब्ध सी,

अब मुरदों की चमड़ी भी उपयोगी

विज्ञान की मदद से अब मृत व्यक्तियों की त्वचा का भी पूरापूरा उपयोग किया जा सकेगा. लेकिन इस के लिए मृत व्यक्ति की त्वचा को उस की मृत्यु के 48 घंटे के भीतर ही प्रयोग में लाना होगा.

त्वचा प्रत्यारोपण कोई नई बात नहीं है किंतु लंदन के सर्जन राय सैंडर्स ने शव से त्वचा ले कर उस को गंभीर रूप से जख्मी व्यक्ति पर आरोपित करने की नई विधि विकसित की है.

मृतक व्यक्ति की त्वचा के विषाणु प्रभाव को समाप्त करने के लिए मरीज को तीन महीने तक एक औषधि का इस्तेमाल करना पड़ेगा. यदि एक बार भी औषधि का इस्तेमाल रोक दिया जाए, तो प्रत्यारोपित त्वचा के गिरने का खतरा पैदा हो जाता है.

एकटक उस शब्द को बारबार पढ़ती रही और अचानक मेरी आंखें, मेरा शरीर बेहद भारी तथा निष्क्रिय हो गया. मस्तिष्क शून्य हो चला और न जाने कब तक मैं उसी हालत में बैठी रही.

तभी बाहर से कम्मो द्वारा दरवाजा खटखटाने की आवाज मेरे कानों से टकराई. उस की घबराहट तथा बेहद तेज आवाज ने मुझे सक्रिय किया. मैं ने उस की आवाज पर जवाब देते हुए कहा, ''रुको, अभी आती हूं.''

फिर मैं ने जल्दीजल्दी सारी वस्तुएं उसी पैकेट में रख कर पैकेट को जलती अंगीठी में डाल दिया और उन वस्तुओं को जलते हुए देखती रही. मेरी आंखें जल उठीं और उन से अनजाने में ही अविरल अश्रुधारा फूट पड़ी. मैं थकीथकी सी वापस सोफे पर आई और आ कर सोफे की पुश्त पर सिर टिका कर आंखें बंद कर लेट गई.

थोड़ी देर तक मुझे गरमी का एहसास होता रहा. फिर धीरेधीरे आग ठंडी हो गई. मैं ने आहिस्ता से आंखें खोल कर बुझती हुई आग में उस पर्स के अवशेष खोजने की कोशिश की. मुझे उस में कुछ न मिला. सब कुछ राख में परिवर्तित हो चुका था.

मैं ठंडी सांस ले कर सचेत होती हुई, सीधी हुई तो मुझे अम्मां के बनाए पकौड़ों का खयाल आया, जो मेज पर कब से पड़े थे. मैं उन्हें उठाने के खयाल से मेज की ओर झुकी तो चौंक पड़ी, वहां मुझे फोटो और लाइसेंस पड़ा दिखा.

वही मुसकराती आंखें मेरी ओर देख रही थीं. बगल में उम्र, नाम, पेशा बड़ेबड़े अक्षरों में लिखे थे.

मैं सोचने लगी, 'मैं ने तो सभी वस्तुएं आग में डाल दी थीं, यह कैसे रह गया? कहीं... मैं ने जानबूझ कर तो...' आगे मैं कुछ न सोच सकी. मैं ने घबरा कर अंगीठी की ओर देखा. वहां आग बुझ चुकी थी. ●
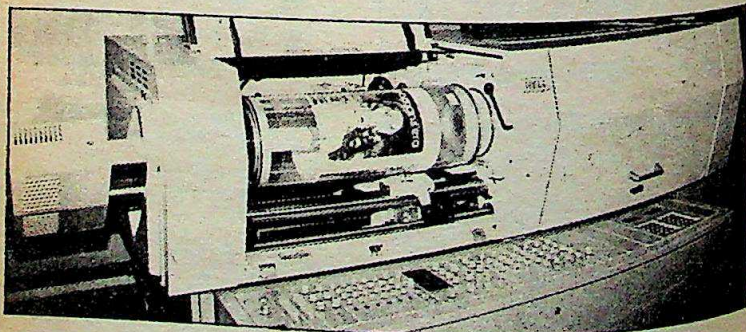
स्कूल, कालेज में या राह चलते अनेक बार लड़केलड़कियों की शरारत भरी बातें मनोरंजक स्थिति बना देती हैं और कई बार तो घटना काफी दिलचस्प बन जाती है. क्या आप के समक्ष कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण मुक्ता के लिए अपना नाम व पूरा पता के साथ लिखें. प्रत्येक प्रकाशित रचना पर 30 रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र इस पते पर भेजें: मुक्ता, दिल्ली प्रेस, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

हमारे अंगरेजी शिक्षक से जब भी कोई छात्र प्रश्न पूछता, वह कहते, ''मुझे प्रश्न करने वाले बिलकुल पसंद नहीं.''

सभी छात्र उन की इस आदत से परेशान थे. एक दिन कक्षा में नई आई लड़की ने कुछ पूछना चाहा तो उन्होंने उस से भी यही कह दिया. लड़की भी कम न थी वह तुरंत बोली, ''सर, मुझे आप के बेटे से शादी नहीं करनी है जो आप की पसंदनापसंद का प्रश्न उठे. मैं तो पाठ्यक्रम की बात कर रही हूं.''

—नरेंद्रकुमार जैन

*

कुछ महीने पहले की बात है. बी.एड. में एक छात्रा सुंदर न लगने के बावजूद अपने लंबे बाल खोल कर आती थी. इस से उस के आसपास बैठने वाले छात्रछात्राओं को असुविधा होती थी.

एक दिन एक सहपाठी ने उस की सीट पर एक चिट डाल दी, जिस में लिखा था, ''कहो, पांचाली, तुम्हारे खुले केशों के लिए किस की छाती का लहू लाऊं.''

अगले दिन से वह लड़की अपने बाल बांध कर आने लगी.

—रवींद्र कौर

*

मेरा मित्र लखनऊ से कानपुर बस द्वारा जा रहा था. रास्ते में एक नवयुवक बस में चढ़ा और एक लड़की के पास बैठ गया. धीरेधीरे वह लड़की के और करीब आने के लिए उस की ओर खिसकने लगा.

कुछ देर तो लड़की ने उस की इस हरकत को सहन किया फिर अचानक जोर से बोल पड़ी, ''कंडक्टर साहब, इन महाशय को जरा बस का दरवाजा दिखा दीजिए क्योंकि यह खिड़की के रास्ते बाहर जाने की कोशिश कर रहे हैं.

—उत्कर्ष गुप्ता

*

हम कई लड़कियां विद्यालय प्रांगण में बैठी थीं. उधर से एक मनचला युवक निकला. उस ने हम पर छींटाकशी की, ''अहा, क्या फूल हैं.''

हम में से एक चंचला से नहीं रहा गया. वह भी बोल उठी, ''फूल तो सुंदर हैं, पर भौंरा कुछ जंचा नहीं.''

यह सुनते ही लड़का चलता बना.

—कुसुमलता जोशी

*

मेरा एक मित्र प्रायः राह चलती लड़कियों से छेड़छाड़ करता रहता था. एक दिन उस ने एक लड़की को रास्ते में अकेला देख कर कहा, ''हाय जानेमन, आज इतना डी.डी.टी. पाउडर क्यों लगा रखा है?''

''तुम जैसे मच्छरों को दूर रखने के लिए.'' लड़की ने टका सा जवाब दे दिया.

—संजय व्यास ●

मुक्ता
हर अंक में ढेरों पठनीय सामग्री
युवाओं की अनूठी पत्रिका
उद्योग व्यापार व्यवसाय की जानकारी
ज्ञान से भरपूर जानकारी वाले लेख
फैशन, फिल्म और खेलों पर विशेष सामग्री
हर अंक में मनोरंजक कहानियां प्रेम रस में डूबी कविताएं
युवाओं को सफल जीवन जीने की प्रेरणा देने वाली अकेली पत्रिका
आज ही से नियमित खरीदिए
दिल्ली प्रेस प्रकाशन

"जाति विशेष से जुड़ा नहीं रहूंगा"

● ध.उ. गेडाम

हाथ में 25-30 लिफाफों का बंडल देख कर विस्मित हो गनेसीलाल से पूछा तो पता चला यह तो उन का हर सप्ताह का क्रम ही है. समाचार पत्रों में 'जाति बंधन नहीं' वाले वैवाहिक विज्ञापन देखते हैं और पत्र लिखते हैं. हर सप्ताह इसी तरह वह पत्र भेजते रहते हैं. जातिगत रूढ़िवाद अभी भी समाप्त नहीं हुआ है इसलिए बमुशकिल एकदो पत्रों का उत्तर आता है तो आगे का पत्रव्यवहार प्रारंभ होता है.

गनेसीलाल अपने इंजीनियर पुत्र तथा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त स्नातकोत्तर पुत्री के विवाह की चिंता में हैं. अपनी जाति में विवाह करने का उन का विचार कतई नहीं है.

"उन की शिक्षादीक्षा तथा नौकरी के लिए तो जाति प्रमाणपत्र का लाभ लिया ही होगा." पूछे गए प्रश्न का उत्तर सुन कर आश्चर्य हुआ. उन के बच्चे अपनी ही योग्यता के बल पर आगे आए हैं और अनुसूचित जाति का कोई लाभ लेने का उन्होंने कभी कोई प्रयास भी नहीं किया. अभी तक तो बच्चे इस प्रयास में सफल रहे हैं और जब उन्होंने अनुसूचित जाति का कोई लाभ लिया ही नहीं है और न आगे ऐसा विचार ही है तो अपनी जाति में उन का विवाह क्यों करें? अंतर्जातीय विवाह कर के इस जातिगत कलंक का उच्चाटन क्यों न करें?"

विचार तो स्तुत्य और उत्तम लगे. पर इस मनोदशा का कारण जानने की इच्छा अवश्य हुई. पता चला कि गनेसीलाल अनुसूचित जाति के एक गरीब परिवार से हैं. पहली कक्षा में जब दाखिल हुए तो पाठशाला घर से दूर थी और दोपहर की छुट्टी में खाना खाने घर आ नहीं सकते थे. इसलिए मां घर से

संकल्प, संघर्ष और सफलता

एक संकल्प को पूरा करने के लिए जीवन में संघर्ष करना पड़ता है. संघर्ष के दौर में अनेक तरह के अनुभव होते हैं.

मुक्ता अपने पाठकों से जीवन के उतारचढ़ाव के उसी दौर को जानना चाहती है. ताकि आप का अनुभव अन्य पाठकों के लिए प्रेरणा बन जाए. यह भी हो सकता है कि आप की असफलता की कमियों को दूर कर कोई व्यक्ति जिंदगी की दौड़ में सफल हो जाए.

इस नियमित स्तंभ के लिए आप के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा.

पता है :
मुक्ता, संपादन विभाग, ई-3,
झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055.

ही रोटी बांध देती थी. उन के पिता के एक मित्र बडारी जाति के उसी गांव में रहते थे जहां पाठशाला थी. उन के यहां आ कर साथ लाई रोटी खाते थे. पर उन के घर जातिगत दुराव इतना था कि घर के सामने आंगन में एक कोने में, जहां पशु बांधे जाते थे, उन्हें खाने के लिए बैठना पड़ता था और दूर से ही पानी पिलाया जाता था.

उच्च श्रेणी की पढ़ाई के लिए और दूर के स्कूल में जाना पड़ा परंतु वहां भी उन्हें इसी प्रकार की लज्जाजनक स्थिति का सामना करना पड़ा. घर की गरीबी के कारण हरिजन सेवक समाज से छात्रवृत्ति और पुस्तकें भिक्षा स्वरूप मिलती थीं, उन्हीं से काम चलाना पड़ता था. इस प्रकार पढ़ाई कर के परीक्षा का परिणाम जैसा आना था सो आया पर किसी प्रकार मैट्रिक पास हुए. इतनी शिक्षा उस समय के लिहाज से बहुत थी. भाईबहनों की पढ़ाई व घर के खर्च का बोझ नौकरी करने को विवश कर गया. नौकरी के साथसाथ एक वकील के कार्यालय में टाइपिंग का काम भी करते थे ताकि घर का खर्च चल सके और बहनों के विवाह के लिए भी कुछ बचाया जा सके.

दफ्तर में भी उन जैसों के लिए अलग मटका रखा जाता था जहां से पानी पीना पड़ता. वह मटका स्वयं नल से भरना पड़ता, क्योंकि किसी नौकर या चपरासी को यह काम करना गवारा न था उन के लिए. एक बार नाजिर के यहां रखे मटकों से पानी पी लिया तो भारी बावेला मचा. सारे मटके फोड़ दिए गए और ऐसी धृष्टता पुनः न करने की सख्त धमकी भरी चेतावनी दी गई. बात बहुत पुरानी नहीं है सन् 1946 की ही है और वह भी जिला मुख्यालय की. तब गांवों में क्या दुर्दशा होगी, सहज ही कल्पना की जा सकती है.

ऐसी स्थिति में गनेसीलाल को तो घुट पाने की विवशता रही थी. 'इस दलदल में बच्चों को फंसने नहीं दूंगा.' उन्होंने यह पक्का निश्चय कर लिया था. दृढ़ निश्चय किया कि जाति विशेष से जुड़ा नहीं रहूंगा और अपना मार्ग स्वयं तय करूंगा. किसी की बैसाखियों का सहारा अपने बच्चों के लिए नहीं लूंगा. सन् 1956 में चली धर्मांतरण की आंधी भी उन्हें विचलित नहीं कर पाई. उद्देश्य पूर्ति के लिए जैसा भी पथ मिला बढ़तें गए.

आज बच्चे अच्छी शिक्षा पा गए. बच्चों के मेधावी होने का परिणाम यह हुआ कि बच्चों की पढ़ाई सुचारु रूप से हुई और उन्हें नौकरियां भी अच्छी मिलीं. स्वयं गनेसीलाल भी आगे की पढ़ाई कर के अच्छे पद पर पहुंचे थे. थोड़ी सी आय में बच्चों का पालनपोषण, उन की शिक्षा का खर्च तथा गनेसीलाल की स्वयं अपनी उच्च शिक्षा का खर्च, बड़ी कठिनाई से घर चल पाता, पर एक उत्तम उद्देश्य मन में था तो सब सह लिया. और वे दिन भी बीत ही गए.

कुछ माह बाद पता चला कि बच्चों के अंतर्जातीय विवाह ही हुए. पुत्र के लिए दक्षिण भारतीय ब्राह्मण परिवार की कन्या मिली तथा पुत्री के लिए मराठी संभ्रांत वैश्य परिवार मिला. काफी परिश्रम करना पड़ा पर उस का समुचित लाभ भी मिला. गनेसीलाल का स्वप्न साकार हुआ. साथ में यह भी विश्वास हो गया कि जब तक अनुसूचित जाति के लोग सरकार पर निर्भर रहना बंद नहीं करेंगे तब तक न वे आगे बढ़ पाएंगे और न जातिप्रथा का यह राक्षस खत्म हो सकेगा. जातिगत भावनाएं समाप्त करने का यही एकमात्र मार्ग है.

सब से कीमती घड़ी

आमतौर पर एक घड़ी की कीमत कितनी हो सकती है—हजार, दस हजार या लाख रुपए? वर्ष 1984 में एक घड़ी 12 लाख डालर में बिकी थी. लेकिन अब दूसरी घड़ी ने इस रिकार्ड को भी तोड़ दिया है. यह घड़ी 45 लाख स्विस फ्रैंक में बिकी है. भारतीय रुपयों में यह राशि करीब सवा चार करोड़ रुपए बनती है. 18 कैरेट सोने की इस घड़ी में 1,728 पुरजे हैं.

क्या आप एक अच्छी पुस्तक ढूंढ़ रहे हैं
जिस को सब
चाहते और पसंद करते हों ?

सुबह का भूला

कहानी ● कैलाशचंद्र शर्मा

हसीन सपनों के धरातल पर प्रेम की हवेली खड़ा कर लेना आसान तो होता है किंतु वक्त की गर्दिशों की वजह से जब प्रेम की मधुर स्मृतियां दिल में दर्द का समंदर बहाने लगती हैं तो कहानी कुछ और ही रूप धारण कर लेती है. किंतु फिर भी प्रेमीप्रेमिकाओं के दृष्टिकोण में कोई बदलाव आ पाता है?

यह मेरा आखिरी पत्र है, तुम शायद यह पढ़ कर चौंक पड़ो, शायद तुम्हें बुरा भी लगे और तुम मुझे कुछ गालियां जल्दीजल्दी दे डालो. वहुत संभव है तुम ट्रेन पकड़ कर यहां आ पहुंचो और मेरा गरीवान पकड़ कर गुस्से से कांपते हुए मुझ से इन शब्दों का अर्थ पूछो. इन शब्दों का अर्थ मैं भलीभांति समझता हूं. इन शब्दों का अर्थ है तुम मुझे भूल जाओ और ऐसा ही प्रयास मैं भी करूंगा. नहीं जानता कहां तक सफल होऊंगा पर मेरे अंदर से कोई मुझे उकेर रहा है... तैयार कर रहा है मुझे.

जब से मैं ने विभा भाभी के आंसू देखे हैं, मैं अपनी ही नजरों में धूर्त व मक्कार हो गया हूं. ऐसा लग रहा है जैसे मैं ने दीनहीन और बेचारा होने का ढोंग रचा रखा था. यह ठीक है कि घर में हर बात मेरे प्रतिकूल थी, पर ऐसा भी नहीं है कि उस की थोड़ीबहुत जिम्मेदारी मेरी न हो. मैं ने स्थिति से समझौता करने का प्रयास ही नहीं किया, मात्र अपने भाग्य को कोसता बेचारगी की चादर ओढ़े रहा.

भाभी के आंसुओं को देख कर अचानक जैसे मेरा भ्रम टूटा. कल जब मैं रात को घर पहुंचा तो मुझे घुटन महसूस नहीं हुई थी. न ही मैं ने तुम्हें याद किया था और न ही अपने ऊपर तरस खाया था. कामिनी के स्वर में हालांकि व्यंग्य था पर शब्द-सदा की भांति बिच्छू डंक से नहीं चुभे थे, न ही देर तक बैठा सिगरेट फूंकता रहा था और न सोने के लिए नींद की गोली ही ली थी.

तुम्हें गुस्सा आ रहा होगा न, मैं अचानक

मान तो
मृतियां
धारण
बदलाव
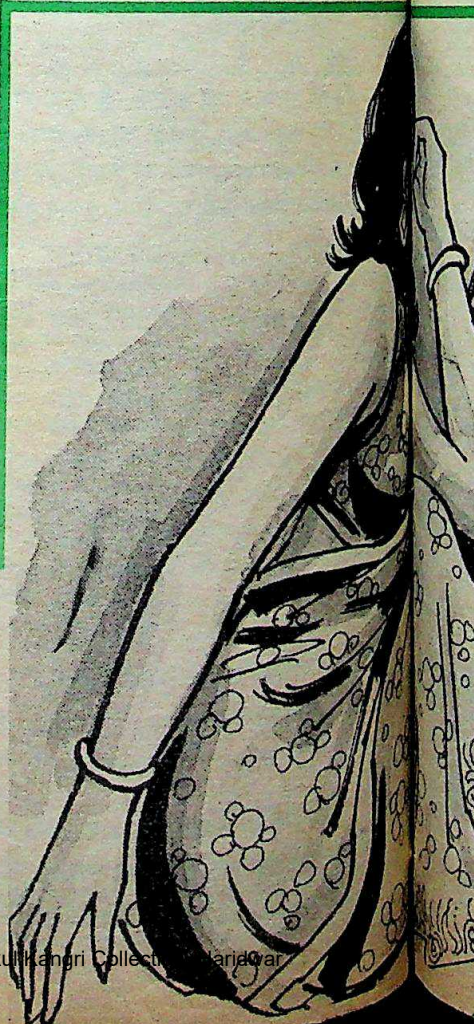
...कौन सा खटराग ले बैठा. किंतु सत्य को मैं ...से छुपा नहीं रख सकता. तुम्हें याद है हम ...ने वादा किया था कि अपने मन की कोई ...एकदूसरे से नहीं छुपाएंगे. सो मैं इस पत्र ...वह सारी बातें जरूर लिखूंगा जो तुम्हारे ...के बाद से आज तक मैं सोचता रहा हूं. हो ...ता है टुकड़ों में यह बातें मैं ने तुम्हें बताई ...पर आज मैं सारी बातें लिख कर हलका हो ...चाहता हूं, क्योंकि ऐसा करने के बाद ही ...विभा भाभी के लिए कुछ कर सकता हूं...

तुम्हारी शादी हुई तो मैं समझता था मैं ...के लिए तैयार हूं. इस दौर से जैसेतैसे ...र जाऊंगा. मेरा यह सोचना शायद मजबूरी के तहत दिल को तसल्ली देना मात्र था. जब आदमी के मन में कुछ नहीं होता तब इसी प्रकार वह अपने आप को समझाने का नाटक किया करता है—एक व्यक्ति के चले जाने से दुनिया खाली नहीं हो जाती. थोड़ी खलास महसूस हो सकती है जिसे समय की गर्द धीरेधीरे पाट ही देती है. यह संवाद मैं ने किसी हिंदी फिल्म में सुना था और उसी को ले कर आश्वस्त हो जाना चाहता था.

परंतु चाहने से ही सब कुछ नहीं हो जाता... चाहा तो बहुत कुछ था मैं ने. शायद मैं तब यह भूल गया था कि मुट्ठी कितनी ही बड़ी क्यों न हो उस में आकाश नहीं बंध

यह सब बातें अकसर मैं तुम से कहा करता था और तुम हंस कर टाल जाती, ये तुम्हारी भारीभारी बातें मेरी समझ में नहीं आती..."

सकता, अंजुरी कितनी ही कस कर बांधी जाए इस में पानी नहीं ठहरता है, नदी के दो पाटों के मिलने की बात कोई पागल ही सोच सकता है.

हां, मैं पागल ही तो था... जब मुझे यह मालूम था कि यह सब असंभव है फिर भी चाहा. ऐसा क्यों होता है, बताओ तो जरा? आदमी पहले ही अपने आप को क्यों नहीं समझा लेता? क्यों रेगिस्तान के मृग की तरह पानी का भ्रम पाले रहता है...

यह सब बातें अकसर मैं तुम से कहा करता था और तुम हंस कर टाल जाती, "तुम्हारी ये भारीभारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं, क्या सोचते रहते हो हर वक्त?"

"यही कि हमारा कल क्या है? जरा सोचो तो उस पल के बारे में जब तुम लाल जोड़ा पहने किसी से सात वचनों का आदानप्रदान कर रही होगी और मैं किसी अंधेरे कोने में खड़ा सोचता रहूंगा कि क्या मैं ने यही चाहा था."

"ओहफफो. छोड़ो भी यह सब. तब की तब देखी जाएगी. आज केवल आज की बात करो. कभी तो वर्तमान में भी जी लिया करो." तुम नाराज हो गई थी.

पर वर्तमान में जीना इतना आसान है क्या? बड़ी हिम्मत चाहिए. सहनशक्ति और कड़वाहट को पीने का माद्दा, जो मुझ में नहीं था. मुझ जैसा आदमी या तो भूतकाल में जी सकता है बीते हुए पलों की बैशाखी थामे या फिर भविष्य के सुनहरे ख्वाबों में...

पर अब तो भविष्य भी मुझे वर्तमान जैसा ही भयावह लगता है. तुम्हारे जाने के बाद से भूत ही मेरा साथी है. तुम ने संभवतः रोधो कर स्थिति को स्वीकार कर लिया. हकीकत को स्वीकारने की पूरी क्षमता है तुम में. किंतु मैं हमेशा उसे झुठलाने का प्रयास करता रहा. मेरा वर्तमान बिलकुल अकेला और सूनासूना था और उस सूनेपन को झेलने की ताकत मैं नहीं बटोर सका. रो तो मैं भी सकता हूं पर आसपास कोई चुप कराने वाला नजर नहीं आता. रो कर खुद ही चुप होना पड़े तो ऐसे रोने का फायदा ही क्या? इस से अच्छा तो मन का गुबार मन में ही भरा ठीक है.

घर से पहले ही खारिज हो चुका था. किताबों में अपना वर्तमान ढूंढ़ने की कोशिश करता, किंतु उस से पूर्व कामिनी के व्यंग्यबाण फिर अतीत में धकेल देते. जाने मुझे हर पल

कोई लड़की चिपकी हुई नजर आती. यहां तक कि पुस्तकों में भी वह उस अनदेखी लड़की की तस्वीर ढूंढ़ती. कुछ लिखता तो उसे लगता प्रेमपत्र लिख रहा हूं. इन सब से बचने के लिए कोशिश करता, जितना ज्यादा हो सके घर से बाहर रहूं पर वापस आने पर उस की नजरें मेरे चेहरे व कपड़ों पर लिपस्टिक के निशान ढूंढ़तीं. अब तुम्हीं बताओ ऐसे वर्तमान में कौन लौटना चाहेगा?

जब शादी के बाद तुम से पहली बार मिला तो मुझे और भी अजीब लगा. तुम बिलकुल सामान्य थी जैसे कुछ हुआ ही न हो. उसी मोहक हंसी से तुम ने स्वागत किया था और उसी पुराने अंदाज में बातें. स्थिति के अनुसार तुम अपनेआप को कैसे ढाल लेती हो, देख आश्चर्य हुआ... बल्कि जलन हुई. मेरे हिसाब से तुम्हें मुझ से मिलते ही लिपट कर

हुए कहना चाहिए था कि तुम मेरे बिना रह सकती... कि तुम [illegible] और मैं तुम्हें गंभीर मुद्रा में समझाने का करता कि रोओ मत, ईश्वर को यही था, अगर हमारा प्यार सच्चा है तो हम जन्म में मिलेंगे... कि शरीर से दूर हुए क्या, मन तो पासपास है...

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ. मेरे घर में कामिनी से और अपने पति से तुम एक जैसी रौ बात कर शायद मुझे चिढ़ा रही थीं... जब रहा गया तो मैं ने ही तुम से यह सवाल "यह सब क्या हो गया?"

हंसी थी तुम... स्वच्छंद हंसी... "कहीं भी तो नहीं हुआ. मैं वहीं हूं, तुम वही हो, लो."

मैं ने जब ऊपर नजर उठा कर देखा तो तुम्हारी हंसी का खोखलापन उजागर हुआ—यह तो होना ही था और हम दोनों ही इस के लिए तैयार थे. शादी हमारा लक्ष्य नहीं था और न ही शादी जैसी रस्म मेरे दिल से तुम्हारी जगह खाली करवा सकती है.

बोलतेबोलते तुम गंभीर हो आई थी. तुम्हारी आंखों में उतर आए आंसुओं को देख कर मैं ने मुंह घुमा लिया था ताकि तुम आंसू पोंछ कर संयमित हो सको. मैं जाने क्यों इस भ्रम को बनाए रखना चाहता था कि तुम अब भी खुश हो और मैं इस दुनिया में बिलकुल अकेला हूं... बिलकुल अकेला... बेचारा... जाने क्यों आदमी सब कुछ जानते हुए भी भ्रम पाले रखना चाहता है.

मैं भी भ्रम पाले रहा. अपने आप को बेचारा और असहाय समझने का... अपने आप में एक महान प्रेमी होने का, किंतु आज बिलकुल उल्टा लग रहा है. अंदर ही अंदर मुझे कुछ कचोट रहा है. मुझे लग रहा है जैसे अचानक मैं तुम्हारे प्रति बेईमान हो गया हूं. अपने प्रति तो मैं शुरू से ही बेईमान था किंतु तुम्हारे प्रति मैं बेईमान नहीं रह सकता...

विभा भाभी के आंसू जाने कैसे कामिनी के आंसुओं में गड्डमड्ड हो गए और मुझे लगने लगा कि जिसे मैं दिखावा और त्रियाचरित्र समझा करता था वह तो दर्द की प्रतिमा थी. मुझे उस एकएक आंसू का हिसाब देना है, क्योंकि उस का कारण मैं था. अगर मुझे पता होता कि भाभी मुझे वहां बुला कर इस स्थिति में खड़ा कर देंगी तो मैं कभी वहां नहीं जाता. भाभी तो सब कुछ जानती थी न फिर उस ने मुझे यह काम क्यों बताया...

श्याम भैया के बारे में महल्ले में जो बातें होती थीं उन से मैं अनभिज्ञ तो नहीं था, किंतु उन्हें महत्त्व नहीं देता था. कहां पैंतालिस पार कर चुके श्याम भैया और कहां ये छिछोरी बातें. वह लड़की श्याम भैया के बच्चों को पढ़ाने आती थी. बाद में चर्चा हुई कि वह भैया के आफिस में भी प्रायः आ कर बैठी रहती है और फिर ऐसी ही बहुत सी बातें चटपटी और जायकेदार.
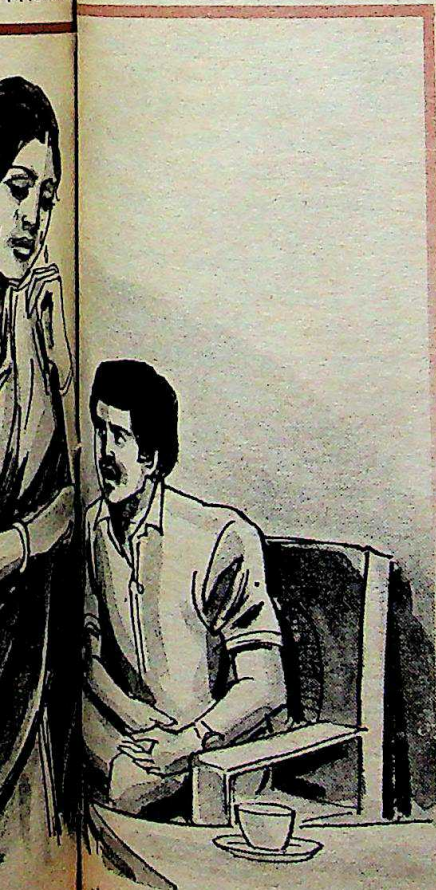
भाभी ने कहा, "मेरा कोई नहीं इस दुनिया में... मेरे छोटेछोटे बच्चों का क्या होगा?"

विभा भाभी स्वयं एकदो बार आफिस पहुंच गई श[illegible] दूर करने के प्रयासों में और बढ़ जाया करता है. चर्चाएं बढ़ीं कि लड़की को अब उन्होंने आफिस के पास ही कमरा ले दिया और अब ज्यादातर वहीं पड़े रहते हैं. भाभी की रातों की नींद उड़ गई... दिन का चैन छिन गया. भैया सुबह जल्दी जाते और रात देर गए आते. दोपहर का खाना लड़की के कमरे पर. पीने भी बहुत लग गए. एकदो आदमियों ने समझाना चाहा कि इस उम्र में यह शोभा नहीं देता, तो उन्होंने उल्टे उन्हें ही खरीखोटी सुना दी, "तुम्हारी औरत को तो नहीं छेड़ता, फिर तुम्हें क्यों कष्ट हो रहा है?"

अब मुझे भी चर्चाएं सच लगने लगीं. पार्टियां धीरेधीरे टूटने लगीं. सौदा होने के बाद कब माल मिलेगा कब नहीं, कोई जवाब भैया के आफिस से नहीं मिल पाता. माल घटिया आया या देर से आया कुछ नहीं सुनना. फैक्ट्री में पेमेंट के लिए फोन करते, आदमी भेजते, पर कोई आफिस में बैठे तब न. फैक्ट्री ने दूसरा एजेंट नियुक्त कर दिया. पर तब भी भैया की प्रतिक्रिया रही, "पर अपनी ऐसीतैसी कराए..."

कल जब दो बार बुलाने पर भी मैं नहीं गया तो भाभी ने लड़के के हाथ चिट भेजी,

'भैया, बड़े विश्वास से मैं ने तुम्हें ही अपनी मुसीबत में मदद करने वाला पाया है. सब लोग तो चटखारे ले कर बातें करते हैं. एक आप ही मेरे दर्द को समझ सकते हैं. बहन की बात केवल सुन ही लेना. कुछ करते बने तो करना, वरना केवल तसल्ली ही दे देना कि ईश्वर सब ठीक करेगा.'

वहां जाते हुए मुझे डर लग रहा था. कितनी अजीब बात है, पहले तो वहां जाने में बड़ा उत्साह हुआ करता था, एक उतावलापन कि वश में हो तो उड़ कर वहां पहुंच जाऊं पर तब वहां तुम बुलाया करती थीं और अब तुम बहुत दूर हो... जाना तो था ही. एकएक सीढ़ी पहाड़ समान हो गई. नहीं जानता एक छलांग में सीढ़ियां पार करने की मेरी फुर्ती कहां गई. क्या मैं बूढ़ा हो रहा हूं...?

कमरे में पहुंच कर लगा जैसे किसी खंडहर में पहुंच गया हूं. हालांकि दीवारों का सिर्फ पेंट ही उड़ा था पर मुझे खंडहर जैसी बिखरी लग रही थीं. एक मनहूसियत भरी खामोशी अंतर को चीरती जाती है. सजासंवरा और महकामहका रहने वाला यह कमरा इतना भुतहा क्यों लग रहा है मैं समझ नहीं पा रहा था, शायद समझ कर भी समझना नहीं चाहता.

कमरे की मनहूसियत भरी खामोशी मेरे अंदर के अकेलेपन से एकीकार हो गई. हालांकि बच्चे कमरे में थे पर वह भी दीवारों की तरह खामोश थे. बच्चों जैसा कुछ भी नहीं था उन में.

भाभी चाय का कप ले कर कमरे में आई और दोनों बच्चों को बाहर कर दिया. मैं और अधिक डर गया. बात शुरू करने से पहले ही भाभी की आंखें बहने लगीं. कमरे में सिसकियां फैल गईं और मुझे घुटन महसूस होने लगी जैसे किसी ने मेरा गला दबा रखा हो. तुम्हें याद होगा एक बार इसी कमरे में तुम भी इसी तरह रो पड़ी थीं. तुम ने पता नहीं कैसे बातोंबातों में मुझे मतलबी कह दिया था. शायद मजाक में ही कहा था पर मैं नाराज हो गया था और तुम से बोलना बंद कर दिया था. यहां इस कमरे में भी जब मैं देर तक कुछ नहीं बोला तो तुम फफक कर रो पड़ी थीं. तुम्हें पहली बार रोते देख कर मैं सकपका गया था और मन आत्मग्लानि से भर आया था. बड़ी मुश्किल से तुम्हें चुप कराया था, यह वादा कर के कि तुम

कितना ही नाराज होऊं पर बोलना बंद नहीं करूंगा...

पर भाभी को कैसे चुप कराऊं? वह बोलती भी जा रही हैं और रोती भी. बातें और रोना... रोना और बातें... सब गड्डमड्ड होता जा रहा है, "मेरा कोई नहीं इस दुनिया में. मेरे छोटेछोटे बच्चों का क्या होगा. अब तो कामधंधा भी ठप्प है और जो है वह 'उस' पर लुटाए जा रहे हैं."... सिसकियां और शब्द, "शरीर में अब कहां दम है... समझाओ उन्हें... मदद करो भैया" सिसकियां... शब्द... शब्द... सिसकियां... मेरे चारों ओर जैसे आंसुओं का समुंदर है और मैं इस में डूबा जा रहा हूं. सिसकियां ही सिसकियां... भाभी की... बच्चों की... तुम्हारी... मेरी... केवल सिसकियां...

मैं कुछ भी तय नहीं कर पा रहा. भाभी ने मुझे ही इस काम के लिए क्यों चुना? अब तुम्हीं बताओ मैं भाभी की कैसे मदद करूं? कैसे भैया को समझाऊं कि वह गलत कर रहे हैं और उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए?

देखो, मुझे कुछ तो करना होगा नहीं तो मेरी आत्मा मुझे धिक्कारेगी. सिसकियों की यह आग मुझे जला डालेगी. अगर मैं ने कुछ भी प्रयास नहीं किया तो क्या कभी मैं भाभी के सामने जा पाऊंगा? तुम्हें मैं यह सब इसलिए लिख रहा हूं कि वादा खिलाफी न हो और अपने आप की नजरों में मैं बेईमान न रहूं. मुझे नहीं मालूम, श्याम भैया पर मेरी बात कहां तक असर करेगी... नहीं जानता कि भाभी की सिसकियां थमेंगी या नहीं, किंतु मैं प्रयास अवश्य करूंगा और इस के लिए यह जरूरी है कि पहले मैं स्वयं को राह पर लाऊं तभी मैं अपनी बात श्याम भैया को कह पाऊंगा.

तुम शायद हंसो कि सौ चूहे खा कर बिल्ली हज करने चली. पर मैं यह व्यंग्य भी झेल जाऊंगा और तुम से कहूंगा कि सुबह का भूला शाम को लौट आए तो भूला नहीं कहलाता. हां... मैं अवश्य ही प्रयास करूंगा और अगर सफल रहा तो तुम्हें फिर कभी पत्र नहीं लिखूंगा. तुम भी ईश्वर से प्रार्थना करना कि मेरा यह पत्र तुम्हें लिखा गया आखिरी पत्र हो. करोगी न? •

गुण-महागुण

बेवकूफ : वह जिस ने चौथे बच्चे के बाद तौबा कर ली क्योंकि उस ने पढ़ा था कि दुनिया का हर पांचवां बच्चा चीनी है.

वह जिसे नौकरी किए चार दिन हुए हों और उस का चार सप्ताह का काम बकाया हो.

झूठा : आप बता सकते हैं कि वह कब झूठ बोलता है-जब भी उस के होंठ हिल रहे हों.

वह इतना झूठा है कि जब उसे अपनी बिल्ली को खाना देना होता है तो किसी और को कह कर बिल्ली को आवाज दिलवाता है.

आलसी : वह कितना आलसी है, इस बात से पता चल जाएगा कि साले को अपने घर जाने के लिए टिकट के पैसे देते समय भी उसे अपना बटुआ नहीं मिला.

किसी ने पूछा, "तुम क्या करते हो?"

उत्तर मिला, "दरअसल मैं इतने दिनों से बेकार हूं कि भूल ही गया कि क्या करता था."

निस्संदेह उस के पांव धरती पर ही हैं. कठिनाई तो यह है कि वह उन्हें हिलाताडुलाता नहीं.

बातूनी : वह वास्तव में अच्छी वक्ता है-ऐसी जिस से बच निकलना असंभव सा है. उस के बोलने की गति दूसरों के सुनने की गति से 50% अधिक है. •

विज्ञान विहंगम

वैज्ञानिक द्वारा कथित जालसाजी

अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान पत्रिका 'नेचर' में प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया है कि एक भारतीय वैज्ञानिक ने विदेश यात्राओं के लालच में झूठ और फरेब का सहारा लिया और विज्ञान के क्षेत्र में कथित जालसाजी की. दक्षिण भारत में भारतियर विश्वविद्यालय के प्राणिविज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. जी. सुंदर राजुलु पर आरोप लगाया गया है कि उन्होंने ब्रिटेन में लिए गए रक्त के एक नमूने को अमरीका ले जा कर यह दावा किया कि वह नमूना भारत में पाए जाने वाले एक विशेष कृमि जीव का है.

10 अक्तूबर 1989 को उत्तरी कोलंबिया के ड्यूक विश्वविद्यालय के समुद्री जैव चिकित्सा केंद्र के निदेशक जोसफ बोनावेंचुरा तथा विलियम्सबर्ग, वर्जीनिया के कालिज आफ विलियम एंड मेरी के जीव विज्ञान के प्रो. चारलोट मैगनम ने भारतियर विश्वविद्यालय को लिखे अपने पत्र में यह आरोप लगाया है. प्रो. राजुलू ने इन की प्रयोगशालाओं में मई व जून 1989 में दो सप्ताह कार्य किया था.

मामले की शुरुआत तब हुई जब प्रो. राजुलु ने उक्त दोनों वैज्ञानिकों से संपर्क कर के यह बताया कि उन्होंने यदाकदा पाई जाने वाली एक हिमालयी प्रजाति इयोपेरीपेटस *वेल्डोनी* के रक्त में तांबा युक्त हीमोग्लोबिन प्रकार के हीमोसायनिन की खोज की है, जो कि फाइलम ओनाइकोफोरा का सदस्य है. उन्होंने उस रक्त के कुछ नमूनों के परीक्षण के लिए अमरीका आने की इच्छा प्रकट की.

समझा जाता है कि ओनाइकोफोरा फाइलम, एनीलिडा और आर्थ्रोपोडा कृमियों के बीच की कड़ी है और हीमोसायनिन की उपस्थिति से इस कड़ी पर कुछ प्रकाश पड़ सकता है. यह विचार कर के बोनावेंचुरा और मैगनम ने प्रो. राजुलू को आगे विश्लेषण के लिए कुछ जीवित कृमियों के साथ अमरीका आमंत्रित किया.

लेकिन जब प्रो. राजुलु अमरीकी प्रयोगशाला पहुंचे, तब उन के पास कोई जीवित कृमि का नमूना नहीं था और उन्होंने कहा कि वह नमूने तो लाए थे पर उन्हें अमरीकी कस्टम अधिकारियों ने रोक लिया. इस के स्थान पर उन्होंने एक प्रशीतित रक्त नमूना प्रस्तुत किया और एक परिरक्षित कृमि भी प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने ई. वेल्डोनी बताया.

रक्त के नमूने में वास्तव में प्रशांत क्रस्टेशियन के समान हीमोसायनिन मिला. लेकिन आगे परीक्षणों से पता चला कि इस हीमोसायनिन का संघटन धरती के जीवों की अपेक्षा, समुद्री जीवों के हीमोसायनिन से ज्यादा मेल खाता था. तब मैगनम ने यह भी पता कर लिया कि प्रो. राजुलू इंगलैंड के लीस्टर विश्वविद्यालय में मुरील वाकर के यहां से होते हुए अमरीका पहुंचे थे.

मैगनम को वाकर के पत्रों से पता चला कि प्रो. राजुलू द्वारा अमरीका ले जाए गए रक्त का नमूना एक ब्रिटिश 'शोर क्रैब' (तटीय केकड़ों) से लिया गया था तथा भारतीय जीवित नमूनों के संबंध में प्रो. राजुलू ने इंगलैंड में भी वही कस्टम अधिकारियों द्वारा नमूने रोके जाने की कहानी बताई थी.

प्रो. राजुलू को निर्धारित कार्यक्रमानुसार वाकर तथा उन के सहकर्मी राबर्ट हैरिस को कुछ अन्य हिमालयी प्रजातियों के जीवित नमूने ला कर देने थे लेकिन उन्होंने वाकर और हैरिस को बताया कि वे नमूने भी ब्रिटिश कस्टम अधिकारियों ने रोक लिए थे, पर एक आंशिक नमूना लाने में वह सफल रहे, जिसे बाद में हैरिस ने स्वीकार किया कि वह एक सामान्य समुद्री कृमि जीव का हिस्सा मात्र था. बोनावेंचुरा और मैगनम को प्रस्तुत किए गए रक्त का नमूना भी प्रो. राजुलू के अनुरोध पर हैरिस ने ब्रिटिश 'शोर क्रैब' से प्राप्त किया था.

प्रो. राजुलु ने स्वीकार किया है कि उन से भारतियर विश्वविद्यालय द्वारा इस विषय पर नोटिस दे कर स्पष्टीकरण मांगा गया है लेकिन उन्होंने जालसाजी के आरोपों पर आश्चर्य जताते हुए कहा कि बोनावेंचुरा और मैगनम ने अपनी प्रयोगशालाओं में हीमोसायनिन पर प्रयोग करते समय कोई संदेह प्रकट नहीं किया था. उन्होंने कहा कि 26 जुलाई को भारत लौटने पर उन्होंने स्वयं बोनावेंचुरा को पत्र लिख कर क्षमा मांगी थी कि वह अपने वादों को पूरा नहीं कर सके और उन्होंने अनेक गलतियां की हैं. लेकिन इस घटना पर उन से अमरीकी या ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने कोई स्पष्टीकरण नहीं मांगा.

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी को भी आरोपों की एक प्रति भेजी गई है, लेकिन अभी तक कोई काररवाई नहीं हुई. बोनावेंचुरा और मैगनम इस से सहमत हैं कि इस घटना से यद्यपि कोई बड़ी क्षति नहीं हुई है—सिवाय शोध कर्ताओं के समय की बरबादी के. फिर भी वे चाहते हैं कि इस मामले की छानबीन की जाए क्योंकि प्रो. राजुलु को इस तरह जोड़तोड़ द्वारा भारत के लिए प्रतिवर्ष वैज्ञानिक यात्राएं बनाने की आदत है. उन का कहना है कि इस तरह कोई छद्म वैज्ञानिक कोरिया, बेल्जियम, वैंकूवर की यात्राएं तो कर सकता है पर इस तरह के झूठ और फरेब से कोई वैज्ञानिक खोज नहीं हो सकती. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिक समुदाय ने इस घटना पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अवकाशप्राप्त वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. जंगी ने बताया कि प्रो. राजुलू हाल ही में उन के साथ आस्ट्रिया में एक सेमिनार में जाने वाले थे और उन के लिए मन में जो सम्मान था, उस को अब काफी ठेस पहुंची है.

'इंडियन एसोसिएशन फार द एडवांसमेंट आफ साइंस' के महासचिव प्रदीप चतुर्वेदी ने कहा कि इस तरह की अनैतिक गतिविधियों के कारण अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान पटल पर भारतीय विज्ञान की साख घटती है. यही कारण है कि विदेशी शोध पत्रिकाएं किसी भारतीय वैज्ञानिक के किसी क्रांतिकारी दावे पर प्रायः तब तक विश्वास नहीं करतीं, जब तक कि उच्च स्तर पर कोई उसे प्रमाणित न कर दे.

अब टमाटर नहीं सड़ेंगे

हमारे खाने में टमाटर आमतौर पर प्रयोग किए जाते हैं. लेकिन हरे पत्ते वाली सब्जियों के बाद टमाटर ही सब से कोमल सब्जी है. यह अपेक्षाकृत जल्दी मुलायम पड़ जाता है और सड़ जाता है. नई जैव तकनीकों द्वारा वैज्ञानिकों ने साधारण टमाटर के जर्मप्लाज्म से वह जीन अलग कर दिया है जो पकने पर टमाटर में एक प्रकार का एंजाइम बनाता है, जो टमाटर को मुलायम बना देता है. कैलीफोर्निया की 'कैलजीन' नामक कंपनी के वैज्ञानिकों ने अनेक वर्षों के प्रयोगों के बाद एक नई तकनीक द्वारा यह जीन अलग किया है.

यद्यपि इस के पहले वैज्ञानिक टमाटर की किस्मों में लगातार सुधार करते रहे हैं. जिस से विटामिन 'ए' और विटामिन 'सी' से भरपूर टमाटर उपलब्ध होते हैं. पहले टमाटर केवल एक निश्चित मौसम में ही मिला करते
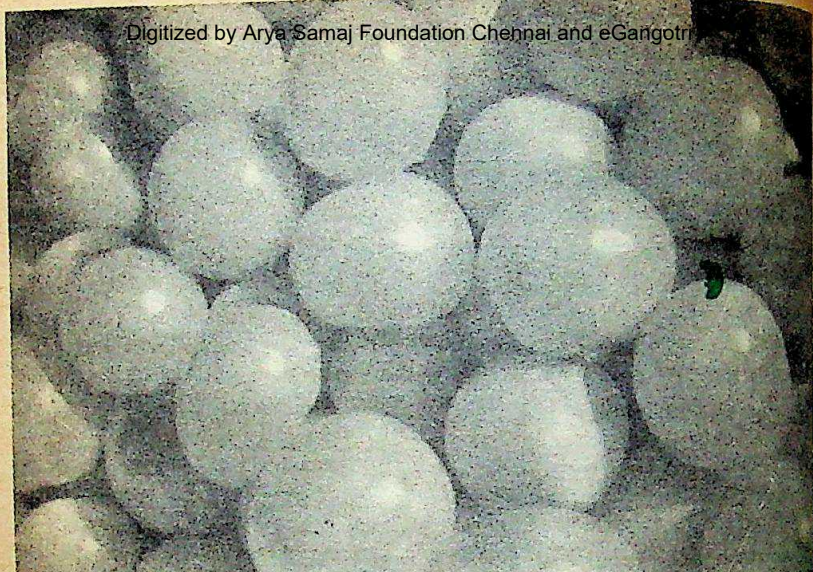
कैलजीन कंपनी की नई तकनीक से अब टमाटर काफी दिनों तक सुरक्षित रह सकेंगे.

थे लेकिन अब वैज्ञानिकों ने ऐसे बीज तैयार कर लिए हैं, जिन से साल भर लगातार टमाटर प्राप्त होते रहते हैं.

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने भी कुछ दिनों पहले जैव तकनीकें अपना कर 'पोमेटो' नामक नया पौधा बनाया है, जो इस से पहले प्राकृतिक सृष्टि में नहीं था. आलू और टमाटर के संयोग से बनाए गए पोमेटो के पौधे में नीचे भूमि के भीतर तो आलू लगते हैं, जबकि उसी पौधे में भूमि के ऊपर तने में टमाटर लटकते हैं. पोमेटो के आलू व टमाटर दोनों ही सामान्य आलू व टमाटर जैसे होते हैं. इस के बीज उपलब्ध होने लगे हैं.

लेकिन अमरीकी प्रशासन ने अभी तक कैलजीन कंपनी द्वारा बनाए गए काफी दिनों तक न सड़ने वाले टमाटरों को बड़ी मात्रा में उगाने की अनुमति नहीं दी है. अमरीकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफ डी ए) नए टमाटरों पर गहन परीक्षण कर रहा है, ताकि मनुष्य पर इस नए जैव उत्पाद के प्रभाव का अध्ययन किया जा सके. अमरीका में इस के अलावा अनेक जैव तकनीकी कंपनियां इस ओर टकटकी लगाए हैं कि यदि इन टमाटरों को स्वीकृति मिलती है तो वे भी ऐसे नए-नए उत्पाद बनाएंगीं.

निस्टाड्स के निदेशक से बातचीत

क्या आप ने कभी ऐसी प्रयोगशाला के बारे में सुना है जिस में न तो कोई आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगों के उपकरण हों, और न ही विशालकाय मशीनें. 'निस्टाड्स' एक ऐसी ही राष्ट्रीय प्रयोगशाला है, जिस का पूरा नाम है-राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान.' यह वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की देश भर में फैली लगभग 40 प्रयोगशालाओं में से एक है. पिछले दिनों जब इस के निदेशक डा. अशोक जैन से मुलाकात हुई तो इस के उद्देश्यों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने बताया:

"वैज्ञानिक और तकनीकी विकास का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, बेहतर ...ज के निर्माण के लिए किस प्रकार की ...नीतियों को अपनाना चाहिए और हमारे ऐतिहासिक नैतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य ...विज्ञान की क्या भूमिका हो सकती है, इन सब ...नों के उत्तर जानने के लिए यह संस्थान ...अध्ययन और अनुसंधान कार्य करता है."

'आज जबकि देश व्यवहारोपयोगी ...अनुसंधान कर रहे हैं, तब भारत में मौलिक ...अनुसंधान अपेक्षाकृत अधिक किए जा रहे हैं, ...यह सही वास्तविकता है?'

"विज्ञान के मूलभूत ज्ञान के बिना कोई भी ...देश तरक्की नहीं कर सकता है, लेकिन उस ...मौलिक ज्ञान को व्यवहार में लाना भी जरूरी है. विकसित देश मौलिक खोजों द्वारा ही आगे बढ़े हैं. भारत में आज मौलिक अनुसंधान अपेक्षाकृत अधिक हो रहे हैं, लेकिन इस के साथ ही हमें व्यवहारोपयोगी अनुसंधानों पर भी पर्याप्त ध्यान देना होगा."

'वैज्ञानिक प्रयोगशाला और आम आदमी के बीच की दूरी पाटने के लिए आप की कोई योजना है क्या?'

"जब हम कोई परियोजना शुरू करते हैं तो यह देखते हैं कि उस पर कितना धन खर्च होगा, उस का प्रशासनिक ढांचा क्या होगा, आदि. इस के साथ ही हम एक नया अध्ययन करना चाहते हैं-विज्ञान का समाज शास्त्र ताकि आम आदमी वैज्ञानिक और प्रयोगशाला का अंतर खत्म हो."

ग्रामीण विकास में विज्ञान व प्रौद्योगिकी

25 जनवरी 1990 को केंद्रीय सचिवालय ...हिंदी परिषद् एवं इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड ...द्वारा दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय सभागार में ...नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्मृति व्याख्यान का ...आयोजन किया गया. यह व्याख्यान वैज्ञानिक ...एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के ...अतिरिक्त महानिदेशक डा. रामकृष्ण आयंगर ...ने दिया. उन्होंने जनजन तक विज्ञान पहुंचाने के माध्यम के रूप में राष्ट्रभाषा हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला, जिसे जन संपर्क के माध्यम के रूप में नेताजी ने भी अपनाया था.

ग्रामीण विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है.

डा. आयंगर ने कहा कि राष्ट्रीय विकास के लिए हमें तीन संसाधनों की जरूरत होती है, जिन में प्राकृतिक स्रोत, संगठन की क्षमता और वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी ज्ञान तथा विशेषज्ञता शामिल है. उन्होंने वैज्ञानिक क्रांति का आह्वान करते हुए कहा कि हम लोग आमतौर पर जैसा होता आ रहा है, जो कुछ भी इस तंत्र में अनियमित हो रहा है, उसे स्वीकार कर लेते हैं और कहते हैं कि यह तो ऐसा ही चलता रहेगा, इसे नहीं बदला जा सकता है. यह धारणा गलत है. विज्ञान द्वारा इसे बदला जा सकता है.

परिषद के महासचिव सुभाष चंद्र लखेड़ा ने कहा कि ग्रामीण विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आश्चर्यजनक ढंग से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. बशर्ते कि यह तकनीकी जानकारी राष्ट्रभाषा हिंदी में उपलब्ध कराई जाए. क्योंकि हिंदी भाषा की व्यापकता तथा पहुंच देश में सभी भाषाओं से ज्यादा है.

गुस्से में

पड़ोसिन ने
पड़ोसिन को बताया
शंका का समाधान कराया
बहन
हमारे कपड़े
तुम्हारे कपड़े से
अधिक सफेद इसलिए होते हैं
क्योंकि हमारे 'वो'
जब गुस्सा होते हैं
तो कपडे रगड़रगड के धोते हैं.
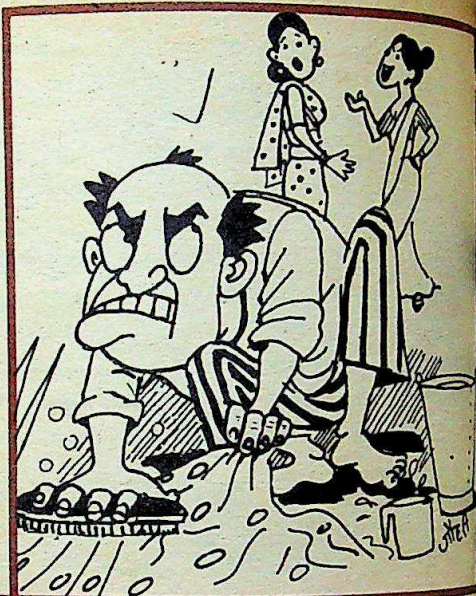
नाता

नेताजी ने
अपनी प्रेमिका के
दिनोंदिन
बदले प्रेम का कारण
पूछ लिया
तो प्रेमिका ने प्रेम मदहोशी
में उत्तर दिया,
"प्रिये, जब तक तुम्हारा
'स्विस बैंक' में
खाता है.
बस यों समझो
मेरा तुम्हारा
जन्मजन्मांतर का
नाता है.

—योगेंद्र मौदगिल

रेलों की रेलमपेल

रेल मंत्रालय की फाइलें
उस के ट्रेनों से
प्रभावित लगती हैं
हरे नोट
दिखाने पर
चलती हैं.

रेल मंत्रालय में
'श्री टायर' प्रबंध
स्पष्ट दिखता है
चपरासी दस में
बाबू सौ में
अधिकारी हजार में
बिकता है.

जब
नई रेल लाइन
बिछाई जाती है
पटरी
ठेकेदार से
बैठाई जाती है.

दफ्तर का काम
ट्रेनों के ढर्रे पर रहता है
प्राप्त ईंधन के अनुसार वह
पैसेंजर
मेल
सुपरफास्ट
गति से चलता है.

दुर्घटनाग्रस्त होने पर
ट्रेन का रूप
चंडी सा
नजर आता है
बलि का बकरा
तलाशा जाता है.

ट्रेनें
धोखाधड़ी का
रास्ता
अपनाती हैं
टाइम टेबल को
धता बताती हैं.

—मिथीलाल जायसवाल

एक ही मिशन

हम ने पूछा उन से कि
आजकल थानों में
बहुत लोग मर रहे हैं
उन्होंने पलट कर जवाब दिया
कि हम व
सरकारी हस्पताल वाले
आजकल
एक ही मिशन पर कार्य कर रहे हैं.

—मिर्जा शाहिद बेग

बंद होंठों से
कई हम ने गीत गाए हैं.
जमाना गवाह है,
अब तक तो मुसकराए हैं.

सिए हैं होंठ
निगाहों की बंदगीर में,
एक आप है जो
मुझे पलपल आजमाए हैं.

हो न जाएं
मुझ से दूर मुहब्बत की कसम,
एक आरजू है, आप की
जो अब तक जिए आए हैं.

बातें करें आप की
तसवीर से भला कब तक?
आप आएंगे कब
मेरे स्वप्न झिलमिलाए हैं.

—रीना

जिंदगी एक नदी का नाम है

जिंदगी
बहती नदी का गीत है,
बन सके तो
बादलों सा गाइए.

दो नयन इक स्वप्न की कंदील है
सीप में मोती सरीखे पल रहे
इक दिए की झिलझिलाती 'लो बने
भोर से ले कर सुबह तक जल रहे.
जिंदगी
इक बांसुरी का गीत है,
बन सके तो
शाम से दोहराइए.

ये हरापन झर रहा है रात का
मुट्ठियों में हंस के इस को बांध लो,
सुबह की पहली हवाओं की तरह
पीर अंधे पर्वतों की लांघ लो.
जिंदगी
इन चांदनी का गीत है,
बन सके तो
इस के आंगन आइए.

हाथ में मेंहदी उजालों की रचे
गंध की ताबीज ऋतुएं भर रहीं
मौसमों पर एक जादू सा हुआ
नेह डूबे छंद के अक्षर रही
जिंदगी
इक स्वप्न का संगीत है
बन सके तो
उम्र भर दोहराइए.

—दिनेश शुक्ल

पत्थर बना दिया है

तनहाइयों ने प्यार से मुझ को खफा किया
पत्थर से मार कर मुझे, पत्थर बना दिया.

खामोशियां अब चुभने लगीं, शूल की तरह
अमावस की रात में, चंदा उगा दिया.

दीवार भी अब रिसने लगी फूटे जख्म से
अच्छे भले इनसान को, बेजां बना दिया.

रोके कोई बरबादियां, रुकती नहीं मुझ से
दिल के मेरे चिराग को, किस ने बुझा दिया.

गम से नहीं हूं दूर मगर पास भी नहीं.
ये कौन सी मंजिल पे मुझे है खड़ा किया.

—अक्षय कुमार 'मंजुल'

पास से गुजर

सारे ख्वाब टूट गए, सारे सपने बिख
हो हम से बेखबर, वो पास से गुजर

भरपूर प्यार के उन के दावे का
कहां खो गए, वो ना जाने किधर

जब चाहते नहीं थे, तो जिद थी कि
जब ख्वाहिश की जरा सी, तो क्यों मु

उन के साथ के बिना, कैसे जाते हम
आने का वादा था, तभी तो हम ना

तनहा हुए तो वो ख्वाबों का शह
आया,
और जो हकीकत से की तुलना तो

तारीखें बदलती गईं उम्र भी ढलती
मनमीत के इंतजार में सिर्फ हमीं

"मैं अपने भाइयों से अलग कहां हूं."

शशि कपूर

भेटवार्त्ता • राकेश रंजन

नौजवान प्रेमी, कालिज छात्र, शहर जानीमानी ह
कर्त्तव्यनिष्ठा पुलिस अफसर, एक सम पति या प्रेमी या फिर आदर्शवादी प्रेमी–ये भूमिकाएं निभा चुके हैं शशि कपूर. यहां त खलनायक की भूमिका भी. विगत 30 व अभिनय के क्षेत्र में हैं शशि कपूर और अवधि में उन्होंने न केवल अच्छी फि अभिनय किया, बल्कि खुद अच्छी फिल्मों निर्माण भी किया.

आज शशि कपूर ने अपने कैरियर को और दांव पर लगा दिया है. उन्होंने अब त बजट की साफसुथरी फिल्में बनाई थीं. अब वह बड़े ब की फिल्म 'अजूबे' बना हैं. यह पू व्यावसायिक ढर्रे फिल्म होगी, जिस के सितारे हैं, अमिताभ बच्चन,
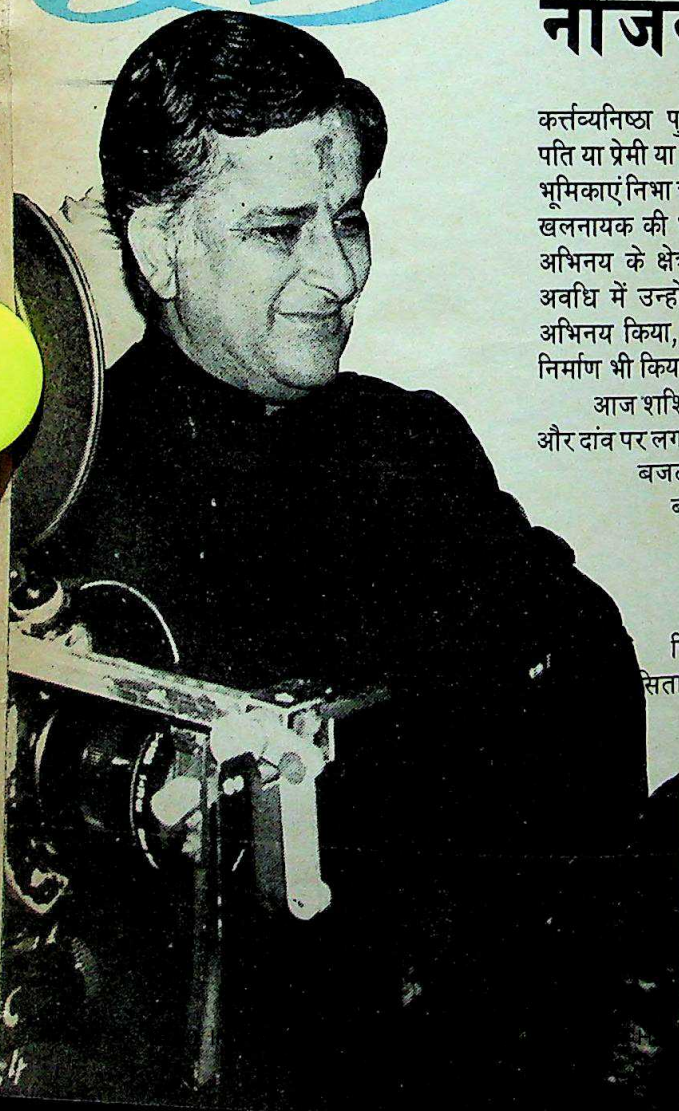
तीस सा हैं पर उ फिल्म और अ

तीस साल के फिल्मी जीवन में शशिकपूर ने अनेक तरह की भूमिकाएं की हैं पर उन्हें इस बात का दुख है कि वह अपने प्रशंसकों को एक भी यादगार फिल्म नहीं दे सके. आइए देखें, शशिकपूर और क्याक्या बताते हैं अपने और अपनी फिल्मों के बारे में...

फिल्म 'अकेला' में अमिताभ के साथ शशिकपूर : इस बार भाई नहीं चरित्र अभिनेता.

कपूर, शम्मी कपूर, डिंपल कपाडिया और अन्य कई जाने माने कलाकार.

तीन दशक पहले कपूर भाइयों में से सब से छोटे भाई शशि ने अपने बलबूते पर फिल्मी दुनिया में अभिनय के क्षेत्र में कैरियर बनाने की ठानी और चल पड़े इस ओर. आते ही इस क्षेत्र में कोई अच्छा सा मौका मिल पाना कोई आसान सी बात नहीं थी. बड़ी मुशकिल से एक फिल्म मिली, 'चारदीवारी', अच्छा काम किया. धीरेधीरे आगे बढ़े और एक अच्छे कलाकार के रूप में उन की पहचान बनी. इस के बावजूद वह बड़े कलाकारों की श्रेणी में नहीं आ पाए.

फिल्म 'विजेता' में रेखा व शशिकपूर : प्रशंसा तो मिली पर पैसा नहीं.

समय गुजरता गया, आखिर उन का काम रंग लाया. उन की तीन फिल्में, 'शर्मीली', 'चोर मचाए शोर' और 'आ गले लग जा' सुपरहिट हुईं. इन फिल्मों के बाद शशि को फिल्म निर्माताओं से एक के बाद एक प्रस्ताव मिलने शुरू हो गए और उन्होंने एक साथ कई फिल्मों में काम किया.

जब शशि कपूर की गिनती बड़े कलाकारों में होने लगी, तब उन्होंने कदम रखा फिल्मों के निर्माण के क्षेत्र में. खुद की निर्माण संस्था 'फिल्मवाला' के नाम से शुरू की. उन की पहली फिल्म थी, 'जुनून', इस के बाद, '36 चौरंगी लेन', 'कलियुग', 'विजेता' और 'उत्सव' इन फिल्मों को आलोचकों की सराहना तो खूब मिली, लेकिन व्यावसायिक तौर पर ये फिल्में सफल नहीं हो सकीं.

संभवतः यही कारण है कि व्यावसायिक सफलता को ध्यान में रख कर ही शशि कपूर ने 'अजूबे' की योजना बनाई. इस फिल्म का निर्देशन भी वह स्वयं कर रहे हैं. प्रस्तुत है शशि

एक फिल्मी गाने पर नृत्य करते शशिकपूर : नृत्य के नाम पर उछलकूद.

कपूर से उन के कैरियर, उतारचढ़ाव, 'अजूबे' तथा अन्य कई मुद्दों पर हुई बातचीत के अंश :

आज आप जिस मुकाम पर खड़े हैं, उस से पीछे मुड़ कर देखते हैं तो कैसा महसूस करते हैं?

बहुत संतुष्टि मिलती है. 30 साल पहले कदम रखा था मैं ने इस उद्योग क्षेत्र में. इस बात का गर्व है कि मैं ने कपूर खानदान में जन्म लिया. अपने कैरियर के इस दौर में राज कपूर, विमल राय, बी.आर. चोपड़ा, मनमोहन देसाई, जेम्स आइवरी, रमेश सिप्पी, सत्यजीत राय जैसी हस्तियों के संपर्क में रहा. मैं समझता हूं कि इस इंडस्ट्री में मैं ने अब तक शानदार साल गुजारे हैं.

आप की 'जब जब फूल खिले', 'शर्मीली' और 'आ गले लग जा' जैसी फिल्में व्यावसायिक तौर पर बेहद सफल रहीं और आप की छवि भी एक अच्छे कलाकार की रही, इस के बावजूद लगता है कि आप की प्रतिभा का सही उपयोग नहीं हुआ. आप का क्या खयाल है?

मैं आप की बात से सहमत नहीं. ऐसी बहुत सी फिल्में मुझे मिलीं, जिन में मेरी प्रतिभा उभर कर सामने आई. दर्शकों ने मेरी वैसी फिल्मों को बेहद पसंद भी किया. हां, आप यह कह सकते हैं कि मेरे कैरियर में मुझे ऐसी कोई भूमिका नहीं मिली, जिसे यादगार कहा जा सके. वैसे, मुझे भी अभी वैसी किसी भूमिका का इंतजार है, अभी मैं ने अभिनय से संन्यास तो नहीं लिया?

वैसी यादगार भूमिका अब तक न मिलने का क्या कारण मानते हैं आप?

बस, इत्तिफाक देखिए, अभिनय मेरा व्यवसाय है, यह व्यवसाय सुचारु रूप से चले,

(शेष पृष्ठ 159 पर)

दिल्ली टाइम्स में एक पत्रकार के रूप में शशिकपूर : बेहतर अभिनय के लिए पुरस्कार.

परदे के आगे परदे के पीछे

अनीता राज : 'शादी के बाद का किस्सा

कभी अनिता राज का नाम था. स्वास्थ्य और सौंदर्य संजोने के लिए उस ने वीडियो कैसेट भी बनाए थे. शादी के बाद वह थुलथुली नजर आने लगी है.

फिल्म 'खतरनाक' के समारोह में वह नजर आई. चेहरे पर लीपापोती के बावजूद मुंहासे और पीलापन नजर आ रहा था.

भेंट होने पर पूछा "शादी के बाद भी फिल्मों में उत्तेजक दृश्य क्या आप को फबते हैं?"

घूरते हुए वह बोली, "पसंद तो मुझे भी नहीं हैं पर फिल्मी चलन का सवाल है."

"क्या शादी के बाद भी हीरो[illegible] कशिश बनी रहती है? आप का क्या [illegible] है?"

अनिता राज एक बार चौंकी [illegible] बोली, "यह सब अपने ऊपर निर्भर [illegible] जया प्रदा, डिंपल, हेमा आदि को ही [illegible] इन की फिल्म उद्योग में आज भी [illegible] इज्जत है."

"पर क्या 'कशिश' भी है?"

इस पर अनीता राज चुप हो [illegible]

संजय दत्त के साथ अनिता राज : फिल्मी चलन में सब कुछ जायज है.

फिल्मी पत्नियां: परदे के पीछे की व्यथा

शादी के बाद पूनम ढिल्लो भी डिंपल की राह पर.

फिल्मी सितारों की पत्नियां वास्तव में बेबस होती हैं. जहां उन के पति सुर्खियों में रहने के लिए नएनए हथकंडे अपनाते हैं वहीं उन पत्नियों को गुमनामी के अंधेरों में रखना चाहते हैं.

अब डिंपल कपाड़िया और पूनम ढिल्लो को ही लीजिए. डिंपल की दारुण कथा तो सब को मालूम ही है, पूनम ढिल्लो भी उसी राह पर है. उस का पति अशोक ठाकरिया फिल्म निर्माता है. जाहिर है कि पूनम उस की हीरोइन होगी. फिल्म बनी पड़ी है, पर अभी बिकी नहीं है. खर्चा चलाने के लिए उस ने एक 'वैन' में मेकअप रूम बनाया है तथा अन्य सुविधाएं भी जुटाई हैं. उस की प्रबंधक पूनम ढिल्लो को बनाया है.

अब पूनम गाड़ी ले कर निर्माताओं के पास जा रही है कि वह उस की 'वैन' किराए पर ले तथा सितारों को सुविधाएं उपलब्ध कराएं.

बेचारी पूनम, कहां से कहां पहुंच गई.
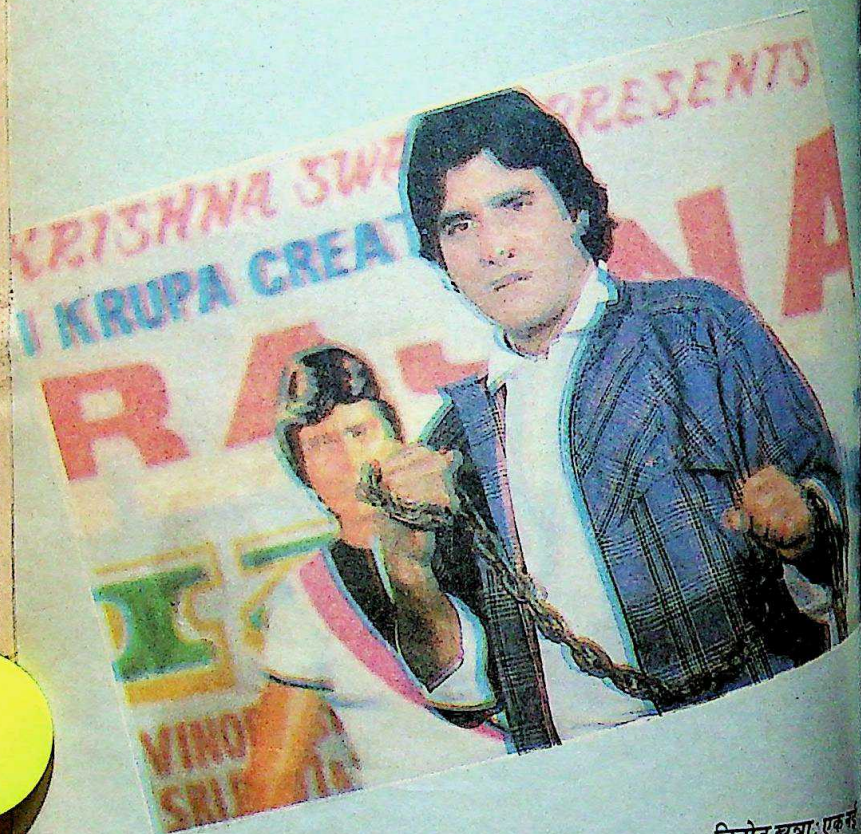
विनोद खन्ना: एक नई फिल्म की तलाश.

विनोद खन्ना की द्विविधा

विनोद खन्ना आजकल द्विविधाग्रस्त है. पिछले छः महीने से उस ने कोई नई फिल्म अनुबंधित नहीं की है. इधर भप्पी सोनी द्वारा 'फिल्म निर्माता परिषद' तथा 'ट्रेड पत्रों' में की गई उस की शिकायतों से वह बौखला गया है. पिछले कुछ समय से वह अपनी शूटिंग से अकसर गायब होता रहा है.

फिल्म 'धर्म संकट' की शूटिंग पर भेंट होने पर उस से पूछा, "आप के खिलाफ जो कुछ छप रहा है, इस पर कुछ टिप्पणी करेंगे?"

तनाव के स्वर में वह बोला, "यह सब... बेबुनियाद बातें हैं. देखिए, मैं अभी भी शूटिंग... कर रहा हूं."

"अभी आप के आध्यात्मिक गु... रजनीश की मृत्यु हुई है. आप उन... दाहसंस्कार में शामिल नहीं हुए?"

"इतना समय नहीं था क्योंकि सूचना... ...इस विषय पर मैं कुछ बात नहीं करना चाहता."

सुप्रिया पाठक : दूसरी औरत की कहानी

बेचारी सुप्रिया पाठक... न जाने कहां से गुजर गई. वीडियो फिल्मों से फीचर फिल्मों तक में उस ने काम किया. बात नहीं बनी तो उस ने शादी कर ली, पर फिल्मों में हीरोइन बनने की इच्छा बलवती रही. इसी से शादी का बंधन भी उसे ज्यादा दिनों तक नहीं बांध पाया.

फिल्मों में संघर्ष और फिर पंकज कपूर (... चंद) से दूसरी शादी. पर इस से भी कैरियर में उठान नहीं आया. फिलहाल वह खाली है और मां बनने की तैयारी में है.

पिछले दिनों 'कमला की मौत' के शों में नजर आई तो पूछा, "एक अभिनेता पति के साथ कैसा महसूस होता है?"

पहले सुप्रिया चौंकी, फिर बोली, "अच्छा, बहुत अच्छा लगता है. वह अभिनेता है तो मैं भी अभिनेत्री हूं. हम एकदूसरे के अभिनय को पहचानते हैं."

सुप्रिया पाठक : मैं भी तो अभिनेत्री हूं.

नए फैशन के साथ

डिजाइनदार हलके कत्थई रंग की सेमी बैगी शर्ट और गहरे चाकलेट रंग की सेमी बैगी पैंट में सजधजे इस युवक पर एक नजर डालिए. इस युवक के व्यक्तित्व में चारचांद लगाने में इस परिधान का भी खासा योगदान है.
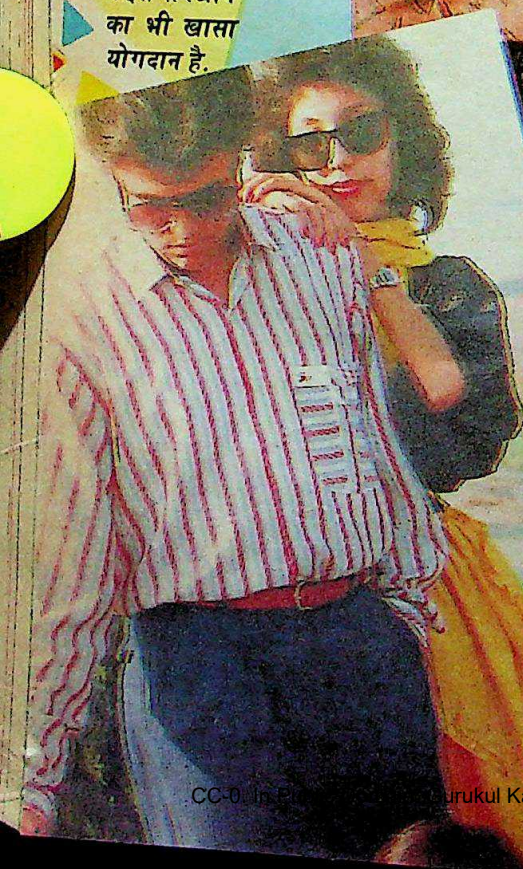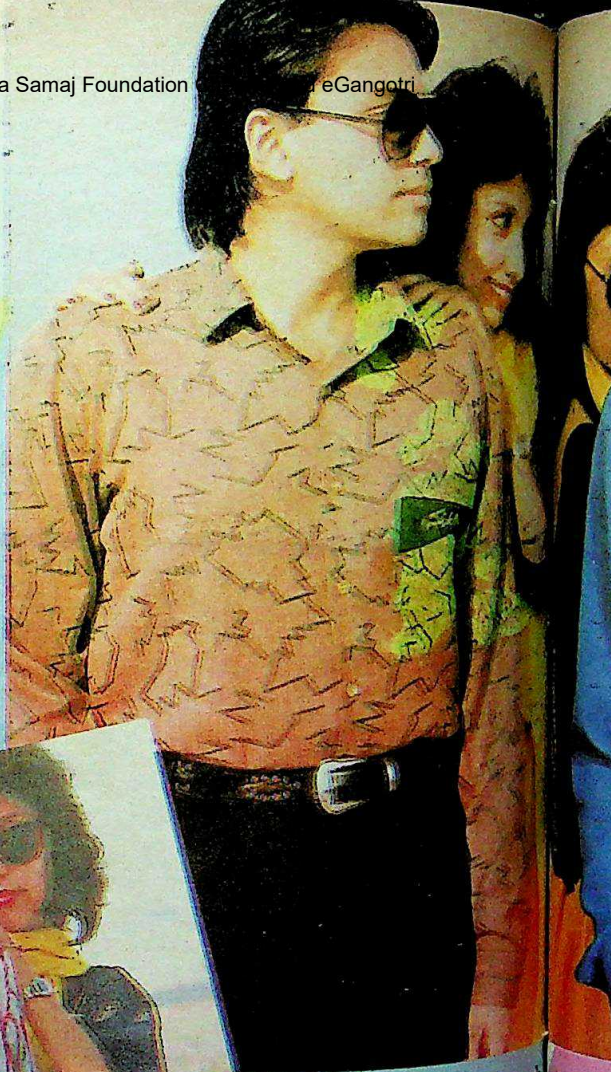
ग्रीष्म ऋतु के आगमन के साथ ही हलकेफुलके, ढीले-ढाले और शीतलता का एहसास देने वाले परिधानों की बहार सी आ जाती है पर ऐसे परिधानों को धारण करने का सलीका तो कोई इस युवक से सीखे. सचमुच मैं कौन नहीं मर मिटना चाहेगा इस पर.

नीले रंग की शर्ट और चाकलेटी रंग की पैंट में अपने व्यक्तित्व को निखारने वाले इस युवक का अंदाज जितना निराला है उतनी ही निराली रंग संयोजन को चुनने की उस की रुचि भी है. पहनावे में किस रंग ढंग का परिधान कब रंग जमा दे—यह जानना हो तो इस युवक से पूछिए.

व्यक्तित्व को विशिष्टता प्रदान करने के लिए युवक ने जिस खास रंग और ढंग का परिधान धारण किया है, उस की दाद देना जरूरी है. अपने व्यक्तित्व को विशिष्ट और आकर्षक बनाने के लिए आप भी ऐसा ही परिधान चुनें.

भील जनजीवन का चितेरा : बाबा

भेंटवार्त्ता

गगन बिहारी दाधीच

पिछले तीन दशकों में भारतीय कला पर आए पाश्चात्य प्रभाव को आज और भी ज्यादा तेजी से महसूस किया जा सकता है. विवादों में फंसी कला अकादमियों व अमूर्त कला की लंबीचौड़ी बहसों से दूर रह कर राजस्थान की भील सभ्यता, संस्कृति व जीवन शैली को अपनी तूलिका से चित्रित करता एक साधारण सा व्यक्तित्व है, जिसे कला जगत में 'बाबा' के नाम से जाना जाता है.

'बाबा' कहे जाने वाले गोवर्धनलाल जोशी में चित्रण के प्रति रुचि बचपन में ही जागृत हो गई थी और उन्हें मूल प्रेरणा नाथद्वारा कांकरोली क्षेत्र की पिछवई चित्रण शैली से मिली.
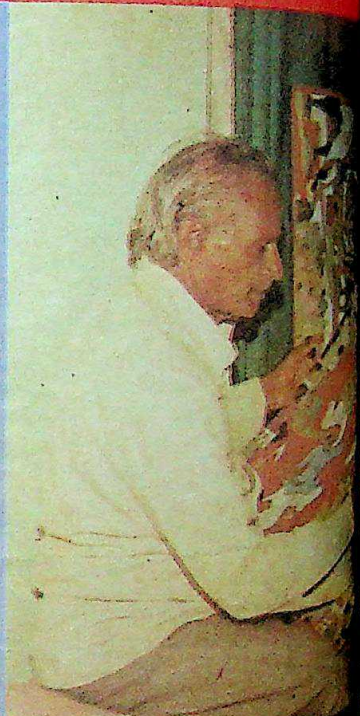
राजस्थान की [illegible] संस्कृति को अपनी तूलिका से सजीव रंग रूप प्रदान करने वाले कलाधर्मी 'बाबा' के व्यक्तित्व में जितनी सादगी है, उन की कला में उतनी ही विविधता है. पिछले तीन दशकों में भारतीय कला जगत में आए बदलाव और कला की सार्थकता पर कला के इस अद्भुत चितेरे का क्या कहना है?

'बाबा' ने अपनी कला की प्रारंभिक शिक्षा नाथद्वारा के कला शिक्षक दामोदर गूजर से ली जो चित्रकार होने के साथ ही अच्छे अखाड़ेबाज भी थे. इस के बाद 'बाबा' को नाथद्वारा शैली के प्रसिद्ध चित्रकार घासीराम से कला का 'गुरुमंत्र'—हाथी, हाथ और घोड़ा, बाकी सब थोड़ा थोड़ा मिला. युवा होतेहोते 'बाबा' की पहचान अपने कसबे में एक कुशल चितेरे के रूप में हो गई, और इन्हें शादीब्याह व अन्य अवसरों पर चित्रण के लिए बुलाया जाने लगा.

प्रसिद्ध शिक्षाविद डा. कालूलाल श्रीमाली (भूतपूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री) ने 1931 में उदयपुर में जब 'विद्या भवन' संस्थान की स्थापना की तो 'बाबा' को वहां कला शिक्षक नियुक्त किया. एक विदेशी कला मर्मज्ञ कोरिन डेंट ने 'बाबा' का तूलिका संचालन, रेखांकन व कल्पनाशीलता को 'विद्या भवन' में आयोजित एक समारोह में लगे उन के

चित्रों को देख कर पहचाना.

कोरिन डेंट से 'बाबा' के चित्रों की प्रशंसा सुनने के बाद डा. श्रीमाली ने उन्हें अग्रिम कला शिक्षा के लिए वजीफे पर 'शांति निकेतन' भेजा.

शांति निकेतन में 21 वर्षीय युवा 'बाबा' ने भारतीय कला के पुनरुत्थानकालीन आंदोलनों से जुड़े व बंगाल शैली के प्रमुख चित्रकार अवनी बाबू (अवनींद्रनाथ टैगोर) से कला की बारीकियों को सीखा और अपनी कला को निखारा. वहां उन्होंने प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस से रेखांकन व चित्रण तथा विसुदा से छाया चित्रण तकनीक को सीखा. अवनी बाबू की प्रेरणा से ही 'बाबा' ने राजस्थान की लोक कला व भील जाति के जनजीवन को अपनी तूलिका से जीवंत किया.

शांति निकेतन से लौट कर बाबा ने अपने चित्रों की एकल प्रदर्शनी दिल्ली, जयपुर व उदयपुर में आयोजित की. इन के चित्र भारत के प्रमुख कला केंद्रों, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के अलावा विदेशी दूतावासों व अन्य संग्रहालयों में सुशोभित हैं. 74 वर्षीय बाबा आज भी चित्रण कार्य में व्यस्त हैं. उदयपुर के पंचवटी क्षेत्र में स्थित 'बाबा आर्ट गैलरी' में उन से हुई बातचीत के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं :

बाबा शब्द आप के नाम से कब जुड़ा?

वास्तव में तो मैं 'बाबा' (वृद्ध) अब हुआ हूं. लेकिन शांति निकेतन से कला शिक्षा ले कर जब मैं उदयपुर लौटा तो समय मिलते ही गांवों में 'स्केच' करने निकल जाया करता था. मुझे अपने काम में मस्त देख कर ग्रामीणों ने मुझे 'बाबा' यानी फकीर, घुमक्कड़, कहना शुरू कर दिया और मैं युवावस्था में ही गोवर्धन जोशी से 'बाबा' बन गया.

भारत के पुनरुत्थानकालीन कला

मेवाड़ के परंपरागत लोकनृत्य 'गवरी' का दृश्यांकन, इस चित्र में बाबा ने आदिवासी भीलों के 'गवरी' नृत्य को अपनी तूलिका से दर्शाने का प्रयास किया है.

आंदोलन से आप जुड़े रहे हैं. वर्तमान में जो मूर्तअमूर्त कला व नितनए कला आंदोलन चल रहे हैं, उन के बारे में आप क्या सोचते हैं?

कला तो समाज का प्रतिबिंब होती है. वर्तमान में जो मूर्तअमूर्त आंदोलन चल रहा है वह पूर्णतः पाश्चात्य कला से प्रभावित है, साथ ही व्यक्ति परक भी है. समाज के लिए कुछ संदेश तो होना ही चाहिए कलाओं में. वैसे खुलासा कर के देखें तो मूर्तअमूर्त तो शैली है, विषय को प्रस्तुत करने की. लेकिन यह अपनी होनी चाहिए न कि पाश्चात्य का भोंड़ा अनुकरण.

किंतु शुद्ध अमूर्त कला के बढ़ते चलन व समकालीन कला पर आए पाश्चात्य प्रभाव से छुटकारा पाने का कोई उपाय है?

मेरे अकेले के चिंतित होने से क्या होगा. कला के मर्म को न समझने वाले लोगों ने ही अमूर्त कला को एक फैशन के रूप में अपना लिया है. अमूर्त चित्रण का संप्रेषण जटिल जरूर होता है लेकिन उस का एक उद्देश्य भी होता है.

शांति निकेतन में भी 70-80 वर्ष पूर्व कला का अमूर्त रूप प्रचलित था किंतु उस में मौलिकता थी, मात्र पाश्चात्य का अनुकरण नहीं. वैसे, कलाकार को अपने देश व समाज में व्याप्त समस्याओं को भी चित्रण का विषय बनाना चाहिए. अपने आसपास की प्रकृति, जनजीवन को सौंदर्यबोध से संयोजित कर चित्रित करना चाहिए.

आए दिन कला अकादमियों के पुरस्कारों पर विवाद होता रहता है, इस बारे में आप के विचार...?

मुझे न कला अकादमियों की राजनीति की चिंता है, न ही पुरस्कारों की. जब कला का सीधा संबंध ही हेय पुरस्कारों की राजनीति से जुड़ गया हो तो कोई क्या कर सकता है. मैं भी अकादमियों से जुड़ा रहा हूं, कला संस्था का सदस्य हूं. किंतु... खैर... इस विषय पर बात न करें तो ही बेहतर है. यहां एक बात और कह दूं, देश की राजनीति से भी निम्न है कला अकादमियों की राजनीति.
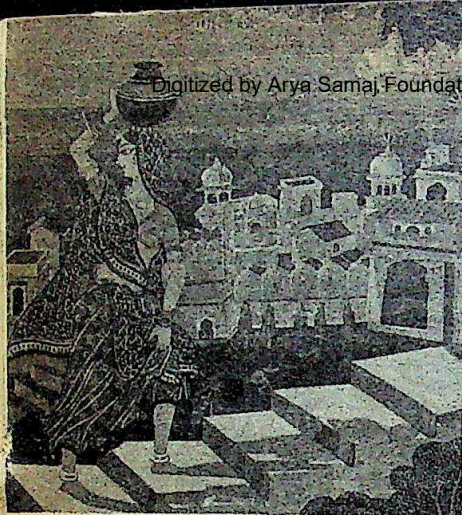
पनघट की पनिहारिन : बाबा की सूक्ष्म दृष्टि का कमाल.

राजस्थान की समकालीन कला से आप जुड़े हुए हैं. राजस्थान के समकालीन कलाकारों के सृजन से क्या आप संतुष्ट हैं?

कुछ ही युवा कलाकार हैं जो मौलिक सृजन कर रहे हैं, ज्यादातर कलाकार 'शार्ट कट' माध्यम व निम्नस्तर की राजनीति से जुड़ कर पुरस्कारों की फेहरिस्त लंबी करने में लगे हैं. युवा कलाकारों की पीढ़ी से मैं जरूर आशान्वित हूं जो अपनी जमीन व कला की परंपरा से जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं, मौलिक सृजन कर रहे हैं.

आप मौलिक सृजन किसे मानते हैं?

रुपाकारों को अपने निजी व नए तरीके से सामने रखना ही सृजन कहलाएगा. ऐसे सृजन में सौंदर्य व कला की साधना भी होनी चाहिए. अनुकृति व सृजन में यही तो फर्क है.

कुछ कलाकार सृजन के नाम पर अनुकरण कर रहे हैं. यह कहां तक उचित है?

उचित अनुचित का ठेका तो अकादमियों ने ले रखा है. जिस कलाकार को अकादमी ने पुरस्कृत कर दिया, उस की अनुकरण प्रवृत्ति भी सृजन कह दी जाती है. भारतीय कला के नाम पर लोक कला को तोड़मरोड़ कर जो भोंडा संयोजन इन दिनों कुछ कलाकार कर रहे हैं, वह कला के ... जालसाजी है.

आप की जीवन शैली व वर्तमान ... कलाकारों की जीवन शैली में आप क्या ... महसूस करते हैं?

वक्त के साथ जीवन शैली में परिव... तो आता ही है. आज के कलाकार को किसी संस्था विशेष से जुड़ना अब जरूरी व लाभ... लगता है. हमारे समय में गुट नाम की कोई चीज ही नहीं थी.

आप के जीवन की कोई अविस्मरणीय घटना...?

जब मैं 13-14 वर्ष का था, त... नाथद्वारा के एक महाजन ने मुझे अपनी दुका... के मूहुर्त पर चित्र बनाने के लिए बुलाया... चित्रण कार्य के बाद उस महाजन ने मुझे ... रुपए खुश हो कर दिए. वे क्षण मेरे लि... रोमांचकारी थे. उस जमाने में 5 रुपए बहु... बड़ी बात थी. मेरे पिताजी की पगार ही ... रुपए प्रतिमाह थी.

एक और घटना मुझे याद है, उस की याद मुझे आज भी झकझोर देती है. चित्रण के साथ नृत्य व नाटक में भी मेरी रुचि रही है... शांति निकेतन में जब मैं कला शिक्षा ग्रहण कर रहा था तब एक दिन वहां चित्रांगदा नाटक का रिहर्सल चल रहा था. मैं और मेरे सहपाठी रत्नाकर भी दर्शक के रूप में रिहर्सल देख रहे थे. तभी पास में ही ए... ठिगने कद का साधारण सा व्यक्ति, जिस के बाल बिखरे हुए थे, कपड़े मैलेकुचैले थे, मेरे पास आ कर बैठ गया और आराम से बीड़ी जला कर पीने लगा.

बीड़ी के धुएं से मुझे परेशानी हुई. मैं युवा तो था ही, मैं ने उसे कुहनी मार दी ताकि वह मेरी नाराजगी को समझ जाए. मेरे इस व्यवहार से वह उसी वक्त उठ कर चला गया. उस के जाते ही मैं ने पास बैठे सहपाठी रत्नाकर से उस की शिकायत की और ... रत्नाकर ने मुझे बताया कि वह बीड़ी पीने वाला व्यक्ति जिसे तुम ने कुहनी मारी थी कोई और नहीं शरद बाबू (शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय) थे. मारे ग्लानि के मैं रो पड़ा...

साक्षात्कार में घबराहट

लेख • प्रो. राजेंद्र गर्ग

अधकचरी जानकारी और कुछ गलत धारणाओं के शिकार युवक जब साक्षात्कार देने पहुंचते हैं तो कुछ कहनेसुनने के पहले ही उन के छक्के छूट जाते हैं और वे अपने हाथपांव ठंडे कर के बगैर कोई कौशल दिखाए वहां से खाली हाथ वापस लौट आते हैं. आखिर साक्षात्कार के दौरान ऐसी मनस्स्थिति का औचित्य क्या है?

इस संघर्षपूर्ण संसार में अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए सभी प्राणियों में लगातार प्रतियोगिता चल रही है. इस जीवन संघर्ष में सफल होने के लिए पशुओं में सिर्फ शारीरिक क्षमताओं की आवश्यकता होती है,
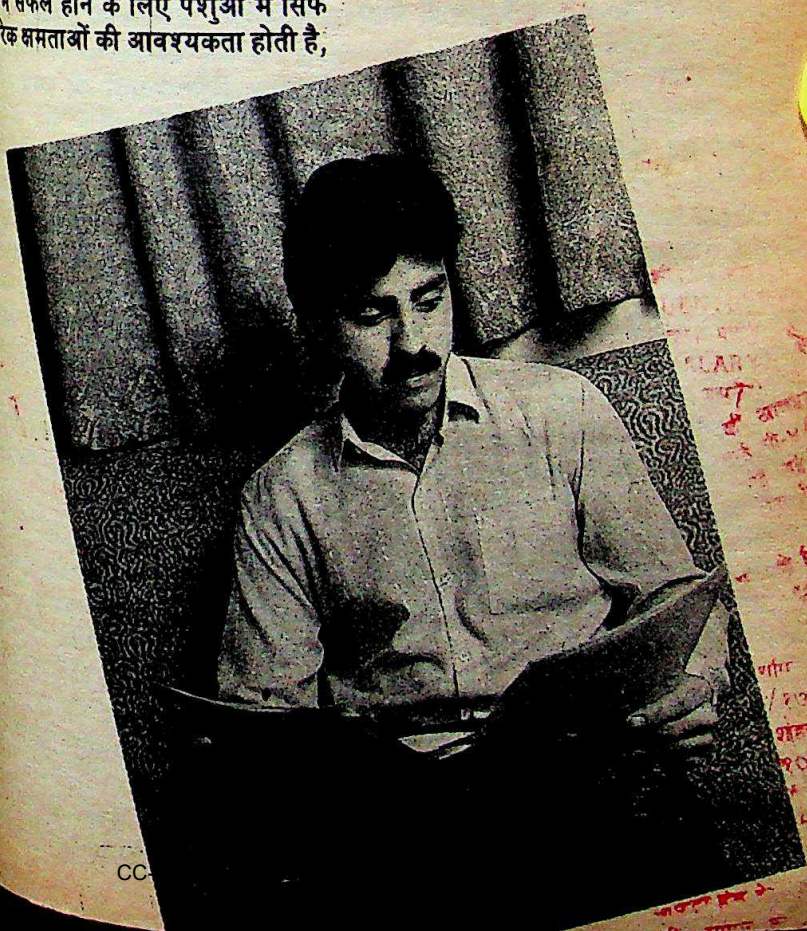
साक्षात्कार देने से पहले अपने मित्रों से खुल कर बातचीत कीजिए और जानकारी प्राप्त करने के साथ ही अपने सहज होने का परिचय भी दीजिए.

जैसे तेज रफ्तार, तीखी निगाह, तीव्र श्रवण शक्ति, संवेदनशील नाक, मजबूत टांगे और शारीरिक बल. आदिकाल में मनुष्य को भी इन्हीं क्षमताओं की जरूरत पड़ती थी, ताकि वह शत्रुओं से अपना बचाव कर सके और अपने लिए भोजन जुटा सके.

आधुनिक सभ्य दुनिया के जीवन संघर्ष में शारीरिक बल के अतिरिक्त अन्य बहुत सी क्षमताओं का होना अनिवार्य है. जैसे, प्रभावशाली व्यक्तित्व, विचारों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए वाक शक्ति, दूसरों को अपनी अभिव्यक्ति क्षमता से प्रभावित करने की कला, तुरंत और सही निर्णय लेने की योग्यता, नईनई बातें सीखते रहने और विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप ढल सकने की आदत, सामाजिक सौहार्द, आकर्षक तौरतरीके, लोकप्रियता, आत्मविश्वास, खुला दिमाग, विनोदप्रियता, तथ्यात्मक ज्ञान और तर्कपूर्ण विचारशक्ति आदि.

साक्षात्कार किसी व्यक्ति में छिपे हुए इन्हीं गुणों का आकलन और मूल्यांकन करने की एक विधि है. साक्षात्कार प्रत्याशी के संपूर्ण व्यक्तित्व की परीक्षा है, यह उस की वैयक्तिक विशिष्टताओं का प्रथम दृष्टि में जायजा लेने का तरीका है.

किसी आदमी के बारे में आप ने बहुत कुछ सुना है. आप उस के विचारों और दृष्टिकोण से खूब परिचित हैं. आप ने उस का लिखा हुआ सब कुछ पढ़ लिया है. इतने पर भी आप के मन में उस का ठीक चित्र नहीं बन पाता. आप उसे एक बार देख लेना चाहते हैं, उस से दो बात कर लेना चाहते हैं. उस के चेहरे, बोलचाल और उस की चालढाल से ही आप उस के व्यक्तित्व में झांकना चाहते हैं. साक्षात्कार व्यक्तित्व में झांकने का ही एक खास तरीका है.

इस गलतफहमी में न रहिए कि साक्षात्कार आप के ज्ञानभंडार या विद्वता की परीक्षा है, जिस का उद्देश्य आप के तथ्य ज्ञान की थाह लेना हो. यह कार्य तो आप की लिखित परीक्षाओं में पहले ही हो चुका है. उन में सफल होने के बाद ही तो आप को आमनेसामने बैठ कर बातचीत करने के लिए आमंत्रित किया गया है.

साक्षात्कार तो आप के स्वभाव का मूल्यांकन है. आप व्यग्र हैं या शांत चित्त

आप के विचार स्पष्ट हैं या गड्डमड्ड? आप अपनी बात दूसरों को भलीभांति संप्रेषित कर सकते हैं या नहीं? अपने विचारों से दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं या उन्हें आप की योग्यता पर शंका करने को प्रेरित कर देते हैं? आप के पास अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्द और सुगठित वाक्य हैं या नहीं? अटपटे सवालों को सुन कर आप विचलित हो जाते हैं या तुरंत बुद्धि से मुसकराते हुए कोई विनोदपूर्ण या रोचक उक्ति से माहौल को हलका बना सकते हैं? आप के तौरतरीके मधुर और शिष्ट हैं या फूहड़ और अप्रिय? इन्हीं बातों की साक्षात्कार में परख की जाती है.

हो सकता है कि प्रश्नकर्ता आप से कोई तथ्यात्मक प्रश्न पूछे. जैसे, चंद्रमा पर उतरने वाला पहला आदमी कौन था या हवा में कितने प्रतिशत आक्सीजन होती है, अथवा अकबर का जन्म किस तारीख को हुआ था, आदि. लेकिन ध्यान रखिए कि उस समय महत्त्व इस बात का नहीं कि आप ने उत्तर क्या दिया. बल्कि इस बात का है कि उत्तर कैसे दिया. हो सकता है, आप के मित्र ने तीनों प्रश्नों के उत्तर ठीकठीक दिए हों और फिर भी साक्षात्कार में असफल हो गए हों और आप ने आक्सीजन का प्रतिशत कुछ गलत बताया और तारीख भी ठीक नहीं बताई. फिर भी आप का चयन हो गया. सहज आत्मविश्वास और स्वयं स्फुरित उल्लास की मनोदशा में दिए गए उत्तर तथ्यात्मक रूप से चाहे सही न हों, मगर घबराहट से आतंकित व्यक्ति के सही उत्तरों से ज्यादा असरदार होते हैं.

कुछ ऐसा ही हुआ हमारे परिचित नवयुवक कृष्णदत्त के साथ. इस बार भी साक्षात्कार के दौरान वह घबरा गए और उन की सारी पढ़ाई, सारी तैयारी धरी की धरी रह गई. जिन प्रश्नों पर वह घंटों बहस करने की क्षमता रखते थे, उन के उत्तर भी ठीक से न दे सके. सब कुछ भूल गए. कहना कुछ चाहते थे, कह कुछ और ही बैठे. वाक्य टूट गए, शब्द नहीं मिल पाए और मुंह सूख गया.

कक्ष से बाहर आ कर कृष्णदत्त ने बताया कि "इस बार भी वही हुआ जो पहले के आठदस साक्षात्कारों में हुआ था. अंदर जाने के पहले ही दिल धड़क रहा था और हथेलियों पर पसीना आ रहा था. मेरा नाम पुकारे जाते ही सारा शरीर कांपने लगा. मैं मुसकराते हुए चेहरे से अंदर गया, मगर मेरे होंठ फड़कने

साक्षात्कार देने आए युवकों से खुले मन से बात करें ताकि दिलोदिमाग पर बेवजह की गंभीरता की धुंध जमने न पाए.
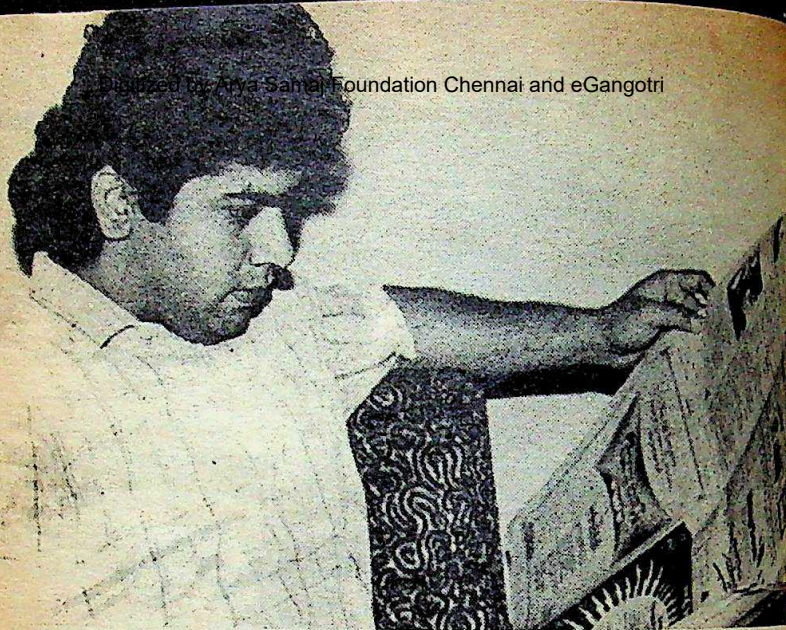
पढ़ाई के साथसाथ सामान्य ज्ञान बढ़ाने के लिए समाचारपत्र पत्रिकाएं नियमित रूप से पढ़िए.

लगे. कुरसी पर बैठते ही हथेलियां मलने लगा. फिर हाथ मेज पर रखा तो पेपर वेट न जाने कब हाथ में आ गया और मैं उसे दबाता रहा. जबान ही जैसे लड़खड़ाने लगी. माथे पर सिलवटें पड़ गईं. पेपर वेट मैं ने रख दिया, मगर घबराहट में नाखून चबाने लगा. एक सवाल का जवाब गलत दे बैठा. वे लोग हंसने लगे. फिर क्या था, मुझ पर घड़ों पानी पड़ गया. आगे तो सब कुछ गड्डमड्ड हो गया. चक्कर सा आने लगा. जब मैं उन्हें एक प्रमाणपत्र दिखा रहा था तो मेरे हाथ बुरी तरह कांप रहे थे. ऐसा ही हमेशा होता है और लिखित परीक्षाओं में जबर्दस्त सफलता के बाद भी मैं आज तक बेरोजगार घूम रहा हूं. हर बार का साक्षात्कार पहले से ज्यादा खराब होता जाता है. अब क्या किया जाए? यह कह कर कृष्णदत्त चेहरे से पसीना पोंछते हुए धम्म से बैठ गए.

अकसर इंटरव्यू के अनुभव बताने वाले नवयुवक यही बातें सुनाते हैं. उन का चेहरा सफेद पड़ जाता है, दिल जोरजोर से उछल कर पसलियों से टकराने लगता है. जीभ सूख जाती है, उच्चारण बिगड़ जाता है. आंखें विस्फारित हो जाती हैं, जैसे वे प्रश्नकर्ताओं को घूर रहे हों, या जैसे खरगोश शेर को देख रहा हो.

जी हां, साक्षात्कार में घबराने वाले अकसर वे ही लोग होते हैं, जिन्हें सामने बैठे प्रश्नकर्ता शेर दिखाई देते हों और उन शेरों के सामने वे खरगोश बने बैठे हों. अब चारपांच शेरों के सामने बैठा एक खरगोश भला क्या सुनेगा, क्या समझेगा, और क्या बोलेगा? अगर आप इन लोगों के जीवन में नजदीक से झांक कर देखें तो पाएंगे कि ये लोग सिर्फ साक्षात्कार जैसे औपचारिक अवसरों पर ही भयग्रस्त नहीं होते हैं, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में भी दफ्तरों, बाजारों, सभाओं, क्लबों और हर प्रकार के जनसमूहों में संकोच और घबराहट के कारण असहज हो जाते हैं. वे या तो समूहों और सार्वजनिक कार्यों से दूर रह कर लोगों को अपने एकांतप्रिय होने का आभास देते हैं या अगर उन्हें सम्मिलित होना ही पड़े तो ऐसे अवसरों का आनंद उठाने के [illegible] बेचैनी, भय, और दुश्चिंता से पीड़ित

रहते हुए अपना वाक्य काटते हैं.

ऐसे लोगों का मनोविश्लेषण करने से पता चलता है कि बचपन से ही उन का समाजीकरण स्वस्थ रूप से नहीं हो पाया है. वे शुरू से ही घरपरिवार या समाज वालों से अलगथलग रहे या रखे गए थे. हो सकता है, उन को घबराहट उन के समाजविमुख मातापिता से आई हो. शैशव में मां के साथ उन का सहजीवी संबंध सामान्य नहीं रह पाया हो क्योंकि अकसर तनावग्रस्त माताएं शिशु को भी भयग्रस्त और असुरक्षित महसूस कराती हैं.

कई माताएं शिशुओं तक से रूखा और निर्दय व्यवहार करती हैं, जिस के परिणाम-स्वरूप ऐसे शिशु स्वयं को घृणा और दंड का पात्र समझने लगते हैं. उन्हें अपने अयोग्य और अप्रिय होने का एहसास जीवन भर बना रहता है.

आप ने ऐसे शिशु देखे होंगे, जो मातापिता या परिवार जनों के अलावा किसी की गोद में नहीं जाते और ऐसा करने पर भयातुर हो कर रोनेचिल्लाने लगते हैं और ऐसे भी बच्चे देखे होंगे जो हर किसी के साथ पूर्ण प्रसन्न भाव से क्रीड़ा करते रहते हैं और भूख लगने पर ही रोते हैं. पहले प्रकार के शिशु बड़े हो कर समाजविमुख हो जाएंगे और दूसरे प्रकार के शिशु ऐसे स्वस्थ सामान्य वयस्क बनेंगे, जिन्हें लोगों से मैत्री भाव और सहज स्नेह की ऊष्मा का आदानप्रदान करने में सुख मिलेगा.

जीवन के प्रारंभिक वर्ष व्यक्तित्व निर्माण के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं. अगर बालक को मातापिता परिवारजनों, स्कूल के सहपाठियों और अध्यापकों द्वारा प्रशंसा और प्रोत्साहन मिलता रहे तो वह स्वयं को एक ऐसा योग्य और सम्माननीय व्यक्ति समझने लगेगा जिसे सभी लोग पसंद करते हैं.

इस के विपरीत, मातापिता द्वारा बारबार तिरस्कृत, दंडित और प्रताड़ित बालक आत्मतिरस्कार या आत्मधिक्कार के भाव से भर जाएगा. सहपाठियों से बारबार अपमानित होने और अध्यापकों तथा मातापिता द्वारा अन्य अच्छे लड़कों से उस की निंदात्मक तुलना किए जाते रहने पर उस में हीनभाव और आत्मग्लानि का जहरीला धुआं भर जाएगा. अपने बारे में उस की यह धारणा गहरी जड़ें जमा लेंगी कि वह किसी काम का नहीं, उस में कोई क्षमता नहीं. वह दूसरों से कमतर है. वह सफल हो ही नहीं सकता. दूसरे उस की अयोग्यता को जानते हैं और मन ही मन उस पर दया भी कर रहे होंगे. वह निरीह है. करुणा का पात्र है आदि.

शंकालु आचरण

यही कारण है कि वह लोगों से संपर्क करते डरता है. वह सोचता है कि निकट संपर्क हो जाने से उस के छिपे हुए दोष सब के सामने प्रकट हो जाएंगे और वह हंसी का पात्र बन जाएगा. नतीजा यह होता है कि वह एकांतप्रिय आत्मलीन व्यक्ति बनने लगता है. उस का व्यक्तित्व अंतर्मुखी हो जाता है. लोगों से सामना हो जाने पर शर्म से उस का चेहरा लाल हो जाता है और जबान सूख जाती है. उसे डर होता है कि कहीं वह बेवकूफ न साबित हो जाए और कहीं ऐसा न हो कि अवगुणों और अयोग्यताओं से भरी हुई, अंदर दबी छिपी गठरी चौराहे पर सब के सामने खुल कर बिखर जाए.

वह उस चोर की तरह शक्की और सावधान हो जाता है. जिस ने अपने कंबल में चोरी का माल छिपा रखा है और हर राहगीर की मुसकराहट को भयपूर्ण संदेह के कारण खतरे की घंटी समझता है. दुश्चिंता और घबराहट के कारण वह एक भयभीत पहरेदार की तरह चौकन्ना, सावधान, और आतुर हो जाता है, जबकि वास्तव में किसी खतरे का अस्तित्व नहीं होता. इसी उद्विग्नता से उस की मांसपेशियां तनी रहती हैं और वह हमेशा युद्धस्तर पर जीवन को जीता है. तनाव में ऊर्जा अधिक खर्च होते रहने के कारण वह हमेशा थका हुआ सा महसूस करता है. दूसरों से उसे हमेशा तिरस्कार, अपमान और अस्वीकृति की ही आशंका रहती है, प्रेम, स्वीकृति और प्रशंसा की आशा कभी नहीं.
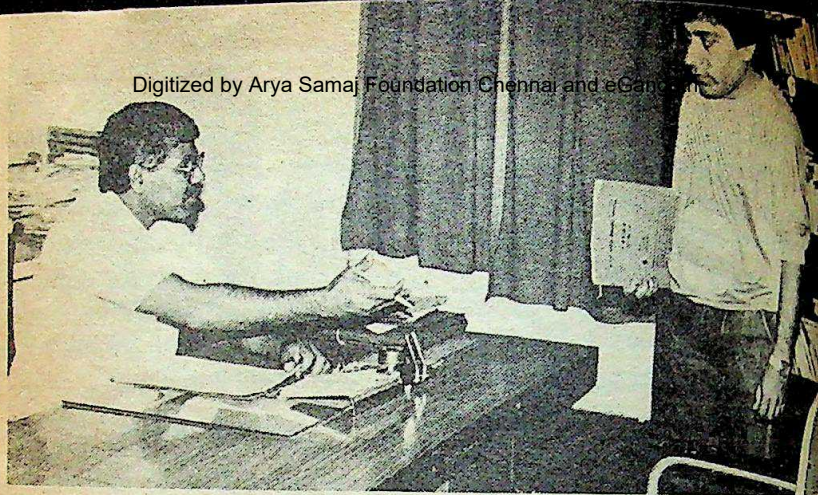
साक्षात्कार कक्ष में प्रवेश करने के बाद घबराइए नहीं, धैर्य रख कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए.

निश्चय ही ऐसे व्यक्ति को साक्षात्कार के समय प्रश्नकर्ता या परीक्षक शेर की तरह डरावने लगेंगे, क्योंकि वह पहले से ही यह मान कर चलता है कि उसे अपनी कमजोरियों और दुर्गुणों को परीक्षकों की पारदर्शी भेदक निगाहों से छिपाए रख पाना संभव नहीं है. इसी कारण वह शर्म से पानीपानी हुआ रहता है और उस की जबान को जैसे लकवा मार जाता है. ठीक वैसे ही जैसे रंगे हाथों पकड़ें जाने पर चोर हक्काबक्का हो जाता है.

साक्षात्कार के समय जितनी अधिक घबराहट होगी आप का प्रदर्शन उतना ही भद्दा होगा, भले ही आप का ज्ञान भंडार बहुत विशाल हो. ड्यूक विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के प्रोफेसर अलेग्जेंडर लूरिया ने दुश्चिंता से उत्पन्न होने वाले पेशीय तनाव पर बहुत से प्रयोग कर के सिद्ध किया है कि चिंतित मस्तिष्क आंशिक रूप से स्मृति खो देता है और उस की एकाग्रता समाप्त हो जाती है. ऐसा मस्तिष्क चिंतातुर क्षणों में पूरी तरह निष्क्रिय हो जाता है और उस में विचार शृंखला रुक जाती है.

अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में कई बार ऐसे वक्ताओं को देखा होगा जो अपने विषय पर बहुत अच्छी तैयारी के साथ सभा मंच पर आते हैं मगर बोलना शुरू करते ही गड़बड़ा जाते हैं. गला साफ करने लगते हैं, बारबार खांसते हैं, पानी गले के नीचे उतारते हैं. उन के हाथपैर कांपने लगते हैं, आवाज भर्रा जाती है. और वे सारा याद किया हुआ भाषण पूरी तरह भूल बैठते हैं. श्रोताओं को उन की विद्वता का पता चलने के स्थान पर उन की अज्ञानता का ही आभास मिलता है. यही स्थिति साक्षात्कार की भी है.

भयभीत और दुश्चिताग्रस्त व्यक्तियों को उपदेश मात्र से या उत्साहवर्धक शब्दों से आत्मविश्वास, आत्मबल, निर्भीकता और सहजता की ओर नहीं मोड़ा जा सकता. बहुत से लेखक इन लोगों को भयहीन होने, चितामुक्त रहने और बिना घबराए अपने विचार व्यक्त करने की नेक सलाह दे कर यह समझते हैं कि उन्होंने इन्हें खरगोश से शेर बना दिया है.

मनोविश्लेषणवादी मनश्चिकित्सक केवल उपदेश नहीं देते, बल्कि भयग्रस्त व्यक्ति के अतीत की भयोत्पादक घटनाओं का लेखाजोखा कर के संबंधित आदमी पर यह बात स्पष्ट कर देते हैं कि उस का वर्तमान डर और उस की सारी घबराहट बचपन की उन निरर्थक बालसुलभ गलतफहमियों के कारण है, जो उस के अचेतन में जड़ें जमा बैठी है. यह एहसास होना ही सुखद परिवर्तन की शुरुआत

इसी लिए इस लेख में भयातुर व्यक्तियों के स्वभाव और बचपन पर प्रकाश डाला गया है.

घबराहट के शिकार शरमीले किस्म के लोग दूसरों से इसलिए डरते हैं कि उन्हें दो प्रकार के बचकाने भय होते हैं. पहला, वे यह सोचते हैं कि उन के अंदर अपराध भावनाएं, अयोग्यताएं और अक्षमताएं भरी पड़ी हैं. दूसरा, उन्हें भय है कि दूसरे लोग उन की अयोग्यताओं और उन के अपराधों को ताड़ लेते हैं.

इस द्विआयामी भय से मुक्त होने के लिए पहले तो उन्हें यह समझना होगा कि सभी लोग अपने हृदय में कुछ हद तक अक्षमता का भाव छिपाए बैठे हुए हैं और अपने व्यवहार से इस पीड़ादायक भाव को झुठला देना चाहते हैं. दिखावटीपन, हावी होने की आदत, परनिंदा, झूठी शानशौकत, ज्ञान का प्रदर्शन, शक्ति और पद प्राप्ति व प्रसिद्धि की भूख, ऊंचे लोगों से मेलमुलाकात की धुन, एकांतप्रियता आदि व्यवहारों से हर आदमी अपने हीनभाव से छुटकारा पाना चाह रहा है.

अतः आप इस दुनिया में अकेले नहीं हैं. ये पांच अरब लोग ठीक आप की ही तरह हैं और किसी न किसी भय या घबराहट के शिकार हैं. आक्रामक व्यवहार भी भय का ही लक्षण है. सब से बड़ा तानाशाह सब से ज्यादा भयभीत होता है. जब सभी लोग इस हीनताबोध और भय की गिरफ्त में हैं तो वे आप के अंतर्मन में छिपी अक्षमता की घबराहट में क्या झांकेंगे?

भावनाएं और संवेग अकारण नहीं होते. ये जो बाहरी पर्यावरण के प्रति आप की प्रतिक्रियाएं हैं. आप वही महसूस करेंगे जो आप सोचते हैं. इसलिए भयोत्पादक विचार मन में न आने दें. यह कहना आसान है, करना मुश्किल.

भय प्रायः भयानक कल्पनाओं से पैदा होता है, वास्तविक परिस्थितियों से नहीं. साक्षात्कार कक्ष में घुसने से बहुत पहले ही अगर आप ऐसी कल्पनाएं करते रहे हैं, जिन में आप घबरा गए हैं, उत्तर नहीं दे पा रहे हैं, साक्षात्कर्ता नाराज हो रहे हैं, आप को अनुत्तीर्ण कर दिया गया है आदि, तो आप अपनी विफलता को सुनिश्चित ही कर रहे हैं. इस नकारात्मक विचार शृंखला को इस प्रकार रोकिए.

साक्षात्कार के कुछ घंटों पहले घबराहट में किताबों को उलटनेपलटने के बजाए मित्रों में बैठ कर मनोरंजन करें और जोरजोर से हंसें. हंसी घबराहट की दुश्मन है.

साक्षात्कार के स्थल पर समय से पांचमिनट पहले पहुंचे, ताकि मार्ग की थकान और सांस की तेजी शांत हो जाए. हो सकता है, आप का नंबर पहला ही हो. सभी प्रमाणपत्र आदि साथ ले जाएं. वस्त्रशालीन और सुरुचिपूर्ण पहनें. घर पर सभी वस्त्र पहन लेने के बाद चेहरे पर मुसकराहट पहनना भी न भूलें.

प्रतीक्षाकक्ष में चुपचाप बैठे रह कर अपनी बारी का इंतजार न करें. अगर वहां इजाजत हो तो साथियों से बातचीत और हंसीमजाक करते रहें. मौन बैठे रहने पर नकारात्मक कल्पनाएं आने लगती हैं.

शरीर भी संकेत भेजता है, जिसे शरीर भाषा कहते हैं. इसलिए साक्षात्कार कक्ष के बाहर तथा भीतर कहीं भी कमर झुका कर न बैठें. झुकी कमर मनोबल को भी झुका देती है. सीधे खड़े होना व बैठना सीखें. गंभीर और स्पष्ट आवाज में बोलने की आदत डालें. ऐसी आत्मविश्वासपूर्ण आवाज सुनने वाले पर जादू का सा असर करती है.

लोगों से आंखें मिला कर बात करने की आदत डालें. अकसर संकोची लोग नीची नजरें कर के या दूसरी तरफ देखते हुए बात करते हैं. नजरें हटाए रखने के लिए ही वे नाखून चबाना या पेपरवेट पकड़ना जैसी क्रियाएं करते हैं. आप के साक्षात्कारकर्ता आप की आंखों से अंदाजा लगा लेते हैं कि आप शांत हैं या घबराए हुए.

दूसरों से अपनी तुलना करने की आदत छोड़ दें क्योंकि अकसर हम अपनी कमजोरियों और दूसरों की क्षमताओं को बढ़ाचढ़ा कर आंकते हैं और इस प्रकार अपने आत्मविश्वास को तहसनहस कर डालते हैं. ●

खून की पुकार
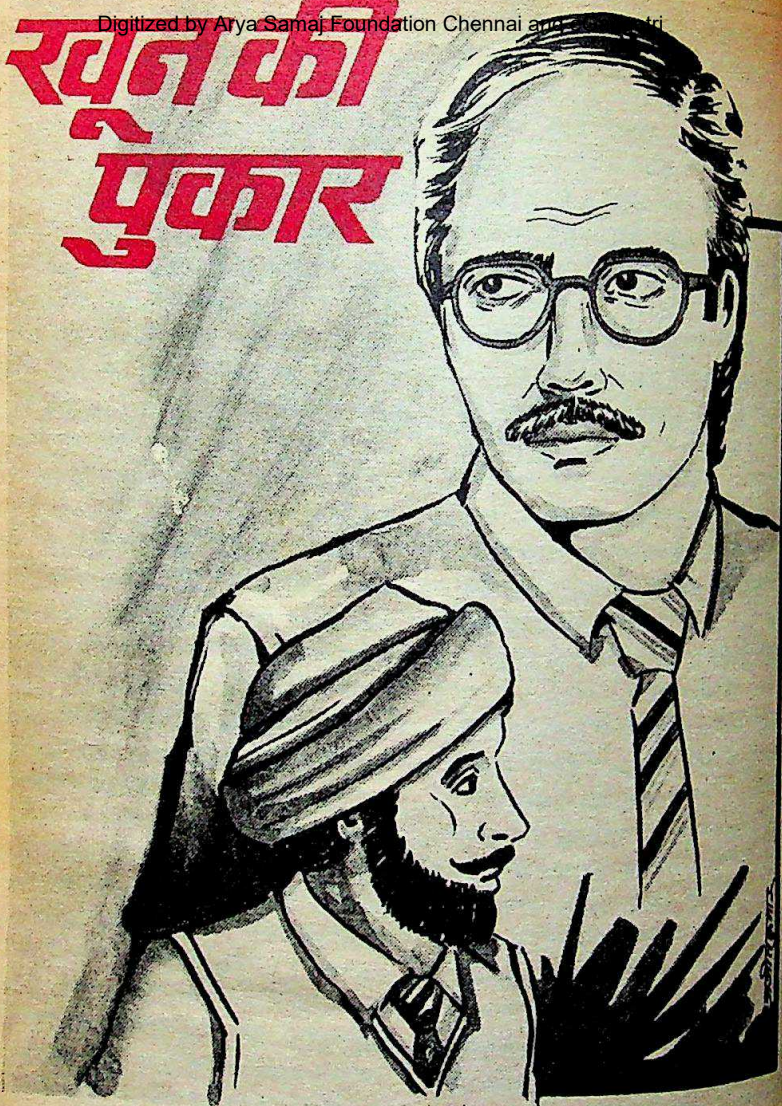
कहानी ● सुरेशकुमार गोयल

रात को एक बजे टेलीफोन की घंटी ने मुझे जगा दिया. छोटे भाई ने न्यूयार्क से फोन किया था, "भैया, अभीअभी मैं ने रेडियो पर सुना कि इंदिरा गांधी को उस के ही अंगरक्षकों ने गोली से छलनी कर डाला." वह बड़ा ही चिंतित था.

"रेडियो वालों ने कुछ बताया कि कैसी हालत है, श्रीमती गांधी की?" मैं ने पूछा.

"हालत तो काफी नाजुक बताते हैं," वह बोला, "इस समय भारत में तो तहलका मचा हुआ होगा." यह कह कर उस ने फोन रख दिया.

मैं कुछ देर तक सोचता रहा. पता नहीं, मुझे क्यों अंदेशा सा था कि कोई दुर्घटना

कनाडा में रहते हुए भी हरभजन सिंह को भारत की धर्मनिरपेक्ष नीति पर जितना भरोसा था उतना ही विश्वास उसे यहां की न्याय प्रणाली पर भी था. मगर सांप्रदायिक दंगे में भाई की असमय मौत के बाद विश्वास के सभी बांध टूट गए...

...घटने वाली है. भारत में जो ...नैतिक अव्यवस्था के काले बादल छा गए ...के बजाए छिन्नभिन्न होने के और घने होते ...रहे थे.

उस रात काफी देर तक मैं करवटें ...बदलता रहा. सवेरे सात बजे ही आंख खुल गई ...जाग कर टेलीविजन चलाया. सवेरे की ...खबरें शुरू ही हुई थीं. उन्होंने इंदिरा गांधी की ...हत्या के समाचार से ही खबरें शुरू कीं. काफी ...विस्तार से बता रहे थे, सारी बातें. भारत, ...इंग्लैंड, कनाडा और अमरीका के लोगों के ...विचार और टिप्पणियां सुनने को मिलीं. विदेशों में बसा हर भारतीय इस खबर को सुन कर ...शोक में डूब गया. अब भारत में क्या होगा? ...देश में फैली अराजकता का क्या होगा? पूरे दो ...घंटे तक मैं टेलीविजन के सेट के सामने बैठा ...रहा. मैं सोचने लगा, दिल्ली में इस समय पता नहीं क्या हाल होगा. मुझे बचपन की कुछ ...धुंधली सी याद है, जब गांधीजी की हत्या हुई थी. कितना शोक मनाया था, लोगों ने. कितना ...तनावपूर्ण वातावरण हो गया था, उन दिनों.

रजनी तो भारत पिछले ही हफ्ते गई थी. ...वह तो दिल्ली में ही होगी इस समय. उस के ...आने पर सब घटनाएं सुनने को मिलेंगी. पर ...पता नहीं, भारत के अखबार, रेडियो और ...टेलीविजन सब कुछ बताएंगे भी या नहीं? ...भारत में रेडियो और टेलीविजन तो हमेशा ...एकतरफा सरकारी दृष्टिकोण ही पेश करते हैं. ...जरा सी कोई गंभीर समस्या हुई तो अखबार...ों पर भी पाबंदी लग जाती है.

टेलीविजन पर खबरें समाप्त होने के ...पश्चात मैं विश्वविद्यालय जाने के लिए तैयार ...होने लगा. 11 बजे मेरा विद्यार्थी हरभजन सिंह ...मुझ से मिलने आने वाला था. मैं तैयार हो कर ...समय से पहले ही विभाग में पहुंच गया. ठीक 11 बजे हरभजन सिंह ने मेरे दफ्तर के दरवाजे पर दस्तक दी. मैं ने दरवाजा खोल दिया.

हरभजन का चेहरा उतरा हुआ था. लग ...रहा था, जैसे वह भी रात में सोया न हो. मैं ने उस की ओर देखा. उस ने अपनी आंखें झुका लीं. वह मेरे सामने स्वयं को अपराधी की तरह महसूस कर रहा था.

"बहुत ही बुरा हुआ, श्रीमती गांधी के साथ." वह धीमे स्वर में बोला.

मैं ने कोई उत्तर नहीं दिया. वह मेरा विद्यार्थी था. कनाडा में रह कर भारतीय राजनीति की समस्या के बारे में बातें करना मुझे उचित नहीं लगा. मैं उस का ध्यान काम की बात की ओर ले गया, "मेरे लिए श्रीमती गांधी की हत्या एक राजनीतिक हत्या है. जो राजनीति में भाग लेते हैं, उन को इस तरह के संकट का सामना कभीकभी करना ही पड़ता है." हरभजन सिंह को मैं ने कुछ काम करने के लिए दिया और तीन दिन बाद मिलने के लिए कहा.

श्रीमती गांधी की हत्या के बाद भारत की खबरें कनाडा के टेलीविजन और रेडियो में छाई रहीं. उन की हत्या से भारत की नींव ही डगमगा गई. परंतु उन की हत्या के बाद जो मारकाट हुई और जो कुछ टेलीविजन पर देखा, वह किसी भी सभ्य कहलाने वाले देश के लिए शर्म से डूब मरने के लिए काफी था. समझ में नहीं आया कि भारत में क्या हो रहा है. क्या लोग वास्तव में पागल हो गए हैं?

तीन दिन बाद हरभजन सिंह ठीक समय पर मुझ से मिलने आया. उस के बैठते ही मैं ने धीरे से पूछा, "तुम्हारे घर में सब ठीकठाक है न?" मुझे मालूम था कि उस के परिवार के अधिकांश लोग दिल्ली में ही रहते हैं.

"मेरे पिताजी के एक दोस्त दिनेश कुमार दरियागंज में रहते हैं, घर के सब लोग उन्हीं के पास हैं. पर छोटे भाई मंजीत को उन्होंने खत्म कर दिया." कह कर हरभजन सिंह एकाएक चुप हो गया.

मैं अफसोस जाहिर करने लगा. वह खामोश था. लेकिन उस की आंखें नम थीं.

"मेरे पिताजी को भारतचीन युद्ध में बहादुरी का मैडल मिला था. बड़ा भाई पिछले

हरभजन सिंह की आंखों से टपके आंसू उस की मन की पीड़ा को खोल कर रख दिए.

भारतपाक युद्ध में बंगलादेश की सीमा पर शहीद हुआ था. अगर मंजीत जिंदा रहता तो देश के ही काम आता. उस की बड़ी इच्छा थी, हवाई सेना में भरती होने की.'' दो आंसुओं की बूंदें गालों तक आ गई थीं, जिन्हें हरभजन ने पोंछ दिया.

''कितने साल का था मंजीत?'' मैं ने पूछा.

''इस साल जुलाई में 18 साल का हुआ था.'' हरभजन ने अपने साथ लाए हुए कागज मुझे दे दिए. मैं ने सोचा कि चाय का समय भी हो गया है. हरभजन से काम की और बात तो क्या होगी, इसलिए दो चाय के कप बना कर ले आया.

''मैं ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भारत में इस तरह का बवंडर हो सकता है.'' मैं ने उस की आंखों में झांका.

''जिन लोगों ने ये मारकाट मचाई है, सरकार उन को पकड़ कर पूरीपूरी सजा देगी ही.'' हरभजन को भारत सरकार की धर्मनिरपेक्षता पर भरोसा था. भारत में जो कुछ भी हुआ और हो रहा था, इस के बावजूद भी उस का भारतीय न्याय प्रणाली पर अभी भी असीम विश्वास था.

''हां, सरकार इस हादसे की पूरी जांच पड़ताल कराएगी ही. पर सुना है कि सरकार की ही पार्टी के कुछ लोगों ने ही इस मारकाट की शुरुआत की थी.'' मैं ने रेडियो पर सुनी खबरों की बात दोहरा दी.

''मैं यह नहीं मान सकता कि सरकार की पार्टी के ही लोगों ने यह मारकाट मचाई है. इस तरह की खबरें आम तौर पर विदेशी अखबार, रेडियो और टेलीविजन वाले लोगों को भड़काने के लिए कहते रहते हैं. दूसरे देशों के लोग तो चाहते ही हैं कि भारत में अराजकता फैले, यहां उन्नति न हो.'' हरभजन ने अपनी चाय खत्म कर ली और दो हफ्ते बाद मुझ से मिलने के लिए कह कर वह चला गया.

हरभजन के जाने के पश्चात मैं काफी देर तक सोचता रहा. पता नहीं क्यों मुझे अचानक हरभजन के ऊपर गर्व हो आया कि वह मेरा विद्यार्थी है. उस के उदार विचारों को सुन कर मैं हमदर्द हो गया. हरभजन के दिल में

भारतीय सरकार के प्रति जो आत्मविश्वास है वह क्या बना रहेगा. उस क्षण ऐसा लगा जैसे यह भारत सरकार की धर्मनिरपेक्षता की परीक्षा का समय है. इंदिरा गांधी की हत्या के उपरांत जो मारकाट हुई, उस के लिए जिम्मेदार लोगों को पूरी तरह से सजा मिलनी ही चाहिए. ये लोग हिटलर के नाजियों से किसी भी सूरत में कम नहीं.

हरभजन अपने काम के सिलसिले में कई बार मुझ से मिला. पर कभी हमारे बीच भारत के बारे में कोई बात नहीं हुई. शायद हम दोनों के बीच एक मूक समझौता सा हो गया था. हम कभी इस विषय को छेड़ते भी न थे. मुझे हरभजन के दिमाग में हो रही उधेड़बुन का कुछकुछ एहसास तो था. वह शायद अपने वास्तविक भावों को मेरे सामने प्रकट नहीं करना चाहता था. मैं आखिर उस का शिक्षक था. पर अगर वह क्रोध में कुछ तीखी बात कह भी देता तो शायद उस के दिल का गुबार निकल जाता और मैं भी बुरा न मानता. पता नहीं हरभजन जैसे लोगों को इस बात का एहसास है कि नहीं कि भारत में लाखोंकरोड़ों हिंदू ऐसे हैं जो चाहते हैं कि इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद हुए हत्याकांड के जिम्मेवार व्यक्तियों को सजा मिलनी ही चाहिए.

हरभजन अपना पाठ्यक्रम खत्म कर के नौकरी करने लगा. उस से कभीकभार खरीदारी करते हुए भी मुलाकात होती थी. एक बार वह कार पार्क में मिला. मैं अपनी कार खड़ी कर के खरीदारी करने जा रहा था और हरभजन खरीदारी कर के वहां आया था. कुछ मिनटों तक बातें हुईं.

हरभजन डिक्की में अपना सामान रख रहा था. मैं ने देखा कि कार की पिछली खिड़की पर एक 'स्टिकर' लगा था. उस पर साफसाफ लिखा था, 'खालिस्तान जिंदाबाद.'

मेरी आंखें कुछ क्षणों तक वहां टिकी रहीं. शायद हरभजन ने मुझे उस 'स्टिकर' को घूरते हुए देख लिया था. उस ने मेरी ओर कुछ इस तरह से देखा, जैसे कह रहा हो, 'क्या चारा है, मेरे पास इस के अलावा.' मैं हरभजन के पास और अधिक नहीं ठहर सका. उस से बात करने की इच्छा पता नहीं क्यों अचानक मिट गई. मैं बहाना बना कर खरीदारी करने चला गया.

उस दिन के बाद हरभजन से दो या तीन बार ही मुलाकात हुई. हर बार ही बातों का सिलसिला बस 'हैलो' और 'क्या हालचाल है' से आगे बढ़ ही नहीं पाया. पता नहीं क्यों, हरभजन और मेरे बीच एक खाई सी आ गई थी, जिस को हम दोनों ही नहीं लांघ पा रहे थे.

हरभजन जैसे भारत में हजारोंलाखों लोगों ने न्याय की मूक पुकार की थी. परंतु उन की वह पुकार अनसुनी कर दी गई. शायद कभी ऐसा दिन भी आएगा, जब उन्हें न्याय मिलेगा. न्याय की 'देवी' अंधी अवश्य होती है, परंतु बहरी नहीं. ●

नशे के प्रति घृणा जगाने का नया तरीका

"अगर आप नौजवानों को नशे की लत से दूर रखना चाहते हैं तो उन्हें सिर्फ किसी नशेड़ी से मिला दीजिए."

मादक पदार्थों से संबंधित अपराधों से निबटने के लिए ऐमस्टरडम पुलिस द्वारा तैयार योजना का यही उद्देश्य है. यूरोप का ऐमस्टरडम शहर नशेड़ियों का 'स्वर्ग' समझा जाता है.

इस नई योजना के अनुसार यदि 12 वर्ष की आयु के बच्चों को व्यसनी से मिला कर उन के दिलों में नशे के दुष्परिणामों के प्रति दहशत फैला दी जाए तो वे भविष्य में कभी भी नशे के निकट नहीं जाएंगे.

भविष्य में इस योजना के विस्तार की पूरीपूरी आशा है. अभी तक लगभग 17,000 बच्चे इस योजना में हिस्सा ले चुके हैं. इस के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए नार्वे, डेनमार्क, स्वीडन, स्काटलैंड और जरमनी के अनेक समाज सुधारक ऐमस्टरडम पहुंचे. ●

आप लोगों ने एक विज्ञापन देखा होगा जिस में शेर, सांप व शराब की बोतल एकसाथ दिखाए गए हैं और उस का शीर्षक है- 'तीनों ही प्राणघातक हैं.' यह सत्य है कि शराब हमारे लिए प्राणघातक होती है. इतना ही नहीं, सभी नशीले पदार्थ जैसे शराब, तंबाकू, सिगरेट, बीड़ी, जरदा, हिरोइन, गांजा, चरस, कोकीन, ब्राउन शुगर आदि मनुष्य को जर्जर तो कर ही देते हैं, बाद में जा कर प्राणघातक भी सिद्ध होते हैं.

अधिकतर लोग एक-दूसरे को देख कर ही इन नशों को अपनाते हैं और फिर उन के आदी हो जाते हैं.

कई परिवारों में घर के बड़े लोग शराब का सेवन करते हैं. या सिगरेट का धुआं उड़ाते हैं, अतः बच्चे भी उन का अनुकरण करने लगते हैं. कई परिवारों के बुजुर्ग कहते हैं कि, "अभी तो तुम बच्चे हो, अभी से नशे की आदत मत डालो, बड़े हो कर भले ही नशा कर लेना." यानी उन्हें

क्या शराब व सिगरेट पीना फैशन है?

लेख ● राजेंद्र अग्रवाल

आज के युवाओं में शराब व सिगरेट पीना एक फैशन हो गया है. मगर मादक द्रव्य चाहे वह शराब हो या सिगरेट या कुछ और मनुष्य के जीवन के लिए सभी घातक हैं. अतः फैशन की अंधी दौड़ में मौत को गले लगाना कहां की अकलमंदी है...

समर्थन मिल रहा है कि वे बड़े हो कर मादक द्रव्यों का सेवन करें.

गांवों में बुजुर्ग लोग अपने हुक्के की चिलम बच्चों से भरवा कर पीते हैं तो बच्चे धीरेधीरे यह मानने लगते हैं कि यह कोई अच्छा काम है. जिसे हमारे बुजुर्ग भी करते हैं. अतः वे भी देरसवेर इसे शुरू कर देते हैं. यही स्थिति बीड़ी की भी है.

कुछ संपन्न परिवारों में तो लोग अपने परिवारजनों के साथ बैठ कर शराब पीते हैं और उस का दुष्परिणाम फिर सभी को भुगतना पड़ता है. इसी प्रकार नवयुवक जब देखता है कि उस का साथी शान से सिगरेट मुंह में दबाए घूमता है तो उसे लगता है कि यह भी फैशन है और सिगरेट पीने वाला अधिक प्रगतिशील एवं आधुनिक है. परंतु यह एक थोथी शान है जो हमारे भविष्य को अंधकारमय बना रही है.

ब्याहशादियों में बैंड के सामने नाचना एक फैशन हो गया है और फिर उस के लिए उन्हें चाहिए शराब. बड़े अफसोस की बात है कि ऐसे शुभ अवसरों पर हम अपने भविष्य की कब्र तैयार करते हैं. शराब चाहे कितनी भी कड़वी अथवा तीखी हो और इसे पहली बार पीने में तो बहुत ही तकलीफ होती है, तब भी क्योंकि दोस्त कह रहे हैं, इसलिए वे इस हलाहल को भी पीते हैं. धीरेधीरे वे इस आदत के गुलाम हो जाते हैं और फिर वे शराब नहीं पीते बल्कि शराब उन को पीने लगती है. कुछ ही समय में धन और फिर स्वास्थ्य भी चौपट हो जाता है. तब परिवार में एक भूकंप सा आ जाता है. मारपिटाई, कलह, नालियों में पड़े रहना और निकम्मापन ये सब उसी के परिणाम होते हैं.

जो लोग आर्थिक दृष्टि से इस शौक को पूरा नहीं कर पाते वे फिर चोरी कर के अथवा अन्य गलत काम कर के उसे पूरा करते हैं. इस प्रकार वे उस जाल में फंसते ही जाते हैं, जिस से वे न केवल परिवार के लिए वरन समाज के

तनाव के क्षणों में शराब को अपनाना एक नए तनाव को आमंत्रित करना है.
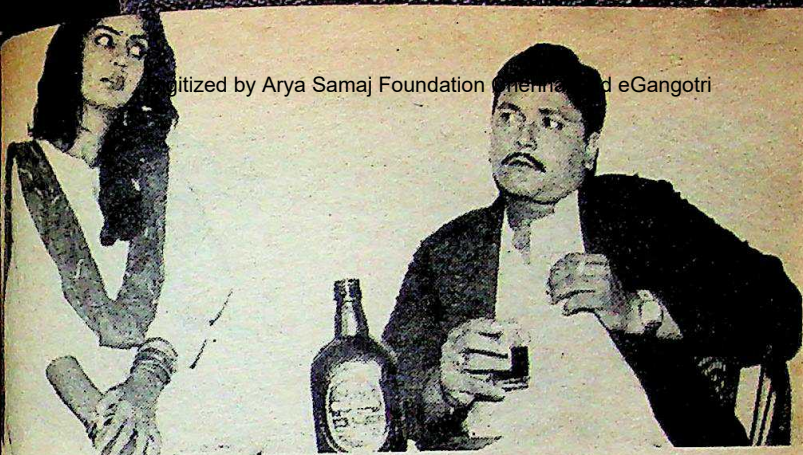
परिवार के किसी भी सदस्य के सामने बैठ कर शराब पीना घर की सुखशांति में जहर घोलना है. . .

भी भार हो जाते हैं.

कई बार दोस्त लोग भी अपने सीधेसादे साथियों को जबरन सिगरेट अथवा शराब पीना सिखाते हैं. वे कहते हैं कि जीवन में सफल होने के लिए इन का सेवन करना जरूरी है. कितनी गलत धारणा है. स्वयं तो कुमार्ग पर पड़ ही गए, दूसरों को भी उस पर खींच कर लाना कहां की बुद्धिमानी है. शराब से गुर्दे तो गल ही जाते हैं. जिगर भी बेकार हो जाता है और उस व्यक्ति की कब मृत्यु हो जाए, यह डाक्टर भी नहीं बता सकता.

इसी प्रकार जरदा व अन्य मादक पदार्थों का सेवन है जो शायद पहले तो खुशबू आदि के कारण अच्छा लगता है. परंतु वे ही बाद में सारे शरीर को धीरेधीरे गलाते हैं. जरदे के सेवन से गले व मुंह का कैंसर हो सकता है. अन्य मादक द्रव्यों के सेवन का क्या परिणाम होता है, यह तो आप दूरदर्शन के 'अंधी गलियां' प्रोग्राम में देखते ही हैं.

लोगों को यह भी भ्रांति है कि विदेशों में सभी लोग शराब पीते हैं और वे स्वस्थ भी रहते हैं, तो हम भी क्यों न उन का अनुकरण करें. एक पुरानी कहावत है कि नकल करने में भी अकल की आवश्यकता होती है. वहां लोग शराब एक सीमा में रह कर ही पीते हैं. दूसरे भारत व विदेशों की भौगोलिक परिस्थितियां भी भिन्न हैं. जो यहां शराब का सेवन वर्जित करती हैं. इस के अतिरिक्त वहां के लोग संपन्न व समृद्ध हैं. अतः शराब के दुष्परिणामों को कम करने के लिए बहुत से स्वास्थ्यवर्धक पदार्थों का सेवन भी करते हैं, जो हमारे यहां अधिकतर लोग नहीं कर पाते. इस सब के बावजूद अब विदेशों में भी यह धारणा जोर पकड़ती जा रही है कि शराब का सेवन घातक है और वे उस का सेवन धीरेधीरे कम कर रहे हैं. कुछ लोग तो अब शराब बिलकुल ही नहीं पीते.

कुछ लोगों का कहना है कि वे शराब अपना गम गलत करने के लिए पीते हैं. जिस से कि वे अपनेआप को भूल जाएं. यह तो एक बीमारी को दूर कर के दूसरी बीमारी को आमंत्रण देना है. यह उपाय ही गलत है जो आप की समस्याओं को और बढ़ाता है.

यदि शराब पीने की बजाए योगासन, व्यायाम, किसी उपयोगी कार्य आदि में अपना ध्यान लगाया जाए तो अधिक उपयोगी होगा. ये उपयोगी कार्य गरीबों व असहायों की सहायता करना, समाज सेवा आदि हो सकते हैं. स्वस्थ मनोरंजन भी इस का एक उपाय है. जिस में दूरदर्शन के कुछ कार्यक्रम देखना शामिल है. इन सब से आप का ध्यान बंट सकता है और आप अपना दुख भुला सकते हैं.

एक सर्वेक्षण के अनुसार सारे संसार में 15 करोड़ लोग धूम्रपान करते हैं. आजकल
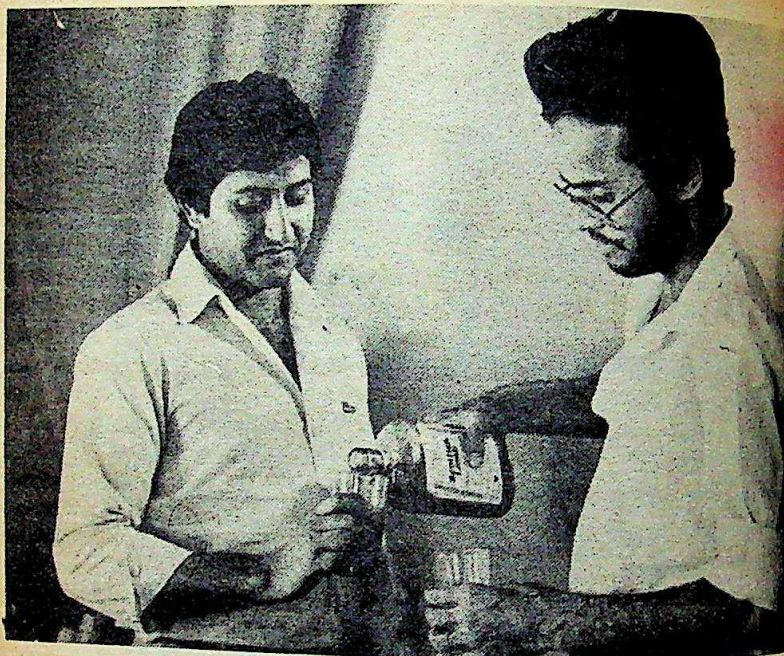
शराब देशी हो या विदेशी, शरीर को खोखला करने में दोनों समान कार्य करते हैं.

भारत में भी विशेषकर युवा वर्ग में धूम्रपान का फैशन के रूप में प्रसार बढ़ रहा है. विदेशों में स्त्रियां भी काफी संख्या में धूम्रपान करती हैं जबकि भारत में यह संख्या अपेक्षाकृत कम है, स्त्रियों के धूम्रपान का असर उन के अपने स्वास्थ्य पर ही नहीं वरन उन की संतानों के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है. अतः उन के ऊपर अधिक जिम्मेदारी आती है.

जहां तक धूम्रपान के कुप्रभाव का संबंध है, वह भी मनुष्य के फेफड़े तो जर्जर करता ही है, उस के शरीर में निकोटीन की मात्रा भी निरंतर बढ़ाता रहता है. इस से फेफड़ों का कैंसर व दिल के दौरे जैसी घातक बीमारी भी हो सकती है.

धूम्रपान से आप स्वयं का स्वास्थ्य तो नष्ट करते ही हैं, साथ ही अपने आसपास बैठने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव डालते हैं. यह धूम्रपान का धुआं वायु प्रदूषण तो फैलाता ही है साथ ही पास में बैठने वाले लोगों के फेफड़ों को भी प्रभावित करता है. इसी लिए विदेशों में सभी सार्वजनिक स्थानों और विशेषकर यात्रा में धूम्रपान करने वालों के लिए एक अलग कक्ष होता है. इस से धूम्रपान न करने वालों का स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है.

जापान ने इस प्रदूषण की रोकथाम के लिए विशेष प्रकार के पौधे तैयार किए हैं जो सिगरेट आदि के धुएं को आत्मसात कर लेते हैं. उन्होंने उस के लिए कुछ ऐसी विशेष छलनियां (फिल्टर) भी बनाई हैं जो इस जहरीले धुएं को रोक लेती हैं.

भारत में विशेषकर किशोरों में धूम्रपान न करने का एक अभियान चला कर हम समाज के लिए कुछ योगदान कर सकते हैं. अन्य मादक द्रव्य भी मनुष्य को बरबादी की ओर ही धकेलते हैं. चाहे वह धन की बरबादी हो या स्वास्थ्य की बरबादी. इस अभियान से परिवार भी बिखरने से बच जाएंगे.

समुद्र में गोताखोरी का रिकार्ड

इटली की 28 वर्षीया एंजेला बदिनी ने समुद्र के अंदर 107 मीटर नीचे तक गोता लगा कर अब तक के स्त्रियों और पुरुषों द्वारा स्थापित गोताखोरों के सभी रिकार्ड तोड़ दिए हैं.

नया विश्व रिकार्ड बनाने के लिए एंजेला ने 35 किलोग्राम के एक विशेष विस्फोटक का इस्तेमाल किया. वह 107 मीटर नीचे सागर तल से एक कार्ड उठा कर लाई, जो उस की गोताखोरी का प्रमाण था.

*

दूल्हे मियां घोड़ी से नहीं पैराशूट से आए

नए जमाने का दूल्हा घोड़ी पर चढ़ कर दुलहन के घर नहीं जा सकता क्योंकि वह तो पलक झपकते ही अपनी दुलहन के पास पहुंच जाना चाहता है.

इंगलैंड का एक 24 वर्षीय दूल्हा अपने वादे के मुताबिक छः हजार फुट की ऊंचाई से पैराशूट द्वारा जमीन पर उतरा. जब वह गिरजाघर पहुंचा तो दुलहन ने गरमजोशी से उस का स्वागत किया.

*

63 बच्चों की सुखी मां

68 वर्षीय ताफिन ली नामक चीनी महिला ने 63 बच्चों को जन्म दे कर विश्व में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है. कुल मिला कर इस महिला ने 15 बार चारचार बच्चों को एकसाथ तथा एकएक कर के तीन बच्चे दसदस माह के अंतराल से पैदा किए.

17 बच्चे तो इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन यह महिला अपने शेष 46 बच्चों के साथ चियो न नामक गांव में हंसीखुशी का जीवन व्यतीत कर रही है.

*

पैर धोने से बेहतर है तलाक लेना

कैलीफोर्निया की अदालत में एक बड़ा ही दिलचस्प मामला आया जिस में पत्नी ने अपने पति से तलाक लेने की मांग की थी.

मामला कुछ ऐसे था. रीता विवाह से पूर्व अपने होने वाले पति के पैर सदा धोती थी, जब वह कारखाने से घर आता था. पर विवाह के बाद उस ने ऐसा नहीं किया तो पति क्ले इस बात पर अड़ गया कि पैर तभी धुलेंगे जब रीता धोएगी.

अदालत में जब न्यायाधीश क्ले के शरीर से आ रही तीव्र दुर्गंध को बरदाश्त नहीं कर सके तो फैसला रीता के हक में हो गया.

व्यायाम क्यों कब और कितना

लेख • डा. सुमन कौल

आमतौर पर समझा जाता है कि व्यायाम करने का निश्चित समय और आयु होती है. मगर वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि किसी भी आयु में किसी भी समय व्यायाम किया जा सकता है क्योंकि व्यायाम तनावों, परेशानियों और दुखों को भुलाने का साधन भी है.

गरमियों के तपते दिनों की सुबह शीतल हवा में छत पर देर तक सोने का मजा ही कुछ और होता है, परंतु जब सूरज की किरणें आंखों में चुभने लगतीं तो मैं जल्दी उठने को मजबूर हो जाता.

अब छुट्टियों में इतनी सुबह और कुछ काम तो होता नहीं था, सो मैं ने सुबह सैर करने का नियम बना लिया है. गली के आखिरी वाले पीले मकान से एक हमउम्र लड़का रोज उसी समय तेजी से अपने घर से निकलता. परंतु उसे देख कर ऐसा नहीं लगता था कि वह घूमने निकला है, बल्कि वह कहीं जल्दी पहुंचने को उत्सुक दिखाई देता. वह थोड़ा आगे चल कर बाईं गली में मुड़ जाता और झट आंखों से ओझल हो जाता. एक दिन जानबूझ कर मैं ने देखने की कोशिश की आखिर वह जाता कहां है? गली मुड़ कर वह थोड़ी दूर स्थित व्यायामशाला में चला गया. छुट्टियों में कुछ खास काम न होने के कारण और उस लड़के को दोस्त बनाने की इच्छा से मैं ने भी यों ही वहां दाखिला ले लिया.

परंतु पहले ही दिन कक्षा का नजारा देख कर मेरी हैरानी का ठिकाना न रहा. मेरी उम्मीद के विपरीत नौजवानों के साथसाथ वहां 60-65 वर्ष की आयु के बूढ़े भी व्यायाम कर रहे थे. यहां तक कि उन में रक्तचाप के मरीज और हृदय रोगी भी थे. कुछ का मकसद विशेष रूप से कोलेस्ट्रोल को काबू में लाना था और कुछ अधिक वजन को कम करना चाहते थे.
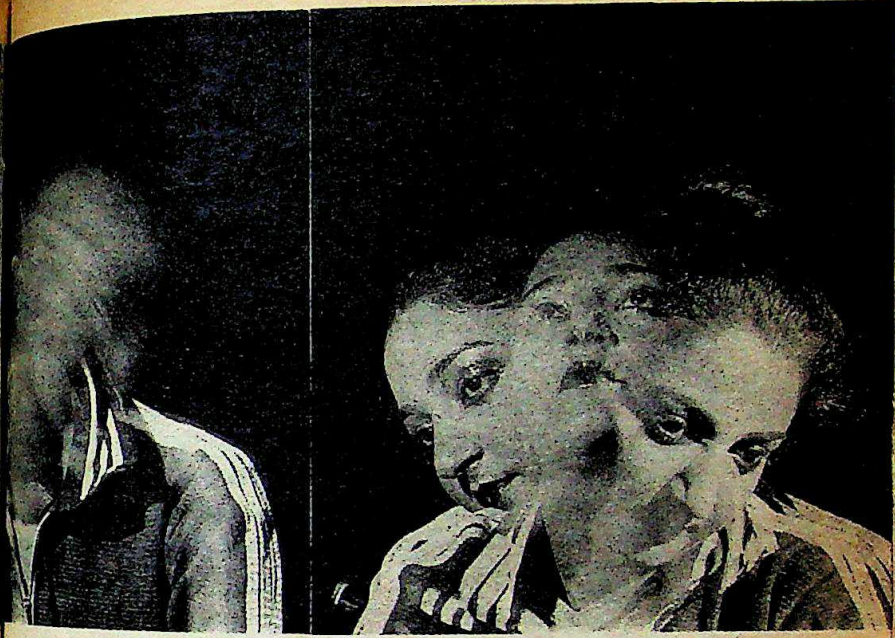
गरदन व्यायाम की तीन मुद्राएं

अपनी जिज्ञासा पर काबू न रख पाने के रण मैं ने एक बुजुर्ग शिक्षक से झिझकते विनम्रतापूर्वक पूछा, "क्या इतनी बड़ी में व्यायाम करने से शक्ति प्राप्त होती है र क्या यह नुकसानदायक नहीं है? इस का लाभ पाने के लिए तो बहुत परिश्रम और ीना बहाना होता है, जो वृद्धों को थका कर जोर कर देता होगा. मेरे घर में बुजुर्ग सैर ही आदर्श व्यायाम मानते हैं. पर क्या ायाम व्यक्ति की उम्र बढ़ाने में भी योगदान रता है?"

घनी मूंछों और रोबीले चेहरे वाले क्षक हलके से मुसकराए. आत्मीयता से धे पर हाथ रख कर उन्होंने बताया, नियमानुसार ठीक ढंग और सही अनुपात में ायाम करना किसी भी व्यक्ति के लिए कसानदायक नहीं होता, जब तक कि उसे चिकित्सा संबंधी कारणों से व्यायाम करने को मना न किया गया हो."

यह सच है कि वृद्धावस्था में ांसपेशियों के 'सेल' (कोशिकाएं) युवावस्था की अपेक्षा कम हो जाते हैं. पर जो होते हैं, उन्हें व्यायाम द्वारा युवाओं की तरह कार्यशील और स्वस्थ बनाए रखा जा सकता है. विदेश में किए गए एक सर्वेक्षण में 60 से 72 वर्ष के पुरुषों के 12 सप्ताह के शक्तिवर्धक कार्यक्रम में 15% टांगों की मांसपेशियों के आकार में और लगभग दोगुनी शारीरिक शक्ति में वृद्धि हुई.

यह रिपोर्ट इस भ्रम को तोड़ती है कि 60 साल की उम्र के बाद व्यक्ति की शारीरिक शक्ति क्षीण होने लगती है. महिलाओं की रिपोर्ट में भी यही परिणाम आया. बस फर्क इतना रहा कि जहां 10 पौंड वजन 55 से 65 वर्ष की उम्र की 40% महिलाएं नहीं उठा पाईं, वही वजन 65 से अधिक उम्र वाली 60% महिलाएं उठाने में असमर्थ रहीं. मशीनों द्वारा दी गई आरामदायक जिंदगी से कुछ हट कर व्यायाम करना काफी शक्तिर्धक साबित होता है. परंतु इस उम्र में व्यायाम डाक्टर की राय के बाद किसी निपुण प्रशिक्षक द्वारा ही सीखना चाहिए.

व्यायाम का अर्थ यह नहीं है कि अपनी पूरी ताकत व संघर्ष के साथ दुश्मन से जूझ

बढ़ते मोटापे को रोकना है तो कमर और पेट का व्यायाम करें.
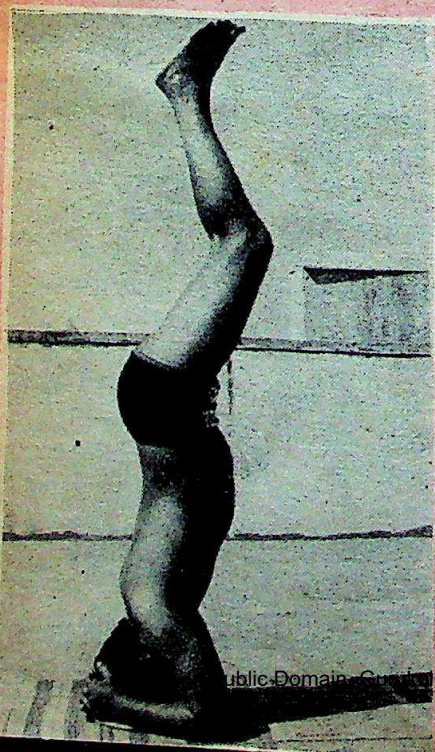
जाओ और उसे परास्त करने में अपनी शक्ति खर्च कर थकावट से चूरचूर हो जाओ. यह तो एक संतुलन है. शरीर के किसी भी अंग में जमी गंदगी को बहा कर वहां ताजा खून पहुंचाने का साधन ही व्यायाम है.

व्यायाम करते हुए पसीने का निकलना या हृदय गति का तेज चलना कोई हानिकारक लक्षण नहीं है, बल्कि हृदय पंप कर के शुद्ध खून को धमनियों द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों में भेजता है और पसीने द्वारा शरीर की गंदगी बाहर निकलती है. दोनों ही प्रक्रियाएं व्यक्ति को थकाने के लिए नहीं, बल्कि उसे हलकाफुलका, चुस्त और स्वस्थ बनाने के लिए हैं. फिर थकावट का तो प्रश्न ही नहीं उठता. इस उम्र में उन्हें किसी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तो तैयार होना नहीं है, अतः उन्हें अपनी सामर्थ्य और जरूरत के अनुसार उतना ही व्यायाम करना चाहिए, जो उन के लिए लाभदायक व शक्तिवर्धक हो.

यह आम धारणा है कि व्यायाम करने वाला व्यक्ति कभी बीमार ही नहीं पड़ सकता और स्वास्थ्य ठीक रहने के कारण उस की आयु बहुत लंबी होती है. संभवतः इस में कुछ हद तक सचाई है. परंतु अच्छी देखभाल व पूरी खुराक मिलने पर भी मशीन में कभी न कभी थोड़ी बहुत टूटफूट होने की संभावना रहती ही है. यह दूसरी बात है कि सही रखरखाव से उस में होने वाली खराबी की दर बहुत कम होती है. लंबी उम्र जीना व्यायाम का लक्ष्य नहीं है. सच तो यह है कि व्यायाम आयु में जीवन डाल सकता है, परंतु जिंदगी को बढ़ा नहीं सकता. यह मात्रा की अपेक्षा गुणों पर अधिक प्रभाव डालता है.

हालांकि यह भी कहा जाता है कि घूमने, दौड़ने, योग या अन्य किसी तरह के शारीरिक श्रम द्वारा यदि प्रति सप्ताह 2000 कैलोरी खर्च कर दी जाए तो एक साधारण मध्यम उम्र वाला व्यक्ति अपनी आयु में

शीर्षासन : रक्त परिसंचरण को चुस्तदुरुस्त करने का अच्छा व्यायाम.

की बढ़ोतरी कर सकता है किंतु विशेष बात तो यह है कि व्यायाम व्यक्ति को बड़ी उम्र में भी चुस्त और आत्मनिर्भर बनाता है. अधिकांश वृद्ध सीढ़ियां नहीं चढ़ सकते, चलना या अपने घर का अन्य कोई कठिन काम नहीं कर सकते. दीर्घकालीन बीमारियां उन की कार्यक्षमता को चूस लेती हैं. व्यायाम उन की रिसती, घिसटती जिंदगी में जान डालता है, परंतु उन्हें चिर आयु प्रदान करना उस के बूते से परे नहीं.

"हृदय रोगियों और रक्तचाप के रोगियों के लिए व्यायाम मृत्यु का निमंत्रण है" जैसी बातों पर दृढ़तापूर्वक प्रहार करते हुए अपने देश और विदेशों में हो रहे शोधों ने यह स्पष्ट परिणाम दिए हैं कि नियमपूर्वक प्रतिदिन व्यायाम करने वाले कई रोगियों का रक्तचाप काबू में लाया जा सकता है. यह एक कष्टजनक चरबी कण ट्रीगलीसीरिडस को कम कर के कोलेस्ट्रोल की बढ़ोतरी पर रोक लगाता है.

'व्यायाम हृदय रोगों पर किस प्रकार प्रभाव डालता है.' इस सर्वेक्षण का परिणाम यह रहा कि शारीरिक रूप से निष्क्रिय लोगों में हृदय रोग की संभावना सक्रिय लोगों की अपेक्षा दोगुनी पाई गई. डाक्टर आर्थर लियोन ने हृदय रोग की अत्यधिक संभावना वाले 12,138 अधेड़ लोगों पर सात वर्ष तक अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि शारीरिक कार्य जैसे, खेत में काम, घर की मरम्मत, चलने या अन्य कार्यों के जरिए उन में उल्लेखनीय रूप से हृदय रोग की संभावना खत्म हो गई. निष्क्रिय व्यक्ति की अपेक्षा एक व्यक्ति जो दिन में 30 मिनट या इस से अधिक सक्रिय रहता है, की हृदय रोग से मरने की संभावना एकतिहाई प्रतिशत कम हो जाती है.

व्यायाम एक बार दिल का दौरा पड़ चुके व्यक्ति भी कर सकते हैं, जबकि 'जौगिंग' उन के लिए घातक है. यह ठीक है

लड़कों की तरह लड़कियां भी व्यायाम कर के अपने को स्वस्थ रख सकती हैं.

अर्ध मत्स्येंद्रासन : इस व्यायाम से शरीर में स्फूर्ति बढ़ती है.

व्यायाम की एक मुद्रा : इस व्यायाम में मांशपेशियों के सिकुड़ने और फैलने से जांघों पर दबाव पड़ता है. इस व्यायाम से जांघों का मोटापा कम हो जाता है.
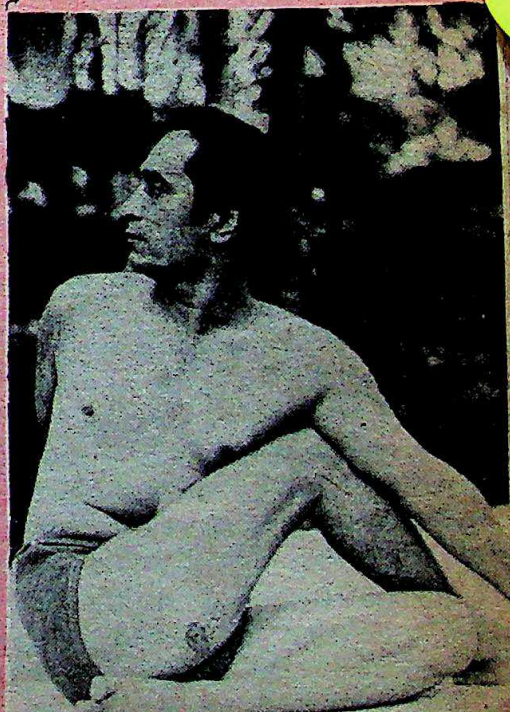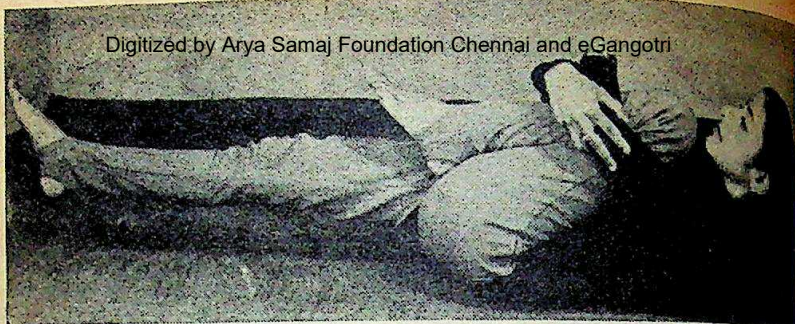
कि व्यायाम दिल के दौरे से मृत्यु की घटना को बहुत कम कर देता है, परंतु यदि कोई व्यक्ति एकदम व्यायाम शुरू कर दे और झटके से एकदम रोक कर बैठ जाए तों इस से खतरा बढ़ जाता है. जो व्यक्ति 35 वर्ष की उम्र से बड़ा है, काफी कार्यशील रहता है, डाक्टरी जांचपड़ताल करा चुका है और उसे व्यायाम करते समय नाड़ी का बहुत अधिक तेज चलना, हृदय की द्रुतगति, हृदय में दर्द या दबाव, हाथों या गले में दर्द के लक्षण प्रतीत नहीं होते तो वह बेखटके व्यायाम कर सकता है. परंतु उस से भी पहले उस व्यक्ति को व्यायाम, जोगिंग, एरोबिक व्यायाम, जिमनास्टिक आदि का अंतर भलीभांति मालूम होना चाहिए.

घूमना कइयों के लिए एक आदर्श व्यायाम है, पर सब के लिए नहीं. इस से सब व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं, परंतु हर व्यक्ति यह पसंद नहीं करता. घूमने के लिए किसी प्रशिक्षण, उपकरण या सुविधा की जरूरत भी नहीं है. नियमपूर्वक प्रतिदिन तेजी से 45 मिनट घूमना 200 से 300 कैलोरी खर्च करता है, जो हृदय के दौरे की आशंका को समाप्त करता है.

यही लक्ष्य इस से आधे समय में जोगिंग द्वारा पाया जा सकता है और उस से भी आधे समय में तैरने या साइकिल चलाने से प्राप्त हो जाता है. सप्ताह में तीन दिन निरंतर 20 मिनट व्यायाम करने से यही लाभ मिलता है.

कुछ व्यक्ति व्यायाम तो करते हैं, परंतु अपनी बुरी आदतें जैसे, सिगरेट पीना या नशा करना आदि नहीं छोड़ पाते. सामान्यतः उन के लिए व्यायाम बेअसर माना जाता है यद्यपि उन के लिए इसे छोड़ना ही अच्छा है किंतु ऐसा न कर पाने की अवस्था में भी व्यक्ति व्यायाम से लाभान्वित हो सकता है. ऐसे लोगों को 'बीमारियों से बचने के लिए शारीरिक श्रम कर के सप्ताह में कम से कम 2000 कैलोरी खर्च करनी होगी.

व्यायाम करने वाले ऐसे व्यक्ति की मादक द्रव्यों से आकस्मिक मृत्यु की संभावना व्यायाम न करने वाले व्यक्ति की अपेक्षा 25% कम हो जाती है.

व्यायाम कर के व्यक्ति स्वयं को हलका, प्रसन्नचित्त व तनावरहित पाता है. कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि व्यायाम करने या श्रम करने में मस्तिष्क से 'एंडोरफीन' नामक एक पदार्थ निकलता है, जो व्यक्ति को प्रसन्नता का एहसास कराता है, परंतु इस पर मतभेद है क्योंकि इसे न बनने देने की अवस्था में भी व्यायाम कर के व्यक्ति प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है.

व्यायाम करने में हम साथियों की सोहबत का भी आनंद लेते हैं, व्यायाम शुद्ध खून मस्तिष्क तक पहुंचा कर उसे ताजगी से भर देता है. व्यायाम करते समय व्यक्ति अपने तनावों, परेशानियों और दुखों को भुला देता है. वास्तव में जीवन गति का नाम है और व्यायाम उसे गतिशील बना कर आनंद और शक्ति प्रदान करता है.

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. : निर्देशक
स : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु.पा. : मुख्य पात्र

बहूरानी : आज का दौर तेज गति से भागती फिल्मों का है. ऐसे में निर्माता निर्देशक ने पुरानी फिल्मों की तरह धीमी गति से 'बहूरानी' फिल्म बना कर दर्शकों को उबासी के अलावा कुछ नहीं दिया है. फिल्म की कहानी गांव से शुरू होती है और शहर में समाप्त होती है. माधुरी (रेखा) गांव की पढ़ीलिखी लड़की है. उस की शादी शहर के एक अमीर लड़के अमित (राकेश रोशन) से होती है जो आधुनिक लड़की की चाह में शादी के तुरंत बाद रेखा को छोड़ देता है. बाद में माधुरी मालती बन कर शहर पहुंचती है और अपने पति को प्रेम जाल में फंसाती है. मालती से जब अमित शादी का प्रस्ताव रखता है तो वह भेद खोलती है. बहू व बीवी की भूमिका के साथ रेखा ने न्याय किया है. नि. : मानिक चटर्जी मु.पा. : रेखा, राकेश रोशन, उत्पल दत्त, उषा किरण, राकेश बेदी, अरुणा ईरानी. म.

शानदार : इस फिल्म में कहानी नाम की कोई चीज नहीं है. बेतरतीब घटनाओं का सिलसिला जोड़ कर निर्देशक ने एक लंबी फिल्म बना डाली है. फिल्म में गरीबों द्वारा अमीरों को जी भर कर कोसा गया है. शंकर के रूप में मिथुन चक्रवर्ती गला फाड़फाड़ कर चिल्लाता रहा है या फिर मारपीट करता रहा है. अंत में मारा जाता है. जूही चावला की भूमिका छोटी जरूर है पर उतने समय में वह फिल्म का आकर्षण बन गई है. नि. : विनोद दीवान, मु.पा. : मिथुन चक्रवर्ती, सुमित सहगल, मीनाक्षी शेषाद्रि, जूही चावला, कादर खान, डैनी, मंदाकिनी व तनूजा. अ.

जीने दो : गांव की समस्या और गांव की पृष्ठभूमि पर फिल्म बनाने वाले निर्मातानिर्देशक बंबई की भागती जिंदगी में शायद यह जताने की कोशिश ही नहीं करते कि आज का गांव कैसा है, अगर उन्हें जानकारी होती तो किसानों पर साहूकारों के अत्याचार नहीं बल्कि बैंक द्वारा भ्रष्टाचार या सरकारी कर्मचारियों द्वारा शोषण पर फिल्म बनाते. 'जीने दो' की कहानी आजादी से भी दो दशक पहले की कहानी लगती है जबकि नायिकाओं का पहनावा आधुनिक [illegible]

फिल्म की पटकथा सशक्त होने के कारण बोझिल नहीं हुई है. साथ ही नए निर्देशक ने सभी चालू मसालों को अपना कर फिल्म की गति को बनाए रखा है. नि. : राजेश सेठी मु.पा. : जैकी श्राफ, संजय दत्त, फरहा, सोनम, अमरीश पुरी, शक्ति कपूर, अनुपम खेर अ.

बाप नंबरी बेटा दस नंबरी : पूरी फिल्म कादरखान पर टिकी है. जिस ने अपने लटकोंझटकों से दर्शकों को बांधे रखा है. फिल्म में कई प्रसंग ऐसे हैं, जिन से दर्शक हंसने से अपनेआप को रोक नहीं पाते. फिल्म में हास्य लाने के लिए चालू शब्दों के साथ कार्टून का भी सहारा लिया गया है. रमण (कादरखान) एक नंबरी धोखेबाज है. वह अपने लड़के प्रसाद (शक्ति कपूर) को बचपन से ही धोखाधड़ी में माहिर बनाता है. रमण अपनी बहन गायत्री (अंजना मुमताज) को पागल करार कर पागल खाने में डाल देता है तथा उस के बेटे रवि को [illegible] बैठा देता है. थोड़ी नाटकीयता के बाद अनिल नामक एक नौजवान रमण से गायत्री का हक मांगता है तो वह बौखला जाता है तथा उसे जान से मारने के लिए रवि का सहारा लेता है जो बस्ती का दादा है. रवि अनिल को मारने जाता है, जहां वह अपनी मां से मिलता है. रवि व अनिल दोनों मिल कर रमण व प्रसाद को कानून के हवाले करते हैं तथा गल्लू बादशाह के आतंक को समाप्त करते हैं. नि. : अमीज सजावल मु.पा. : जैकी श्राफ, फरहा, आदित्य पंचौली, साबिहा, अंजना मुमताज, असरानी, गुलशन ग्रोवर, शक्ति कपूर और कादर खान. अ. :

प्यार का कर्ज : प्यार का कर्ज औसत मसाला फिल्म है जिस में दो बड़े नायक और तीन बड़ी नायिकाएं हैं. पूरी फिल्म फ्लैश बैक में चलती है. ढेर सारे मसाले होने के बावजूद फिल्म दर्शकों को प्रभावित नहीं कर पाती. फिल्म में दो गीत, थोड़ी-बहुत कामेडी और आऊटडोर शूटिंग में अच्छी फोटोग्राफी के अलावा कुछ भी नहीं है. निर्देशन सामान्य है तथा संवाद चालू किस्म के. नि. : के. बापय्या मु.पा. : मिथुन चक्रवर्ती, मीनाक्षी शेषाद्रि, नीलम, सोनम, कादर खान, विनोद मेहरा, [illegible] (विशेष भूमिका में), अ.

अग्निपथ : फिल्म की कहानी एक आदर्शवादी अध्यापक मास्टर दीनानाथ (आलोकनाथ) के बेटे विजय (अमिताभ) पर केंद्रित है. कांचा (डैनी) गांव के जमींदार के साथ मिल कर उस के बाप की हत्या कर देता है. विजय अकेला ही अपनी बहन दीक्षा (नीलम) को पालतापोसता है. वक्त बदलता है और विजय एक

बड़े गिरोह का सरगना बन जाता है. वह एकएक कर सभी से अपना बदला लेता है. अंत में खुद भी गोलियों से छलनी हो जाता है. विजय के साथ जंग में उस का साथ देने वाला मिथुन चक्रवर्ती दीक्षा से शादी कर लेता है. **नि.** : मुकुल आनंद **मु.पा.** : अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती, माधवी, नीलम, आलोकनाथ, रोहिणी हट्टंगड़ी, शक्ति कपूर व डैनी अ

जहरीले : कहानी का आधार है बुराई पर अच्छाई की जीत. इसे दिखाने के लिए निर्देशक ने न केवल फिल्म को तेज गति दी है बल्कि फिल्म का समूचा तानाबाना पश्चिम की फिल्मों के तर्ज पर तैयार किया है. फिल्म की कहानी बासी है. एक हाथ से लाचार जीतेंद्र से इतनी मारपीट करवाई गई है तथा कुछ ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं जो हकीकत में संभव नहीं है. अभिनय की दृष्टि से केवल संजय दत्त का काम अच्छा रहा. **नि.** : ज्योति गोयल **मु.पा.** : जीतेंद्र, भानुप्रिया, संजय दत्त, चंकी पांडे, जूही चावला, विनीता, शफी इनामदार, शरत सक्सेना अ.

वफा : जिस तरह की कहानी पर यह फिल्म बनाई गई है उस तरह की कहानी पर टीवी का नाटक तो चल सकता है पर लंबाई की फिल्में नहीं. यही वजह है कि फिल्म की लंबाई को पूरा करने के लिए निर्देशक को फूहड़ हास्य का सहारा लेना पड़ा.

फिल्म की कहानी में राधिका (विजेता पंडित) शादी वाले दिन ही विधवा हो जाती है. काफी समय बाद राधिका पर गर्भावस्था के लक्षण प्रकट होते हैं. वह घबरा जाती है तथा सोचती है कि घर में रह रहे युवक शेखर (फारुख शेख) ने ही बेहोशी की दवा खिला कर उस की यह दशा बनाई है. खानदान की इज्जत बचाने के लिए वह शेखर से प्यार का नाटक करती है तथा चुपचाप विवाह कर लेती है. अंत में पता चलता है कि वह कभी गर्भवती थी ही नहीं. वह शेखर से सब कुछ भूलने के लिए कहती है, पर वह उस की बात नहीं मानता और राधिका मर जाती है तथा शेखर पागल हो जाता है. **नि.** : एस.एम. अब्बास **मु.पा.** : फारुख शेख, करण शाह, विजेयता पंडित, जगदीप, मुकरी आदि. अ.

रिहाई : इस फिल्म का उद्देश्य पैसा कमाना नहीं, बल्कि विवाहेत्तर संबंधों की नई व्याख्या करना है. फिल्म में यह साबित करने की कोशिश की गई है कि शारीरिक भूख नैसर्गिक है और यह पति के प्रति बेवफाई का कोई प्रमाण नहीं है. फिल्म की कहानी गुजरात के एक गांव की है, जहां अमरजी अपने पांचछः साथियों के साथ बंबई काम करने जाता है.

गांव में औरतें व बूढ़े खेतीबाड़ी करने के लिए रह जाते हैं. एक दिन गांव में मनसुख (नसीरुद्दीनशाह) नाम का एक युवक दुबई से वापस आता है, जो गांव की औरतों में चर्चित होता है. कुछ औरतों के साथ उस का शारीरिक संबंध होता है, जिस से वे गर्भवती होती हैं. अमरजी की पत्नी टकूबाई (हेमामालिनी) भी मनसुख के जाल में फंस कर गर्भवती हो जाती है. अमरजी जब बंबई से वापस आता है तो उसे पता चलता है कि उस की पत्नी के पेट में पराए पुरुष का बच्चा है. वह उसे स्वीकारने से मना करता है. अंत में गांव की महिलाएं एकजुट हो कर अपनेअपने पतियों को लताड़ती हैं. कुछ भाषणबाजी के बाद सभी पुरुष अपनीअपनी पत्नियों को माफ कर देते हैं. **नि.** : अरुणा राजे **मु.पा.** : विनोद खन्ना, हेमा मालिनी, नसीरुद्दीन शाह, नीना गुप्ता, रीमा लागू व इला अरुण. अ.

महासंग्राम : हिंसा पर आधारित फिल्म है. फिल्म की सब से बड़ी कमजोरी उस की कहानी है. एक तरफ लगता है कि फिल्म आपसी रंजिश पर आधारित है तो दूसरी ओर प्रेम कहानी भी समानांतर चलती है. गोदा (अमजद खान) व विश्वराज (किरन कुमार) तसकरों के गिरोह के मुखिया हैं. दोनों आपसी दुश्मनी को समाप्त करने के लिए अपने लड़केलड़कियों की शादी आपस में करते हैं. पर गोदा की बेटी पूजा (शाहीन) अर्जुन (गोविंदा) से प्यार करती है. पूजा का खूंखार भाई अर्जुन को जान से मारने की योजना बनाता है. उधर अर्जुन के भाई विशाल (विनोद खन्ना) को जब यह पता चलता है कि उस का भाई मारा गया तो वह बदले की आग बुझाने शहर आता है.

विशाल बदला लेने के लिए सूरज के घर में घुस जाता है जहां सूरज व उस के आदमी उस को मारमार कर अधमरा कर देते हैं. माधुरी दीक्षित विशाल को बचाती है तथा अर्जुन के जिंदा होने की खबर देती है. अर्जुन व विशाल मिल कर बदला लेते हैं. जिस में सभी खलनायक मारे जाते हैं. **नि.** : मुकुल एस. आनंद **मु.पा.** : विनोद खन्ना, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, शाहीन, आदित्य पंचोली, सोनू वालिया, सुमित सहगल, अमजद खान व किरण कुमार. अ.

आवारगी : फिल्म की कहानी दो भागों में बटी है. पहले भाग में प्रेम का त्रिकोण है तो दूसरे भाग में गिरोह युद्ध. आजाद (अनिल कपूर) अनुपम खेर के गिरोह में काम करता है. वह मीना (मीनाक्षी शेषाद्रि) को कोठे से छुड़ाता है तथा उसे गायिका बनाने का प्रयास करता है. मीना को ले कर दूसरे गिरोह के सरगना भाऊ

(परेश रावल) से आजाद की ठन जाती है. उधर मीना को गायक धीरेन (गोविंदा) से प्यार हो जाता है. अंत में मीना

को बचाने के लिए आज़ाद भाऊ को मार देता है तथा मीना का हाथ धीरेन के हाथ में दे कर खुद भी मर जाता है. फिल्म का गीतसंगीत अच्छा है. **नि. :** महेश भट्ट, **मु.पा. :** अनिल कपूर, गोविंदा, मीनाक्षी शेषाद्रि, अनुपम खेर, परेश रावल, अवतार गिल व सतीश कौशिक. **अ.**

खतरनाक : इस फिल्म का निर्माता स्वयं मारधाड़ निर्देशक है, इसी लिए अपनी इस फिल्म में उस ने ज्यादा से ज्यादा मारधाड़ ही दिखाने की कोशिश की है. मारधाड़ के अलावा फिल्म में जो कुछ है, सब लचर है. फिल्म की कहानी एक आवारा लड़के सूरज (संजय दत्त) की कहानी है जो संगीता (फरहा) के लिए खूंखार अपराधियों से टकराता है तथा उन्हें समाप्त कर संगीता का हाथ थाम लेता है. फिल्म का निर्देशन बेकार है व संवादों में भी कोई दम नहीं है. **नि. :** भारत रंगाचारी **मु.पा. :** संजय दत्त, फरहा, अनिता राज, किरन कुमार, अनुपम खेर तथा गोविंदा (मेहमान कलाकार) **अ.**

तकदीर का तमाशा : सत्यदेव (जीतेंद्र) एक ईमानदार व्यक्ति है. एक तसकर शेषनाग (सदाशिव अमरापुरकर) के जुल्मों से तंग आ कर वह भी तसकर बन जाता है. सत्यदेव की पत्नी अपने दो बच्चों को ले कर घर छोड़ कर चली जाती है. दोनों बच्चों के बड़े होने के बाद उन में से एक पुलिस निरीक्षक सत्यप्रकाश बनता है तथा दूसरा गरीबों का मसीहा. देव तथा शेषनाग में टक्कर होती है. देवा तथा सत्य प्रकाश में टक्कर होती है. टक्कर में ही फिल्म समाप्त हो जाती है. अंत में परिवार के सभी सदस्य मिल जाते हैं. **नि. :** आनंद **मु.पा. :** जीतेंद्र, गोविंदा, आदित्य पंचोली, किमी काटकर, मौसमी चटर्जी, सदाशिव अमरापुरकर, सतीश कौशिक, गुलशन ग्रोवर, मंदाकिनी (मेहमान कलाकार). **अ.**

आग का गोला : फिल्म में सिवा नाटकीयता के और कुछ भी नहीं है. नाटकीयता भी कुछ ऐसी जो अविश्वसनीय लगे. राजा (प्रेम चोपड़ा) शंकर (सनी) को चोरी करने में माहिर बना कर अपने हाथ की कठपुतली बना लेता है पर अंत में शंकर न केवल खुद मर जाता है बल्कि राजा भी मारा जाता है. शंकर का बेटा बड़ा हो कर एक ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर बनता है. बारबार घटनाएं बदल कर निर्देशक ने अपनी अदूरदर्शिता का ही परिचय दिया है. अर्चना पूरनसिंह की उत्तेजक अदाएं भी टिकट खिड़की पर भीड़ नहीं जुटा सकी. **नि. :** डेविड धवन, **मु.पा. :** सनी देओल, डिंपल कपाड़िया, अर्चना पूरनसिंह, शक्ति कपूर, रजा मुराद और प्रेम चोपड़ा. **अ.**

मैं ने प्यार किया : किशोर अवस्था के प्रेम पर आधारित इस फिल्म की कहानी में नवीनता नहीं है. फिर भी फिल्म का निर्देशन व पटकथा इतनी मंजी हुई है कि दर्शक पूरी फिल्म में बंधा रहता है. नाचगाने से भरपूर फिल्म में पार्श्व से 'आई लव यू' की गूंज दर्शकों को मदहोश कर देने वाली है. सलमान खान व भाग्यश्री अपनीअपनी भूमिकाओं के साथ न्याय करने में सफल रहे हैं. फिल्म की लोकप्रियता एक बार यही साबित कर रही है कि दर्शकों के लिए बड़े सितारों का नाम भीड़ जुटाने के लिए पर्याप्त नहीं है. **नि. :** सूरज बड़जात्या **मु.पा. :** सलमान खान, भाग्यश्री, राजीव वर्मा, आलोक नाथ, रीमा लागू, अजीत वाच्छानी, मोहनीश बहल तथा हरीश पटेल **म.**

पाप का अंत : पुरानी कहानी पर मसालों से भरी एक फिल्म है. फिल्म की कहानी दो हिस्सों में बंटी है. पहले हिस्से में राजेश खन्ना है तो दूसरे हिस्से में गोविंदा व हेमा मालिनी हैं. पहले नायक की हत्या होती है, दूसरा नायक बदला लेता है और पाप का अंत करता है. फिल्म की रफ्तार तेज करने के लिए तेजाब की तर्ज पर एक डिस्कोडांस भी है. अभिनय में केवल गोविंदा ही प्रभावित कर पाता है. राजेश खन्ना अब नायक की भूमिका में बेकार लगता है. हेमा मालिनी अधेड़ उम्र में मारधाड़ करते हुए ठीक नहीं लगती. **नि.** विजय रेड्डी, **मु. पा.** राजेश खन्ना, हेमा मालिनी, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, रंजीत, अनुपम खेर, महावीर शाह, तेज सप्रू. **अ.**

चालबाज : वर्षों पहले हेमा मालिनी की एक फिल्म आई थी, 'सीता और गीता', जिस में दो जुड़वां बहनों की कहानी थी. चालबाज बहुत कुछ उसी फिल्म की नकल है. इस फिल्म में श्रीदेवी की दोहरी भूमिका है. दोनों भूमिकाओं को श्रीदेवी ने बखूबी जिया है. श्रीदेवी ने फिल्म में जितना बढ़िया नृत्य किया है, उतना ही सुंदर हास्य अभिनय किया है. यद्यपि फिल्म में आगे क्या होगा, जैसी कोई बात नहीं है. फिर भी दर्शक अगर सीटों पर बैठा रहता है तो इस का सारा श्रेय निर्देशक को जाता है. **नि. :** पंकज पराशर, **मु.पा. :** श्रीदेवी, सनी देओल, रजनीकांत, अनुपम खेर, रोहिणी हटंगड़ी, शक्ति कपूर, अन्नू कपूर. **म.**

जख्म : बाप और बेटे के बीच बदले की कहानी पर बनाई गई फिल्म में देखने को कुछ भी नहीं है. न तो कलाकारों का अभिनय है, न कहानी, न संवाद और न ही गीतसंगीत. चंकी पांडे परिस्थितियों के कारण सड़क छाप गुंडा बन जाता है. बाप से बदला लेने के लिए उस की तलाश शुरू करता है. बाप की तलाश में वह शत्रुघ्न सिन्हा से टकराता है जो एक ट्रक ड्राइवर है. दोनों में मारपीट होती है और फिर दोनों ही दोस्त बन जाते हैं. अंत में अनुपम खेर और उस के नाजायज बेटे से नायक और उस के दोस्त का टकराव होता है जिस में खलनायक मारा जाता है. **नि. :** इरफान खान, **मु.पा. :** शत्रुघ्न सिन्हा, चंकी पांडे, नीलम, अनुपम खेर, एटली ब्रार, विवेक वासवानी, रूबीना व माधवी **अ.**

लड़ाई : नाम के अनुरूप फिल्म में लड़ाई खूब है. 'जज' की नकल पर बनी फिल्म में कुछ भी नयापन नहीं है. खलनायक एक व्यक्ति का खून करता है. झूठी गवाही व सरकारी वकील के प्रयास से अपराधी खुद बच जाता है तथा खून का इलजाम एक निर्दोष व्यक्ति पर लगता है. आजीवन कारावास की सजा काट कर आया व्यक्ति सरकारी वकील (रेखा) के सामने आत्महत्या कर लेता है. पश्चाताप की आग में जलती रेखा उस के दोनों लड़कों, शेरा व अमर, के सहयोग से असली अपराधी के विरुद्ध लड़ाई छेड़ देती है. असली अपराधी मारा जाता है. **नि.** दीपक शिवदासानी **मु.पा.** रेखा, किमी, आदित्य पंचोली, डिंपल, मंदाकिनी, अनुपम खेर, गुलशन ग्रोवर, सतीश शाह. **अ.**

...पने भाइयों से ...ग कहां... (पृष्ठ 121 का शेष)

...के लिए जरूरी है कि मैं दर्शकों की नजरों ...हूं. ऐसे में किसी यादगार भूमिका के ...र में हाथ पर हाथ धरे बैठा रह जाता ...कौन पूछता मुझे? जीने के लिए पैसा ...भी तो जरूरी था. इसलिए चाहे जैसी ...फिल्मों के प्रस्ताव मिलते गए मैं काम ...गया. इस बीच कई जगह ऐसे भी ...करने पड़े, जिसे मेरा मन स्वीकारने ...तैयार नहीं था.

आप ने इस्माइल मर्चेंट की फिल्मों में ...किया और जेम्स आइवरी के साथ भी. ...इन हस्तियों ने आप की प्रतिभा का ...योग किया?

किया. इन्हीं लोगों ने तो मेरी प्रतिभा को ...ा, संवारा, उस में चार चांद दिए. हालांकि ...प्रतिभा को बहुत पहले पहचान लिया था ...कपूर ने. उन्होंने मेरे भीतर के कलाकार को ...ा. उन की फिल्म 'आग' और 'आवारा' में ...ने काम किया. उन्होंने मेरी प्रतिभा का ...योग इतनी खूबसूरती से किया कि दर्शकों ने ...बेहद सराहा. उस के बाद जब मैं नायक ...तो किशन चोपड़ा, यश चोपड़ा और विमल ...जैसे कलाकारों ने मुझ से सही अभिनय ...करवाया.

आप ने फिल्मों में जबजब नृत्य किया है, ...नृत्य को सराहना मिली है. क्या आप ने ...सीखा है?

नहीं, बिलकुल नहीं, मैं ने आज तक नृत्य ...सीखा. मुझे लगता है कि मेरे अंदर यह ...कला भी कहीं छिप कर बैठी हुई है और जब ...मौका मिलने पर उभर कर सामने आ जाती ...वैसे मैं अपने नृत्य निर्देशकों के साथ हमेशा ...सहयोग करता रहा हूं. मेरी कोशिश रहती ...कि मेरी फिल्म में मेरा नृत्य भी अभिनय की ...तरह जीवंत लगे.

राजकपूर और शम्मीकपूर दोनों को ...रोमांटिक इनसान माना गया. आप अपने को ...क्या मानते हैं?

मैं अपने भाइयों से अलग कहां? मुझे भी आप रोमांटिक कह सकते हैं. हम सभी कपूर भाई अपने जीवन में बेहद रोमांटिक रहे हैं. आप यों कह सकते हैं कि हम पैदा ही हुए थे रोमांटिक इनसान के रूप में. रोमांस जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है. हम ने हर खूबसूरत चीज को सराहा है, चाहा है. मैं मानता हूं कि जब तक आदमी रोमांटिक न हो, वह क्रिएटिव (सृजन क्षम) हो ही नहीं सकता.

एक निर्माता के रूप में आप ने हमेशा एक से एक अच्छी और लीक से हट कर फिल्में बनाईं, लेकिन व्यावसायिक रूप से वे फिल्में असफल रहीं. आप इस का क्या कारण मानते हैं?

मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता. मैं नहीं समझता कि दुनिया का कोई फिल्मकार अपनी फिल्म के प्रदर्शन के पहले उस के बारे में कोई भविष्यवाणी कर सके, मैं ने दर्शकों को अच्छी फिल्में देने की कोशिश की. जो फिल्में बनाईं वे इस विश्वास के साथ कि दर्शक उन्हें पसंद करेंगे. हालांकि पत्रपत्रिकाओं में मेरी फिल्मों की सराहना हुई, लेकिन मैं ने वैसी फिल्में बना कर आर्थिक रूप से बहुत नुकसान उठाया. हो सकता है कि मेरी फिल्मों में ही कोई कमी रही हो. अगर सफल फिल्म का कोई फार्मूला मुझे मिल जाता तो मैं असफल फिल्में क्यों बनाता?

आप तो अब निर्देशक भी बन गए हैं. 'अजूबे' निर्देशित करते हुए कैसा महसूस कर रहे हैं? क्या अपने भीतर के निर्देशक को कलाकार से बेहतर पा रहे हैं?

अब इस वक्त कुछ कहना ठीक नहीं होगा. बतौर निर्देशक यह मेरी पहली फिल्म है. इस फिल्म को लिखा है तीन भारतीय तथा तीन रूसी लेखकों ने मिल कर. ताशकंद तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मैं ने बड़े सितारों को ले कर इस फिल्म की शूटिंग की है. पहले यह फिल्म प्रदर्शित होने दीजिए और दर्शकों की प्रतिक्रिया का इंतजार कीजिए. अब तक के मेरे कैरियर के 30 वर्षों में लोगों ने मुझे एक अभिनेता और निर्माता के रूप में देखा है, अब निर्देशक के रूप में भी देख लें. दर्शकों की प्रतिक्रिया मिलने के बाद ही मैं आप के इस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं. ●
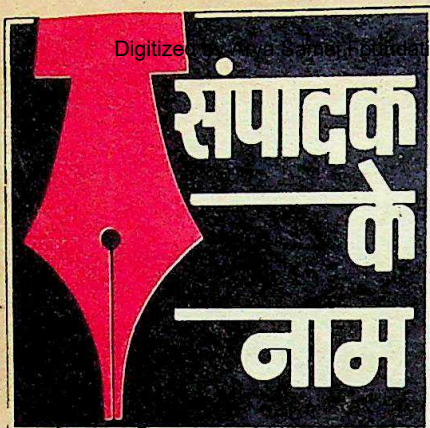
दुर्दशा आप्रवासियों की

दक्षिणी अफ्रीका में काले नेता नेल्सन मंडेला के 27 वर्षों बाद जेल से छूटने पर जो स्थिति वहां बसे 10 लाख भारतीय मूल के लोगों की हो रही है या होने की संभावना है, उस के विषय में मुक्तविचार के अंतर्गत की गई टिप्पणी 'गोरों कालों के बीच भूरे' (मार्च/प्रथम) सटीक है.

यह अत्यंत दुख का विषय है कि विश्व के विभिन्न भागों में बसे भारतीयों पर जो अत्याचार हो रहे हैं उस के प्रति भारत सरकार बिलकुल उदासीन है. चाहे पूर्व में फीजी हो या दक्षिण अमरीका के उत्तरी तट पर बसा गुयाना, सब की एक ही करुण कहानी है.

अंगरेजी शासन काल में 'गिरमिटिया' मजदूरों पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध जो आवाज उठाई गई थी वह अब स्वतंत्र भारत में सुनाई नहीं देती. जवाहरलाल नेहरू ने आप्रवासी भारतीयों की सुरक्षा के लिए जो आश्वासन दिए थे, सब भुला दिए गए हैं.

यह सच है कि विभिन्न देशों में भारतीय दूतावास के कर्मचारी इन भारतीय मूल के लोगों से कोई संबंध नहीं रखना चाहते. वास्तव में वे उन से घृणा ही करते हैं.

—विद्या सागर

*

क्लार्क से नई आशाएं

आखिर दक्षिण अफ्रीका की सरकार को नेल्सन मंडेला के चट्टानी इरादों के सामने झुकना ही पड़ा और उन्हें बिना शर्त जेल से रिहा करने पर विवश होना पड़ा. यह एक स्वागत योग्य कदम है.

पूर्व सरकार और पूर्व राष्ट्रपति बोथा ने जो कदम उठाए थे, उन्हीं का कुफल था कि लगभग पूरे विश्व ने दक्षिण अफ्रीका से नाता तोड़ लिया. क्लार्क के राष्ट्रपति बनने के बाद अब स्थिति सुधर रही है, कई अश्वेत बंदियों को छोड़ा जा चुका है. रंगभेद और अन्य बाधाओं को दूर करने में यह कदम सहायक सिद्ध होगा, इस में शक नहीं.

राष्ट्रपति क्लार्क का रंगभेद के विरुद्ध उठाया गया कदम श्रेयस्कर है. परंतु रंगभेद की समाप्ति के लिए अभी और बदलाव भी आवश्यक हैं.

—संजीव

*

स्वच्छ छवि वालों को ही प्रश्रय

टिप्पणी 'दलबदल जनता दल में' (मुक्तविचार/मार्च/प्रथम) में व्यक्त किए गए विचार अक्षरशः सत्य हैं. विश्वनाथ प्रताप सिंह को चाहिए कि वह कांग्रेस छोड़ कर जनता दल में आने के इच्छुक भ्रष्ट नेताओं को कतई आश्रय न दें. अन्यथा उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि जो जनता कांग्रेसियों के कथित भ्रष्टाचार के कारण राजीव गांधी को सत्ताच्युत कर सकती है, वह उन को भी नहीं बख्शेगी.

प्रधान मंत्री को चाहिए कि वह अपने दल में स्वच्छ छवि वालों को ही मान्यता दें, न कि कांग्रेस छोड़े हुए अथवा निष्कासित लोगों को.

इसी अंक की कहानी 'चुनौती' प्रेरणादायक रही. लेख 'कैरियर बनाने के लिए...' में ठीक ही कहा गया है कि यदि जीवन में कुछ पाना है तो घर का मोह त्यागना ही होगा. 'संकल्प, संघर्ष, सफलता' काफी सफल चल रहा है.

—उमेश चंद्र अग्रवाल

*

गलत आंकड़े

लेख '1989 की फिल्में' (फरवरी द्वितीय) के अंतर्गत काफी त्रुटियां थीं. सुभाष ... में 'चालबाज' फिल्म ...

...णाम आने की बात लिखी गई है लेकिन ...वी की फिल्मों की समीक्षा के तहत इसे ...असफल फिल्म बताया गया है. 'ट्रेड ...ड' तथा 'बाक्स आफिस' के आंकड़ों के ...सार यह एक सफल फिल्म है.

इसी तरह 'कसम वरदी की' फिल्म के ... में कहा गया है. यह फिल्म अवश्य ...फल रही थी.

1989 में जीतेंद्र की 'जिस्म का रिश्ता' ...कोई फिल्म प्रदर्शित नहीं हुई.

'जंगबाज' तथा 'ताकतवर' फिल्में कम ...गत पर बनने व औसत से अच्छा व्यवसाय

...ने के कारण सफल फिल्मों की सूची में ...ती हैं.

—हेमंत कुमार 'नायक'

*

अनुचित दखलअंदाजी

मुक्तविचार के अंतर्गत प्रकाशित टिप्पणी 'कशमीर के फंदे' (फरवरी/द्वितीय) ...व्यक्त आप के विचार सटीक लगे.

भारत के सब से खूबसूरत राज्य कशमीर पर अधिकार जमाने के लिए पाकिस्तान पहले भी दो बार भारत पर आक्रमण कर चुका है. लेकिन भारत की सेना ने उसे पराजित कर के उस के बुरे इरादे पूरे नहीं होने दिए.

आज यही पराजित पाकिस्तान उधार ...गी विदेशी हथियारों के बल पर भारत पर आक्रमण कर के कशमीर को हथियाने की कोशिश कर रहा है. शायद पाकिस्तान यह बात भूल चुका है कि पिछले दो आक्रमणों में उसे कितना भारी नुकसान उठाना पड़ा था. युद्ध विनाश का नाम है और यदि उस ने भारत को युद्ध करने के लिए बाध्य किया तो भारत की विशाल सेना के बहादुर जवान उसे ऐसा सबक सिखाएंगे कि फिर कभी वह भारत पर आक्रमण करने का साहस न कर सकेगा.

पाकिस्तान के लिए बेहतर यही होगा कि वह भारत के आंतरिक मामलों में दखलअंदाजी करना छोड़े.

—मुकेश अग्रवाल

*

बंदरबांट

टिप्पणी 'बंदरबांट पदकों की' (मुक्त-विचार/फरवरी/द्वितीय) ने काफी प्रभावित किया और पदकों की हो रही दुर्दशा के बारे में संकेत मिला.

ऐसे पदकों का क्या मूल्य है जो चाटुकारिता में दिए गए हों, समझ में नहीं आता. मोरारजी देसाई सरकार ने दूरदर्शिता का परिचय दे कर इन पदकों को बंद कर दिया था. लेकिन कांग्रेस ने इन्हें फिर से शुरू कर दिया.

विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जिस तरह से पदकों को बांटा है उस से तो यही प्रतीत होता है कि इन्होंने भी उसी परंपरा का निर्वाह किया है, जैसा पहले होता आया है अर्थात जो जिस दल की चापलूसी करे सत्ता में आते ही उसे 'चापलूसी पदक' से सम्मानित कर दे. पिछली सरकार ने इन पदकों को बदनाम किया था लेकिन उस बदनामी में एक कड़ी विश्वनाथ

प्रताप सिंह ने भी जोड़ी है.

पत्रकार निखिल चक्रवर्ती ने अपना पदक लौटा कर निस्संदेह उचित ही किया क्योंकि किसी भी सिद्धांतप्रिय व्यक्ति को इस प्रकार से मिलने वाले पदक 'छोटी सी घूस' से अधिक नहीं होते. —संजय तिवारी

*

प्रेरणाप्रद लेख

'संकल्प, संघर्ष और सफलता' के अंतर्गत प्रकाशित महेशचंद्र की संघर्षमय कहानी प्रेरणाप्रद रही है. महेशचंद्र ने उन लोगों के मुंह पर तमाचा मारा है जो यह कहते नहीं थकते कि आज बेईमानी के दौर में ईमानदारी से जिंदगी बसर करना नामुमकिन है.

वास्तव में आज यदि सरकारी अधिकारी अपने ऐशोआराम में कटौती कर लें तो रिश्वत के बाजार में एक हद तक गिरावट आ सकती है और देश की आर्थिक स्थिति में काफी हद तक सुधार हो सकता है.

—राजेश पांडेय

*

हालात और बुरे

'गोली की भाषा' (मुक्तविचार/फरवरी/द्वितीय) में व्यक्त विचार काफी सटीक एवं तर्कसंगत लगे. पंजाब आज पहले से भी अधिक खतरनाक दौर से गुजर रहा है. हत्या, लूटमार तथा अपहरण जारी है. पंजाब [illegible] अकाली राजनीति तथा इस के नेता, जो स्व[illegible] को पथ का सच्चा सेवक मानते हैं, गुमरा[illegible] युवकों की गोली की भाषा से शुरू से [illegible] भयभीत रहे हैं. जिस ने भी इन के विरुद्ध मुं[illegible] खोला, उसे अपनी आहुति देनी पड़ी. वर्तमा[illegible] परिवेश में इन आतंकवादी गुटों की आप[illegible] फूट चरम सीमा पर है तथा ये कुछ न कर पा[illegible] की स्थिति में सारा आक्रोश उसी पर उ[illegible] देते हैं जो सामने होता हैं.

सिमरनजीत सिंह मान शुरू से ही [illegible] नावों पर पैर रख कर चलना चाहते थे लेकि[illegible] गोली की भाषा के आगे उन्होंने भी घुटने टे[illegible] दिए और ऐसी भाषा बोलने लगे जो देश [illegible] मान्य नहीं है.

जब मान स्वयं इतने भयभीत हैं तो [illegible] वह अकाली नेतृत्व को कोई दिशा दे पाएं[illegible] यह एक अहम सवाल है जिस का उत्[illegible] मिलना शायद संभव न हो.

नई सरकार के बनने तथा पंजा[illegible] समस्या के समाधान के प्रयत्न में मान ने [illegible] रुख अपनाया है उस से पंजाब के लोगों [illegible] असुरक्षा तथा भय ही बढ़ा है.

देखना यह है कि मान कब तक द्विवि[illegible] की राह पर चलेंगे तथा गोली की भाषा बो[illegible] वालों से बचे रहेंगे. —राजेंद्र मधु[illegible]

> 'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो, पत्र इस पते पर भेजिए.
>
> संपादक के नाम,
> मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
> नई दिल्ली-110055

*

प्यार बिना जग सूना

लेख 'सेक्स से वंचित जीवन में [illegible] अनिवार्य है सेक्स' (फरवरी/द्वितीय) में व्यक्[illegible] विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं.

जीवन में प्यार, अपनापन अंतरंग[illegible] जरूरी है. इस के बिना जीवन प्यासा, नीर[illegible] तथा अधूरा महसूस होता है. —अंगूरी [illegible]

*

उपयोगी पत्रिका

लेख 'जीवन में सफलता प्राप्त करने के [illegible] लिए एकाग्रचित्त होइए' (फरवरी/द्वितीय[illegible] किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लि[illegible] उपयोगी साबित हुआ. लेख में विभिन्न तरह [illegible] उदाहरण दे कर समझाने का तरीका [illegible]

—चंद्र शेखर [illegible]

पसंद आया

मुक्ता अप्रैल (द्वितीय) 1990 रु. 6.00
मुक्ता
जब आप
के साथ परिचित
पुरुष हों

कला · कांति · कर्मण्यता

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पाक्षिक प

राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय

विविध

कैरियर, जानकारी

व्यवहार

खेल

विज्ञान

फिल्म, मनोरंजन

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय:
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वबन्धु द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

अप्रैल (द्वितीय) 1990
अंक : 568

कथा साहित्य

स्तंभ

कविताएं

फैशन

कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस ...र एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. ...त्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्टीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस ...क्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. पटना : 111, आशियाना टावर, ...ग्रान रोड, पटना-800001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सेंटर ..., 116 पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

...क मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'मुक्ता' के नाम से ई-3 ...ना एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी. ...र नहीं किए जाते.

मूल्य : यह प्रति 6.00 रु.
वार्षिक : 120 रु.
विदेशों में –
समुद्री डाक से :
225 रु. हवाई डाक से 550 रु.

मुक्ता

पाक्षिक

युवाओं की अनूठी व अकेली पत्रिका

आज युवकों पर ढेरों आरोप लगाए जा रहे हैं कि वह दिग्भ्रमित है, स्मैक के धुएं में डूबा है, आतंकवादी है, अपराधी है. अगर आप युवा हैं तो इसे सुन कर उद्वेलित भी हो सकते हैं.

मुक्ता अपने हर अंक में समाज के इन्हीं ज्वलंत समस्याओं से उभरे प्रश्नों का समाधान युवाओं को देती है जो अंधेरे में भटक रहे हैं या कि पीड़ित हैं.

मुक्ता

प्रत्येक अंक में–

राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक लेख, बेरोजगारी में स्वरोजगार की प्रेरणा, प्रतियोगिता में सफलता के नुस्खे, सफल उद्योगपति बनने के आसान तौरतरीके इस के साथ साथ युवाओं के मनोरंजन के लिए कहानियां, प्रेम रस में डूबी कविताएं, फैशन, फिल्म व लेख पर विशेष सामग्री.
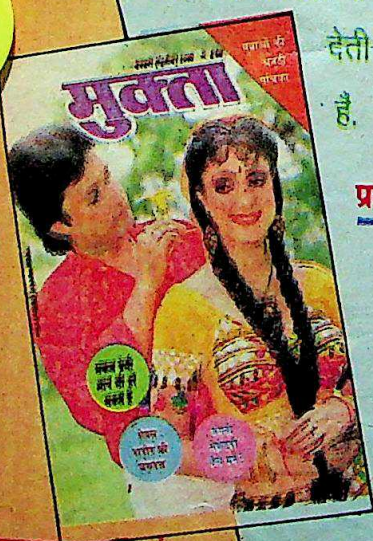
हर अंक जीवन में सफलता की एक कड़ी.

आज ही से नियमित खरीदें.

"हमारे केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर की सभी छः ओर स्टील की बॉडी है।"

हां ! सभी केल्विनेटर रेफ्रिजरेटरों की सभी छः ओर कोल्ड-रोल्ड स्टील की बॉडी होती है। उत्तम क्वालिटी का स्टील जो आपके रेफ्रिजरेटर को अधिक मुदृढ़ एवं टिकाऊ बनाता है। जिस से वह वर्षों आपको उत्तम सेवा प्रदान करता है।

असरदार केल्विनेटर विशिष्टताएं

* विश्व विख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर. ठंडा करने की अधिक क्षमता के लिए।
* अधिक स्टोरेज के लिए ज़्यादा शेल्फ़ें।
* विस्तृत श्रृंखला. नौ मॉडल, सभी नौ आकर्षक रंगों में उपलब्ध

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर लाखों सन्तुष्ट परिवारों के संगी साथी.

बिक्री एवं सर्विस के लिए : एक्सपो मशीनरी लिमिटेड प्रगति टावर, 26, राजेन्द्रा प्लेस नई दिल्ली-110008.

अप्रैल 1990

सुमन सौरभ

किशोरों की सचेतक पत्रिका

हाबी विशेषांक

अब विम लगभग आधी क़ीमत में...

...फ़ायदेमंद कैरीबैग में

आपका मनपसंद विम अब लगभग आधी क़ीमत में- यानी बचतवाले कैरीबैग में !

आप खुद ही देख लीजिए

पैक	क़ीमत प्रति १०० ग्राम
५०० ग्राम कनस्तर	१३५ पैसे
२.५ किलो कैरीबैग	७५ पैसे

अब आपके लिए विम और भी किफ़ायती होगा, क्योंकि थोड़े से विम से झाग का समन्दर बन जाता है, जो चिकनाई को धो डालता है, ज़्यादा बर्तनों में लाता है चमचमाती सफ़ाई. तो देर किस बात की? जाइए और ले आइए विम कैरीबैग अपनी सुविधा के साइज़ों में. (आपकी पसंद के लिए ५०० ग्रां, १ किलो, २.५ किलो के पैक में).

थोड़ा सा विम आए... ज़्यादा बर्तन चमचमाए

LINTAS VG 486 1811

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

संपादकीय
अप्रैल (द्वितीय) 1990

मुक्त विचार

पंजाब पर हिचकिचाहट

विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पंजाब में विधान सभा चुनावों को टालने का संवैधानिक संशोधन करा कर पंजाब समस्या को एक बार फिर गलीचे के नीचे छिपा कर ढांपने की कोशिश की है. विधान सभा के चुनावों को स्थगित करा कर ही पंजाब में शांति हो जाएगी, ऐसा सोचना बेमतलब है.

जनता दल सरकार का विचार है कि अभी पंजाब में चुनावों के लिए उपयुक्त माहौल नहीं बना है. जनता दल को आराम यह है कि केवल वही ही नहीं, भारतीय जनता पार्टी, कम्यूनिस्ट पार्टियां और यहां तक कि कांग्रेस भी ऐसा ही सोचती है. तभी वे संविधान संशोधन में सहयोग देने को तैयार हो गईं.

प्रश्न यह उठता है कि ऐसा उपयुक्त माहौल आखिर कब और कैसे बनेगा? कांग्रेस सरकार बंदूक का डर और पैसे का लालच भी दिखा कर देख चुकी है पर पंजाब में आतंकवाद कम नहीं हुआ है. पूरे पंजाब को छावनी बना देने से भी कुछ नहीं हुआ और पंजाब की सत्ता उदार सिख नेताओं को सौंपने से भी नहीं.

आतंकवादी उस मुहाने पर पहुंच गए हैं जहां से लौटना संभव नहीं है. उन्हें न पैसे की कमी है न स्वयंसेवकों की. उन को जनसमर्थन भी प्राप्त है. पूरा पंजाब नहीं तो कम से कम एक चौथाई तो उन के काम को धर्म के लिए लड़ी जाने वाली सच्ची लड़ाई मानता है. पंजाब जैसे खुशहाल प्रदेश में एक चौथाई लोगों का समर्थन भी किसी हिंसात्मक आंदोलन को दशकों तक चलाने के लिए काफी है.

केंद्र सरकार यदि दशकों तक माहौल ठीक होने का इंतजार करती रही और पंजाब में शांति होने पर भी चुनाव कराने पर अड़ी रही तो पंजाब देश का अपना ही एक उपनिवेश बन कर रह जाएगा. जो आज उदार हैं, पूरे देश के साथ चलने को तैयार हैं, वे भी आतंकवादियों के साथ जा मिलेंगे.

पंजाब में यदि अभी चुनाव कराए जाएं तो हानि यही है कि चुनाव आतंकवादियों की बंदूकों के साए में होंगे. चुनाव चुनाव न हो कर एक तरह से मखौल होंगे. आतंकवादियों के विरोधियों को मत ही नहीं देने दिए जाएंगे. जो आज हत्याएं कर के पैसे लूट रहे हैं, वे सत्ता में आ जाएंगे. पंजाब की नौकरशाही उस से भयभीत है और इसी लिए उस ने नई केंद्र सरकार को भी चुनावों को टालने के लिए राजी किया है.

पर यह पहली बार नहीं हो रहा है. विश्व भर में ऐसा हुआ है. अफ्रीका के कई देशों ने स्वतंत्रता बंदूक के सहारे पाई है. उस के बाद उन्हीं सैनिकों ने अच्छी भली सरकार चलाई है. इतिहास के पन्ने पलटें तो पता चलेगा कि कितने ही समृद्ध साम्राज्यों की नींव

लूट, बलात्कार और डकैतियां करने वाले गिरोहों ने डाली थीं. सत्ता पाने पर वे न केवल जिम्मेदार बन गए थे, उन्होंने नई शासन पद्धतियां लागू की थीं और लोगों को अपूर्व शांति प्रदान की थी.

पंजाब में ऐसा ही होगा, उस की गारंटी कोई नहीं दे सकता. आज का आतंकवादी केवल राज्य सरकार पा कर खुश हो जाएगा, इस का भरोसा नहीं है. उसे तो अपना अलग देश चाहिए. मुख्य मंत्री पद नहीं, राजा का पद चाहिए. फिर भी इस का प्रयास करने में क्या हर्ज है?

हो सकता है कि चुनावों के बाद गैर सिखों के लिए पंजाब में रहना ही दूभर हो जाए. उन्हें तंग किया जाए. पर अगर शासन आतंकवादियों के हाथ में होगा तो कम से कम हत्याएं तो नहीं होंगी. दोचार साल में आतंकवादियों को महसूस हो जाएगा कि पंजाब का गैर सिख तबका पंजाब के लिए भी आवश्यक है. पाकिस्तान ने लाखों हिंदुओं को पनाह ही नहीं दे रखी है, उन्हें काम करने, संपत्ति बनाने, अपने प्रतिनिधि चुनने की छूट भी दे रखी है. यह मानवी उदारता नहीं, आर्थिक आवश्यकता है. अफ्रीका के कई देश उन्हीं गोरों को मंत्रिमंडलों में शामिल कर रहे हैं, जिन्होंने वर्षों तक कालों को गुलाम बना रखा था. पंजाब में भी यदि ऐसा कुछ हो गया तो आश्चर्य नहीं.

यह नहीं भूलना चाहिए कि कांग्रेस के एकछत्र राज के दौरान देश के शक्ति केंद्र दिल्ली में सिमट आए थे. देश के अन्य हिस्सों में इस का प्रतिवाद नहीं हुआ तो इसलिए कि वहां रोष को जाति, धर्म या भाषा का आधार लोगों को नहीं मिला. पंजाब में धर्म का बनाबनाया तंत्र था जिस के सहारे केंद्र के विरुद्ध जिहाद छेड़ा जा सकता था. यह जिहाद तो और कई कोनों से उठना चाहिए था क्योंकि दिल्ली के शासक उतने ही बेजाने अनजाने हो गए थे जैसे अंगरेजों या मुगलों के जमाने में थे.

आशा यह थी कि जनता दल की नई सरकार इस गलती को ठीक करेगी, लेकिन वह भी कांग्रेसी जूतों में धंसने के चक्कर में लगी हुई है. उस को भी परंपराओं को बनाए रखने में शक्ति पुंज को कायम रखने में मजा आने लगा है. इस का परिणाम न जनता दल के लिए ठीक होगा, न देश के लिए.

देश सुचारु रूप से चले, इस के लिए आवश्यक है कि देश के हर कोने के राजशक्ति को चाहने वाले लोगों की आशाएं व आकांक्षाएं पूरी हो सकें. उन्हें केंद्र की कठपुतली बनने की तमन्ना नहीं, स्वयं अपने नीतिनिर्धारक होने की है. जब तक केंद्र सरकार सारी शक्ति नार्थ ब्लाक में सीमित रखना चाहेगी, इन लोगों को संतुष्ट रखना संभव नहीं.

पंजाब में चुनाव किसी को भी राज दें, केंद्र की शक्ति को अवश्य कम करेंगे और यही संघीय गणराज्य की आवश्यकता है. यह होना तो है ही, अब नहीं होगा तो दो साल बाद होगा. फिर अभी ही क्यों न कर लिया जाए?

रिश्वतों में डूबे नेता

बोफोर्स तोपों, जरमन पनडुब्बियों, आयातित खाद के बाद अब लगता है कि करोड़ों रुपए की एयरबस हवाई जहाज खरीद में भी पिछली सरकार ने मोटी कमीशन खाई थी. एयरबस ए-320

...लौर में हुई दुर्घटना के बाद की जा रही जांच में पता चल रहा है कि एयरबस की खरीद भी आननफानन में 'ऊपर' वाले के आदेशों पर की गई थी और ऐसा हवाई जहाज खरीद लिया गया था जिस की सफलता के बारे में लोग अभी तक पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे.

केंद्र सरकार के जांच ब्यूरो ने आठ व्यक्तियों के खिलाफ, 2,500 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा से की गई उस खरीद के मामले में मुकदमा दर्ज कर दिया है. ये आठों वे सरकारी अधिकारी हैं जो 2,500 करोड़ का एक प्रतिशत तो क्या एक प्रतिशत का एक प्रतिशत भी रिश्वत में लेने की हिम्मत नहीं कर सकते, पर आशा यही है कि इन के बयानों से शायद उस असली व्यक्ति का नाम सामने आ जाए जिस ने रिश्वत की रकम ली और फिर भी आज सफेद शुद्ध खादी के कपड़े पहन कर महात्मा गांधी की समाधि पर बैठ कर भजन गाने का हक रखता है.

दयनीय बात यह नहीं कि पिछले पांच सालों में हर विदेशी खरीद में रिश्वत क्यों ली गई. असली दयनीय बात तो यह है कि अब देश की नौकरशाही में ऐसे व्यक्ति बचे ही नहीं हैं जो करोड़ों रुपए की लूट के समय हल्ला मचाने का दम रखते हों. हर मामले में अंतिम फैसलों पर हस्ताक्षर अधिकारियों ने किए. उन्हें मालूम था कि क्या हो रहा है. पैसा कहां से कहां जा रहा है. वे यदि उस समय आपत्ति उठाते तो उन का मुंह बंद करना कठिन होता. फिर भी हमारे अधिकारी इस तरह मोम के पुतले साबित हुए कि उन्हें हमारे प्रिय नेता ने चाहे जैसा मोड़ लिया, तोड़ लिया.

देश अगर अपनी कमाई का दोतिहाई हिस्सा इस नौकरशाह को पालने पर खर्च करता है तो यह उम्मीद तो रखता ही है कि नौकरशाह देश के हितों की रक्षा करेगी. इन अधिकारियों को संविधान में, कानूनों में और व्यवहार में हर तरह की सुविधा, सुरक्षा व शक्ति दी गई है. इसी लिए तो कि वे चुनावों से जीत कर आने वाले कल के छोकरों को मनमानी न करने दें.
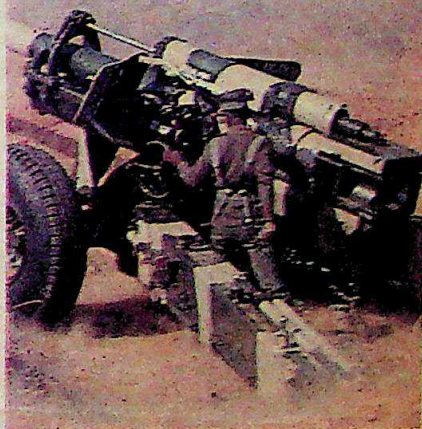
यहां उलटा हुआ. अधिकारियों ने सत्तासीनों को रोकने की बजाए. उन को रिश्वत कमाने के नए रास्ते बताए. उन के साथ साझेदारी कर के उन के पैसे को दुनिया भर में छिपा कर रखा है. भविष्य की राजनीति में अपना स्थान सुरक्षित कराने के बदले देश का पैसा विदेशियों के हवाले कर दिया. आज उन से पूछा जाए तो यही कहेंगे, "हम क्या करें. ऊपर से आदेश आया था."

नई जनता दल सरकार इन रिश्वतों को लेने वालों को पकड़ पाएगी, यह असंभव लगता है. जो लोग आज जांच कर रहे हैं कल तक वही लूट के हिस्सेदार थे. अगर वे हिस्सेदार नहीं भी थे तो भी वे एक बिरादरी के लोग तो थे ही. वे क्यों अपने ही साथियों को बदनाम करना चाहेंगे, क्यों उन की पोल खोलना चाहेंगे?

जनता दल सरकार के पास उन अधिकारियों के अलावा कोई और मशीनरी भी नहीं है. वे अपने दल के लोगों को इस काम में नहीं लगा सकते क्योंकि उन्हें नौकरशाही के दांवपेचों की समझ नहीं है. इसी लिए कांग्रेस निश्चिंत है कि इन जांचों से उन के नेताओं को कोई फर्क नहीं पड़ेगा. जब तक कोई सबूत मिलेंगे तब तक या तो बात पुरानी

पड़ जाएगी या फिर सरकार बदल जाएगी और सारा मामला फिर गहरे गड्ढे में दबा दिया जाएगा.

इस सारे प्रकरण की जड़ में हमारी जनता के मन में गहरी बैठी यह भावना है कि राजा देवत्व का अंश है और वह कभी कोई गलती नहीं करता. हमारे आदर्श अधिकांशतः राजा रहे हैं और वह ग्रंथ जो उन के गुणों का बखान करते हैं, उन के काले कारनामों को भी उजागर करते हैं. फिर भी हम उन को तर्क व नैतिकता की कसौटी पर आजमाने के स्थान पर भक्ति भावना से पूजते हैं. यही हम अपने आज के राजाओं के साथ कर रहे हैं.

कानूनी देश प्रेम

सरकार ने एक कानून में परिवर्तन कर के देश की सीमाओं के गलत नक्शे प्रकाशित करने को दंडनीय बनाया है. पहले उस कानून के अंतर्गत सजा तब ही दी जा सकती थी जब यह साबित किया जा सके कि यह गलती जानबूझ कर की गई है. नए कानून के अनुसार यदि अनजाने में यह भूल हो जाए तो दंड मिलेगा.

यह कानूनबाजी हमारी सरकार का कानूनों पर बेमतलब का भरोसा करने की प्रवृत्ति का उदाहरण है. सरकार सोचती है कि कानून बनाने मात्र से लोगों के दिल बदल सकते हैं. लोगों का व्यवहार बदला जा सकता है. इसी लिए हमारी केंद्र व राज्य सरकारें हर साल सैकड़ों नए कानून बनाती हैं. हर कानून के अंतर्गत नियम और अधिनियम बनते हैं.

इन सब के कारण कानूनों का जाल आज इतना व्यापक और जटिल हो गया है कि देश का कोई नागरिक दावा नहीं कर सकता कि उस ने कोई कानून नहीं तोड़ा. हर नागरिक के सिर पर हर काम करते समय यह भूत सवार रहता है कि न जाने कब कौन सा सरकारी मुसटंडा खाकी कागज हिलाता हुआ आ धमके और उसे देश द्रोही, समाज द्रोही, अपराधी घोषित कर दे.

यह ठीक है कि इतने कानूनों के बावजूद जेलें अपराधियों से नहीं भरी हैं. उस का कारण यह है कि हर कानून इस तरह घड़ा गया है कि रिश्वत ले कर कभी भी किसी को छोड़ा जा सकता है. हर कानून दरअसल सरकारी अधिकारियों के लिए ऊपरी कमाई का वरदान होता है.

अब इस कानून को ही लें. यदि किसी व्यक्ति ने अनजाने में किसी उपलब्ध मानचित्र के आधार पर देश की गलत सीमाएं देश प्रेम पर लिखी कविताओं के संग्रह के साथ प्रकाशित कर दीं तो क्या उसे इस कानून के अंतर्गत अपराधी माना जाएगा. नए परिवर्तन के बाद वह अपने बचाव में कोई सफाई नहीं दे सकता. उसे दंड भुगतना ही होगा.

दंड भुगतने का अर्थ है 40-50 बार अदालत जाना. यदि न्यायाधीश को रहम आई तो वह 100-200 का जुर्माना कर के छोड़ सकता है. वरना वह चाहे तो जेल में बंद भी कर सकता है.

इस प्रकार का कानून अपने आप में अनैतिक है. देश प्रेम हर नागरिक में स्वतः पैदा होता है. इसे जबरन लादा नहीं जा सकता. जिस देश में नागरिक देश के प्रति उदासीन हों तो देश के कर्णधारों को समझ लेना चाहिए कि कहीं कोई गलती है. लेकिन हमारे कर्णधार तो स्वयं देशप्रेम को नाटक समझते हैं. कितने ऐसे नेता हैं जो जब गद्दी पर नहीं होते, 15 अगस्त और 26 जनवरी को घर का झंडा फहराते हैं?

पश्चिमी भिखारी

पश्चिमी देशों में भी बेकारों और भिखारियों की संख्या बढ़ रही है और भारतीय समाचारदाता इन को देख कर बहुत आत्मिक सुख महसूस करते हैं. सदियों से भारत को मक्खियों की तरह भिनभिनाते भिखारियों का देश समझा जाता रहा है जो भारतीयों और विदेशियों को सदा बुरी तरह परेशान करते रहे हैं. समृद्ध भारतीय सदा ही उन भिखारियों को देश की प्रतिष्ठा पर धब्बा समझते रहे हैं

और कामना करते रहे हैं कि किसी तरह वे चुटकी बजाते ही अंतर्ध्यान हो जाएं.

जब पश्चिमी देशों में इन भिखारियों के बारे में पढ़ते हैं तो उन्हें लगता है कि चलो हमारे जैसी स्थिति वहां भी है, किंतु पश्चिमी देशों के भिखारी हमारे भिखारियों से अलग हैं. हमारे भिखारी यहां की जाति व्यवस्था और गरीबी के परिणाम हैं. पश्चिमी देशों के भिखारी काहिली, निकम्मेपन, नशे और बीमारियों के.

पश्चिमी देशों में काम की कोई कमी नहीं है. वाशिंगटन या लंदन जहां बेकार लोग कूड़े के ढेरों से खाना चुनते हैं, भीख मांगते हैं और रात को कड़ाके की ठंड में भूगर्भ रेल के प्लेटफार्मों पर सोते हैं, सैकड़ों दुकानों पर काम करने वालों को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन लगे होते हैं. वहां लोगों को नौकर नहीं मिलते तभी वे एशिया के देशों से सस्ते कर्मचारी आयात करते हैं.

ये भिखारी काम नहीं करना चाहते, इसलिए उन्हें भीख मांगनी पड़ती है. उन में से बहुत से तो टूटे घरों से आते हैं. यदि बचपन में मातापिता का तलाक हो जाए तो बच्चे घर में नया पिता या नई मां देख कर भाग खड़े होते हैं और अधूरी शिक्षा व रहने का स्थायी पता न होने के कारण किसी तरह का काम नहीं पा पाते.

सड़कों पर रहतेरहते ये शराब और नशे के आदी हो जाते हैं. अत: [illegible] करने की क्षमता ही नहीं रह जाती. भीख मांगने के अलावा इन के पास कुछ चारा नहीं रह जाता. उन की सूरत इतनी दयनीय और भद्दी हो जाती है कि कोई भी व्यक्ति नौकरी देने के बदले में उन्हें दो पौंड या डालर देना ज्यादा मानवीय व सरल काम समझता है.

भारत के भिखारी योजनाबद्ध तरीके से एक अच्छेखासे धंधे के तौर पर भीख मांगते हैं. यहां भिखारी वास्तव में ऊंचे वर्गों की सेवा करते हैं क्योंकि भीख देने वाला भीख दे कर एक मानव के नाते दूसरे मानव की सहायता नहीं करता बल्कि स्वर्ग में स्थान पाने के उद्देश्य से पुण्य कमाने की चेष्टा करता है.

पश्चिमी देशों में सरकारों के पास काफी पैसा है कि वे भिखारियों को नियमित खाना, कपड़ा या घर दे सकें. लेकिन वे ऐसा नहीं करते और न करना ही चाहिए. हर देश को नागरिक के मन में यही भावना भरनी चाहिए कि घर, कपड़ा और खाना मिलता नहीं कमाया जाता है. यदि ये मुफ्त मिलने लगे तो लोग बहुत से आलसी और निकम्मे जो अब किसी तरह का काम करते रहते हैं, काम करना बंद कर देंगे. इस तरह के लोगों को यह मालूम रहना चाहिए कि मुफ्त का खाना पाने के लिए उन्हें जानवरों की तरह रहना चाहिए और किसी भी देश को अपनी गली के कुत्तों के लिए परेशान होने की आवश्यकता नहीं है. वे सरकार के गठन का परिणाम नहीं, आलस्य और निकम्मेपन का है. ●

क्या आप किसी परिचित पुरुष के साथ घूमने जा रही हैं?

लेख • कमलेश झा

दरवाजे की घंटी बजने पर कृष्णा ने दरवाजा खोला. सामने नवविवाहिता बहन व जीजाजी को खड़ा देख कर वह पुलक उठी. शादी के बाद वे दूसरी या शायद तीसरी बार घर आए थे.

सारे दिन वह दीदी से बातें व जीजाजी से मजाक करती रही थी. रात को भी वे तीनों देर तक ताश खेलते रहे.

दूसरे दिन उन लोगों ने फिल्म देखने का ...म बनाया. मैटनी शो की टिकटें भी मंगा ...ई. लेकिन ऐन वक्त पर दीदी की तबीयत ...ड़ गई. कृष्णा बनेबनाए प्रोग्राम के इस प्रकार बिगड़ जाने पर भिन्ना उठी. 'यह दीदी की तबीयत भी अभी ही खराब होनी थी,' वह सोचने लगी. उस की मनोदशा भांप कर दीदी ने उन दोनों को ही फिल्म चले जाने की सलाह दी.

...माजिक परिवेश में व्या-...वहारिकता के धरातल पर ऐसे मौके ...अक्सर आते हैं जब महिला होने के ...ते किसी पुरुष के साथ घूमनेफिरने ...बाद आप को कटु अनुभव मिल ...ता है और आप ऐसे पुरुषों के ...थ घूमनेफिरने से तोबा कर लेती ...है. कभीकभी तो ऐसी भी स्थिति ...न हो जाती है कि आप अपने ...भविष्य की भी चिंता करने लगती ... आखिर क्या किया जाए ऐसे ...अवसरों पर?

कृष्णा जीजाजी के साथ पहली बार बाहर जा रही थी. मन में अजीब सा उत्साह था.

अब तक काफी आत्मीयता हो जाने के कारण कृष्णा हाल में उन के बगल में निस्संकोच बैठी थी. फिल्म शुरू हुई. कुछ समय पश्चात उसे अपने हाथ पर जीजाजी के हाथ का स्पर्श महसूस हुआ. उस ने अंधेरे में ही जीजाजी के चेहरे को देखने की कोशिश की. लेकिन उन्हें सामने देखता पा कर वह यह सोच कर कि शायद बेध्यानी में हाथ पड़ गया होगा पूर्ववत फिल्म देखने लगी. अचानक वह हाथ रेंगता हुआ उस के अधोअंगों पर आ गया
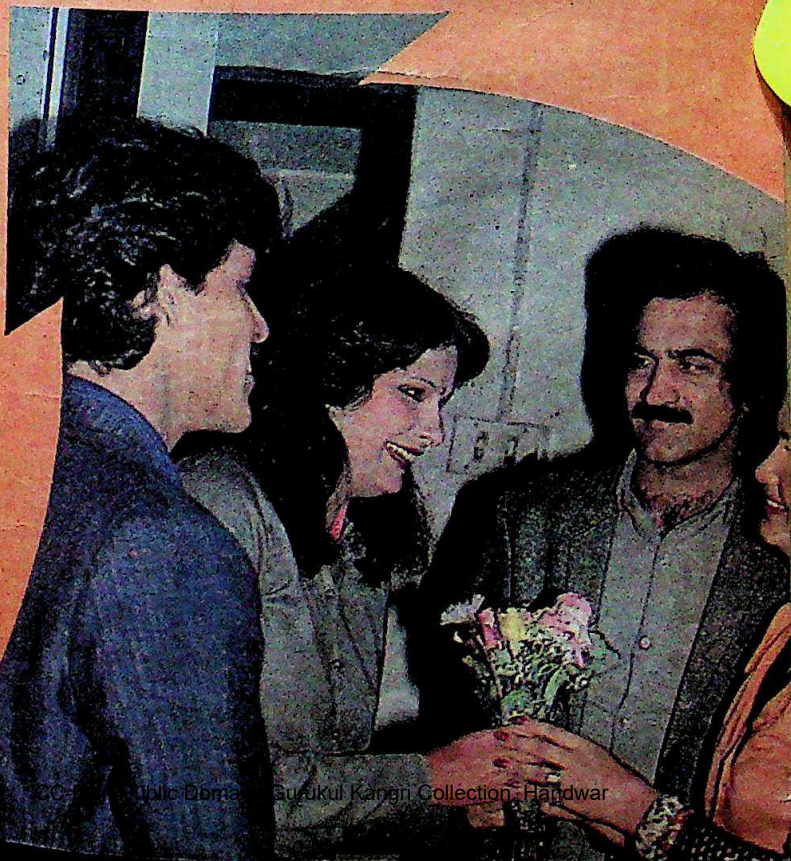
घूमनेफिरने के दौरान आप के परिचित व्यक्ति की नीयत आप को ले कर कब खराब हो जाए, कौन जानता है?

तो वह चौंकी. किंतु फिर भी वह दम साधे बैठी रही. उफ, अब तो उन्होंने हद ही कर दी. इस बार सीट के ऊपर रखा उन का हाथ कंधे से नीचे आने लगा.

कृष्णा तो ऐसी स्थिति से पहली ही बार दोचार हो रही थी. उसे बहुत घबराहट होने लगी. उस के हाथपैर कांपने लगे. आंखें भर आईं. उस ने ऐसी स्थिति और जीजाजी के इस प्रकार के व्यवहार की कल्पना ही नहीं की थी. पिक्चर खत्म होने पर उस का साहस न हुआ कि वह जीजाजी से नजरें मिला सके. वह सिर झुकाए जैसेतैसे घर पहुंची. घर पहुंचते ही वह बिस्तर पर औंधे मुंह गिर पड़ी. काफी देर से रोके हुए आंसू झरझर बह उठे.

इस तरह की घटना एक कृष्णा के साथ ही नहीं हुई है. प्रायः लड़कियां इस तरह की घटनाओं का शिकार हो कर मानसिक पीड़ा भोगती हैं. लेकिन क्या इस तरह की घटनाओं से घबरा कर कहीं आनाजाना या किसी से मिलनाजुलना बंद कर देना चाहिए? या क्या ऐसा कर पाना एक सामाजिक प्राणी के लिए संभव है? शायद, नहीं. लोगों से मिलेजुले बगैर हम समाज के साथ नहीं चल पाएंगे. हां, लोगों से मिलनेजुलने के मापदंड हमें निर्धारित करने पड़ेंगे.

कृष्णा की ही लीजिए. उस के सरल व्यवहार को जीजाजी ने गलत अर्थों में लिया. वह उसे सहज ही हासिल हो जाने वाली चीज समझ बैठे. उन को ज्यादा लिफ्ट दे देना कृष्णा की पहली गलती थी. किसी के साथ इतनी जल्दी घुलमिल जाने को भी स्वस्थ मानसिकता नहीं कह सकते.

अकसर देखा यह गया है कि एक व्यक्ति के दो चरित्र होते हैं. एक वह जो प्रत्यक्ष होता है, जिस की सब को जानकारी होती है. दूसरा वह जिस से अधिकतर लोग अनभिज्ञ होते हैं. प्रायः दोनों चरित्रों में विरोधाभास होता है. यानी जो चरित्र दृष्टिगोचर हो रहा है यदि वह साफसुथरा है तो उसी व्यक्ति का दूसरा चरित्र कल्पनातीत रूप से इतना घृणित भी हो सकता है जिसे वह व्यक्ति स्वयं किसी को दिखलाना नहीं चाहेगा.

ऊपर से कठोर व दंभी दिखने वाला व्यक्ति दूसरे रूप में सरल व नम्र स्वभाव का भी हो सकता है. कृष्णा ने जीजाजी की बातों व व्यवहार आदि से उन्हें सहज ही एक भरोसे के काबिल व्यक्ति मान लिया. लेकिन जब पिक्चर के दौरान उन की यह छवि भंग हुई तो वह काफी आहत हुई. इस के लिए आवश्यकता है व्यक्तित्व की परख करने की. यदि कृष्णा जीजाजी के नकारात्मक चरित्र को भी ध्यान में रखती तो संभवतः वह इतनी

...व नहीं होती बल्कि उन से वह सतर्क ...ती.

कृष्णा जैसी ही कहानी रीता की है. रीता एक कामकाजी महिला है. दफ्तर में पुरुष कर्मी उस से अकसर छेड़छाड़ करते रहते थे. कम उम्र के लोगों को तो छोड़िए, कभीकभी तो बुजुर्ग भी चुहलबाजी से बाज नहीं आते थे. ऐसा लगता था मानो एक मनचले गिरोह वहां काम कर रहा हो. रीता के पास बैठे बाबू श्यामनाथ अक्सर फाइल इस तरह बढ़ाते थे कि उन का हाथ उस के कंधे से छूता हुआ जाए. इसी तरह की और भी कई घटनाएं रीता व अन्य महिला कर्मचारियों के साथ प्रायः होती रहती थीं.

लोकलाज के भय से रीता कभी किसी से शिकायत भी नहीं कर पाती थी. और फिर काम भी तो उसे इन्हीं लोगों के बीच करना था. फिर एक बार शिकायत का उसे कटु अनुभव भी तो हो चुका था. इस रोजरोज की छेड़छाड़ से तंग आ कर एक बार उस ने बड़े साहब से शिकायत कर दी. लेकिन वह भी चुटकी लेते हुए बोले, "मिस रीता, ताली एक हाथ से नहीं बजती." उस दिन उस ने स्वयं को बहुत अपमानित महसूस किया था. अब तो उस ने खामोश रहना ही श्रेयस्कर समझ लिया था.

सतर्कता जरूरी

आमतौर पर ऐसी किसी भी स्थिति से बचने का उपाय यह बताया जाता है कि यदि आप किसी परिचित पुरुष के साथ कहीं जाने या फिल्म आदि देखने जाएं तो अपने साथ किसी जिम्मेदार व्यक्ति को ले जाएं. जिम्मेदार व्यक्ति से आशय मां या भाई से है. ऐसे किसी व्यक्ति के साथ होने पर उस परिचित की कोई अनुचित हरकत करने की हिम्मत नहीं होगी. किंतु इस उपाय को अमल में लाना व्यावहारिक नहीं है. एक कामकाजी महिला कहांकहां ऐसे जिम्मेदार व्यक्ति को अपने साथ रखेगी. क्या रीता व कृष्णा जैसी अन्य कामकाजी महिलाओं के लिए यह संभव होगा कि वे रोजरोज मां या भाई को अपने साथ लाएं?

इस प्रकार की घटनाओं में अपनेआप को मानसिक एवं शारीरिक शोषण से बचाने के लिए आवश्यक है कि स्वयं में आत्मविश्वास जागृत किया जाए. ऐसी किसी भी स्थिति में फंस जाने पर घबराएं नहीं. बल्कि परिस्थितियों का डट कर मुकाबला करें. अगर कृष्णा जीजाजी को मौन रह कर प्रोत्साहित न करती वरन उस की पहली हरकत पर ही प्रतिरोध करती तो शायद वह आगे बढ़ने की हिम्मत न कर पाते. आखिर प्रत्येक को अपनी इज्जत प्यारी होती है.

रीता भी यदि अन्य महिला कर्मियों के साथ संगठित हो कर इस शोषण का प्रतिरोध करती तो संभवतः पुरुष कर्मियों के हौसले पस्त हो जाते. इस के विपरीत उस ने अकेले ही बड़े साहब से शिकायत करने की कोशिश की और अपमानित हुई.

यहां इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि इन सब बातों के साथसाथ विपरीत यौनाकर्षण भी कार्य करता है. यह एक प्राकृतिक नियम है वरना और क्या कारण था जिस से कृष्णा सहज ही जीजाजी के साथ जाने को तैयार हो गई? या रीता ने बाबू श्यामनाथ को पहली बार में ही क्यों नहीं फटकार दिया? शायद वह भी विपरीत यौन के आकर्षण से प्रभावित रही हो.

ऐसी घटना हो जाने के पश्चात आत्मविवेचन अवश्य कीजिए. हो सकता है आप की कुछ गतिविधियां सामने वाले को उच्छृंखल होने को प्रेरित करती रही हों.

एक बात और ध्यान में रखें. यदि आप ऐसी किसी स्थिति में फिल्म या अन्यत्र जा रही हों तो पहले जहां जाना है उस जगह के बारे में जानकारी अवश्य हासिल कर लें. फिल्म जा रही हों तो उस के बारे में भी मालूम करें. कहीं ऐसा न हो कि आप 'सोनम मार्का' फिल्म देखने पहुंच जाएं और सारे शो में व फिल्म खत्म होने के बाद अपनी नजरें ही न उठा सकें. ●

उत्तराखंड

या कुमाऊं गढ़वाल को मिला कर एक पृथक उत्तरांचल राज्य की मांग अनेक समस्याएं पैदा करेगी. औपनिवेशिक शासन काल में कुमाऊं प्रोविंस कहलाता था. यहां प्रशासन की वही प्रणाली लागू थी जो तब असम में थी. अतः यदि पृथक उत्तरांचल राज्य बन जाए तो काशीपुर, हल्दवानी, टनकपुर, खटीमा, रुद्रपुर, विच्छा के मैदानी तराई भावर के लोग उत्तराखंड से पृथक हो जाएंगे. गढ़वाल भी अल्मोड़ा नैनीताल से पृथक होने की मांग करेगा. सीमांत के मार्च्छा और शौका लोग उसी प्रकार पृथक राज्य की मांग करेंगे

जैसे बोडो आज असम में बोडो लैंड की मांग कर रहे हैं.

मांग के कारण : आज सुदूर बदरीनाथ, गंगोत्री या पिथौरागढ़ के लोगों का कोई मामला जब विचारार्थ उच्च न्यायालय में जाता है तो उस की सुनवाई ... होती है. ब्रिटिश काल में कमिश्नर ... ही उच्च न्यायालय के ... पृथक महाधिवक्ता ...

उत्तरांचल राज्य की मांग

उत्तराखंड की अपनी कुछ समस्याएं हैं... राजनीतिज्ञों ने निरंतर ... के निवारण करने का प्रयास किया है ... इस मांग ... पृथक उत्तरांचल राज्य ... समस्या ... असली सवाल तो ... जाने के बाद भी ... सकेंगी और ... समृद्धि का ...

लेख

यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक'

मांग क्यों?
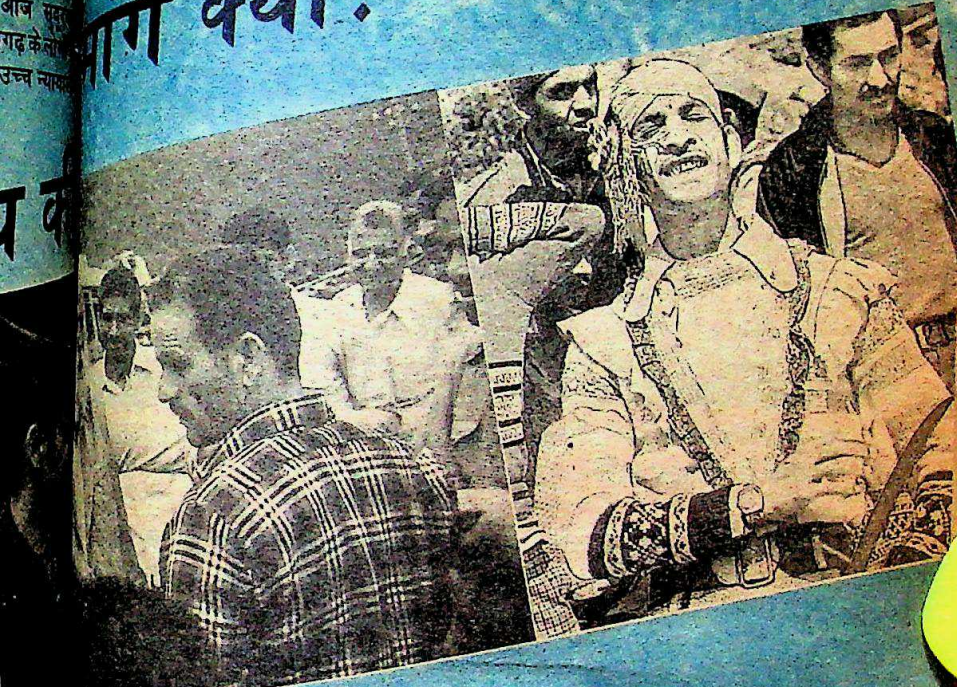
याएं हैं. अफसरशाहों और साओं में पलीता ही लगाने के निवासी क्षुब्ध हो कर करने लगे हैं. पर इस मांग के पूरा हो समस्याएं शांत हो सुखशांति और लगेंगे?

मत अधिकार प्राप्त थे.

प्रदेश का राज्यपाल भी प्रति वर्ष छह नैनीताल आ कर रहता था. उस का पूरा लय, कर्मचारी वर्ग, रसायन परीक्षक तथा अन्य विदेशी उच्च अधिकारी छह मास नैनीताल और छह मास इलाहाबाद रहते थे. इस प्रकार पहाड़ी लोगों को यह विश्वास था कि उन का भी पूरे संयुक्त प्रांत आगरा और अवध में एक महत्त्वपूर्ण स्थाई, योगदान है.

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भी यह प्रदेश आगरा और अवध दो प्रांतों में बंटा था. दोनों का एक ही राज्यपाल होता था. किंतु दोनों के अलगअलग हाईकोर्ट औपनिवैशिक काल से ही चले आ रहे थे. अवध के लिए हाईकोर्ट लखनऊ में और आगरा के लिए इलाहाबाद में था. स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत जब दोनों सूबों या प्रदेशों को मिला कर उत्तर प्रदेश राज्य बनाया गया तो पर्वतीय जिलों का हाईकोर्ट इलाहाबाद ही हो गया.

आज की स्थिति : पं. गोविंद वल्लभ पंत ने असम के प्रशासनिक नियमों को रद
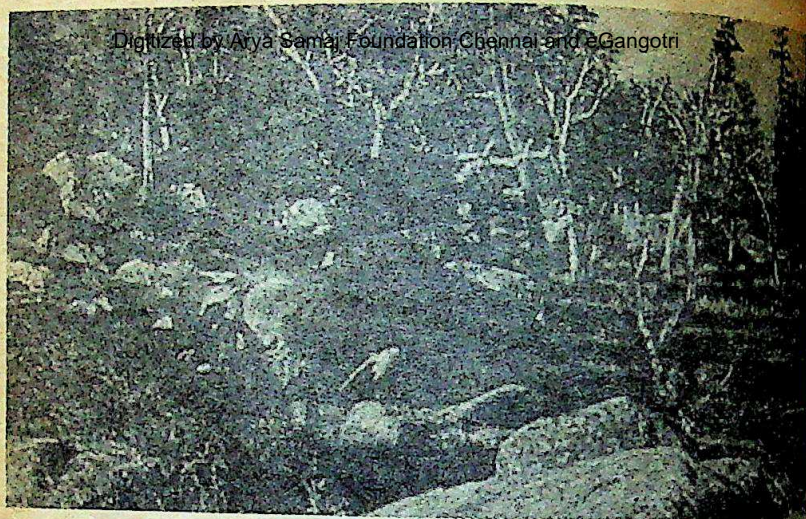
उत्तराखंड की पहाड़ियों और हरेभरे वन : प्रकृति की समृद्धता के बावजूद यहां के निवासी हालबेहाल क्यों?

करा कर कुमाऊं में राजस्व के वही नियम लागू कराए जो पूरे प्रदेश में लागू होते थे. स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत पूरे देश की शासन व्यवस्था इस पहाड़ी भू भाग में लागू हो गई है सिवा एक पुलिस व्यवस्था के जो आज भी पटवारी के पास है.

कमिश्नर को मिले हुए अधिकार भी केवल ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़ कर शेष विभागाध्यक्षों को मिल गए हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पटवारी को पुलिस थानेदार के ही नहीं, उस से भी बड़े पुलिस थाना प्रभारी निरीक्षक के अधिकार मिले हुए हैं. वह हत्या, डकैती जैसे जघन्य अपराधों की छानबीन करता है और ऐसे अपराधों के अभियोजन के लिए भी न्यायालयों में जाता है. इस से ग्रामीण क्षेत्रों में बदमाशों और गुंडों का आतंक छाया हुआ है. किसी हत्या के मामले में भी पटवारी समय पर घटनास्थल पर नहीं पहुंच पाता है न उस के साथ कोई सशस्त्र पुलिस सिपाही होता है और न कोई सहायक.

अपवर्तीय शासक : शहरी क्षेत्रों में पुलिस अवश्य है किंतु वहां पेयजल, सड़कों की सफाई तथा रोशनी का प्रबंध लखनऊ से होता है. पर्वतीय कुमाऊं जल संस्थान का मुख्य कार्यालय लखनऊ में है. हाईकोर्ट और राजस्व बोर्ड दोनों के लिए वादी को इलाहाबाद जाना पड़ता है.

पर्वतीय विकास विभाग का मुख्यालय लखनऊ में ही है. इस विभाग के कैबिनेट मंत्री गत वर्ष नवंबर तक मैदानी क्षेत्र के ही रहने वाले थे. उन को पर्वतीय क्षेत्र के इतिहास, भूगोल और रहनसहन की कोई जानकारी नहीं थी. मुख्य मंत्री नारायणदत्त तिवारी या (दिवं.) हेमवती नंदन बहुगुणा यद्यपि पहाड़ी क्षेत्र के थे किंतु नारायणदत्त तिवारी पर यह आरोप लगाया जाता था कि वह पूरे पर्वतीय क्षेत्र के लिए मिले विकास अनुदान को केवल अपने चुनाव क्षेत्र काशीपुर पर ही खर्च कर रहे हैं. लोग यह भी कहने लगे थे कि काशीपुर को पृथक जिला बना कर मुरादाबाद कमिश्नरी में मिला दिया जाना चाहिए ताकि पर्वतीय क्षेत्र के लिए मिला हुआ रुपया पहाड़ी भूभाग में ही व्यय हो सके.

हेमवती नंदन बहुगुणा के लिए तो यह कहा जाता था कि वह इलाहाबाद से चुनाव लड़ते हैं और उन को पहाड़ी भूभाग के बारे में न विशेष जानकारी है और न वह कभी पहाड़ के प्रति चिंतित ही रहते हैं. उन्होंने अपने
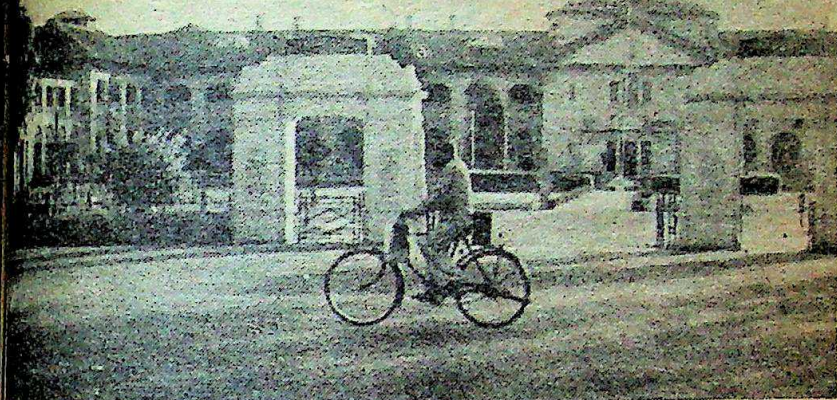
उच्च न्यायालय इलाहाबाद : पर्वतीय जिले के लोगों को न्याय मांगने के लिए भी लंबा रास्ता तय करना पड़ता है.

पहली पत्नी को जो गढ़वाल की निवासी थी त्याग रखा था और इलाहाबाद में ही अपने विद्यार्थी काल से दूसरी शादी कर ली थी. एक बार तो लोग उन की परित्यक्ता पत्नी को चुनाव के समय उन के विरुद्ध बोलने के लिए इलाहाबाद भी ले गए थे. अंतिम चुनाव में गढ़वाल से न खड़े होने के कारण भी लोग उन से कुपित थे.

पं. गोबिंद वल्लभ पंत यद्यपि इस प्रदेश के प्रथम मुख्य मंत्री थे किंतु वह भी एक बार नैनीताल में जिला परिषद चुनाव में पराजित हो जाने पर फिर कभी इस क्षेत्र में चुनाव नहीं लड़े. जैसा कि उन के सहपाठी मुकुंदी लाल बैरिस्टर का कथन है, "वह लंबी धोती यानी उच्च वर्ग के लोगों को ही प्रश्रय देते थे. उन के समय में संसदीय सीट के लिए कांग्रेस का टिकट स्वराज्य के सदा विरोधी एक रायबहादुर को तीन बार मिलता रहा.

"स्वयं पंतजी भी बहुत बाद में कांग्रेस के गांधीवादी आंदोलन में आए. सन 1921 के आंदोलन में जिन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने भाग लिया था उन की कभी कोई पूछ उन के शासनकाल में नहीं हुई. स्वयं वह ब्रिटिशकालीन कमिश्नर कुमाऊं के दाएं हाथ सदर अमीन के नाती थे. इस प्रकार वह उस उच्च वर्ग के थे जो लांब धोती कहलाते हैं. इसी लिए वह उन्हीं ब्रिटिशकालीन रायबहादुरों और रायहबों की संतानों से घिरे रहते थे तथा उन्हीं का हितचिंतन करते थे. पहाड़ की ग्रामीण जनता का यह आक्षेप बहुत कुछ सही था."

आज पहाड़ का बहुसंख्यक सर्वसाधारण (नान धोती) वर्ग न तो पृथक उत्तराखंड का समर्थक है, न पर्वतीय भूभाग के लिए किसी प्रादेशिक या केंद्रीय अनुदान की उस को आवश्यकता है. वह तो चाहता है कि उसे अपने उन प्राकृतिक स्रोतों का पानी पीने को मिले और सैकड़ों वर्षों से तिब्बत तथा मध्य एशिया के साथ होने वाले व्यापार के हिमदर्रों को खोल दिया जाए ताकि स्थिति डेढ़ सौ वर्ष पहले जैसी हो जाए, जब मिलम कुमाऊं का सब से बड़ा समृद्ध गांव था. कैलास मानसरोवर की यात्रा खुल जाए तो भारत के ही नहीं विदेशी पर्यटक भी इतनी बड़ी संख्या में कुमाऊं के सीमांत क्षेत्र में आनेजाने लगेंगे कि यह प्रदेश का सब से समृद्ध क्षेत्र हो जाएगा.

आज स्थिति ऐसी है कि पर्यटन विभाग
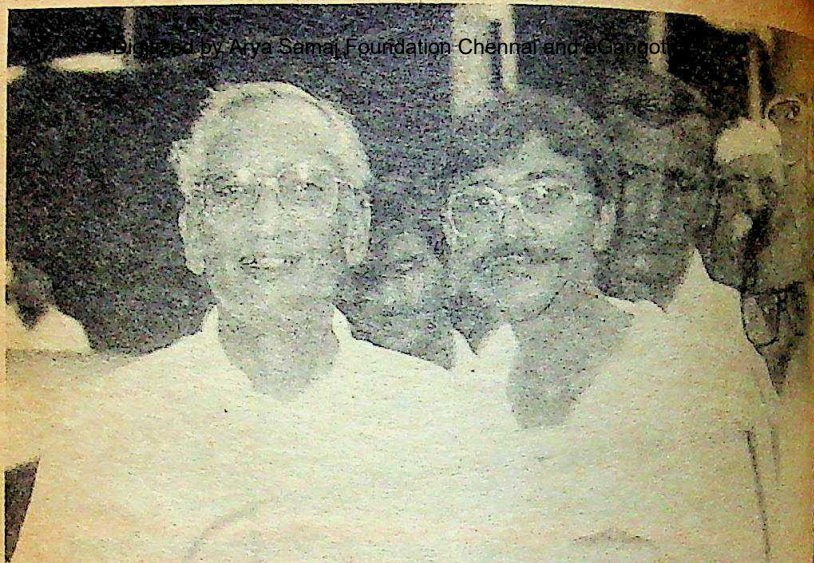
दिवंगत नेता हेमवती नंदन बहुगुणा : क्या पहाड़ी भूभाग की समस्याओं के बारे में कुछ विशेष जानकारी थी?

के अतिथि गृहों और दूरस्थ डाक बंगलों में भी पीने के लिए पर्यटक को 12 या 15 रुपए में पानी की बोतल खरीदनी पड़ती है.

हत्छीना कौसानी (अल्मोड़ा) में एक पानी का सोता है जिस के जल के कलश 10 किलोमीटर दूर कत्थूरी राजधानी गरुड़ (बैजनाथ) तक प्रतिदिन हाथोहाथ राजमहल में पहुंचाए जाते थे. आज कौसानी कुमाऊं का सब से सुंदर पर्यटन स्थल है. वहां विदेशी पर्यटक आते हैं तो उन्हें बाहर से आयातित 'मिनरल वाटर' अपने साथ लाना पड़ता है. गांव पंचायत के लोग जल को बोतलों में भरने का व्यवसाय करना चाहते थे किंतु उन को इस की अनुमति नहीं मिली. यह कहा गया कि गांवों के सभी प्राकृतिक जलाशय अब जल संस्थान की संपत्ति हैं इसलिए यह अनुमति लखनऊ से मिलेगी.

नैनीताल की नगरपालिका 1970 के दशक तक उत्तर प्रदेश की सब से समृद्ध और आत्मनिर्भर नगरपालिका थी. यहां चारों ओर खड़े पहाड़ों के दोनों ओर स्थानस्थान पर पानी के सोते और झरने हैं. तल्लीताल में दो स्थानों पर गंधक मिश्रित जल के सोते थे. ब्रिटिशकालीन गजेटियरों में कुछ झरनों और सोतों के जल की औषधीय गुणवत्ता का उल्लेख है. आवश्यकता है इन सोतों और झरनों के जल की समयसमय पर जांच कर के यह प्रमाणित करने की कि वह स्वास्थ्य के लिए अहितकर नहीं हैं ताकि पर्यटकों को आश्वस्त किया जा सके कि वह आयातित 'मिनरल वाटर' से गुणवत्ता और शुद्धता में किसी प्रकार कम नहीं है. जल के प्रमाणीकरण के सभी साधन उपलब्ध हैं.

नैनीताल सरोवर से 10 किलोमीटर दूर पटवाडोगर के समतल भूभाग में चीड़ के घने जंगल के बीच लगभग सौ वर्ष पूर्व स्थापित वैक्सीन संस्थान है. यह लगभग 150 एकड़ भूमि पर स्थित है. यह पहले चेचक के टीके बनाने का अंतर्राष्ट्रीय केंद्र था. चेचक के उन्मूलन के उपरांत अब यहां पर हड़क (पागल कुत्ते के काटने से उत्पन्न जलातंक) या आलर्क रोग का टीका बन रहा है. इस भूमि और संस्थान को पर्वतीय क्षेत्र में जल प्रदूषण से होने वाले आम रोगों के अनुसंधान केंद्र का
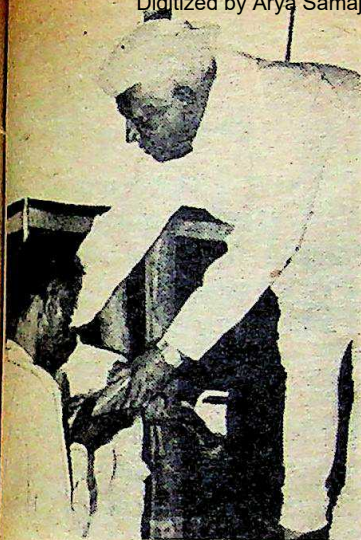
उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य मंत्री नारायण दत्त तिवारी : सिर्फ अपने चुनाव क्षेत्र के विकास के लिए चिंतित.

रूप दिया जा सकता है. साथ ही यह संस्थान हर पर्वतीय क्षेत्रों से आए प्राकृतिक जलस्रोतों के पेयजल के नमूनों का परीक्षण केंद्र भी बन सकता है.

आवास और सरकारी भवन

पर्वतीय जिलों में 99% विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर के महाविद्यालय शासकीय हैं किंतु अधिकांश के पास भवन नहीं हैं. भवनों के लिए सरकारी अनुदान वर्षों से रुके पड़े हैं. जितने भी भवन बन रहे हैं उन के लिए ईंटों का प्रयोग हो रहा है और ईंटें रामपुर या बरेली जिलों के भट्टों से ही आ रही हैं. जबकि यहां सुंदर कटाऊ पत्थर की खानें प्रायः प्रत्येक गांव में हैं. सभी प्राचीन मंदिर, आवास और सरकारी भवन सदियों से इसी पत्थर के ही बने हैं. प्रायः हर गांव में ऐसी परतदार चट्टानें हैं जहां से ग्वालियर या मिर्जापुर के पत्थरों से भी आकार में बड़ी और सपाट चिकनी पट्टियां निकाली जाती थीं. वन अधिनियम बनने से अब ये खानें बंद कर दी गईं.

ईंटों के प्रयोग से जहां एक ओर पहाड़ के राज, मिस्त्री, मूर्तिकार और दक्ष शिल्पी बेकार हो गए हैं वहीं दूसरी ओर ईंट के भट्टों के कारण बरेली और रामपुर जिलों में प्रदूषण फैल रहा है. एकएक ईंट बागेश्वर अथवा अल्मोड़ा नैनीताल नगरों में दोढाई रुपए में पड़ती है. उन को निर्माण स्थल तक ले जाने के लिए मजदूर लगाना पड़ता है जो आजकल दुर्लभ और महंगा है. इसी लिए स्कूल और कालिजों के भवन नहीं बन पा रहे हैं. ईंटें न तो इतनी टिकाऊ हो सकती हैं और न ही नैनीताल जैसी नम जलवायु में ईंट के मकान टिकाऊ हो सकते हैं. इस प्रकार सरकारी धन का अपव्यय प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है.

नैनीताल में स्थिति यह है कि जो लोग कोई पक्का टिकाऊ मकान बनाना चाहते हैं वे ग्वालियर से पत्थर ला रहे हैं. ऐसा एक तीनतारा होटल मल्लीताल में बन भी गया है. उस के बनाने में तीनगुना लागत आई है. जब ग्वालियर में या दिल्ली में खानों से पत्थर निकाल कर उपयोग में आता है तो भला इन पहाड़ों पर उस का उपयोग करने की अनुमति क्यों नहीं दी जाती? यह यहां के हर ग्रामीण की शिकायत है.

नैनीताल के समीप ज्योली कोट के नाले में संगमरमर और संगमूसा का पत्थर मिलता है. इस का उपयोग नैनीताल के राजभवन में अंगीठियों की कार्निस बनाने में हुआ है. नैनीताल हल्दवानी मोटर मार्ग पर सड़क के किनारे ही ऐसी बड़ीबड़ी शिलाएं प्रतिवर्ष सड़क को ध्वस्त करती हैं जो काट कर निर्माण कार्य में लगाई जा सकती हैं. यह नहीं कि इन शिलाओं का उपयोग संभव न हो. थोड़े दिन के लिए नैनीताल की ओर आने वाला राजमार्ग भीमताल भवाली से कर दिया जाए तो इस प्रकार के निर्माण योग्य पत्थर का सुगमता से उपयोग हो सकता है.

भीमताल से ककोटक पांडे गांव की ओर जाने वाले मोटर मार्ग के मोड़ों के मध्य हरे पत्थर के विशाल ढेर हैं जो बेकार पड़े हैं. यहां न कोई जंगल है और न कोई पेड़पौधे. वन अधिनियम के आड़े आने का प्रश्न ही नहीं उठता. इन चट्टानों का उपयोग करने के लिए

पांडे गांव के कुछ लोगों ने आवेदन भी किया था किंतु परिणाम कुछ नहीं निकला.

निष्कर्षतः पर्वतीय जिलों की समस्या का समाधान पृथक पर्वतीय राज्य की मांग से नहीं सत्ता के विकेंद्रीकरण से ही संभव है.

पंजाब, सिंध और गंगायमुना के मैदानों में प्रागैतिहासिक काल से 19वीं सदी तक विदेशी आक्रमणों के कारण भाग कर हिमालय की शरण में आई विभिन्न जातियां अपने साथ जो संस्कृतियां लाईं, उन का यह संगम समग्र मानवता की अनमोल विरासत है.

आज बड़ेबड़े राष्ट्र एकदूसरे से मिलजुल कर पारस्परिक सौहार्द से अपना अस्तित्व बनाए रखने को विवश हैं तो केवल 50-55 लाख की जनसंख्या के कुमाऊं गढ़वाल अंचल को एक पृथक आत्मनिर्भर राज्य बना लेना बच्चों का खेल नहीं है. पर्वतीय क्षेत्र के बुद्धिजीवी लोगों द्वारा गत दशकों से चलाया जा रहा पृथक उत्तराखंड का आंदोलन उन की प्रतिभा और समाज सेवा की भावना के लिए उचित अवसर न मिलने की हताशा का परिणाम है.

आज तो राष्ट्रवाद एक संकीर्ण प्रवृत्ति का द्योतक हो गया है. वियतनाम के दोनों भूभाग पृथक हो गए थे. उन को एक करने में अमरीका को पराजय का सामना करना पड़ा. एक बार देश के दो टुकड़े हो जाने पर फिर दोनों को मिलाने में भी अनेक समस्याएं उठ खड़ी होती हैं. दोनों कोरिया भी अब संयुक्त हो रहे हैं. एकदम विपरीत राजनीतिक दृष्टिकोण के पूर्वी और पश्चिमी जरमनी तक भी एक हो गए तो भला उत्तर प्रदेश के हिमालय के आठ जिले कैसे अपना पृथक अस्तित्व स्थापित कर सकते हैं?

भेदभाव से अछूती पर्वतीय संस्कृति

हिमालय तो समूचे भारत का पुण्य स्थल है. भारत के किसी भी प्रदेश में पर्वतीय व्यक्ति क्षेत्रीयता की संकीर्णता से मुक्त धर्म निरपेक्ष तथा पक्षपात व स्वार्थरहित माना जाता है. पूरे भारत में उसे हिमालय की ऋषिमुनियों की तपोभूमि का निवासी होने से बड़ा आदर और स्नेह मिलता है. उसे सरलता, ईमानदारी और सहनशीलता का प्रतीक माना जाता है.

सीमा विवाद का डर

पृथक उत्तराखंड राज्य बन जाने से नदियों, जलस्रोतों के अधिकार और प्रादेशिक सीमाओं के निर्धारण का कुचक्र क्या फिर से आरंभ नहीं हो जाएगा जैसा कि दक्षिण भारत में कर्नाटक, आंध्र और महाराष्ट्र में चल रहा है और उत्तर भारत के पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान में चल रहा है. पूर्वोत्तर राज्यों में भी असम, नागालैंड, मणिपुर इसी प्रकार के सीमा विवाद में उलझे हैं. अतः कुमाऊं संस्कृति परिषद निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत करती है :

- जिस प्रकार भारतीय सिखों को पाकिस्तान में स्थित तीर्थ स्थलों और गुरुद्वारों में जाने की अनुमति मिलती रहती है उसी प्रकार हिंदुओं को कैलास मानसरोवर जाने की अनुमति भारत सरकार चीन सरकार से बिना पासपोर्ट वीसा के यथाशीघ्र दिलाए. इस से सीमांतवासियों को यात्रियों को पुरानी चट्टियों में टिकाने, उन को ढोने, भारत सीमा के भीतर उन की परिवहन व्यवस्था करने में रोजगार मिलेगा.
- भारत तिब्बत सीमा पर जिन 13 हिमदर्रों के रास्ते से सदियों से सीमांत व्यापारी मध्य और पश्चिम एशिया से व्यापार करते आए थे उन को नेहरूजी की अदूरदर्शिता के कारण 1961 में बंद कर दिया गया था. इन्हें यथाशीघ्र खोला जाए तथा जिन सीमांतवासी व्यापारियों की चलअचल संपत्ति चीन सरकार ने 1961 में हड़प ली थी वह उन्हें वापस दिलाई जाए. नेपाल व तिब्बत में उन्हें जो निर्बाध व्यापार करने के परंपरागत अधिकार रहे हैं उन्हें पुनः दिलाया जाए. नेपाल में तो ये अधिकार आज भी बरकरार हैं.
- कुमाऊं के पर्वतीय भूभाग में ईंटों का आयात बंद हो तथा सभी नए सरकारी, निजी एवं सार्वजनिक भवन पत्थर या रोड़ी, बजरी, सीमेंट के ब्लाकों से बनें.

ANNOUNCES

AN EXCITING SPECIAL ISSUE ON HEALTH, SEX & STRESS

MAY (FIRST) 1990

Have you ever had nagging doubts about certain aspects of sex or health and wished you knew a way to set them at rest, without feeling embarrassed?

Well! Here's your chance. Just get hold of this *ALIVE* "HEALTH SEX & STRESS" SPECIAL ISSUE.

It brings to you answers to all those health and sex problems that you have been itching to know about but never dared to ask.

If you have the queries, this Special will provide the solutions...

SOME OF THE TOPICS COVERED

• HOW TO KEEP FIT • DISEASES AND AILMENTS COMMON TO MEN • GOOD SEX LIFE • PRECAUTIONS • STD & AIDS • FOOD • EXERCISE • DAILY ROUTINE • HOW TO KEEP OFF AND MANAGE STRESS • SLEEP • PLAY • RECREATION • MENTAL EQUILIBRIUM • RIGHT THINKING • INTERVIEWS WITH PROMINENT SPECIALISTS IN MEDICINE AND SURGERY

• INFORMATIVE
• INSPIRING
• INCISIVE

HELPS YOU LIVE A BETTER LIFE

RESERVE YOUR COPY TODAY

जब भी कार्यालयों में किसी के दौरे पर जाने की बात की जाती है तो मतलब यही होता है कि वह अपने शहर के बाहर, अपने कार्यालय के काम से या निरीक्षण के लिए क्षेत्रीय कार्यालय जा रहा है. इस दौरे का अभिप्राय होता है कि क्षेत्रीय कार्यालय के काम को देखा जाए कि वह उचित ढंग से चल रहा है या नहीं. आवश्यकता हो तो कार्यस्थल पर ही उचित निर्देश दे दिए जाएं व कार्यकुशलता बढ़ाने के उपाय सुझाए जाएं.

पर अपने कार्यालय में इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता. जब कि आवश्यकता वहां भी होती है. यदि मुख्य कार्यालय दक्ष होगा तो उस का अनुकूल प्रभाव क्षेत्रीय कार्यालय की दक्षता पर भी पड़ेगा. यह बिडंबना ही है कि अपने कार्यालय की कुशलता पर ध्यान न दे कर मुख्य कार्यालय के अधिकारी क्षेत्रीय कार्यालयों की कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए दौरा करते रहते हैं. उन की नाक के नीचे क्या हो रहा है इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता. वैसे भी तो 'चिराग तले अंधेरा' होता है.

आवश्यक है कि छोटाबड़ा हर अधिकारी अपने कार्यक्षेत्र का दौरा करे. इस दौरे का मतलब है कि अपनी कुरसी छोड़ कर अपने कार्यालय में जाए, अपने कर्मचारियों से मिले, उन की समस्याओं का अध्ययन कर वहीं तत्काल निर्णय दे.

40-50 साल पहले यह आम बात थी. अधिकांश अधिकारी कार्यालय या कारखाने में आने के बाद अपने कार्यक्षेत्र का दौरा करते थे, कुछ प्रबंधक तो इस का कड़ाई से पालन करते थे. वे स्वयं तो कार्यालय में घूमते थे पर साथ ही मातहत अधिकारियों को प्रेरित ही नहीं, मजबूर भी करते थे कि वे कार्यालय में आने के बाद कार्यक्षेत्र का दौरा करें. परिणामस्वरूप सारे कर्मचारी सावधान रहते

यदि आप अपने संस्थान के जिम्मेदार अधिकारी हैं तो आप की गलतसही सभी गतिविधियों का आप के संस्थान की कार्य क्षमता पर प्रभाव पड़ता है. इस लिए एक जिम्मेदार अधिकारी का फर्ज पूरा करने के लिए आप अपनी पूरी क्षमता से दौरा प्रारंभ कर दीजिए. इस से न सिर्फ आप को अपने संस्थान की हर गतिविधियों का पता चल सकेगा, वरन आप अपने मातहत के बीच में लोकप्रिय भी हो जाएंगे.

लेख • कि.स. भटनागर
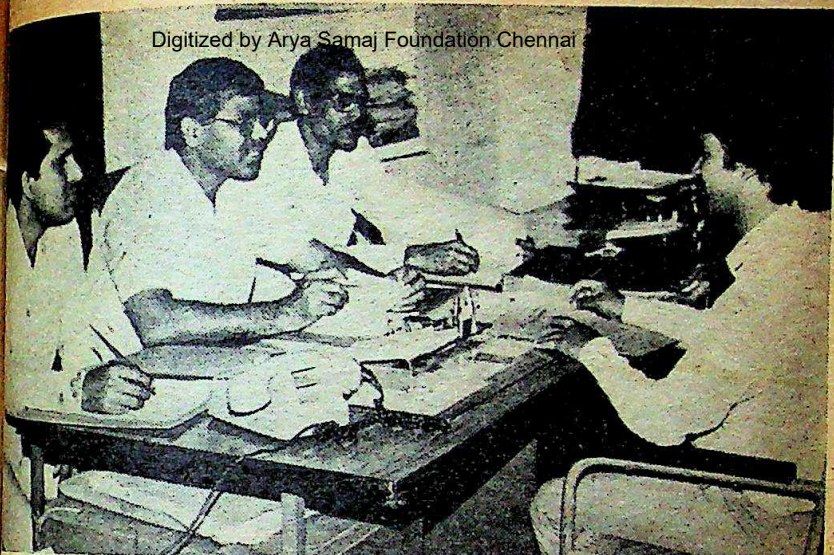
दौरे के समय आप अपने कर्मचारियों के साथ बैठ कर उन की समस्याएं सुन सकते हैं और जरूरी होने पर उन्हें तुरंत दूर भी कर सकते हैं.

...न समय से कार्यालय आते थे.

अधिकारियों का यह दौरा दोषदर्शन के ...ए ही नहीं होता था. दौरे के समय वे श्रमिकों ... कार्य करने के ढंग, सफाई, सुविधाओं आदि ... ध्यान रखते थे. यदि कोई श्रमिक अच्छा ...म करता दिखाई देता था तो उस की पीठ ...थपा कर सराहना करते थे. यदि ठीक नहीं ...र रहा होता तो उसे ठीक तरीका बतलाते थे. यदि श्रमिक एक बार में न समझता तो बारबार समझाते. जब तक कोई खतरनाक स्थिति न हो, जैसे पैट्रोल टैंक के पास बीड़ी पीना आदि, वे सार्वजनिक रूप से नाराज नहीं होते थे. परिणामस्वरूप उन्हें अपने श्रमिकों से सहयोग व सम्मान मिलता था.

दौरे के दौरान सुझाव देने वाले श्रमिकों का स्वागत करते थे. उन की कठिनाइयों को
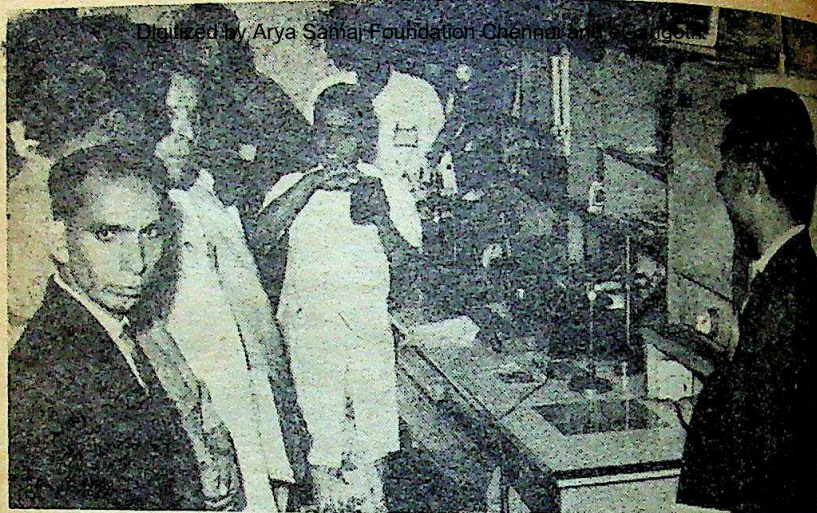
संस्थान चाहे जिस भी तरह का हो, अधिकारी के समय समय के दौरे से उस की कार्यकुशलता और क्षमता बढ़ जाती है.

सुन कर वहीं लिखित या मौखिक आदेश देते थे. प्रोत्साहन देने व प्रशंसा करने के अवसर नहीं चूकते थे. श्रमिक उन से खुल कर व प्रसन्नता से बात करते थे. अतः उत्पादन का स्तर अच्छा रहता था. उन्हें मालूम रहता था कि साहब कल पुनः आएंगे और तत्काल समस्या का समाधान करेंगे. अतः व्यर्थ ही अपना व उन का समय नष्ट करने उन के कार्यालय की ओर नहीं भागते थे.

किंतु यह नहीं कि सारे प्रबंधक ऐसे ही होते थे. कुछ ऐसे भी होते थे जिन का काम दोषदर्शन ही होता था. वे निकलते ही रोब गालिब करने के लिए थे. चलतेफिरते जिस किसी को डांट देते थे. श्रमिकों को हेय दृष्टि से देखते हुए उन के काम में दोष निकाल कर कमरे में आ बैठना ही उन का मुख्य काम रहता था. उन के कमरे से निकलते ही खबर संपूर्ण कार्यालय या कारखाने में फैल जाती. कर्मचारी भयभीत हो काम में लग जाते. यदि दौरे के दौरान कोई सुझाव देने की हिम्मत जुटाता तो उस की खैर नहीं रहती थी. इस तरह के अधिकारी अधीनस्थ कर्मचारियों में घोर असंतोष फैला कर अपने लिए वातावरण बिगाड़ लेते थे. उत्पादन गिरता था, देरसवेर कार्यालय से अलग कर दिए जाते थे.

कुछ ऐसे भी होते थे जो अपनी कुरसी से चिपक कर बैठते थे. वे दूसरों की आंखों से देखते थे, दूसरों के कानों से सुनते थे और उसी आधार पर निर्णय लेते थे. अतः अधिकांश निर्णय गलत होते थे, जिस से असंतोष फैलता था. कर्मचारी कष्ट निवारण हेतु उन के कमरे की ओर भागते थे या यूनियन के पास दुखड़ा रोते थे. फिर यूनियन वाले समस्या का समाधान करवाते थे. वे अधिकारी भी अधिक समय तक कुरसी पर नहीं रह पाते थे. जन संपर्क के अभाव व संवादहीनता की स्थिति में प्रबंधव्यवस्था लड़खड़ा जाती थी.

आज भी इन्हीं तीन तरह के प्रबंध पाए जाते हैं. अंतर केवल इतना है कि यदि पहले प्रथम वर्ग के प्रबंधकों का बाहुल्य था तो आज कुरसी से चिपकने वाले तीसरे वर्ग का बाहुल्य है. बीच की श्रेणी लगभग उसी अनुपात में है. इसी कारण उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ा है. अधिक आदमी होने पर भी उत्पादन उस अनुपात में नहीं बढ़ रहा. आवश्यकता से अधिक कर्मचारी रहने से उन के प्रबंध में समय बरबाद होता है. दूसरे उन के पास फालतू समय होने से अपना व दूसरों

समय खराब करते हैं.

कार्यकुशलता व उत्पादन बढ़ाने के लिए अपने कार्य क्षेत्र का दौरा प्रतिदिन सुबह दिन ढले करना आवश्यक है. यदि यह दौरा नियमित रूप से अच्छी भावना से किया जाए कर्मचारी पसंद करते हैं. यह मान्यता गलत कि कर्मचारी नहीं चाहते कि अधिकारी उन शाखा या अनुभाग में आएं. यदि अधिकारी गलती निकालने, चीखनेचिल्लाने और अपमान करने जाएगा तो निश्चय ही कोई पसंद नहीं करेगा. पर केवल कर्मचारियों या श्रमिकों के चाहने न चाहने से अधिकारी अपने कार्यक्षेत्र का दौरा करने के अधिकार को नहीं छोड़ सकता. दौरे और उत्पादन वृद्धि का चोलीदामन का साथ है.

यदि दौरा एक आनंददायक, शिक्षाप्रद विचारों के परस्पर आदानप्रदान का जरिया है तो इसे कौन पसंद नहीं करेगा. ऐसे रवैए से श्रमिकों के मन में अधिकारियों के प्रति सम्मान ही पैदा होगा.

अपने कार्यक्षेत्र का दौरा तो करना ही है, इस में दो मत हो ही नहीं सकते. हां इस दौरे को उपयोगी बनाना अधिकारी के अपने हाथ में होता है. इस तरह के दौरे में समस्याओं से निबटने के लिए दो तरीके अपनाए जाते हैं.

एक वर्ग तो संतुलन खो कर बुराभला कह कर रोब झाड़ कर वापस आ जाता है. दूसरे वर्ग के अधिकारी समस्या को सहानुभूति व शांति से सुनते हैं और उस पर विचार कर उसे निबटाते हैं.

अकसर ही जब अधिकारी अपने दौरे में किसी कर्मचारी को पुस्तक पढ़ते या ताश खेलते देखता है तो अपना धैर्य खो देता है. अपशब्द कहते हुए पुस्तक छीन लेता है, ताश फेंक देता है. उस तरीके से तनाव बढ़ता है. दबाव बढ़ता है. अपमानित व असंतुष्ट कर्मचारियों की संख्या बढ़ती है. उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ता है.

कार्यक्षेत्र के दौरे का मकसद होता है कार्यकुशलता बढ़े. कर्मचारी संतुष्ट रहे, शांत व सुखद वातावरण रहे. परिणामस्वरूप उत्पादन बढ़े. कर्मचारियों व श्रमिकों के अहं

आज भी पहले जैसे तीन तरह के प्रबंध पाए जाते हैं. अंतर केवल इतना है कि यदि पहले प्रथम वर्ग के प्रबंधकों का बाहुल्य था तो आज कुरसी से चिपकने वाले तीसरे वर्ग का बाहुल्य है. यह बीच वाली श्रेणी लगभग उसी अनुपात में है. इसी कारण उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ा है.

व आत्मसम्मान को चोट पहुंचाना दौरे का उद्देश्य नहीं होता. सही तरीका तो है, 'सांप मरे और लाठी न टूटे.' जब भी कोई कर्मचारी गलत काम करता दिखाई दे तो अधिकारी को चाहिए कि वह उस के इतने पास चला जाए कि उसे एहसास हो जाए कि उस का गलत काम देख लिया गया है. कुछ कहने की जरूरत नहीं है. अपना संतुलन तो खोना ही नहीं चाहिए.

अधिकांश मामलों में कर्मचारी बात समझ लेगा क्योंकि उसे मालूम है कि कल अधिकारी पुनः आएगा. अतः गलत काम पर अंकुश लगेगा. यदि उस ने स्वयं नहीं देखा तो उस के साथी बतला देंगे कि उस का गलत काम देख लिया गया है. यदि दोतीन बार की इस परोक्ष चेतावनी का असर नहीं होता है तो कड़े कदम की आवश्यकता होगी. फिर भी बिना झुंझलाए या अपशब्द कहे जो भी उचित हो करना चाहिए. याद रखने की बात यह है कि कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक रूप से अपमान नहीं सह सकता.

अपने कार्यक्षेत्र का दौरा करना दुधारी तलवार की तरह है. यदि दौरा थोड़ी सूझबूझ से किया जाए तो इस से प्यार व सम्मान मिलता है. सब से बड़ा लाभ यह होता है कि अधिकारी को ... पता चल जाता है कि

कार्यक्षेत्र में कहां क्या हो रहा है. यदि कोई गलत गतिविधि पनप रही है तो समय रहते उपचार किया जा सकता है.

दौरा नियमित रूप से किया जाना चाहिए. यह नहीं कि एक दिन गए फिर चार दिन का नागा कर दिया. समय में थोड़ा बहुत परिवर्तन करना उचित है. पर अनियमित होना ठीक नहीं.

एक संस्थान में हड़ताल होने वाली थी. वातावरण तनावपूर्ण था. किसी अधिकारी को कार्यालय से निकलने का साहस नहीं होता था. पर वहां का प्रशासनिक अधिकारी बेधड़क निर्द्वंद्व हो कर कार्यालय में आखिरी मिनट तक घूमता रहा. कारण यही था कि वह इतनी नियमितता से सुबहशाम दौरा करता था कि बाहर निकलना कर्मचारियों से संपर्क रखना उन का स्वभाव ही बन गया था. स्टाफ ने उसी रूप में स्वीकार कर लिया था. असामान्य स्थिति में भी उस के सामान्य दौरे किसी को असामान्य नहीं लगे. कार्यालय की गतिविधि का पता लगते रहने से समय पर उचित कदम उठाए जा सके.

शाम का दौरा यह देखने के लिए होना चाहिए कि अपेक्षित कार्य पूरा हुआ है या नहीं. साथ ही कर्मचारियों को उस दिन के काम के लिए धन्यवाद देना चाहिए. इस से मनोबल बढ़ता है.

दौरे में अधिकारी का दृष्टिकोण विनम्र व माननीय होना चाहिए.

जो भी इस स्वर्ण नियम का नियमित रूप से पालन करेगा, उस के कार्यालय में समस्याएं कम सिर उठाएंगी. जो उठेंगी वे आसानी से निबट भी जाएंगी. फलतः औद्योगिक शांति रहेगी.

ये लड़के ये लड़कियां

स्कूल, कालिज में या राह चलते अनेक बार लड़केलड़कियों की शरारत भरी बातें मनोरंजक स्थिति बना देती हैं और कई बार तो घटना काफी दिलचस्प बन जाती है. क्या आप के समक्ष कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण मुक्ता के लिए अपना नाम व पूरा पता के साथ लिखें. प्रत्येक प्रकाशित रचना पर 30 रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र इस पते पर भेजें: मुक्ता, दिल्ली प्रेस, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

बस खचाखच भरी थी. मैं टिकट लेने के लिए कंडक्टर की सीट के पास खड़ी थी. मेरे निकट एक लड़का खड़ा था. उस के बाद मेरी सहेली थी. एक मोड़ पर अचानक बस मुड़ने से मेरा हाथ उस लड़के के हाथ पर जा लगा. लड़के ने पीछे मुड़ कर धीरे से मुसकराते कहा, "तेरा लाखलाख शुक्रिया."

शायद उसी चक्कर में उस का पैर मेरी सहेली के लग गया. उस ने समझा कि लड़के ने जानबूझ कर पैर मारा है. सहेली ने लड़के के एक तमाचा जड़ दिया.

तभी मेरे मुंह से अनायास निकल गया, "यह भी उस का लाखलाख शुक्रिया."

लड़का बस रुकते ही झट से उतर गया.

—अलका आहूजा

*

हमारी कक्षा के कुछ लड़के काफी मनचले हैं. वे लड़कियों पर अकसर छींटाकशीं करते ही रहते हैं.

एक दिन एक लड़के ने लड़की से फिल्मी अंदाज में कहा, "मुझे अपनी आंखों में बसा लो."

"मुझे अपनी आंखें फुड़वानी हैं क्या?" लड़की की हाजिरजवाबी ने उस की बोलती बंद कर दी.

—सुभाष चंद्र झा 'अकेला'

*

कुछ दिन पूर्व मैं अपने घर के दरवाजे पर खड़ा था. सामने सड़क पर रिकशे में दो लड़कियां आ रही थीं. रिकशे के पीछे साइकिल पर दो लड़के भी थे. अपनी साइकिल को रिकशे के बराबर में लाते हुए लड़का बोला, "भई, आज तो रिकशेवाले की किस्मत चमक गई."

लड़कियां भी कम न थीं, झट से बोल पड़ीं, "तुम भी रिकशा चला लो. तुम्हारी किस्मत भी चमक जाएगी."

यह सुन कर लड़के झेंप गए. उन्होंने अपनी साइकिल अगली गली में मोड़ दी.

—भारत भूषण सेठी

*

एक दिन कालिज कैंटीन में कहीं से बिल्ली का बच्चा घुस आया. स्वल्पाहार ले रहे कुछ लड़कों ने उस बच्चे को देख कर बिल्ली जैसी आवाजें निकालना शुरू कर दिया, उन के जवाब में दूसरे लड़कों ने कुत्तों की. इस से कैंटीन में काफी शोर होने लगा.

अचानक कैंटीन में प्राध्यापकजी ने प्रवेश किया. उन्हें माजरा समझते देर नहीं लगी. उन्होंने कैंटीन के नौकर रामदीन से ऊंची आवाज में कहा, "रामदीन, कैंटीन में इतने बिल्लियां कहां से आ गए, तुम बड़े लापरवाह मालूम देते हो."

—दिनेश सेठ
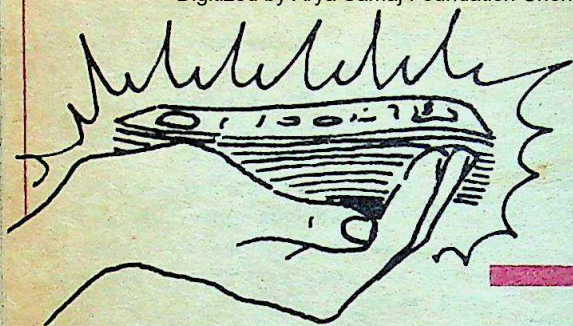
लेख • सरल जैन

कमाइए जरूर मत गंवाइए हुजूर
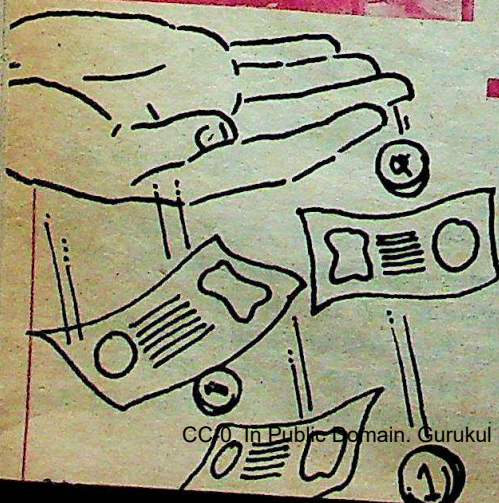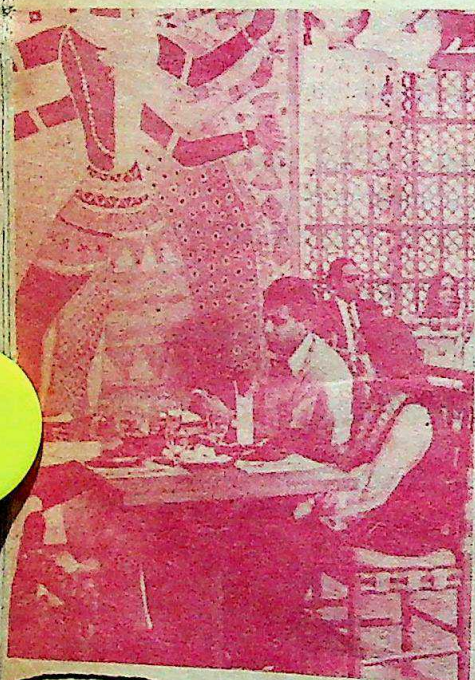
एक कमरे में गरमागरम बहस चल रही थी. लोग काफी गंभीर मनोदशा में नजर आ रहे थे. मुझे बड़ा अजीब सा लगा. कारण जानना चाहा तो पता चला कि 'टका महिमा' की व्याख्या चल रही है. पहले तो मैं 'टका महिमा' का शाब्दिक अर्थ ही समझ न पाई. दिमाग पर जोर दिया तो जैसे अचानक ही ट्यूबलाइट भक से जली हो. टका महिमा का शाब्दिक तो क्या गूढ़ अर्थ भी एक ही

पैसा कमाना एवं खर्च करना एक ऐसा प्रश्न है जिस से आप की जिंदगी का हर पहलू बड़ी बारीकी से जुड़ा हुआ है और इस मामले में जरा सी लापरवाही बरतने का मतलब है सुख और दुख का संतुलन बिगड़ जाना. अतः जरूरी है कि जो पैसा कमाया जा रहा है, उस के खर्च करने का उचित तरीका भी जानासमझा जाए.

स्के में समझ में आ गया. समझ में यह भी आ गया कि पैसों पर, पैसों के लिए बहस चल रही थी. लोग अपनेअपने तजुरबे अपनेअपने ख्याल सुना रहे थे.

यह सच है कि पैसा कोई भी कमा सकता है. पैसा कैसे भी, किसी भी तरह कमाया जा सकता है. पैसा कमाना न तो कला है, और न ही विज्ञान. फिर भी पैसा कमाना एक टेढ़ी खीर वाली कहावत चरितार्थ करता है. बड़ी मुश्किल से अर्जित किया जाता है पैसा. तिलतिल इकट्ठे करने से संचित होता है पैसा. जो पैसों की कद्र करना जानते हैं वे पैसों का उचित व्यय करना भी जानते हैं. ऐसे भी कई लोग समाज में हैं, जो पैसों का दुरुपयोग करते नहीं थकते. झूठे अहंकार की खातिर पैसों की फजलखर्ची करते समय उन्हें लज्जा महसूस नहीं होती और शायद ही नहीं बल्कि यकीनन ऐसा करने से उन के झूठे अहं की तुष्टि होती है.

हर इनसान को अपनी आवश्यकता के लायक पैसा कमाना ही चाहिए. अगर जरूरत से ज्यादा वह कमा पाता है तो यह उस के लिए खुशी की बात होनी चाहिए. होती भी है, मगर पैसों को खर्च करना निश्चित रूप से एक कला भी है और मनोविज्ञान भी..

कई लोग होते हैं जो सारी जिंदगी अपने तथा अपने परिवार वालों की आवश्यकता पूर्ति हेतु खर्च करते हैं. इसी में उन का आत्मसंतोष निहित होता है. कुछ लोग अपने एवं अपनों से जुड़े लोगों का भी खयाल रखते हैं. ऐसे पुरुष महात्मा

पैसा कमाने और खर्च करने के बहुतेरे तरीके हैं. पर पैसा खर्च करने से पहले उस के औचित्य पर भी निगाह डाल लें.

कहलाते हैं. मगर कई ऐसे खुदगर्ज लोग भी होते हैं जो केवल अपनी खुशी के लिए, अपने अहंकार को हवा देने के लिए अपव्यय करते नहीं थकते. ऐसा करने में उन्हें बड़ा ही मजा आता है. उन्हें दिली खुशी मिलती है.

मैं एक ऐसे सज्जन को जानती हूं जो कि किसी तरह पैसे वाले हो गए. उन के मिलनेजुलने वाले भी छप्पर फाड़ कर धन आने से अचंभित थे. मगर पैसा आते ही उन का दिमाग भी आसमान छूने लगा. ऐसा नहीं कि पैसा यों ही कोई लाटरी फंसने के कारण हाथ लगा था. दिनरात की कड़ी मेहनत रंग लाई थी. मगर पैसों का भूत उन पर भी सवार हो ही गया. 'पैसेरिया' हो गया उन्हें. अतः धरती की ओर देखना ही बंद कर दिया उन्होंने. अब वे अपने आगे किसी को कुछ समझने को तैयार ही न होते. बड़ों का अदब एवं छोटों का लिहाज भी खत्म हो गया. भाइयों के साथ सिगरेट पीना तो आम बात थी. पिता के सामने खुल कर मदिरा का भी सेवन करने लगे.

फिर उन के दिमाग में नया फितूर सवार हुआ और मकान बनवाने की धुन सवार हुई. कई मकान एवं कई खाली प्लाटों के मालिक होने के बावजूद जिस मकान में वे रहते थे उसी का नवीनीकरण करने का शौक चर्राया. अतः नवीनीकरण के चक्कर में आधा मकान गिरवा दिया. चारों तरफ आधुनिक कलात्मकता के चक्कर में जोड़ आ गए. मकान को नया रूप तो मिल गया मगर आधुनिकीकरण के चक्कर में नींव की ओर ध्यान न दिए जाने के कारण कुछ कमियां रह गईं और पहली ही बरसात में मकान में सब तरफ पानी टपकने लगा. पानी के उन सीलन युक्त धब्बों को छुपाने के चक्कर में उन्होंने बरसात बाद पूरे घर में दीवारों पर प्लाईवुड लगवा दी. आठ महीने तो वह खूबसूरती बिखेरती रही. मगर बरसात की मार वह भी सहन न कर पाई. दीवार और प्लाईवुड के बीच पानी जमा होने के कारण फेवीकोल की पकड़ तो ढीली पड़ ही गई, साथ में प्लाईवुड फूल भी गई. दीवार की पकड़ छूट जाने के कारण बदशक्ल भी हो गई और एक बार फिर घर बदरंग दिखने लगा तथा पानी फिर टपकने लगा.

इस बार उन्हें नई सूझी. उन्होंने समूचे घर में भीतरबाहर सुपर रेक्स करवा दिया. एक बार फिर घर को नया रूप मिल गया. अब पेंट की बारी आई. बाहर कोकाकोला एवं गहरे सफेद रंग का पेंट करवाया. सो तो ठीक था, मगर जब उन्होंने अपने शयनकक्ष में कोकाकोला रंग करवाया तो देखने वालों को बैचेनी होने लगी.

पानी टपकने की समस्या तो ज्यों की त्यों बनी रही. तोड़ने, फिर से बनवाने एवं नवीनीकरण के चक्कर में जो अतिरिक्त खर्च आया उस रकम से एक अच्छा नया मकान या फिर एक प्यारा सा बंगला बनवाया जा सकता था. अब कोई उन्हें कैसे समझाता कि यह फुजूलखर्ची नहीं तो क्या थी.

फुजूल खर्ची से बचें.

ऐसे सैकड़ों तो क्या हजारों उदाहरण समाज में फुजूलखर्ची के मिल जाएंगे. अकसर कई लोगों अथवा बच्चों की आदत होती है कि थोड़ाबहुत खाना वह थाली में छोड़ देते हैं. अगर हिसाब लगाया जाए तो यकीनन कम से कम महीने में पांचछः दिन का खाना परिवार में बेकार हो जाता है और पांचछः दिन के खाने की कुछ तो कीमत होती ही होगी.

ठीक उसी प्रकार कई घरों में साबुन तेल एवं सौंदर्य प्रसाधन में उपयोग आने वाली सामग्री का भी बड़ी ही बेरहमी से दुरुपयोग होता है. जो पैसों की कद्र करना जानते हैं वे वस्तुओं के प्रयोग में सतर्कता बरतते हैं, साथ ही उन के रखरखाव में सावधानी भी.

इसी क्रम में मुझे याद आ रही है एक सत्य घटना. एक बार की बात है, जब

बहुत से लोग अपने ज्यादातर पैसे दवाओं के खरीदने पर खर्च कर देते हैं, जबकि उन दवाओं के खरीदे बिना भी काम चल सकता है.

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय नहीं था. डाक्टर मदन मोहन मालवीय ने उसे स्थापित करने का बीड़ा अपने कंधों पर उठा रखा था. अकसर वे अपने इष्ट मित्रों के साथ चंदा वसूली के लिए निकला करते. एक दिन उन लोगों ने एक नगर सेठ के घर धावा बोलने की सोची. वह नगर सेठ अपनी कंजूसी के कारण पूरे बनारस में ही नहीं, आसपास के इलाके में भी प्रसिद्ध था. मालवीय के अन्य शुभचिंतक मित्रों ने सलाह दी, कहा, "सेठ बड़ा ही कंजूस किस्म का आदमी है. कानी कौड़ी भी न देगा."

मालवीय ने नम्रता से कहा, "मिलने में हर्ज ही क्या है, न देगा तो न सही. अपना क्या चला जाएगा." मालवीय के बंधु मित्र निरुत्तर हो गए. मित्रों के साथ मालवीय सेठ के निवास स्थान पहुंच ही गए. अंधेरा धीरेधीरे गहरा होता जा रहा था. सेठ का एक नौकर लालटेन जलाने की कोशिश कर रहा था. जब तीसरी तीली भी बेकार जल गई एवं नौकर लालटेन जलाने में नाकामयाब रहा तो सेठ का पारा चढ़ गया. एक दम गरम हो कर अपने नौकर से बोला,

"इतनी मुशकिल से क्या मैं इसीलिए कमाता हूं कि तुम तीलियां जलाने में पैसा बरबाद करो?"

नौकर ने अदब से सिर झुका लिया. एक बार फिर पूरी मेहनत एवं निष्ठा से उस ने लालटेन जलाने की कोशिश की और वह इस बार अपने उद्देश्य में सफल हो गया.

जब लालटेन भक से जल उठी तो रोशनी में सेठ को कई नए चेहरे सामने नजर आए. वह अचकचा गया. मगर शीघ्र ही संभल भी गया और काफी विनम्र हो कर बोला.

"आइए आप सब लोग खड़े क्यों हैं? बैठिए न. दरअसल रोशनी न होने के कारण मैं आप लोगों को पहले न देख पाया."

अचानक सेठ का सरस स्वर वातावरण में गूंजा तो सब लोग सचेत हो गए, सोचने लगे कि जो व्यक्ति माचिस की तीलियों का अपव्यय सहन नहीं कर सकता, वह किसी को चंदा क्यों कर देगा. साथ ही सब के सब

कई घरों में साबुन, तेल एवं सौंदर्य प्रसाधन में उपयोग आने वाली सामग्री का बहुत ही बेरहमी से दुरुपयोग होता है. जो पैसों की कद्र करना जानते हैं. वे वस्तुओं के प्रयोग में सतर्कता बरतते हैं, साथ ही उन के रखरखाव में सावधानी भी.

शंकित भी थे, यह सोच कर कि कहां तो सेठ नौकर को बेहिसाब डांट रहा था और कहां दूसरी ओर इतनी मीठी आवाज में उन की अगवानी? भला माजरा क्या हो सकता है?

एक मित्र ने हिम्मत कर कहा, ''यों ही सेठजी कोई विशेष बात नहीं है. सामने से गुजर रहे थे. आप को देखा तो मिलने की इच्छा हो गई.''

''बस इतनी सी बात? आप लोग निष्प्रयोजन घूम रहे हों, ऐसा मैं नहीं समझता. आप लोग सब भद्र पुरुष नजर आ रहे हैं. मुझे निस्संकोच अपने आने का मकसद बताइए?''

सब एकदूसरे को देखने लगे. मालवीय मुशकिल से बड़ी विनम्रता के साथ सेठ से बोले, ''सेठजी मैं मदन मोहन मालवीय हूं. हम ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय स्थापित करने का संबल लिया है. इस हेतु एक बड़ी धन राशि की आवश्यकता है, जो मेरे पास है नहीं. अतः चंदा जमा कर उद्देश्य पूरा करना चाहता हूं. इस मकसद में मेरे यह सभी मित्र मेरी भावनात्मक सहायता कर रहे हैं. कुछ राशि एकत्र हो गई है, कुछ एकत्र होनी बाकी है, मगर आप नाहक परेशान मत होइएगा. यह हमारा अपना मामला है?'' इतना कह कर मालवीय चुप हो गए.

सेठ खुश होते हुए बोले, ''अरे इस में परेशानी जैसी क्या बात हो गई. मैं ऐसे सभी लोगों की कद्र करता हूं जो समाज की भलाई हेतु कार्य करते हैं, उस का बीड़ा उठाते हैं. अच्छा आप बताइए आप मेरे पास कितनी उम्मीद से आए थे?''

मदनमोहन मालवीय ही नहीं सभी चौंक गए सेठ की बात सुन कर.

एक सज्जन सफाई में चतुराई से बोले, ''माफ करिए सेठजी. हम लोग कुछ सोच कर नहीं आए थे. बस यों ही...''

''यों ही क्या? कुछ तो सोचा ही होगा.''

इस बार मालवीय पुनः हिम्मत कर बोले, ''कुछ विशेष तो नहीं, मगर हां आप की प्रतिष्ठा के अनुकूल यही कोई दोहजार की राशि का अनुमान लगाया था.''

''बस केवल दो हजार?'' सेठ ने अपने मुनीम को आवाज दी और कहा, ''इन्हें पांच हजार का चैक दे दीजिए.''

अब चौंकने की बारी फिर सब की थी. मालवीय से रहा नहीं गया. वह पूछ ही बैठे, ''सेठजी, अभीअभी आप अपने नौकर को कुछ माचिस की तीलियां बर्बाद करने के एवज में डांट रहे थे. मानो वे तीलियां न हो कर बंदूक की गोलियां हों और अब आप इतनी स्वेच्छा से पांच हजार दे रहे हैं. आप के स्वभाव का यह विरोधाभास मुझे तो समझ नहीं आया?''

''देखिए पंडित जी, आप ने जो देखा वह किसी सिपाही की बंदूक से निकली गोलियों के दुरुपयोग से कम नहीं. आप ने जो अपनी आंखों से देखा क्या वह वाकई में किसी फुजूलखर्ची से कम था? सोचिए? तनिक दिमाग पर जोर दीजिए? और वह मेरे बर्दाश्त के बाहर की बात थी. मैं ही क्या, आप सब भी जानते हैं कि पैसा कितनी मुशकिल से कमाया जाता है और संचय करना तो और भी मुशकिल काम है. तिलतिल बचा कर ही तो मैं ने संचय किया है यह धन. इसलिए नहीं कि फुजूलखर्ची में खर्च हो जाए बल्कि इसलिए कि मैं नेक कामों में खर्च कर सकूं. जिस से मेरे अंतर्मन को खुशी हासिल हो सके और मुझे वाकई में खुशी है कि आप की नेक खयाली मेरे मकसद को पूरा करने में समर्थ है. बनारस

पैसा कितनी मुशकिल से कमाया जाता है, यह कमाने वाले ही जानते हैं. फिर पैसे के कद्र करने की विधि क्यों नहीं सीखी जाती.

में विश्वविद्यालय बन जाने से हजारों विद्यार्थियों को भटकना तो नहीं पड़ेगा. देश तरक्की के रास्ते में एक कदम आगे बढ़ेगा. अतः इस के लिए आप अधिक भी मांगते तो मैं कभी इनकार न करता.''

कुछ इसी प्रकार का उदाहरण मेरे एक प्रोफेसर मित्र ने सुनाया था. आज़ से लगभग बीस साल पहले उन्हें क्षयरोग हो गया था. दमोह शहर के डाक्टरों ने अच्छीं से अच्छी एवं महंगी से महंगी दवाइयां दीं. एक साल तक वे नियमित उन का सेवन भी करते रहे. पर कोई फायदा न हुआ. फिर किसी मित्र ने सलाह दी कि इंदौर स्थित क्षयरोग विशेषज्ञ डाक्टर मुखर्जी से इलाज करवाओ. प्रोफेसर मित्र ने पत्र द्वारा डाक्टर मुखर्जी से साक्षात्कार का समय तय कर लिया एवं निश्चित समय पर पूर्व जानकारियां ले कर पहुंच गए उन के पास.

सामान्य जांच के बाद डाक्टर मुखर्जी ने कहा, ''प्रोफेसर आप यह बताइए कि आप को ऐसे कौन से लक्षण दृष्टिगोचर हुए थे जिस से आप को क्षय रोग होने का शक हुआ?''

इस प्रश्न से प्रोफेसर चौंक से गए. फिर भी बोले, ''डाक्टर साहब मुझे तो कुछ भी महसूस नहीं हुआ था. हां, मेरे एक मित्र ने कहा, 'प्रोफेसर साहब, आप काफी थकेथके से रहते हैं. क्यों न आप की डाक्टरी जांच करवा दी जाए' और मजाकमजाक में वे वाकई मुझे अपने एक खास डाक्टर मित्र के पास ले गए. जांच एवं कुछ खास परीक्षणों के बाद उन्होंने मुझे क्षय रोगी घोषित कर दिया. तब से मैं निर्धारित दवाइयों का सेवन कर रहा हूं.''

''इसी बात का तो दुख है मुझे, प्रोफेसर साहब कि एक साल तक आप वो दवाइयां खाते रहें जिन की आप को कतई जरूरत नहीं थी.'' डाक्टर मुखर्जी बोले.

प्रोफेसर ने घबरा कर पूछा, ''दवाइयां हानिप्रद तो नहीं थीं डाक्टर साहब?''

''हानिप्रद तो नहीं कह सकते मगर फायदेमंद भी नहीं कही जा सकतीं. अगर आप इन्हें न भी खाते तो आप को कोई नुकसान नहीं होता.'' इतना कह कर डाक्टर मुखर्जी चुप हो गए.

संतोष की सांस लेते हुए मेरे प्रोफेसर

मित्र बोले, ''तो क्या हुआ डाक्टर साहब. मैं ने तो दवाइयों की अदायगी कार्यालय से करा ली है. जिन की नहीं कराई है आगामी बिल में करा लूंगा.''

अब चौंकने की बारी डाक्टर मुखर्जी की थी. वे आश्चर्यचकित हो बोले, ''प्रोफेसर साहब, आप ने कितनी सहजता से यह बात कह दी. मगर मैं सोच रहा हूं कितना अच्छा होता अगर इतनी महंगी एवं दुर्लभ दवाइयां किसी जरूरतमंद मरीज को नसीब हो गई होतीं. कम से कम एक मरीज का जीवन तो बच जाता. प्रोफेसर साहब आप को महसूस नहीं हुआ कि दवाइयों का दुरुपयोग हुआ है.''

मेरे प्रोफेसर मित्र शर्मिंदा हो गए. बोले, ''डाक्टर साहब वाकई गलत हुआ है. दवाइयों एवं पैसों दोनों का ही दुरुपयोग हो गया. वैसे मैं भी कभीकभी सोचता अवश्य था कि मैं वाकई उतना बीमार तो स्वयं को महसूस नहीं करता, जितनी दवाइयां मैं खा रहा हूं.''

मैं सोचती हूं डाक्टर मुखर्जी जैसी सोच कितने व्यक्ति रखते हैं? कोई ईंधन पर पैसा बरबाद करता है. जैसे कि अकारण, बिना मकसद के आवारागर्दी में वाहन आदि चला कर पेट्रोल अथवा डीजल बरबाद करना, जबकि कई बार जरूरतमंद लोगों को मोपेड तक मयस्कर नहीं होती.

कई छात्रछात्राएं कापी, पुस्तक, पेन आदि में फुजूलखर्ची करते हैं. होटल एवं सैरसपाटे में पानी की तरह पैसा बहाते हैं और दूसरी ओर कई मेधावी छात्र एवं छात्राओं को फीस के पैसे भी नसीब नहीं होते. कई मांबाप तो ऐड़ीचोटी एक कर के भी बच्चों की फीस नहीं जुटा पाते हैं.

बेशुमार पैसे खर्चने से बचें

इसी प्रकार कई लोग ऐयाशी, जुआ एवं शराब में पैसे बरबाद करते हैं जबकि कई घरों में चूल्हा जलाने के लिए भी पैसे कम पड़ते हैं.

कई धनीमानी लोगों की आदत होती है कि बेशुमार पैसा होने के बावजूद वे अगर किसी को पांच रुपए उधार देंगे तो दस बार तकाजा करेंगे. तथा पैसा ले कर रहेंगे अन्यथा अपना जिगर उस समय तक जलाते रहेंगे जब तक कि उन्हें पैसा पुनः वापस न मिल जाए.

काश! उन सभी लोगों को पैसों की कीमत का सही आंकलन करना आता होता. उन्हें उचित ढंग से खर्च करने का ज्ञान होता. बजट बना कर व्यय करते तो उधार लेने की नौबत ही न आती. लोग उन की तारीफ करते कि क्या ही सलीकेदार आदमी है. पैसे की कीमत उसे मालूम है. जिस प्रकार उसे कमाना आता है, ठीक उसी प्रकार, उतने ही सलीके से खर्च करना भी आता है. ऐसा नहीं कि पर्याप्त कमाई के बाद भी दूसरों के सामने हाथ फैलाने की ही नौबत बनी रहती है.
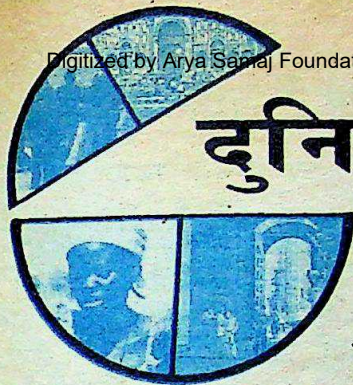
दुनिया भर की

अमेजन के जंगलों में है सोने का भंडार

ब्राजील के एक दैनिक पत्र 'ओ ग्लोबो' ने हाल में एक मनोरंजक खबर छापी है कि जापान के कुछ उद्योगपतियों ने ब्राजील सरकार के आगे यह प्रस्ताव रखा है कि वह ब्राजील का विदेशी कर्जा, जो कि 115 अरब डालर है, चुकाने के लिए तैयार हैं, बशर्ते ब्राजील अमेजन के जंगलों में उन्हें सोने का भंडार खोदने के पूरे अधिकार दे दे. एक अनुमान के अनुसार अमेजन के जंगलों में 260 अरब डालर का सोना दबा हुआ है. ब्राजील ने जापान के उद्योगपतियों का प्रस्ताव ठुकरा दिया है.

जनसंख्या तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से ब्राजील लैटिन अमरीका का सब से बड़ा देश है. दक्षिण अमरीका में एक कोने से ले कर दूसरे कोने तक बहने वाली अमेजन नदी अधिकांश में ब्राजील देश में से गुजरती है. ब्राजील के उत्तरी भाग में इस नदी के दोनों ओर घने जंगल हैं. भू वैज्ञानिकों का कहना है कि अमेजन नदी के दोनों ओर के घने जंगलों की जमीन में बेशुमार सोना है.

ब्राजील में पिछले कुछ सालों से घने जंगलों को साफ किया जा रहा है. संभवतः सोना तलाशना ही जंगल साफ करने का उद्देश्य रहा हो. वैसे ब्राजील हर साल काफी सोना निकालता है. सन 1989 में ब्राजील ने अपनी खानों से 110 टन सोना निकाला था. ब्राजील के लोग यह नहीं चाहते कि सोना निकालने का अधिकार किसी और को दिया जाए और हरेभरे जंगल साफ कर दिए जाएं. लेकिन क्या ब्राजील सरकार लोगों की बातों पर अमल करेगी?

घने जंगलों के बीच से गुजरती अमेजन नहीं : सोना के लिए अब हरेभरे जंगल साफ हो रहे हैं.

शरणार्थी बन रहे हैं सोने की खान

स्वीडन में राजनीतिक शरणार्थी कुछ लोगों के लिए सोने की खान बन गए हैं. स्वीडन में इस समय काफी शरणार्थी हैं और इन से यहां के लोगों को काफी रकम बतौर किराया मिल रही है. स्टाकहोम में इस समय होटल, पर्यटक निवास, अवकाश शिविर और जहाजी कंपनियां इन शरणार्थियों से रहने और खाने की व्यवस्था के लिए खूब पैसा वसूल कर रही हैं. एक अनुमान के अनुसार करीब 50 हजार रुपए (20 लाख क्रोनर) इन से रोजना वसूल किए जाते हैं.

स्टाकहोम की एक जहाजी कंपनी ने तो हाल में एक जहाज किराए पर शरणार्थियों के रहने के लिए लिया है. इस जहाज में 550 शरणार्थी रहेंगे और किराया वसूल होगा रोजाना 150,000 क्रोनर. जहाज कंपनी ने अनुमान लगाया है कि छह महीने में जहाज का किराया निकल जाएगा.

स्वीडन में राजनीतिक शरणार्थियों को सरकार काफी आर्थिक सहायता भी देती है. स्वीडन सरकार ने राजनीतिक शरण देने में अब थोड़ी सख्ती बरतनी शुरू कर दी है, क्योंकि उस के यहां भी रोजगार का काफी संकट है. स्वीडन की युवा प्रतिभाएं आसपास के देशों को पलायन कर रही हैं. यही कारण है कि स्वीडन अब तक दूसरे देशों के लोगों को अपने यहां बसाने, शरण देने में काफी उदार रहा है.

हाल के वर्षों में राजनीतिक शरण के नाम पर ढेरों लोग स्वीडन पहुंचने लगे थे. बाद में उन के राजनीतिक उत्पीड़न की बातें मनघड़ंत व झूठी निकलने लगीं जिस के कारण स्वीडन आने वालों पर अब थोड़ा अंकुश लगने लगा.

बेल्जियम में बना है चुड़ैल स्मारक

जरमनी, नीदरलैंड, लक्समबर्ग तथा फ्रांस के बीच में बसा बेल्जियम देश यूरोपीय साझा बाजार का मुख्यालय होने के कारण वर्षों से एक महत्त्वपूर्ण देश बना हुआ है. इन दिनों इस देश की एक छोटी सी बात के लिए बड़ी चर्चा है. बेल्जियम में एक छोटा सा गांव है, हाकोर्ट. इस गांव में गांव के लोगों ने बनाया है एक चुड़ैल स्मारक.

ऐसा कहा जाता है कि 16वीं और 17वीं शताब्दी में बेल्जियम के इस दक्षिणी गांव में अनेक महिलाएं तरहतरह के आरोप लगा कर जिंदा जला दी गईं. इस गांव के लोग यह मानते हैं कि जलाई गई महिलाएं निरपराध थीं. उस समय इस गांव के लोग बड़े ही अंधविश्वासी थे और अंधविश्वास के वशीभूत हो कर उन्होंने उन निर्दोष स्त्रियों को जला दिया था.

हाल में इस गांव के लोगों ने गांव के बीच में 1.2 मीटर ऊंचा काले पत्थरों का एक स्मारक बनाया है और उन निरपराध महिलाओं की याद में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए हैं. ऐसा लगता है, जैसे इस स्मारक को बनाने के पीछे भी अंधविश्वासी लोगों का ही हाथ हो. गांव की अधिकांश औरतों को न तो यह चुड़ैल स्मारक अच्छा लगा है और न ही पुरुषों का स्मारक बनाने का नाटक. यहां की महिलाओं को तो 'चुड़ैल' शब्द पर ही भारी आपत्ति है और इसे वे औरत जाति का अपमान समझती हैं.

बेल्जियम की महिलाओं को चुड़ैल शब्द से नफरत है.

बेरोजगार हैं वे घर में रहें और कम चीज इस्तेमाल करें

चीन में छात्र आंदोलन : बेरोजगारी का कारण

चीन का श्रम मंत्रालय देश में बढ़ती ...जगारी और काम की तलाश में गांवों से ...रों में आए लोगों से काफी परेशान है. ...रों में बढ़ती भीड़ से एक तरफ जहां ...स समस्या गंभीर हो रही है वहीं दूसरी ...र अपराध बढ़ रहे हैं. पिछले वर्ष चीन के ...शहर में आसपास के गांवों से इतने लोग ...आ गए थे कि स्टेशन के इर्दगिर्द ही उन्हें ...रना पड़ा.

गांवों से शहरों में रोजगार की तलाश ...बढ़ती भीड़ को रोकने के लिए चीनी ...सकों ने हाल में एक नई योजना बनाई है ...न की रूपरेखा चीन के अखबारों में भी ...है. नई योजना के अनुसार भविष्य में ...वों से शहर में जाने वालों को काम करने ...र रहने का एक स्वीकृति पत्र लेना पड़ेगा. ...प्रकार इस नई योजना से चीनी शासक ...रों में पैदा होने वाली नई आर्थिक कठिनाइयों का समाधान आसानी से कर सकेंगे. यह योजना कब लागू होगी, इस बारे में निश्चित रूप से नहीं कहा गया है.

चीन के श्रम मंत्रालय ने शहरों में बेरोजगार युवकों को सलाह दी है कि वे घर में रहें और कम चीजों का इस्तेमाल करें. चीनी शासक देश में बढ़ती बेरोजगारी का सब से बड़ा कारण हाल के दिनों में हुए छात्र आंदोलन को भी बता रहे हैं, जिस के कारण ढेरों निर्माण कार्य स्थगित हो गए.

सोने की मिली है नई खान

आज से 150 वर्ष पूर्व अमरीका के ...लिफोर्निया द्वीप में हजारों लोग सोना ...ने की खबर सुन कर पहुंच गए थे. इन में ...से लोग बाद में हुए लड़ाईझगड़ों में मारे ...गए. अब फिर एक नई खबर से लोगों में ...हलचल मची हुई है. हाल में एक अखबार ने ...र छापी कि कैलिफोर्निया में एक पहाड़ी ...तलहटी में सोने के टुकड़े मिले हैं. बस यह ...र इतनी उड़ी कि इन दिनों हजारों लोग ...तलहटी में सोना बटोरने जा रहे हैं.

इस खबर के पीछे जो कहानी है वह इस ...र है: लास एंजलस के उत्तरपूर्व में ...रील नदी है. इस नदी के पास ही ऊंची ...श्रेणियां हैं. चूंकि गैबरील नदी पर्वत के ...से गुजरती है अतः इस की तलहटी में ...कभी पर्वत से सोने के टुकड़े रेत में बह कर आ जाते हैं. कुछ अरसे पूर्व यहां आए कुछ सैलानियों को कुछ टुकड़े मिल गए. बस यह बात अखबार में एक बड़ी खबर बन गई और लोग एक तरफ कैलिफोर्निया में पहुंच रहे हैं तो दूसरी तरफ लास एंजलस में. कैलिफोर्निया की पर्वत श्रेणी का नाम वही है, जो लास एंजलस की पर्वतश्रेणी का है. नाम की समानता के कारण लोग पहले कैलिफोर्निया जाते हैं और फिर लास एंजलस.

अमरीका के एक प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता जोन क्लीन ने एक किताब लिखी है—'दक्षिणी कैलिफोर्निया में सोना कैसे प्राप्त करें?'

इस किताब में कैलिफोर्निया तथा वहां की नदी, पर्वत तथा सोने की खानों के बारे में विस्तृत विवरण दिया गया है.

बिना पहल 'शक्ति वेतन वृद्धि संभव नहीं

लेख • कमल सरीन

इस सदी के आरंभ में एक
लिखी गई थी, 'गर्सिका
संदेश'. इस कहानी का संदेश
महत्त्वपूर्ण था कि इस की
प्रतियां कई देशों में सैनिक
असैनिक प्रतिष्ठानों में
गई. संक्षेप में कहानी
कथानक इस प्रकार
स्पेन व अमरीका
में युद्ध छिड़ गया
गर्सिका नामक
सेनानायक
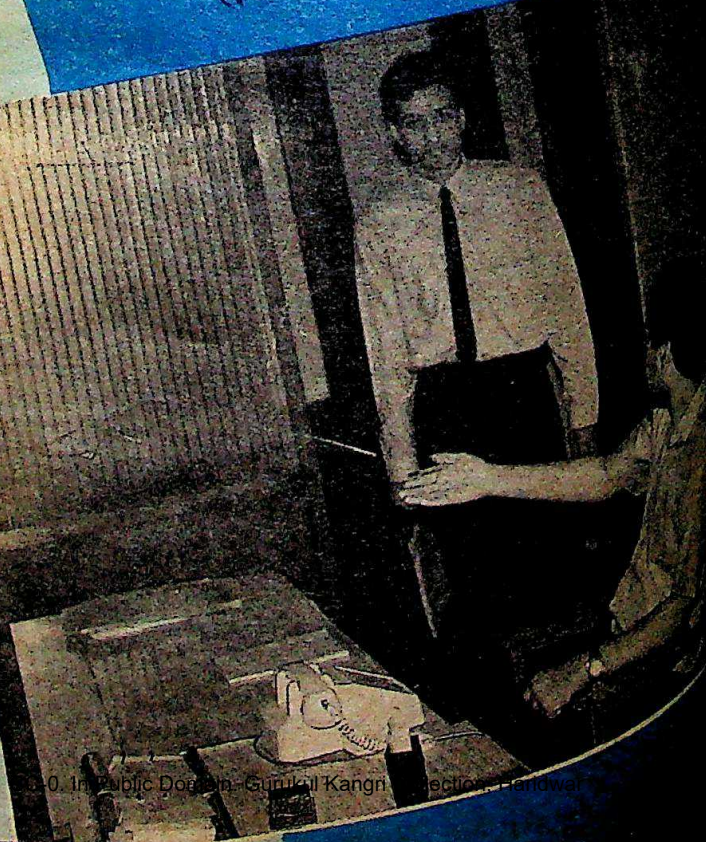
...हले आप पहले आप' की मानसिकता मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में ...क बड़ी बाधा है. सब कुछ होते हुए भी अगर आप में पहल शक्ति नहीं ...तो आप के लिए सफलता के सभी द्वार बंद हैं. मगर आप थोड़ा अभ्यास ...र के अपनी पहल शक्ति को बढ़ा सकते हैं तथा एक सफल व्यक्ति ...हलाने का हक पा सकते हैं...

...ई आवश्यक हो गया था. वह क्यूबा के ...लों में छिपा था. पत्र भेजने का कोई ... नहीं था. सब परेशान थे कि क्या ... जाए. किसी ने राष्ट्रपति से कहा, ...हदय, रोबिन नाम का सैनिक यह काम ...सकता है." रोबिन को बुला कर पत्र दे ... गया. कैसे उस ने पत्र लिया, कहां ...गया, कैसे क्यूबा के तट पर उतरा, कैसे ...का को तलाश कर पत्र दिया और कैसे ...री तरफ से निकल कर वापिस आया, ...सब तो विस्तार की बातें हैं. पर कहानी ...देश है कि रोबिन को पत्र दिया गया. ...उस का महत्त्व समझा, जिम्मेदारी के ...कोई सूत्र न होते हुए भी अनेक ...ओं, कठिनाइयों के बीच से गुजरता ...उस ने वह पत्र गार्सिका तक पहुंचाया ...वापस आ कर सूचना दी कि पत्र दे ...है.

...कक्षा के अध्यापक ने तीन विद्यार्थियों ...य पर एक लेख लिखने को कहा. तीन ...का समय दिया. रमेश उठा, ...लय पहुंचा. ज्ञानकोश देखा. ...कालयाध्यक्ष से संबंधित पुस्तकों की ...ली. उन्हें निकलवा कर पढ़ा, सामग्री ...त की और लिख कर दे दिया. ...शोक की समझ में नहीं आया कि क्या ...रे. अध्यापक से पूछा जानकारी कहां ...मिलेगी. अध्यापक ने ज्ञानकोश व कुछ ...पुस्तकों के नाम बतला दिए. स्कूल के ...पुस्तकालय में ज्ञानकोश के अलावा ...दूसरी पुस्तकें नहीं मिलीं तो ...ज्ञानकोश के आधार पर ही लेख ...कर दे दिया. विनोद की समझ में ही न ...कि ज्ञानकोश का उपयोग किस प्रकार ...कोई पुस्तक भी न मिली. अपने मन से कुछ लिख कर दे दिया. रमेश को 100 में से 80 नंबर मिले, अशोक को 50 तथा विनोद को मात्र 10.

सुरेश एक कार्यालय में प्रशासनिक अधिकारी था. अचानक ही दोपहर बाद डाक से तीन बिलटियां आ गईं, जो उसी दिन छुड़ानी थीं. नहीं तो दूसरे दिन हर्जाना देना पड़ता. उन्होंने तीन बाबुओं को एकएक बिलटी दे कर सामान छुड़ा लाने को कहा. प्रदीप ने देखा किस स्टेशन की है और समय क्या था. समय कम था इस से टैक्सी ले कर भागा, समय से पहुंच गया. सामान ला कर अधिकारी को सौंप दिया. नरेश ने सोचा समय कम है. कुछ देर सोचता रहा, फिर साहब से टैक्सी से जाने की अनुमति मांगी. फिर भी देर हो गई. किसी तरह सामान छुड़ा कर ला पाया. दिनेश सोचता ही रहा कि क्या करे, कैसे जाए. साहब के पास जाने की हिम्मत नहीं पड़ी. गया ही नहीं, बहाना बना दिया. अगले दिन हर्जाना लगा. डांट पड़ी.

हर कार्यालय में देखा जा सकता है कि जब तक अधिकारी कुर्सी पर बैठा है, कर्मचारी सिर झुकाए काम करते रहते हैं. कुछ दिखावा भी करते हैं. साहब के उठते ही कुछ उठ कर बाहर चले जाते हैं. कुछ गप्पें मारने लगते हैं. कुछ बैठे काम करते रहते हैं. यदि अधिकारी वापस नहीं आता तो आवश्यक निर्णय भी ले लेते हैं.

हर क्षेत्र में इस तरह के लोग रहते हैं. उन का वेतन, उन की आमदनी भी भिन्न होती है.

हर किसी का अनुभव होगा कि किसी भी काम को स्वयं ही उचित ढंग से करने के लिए ही कुछ लोग आगे आते हैं, बिना किसी

मातापिता को चाहिए कि घरपरिवार का कुछ निर्णय लेने का काम बेटे पर भी छो[ड़ें] जिस से उस में पहल करने की शक्ति बढ़े.

निर्देशन के कुछ ही लोग काम करते हैं. उपरोक्त उदाहरणों में रोबिन जो गार्सिका को पत्र देने गया, रमेश जिस ने भूकंप पर सर्वोत्तम लेख लिखा, बाबू जो स्वयं ही टैक्सी ले स्टेशन गया व कर्मचारी जो अधिकारी के न रहने पर भी अपना काम करते हैं, प्रथम श्रेणी के व्यक्ति होते हैं. इन में पहल शक्ति होती है.

जिस व्यक्ति में पहल शक्ति होती है, उसे सम्मान व धन दोनों प्रचुर मात्रा में मिलते हैं.

पहल कर सकने का अर्थ है कि उचित समय पर बिना किसी के कहे या निर्देशन पाए स्वयं ही निर्णय ले कर अपेक्षित कार्य कर सकना. यह एक दुर्लभ गुण है जो न केवल प्रेरणा देता है, वरन मजबूर करता है कि आप वह सब करें जो आप को बिना किसी के कहे करना है. जीवन में सफलता पाने के लिए नेतृत्व गुण आवश्यक होता है. नेतृत्व शक्ति, पहल शक्ति पर निर्भर करती है. जो व्यक्ति किसी काम को स्वयं निर्णय ले समय पर नहीं कर सकता, वह नेता क्या खाक बनेगा.

कुछ व्यक्ति एक बार कहने व निर्देशन पाने पर कार्य पूरा कर देते हैं. यह संदेश वाहक के समान होते हैं. इन्हें काम करने का श्रेय तो मिलता है पर सम्[मान] धन कम ही मिलता है.

कुछ लोग मजबूरी में सही काम [कर]ते हैं. पीछे से जब ठेला लगता है, तब ही [आगे] बढ़ते हैं. ऐसे व्यक्तियों को मान तो मि[लता] ही नहीं, हां धन, दोनों जून की रोटी [भर] अवश्य मिल जाता है.

एक और गईबीती श्रेणी होती है [जो] बारबार निर्देशन के बावजूद काम नहीं [कर] पाते, इन्हें काम मिलता ही नहीं. सम[ाज में] उपेक्षित जीवन बिताते हैं. यदि विरा[सत में] पैसा हुआ तो जीवित रहते हैं. नहीं तो [दर दर] की ठोकरें खाते हैं.

बोलचाल की भाषा में हम अक[्सर] लोगों को कहते सुनते हैं, 'अपने [आप] कुछ सूझता नहीं, बताने पर भी नहीं [...]

हमारी सभ्यता का दोष है कि [...] निर्देशन पर अधिक खर्च करना पड़ [...] सरकारी प्रतिष्ठानों में, सरकार में, व्या[पारिक] संस्थानों में बिना निर्देशन काम हो[ता] नहीं. यह समय व धन दोनों की ब[र्बादी है]. किसी को योजना बना कर देनी हो[ती है], प्रेरणा देनी होती है. एक सर्वेक्षण से [पता] चला है कि सामान्यत: तीन तरह के [व्यक्ति] पाए जाते हैं.

2% जो काम करते हैं, प्रबंध [...]

योजना बनाते हैं. 14% जो काम कर
ते हैं व प्रबंध भी करते हैं. 84% जो
काम कर सकते हैं.

अब, यदि मालिक या निर्देशक चला
ता है तो ये 84% वाले हाथ पर हाथ धर
जाते हैं. वे यह कभी सोचते भी नहीं कि
शक के बगैर भी कोई काम कर लें.

14% जो काम व प्रबंध दोनों कर
ते हैं, ऐसे लोग पर्यवेक्षक के जाते ही
बंद नहीं करते. वह हो या न हो, काम
रहते हैं. वह न केवल अधिक काम
ते हैं वरन निर्देशक का काम भी कम कर
हैं. पर इस के अलावा कोई और होना
ए जो योजना बनाए और उन्हें काम
दो प्रतिशत होते हैं जो शिखर पर होते
वे काम कर सकते हैं. प्रबंध कर सकते हैं
र सोचविचार कर योजना बना सकते हैं.

यह एक अच्छी बात है कि दिया हुआ
सुचारु रूप से किया जाए, पर
लता के लिए यह मामूली सीढ़ी है. बहुत
क्रेता, जो अपनी बिक्री दूनी कर सकते
र नहीं कर पाते, वे योजना बनाने,
नेविचारने, ग्राहकों की परख करने,
क्षेत्र का ज्ञान बढ़ाने का काम नहीं कर
. इन कमियों से उन का उत्साह मरता
र फिर बिक्री नहीं बढ़ पाती.

अधिकांश व्यक्तियों को यदि उन के
से छोड़ दिया जाए तो वे बैठ जाएंगे.
म बंद कर देंगे, क्योंकि काम करवाने की
का उन में अभाव रहता है. उन के
तत्व में पहल कर सूझबूझ से काम
का गुण होता ही नहीं. सोचनेविचारने
ना बनाने की शक्ति उन में होती ही

अब आप ही को तय करना है कि आप
श्रेणी में आते हैं. यदि प्रथम में हैं तो
बात नहीं, सफलता आप को मिल कर
. पर यदि दूसरी व तीसरी में हैं तो कुछ
की बात है, ताकि श्रेणी पार कर प्रथम
में प्रवेश पा सकें. यह कोई जन्मजात
नहीं होता, प्रयास कर इसे विकसित
जा सकता है.

किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए
हमारा लक्ष्य होना चाहिए. उसे पाने की
योजना हो. साथ ही अदम्य आत्मविश्वास
हो ताकि हम बाधाओं व कठिनाइयों से लड़
सकें. फिर चाहिए नेतृत्व का गुण. नेतृत्व
गुण के आधार में होती है पहल शक्ति.
पहल शक्ति से ही तो हम अवसर पकड़
सकते हैं. यह कहना बेमानी है कि हमें
अवसर नहीं मिले, नहीं तो हम जाने कहां
पहुंच जाते. अवसर हर जगह हैं. हम हमेशा
अवसरों की खान पर खड़े रहते हैं. पहल
शक्ति न होने से न हम उन्हें पहचान पाते हैं
और न पकड़ पाते हैं.

लक्ष्य कैसे पाएं?

जिस एक गुण पर हमारा पूरा भविष्य
निर्भर करता है. उसे पाया कैसे जाए? यह
अवश्य है कि हमारे मातापिता व शिक्षकों
ने हमारे साथ ज्यादती की है. हमें अपनी
पहल शक्ति विकसित करने का अवसर
नहीं दिया. सारा बचपन व किशोरावस्था
'यह करो, वह न करो,' 'यह ऐसे करो, वह
वैसे करो,' जैसे निर्देशों की बेड़ियों में
जकड़ा रहा. कभी मातापिता की तो कभी
शिक्षक की. तो क्या हम इस स्थिति से
समझौता कर लें. नहीं, समझौता तो
आत्महत्या होगी. समझौता करना ही नहीं
है. हम अब भी इन बेड़ियों को काट कर
द्वितीय श्रेणी से प्रथम श्रेणी में पहुंच सकते
हैं. आदमी वह सब कर सकता है व बन
सकता है, जो वह सोचता है. व चाहता है.

अतः यदि आज आप तय कर लें कि
अपने में पहल शक्ति को विकसित करना है
तो कोई रोक नहीं सकता. इस शक्ति के
जागते ही आत्मविश्वास आएगा और
कालांतर में आप प्रथम श्रेणी के व्यक्ति हो
जाएंगे. इस संबंध में आप को अपना लक्ष्य
निर्धारित करना होगा. उसे प्राप्त करने के
लिए प्रतिदिन कुछ न कुछ करना होगा कि
लक्ष्य प्राप्ति में एक कदम आगे बढ़ा जा
सके.

आज का काम आज ही करना होगा.

जो व्यक्ति कल के लिए काम टालते हैं वह पहल शक्ति विकसित कर ही नहीं सकते. आज का काम आज ही करने का मतलब है अपनी निर्णय शक्ति बढ़ाना.

प्रतिदिन बिना किसी के निर्देश के एक काम स्वयं ही करो. अपने चारों ओर दृष्टि डाल कर अपेक्षित कार्य करो पर इस से किसी लाभ की आशा न रखो. कम से कम एक व्यक्ति को बिना स्वार्थ के एक काम स्वयं ही करने की प्रेरणा दो.

इस प्रणाली को अपना कर हम अपने व्यक्तित्व से स्वार्थ को कुछ मात्रा में कम कर सकते हैं. स्वार्थ से ऊपर उठने के प्रयास से हमारा दृष्टिकोण विशाल होने लगेगा.

प्रकृति का नियम है कि किसी भी वस्तु को काम में लाने से वह पुष्ट व सक्षम होती है. अपने हाथों से हम जितना काम लेते हैं वे उतने ही बलवान होते हैं. जितना हम बुद्धि से काम लेंगे वह उतनी हीं प्रखर होगी.

जिस वस्तु को हम दूसरों को देते हैं वही बाद में हमें प्रचुर मात्रा में मिलती है. दूसरों को शिक्षा दे हम स्वयं और शिक्षित होते हैं. हम जैसा बोते हैं वैसा ही काटते हैं, जैसा व्यवहार देते हैं बदले में वैसा ही मिलता है.

बगैर आदेश काम

अत: जब हम दूसरों में पहल शक्ति जगाने की कोशिश करेंगे तो स्वयं की पहल शक्ति विकसित होगी ही. उचित है हम प्रतिदिन के छोटेमोटे कार्य बिना किसी के आदेश की प्रतीक्षा किए स्वयं ही सोच कर करते चलें. घर में भी अनेक काम होते हैं उन्हें भी स्वयं निर्णय ले निबटाते चलें. साथ ही दूसरों की मदद भी करते चलें.

इस गुण को विकसित करने का सर्वोत्तम तरीका है कि हम जानने की कोशिश करें कि किसे हमारी सेवा की जरूरत है. फिर उस की सहायता करें. किसी के यहां विवाह हो रहा है जा कर कोई काम हाथ में ले लो. कोई वृद्ध या नेत्रहीन सड़क पार कर रहा है, हाथ पकड़ दूसरी ओर करा दें. कोई विद्यार्थी अपनी कठिनाई दूर करना चाहता है, थोड़ी मदद दे दो. प्रतिदिन एक नहीं सैकड़ों अवसर सेवा प्रदान करने के आते हैं. अवसरों का उपयोग कर हम अपनी पहल शक्ति को प्रबल बना सकते हैं. बदले में कुछ पाने की आकांक्षा न हो, केवल यह हो कि हमारी पहल शक्ति व सूझबूझ बढ़ती रही. जो व्यक्ति ह सहायता के बदले कुछ पाने की इच्छा करते हैं वे घाटे में ही रहते हैं.

दूसरों की सहायता करते समय जो भी संपर्क में आते हैं उन की पहल शक्ति बढ़ाने में मदद दो. 'चित्त भी मेरी और पट्ट भी मेरी' की नीति से न केवल अपनी पहल शक्ति वरन दूसरों की भी नष्ट होती है. ज हम स्वयं जिम्मेदारी की भावना से क करेंगे, तब ही हम दूसरों को उतने दायित्व से काम करने की प्रेरणा दे सकें.

हमारी सीमाएं वे ही होती हैं जो ह अपने दिमाग में बैठा लेते हैं. इस बात ध्यान में रख, हमें जितना पैसा उस तनिक अच्छा और अधिक काम देने की आदत डालनी चाहिए. घर जाने के लि घड़ी पर नजर न रहे. इस मनोवृत्ति अपनाने से हम हमेशा तलाश में रहेंगे हम और क्या कर सकते हैं, जिस से मालि का भला हो. इस से मालिक का तो भ होता ही है, हमारा अपना भी कम होता. हमारी पहल शक्ति विकसित होती जो भविष्य में लाभकारी होती है.

किसी भी काम को बारबार करने वह आदत में शुमार हो जाता है. बार पहल करने से वह भी आदत का रूप जीवन का हिस्सा बन जाती है.

सब से अधिक प्रभावशाली वे व्यक्ति होते हैं जो पहल शक्ति से स्वयं काम कर हैं और जो दूसरों को प्रेरित कर सकते

स्वयं को सफलता के लिए तैयार क समय हमें अपने पैरों पर खड़ा होना होता प्रतीक्षा नहीं करनी है कि कोई ठेला ल विचार दे या सलाह दे तो हम रेंगना करें.

एक छोटी सी सफलता ने जीवन को नया मोड़ दिया.

• सुधा

टपन से कला में रुचि होने की वजह से चित्रकार बनना ही लक्ष्य था. रंगबिरंगी तसवीरें या मनोरम ृतिक दृश्य देख कर मन करता कि मैं भी कागज पर उतार लूं और कुछ न कुछ ी रहती. अकसर सोचती वह दिन कब ा जब मैं हेमा, रेखा या किसी भी चरित्र रंगों में जीवंत कर दूंगी या फिर च्छादित चोटियों को, सागर में उठती ों को अपनी कला में कैद कर सकूंगी.

इसी आकांक्षा के साथ मैं ने मनोविज्ञान त्रकला विषयों के साथ कला स्नातक की ी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की. इस दौरान त्र चित्रकला प्रतियोगिताओं में प्रथम या य पुरस्कार भी प्राप्त किए.

इसी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए मैं कला में एम.ए. करना चाहती थी. चूंकि के लिए मुझे अन्य जगहों पर प्रवेश लेने के फार्म भरना था, सो मांबाप से बात करने ैं उस वक्त कठोर धरातल पर आ गिरी बाहर पढ़ने के लिए उन्होंने साफ मना िया.

कारण एक नहीं, तीनतीन थे. मैं लड़की ल्दी अस्वस्थ हो जाती थी और आर्थिक ि भी कमजोर थी. भाई पहले ही बाहर था. सो एक समय में दोदो की पढ़ाई का उठाना संभव नहीं था.

मजबूरन एम.ए. (अंगरेजी साहित्य) में ी से लिया. लेकिन दिलोदिमाग में कलाकार बनने के सपनों ने मुझे भावुक बना दिया. जब कुछ भी बनता न दिखाई दिया तो स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया. किसी काम में मन नहीं लगता. न पढ़ाई, न कोई और काम कर पाती. इधरउधर घूमना शुरू कर दिया. कालिज या विश्वविद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिक रुचि लेने लगी.

संकल्प, संघर्ष और सफलता

एक संकल्प को पूरा करने के लिए जीवन में संघर्ष करना पड़ता है. संघर्ष के दौर में अनेक तरह के अनुभव होते हैं.

मुक्ता अपने पाठकों से जीवन के उतारचढ़ाव के उसी दौर को जानना चाहती है. ताकि आप का अनुभव अन्य पाठकों के लिए प्रेरणा बन जाए. यह भी हो सकता है कि आप की असफलता की कमियों को दूर कर कोई व्यक्ति जिंदगी की दौड़ में सफल हो जाए.

इस नियमित स्तंभ के लिए आप के अनुभव आमंत्रित हैं. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा.

पता है :
मुक्ता, संपादन विभाग, ई-3,
झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055.

उस दिन हकीकत का सामना करना पड़ा जब परीक्षा सिर पर आ गई. अब क्या करूं कुछ भी तो नहीं पढ़ा. फेल होने के डर से मजबूरन थोड़ीबहुत पढ़ाई की और तृतीय श्रेणी में पास हो गई. नतीजे ने और परेशान कर दिया.

दूसरा वर्ष भी इसी तरह व्यर्थ गंवा दिया. कभी सोचती, अपनी चित्रकारियां बना कर प्रदर्शनी लगा लूं. मगर सोचना ही आसान था. इस के लिए पैसा कहां था. चित्रकला भी जैसे अमीर लोगों की पूंजी हो कर रह गई है. तनावग्रस्त हो चुकी थी. इसी उधेड़बुन में मैं ने बी.एड. में दाखिला ले लिया.

इस के साथ ही जिंदगी ने एक नया मोड़ ले लिया. कालिज में प्रत्येक सोमवार सुबह को सभा होती थी, जिस में विद्यार्थी अपनीअपनी कला को प्रदर्शित करते थे. मुझे अपने वर्ग का सचिव बना दिया गया. पहली बार मंच संचालन किया तो प्रिंसिपल तक ने मेरे कार्य की बेहद तारीफ की.

मैं हर कला में भाग लेने लगी. साथ ही मैं ने कालिज पत्रिका के लिए लिखना भी शुरू कर दिया. इन सब से मुझे बेहद खुशी मिलती. मैं फिर से हर चीज में रुचि लेने लगी. मनोविज्ञान की छात्रा होने की वजह से यह उचित लगा कि यदि एक संकल्पित लक्ष्य की पूर्ति न हो तो लक्ष्य को ही बदल दो, यही सामंजस्य है.

बी.एड. के पश्चात एम.एड. में प्रवेश ले लिया. इस तरह से अध्यापन का क्षेत्र मेरे जीवन से जुड़ता गया. साथ ही लेखन में रुचि बढ़ती गई और इस के लिए समय भी मिल जाता था.

इसी दौरान 'वूमेंस इरा' में मेरा एक छोटा सा स्तंभ छपा तो मैं बेहद खुश हुई. इस से मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला. सफलता से उत्साहित हो कर मैं ने एम.एड. व एम. फिल. में प्रथम श्रेणी प्राप्त की.

हालांकि मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है, फिर भी एक छोटी सी सफलता से उत्साहित हो कर मैं धीरेधीरे सफलता के पथ पर अग्रसर हो रही हूं.

शि

हमारे वि
ने की आदत
एक दिन
किसी बात
कर पाए थे
उन्होंने पी

बात उस
रहे हुए थे वि
अध्यापक से
उस की ब

एक बार
पूछा, "क्या तु
आ है?"
कक्षा में कु
र इजाजत दें
अध्यापिक
मुझे तुम

एक बार
गई. मुझे स
र नहीं बुन
मैं ने चुप
अपने स्वेटर

एक रवि
री कक्षा के
पढ़ाते?"
"क्योंकि
य हाजिर

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : मुक्ता, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

हमारे विज्ञान के अध्यापक बड़े कड़क मिजाज हैं. उन की गुस्से में 'ऊंऊं तोड़ के रख दूंगा.' कहने की आदत थी.

एक दिन मैं व मेरे अन्य दो मित्र किसी काम से उन के घर गए. वहां पर वह अपनी पत्नी के साथ किसी बात पर झगड़ रहे थे तभी उन के मुंह से निकला, "ऊं ऊं" वह अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाए थे कि हम लोग बोल पड़े "तोड़ के रख दूंगा."

उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा और हमें देखते ही झेंप कर रह गए. **—ओमप्रकाश आचार्य**

*

बात उस समय की है जब मैं छठी कक्षा का छात्र था. हमारी परीक्षा समाप्त हुए अभी कुछ दिन ही हुए थे कि भौतिक विज्ञान में अपना परीक्षाफल जानने के लिए मेरे सहपाठी अजय ने एक अध्यापक से पूछा, "प्रथम श्रेणी पाने के लिए मुझे कितना फासला तय करना है?"

उस की बात सुन कर अध्यापक ने व्यंग्य करते हुए कहा 'प्रकाश वर्षों में बताऊं.'

—उपेंद्र राघव

*

एक बार हमारी कक्षा में हिंदी की अध्यापिका व्याकरण पढ़ा रही थी. अचानक अध्यापिका ने पूछा, "क्या तुम में से कोई भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों का एक वाक्य में प्रयोग कर सकता है?"

कक्षा में कुछ देर सन्नाटा छाया रहा. फिर एक लड़का खड़ा हुआ और बोला, "मैडम, यदि आप इजाजत दें तो बताऊं?"

अध्यापिका ने उसे शाबाशी देते हुए उत्तर देने को कहा. इस पर लड़का बोला, "सौ साल पहले मुझे तुम से प्यार था, आज भी है और कल भी रहेगा." **—काशीराम शर्मा**

*

एक बार मैं अपनी कक्षा में एक स्वेटर बुन रही थी. अचानक वहां हमारी अध्यापिका आ गईं. मुझे स्वेटर बुनने में तल्लीन देख कर डांटने लगीं, "तुम्हें पता नहीं कि कक्षा में स्वेटर नहीं बुनना चाहिए."

मैं ने चुपचाप स्वेटर बस्ते में रख लिया. थोड़ी देर बाद जब वह जाने लगीं तो बोलीं, "अपने स्वेटर का नमूना मुझे भी बता देना." **—कृष्ण तिवारी**

*

एक रविवार को टीवी पर हिंदी फीचर फिल्म 'दिल्लगी' आई थी. अगले सोमवार को हमारी कक्षा के छात्र ने संस्कृत अध्यापक से पूछा, "सर, आप धर्मेंद्र की तरह संस्कृत क्यों नहीं पढ़ाते?"

"क्योंकि बाजू की कक्षा में कोई हेमामालिनी कैमिस्ट्री नहीं पढ़ाती," अध्यापक का जवाब हाजिर था.

—मनोज एच. जैन

भयमुक्त

कहानी ● अरुण अलबेला

भूतप्रेत की कहानियां पढ़तेपढ़ते रेखा एक दिन खुद ही भ्रम की चुड़ैल के चक्कर में फंस काल के गाल में समा गई और अपने द्वारा सुनाई गई भूतों की कहानियों की तरह प्रेत बन कर मेरे वजूद के ऊपर इस तरह से हावी हो गई कि मैं स्वयं को प्रेतग्रस्त सी महसूस करने लगी. अस्तित्वहीन गलत धारणाओं के प्रकोप से पैदा हुए उस जानलेवा भय से क्या मैं स्वयं को कभी मुक्त कर सकी?

रेखा को जाना ही था तो मुझ से बोल कर जाती. गई भी तो अचानक और ऐसे गई कि उस का अब कर न आना ही ठीक है क्योंकि मैं उस के से ही डरने लगी हूं.

जरा भी हवा की सरसराहट होती है तो है कि रेखा पर्दे की ओट से आ कर मेरे खड़ी हो जाने वाली है. उस की दी हुई पत्रिकाएं अलमारी में अब भी पड़ी हुई हैं. भी वह किसी पत्रिका में भूतप्रेत की चक कहानियां पढ़ती, दौड़ी आती और पढ़ने के लिए उत्साहित करती. मैं भी कतावश पूरी कहानी पढ़ जाती एक सा से कि 'भूत कैसे होते हैं? प्रेतात्मा का कैसे होता है? रुहें कैसे भटकती हैं?'

रेखा प्रायः प्रेतात्माओं की बातें कर के रोमांचित और भयभीत करती रहती थी.

यह सुन जहां मैं उस से 'भूतप्रेत षांक' लाने को कहती वहीं प्रभा मुझ पर ला उठती, "कैसी कहानियां पढ़ने लगी हो ? इस से स्वच्छ मनमस्तिष्क पर भय के बादल मंडराते रहेंगे और जब भी पलकें कोगी या किसी अंधेरे में जाओगी तो कोई भटकती नजर आएगी. इन भयानक ों को हटा कर तुम्हें जीवन को स्वच्छ रों की ओर मोड़ना चाहिए."

रेखा मुझे जितनी प्रिय लगती थी उतनी भा को अप्रिय, कारण विचारों की भिन्नता थी. प्रभा नहीं चाहती थी कि रेखा ऐसी नियों के घेरे में मुझे रखे. यह बात सच भी क जब से मैं वह सब पढ़ने लगी थी, दिल होने लगी थी. अंधेरे में जाने का स नहीं होता था. डर लगता था, कहीं कोने से कोई भूत निकल कर सामने न हो जाए.

मेरा हृदय इतना दुर्बल हो चला था कि दोमंजिले भवन से नीचे की मंजिल में जाने का साहस नहीं कर पाती थी. जब भी बिजली गुल होती, मैं भय से चीख उठती और अनिल से लिपट कर थरथराने लगती.

अनिल कह देते, "प्रभा सच ही कहती है कि तुम पर कल्पनाओं का भूत सवार रहता है, जो तुम्हें परेशान किए रहता है. मैं ने रमेश से कह दिया है कि घर खाली कर दे और रेखा के साथ अन्यत्र रहे. मैं किसी सुलझे हुए स्वच्छ विचारों वाले दंपती को नीचे की मंजिल किराए पर देना चाहता हूं. वैसे रमेश तो ठीक है पर रेखा नहीं."

"न... नहीं... ऐसा न कहो, रेखा मेरी प्रिय सहेली हो गई है. जब से वह आई है, मेरा समय कुशलतापूर्वक, हंसीदिल्लगी से कट रहा है."

"जिसे तुम कुशल कह रही हो वह हमारे लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है. तुम्हारे अंदर लौकिकपारलौकिक विषयों पर ऐसे अधकचरे विचार रेखा द्वारा भरे जा रहे हैं जो हमारे लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है. इसी के तहत हमें यह निर्णय लेना पड़ रहा है कि उसे यहां से हटाया जाए."

"नहीं... ऐसा सोचना भी नहीं." मैं रेखा के हटाए जाने की कल्पना से ही दुखी होने लगी थी. वह कुछ माह में ही मेरी इतनी प्रिय हो गई थी कि उस की अनुपस्थिति मात्र से मैं चिंतित हो उठती थी. सोचती थी, जीवन में जो अकेलापन है वह रेखा से ही तो दूर होता है. प्रभा दिन में मेडिकल कालिज चली जाती है और अनिल दफ्तर. उधर रमेश के दफ्तर चले जाने पर रेखा भी अकेली रह जाती है और अपना अकेलापन दूर करने के लिए मेरे पास आ बैठती है, कुछ पत्रिकाएं ले कर.

रेखा मेरे मकान की निचली मंजिल में किराए पर रहती थी, रमेश के साथ. साथ में उस की वृद्धा सास भी थी जो कभी बीमार होने से अस्पताल में रहती थी, कभी घर में.

इस में शक नहीं कि रेखा मीठे स्वभाव वाली मृदुभाषिणी महिला थी. लंबी, छरहरी, गोरीचिट्टी. उस में मुझ जैसी महिलाओं को आकर्षित करने की विशेष क्षमता थी. इसी बल पर उस ने पड़ोस में भी कई सहेलियां बना रखी थीं. उस की बड़ीबड़ी आंखें बेहद प्यारी लगती थीं. उस के घने लंबे बालों से चेहरे का सौंदर्य और बढ़ा रहता था. लेकिन उस में अंधविश्वासों के अवगुण काजल से चिपके हुए थे. जहां वह सौंदर्य निखारने के प्रति सचेत रहती थी वहीं वह भजनपूजन के प्रति भी दृढ़ रहती थी.

संध्या होते ही वह घर में लोहबान जलाती ताकि किसी गलत आत्मा का प्रवेश न हो. वह अपने वाकचातुर्य से कई बार मुझे ओझा, संतफकीर के पास भी ले गई थी. उस ने एक दिन कहा था "दीदी, तुम्हारे विवाह को सात साल हो गए, फिर क्या कारण है कि स्वस्थ पति के रहते निस्संतान बनी फिर रही हो? मुझे देखो, विवाह के दो साल बाद ही गर्भवती हूं. जानती हो इस का कारण? मैं ने अपने ऊपर कभी किसी गलत आत्मा की छाया पड़ने नहीं दी है. 'पगला बाबा' का दिया हुआ ताबीज सदा बांधे रहती हूं कमर में."

वह मुझे भी बाबा के पास ले गई थी. बाबा ने दावे के साथ मुझे बता दिया था कि मुझ पर प्रेतात्मा है जो संतान नहीं होने दे रही है.

मैं अनिल और प्रभा के अनजाने हजारों रुपए फूंक चुकी थी, झाड़फूंक में. फिर भी संतानवती नहीं हो सकी थी. डाक्टरी परीक्षण के बाद अनिल में ही कुछ कमी थी, जिसे वह दवाइयां खा कर पूरा करने में लगे थे.

बाबा के कथनानुसार मुझ में यह विश्वास गहराई में जड़ जमा चुका था कि मुझ पर प्रेतात्मा है. मैं यदाकदा डर से अनियंत्रित हो जाती थी. मस्तिष्क बेकाम हो जाता था. झंझावात से झूमने लगती थी. रेखा किसी ओझागुणी को बुलाने की सलाह देती थी. अनिल गंभीर हो जाते थे.

"नहीं, माधवी को मनोवैज्ञानिक उपचार से ही ठीक किया जा सकता है."

प्रभा मुझे समझाती "भाभी, मैं ने कालिज की प्रयोगशाला में नरकंकाल को छुआ है, कई लाशों पर मैं ने प्रयोग किए हैं. पर कुछ तो नहीं हुआ मुझे. प्रेतात्माओं का प्रकोप होता तो क्या मैं सकुशल तुम्हारे सामने खड़ी होती? तुम कहोगी तो मैं भयंकर अंधकार में भी श्मशान की ओर जा सकती हूं. मन के अंदर जब भय का बादल मंडराने लगता है और भयावनी कल्पनाओं की आंधी चलने लगती है तो भूतों के समूह नजर आने लगते हैं. भूतप्रेत कुछ नहीं, मस्तिष्क में उपजे गलत विचार हैं."

वहीं रेखा तर्क देती "तो क्या पत्रपत्रिकाओं में छपी प्रेतात्मासंबंधी कहानियां झूठी होती हैं? आखिर क्यों लिखी जाती हैं ऐसी कहानियां? इतने मौलवी, पंडित, ओझा, झाड़फूंक में लगे रहते हैं क्या सब झूठ है?"

लेकिन मुझे क्या पता था कि रेखा वर्तमान से भूत हो जाएगी? इतनी जल्दी वह काल के गाल में समा जाएगी, यह मेरी कल्पना से बाहर की बात थी. मैं ने सोचा भी नहीं था कि वह मुझे छोड़ कर चल देगी... अचानक...

रेखा दो मंजिले से उतर रही थी. अचानक डी.वी.सी. का पावर गुल हुआ और भवन अंधकार में डूब गया. इस के साथ ही रेखा की भयाक्रांत चीख गूंज उठी "भूत...भूत चुड़ैल." वह सीढ़ियों से लुढ़कती नीचे आ गिरी. टार्च जला कर रमेश दौड़ा. ऊपर से अनिल और मैं प्रभा के साथ नीचे गई... दृश्य देख दहल गई. सिर चकरा गया... रेखा का सिर फट चुका था. वह बड़बड़ा रही थी, "अंधेरे में मैं ने सफेद साड़ी पहने एक औरत को देखा था... ऊपर बाथरूम के सामने चलते हुए..."

प्रभा सफाई में बोली "वह तो मैं थी."

"नहीं... तुम नहीं थी... वह लंबी थी... चुड़ैल सी."

मैं भय से कांप उठी थी. मुझे अपना ही घर भूतहा लगने लगा था. हालांकि रेखा के आने से पहले ऐसी कोई बात नहीं थी मन में. रेखा को उसी क्षण हस्पताल में दाखिल कराया गया था. उस के गले की हड्डियां टूट चुकी थीं और पेट का बच्चा मर चुका था. तीन घंटे बाद ही उस ने दम तोड़ दिया था. वह लाश बन कर रह गई थी. मैं उसे इस रूप में देख अनियंत्रित हो उठी थी. उस के होठों की थिरकन गायब थी. आंखें पथराई सी खुली थीं. जीभ एक कोने से बाहर निकली हुई थी... स्वर कंठ की तराई में खो गए थे.

जब मुझे बताया गया कि रेखा नहीं रही

मुझे लगा कि भूत बन कर वह मुझ पर छाने लगी है. मुझे बुला रही है अपने पास... हृदय के तारतार कांपने लगे. दांत कटकटाने लगे. अवयवों में शिथिलता व्यापने लगी... पैरों में चलने की शक्ति न रही. प्रभा ने मुझे संभाल कर कार में बैठाया.

मैं बकने लगी "मैं उस भवन में नहीं जाऊंगी जहां रेखा गिर कर मरी है. उस की आत्मा वहां पहुंच चुकी होगी. उस के पेट में बच्चा भी मरा है. वह चुड़ैल बन कर आएगी."

"कुछ नहीं होगा." प्रभा ने समझाना चाहा "किस घर में लोग नहीं मरते? मरने वाले भूत होते जाते तो सृष्टि में अब तक अरबोंखरबों की संख्या में भूत विचरते होते. आदमी का अस्तित्व ही नहीं होता. यह तुम्हारे मन का वहम है. भाभी, हस्पताल में रोज लोग मरते हैं, तो क्या हस्पताल भूतों के गढ़ बन गए हैं?... रेखा मर चुकी, अब कभी नहीं आएगी. उस के शरीर को जला दिया जाएगा. फिर आने का प्रश्न ही नहीं उठता. हां, उस की यादों को दिमाग में रखोगी तो 'यादों का भूत' ही विभिन्न रूपरेखाओं में दिखाई देगा.

मुझे घर लाया गया. मैं कभी होश में आती, कभी बेहोश हो जाती. मैं जिस रेखा से अतिशय प्यार करती थी उसी से अतिशय भयभीत होने लगी. तभी तो मैं ने स्पष्ट कह दिया, "अनिल, रेखा के शव को हस्तपाल से ही श्मशानघाट भिजवाना. मत लाने देना घर."

"क्यों, लाने से क्या होगा?" अनिल ने समझाना चाहा. "व्यर्थ पागल न होओ, माधवी. सचाई का सामना करो, तभी तुम में साहस का संचार होगा, सचाई से दूर भागने वाले बुजदिल होते हैं. तुम भी साहसी बनो. रेखा का अंजाम देखो. वह डरी न होती तो निश्चय ही सीढ़ियों से नहीं लुढ़कती. कल्पित भय ने उसे मार दिया. जैसे पशुपक्षी, कुत्तेबिल्ली आदि मरते हैं और तुम्हें उन से डर नहीं लगता, तो आदमी के मृत शरीर से डर

वह बोले, "मैं तुम्हें अपनी बाहों में कसे हुए था. अपने हाथों से सहला रहा था. मेरे प्यार को तुम रेखा का भूत समझ बैठी. माधवी? आश्चर्य है.
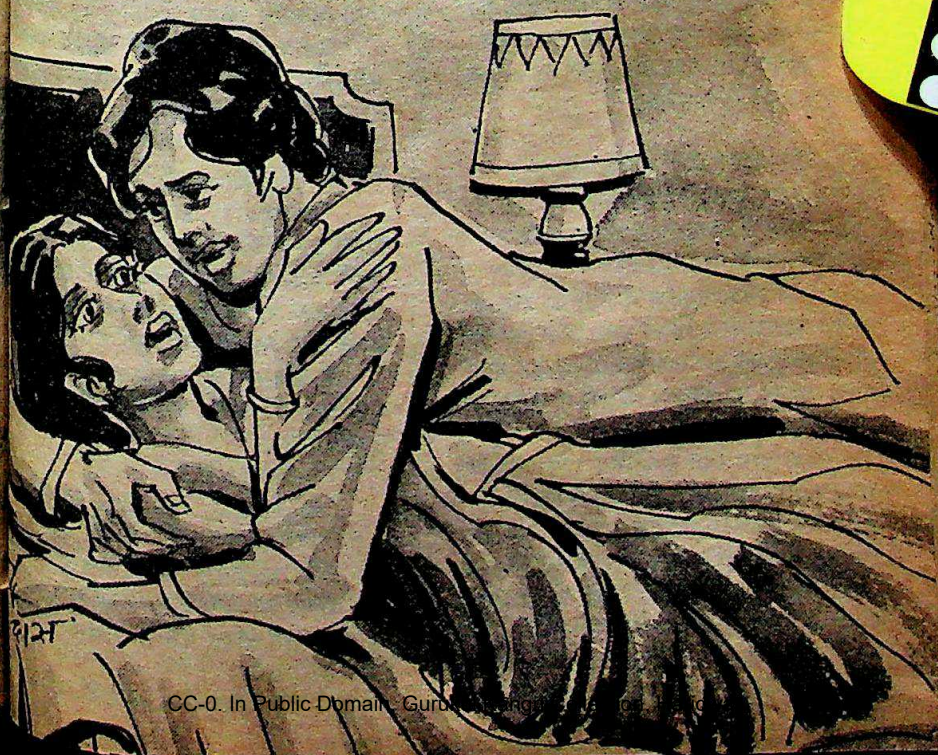
कैसा? कभी तुम ने अपने दासी कुत्ते के भूत को देखा है? वह भी तो इसी घर में मरा था. मेरे मातापिता भी तो इसी घर में मरे थे. कभी तो नहीं आते... भ्रम ही भूत का रूप धारण कर के सामने खड़ा होता है. दुर्बल मनमस्तिष्क वाले विशेष रूप से इस के शिकार होते हैं."

"पत्रिकाओं में मैं पढ़ी हूं कि जिस की अकाल मृत्यु होती है, वे भूत हो जाते हैं. जैसे जल कर, गिर कर, कट कर मरने वाले भूत बन कर नाचते हैं."

"वे सब बातें इसलिए लिखी जाती हैं ताकि लोग चटखारे ले कर पढ़ें और पत्रिकाओं की बिक्री बढ़े."

"आत्माएं किसी पर सवार हो कर बोलती हैं, क्या यह भी झूठ है?"

अनिल मेरे प्रश्न पर झुंझला गए "हम क्यों सोचें ऐसी वाहियात बातें जिस से लाभ नहीं हानि ही हो सकती है."

"लेकिन रेखा का मृत शरीर यहां न आने दो."

"जो सामाजिक कार्य है उसे तो करना ही होगा. जरा सोचो, रमेश दुखी है. उस के कार्य में बाधा उत्पन्न करने का अर्थ उसे और दुख पहुंचाना है. उस की मां भी पुराने विचारों की है. वह चाहती है कि शव को स्नान करा उस की मांग में सिंदूर भरा जाए और एक दुलहन सा श्मशान घाट भेजा जाए. तुम्हें तो जा कर उन्हें सांत्वना देनी चाहिए."

मैं अनिल को समझा नहीं पा रही थी, न वह मेरे भय को समझ पा रहे थे. रेखा का जीवित और मृत मुखमंडल अविराम गति से मेरे नेत्रपटल पर घूम रहा था.

तभी रमेश एंबुलेंस में रेखा का शव ले आया. मेरा अंतर लावे सा फूटने लगा. आंखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी. मैं उठ नहीं सकी बिस्तर से. चुपचाप खिड़की से बाहर का दृश्य देखती रही.

कुछ लोग रेखा के पार्थिव शरीर को नीचे के मंजिल में ले आए, सामाजिक रस्मरिवाज पूरा करने के लिए. मैं सोच रही थी, 'यह प्रभा कैसे इतनी साहसी है कि नीचे गई हुई है रमेश की बूढ़ी मां का हाथ बंटाने? रेखा के शव को नहला कर नए वस्त्र में लपेटने और मांग में सिंदूर भरने? मैं क्यों नहीं यह साहस कर पा रही हूं? इतनी बुजदिल क्यों हो गई हूं मैं? रेखा ने ही तो मुझे ऐसा बनाया है.' रेखा को अर्थी पर ले जाया जा रहा था तो वह सच ही दुलहन सी लग रही थी. मधुरात्रि में सोई हुई दुलहन सी... लग रहा था, वह मुझे बुला रही है, 'सब मुझे विदा करने आए, एक तुम ही नहीं आई माधवी दीदी. तुम मुझे छोड़ सकती हो, मैं नहीं. मैं सदा रहूंगी तुम्हारे पास. तुम्हारे इर्दगिर्द.'

"नहीं...नहीं." मैं चीख उठी. "मुझे तुम से नफरत होने लगी है. मेरे पास आना भी नहीं.. नहीं तो.. पीपल के जलते अंगारे से तुम्हें लुआठ दूंगी."

"भाभी..." प्रभा आ गई. "खुद को संभालो, भाभी."

"नहीं संभला जाता प्रभा."

"तो समय ही तुम्हें सहारा देगा. बदलते वक्त के साथ सामान्य हो जाओगी. ऐसा ही होता आया है और होता रहेगा."

दूसरीतीसरी रात भी मुझे नींद नहीं आई. रेखा के निकट होने का एहसास होता रहा. आंखें मुंदती तो स्वप्न आने लगते. कभी वह हास्य बिखेरती निकट आती, कभी मृत हो कर ऊपर उड़ती जाती. कभी मोहक रूप दिखता, कभी विकराल स्वरूप.

एक रात लगा रेखा की कोमल भुजाएं मेरे इर्दगिर्द लिपट गई हैं और उस के हाथ मेरे सिर को सहलाए जा रहे हैं. फिर धीरेधीरे आ कर मेरे गले पर थम गए हैं. मेरी घिग्घी बंध गई. मैं भय से चीख उठी.

"क्या हुआ?" अनिल ने पूछ लिया. मैं हांफते हुए सब बक गई. वह बोले. "मैं तुम्हें अपनी बांहों में कसे हुए था. अपने हाथों से सहला रहा था. मेरे प्यार को तुम रेखा का भूत समझ बैठी, माधवी? आश्चर्य है."

मैं आश्वस्त हुई. तभी छत पर कुछ खुरखुराया. मैं अनिल से चिपक गई. "कौन हो सकता है ऊपर?"

"मैं देखता हूं."

"न...नहीं...र...रेखा का... भूत होगा."

"क्या बकती हो."

तभी चितकबरी बिल्ली नीचे कूद कर भागी. अनिल का भाषण आरंभ हो गया. वह कई उदाहरणों सहित मुझे भयमुक्त करने का प्रयास करने लगे.

एक रात मैं लघुशंका हेतु उठी. अनिल नशे

प्यार के स्वर

मेरे दिल के इन गीतों को
तुम अपने प्यार का सुर दे दो.
इन दर्द में डूबे बोलों को
तुम चंचल, मस्त, मधुर कर दो.
—अलका 'प्रीति'

. उठ नहीं सके. दरवाजा खोल कर बाहर जाने की हिम्मत नहीं हुई. खिड़की खोल कर देखने ...ी. आंखें पथरा गई. हृदय धड़कने लगा. होंठ ...पने लगे. सांसें रुकने लगी. सफेद साड़ी में खड़ी ...ी रेखा. बाल बिखरे हुए... मुंह में उंगलियां ...राते हुए.

"आना चाहती हो तो आओ न. मैं यहीं ...!" उस के होंठों से स्वर फूटे.

मैं भय से चीखी. अनिल होश में आ गए. ...चक कर पास आए.

"क्या हुआ?"

"वह रेखा."

"धत."

रेखा चल कर मेरे करीब आ गई. ...ड़की के निकट. आकृति बदल गई प्रभा के ...प में.

"भाभी, क्यों डर गईं? मैं ही तो हूं. मैं ने ...िड़की से झांकते देखा तो समझ गई कि बाहर ...ाना चाहती हो, सो बुलाने लगी."

"प्रभा, तुम्हें डर नहीं लगता अकेली रात ...ें?"

"डर कैसा भाभी? और किस से? जिस ...े जाना था गया, जो है उसे तो रहना ही ...ोगा. फिर डर का प्रश्न क्यों? वह भी अपने ...र में?"

श्राद्ध कर्म से पांच दिन पूर्व पड़ोस की ...ाची ने बताया "तेरा घर छुतके में पड़ा है. ...ाद्ध करने की सोच. पूजापाठ करा. पूरे भवन ...ें सफेदी करा."

"इतना सारा खर्च यह क्यों करें?" चाची ...की जवान बहू ने मेरे अंदर आक्रोश भरा.

शुरू किया "रमेश की जिम्मेदारी है यह."

मैं सफल खलनायिका सी रमेश को बुला बैठी. क्रोधातिरेक से बोली, "श्राद्ध कर्म ऐसा छुतके वाले घर में नहीं हो सकता. सब पवित्र और साफसुथरा होना चाहिए, तभी रेखा की आत्मा शांति पाएगी. क्यों नहीं सफेदी कराने की सोचते?"

"बहनजी, आप जो कहें करूं. मां बूढ़ी है, मार्गदर्शन नहीं कर पाती. आप ऐसा करें तो आभारी होऊंगा." रमेश सम्मानपूर्वक बोला.

"आत्म शांति हेतु अनुष्ठान, भजनपूजन भी कराना होगा. किसी धर्माचार्य को बुलाना."

"आचार्य को बुलाने से खर्च अधिक बैठेगा."

"कितना? चार हजार... पांच हजार... यही न?" मेरा क्रोध भभक उठा. "क्या रेखा से मोह खत्म हो चुका? उस के मरते ही खर्च से मुंह मोड़ने लगे? जिंदा होती तो उस के होंठों पर हंसी देखने के लिए, उस का दिल खुश करने के लिए, हजारों खर्च करने से पीछे नहीं रहते. क्या शरीर के साथ ही सारे रिश्ते खत्म हो गए?"

"नहीं... नहीं." रमेश की आंखें भर आईं. भावुक हो उठा.

मैं ने ऐसा अभिनय किया मानो रेखा की आत्मा आ गई हो. झूमते हुए कहने लगी, "मैं रेखा बोल रही हूं. मेरा आत्मा की शांति के लिए तुम्हें ये सारी वस्तुएं देनी होंगी जो मुझे प्रिय थीं. सुंदर पलंग, गलीचेदार तोशक, दामी चादर, किचन के सारे बरतन, सारे परिधान, सौंदर्य [illegible] मुझे खुश करना

होगा रमेश, तभी मैं शांत रहूंगी... नहीं तो पगपग पर बाधा उत्पन्न करूंगी.''

मुझे सब ने थाम लिया, मेरे मुंह पर पानी के छींटे डाले गए. मैं स्वयं डर गई कि कहीं सच ही रेखा मुझ पर सवार तो नहीं हो गई? मैं चीख पड़ी. अपनी ही क्रिया के वशीभूत हो मैं कल्पित आत्मा के चंगुल में फंस गई. आंखें बंद कर के लंबीलंबी सांस खींचने लगी.

प्रभा मेरा सिर सहला रही थी. रमेश की मां भी हाथपैर दबाने लगी. रमेश और अनिल में गहन विचारविमर्श होने लगा, अनिल कह रहे थे, ''माधवी पर गहन प्रभाव पड़ा है. इस के प्रभाव को मनोवैज्ञानिक ढंग से ही दूर किया जा सकता है.''

''हां, मैं किसी धर्माचार्य से पूजापाठ करा कर बहनजी को भयमुक्त करना चाहूंगा. रेखा को शांति मिले या न मिले, जो जीवित है उसे तो शांति से रहने का मार्ग मिलना चाहिए.''

और रमेश ने वे सारे प्रबंध किए जो मेरे भय को दूर करने के लिए काफी थे. आचार्य बुलाए गए थे.

मैं भी कैसी पगली थी कि सारे अपनत्व भूल कर उसे खर्च के लिए प्रेरित करती रही. मैं चाहने लगी थी कि श्राद्धकर्म शीघ्र निबटे और रमेश को घर खाली करने के लिए कहूं ताकि वह वृद्धा मां को ले कर हट जाए. न जाने कब मर जाए बुढ़िया भी... मैं अपने घर को मृतकस्थल नहीं बनाना चाहती थी. मैं जानती होती कि रेखा मरने वाली है तो दोस्ती भूल उसे निकाल चुकी होती.

मैं भूल गई थी कि इस जीवन में सब को मरना है. फिर मृत्यु से भय कैसा?

श्राद्ध भोज के दिन रमेश के यह कहने पर कि भोज में शामिल होना है, मैं इनकार कर गई, 'नहीं, श्राद्ध भोज खाना मेरे लिए ठीक न होगा, खाया भी नहीं जाएगा... वैसे रेखा की शांति के लिए लोगों को रसगुल्ले जरूर खिलाना, यह उस की प्रिय मिठाई थी. मैं भी खा लूंगी.''

''बहनजी, आप कहें तो छत पर भी भोजनार्थ टेंट, बेंचकुर्सियां लगवा दूं.''

''नहीं... नहीं... बाहर, सड़क पर.''

''जैसा आप कहें.''

पड़ोसी प्रोफेसर शर्मा अपनी छत पर टेंट लगाने को कह गए. दूसरे दिन ही उन के लड़के का नौकरी के लिए बुलावा आया तो अनिल बोले, ''देखा, शर्मा जी का भला ही हुआ. वैसे तुम्हारे निर्देशानुसार ही सब कुछ किया गया है अतः तुम्हारे अंदर भय नहीं होना चाहिए.''

मेरे अंदर थोड़ा साहस आया. हालांकि बहुत बाद में पता चला कि मेरे दिखावे के लिए ढेर सारे सामान लाए गए थे, पर किसी आचार्य को दान नहीं दिए गए थे. मुझ में मनोवैज्ञानिक बदलाव लाने के लिए ही सब कुछ किया गया था.

फिर भी मेरी बेरुखी के चलते रमेश ने घर खाली कर दिया.

निचली मंजिल भयानक और डरावनी लगने लगी. मैं पुनः डरने लगी. संयोग से मुझ पर मातृत्व के लक्षण दिखने लगे. उल्टियां होने लगी.

प्रभा ने कह दिया, ''भाभी, भयमुक्त रहो नहीं तो इस का बुरा प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ सकता है. स्वस्थ बच्चा चाहिए तो खुश रहो.''

''संतानवती होना मेरे जीवन का चरम सुख होगा, प्रभा, पर एक बात सोचती हूं.''

''क्या?''

''कहीं रेखा ही तो मेरे गर्भ में नहीं आ रही है?''

प्रभा हंस पड़ी. ''मान लिया कि वही है
...या उसे हटाना चाहोगी?''

''नहीं.''

''तो गलत बात सोचो नहीं. रेखा चली
...तो आने वाली नहीं और जो शिशु आने
...। है उस के स्वागत की तैयारी करो.''

नौवें माह मैं एक सुंदर बच्चे की मां बन
...तब तक निचली मंजिल में कोई
...एदार नहीं आया था. मैं अंधेरे में नीचे
...नहीं थी. प्रभा और अनिल ही जाते थे.
...किसी मेहमान या संबंधी के आने पर उसे
...के कमरों में ही सुलाया जाता था. उन्हें
...होता नहीं था. मैं समझने लगी थी कि
...भ्रम और भय झूठ था.

बिट्टू पांच माह का हो चला था. उस के
...एक बड़ी गुड़िया खरीद लाई थी मैं. रात
...आठ बज रहे थे. अनिल नशे में सोए थे.
...सहेली के यहां गई थी.

बिट्टू की गुड़िया सीढ़ियों से लुढ़कती
...ली मंजिल की ओर चली गई. बिट्टू रोने
... मैं ने अनिल को जगाना चाहता तो बोले,
...कर ले आओ. मेरी उठने की हिम्मत नहीं
... गिर जाऊंगा सीढ़ियों से.''

बिट्टू का रोना सहन नहीं हुआ.
...साहसपूर्वक सीढ़ियां उतरने लगी. नीचे अंधेरा
... सिर चकराने लगा, 'हां... यहीं से लुढ़की
...रेखा... कहीं मैं भी...'

मैं गिरने को हुई तो दीवार को थाम
...या. दिल ने कहा, 'निर्बल हुई तो लुढ़क कर
...गी... फिर बिट्टू का क्या होगा? तुम्हारे
...र से वंचित हो कर मर जाएगा.'

'नहीं... नहीं... मैं उस के लिए जीना
...ती हूं.' साहसपूर्वक मैं नीचे उतर गई. झुक
...र गुड़िया खोजने लगी. खोजती रही. भय
...गया अंदर से. दिमाग ने काम किया.
...मदे में जा कर स्वीच आन किया. प्रकाश से
...गया कोनाकोना. गुड़िया मिल गई. मैं ने
...ों ओर देखा. कहीं रेखा का भूत नहीं था.
...झूठ. मैं हर कमरे में चक्कर लगाने लगी.
...बेल बजी मैं घबरा गई. दौड़ कर द्वार
...ला. सामने खड़ी थी प्रभा. एक सहेली के
...थ.

''अरे भाभी, तुम? भैया कहां हैं, सामने
...उन्हें होना चाहिए था.''

''ऊपर हैं.''

''ओह... मेरी सहेली सविता से मिलो.
इसे निचली मंजिल किराए पर चाहिए.
मातापिता साथ रहेंगे.''

''और कोई?''

''शादी के विषय में जानना चाहती हो
न?'' प्रभा हंस पड़ी. सविता भी. मैं ने भी साथ
दिया.

तीनों के हासपरिहास से घर गूंजने लगा.
प्रभा बताने लगी, ''बड़ा फ्लैट इसी लिए
खोज रही है कि सविता की शादी वहीं से हो.''

''तब तो यह शुभ बात होगी.'' कह कर
मैं दोनों को खींचती ऊपर ले आई. मैं भयमुक्त
हो चली थी. ●

समाज सेवक नटवर ठक्कर

लेख • चितरंजन भारती
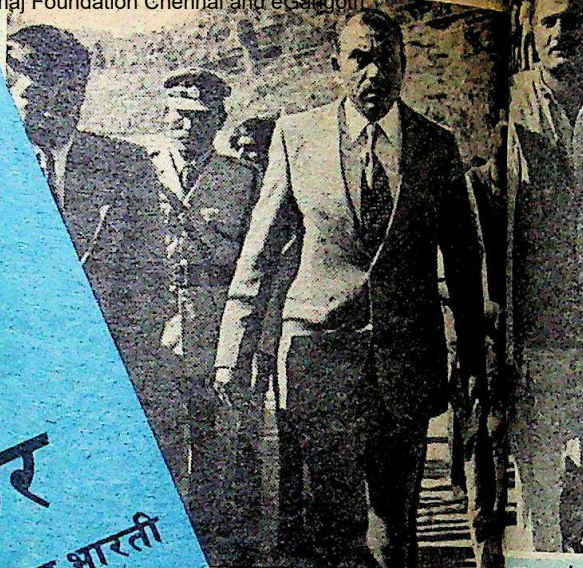
जीवन में रोमांच को बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है. कोई हिमालय की चोटी छूने की कोशिश करता है, तो कोई समुद्र की सीमा मापने का प्रयत्न करता है, कोई पाताल की गहराइयों की खोज में तो कोई आकाश की अनंत ऊंचाइयों के रहस्यों का पता करने में मशगूल है. इन सब से मनुष्य का मान बढ़ता है, देश का नाम होता है, नए रहस्यों की जानकारी मिलती है और मनुष्य सफलता के नए सोपान तय करता है.

मगर इसी पृथ्वी पर कुछ ऐसे भी अछूते क्षेत्र हैं, जिस की तरफ कदाचित ही किसी का ध्यान जाता हो. उन अछूते क्षेत्रों के लोग अपना सरल, अभावग्रस्त जीवन जीते चले जाते हैं और ऐसा ही एक अछूता क्षेत्र था भारत में 'नागालैंड'.

नागालैंड स्वतंत्रता प्राप्ति के कई साल बाद तक भूख, बीमारी, बेकारी, बदहाली का शिकार बना रहा. जब पानी सर से ऊपर गुजरने लगा और पृथकतावादी शक्तियां सिर उठाने लगीं तो सारा देश चिंतित हुआ, मगर समस्याओं का समाधान कैसे हो, यह कोई समझ नहीं पा रहा था.

ऐसे माहौल को बदलने के लिए 'गुजरात

अपने गुरु काका साहेब कालेलकर के साथ नटवर ठक्कर.
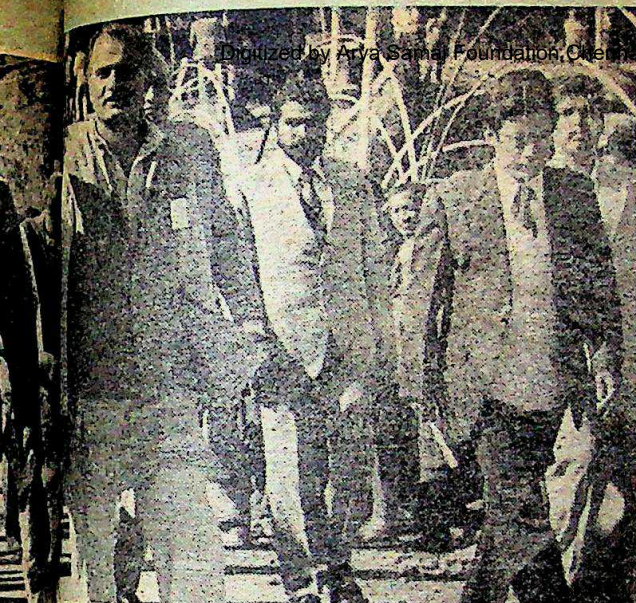
तत्कालीन प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई के साथ चुचुइमलांग गांव का भ्रमण करते हुए नटवर ठक्कर.

एक गांव वर्धा में काका साहेब लकर और उन के मित्रों के बीच ारविमर्श चल रहा था, बताते हैं ालैंड के चुचुइमलांग गांव में गांधी आश्रम संस्थापक, संचालक श्री नटवर ठक्कर...

"यह बात 1955 ई. के प्रारंभ की है. समय श्री ठक्कर हिमाचल प्रदेश के एक में समाजसेवा के लिए भेजे जाने वाले थे. र काका साहेब ने ऐन वक्त पर अपना य बदल दिया और यह सुझाव रखा कि ालैंड में कोई ऐसा समर्पित व्यक्ति जाए वहां नागाओं के बीच रह कर काम करे र नागाओं का शेष भारत के साथ नात्मक संबंध स्थापित कराने में योगी हो और इस के लिए उन्होंने चुनाव या मेरा, अपने प्रिय शिष्य नटवर ठक्कर

"उस समय मैं 23 वर्ष का युवक था, ोती कठिन थी फिर भी मैं ने उसे स्वीकार कर लिया पर वहां स्थान के चुनाव की स्या थी."

"गुवाहाटी में उस समय 'आओ नागा' ा पहाड़ियों के उच्चायुक्त थे. नागालैंड, म का एक जिला था. उन्होंने नागालैंड के ओ' क्षेत्र के गांवों के नागा प्रमुखों के पास यह संदेश भेजा कि क्या वह एक बाहरी व्यक्ति को अपने यहां आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक उत्थान के लिए काम करने देंगे?

"लगभग सभी ने इंकार कर दिया. दरअसल नागालैंड का हर गांव दूसरे गांव के

नागालैंड के चुचुइमलांग गांव में गांधी आश्रम की स्थापना कर के नटवर ठक्कर ने नागालैंड की समस्याओं को उजागर करने और समाधान की दिशा में मूलभूत कदम उठाने के ध्येय से जो रोमांचक सफर शुरू किया था आज वह कई विसंगतियों का सामना करते हुए रफ्तारफ्ता आगे बढ़ कर एक ऐसे मुकाम पर पहुंच गया है जहां पर ठक्कर के व्यक्तित्व की विशेषताओं का आभास मिल जाता है. आखिर क्या विशेषताएं हैं इस समाज सेवक की?

कुछ ग्रामीण महिलाओं के साथ नटवर ठक्कर : अपनत्व का नाता.

लिए विदेश की तरह था और उस का निवासी विदेशी. फिर बाहरी परिवेश का व्यक्ति तो बड़ा विदेशी हुआ न," ठक्कर साहब मुसकराकर बताते हैं.

"मगर चुचुइमलांग गांव के मुखिया ने इस के लिए स्वीकृति दे दी और इस प्रकार 1955 ई. के प्रारंभ में नागालैंड के मोकोकचुंग जिले के एक अत्यंत पिछड़े गांव चुचुइमलांग में 'भारतीय आदिम जाति सेवक संघ' के तत्त्वाधान में 'गांधी आश्रम' की स्थापना हुई."

नटवर ठक्कर से मेरा पत्राचार काफी पहले से था. मगर जब उन से मिला, तो उन की सादगी से अभिभूत हुए बिना न रह सका. दिसंबर के ठंडे मौसम में खादी का पायजामा और कुर्ता, और कुर्ते पर बंडी. आंखों पर चश्मा और चेहरे पर तेज! सिर के अधिसंख्य बाल हालांकि उड़ गए थे. मगर उन का गोरांग बदन धूप में चमक रहा था. वह एक नागा शाल ओढ़े हुए 'आओ' (स्थानीय नागा माथा) में अपने छोटे पुत्र के साथ बात कर रहे थे.

मुझ से वह अत्यंत आत्मीयतापूर्वक मिले थे और अपने घर में सादर ले गए. अपनी पत्नी श्रीमती लैंटिना आओ एवं अपने पुत्रों से परिचित कराया.

लैंटिना आओ प्रथम नागा थीं जिन्होंने गुवाहाटी के सारानिया आश्रम में गांधीवादी विचारों एवं कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया था. श्री ठक्कर के कार्यों में सहायता के लिए उन्होंने अपनी सेवाएं अर्पित कर दी थीं. उस समय वहां न तो बिजली और न ही पानी की सुविधा थी. आवागमन के साधन नहीं थे और न ही संचारसाधनों की व्यवस्था थी. यह सब श्री ठक्कर के प्रयासों का फल है कि इस गांव में भी यह सब सुविधाएं पहुंची. डाकघर, स्टेट बैंक की एक शाखा, एक उच्च विद्यालय और एक सरकारी चिकित्सा केंद्र की स्थापना हुई.

"उन दिनों न मेरे पास जनशक्ति थी और न ही धनशक्ति," बताते हैं नटवर ठक्कर, "सिर्फ मेरे पास इस क्षेत्र की उन्नति की दृढ़ इच्छा शक्ति थी, और था अग्रज महानुभावों का नैतिक सहयोग एवं समर्थन.

"पूर्णतः अपरिचित इस क्षेत्र का वातावरण उन दिनों अत्यधिक तनावपूर्ण एवं विषाक्त था. पृथकतावादी आंदोलन अपने चरम शिखर पर था. पृथकतावादियों का मानना था कि मैं एक सरकारी गुप्तचर हूं.

बालवाड़ी में बच्चों के साथ लैंटिना आओ : ठक्कर की सेवा को समर्पित.

...ाई मिशनरियां यह सोचती थीं कि मैं हिंदू धर्म के प्रचारप्रसार की योजना ले कर आया हूं. चारों तरफ कठिनाइयों का चक्रव्यूह था और उस में अकेले अभिमन्यु की तरह खड़ा था.

मगर वह यहां दर्शक की हैसियत से नहीं, बल्कि एक कार्यकर्ता की हैसियत ले कर आए थे. इन सब कठिन, विपरीत एवं ...हशील परिस्थितियों से वह बिना विचलित हुए नागा समाज से सामंजस्य स्थापित करते रहे. उन में घुलनेमिलने का प्रयास करते रहे. उन्होंने सर्वप्रथम स्थानीय आओ भाषा सीखी. फिर यहां के रीतिरिवाजों, प्रथाओं को अपनाने लगे. यहां तक कि शाकाहारी से मांसाहारी भी बन गए और इस के एक कदम और आगे जा कर अपनी सहयोगी लैंटिना आओ से विवाह भी कर लिया.

नागा समाज उन की नेकनीयती, निष्ठा, ईमानदारी से प्रभावित भी हुआ. आखिर वह इतने असभ्य और बर्बर तो नहीं थे. इंसानियत तो उन में भी थी. गुणों की परख तो उन में भी थी. मगर अब भी परिस्थितियां कठिन थीं और उन्हें ढेरों रचनात्मक कार्य करने थे. इस बीच उन पर कई बार प्राणघातक हमले भी हुए. अपमानजनक बातें सुनना तो आम बात थी. मगर वह अपने रास्ते पर दृढ़ बने रहे.

नटवर ठक्कर एक मध्य वर्गीय परिवार से संबंध रखते हैं. उन का परिवार उन के समाज सेवा के क्षेत्र में जाने के विरुद्ध था. फिर भी उन के पिता ने उन्हें कुछ समय के लिए जाने की अनुमति दे दी. यद्यपि यह वह समय था, जब लोगों में गांधीवादी सिद्धांतों के प्रति आस्था तो थी, लेकिन लोग समाज सेवा के नाम पर सांसदविधायक बनने के लिए दौड़ लगाते फिरते थे. इस के बावजूद सार्वजनिक जीवन से नैतिकता, निष्ठा, सत्यप्रियता और ईमानदारी का सर्वथा लोप नहीं हुआ था. महात्मा गांधी और नेहरू के प्रति सम्मान की भावना थी और ऐसे ही समय में श्री ठक्कर सारी मृगतृष्णा से बचते हुए, कुछ कर पाने की तड़प लिए हुए एक अछूते क्षेत्र नागालैंड के लोगों का जीवन सुधारने, उन्हें गांधी का जीवन दर्शन पहुंचाने गए थे.

वह बताते हैं कि मेरे के पिता ने अपनी इच्छा के विरुद्ध मुझे जाने की अनुमति तो दे दी

क्योंकि उन्हें इस बात का संतोष था कि मैं एक रचनात्मक कार्य में लगा हूं और मुझे अनेक राष्ट्रीय महापुरुषों का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त है, फिर भी वह जब तक जिंदा रहे मुझे इस आशय का पत्र अवश्य लिखते रहे कि अब तो यहां आ जाओ. वहां बहुत दिन रह लिए, बहुत काम भी कर लिए...!''

मगर अब वह चाहें तो भी यहां से जा नहीं सकते. क्योंकि यहां नागा समाज में उन्होंने जैसा स्नेह और सम्मान पाया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है. उन के पांच पुत्रपुत्रियां हैं. फिर यहां उन के इतने अधूरे कार्य हैं, जिन्हें सिर्फ वही पूरे कर सकते हैं.

उन प्रारंभिक दिनों की स्मृति मात्र से ही वह रोमांचित हो उठते हैं. अपने नैतिक सदगुणों के बल पर ही वह यहां रह सके. रहे ही नहीं, बल्कि नागा समाज के अभिन्न अंग बन गए हैं श्री ठक्कर. उन के पास सिर्फ सत्य, प्रेम, करुणा और कर्तव्यपरायणता की पूंजी थी. काका कालेलकर, जवाहरलाल नेहरू, राजेंद्र प्रसाद, जय प्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई जैसे आदर्श पुरुषों का सहयोग, समर्थन और निर्देश प्राप्त थे.

उत्थान के बहुआयामी प्रयास

एक तरफ वह व्यक्तिगत संपर्क, बातचीत आदि के द्वारा सदभाव बनाते रहे, नागा समाज में अपना स्थान जमाते रहे. दूसरी तरफ अनेक कार्यक्रम चला कर अपनी सेवावृत्ति का ठोस उदाहरण भी प्रस्तुत करते रहे. पड़ोस के गांवों में 'बालवाड़ी' के नाम से पाठशालाएं खोलीं. जो स्कूली शिक्षा पूरी न कर सके, उन के लिए बढ़ईगीरी तथा दर्जीगीरी आदि का व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया तथा विकलांग लोगों के लिए भी व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए.

उन्होंने एक छोटा औषधालय भी चलाया. जहां अब भी मुफ्त दवाएं दी जाती हैं. उन्होंने यहां तीन बार चिकित्साशिविरों का आयोजन भी किया, जिस में लगभग दो हजार लोगों का विख्यात चिकित्सकों के द्वारा उपचार कराया गया. उन का एक महत्त्वपूर्ण कार्य यह भी रहा कि उन्होंने राष्ट्रीय दिवसों को मनाने की परंपरा प्रारंभ की.

इन सब से आगे बढ़ते हुए उन्होंने मधुमक्खी पालन, तेल निकालने का घानी उद्योग, गुड़ बनाना, बायोगैस संयंत्र, खादी विक्री केंद्र, गोशाला आदि स्थापित करने संबंधी अनेक प्रयोग यहां किए और परिचायक प्रदर्शन भी किया. उन के अनेक कार्य तो ऐसे थे जो नागालैंड में एक गैरसरकारी स्वयंसेवी संस्था द्वारा पहली बार प्रारंभ किए गए थे.

उन के कार्यों की सूची पर नजर डालने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने भारी उद्योगों के बजाए कुटीर उद्योगों को प्राथमिकता दी. ऐसा इसलिए नहीं कि उन के पास धन का अभाव था अथवा सरकारी स्तर पर सुविधा जुटाने में असमर्थ थे वह. अगर वह चाहते तो भारी उद्योग के समर्थक जवाहर लाल नेहरू से यहां के लिए भी एक उद्योग मांग सकते थे, क्योंकि वह नेहरू के प्रिय व्यक्तियों में से एक थे. मगर उन्होंने ऐसा कार्य नहीं किया. उन का मानना है कि भारी उद्योगों में ज्यादा लोगों को रोजगार देने की क्षमता नहीं है, और फिर नागालैंड जैसे पहाड़ी क्षेत्र के लिए कुटीर उद्योग ही उपयुक्त है. नागा लोग वैसे भी कुटीर उद्योग में बड़े सिद्धहस्त होते हैं.

ठक्कर का मानना है कि नागालैंड तभी शेष भारत के साथ भलीभांति जुड़ पाएगा जब यहां भी आर्थिक प्रगति होगी और नागाओं को भारतीय भ्रातृत्व की भावना से अपनाएंगे. वह बताते हैं, ''एक समय ऐसा था, जब नागा लोग असम के बाजारों में अपने सब्जीफल बेचने जाते थे, तो उस पर असमी लोग पानी छिड़क कर उसे स्वीकार करते थे. वह नागाओं को अस्पृश्य और हीन मानते थे और यही कारण है कि नागा समाज हिंदू समाज से कटता गया और इसाई मिशनरियों से जुड़ता गया.''

ऐसे माहौल में अपने लिए स्थान बनाना बड़ा ही दुष्कर कार्य है. फिर भी ठक्कर ने यह

नटवर ठक्कर अपनी पत्नी लैंटिना एवं एक सहयोगी के साथ अपने निवास के सामने : सेवा के लिए कृतसंकल्प.

कर दिखाया. तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नेहरू ने उन के कार्यों को देख कर कहा था कि जहां एक सेना अपना काम कभी भी नहीं कर सकती थी, वहां एक आदमी ठक्कर ने अपने सत्य, प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा के बल पर नागाओं का शेष भारत के साथ तादाम्य स्थापित कर दिखाया.

ठक्कर को अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है, जिस में 'बिहार स्मारक समिति' का 1986 का प्रशस्ति पत्र एवं 1987 का 'जमनालाल बजाज पुरस्कार' उल्लेखनीय हैं. हालांकि वह आत्म प्रचार से दूर रहने एवं अपना कार्य चुपचाप किए जाने के पक्षधर हैं, तथापि पुरस्कारों को स्वीकार करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं. कारण कि इस के द्वारा हमें कुछ धन की प्राप्ति होती है, जिस से हम अपनी योजनाएं क्रियान्वित कर सकते हैं.

वस्तुतः उन के कार्यों के लिए धन तो आवश्यक हैं ही और वह यह धन विभिन्न सरकारी और गैरसरकारी दोनों प्रकार की संस्थाओं से प्राप्त करते हैं, वह बताते हैं, "भारत सरकार तो देती ही है, कभीकभी नागालैंड सरकार भी देती है. इस के अलावा कुछ गैरसरकारी संस्थाएं भी दान देती हैं. मगर यह सब कुछ काफी अनिश्चित सा रहता है इसी लिए हमें कार्य योजना तैयार करने और चलाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है. फिर भी मैं निराश नहीं होता और अपनी योजनाओं को कार्यरूप में परिणत करने की कोशिश जारी रखता हूं."

कुछ वर्ष पूर्व उन्हें एक विदेशी सरकार से अनुदान लेने पर काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था, यहां तक कि उन के क्रियाकलापों की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो से भी कराई गई. यह सब क्यों और कैसे हुआ?

पूछने पर बताते हैं ठक्कर, "पश्चिम जर्मनी की एक संस्था हमें हर वर्ष 25,000 रुपए का अनुदान देती है. यह अनुदान प्राप्त करने के लिए कुछ नियम हैं.

"इस के अंतर्गत हमें उन गांवों का नक्शा देना पड़ता है, जहां हमें अपनी कार्य योजना चलानी है. हम ने भी वह नक्शा बना कर दिया था और इसी बात को ले कर तूफान उठ खड़ा हुआ था कि मैं विदेशी एजेंट का काम कर रहा हूं. सीमावर्ती प्रदेशों का नक्शा

अपने स्वार्थ की खातिर खेल रहा हूं आदिआदि. यह 1983-86 के आसपास की बात है सरकार ने हमारे पीछे सी.बी.आई. लगा दिया. मगर उस ने पूरी तरह जांचपड़ताल कर सभी आरोपों को निराधार पाया.

''हां, परेशानी तो बहुत हुई.'' वह कहते हैं, ''उन दिनों मैं बहुत तनाव में रहता था. मैं ने तो देश की सेवा की है मगर प्रतिफल में यह मिला कि मुझे देशद्रोही तक कहा गया. मगर अब सब कुछ सामान्य हो गया है.

''मैं चाहता तो सरकार पर मानहानि का दावा कर सकता था.'' सवाल करने पर वह बोले, ''मगर एक तो ऐसे अदालती मामले जल्दी नहीं निबटते फिर इस से फायदा तो कुछ नहीं, उलटे झंझट ढेर सारे हैं और मुझे अपना काम करना है. मुझे सिर्फ इस बात का संतोष है कि सी.बी.आई. ने मुझे निर्दोष पाया और देशवासियों का विश्वास मुझ पर पुनः हो गया. 'जमनालाल बजाज पुरस्कार' मिलना

प्रख्यात गुजराती लेखक उमाशंकर जोशी : ठक्कर के प्रशंसक.
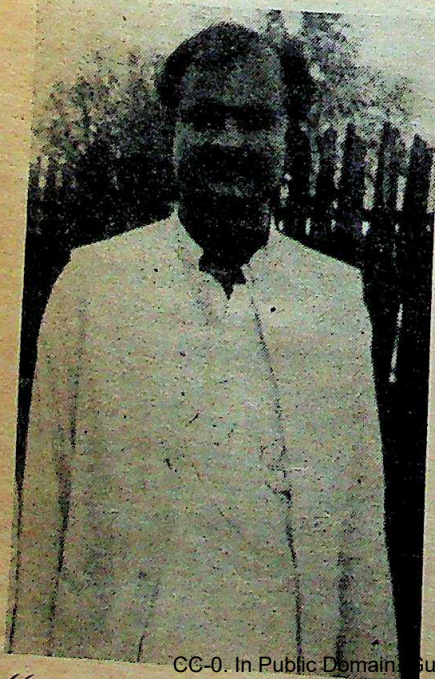
इस बात का सबूत है.''

गत वर्ष मालती देवी चौधरी ने जमनालाल बजाज पुरस्कार यह कहते हुए लेने से इंकार कर दिया कि वह ऐसे व्यक्ति से पुरस्कार ग्रहण नहीं कर सकतीं, जिस का गांधीवादी विचारधारा से कोई वास्ता ही न हो. इस की चर्चा करने पर वह बोले, ''यह अपनेअपने दृष्टिकोण की बात है. मालती चौधरी ने पुरस्कार लेने से इंकार नहीं किया, बल्कि ऐसे व्यक्ति से पुरस्कार न लेने की बात कही थी, जिस का गांधीवादी विचारधारा से वास्ता नहीं है.''

''मालती को तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी से पुरस्कार लेना था जिसे उन्होंने इंकार कर दिया था.''

''अब रहा मेरा सवाल, तो मुझे उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा के हाथों पुरस्कार दिलाया गया था.'' फिर भी वह जोर दे कर कहते हैं, ''अगर उसे राजीव गांधी ही देते, तो उसे मैं इंकार नहीं करता. उस समय मेरा दृष्टिकोण यह रहता कि भले ही राजीव गांधी का गांधीवादी विचारधारा से कोई वास्ता नहीं लेकिन वह प्रधानमंत्री तो हैं और इसलिए समस्त भारतीय जनता का प्रतिनिधि समझ कर उन से पुरस्कार ग्रहण कर लेता.''

अपने 34 वर्ष के प्रवास में उन्होंने यहां कम यातनाएं नहीं सही हैं. पृथकतावादी तत्त्व उन्हें बराबर परेशान करते रहे, शरारती तत्त्वों के प्राणघातक हमलों के कारण कई बार उन्हें अपना निवास स्थान बदलना पड़ा और सैनिक छावनियों में कई बार शरण भी लेनी पड़ी मगर फिर भी उन्होंने अपने प्रयास को जारी रखा.

उन के द्वारा संचालित गांधी आश्रम के लिए मार सुसांग आओ नामक एक नागा ने आमगुरी-मोकोकचुंग मार्ग के किनारे की काफी जमीन उन्हें दान में दे रखी है और वह उस के काफी आभारी हैं.

गांधी आश्रम के मुख्य भवन की तरफ इशारा करते हुए वह बताते हैं, ''1967 में नागालैंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री यहां भाषण करते हुए ऐसे उग्रवादियों ने पहाड़ की चोटी

...क नागा ग्रामीण महिला : गांधी ...श्रम ने दिलाया श्रवण यंत्र.

...ने अंधाधुंध गोलियां चलाई थीं. कई लोग ...ल हो गए थे, और दो छात्रों की तो गोली ...से मृत्यु तक हो गई थी.

वैसे तो विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों में ...क समाज सेवकों ने सराहनीय काम किए मगर उन के क्षेत्र हिंदू बहुल होने की वजह उन्हें अनुकूल परिस्थितियां एवं समर्थन ...न हुआ, जबकि नटवर ठक्कर के साथ ...कोई बात नहीं रही. और इसी लिए उन्हें ...कूल परिस्थितियां मिलीं. इसाई मिशन- ...उन के बारे में भ्रामक प्रचार करती रहीं. ...वह अपने प्रयास से डिगे नहीं और ...ने कोई ऐसा कार्य नहीं किया, जिस से ...कि उन की ऐसी कोई धारणा है.

...धर्म को वह व्यक्तिगत बात मानते हैं. ...ई क्षेत्र में रहते हुए भी, इसाई महिला से ...ह करने के बाद भी उन्होंने न तो अपना धर्म छोड़ा और न ही अपनी पत्नी को ...ई धर्म छोड़ने को विवश किया. यही ...ण है कि कालांतर में नागा समाज उन पर ...स करने लगा. उन्हें सहयोग और सम्मान प्रदान करने लगा. इस तरह देखा जाए तो समाज सेवा के इतिहास में उन का अन्यतम स्थान है.

उन के यहां अब तक विभिन्न राजनेता ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर के समाज सेवक और लेखक, यथा काका साहब कालेलकर, सुंदर लाल बहुगुणा, उमाशंकर जोशी आदि एवं विभिन्न उच्चाधिकारियों ने भी आ कर भ्रमण किया है.

श्री ठक्कर ने अपनी संस्था की 34वीं वार्षिक रपट की एक प्रति भी मुझे दी. उस में उन्होंने अपने कार्यों एवं कार्यक्षेत्रों का विवरण दिया है. यह रपट अन्य संस्थाओं की रपटों से इस मायने में काफी भिन्न है कि इस में वस्तुस्थिति की सहीसही जानकारी दी गई है तथा कहीं भी लीपापोती का प्रयास नहीं है.

उन की पत्नी श्रीमती लैंटिना आओ एक सुघड़ गृहिणी हैं और उस से भी बढ़ कर एक कुशल समाज सेविका और संगठनकर्ता हैं. 'बालवाड़ी' के अंतर्गत चलने वाली पाठशालाओं की व्यवस्था का भार तो उन्हीं पर है.

गांधी आश्रम, चुचुइमलांग में एक पुस्तकालय भी है जिस में लगभग 2500 पुस्तकें हैं.

फिलहाल नटवर ठक्कर अपनी योजनाओं को कार्यरूप देने में व्यस्त हैं. उन की योजना है कि इस क्षेत्र में गन्ना एवं सरसों उत्पादन को बढ़ावा मिले, गोशालाएं खुलें और खादी का प्रचारप्रसार हो, उस का उपयोग बढ़े. मगर इन कार्यों को चलाने में वह धन एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की कमी को महसूस करते हैं. फिर भी वह इस युग में भी जब देश से गांधीवादी कार्य ही नहीं, विचारधाराएं भी लुप्त हो रही हैं, उन के कार्यों की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है. देश उनका इसलिए ऋणी है कि उन्होंने नागालैंड को भारत से जोड़ने का कार्य किया. नागालैंड उन का ऋणी रहेगा कि उन्होंने अपना घरबार छोड़ कर सारी सुखसुविधा को त्याग कर उन के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक उत्थान के लिए कार्य किया है. ●

एक और आरंभ

धारावाहिक उपन्यास • छठीं किस्त • भक्ति चौध

अब तक आप ने पढ़ा : सुरक्षित भविष्य, ज्यादा छुट्टी और अधिक सुविधाओं के लालच में स्वच्छ वातावरण के एक निजी संस्थान की नौकरी छोड़ कर गोपा जब मंडल अभियंता टेलीफोन के कार्यालय में निजी सचिव की हैसियत में काम करने पहुंची तो वहां का भ्रष्ट माहौल देख कर वह सकते में आ गई. फिर भी वह धीरेधीरे इस नए वातावरण में अभ्यस्त होने की कोशिश करती रही और संजय नाम का एक अन्य सहयोगी उस की इस कोशिश में हाथ बंटाता रहा. एक दिन वह समय भी आ पहुंचा, जब गोपा संजय को ले कर मीठीमीठी भावनाओं में गुम होने लगी. मंडल अभियंता के बर्ताव और भ्रष्ट अधिकारियों की कारगुजारियों ने फिर भी गोपा को चैन लेने नहीं दिया और ऊपर से जतिन ने उस के घर में आ कर उस के सीने पर मूंग दलना शुरू कर दिया. एक दिन एक नई मुसीबत और पैदा हो गई जब उस की सहेली ज्योति ने गलत काम करवाने के लिए उस पर दबाव डाला लिहाजा गोपा से उस की दोस्ती टूट गई. अब आगे पढ़िए :

"**कोई** जानबूझ कर तो नहीं सोचती, दिमाग में स्वयं ही आ जाती हैं."

"हम सभी परिस्थितियों के गुलाम हैं, संबंधों और आकांक्षाओं के घेरे में कैद."

"संजय, तुम्हारी बातों से मेरा दिल डूबने लगता है. तुम कितने निराशावादी हो."

"मैं केवल यथार्थवादी हूं, गोपा." संजय

की आंखों में झांका.

संजय की बातें व दृष्टिकोण विपरीत होने भी गोपा उस की ओर खिंचती चली जा थी. जिस दिन वह न दिखता, गोपा का र में मन न लगता. रात में बिस्तर पर लेट आंखें बंद करते ही संजय की शक्ल दिखाई लगती. उस की पुरानी सहेलियां सुनें तो ततः विश्वास भी न करें. प्यारमुहब्बत के पर नाकभौं सिकोड़ने वाली गोपा स्वयं से प्यार करेगी, यह कब किसी ने सोचा . खाली समय में और काम करते हुए भी संजय के साथ अपनी काल्पनिक गृहस्थी ती रहती. मन ही मन उस के स्पर्श की भूति से सिहर उठती.

'ग्रामीण प्रबंध' में प्रवेश हेतु लिखित क्षा का दिन निकट आता जा रहा था. गोपा ना की रंगीनियों को भुला कर अध्ययन में गई. दफ्तर से लौटते ही वह सामान्य ज्ञान पुस्तक ले कर बैठ गई. कुछ समय बाद मां सहेली सुशीला पधारीं. थोड़ी देर बात ने के बाद गोपा उठ कर दूसरे कमरे में

गोपा का उस माहौल से जी ऊब चुका था और वह ग्रामीण प्रबंध के पाठ्यक्रम में प्रवेश ले कर जंजाल से छुटकारा पा लेना चाहती थी. संजय उस का हौंसला बढ़ा रहा था और वह संजय के मीठे सपने में खो कर अपने भविष्य की योजना निर्धारित कर रही थी.

जाने लगी तो सुशीला ने आग्रह किया, "यहीं बैठ न."

"नहीं बहनजी, जरा इसे पढ़ने जाना है." मां ने कहा.

"अब कौन सी पढ़ाई है? नौकरी भी पक्की लग चुकी है."

"क्या बताऊं, इसे यह नौकरी पसंद नहीं." मां चिंतित हो उठीं.

गोपा आटा गूंधने लगी तो मां रसोई में आई, "तेरे लिए दोपहर की दाल बचा रखी है."
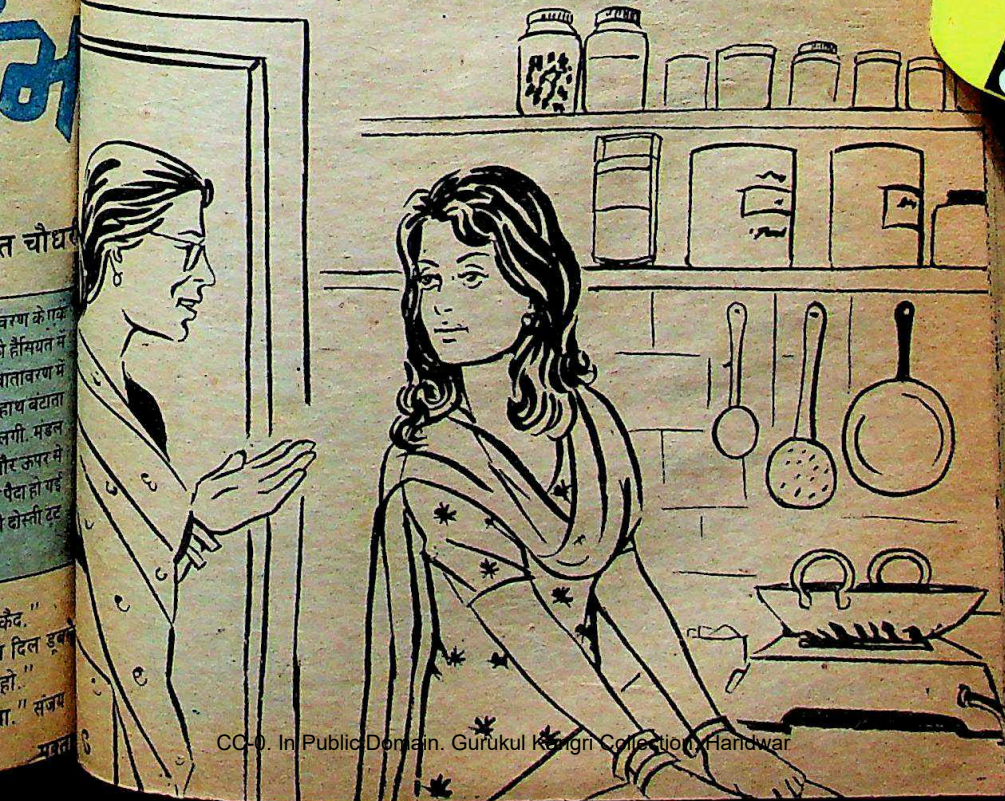
"क्यों?" सुशीला ने आश्चर्य से पूछा.

"इस का उत्तर आप को कैसे समझाऊं?" गोपा बोली, "आप ने वह कविता पढ़ी होगी,

स्वर्ण शृंखला के बंधन में
अपनी गति उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले.

अब बताइए. चिड़िया को पिंजरे में सब कुछ मिलता है, दानापानी, सुरक्षित आश्रय. फिर भी वह जंगल में क्यों भटकना चाहती है?"

"ओह, सुशीला को गोपा की बात पसंद न आई. पक्षी और मनुष्य में क्या समानता? मैं कह देती हूं, सरकारी नौकरी मत छोड़ना."

गोपा हंस पड़ी, "अच्छा, नहीं छोड़ूंगी. अब चल कर सब्जी बनाऊं. मां तो आप से बातें करेंगी."

रसोई में आ कर गोपा ने सब्जी काटनी शुरू की. टिंडे उसे सख्त नापसंद थे. पर उस के पिताजी को पता नहीं, इन में क्या स्वाद आता था. मसाला पीस कर उस ने कड़ाही चढ़ा दी, आटा गूंधने लगी तो मां रसोई में आईं, "तेरे लिए दोपहर की दाल बचा रखी है." जब भी टिंडा, तोरी, घिया बनाना होता था मां गोपा के लिए दूसरी दाल या सब्जी रख देती थीं.

खाना खाते समय पिताजी कुछ गंभीर दिख रहे थे. हाथमुंह धो कर गोपा फिर से पुस्तक ले कर बैठी ही थी कि उन्होंने आवाज दी, "गोपा सुन."

"जी," गोपा ने पुस्तक से चेहरा हटाया.

"तेरे दफ्तर में कोई संजय नाम का व्यक्ति है क्या?"

कमरे में विस्फोट हो जाता तो भी शायद गोपा इतनी हैरान न होती. अपनेआप को संभाल कर उस ने किसी प्रकार इतना ही कहा, "कौन?"

"संजय कनिष्ठ अभियंता है." पिता धीरे से बोले.

"हां है तो." अपनेआप को अगले सवालों के लिए गोपा मन ही मन तैयार करने लगी. उसे क्या पता था कि यह तैयारी इतनी जल्दी करनी पड़ेगी. संजय बुद्धिमान, शिक्षित व मिलनसार है. परंतु पिता भी क्या उस के कहने भर से यह मान लेंगे?

"कैसा लड़का है?" उन्होंने गंभीर स्वर में पूछा.

"समझदार और परिपक्व है." गोपा ने धीरे से कहा.

"हूं." पिताजी रुक कर बोले, "जतिन कह रहा था. खैर, फिर बात करेंगे." कहते हुए वह बाहर चले गए.

क्षण भर में गोपा सारा माजरा समझ गई. इस का अर्थ यह हुआ कि अन्य टेलीफोन केंद्र में नियुक्त होने पर भी जतिन गोपा व संजय के बारे में पूरी जानकारी रखता था.

." गोपा ने
, "जतिन
." कहते हुए
रा समझ
य टेलीफोन
गोपा व
वता था.
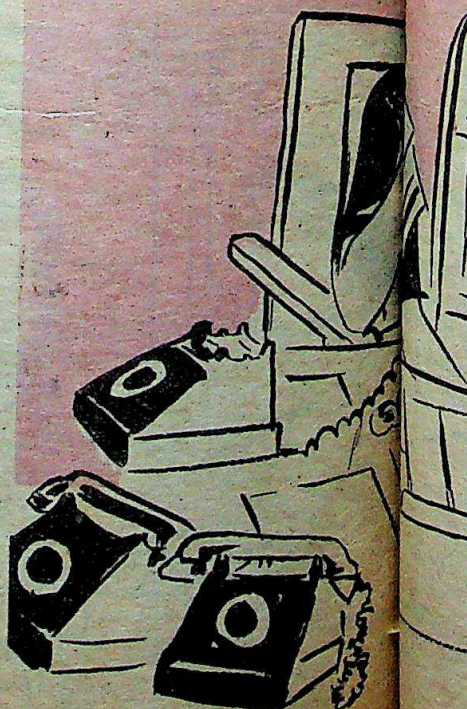
ने नमकमिर्च लगा कर सारी बातें पिताजी बताई होंगी.

रात की नींद पूरी न होने से गोपा का भारी हो गया था. दफ्तर आते ही एक भोक्ता से फोन पर भिडंत हो गई.

"मैडम आप कह रही थीं कि बिल का तान न करने से मेरा टेलीफोन कटा है. पर तो सभी बिलों के रुपए अदा कर चुकी हूं." री तरफ से आवाज आई. "एक मिनट कए. कौन सा फोन है आप का?" रजिस्टर खोलते हुए गोपा ने पूछा, "जनवरी से मार्च तक के बिल का भुगतान कर चुकीं आप?"

"जी."

"तो रसीद ले कर लेखा अधिकारी से मिल लें."

"वाह भई, वाह." गलती से फोन का कनेक्शन काटें आप और मैं रसीद उठाए लेखा

तभी संजय ने कमरे में आते हुए पूछा, "क्या बात है. तबीयत ठीक नहीं है क्या?"

अधिकारी कि मिन्नतें करूं? मेरे पास समय फालतू है क्या?''

''जी, यह तो नियम है. आप को रसीद ले कर आना ही पड़ेगा.'' सीधे हाथ से गोपा ने अपना सिर दबाते हुए कहा.

''आना ही पड़ेगा. क्या मतलब है, आप का? आप लोगों को उपभोक्ताओं की सेवा के लिए नियुक्त किया जाता है या उन्हें बेमतलब परेशान करने के लिए?''

रिसीवर पकड़े गोपा जड़वत बैठी रही.

''तीन माह तक मेरा फोन खराब रहा. फिर भी आप उस अवधि का किराया वसूल करते हैं. उस के बाद यह कह कर फोन काट देते हैं कि बिल का भुगतान नहीं हुआ. अपनी भूल स्वीकार करना तो दूर, आप चाहती हैं कि मैं आप के यहां रसीद दिखाने आऊं.'' कह कर महिला ने फोन पटक दिया.

दिल्ली और बंबई में टेलीफोन विभागों को निगम में बदलते समय बड़े सब्जबाग दिखाए गए थे. डाक विभाग को पहले ही टेलीफोन विभाग से अलग कर दिया गया था. यही हिस्सा आर्थिक नुकसान के लिए अधिक जिम्मेदार था.निगम में बदल कर विभाग को स्वायत्त शासन प्रदान किया गया था, जिस से हर छोटीमोटी बात के लिए विभाग को मंत्रियों और सरकारी अधिकारियों का मुंह न ताकना पड़े और कार्य प्रणाली में लालफीताशाही का बोलबाला न रहे. टेलीफोन नेटवर्क को विस्तृत करने का अधिकार विभागीय अधिकारियों को दिया गया था. इसी के साथ टेलीफोन 'बांड' बिक्री के द्वारा वित्तीय क्षमता बढ़ाने की सुविधा भी निगम को मिल गई थी.

लेकिन उपभोक्ताओं का कहना था कि परिवर्तन केवल इतना हुआ है कि विभाग की अकर्मण्यता का दोष अब सरकार का न हो कर निगम का हो गया था.

35 करोड़ रुपए की लागत से 'सी डाट'-'डेवलपमैंट आफ टेलीमैटीक्स' को 'डिजीटल इलैक्ट्रोनिक स्वीचिंग सिस्टम' बनाने का काम सौंपा गया था, ताकि आयात खर्चा जो कि लगभग 140 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष है, कम हो. विदेशी तकनीकी का आयात पूरी तरह से बंद करना फिलहाल कुछ वर्षों के लिए संभव नहीं था.

तकनीकी अपनाने के मामले में आपस में मतभेद भी थे. कुछ लोग चाहते थे कि केवल स्वनिर्मित तकनीकी पर ही निर्भर रहा जाए. लेकिन कुछ विदेशी तकनीक को बेहतर समझते थे. चूंकि 'सी डाट' की सफलता की कसौटी पर खरा उतरना अभी बाकी था, इसलिए विदेशी कंपनियों का सहारा लेना पड़ रहा था. इस से सी.आई.टी.–एलकाटेल जैसी फ्रांसीसी कंपनी को खूब फायदा हो रहा था, जिसे आई.टी.आई. के साथ मिल कर 'इलेक्ट्रानिक स्वीचिंग सिस्टम' बनाना था.

प्रश्न यह था कि तकनीक तो बदली जा सकती थी. पर जो मानसिकता कर्तव्यों को गंभीरता से नहीं लेती, केवल अधिकारियों की मांग करती है और भ्रष्टाचार रहित हो कर जीना नहीं चाहती, क्या निगम अपने कर्मचारियों की ऐसी मानसिकता को बदलने का प्रयास भी कर रहा था?

रूपसिंह एक चिट ले आया था. कुछ नंबर थे. सभी मंडल अभियंता से बात करना चाहते थे. गोपा ने डायल करना शुरू किया. तीनों नंबर व्यस्त थे. पांचछः बार डायल करने के बाद एक की घंटी बजने लगी. स्ट्राउजर एक्सचेंज की घंटी थी. गोपा ने पहचान लिया. संभवतः दुनिया भर में केवल भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जहां पुरानी इलेक्ट्रोनिमैकेनिकल स्ट्राउजर व पैनटाकौनटा क्रोसबार सिस्टम से ले कर आधुनिक इलेक्ट्रोनिक डिजीटल सिस्टम को एक साथ इस्तेमाल किया जाता है. राजनीतिक व अन्य कारणों से प्रभावित तकनीकी का गलत व मिलाजुला चुनाव बहुत हद तक टेलीकाम उपकरण क्षेत्र की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार था.

घंटी बजती जा रही थी. शायद नंबर खराब था. संबंधित टेलीफोन केंद्र से गोपा ने पता किया. तभी कमरे में आते हुए संजय ने पूछा, ''क्या बात है, तबीयत ठीक नहीं क्या?

''कुछ ऐसा ही है.'' गोपा ने मुसकराने का प्रयास किया.

''चिंता क्यों करती हो? ग्रामीण प्रबंध के पाठ्यक्रम में तुम्हारा चुनाव हो जाएगा.''

''वह बात नहीं है संजय. कल पिताजी तुम्हारे बारे में पूछ रहे थे.''

''मेरे बारे में? क्या पूछ रहेथे.'' संजय हैरानी से बोला.

''यही कि लड़का कैसा है?''

अजीब बात है, उन्हें किस ने बताया

रे बारे में?"

"जतिन ने. इसी लिए मैं नहीं चाहती थी वह यहां काम पर लगे."

"हो सकता है उस ने तुम्हारा हित सोच ही ऐसा किया हो." संजय मुसकराने लगा. र एकाएक गंभीर हो गया, "देरसवेर तुम्हारे ताजी को हमारी घनिष्ठता के बारे में पता तो ना ही था, पर इस तरह मैं ने नहीं चाहा ."

गोपा निस्तब्ध थी. संजय की गंभीरता कभीकभी अभेद्य लगती. दो वर्ष की ष्ठ जानपहचान होते हुए भी संजय ने कभी विवाह की बात नहीं की थी. शायद वह समय और प्रतीक्षा करना चाहता था.

घर जाते वक्त गोपा हलकापन महसूस रही थी. संजय से मन की बात कह कर निश्चित हो गई थी.

अगले तीन दिन तक गोपा आकस्मिक वकाश पर रही. रविवार को परीक्षा थी. घर कर पढ़ना आवश्यक था.

सोमवार को उसे दफ्तर का वातावरण कुछ तनावपूर्ण लग रहा था. सभी गंभीर दिख रहे थे. रामनिवास अपनी सीट पर बैठा डाक चढ़ा रहा था. गोपा ने उसी से पूछा, "किसी अफसर को निरीक्षण पर आना है क्या?"

"नहीं तो."

"कुछ अजीब सा माहौल लग रहा है."

"वह तो परसों की गड़बड़ी के कारण है."

"कौन सी गड़बड़ी." गोपा ने उत्सुकता से पूछा.

"शनिवार को टेलीकाम यूनियन वालों से बड़े साहब की झड़प हो गई थी. यूनियन वालों ने नारेबाजी की. 'साहब बैठक के लिए उन्हें समय नहीं देते.' 'अपने वायदे पूरे नहीं करते'

गोपा को देख कर अरविंद ने नारा लगाना रोक दिया था. "मैडम, आप इस समय कमरे में ही रहिए." उस ने विनीत स्वर में अनुरोध किया.

'ओवर टाइम का भुगतान नहीं करवाते' आदि शिकायतें थीं. नारेबाजी देख कर साहब भड़क गए. तीन नेताओं के नाम तुरंत आरोपपत्र जारी कर दिया. इस बात पर संघ ने उन का घेराव कर लिया. देर रात को पुलिस ही आ कर छुड़ा पाई उन्हें."

"बाप रे." गोपा स्तब्ध रह गई. घेराव व नारेबाजी के बारे में उस ने सुन तो रखा था, पर इन के रूप से उस का प्रत्यक्ष परिचय कभी नहीं हुआ था.

"आज फिर नारेबाजी करने वाले हैं." राजबीर ने आ कर सूचना दी.

"पर नेताओं के नाम आरोपपत्र जारी हो चुका है ना?" गोपा अचानक बोली.

उस से क्या होता है? इस बात की गवाही कौन देगा कि वे लोग टेलीफोन केंद्र की इमारत के भीतर नारेबाजी कर रहे थे? यूनियन वालों से कौन दुशमनी मोल लेगा? जान से हाथ थोड़े धोना है?"

"गवाह न मिले तो क्या होगा?"

"साहब अगर आरोप प्रमाणित न कर पाए तो उलटा उन्हीं पर आरोप लग जाएगा, पर यह सब होने में वर्षों लग जाते हैं. तब तक परिस्थितियां, कर्मचारी व अधिकारी सभी बदल जाते हैं और मामला किसी न किसी तरह ठप हो जाता है."

शिकायत रजिस्टर खोल कर गोपा ने स्थिति की जांच आरंभ की. तभी एक उपभोक्ता ने कक्ष में प्रवेश किया.

"नमस्कारजी."

"कहिए." गोपा ने उन की ओर देखा.

"आप ने इस पत्र में लिखा है कि मैं कार्यालय में आ कर टेलीफोन निदेशिका ले सकता हूं."

"प्रथम मंजिल पर कनिष्ठ अभियंता शेखरजी बैठते हैं, उन से ले लीजिए."

"मैं गया था. वह कहते हैं, उन के पास नहीं है."

गोपा सोच में पड़ गई. फिर बोली, "आप अंदर साहब से जा कर कहिए."

उपभोक्ता को अंदर भेजने के अगले ही क्षण बजर बजा, "गोपाजी, उपभोक्ताओं को बाहर ही निबटाइए. मैं बहुत व्यस्त हूं. हर किसी को मेरे पास मत भेजिए." मंडल अभियंता ऊंचे स्वर में बोले.

"पर इस उपभोक्ता को आप ही ने पत्र लिखा था कि वह डाइरेक्टरी ले ले. अब शेखर जी ने इन्हें कहा है कि उन के पास उपलब्ध नहीं है."

"है कैसे नहीं? वह बकवास करता है. आप उस से बात कीजिए."

"मैं उन से बात नहीं करूंगी. उन्हें आप के पास भेज देती हूं." गोपा ने सहमे स्वर में कहा.

उपभोक्ता नई डाइरेक्टरी ले कर गोपा को धन्यवाद देता चला गया. गोपा कुछ पल के लिए निश्चित हुई. पर किसी भी पल अगले उपभोक्ता के आने का तनाव भी बना रहा. खिड़की के बाहर शरद ऋतु का आकाश खिला हुआ था. आसमानी रंग में सफेद रुई की तरह बादल इधरउधर बिखरे थे. गोपा का तनाव घुलता जा रहा था. दृष्टि क्षितिज में जा कर अटक गई. तभी फोन बज उठा. गोपा ने आह भर कर रिसीवर उठा लिया. अगले क्षण उस का स्वर प्रसन्नता से चहक उठा, "संजय."

"कैसी रही छुट्टियां और परीक्षा." संजय ने पूछा.

"अपनी ओर से मैं ने कसर नहीं छोड़ी. अब देखना है, परिणाम क्या होता है."

"परिणाम तुम्हारी इच्छानुसार ही होगा."

"तुम्हारे मुंह में घीशक्कर. पर बोल कहां से रहे हो? यहां आ जाओ."

"आज आना संभव नहीं. एक बजे नारे लगाने आएंगे." संजय ने खिलखिला कर कहा.

"क्या तुम्हारी यूनियन भी नारे लगाएगी?" गोपा ने उखड़े स्वर में कहा.

"हां... कल की मीटिंग में यही निर्णय लिया गया है. लेकिन मुझे शाम की गाड़ी से अलमोड़ा जाना है." संजय ने कुछ क्षण रुक कर कहा.

"क्यों?"

"एक रिश्तेदार बीमार है."

"कब तक आओगे."

"यह तो कह नहीं सकता. अच्छा, फिर मिलेंगे." संजय ने फोन रख दिया था.

गोपा यह सोच कर उदास हो गई कि संजय न जाने कितने दिन में लौट सकेगा. ठीक एक बजे नारेबाजी आरंभ हो गई थी.

"प्रमोद कुमार,"

"हायहाय,"

"प्रमोदकुमार,"

"मुरदाबाद."
"प्रमोदकुमार"
"बड़ा निकम्मा."
"बीवी रोए,"
"हाय हाय."
"बच्चे रोएं,"
"हाय हाय."

शिक्षित और सभ्य लोगों की जबान से [ऐसी] बातें निकल सकती हैं, यह अपने कानों से [सुन]कर गोपा को विश्वास न हो रहा था. [मंड]ल अभियंता समेत सभी अधिकारी चुपचाप [गालि]यां सुने जा रहे थे. एक बार गोपा ने [बाह]र जा कर देखा. बरामदा भीड़ से ठसाठस [भरा] था. उस में संजय को ढूंढ़ पाना संभव नहीं [था]. गोपा को देख कर अरविंद ने नारा लगाना [बंद क]र दिया था. "मैडम, आप इस समय कमरे [में ह]ी रहिए. उस ने विनीत स्वर में अनुरोध [कि]या.

"क्यों?"

"कोई विशेष बात तो नहीं. पर अगर [मारपी]ट हो जाए तो..."

"मारपीट" गोपा का दिल दहल गया.

"ठीक है" कह कर वह अंदर मुड़ी.

अरविंद फिर से भीड़ में शामिल हो गया.

"मैडम साहब बुला रहे हैं." रूपसिंह ने अंदर आ कर कहा.

कमरे में मंडल अभियंता के पास सभी अधिकारी बैठे हुए सलाहमशविरा कर रहे थे. गोपा को देख कर एकाएक चुप हो गए.

"गोपाजी जरा बैठिए." साहब ने गंभीर स्वर में कहा.

'शायद कोई गंभीर बात है.' गोपा ने बैठते हुए अंदाजा लगाया.

"यह जो नारेबाजी हो रही है. आप उसे देखसुन रहीं हैं. क्या आप गवाही देने को तैयार हैं?" जाने क्यों प्रमोद कुमार की बात सुनते ही गोपा के तनबदन में आग लग गई.

"मैं गवाही नहीं दूंगी." गोपा ने कहा.

"क्यों?"

"माफ कीजिएगा. मैं कुछ और नहीं कहना चाहती." कह कर वह बाहर चली गई.

(क्रमशः)
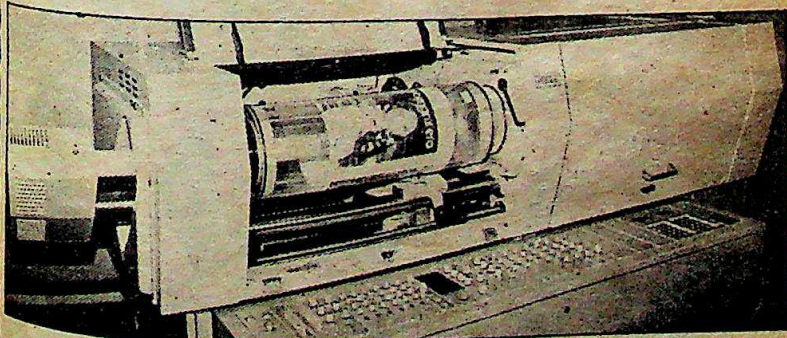
टैक्सी ड्राइवर इसलाम

कहानी ● अश्विनीकुमार भटनागर

तरहतरह की आशंकाओं को मन में पाले हुए मैं ने भद्राचलम पहुंचने के लिए सस्ते किराए में टैक्सी तो ले ली थी किंतु मेरी पत्नी शोभा को उस चालक की नीयत के ऊपर शक पैदा हो गया था जो सस्ते किराए में ही हमें मंजिल तक पहुंचाने के लिए बेताब था. चालक की नीयत पर पैदा हुआ हमारा शक क्या वाकई में वाजिब था?
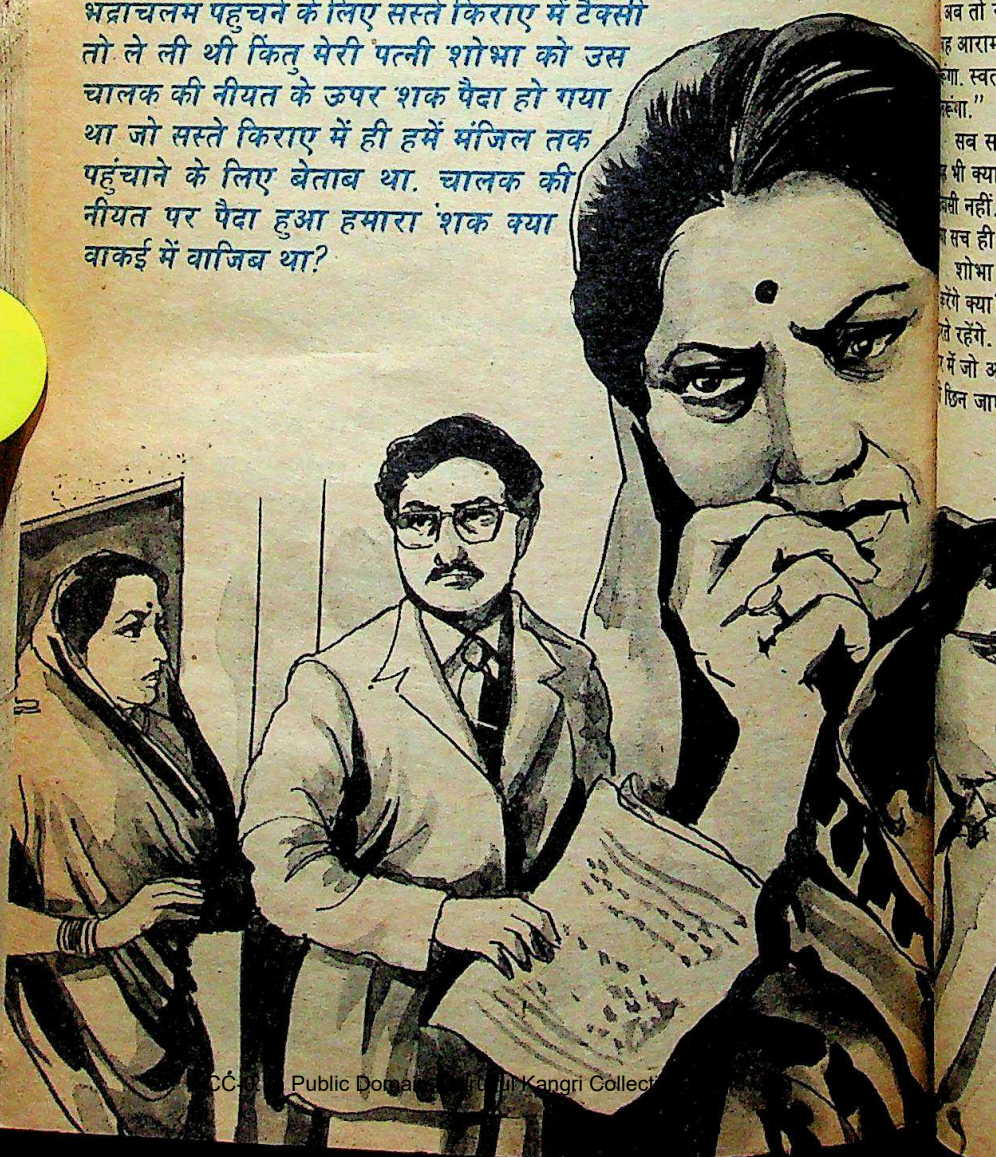
जतने भी शुभचिंतक थे, पत्नी शोभा को मिला कर, सब ने राहत की गहरी सांस

कारण? यह कि मुझे अवकाश प्राप्ति से दिन पहले ही एक दूसरी नौकरी का युक्ति पत्र मिल गया था. बालबच्चे, रिवालिए, पासपड़ोसी और भूतपूर्व सहयोगी ही मातमी मुद्रा से पूछा करते थे, 'अब करेंगे?'

प्रश्न तो गंभीर था. परंतु मेरे इस उत्तर उन के मन को बड़ी ठेस लगती थी, "साहब ना क्या है? पैंतीस वर्ष से नौकरी बजा रहा अब तो रात भर चैन की नींद सोऊंगा, ह आराम से उठूंगा. जब जो मन में आएगा गा. स्वतंत्र उम्मीदवार की तरह मैदान में हूंगा."

सब समझते थे कि मैं पागल हो गया हूं, भी क्या, रिटायर हो रहे हैं. पर मुंह पर सी नहीं. चेहरे पर एक भी शिकन नहीं. सच ही सठिया गए?'

शोभा को सब से बड़ी परेशानी थी, रेंगे क्या? दिन भर खटिया पर पड़े खोंखों ते रहेंगे. अरे मर्दों के काम पर जाने के बाद में जो आजादी बहूबेटियों को मिलती है वह छिन जाएगी."

सब से बड़ी, 'बहबेटी' तो शोभा स्वयं थी, जिस का सामाजिक दायरा एक अनंत सागर की तरह था. घर में कभी टिकती न थी, और कभी घर में हुई भी तो एक दर्जन आलतूफालतू औरतों के साथ खीखी करती हुई. औरतों की आजादी सब कुछ हुई और मर्दों की आजादी कुछ न हुई?

यह शोभा की ही अथक मेहनत का परिणाम था कि अपने उच्च पदों पर आसीन भाइयों को दुहाई दे दे कर मेरे लिए नौकरी तलाश कर ली. मैं ने तो स्वयं न कोई प्रार्थना पत्र भेजा और न कभी नौकरी दिलाने के लिए गिड़गिड़ाया. पर नियुक्ति पत्र जब बिना मौसम के ओले की तरह मेरी झोली में आ गिरा तो उसे ठुकराना भारी भूल होती. इस कारण मैं ने हथियार डाल दिए. सब ने प्रसन्नचित्त से मेरा नियुक्ति पत्र तथा मिलने वाली सुविधाओं को 'श्रीसत्यनारायण' की कथा की तरह पढ़ा. प्रसाद तो बांटना ही था.

नौकरी पर जाना था, शहर से बहुत दूर जंगल से घिरे एक गांव में. नाम था भद्राचलम. भद्राचलम आंध्र प्रदेश में है और उस क्षेत्र में
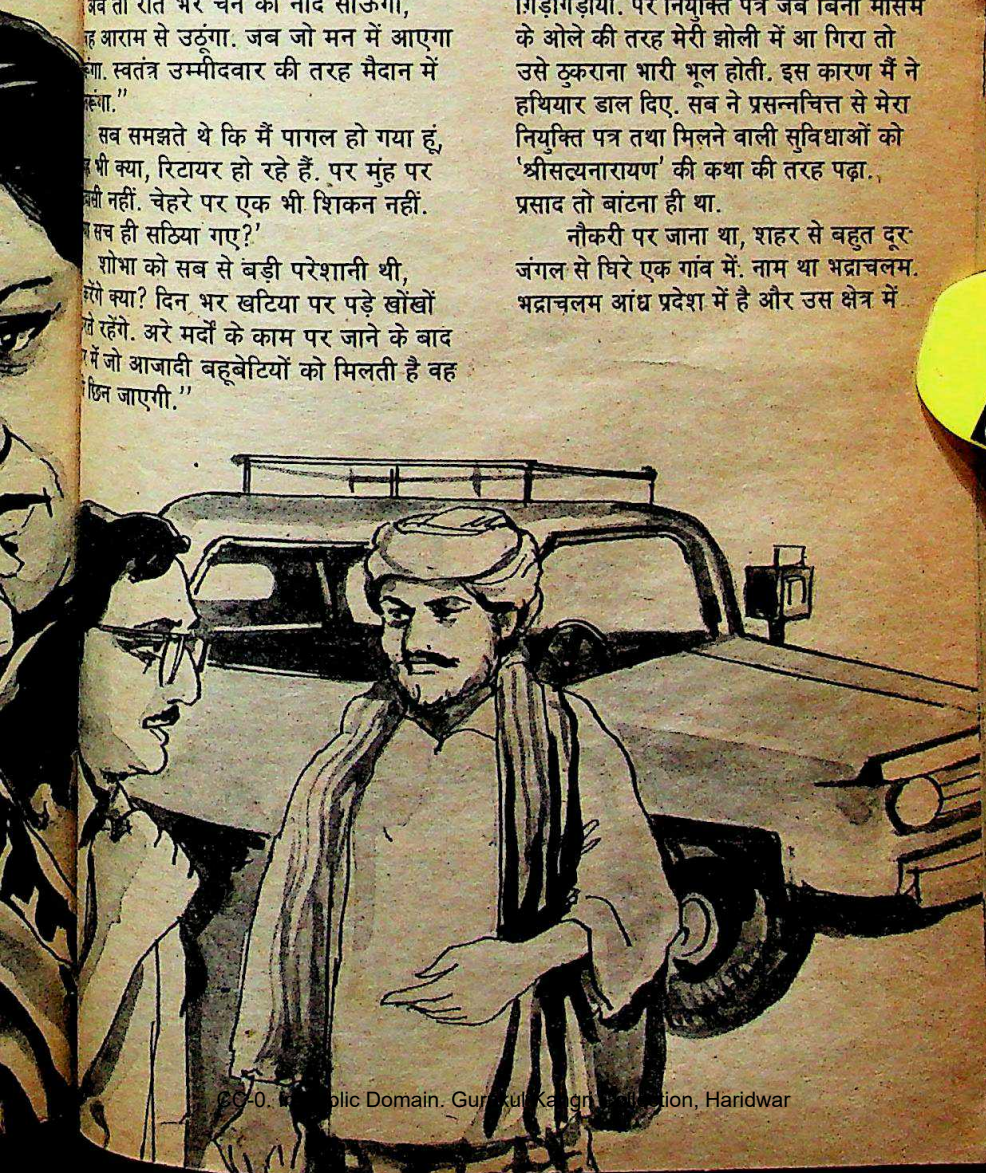
नक्सलवादियों का बड़ा जोर था. नजदीकी रेलवे स्टेशन 50 किलोमीटर दूर था. वहां कैसे पहुंचा जाए इस के लिए मैं समयसारणी का गहन अध्ययन करने लगा. मैं ने तय किया कि केरल एक्सप्रेस से चला जाए जो नई दिल्ली से दोपहर 12 बजे छूटती थी. इस का विजयवाड़ा पहुंचने का समय अच्छा था. शाम सवा तीन बजे. कुछ लोगों से परामर्श ले चुका था. विजयवाड़ा से भद्राचलम लगभग 250 किलोमीटर दूर था. विजयवाड़ा में सदा टैक्सियां खड़ी रहती हैं. चारपांच सौ में कंपनी के अहाते में सामान सहित पहुंच जाऊंगा. ट्रेन बदलने व अन्य झंझटों से बच जाऊंगा. जाने का भाड़ा तो कंपनी को देना ही था. मैं ने स्टेशन जा कर प्रथम श्रेणी की दो शायिकाएं आरक्षित करवा लीं.

चलने से कुछ दिनों पूर्व टीवी ने एक सनसनीखेज समाचार दिखाया जो अगले दिन भारत के सारे प्रमुख समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ की सुर्खी था. भद्राचलम के पास एक गांव से 12 भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों को नक्सलवादियों ने अपहरण कर लिया था. ये अधिकारी सुरक्षा के सारे नियमों का उल्लंघन कर के एक गोष्ठी में भाग लेने गए थे. नक्सलवादी अब उन को छोड़ने के बदले अपने कुछ नेताओं की, जो बिना मुकदमे के जेल में सड़ रहे हैं, रिहाई की मांग कर रहे थे.

इस समाचार से शोभा का दिल हिल गया. अब वह न जाने की या टाल जाने की बात कर रही थी. कहां इस बुढ़ापे में ऐसी जगह जा कर बैठेंगे? शोभा के इस रवैए से मैं ने भी किसी भी सूरत में जाने की हठ पकड़ ली. शोभा को सताने में मुझे अच्छा लगता था. अब गए तो हम दोनों, पर जब ट्रेन में बैठे तो मैं हंस रहा था और शोभा का मुखड़ा भावी आशंका से लटका हुआ था. मेरे अकेले जाने का प्रस्ताव उस ने बहादुरी से ठुकरा दिया था. साथ मरनेजीने की प्रतिज्ञा जो की थी.

''मुंह क्यों लटका रखा है? तुम्हारे तो मन की मुराद पूरी हो रही है.'' मैं ने छेड़ते हुए पूछा.

शोभा ने मुझे घूर कर देखा. शायद मैं एक सड़ागला टमाटर था जो भूल से उस की टोकरी में आ गया था. उत्तर देने में तौहीन होती, इस कारण कुछ न बोली.

बच्चे यानी पुत्र, बहू और पोतेपोती व अन्य रिश्तेदार बेचैनी से प्लेटफार्म पर घूम रहे थे. कब तक प्रतीक्षा करें? यह ट्रेन चलती क्यों नहीं? मेरे बहुत कहने पर भी उन्होंने जाना स्वीकार नहीं किया. हम लोग वास्तव में चले गए, यह पुष्टि कर के ही वे जाना चाहते थे.

अब तो हम लोग भी बेचैन होने लगे. अगर बहुत देर हो गई तो विजयवाड़ा रात में पहुंचेंगे. अनजानी जगह में रात्रि की यात्रा बुद्धिमानी नहीं. लगता है, स्टेशन पर ही रात बितानी पड़ेगी. ट्रेन क्यों देर में चली इस का सही कारण तो पता न लगा, परंतु अंत में 12 के बजाय डेढ़ बजे बिना सीटी दिए खिसकने लगी. हम सब के ढीले हाथों में हरकत आ गई, और हम तेजहवा में सूखे पत्तों की तरह हिलने लगे.

''जाते ही पत्र डाल देना.''

''राजीखुशी पहुंचने का समाचार देना.''

''खिड़की से हाथ बाहर न निकालना.''

''समय से खाना खा लेना.''

''सब्जी के नीचे कटहल का अचार भी रखा है.''

''खाने के बाद 'बी कांपलैक्स' की कैप्स्यूल जरूर ले लेना.''

''कंजूसी मत करना. दूध अवश्य पीते रहना.''

जब सब कुछ कानों से दूर और आंखों से ओझल हो गया. तब मैं ने गहरी सांस ली. पता नहीं यह सब बातें चलती ट्रेन के साथ दौड़ते हुए कहने का ही रिवाज क्यों है? अरे भई, अच्छेखासे इतनी देर तक प्लेटफार्म पर खड़े थे, तब क्यों नहीं कहा? पर शायद इस का भी मजा कुछ और ही है.

रास्ते में पड़ने वाले जिनजिन शहरों में रिश्तेदार रहते थे उन्हें हमारी यात्रा की सूचना दे दी गई थी. ग्वालियर में साले साहब सपरिवार मिलेंगे. हम तो ले कर चले ही थे पर वे भी रसद, राशन व मिठाई अवश्य ले कर आएंगे. ट्रेन देर से पहुंचेगी. इस की असुविधा हमारे प्रति उन लोगों के प्रेम का हरजाना था. ट्रेन मुशकिल से दो मिनट रुकेगी, पर इन दो मिनटों में दो वर्षों का हिसाबकिताब हो जाएगा. आगे भोपाल में साली साहिबा सपरिवार हमारा स्वागत करेंगी. खानेपीने के सामान के साथ. ट्रेन रात में 10 बजे पहुंचेगी. उन लोगों को आनेजाने में कष्ट व असुविधा

ी, इस की हमें चिंता न थी. पत्नी चाहे
ट न उठाए पर सालों कष्ट की परवाह कभी
करती. नागपुर में भी एक मित्र को आना
बाकी में भी पुत्री का देवर था. चलो
छा है. यात्रा आराम से मिलतेमिलाते कट
एगी.

एक बात की हम ने गणना नहीं की थी. डेढ़ घंटे देर से चली तो बस देरी ओर दूरी ती चली गई. स्टेशन पर आ कर मिलने लों की असुविधा का तो ध्यान मन से जाता , पर अपनी असुविधा की चिंता सताने ी. प्रथम श्रेणी में यात्रा करने पर भी सारी त जागते रहना पड़ेगा. न जाने कब कौन सा शान निकल जाए? परिणाम यह हुआ कि जयवाड़ा तक पहुंचतेपहुंचते ट्रेन पांच घंटे देर पहुंची. घड़ी रात्रि के साढ़े आठ बजा रही . अवश्य ही रिश्तेदारों की बद्दुआ का यह तीजा था.

पर अब क्या करें? टैक्सी ले कर अनजाने नाम रास्तों से हो कर भद्राचलम चलें या री रात स्टेशन पर ही बिता दें और सुबह ाना हों. कुली जल्दी मचा रहा था कि वह या करे? अंत में मैं ने कुछ देर प्रतीक्षालय में सामान रखवा कर हाथमुंह धो कर व नाश्ता रने के बाद ही आगे का कार्यक्रम निर्धारित रने का निर्णय लिया. कम से कम सांस तो ले ें. शोभा गुमसुम रही. उस के लिए तो दिल्ली चलते ही हमें अपशगुन ने घेर लिया था, सही सलामत पहुंचे तो सवा रुपए...हूं!"

स्टेशन के भोजनालय से ले कर गरम दोसा खाया. भूख लगी थी, सो अच्छा लगा. काफी पी तो जान ही आ गई. अब मैं दुनिया की हर शक्ति से लड़ने के लिए तैयार था. शोभा से कहा कि वह सामान देखे और मैं बाहर टैक्सी का जायजा ले कर आता हूं. मन करेगा तो चलेंगे. टैक्सी स्टैंड पर बहुत सारी टैक्सियां खड़ी देख कर मन प्रसन्न हुआ.

एक से पूछा, "चलोगे?"

"कहां?"

"भद्राचलम."

"भद्राचलम? नहीं साहब, हमें उधर नहीं जाना." मुझे कुछ हैरानी हुई, जब इसी तरह का उत्तर कुछ और लोगों ने भी दिया. कुछ देर खड़ा रहा और फिर टैक्सी स्टैंड के दूसरे किनारे पर चला गया. शायद उधर कुछ काम बने.

"भद्राचलम? जी नहीं."

"क्या बात है? कोई जाने को राजी नहीं होता." मैं ने पूछा, "क्या आप लोगों को टैक्सी नहीं चलाना?"

"अजी साहब, टैक्सी चलाना ही तो हमारा धंधा है. नहीं चलाएंगे तो खाएंगे क्या?"

"तो फिर चलते क्यों नहीं?"

चाय की बड़ी तलब लग रही थी. प्याला लबों पर था. इस अमृत को कैसे ठुकरा दूं? मैं ने हताश दृष्टि से शोभा की ओर देखा.

"'मां'. मुझे यह शब्द पहली बार इतना मधुर लगा. कितनी जगह रहा हूं और घूमा हूं, पर मेरी पत्नी को इतने प्यार से कभी किसी अजनबी ने मां नहीं कहा. 'मैडम, मांजी, मेम साहब' ही अकसर संबोधन के शब्द होते थे जो स्वयं में निर्जीव व निरर्थक लगते थे. मैं ने ड्राइवर को दूसरे चश्मे से देखा. मेरा अपना पुत्र भी तो इस के बराबर होगा."

"रास्ता ठीक नहीं है. जान है तो जहान है."

मैं ने चकित हो कर पूछा, "क्या हुआ रास्ते को? क्या सड़क या पुल टूट गया है?"

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं." टैक्सी चालक ने कहा, "जाने में खतरा है. हां, इस से पूछता हूं. भद्राचलम ही रहता है. ओ वैंकट, चल उठ, सवारी ले जा."

वैंकट आंखें मलते हुए उठ बैठा. हाथ की घड़ी पर निगाह डाली.

"ले जा. भद्राचलम की सवारी है."

वैंकट ने अनिच्छा दिखाते हुए कहा, "साढ़े छः सौ रुपए लगेंगे. रास्ता ठीक नहीं है."

"साढ़े छः सौ?" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

"चलिए छः सौ दे देना. दो दिन से यहीं खड़ा हूं."

"पर वहां का किराया चार सौ से ऊपर नहीं होना चाहिए."

"साहब, समयसमय की बात है." वैंकट ने दार्शनिकों की तरह कहा.

"कम नहीं लोगे?"

"जी नहीं." वैंकट ने वापस अपने को चादर में लपेटा और टैक्सी की सीट पर लंबा हो गया.

कुछ और लोगों से पूछा पर छः सौ से कम पर कोई जाने को तैयार न था. छः सौ मुझे अपनी सूचना के अनुसार अधिक लगे, इस लिए देने को मन न हुआ. वापस शोभा के पास आ गया.

"अब यहां कहां बैठे रहेंगे? देखो न नीचे तिलचट्टे भी घूम रहे हैं." शोभा ने कहा, "पता करो, शायद कोई रिटायरिंग रूम ही मिल जाए."

मैं ने जा कर पूछताछ की पर कोई कमरा खाली न था. सोचा कुछ खाना ही खा लिया जाए. शोभा ने टोकरी खोली और खाने का प्रबंध किया. खाने के बाद बैठे रहने को जी नहीं किया तो एक बार फिर बाहर निकल गया. इधरउधर निगाह डाली तो देखा एक टैक्सी कुछ अलग सी खड़ी थी. झांक कर देखा तो ड्राइवर अंदर लेटा सो रहा था.

मैं ने उसे हिलाया तो वह एकदम सतर्क हो कर बैठ गया.

"चलोगे?"

"कहां?"

"भद्राचलम."

मुझे लगा उस की आंखों में चमक आ गई. शायद भ्रम था. छनती हुई रोशनी आंख मिचौली खेलती है.

"जी चलूंगा." उस के स्वर में उत्साह था.

"कितने रुपए लोगे?"

"चार सौ रुपए."

"क्या?" मैं ने आश्चर्य से पूछा. सहसा विश्वास न हुआ.

"चार सौ साहब, ज्यादा नहीं मांगूंगा. वैसे आजकल छः सौ का रेट चल रहा है."

"तो तुम कम क्यों ले रहे हो?" मैं ने जानना चाहा.

"जी, कल जब उधर से आया था तो मां ने कहा था कि मकान मालिक के लिए दवाएं लेते आना. बहुत बीमार हैं. छोटी जगह है न, सारी दवाएं मिलती नहीं हैं."

"तो दवाइयां पहुंचाने के लिए नुकसान उठाओगे?"

"नफानुकसान तो चलता रहता है साहब. पर हमारे मकान मालिक बड़े भले आदमी हैं. दवाएं पहुंचाना बहुत जरूरी है. कब तक छः सौ रुपए वाले का इंतजार करता रहूंगा?" वह थोड़ा हंस कर बोला, "फिर मेरी मां का हुक्म जो है."

मैं ने ध्यान से देखा. वह लगभग अट्ठाइस वर्ष का युवक था. लाल चैक की कमीज और सलेटी रंग की पतलून पहने था. रंग थोड़ा सांवला था, पर नाकनक्श अच्छे थे. पता नहीं किन परिस्थितियों में यह काम कर रहा था.

"कितने घंटे लगेंगे?"

"पांच घंटे. जल्दी भी पहुंच सकते हैं."

मैं ने उत्सुकता शांत करने के लिए पूछा, "रास्ता तो ठीक है न?"

"जी बिलकुल ठीक है. आप चिंता न करें." उस ने इतनी जल्दी से कहा कि मेरे दिल में शक पैदा हो गया.

मैं ने टालने की नीयत से कहा, "अच्छा मैं अभी आता हूं. मेरी पत्नी बैठी हैं."

"जरूर आइए साहब. मैं आप का इंतजार करूंगा. दूसरी सवारी नहीं लूंगा." उस ने मेरा उत्साह बढ़ाते हुए कहा, "आप कोई चिंता न करें."

मैं ने शोभा से कहा.

"मुझे तो गड़बड़ लगती है. ऐसे कैसे राजी हो गया?"

"कहा न, दवाएं पहुंचानी हैं."

"ऐसी कहानी तो सब ही गढ़ लेते हैं."

"तो फिर छः सौ दे कर चलते हैं."

"नहीं, नहीं. यह तो बहुत हैं. बैठे रहो, सुबह देखेंगे."

"भई मेरे बस का नहीं है बैठना."

"बस तुम्हें तो खुजली मचने लगती है. क्या मालूम कैसा आदमी है? कहीं रास्ते में धोखा दे दिया तो?"

"अरे शोभा, यह स्वतंत्र भारत है. इतनी आसानी से कोई धोखा नहीं दे सकता. अब चलो भी."

बेमन व अनिश्चितता से शोभा उठ खड़ी हुई. मेरी हठ के आगे वह सदा झुक जाती थी. इसलिए नहीं कि उसे मुझ पर विश्वास था बल्कि इसलिए कि आगे कह सके, 'देखा, मेरी नहीं मानी तो क्या हश्र हुआ?'

जब सामान टैक्सी में रखा जा रहा था, शोभा ड्राइवर को घूरघूर कर देख रही थी. शायद इस तरह वह उस के दिल की किताब को पढ़ना चाहती थी.

"ठीकठाक पहुंचा भी दोगे?" शोभा ने आशंका से पूछा.

"मां, आप चिंता मत करो. आप को सही सलामत पहुंचा कर ही खाना खाऊंगा." ड्राइवर ने आश्वासन दिया.

'मां!' मुझे यह शब्द पहली बार इतना मधुर लगा. कितनी जगह रहा हूं और घूमा हूं. पर मेरी पत्नी को इतने प्यार से कभी किसी अजनबी ने मां नहीं कहा. 'मैडम, मांजी, मेम साहब' ही अकसर संबोधन के शब्द होते थे जो स्वयं में निर्जीव व निरर्थक लगते थे. मैं ने ड्राइवर को दूसरे चश्मे से देखा. मेरा अपना पुत्र भी तो इस के बराबर होगा.

सामान ठीक तरह से रख और बांध कर ड्राइवर ने हम दोनों को पीछे आराम से बिठा दिया. आगे बैठ कर जब उस ने मेरी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा तो मैं ने चलने का संकेत दिया. कुछ ही क्षणों में एक झटके से वह चल पड़ा. मैं ने घड़ी में देखा. साढ़े चार बजे थे. पांच घंटे यानी...

पता नहीं कितना समय निकल गया. झपकी लग गई थी. शोभा का सिर झुक कर मेरे कंधे पर आ लगा था. मैं ने अपना सिर पीछे टिका रखा था और पैर नीचे पूरी तरह फैला लिए थे. लगा गाड़ी रुक गई है. सड़क के

एड्स रोगी हताश न हों

इस समय विश्व से एड्स में करीब 50 लाख व्यक्ति पीड़ित हैं. एड्स के रोगियों की सब से अधिक संख्या अमरीका में है. अभी तक एड्स जैसे घातक रोग से छुटकारा पाने के लिए कोई कारगर औषधि उपलब्ध नहीं हुई है.

मगर हाल ही में अमरीकी और चीनी वैज्ञानिकों ने चीनी खीरे और ककड़ी की प्रजाति के एक पौधे की जड़ से एक दवा निकाली है. प्रयोगशाला में देखा गया है कि इस दवा से एड्स के कीटाणु मर जाते हैं. एड्स की नई दवा जी.एल.क्यू.-323 चीनी खीरे के पौधे की जड़ से निकाले गए प्रोटीन का शुद्ध रूप है.

अभी यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि इस दवा से एड्स रोगी स्वस्थ हो ही जाएंगे. लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस दवा से शायद एड्स पर काबू पाया जा सके.

किनारे लगे पेड़ कहीं खड़े थे, दौड़ नहीं रहे थे. मैं ने आंखें फाड़ कर अंधेरे में देखने की कोशिश की. सच ही तो गाड़ी खड़ी हुई थी. ड्राइवर अंदर नहीं था. मैं ने शोभा का सिर हटाया. वह जाग गई.

"क्या हुआ?"

"पता नहीं, मैं देखता हूं." मन में भय ने कुछ आकार लिया. बाहर आ कर देखा तो बोनट खुला हुआ था और ड्राइवर अंदर झुका हुआ था.

"क्या हुआ भई?" मैं ने सामान्य स्वर में पूछा.

"कुछ नहीं, साहब. बस एक मिनट और. कारबुरेटर में कचरा फंस गया है. आप आराम से बैठिए."

'क्या यह दुश्मन की कोई चाल है?' चारों तरफ जंगल ही जंगल था. दूरदूर तक कुछ दिखाई नहीं पड़ता था. एक ट्रक आंखें चौंधियाता हुआ आया और अंधेरे की छाती चीरता हुआ निकल गया. मैं अंदर नहीं बैठा. चौकन्ना खड़ा देखता रहा. आवश्यकता पड़ने पर अगर कोई गाड़ी निकली तो चिल्ला कर ध्यान आकर्षित कर सकता हूं.

बोनट बंद करते हुए ड्राइवर ने मुसकरा कर कहा, "बैठिए साहब, अब फरटि से चलते हैं. आजकल पेट्रोल बड़ा गंदा आता है."

मैं ने सहमति से सिर हिलाया. साढ़े बारह बजे थे. राम जाने कब पहुंचेंगे. पता नहीं पहुंचेंगे भी या नहीं. एक शंका जन्म ले चुकी थी. मैं ने न सोने का निश्चय किया.

शोभा ने पूछा, "क्या हो गया था?"

"कुछ नहीं मां, आप सो जाइए." ड्राइवर ने सहज स्वर में कहा, "गाड़ी है, कुछ न कुछ होता ही रहता है."

टैक्सी ने दो तीन बार घर्रघर्र की और फिर चल पड़ी. मैं ने सोचा, लगता है इस का साथी यहां नहीं आया. शायद आगे मिलेगा. मैं अंधेरे में ड्राइवर के मनोभाव पढ़ने की चेष्टा करने लगा. परंतु पीछे से क्या दिखता.

शोभा ने फुसफुसा कर पूछा, "रुपए तो संभाल कर रखे हैं न?" उस का हाथ मेरी गोद में कांप रहा था.

मैं ने बनियान के अंदर लगी जेब पर हाथ रखते हुए कहा, "हां, सब ठीक है. तुम चिंता मत करो. तुम्हारे पास तो रुपए ठीक हैं न?" शोभा ने कमर पर हाथ फेरते हुए उत्तर दिया, "हां."

मुझे शुरू से ही ड्राफ्ट या ट्रैवलिंग चैक ले कर जाने में अरुचि रही है. सब इसे मूर्खता कहते हैं और शायद है भी. मुझे यही कहना आता है कि पहुंचते ही किसकिस से रुपए लें? ड्राफ्ट या चैक भुनाने में आखिर समय लगता है न. वैसे आज मैं सोच रहा था कि इतने रुपए ले कर नहीं चलना था.

शोभा ने ड्राइवर से पूछा, "अब कितना दूर है?"

"बस मां," ड्राइवर ने कहा, "यही दोतीन घंटे."

पहले जो 'मां' शब्द में मुझे मधुरता की महक आई थी अब वह कहीं खो गई थी.

लूटमार करने से पहले शायद हमें आश्वस्त करना चाहता था. मैं ने शोभा का हाथ अपने हाथ में ले लिया.

अचानक गाड़ी एक झटके से रुक गई.

"क्या हुआ?" मैं ने लगभग चीख कर पूछा.

"लगता है फैन बेल्ट टूट गई है. बहुत घिस गई थी." ड्राइवर ने दरवाजा खोल कर उतरते हुए कहा.

"अब क्या होगा?"

"आप आराम से बैठिए न साहब. मेरे पास नई फैन बैल्ट है. अभी लगाता हूं."

मुझे उस की ईमानदारी पर जो शक हो रहा था, अब विश्वास में बदल गया.

अवश्य ही चालाकी कर रहा था. जब तक उस ने नई फैन बैल्ट बदली मैं चौकस खड़ा रहा. 15-20 मिनट बाद हम फिर चल पड़े.

शोभा ने फुसफुसा कर कहा, "मेरा कहा नहीं माना न? कहीं ठहर भी नहीं सकते. जंगल ही जंगल है."

मैं ने झूठा आश्वासन दिया, "डरने की कोई बात नहीं. सब ठीक हो जाएगा."

"क्या ठीक हो जाएगा?" शोभा ने क्रोध और भय से कहा, "मेरी तो रूह कांप रही है."

मैं ने हास्य का विफल प्रयास किया, "घबराओ मत. अभी शरबत रूहआफ्जा का गिलास पिलाता हूं, रक्तचाप सही हो जाएगा."

"छि!" शोभा ने तिरस्कार से कहा और मेरे हाथ से अपना हाथ छुड़ा लिया.

कोई आधे घंटे बाद गाड़ी की गति धीमी

गई. तीनचार बार घर्रघर्र की आवाज हुई और फिर गाड़ी रुक गई. इस बार तो मेरा भी धड़कने लगा.

"अब क्या हुआ?"

"देखता हूं साहब. गाड़ी एक्सीलेरेटर नहीं रही है."

वह बोनट खोल कर झांकने लगा. मैं भी के पास खड़ा हो कर देखने लगा.

"एक्सीलेरेटर का तार टूट गया है." ड्राइवर ने बड़े इत्मीनान से कहा.

"क्या दूसरा तार है?"

"नहीं."

"तो फिर क्या करोगे?"

"यहां पास ही मिस्त्री है. उसे बुला कर लाता हूं."

शोभा ने आतंक से कहा, "नहींनहीं, हमें छोड़ कर कहीं नहीं जाना है."

"आप डरिए मत मां. सब ठीक हो जाएगा."

"नहीं." शोभा ने दृढ़ता से कहा.

ड्राइवर परेशानी से मुझे देखने लगा.

"कितनी दूर है यह मिस्त्री?" मैं ने पूछा.

"यही दो किलोमीटर. सड़क के किनारे ही है. वहीं रहता है और वहीं सोता भी है."

"तो आप गाड़ी को धक्का दे कर ले चलो."

"पर साहब आप कहां तक धक्का देंगे?"

"भई मुशकिल में तो सब ही को काम करना पड़ता है."

अचानक उस का मुंह खिल उठा, "ठीक है साहब. आप स्टीयरिंग पकड़ लीजिए. मैं धक्का देता हूं. ब्रेक पर पैर रखिएगा. कहींकहीं

शब्द पहेली-11 : अपना शब्द ज्ञान बढ़ाइए.

संकेत : बाएं से दाएं

3. एक करने की क्रिया
5. सेवक
6. निरादर
8. सही
10. एक छंद
11. एक पात्र जिस में कुटाई आदि कर के दवा बनाई जाती है.
12. सोया हुआ
14. गरमी के मौसम का एक फल
15. अनजान व्यक्ति
16. आबरूइज्जत
17. बुद्धिमान

ऊपर से नीचे

1. बुलबुला
2. अकस्मात
3. कम सामान, ज्यादा
3. मांग
4. बारबार बोल कर कंठाग्र करना
7. रास्ता
8. काम आदि करने का
3. स्थान
9. बहुत गरम किया हुआ
10. अवगुण
12. घोड़े का खुर
13. सूप
14. धावा
15. अत्यधिक
16. अलगाव

उत्तर आगामी अंक में

ढलान आ जाती है."

उस की बात मान कर मैं ने स्टीयरिंग संभाल लिया. गियर न्यूट्रल में डाल दिया और जरा से धक्के से गाड़ी चल पड़ी. बीचबीच में ड्राइवर मुझे चेतावनी या हिदायत देता रहता था. कुछ समय में ही मिस्त्री के घर पहुंच गए.

ड्राइवर ने मुसकरा कर शोभा से कहा, ''लो मां आ गए. आप तो बेकार में घबरा रही थीं.''

शोभा चुप रही. मैं हलका सा मुसकराया.

ड्राइवर ने मिस्त्री को जगाया और अपनी समस्या बताई. जब तक मिस्त्री गाड़ी को देख रहा था ड्राइवर उस की झोंपड़ी में चला गया. 10 मिनट के अंदर दो गिलास गरम चाय ले आया.

''लीजिए साहब चाय पीजिए. मां चाय.''

गिलास हाथ में पकड़ा कर वह फिर अंदर चला गया. मैं ने कृतज्ञता से गिलास को मुंह से लगाया. शोभा ने मेरा हाथ पकड़ लिया.

''चाय मत पियो.''

''क्यों?''

''कुछ मिला दिया हो तो?''

चाय की बड़ी तलब लग रही थी. प्याला लबों पर था. इस अमृत को कैसे ठुकरा दूं? मैं ने हताश दृष्टि से शोभा को देखा.

''नहीं नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है? खैर मैं धीरेधीरे चुस्की लेता हूं. मुझे अगर कुछ न हो तो तुम पी लेना.''

''मत पियो न.'' शोभा ने झिड़क कर कहा.

''अब तो जरूर पिऊंगा.'' मैं ने दृढ़ हठ की और दो घूंट पी ली.

शोभा घूरती रही और मैं पीता रहा.

''कुछ नहीं हुआ. अब तुम पी भी लो.'' मैं ने ललकारा.

शोभा के दिल में मेरे से भी अधिक शक बैठ गया था. उस ने खिड़की से बाहर चाय फेंक दी.

''तुम भी बस.'' मैं ने चिढ़ कर कहा.

''कहा न, यह आदमी ठीक नहीं है. पता नहीं क्या तमाशा कर रहा है. बस तुम तो इस की मीठी बातों में फंस गए हो. इतनी बार क्या गाड़ी खराब होती है?''

सोच तो मैं भी कुछ ऐसा ही रहा था, पर शोभा के आगे स्वीकार नहीं किया. थोड़ी सी [illegible] है. काफी पास आ गए हैं. मैं ने रास्ते में भद्राचलम लिखा हुआ किलोमीटर का पत्थर भी देखा था. कितनी दूर था, यह नहीं पढ़ पाया इस बार ध्यान रखूंगा.

ड्राइवर चाय के गिलास लेने आया. वह भी काफी ताजा लग रहा था.

''साहब, चाय ठीक थी न? मां चाय कैसी थी?''

इस से पहले कि मैं कुछ कहता, शोभा ने पूछा, ''यहां रहने की जगह नहीं है?

''क्या मां?''

''कोई होटल, धर्मशाला?''

''नहीं मां. पीछे ही तो गांव है. रहने को तो जगह कोई न कोई दे ही देगा, पर खतरा है. सीधे चलेंगे.''

''खतरा? कैसा खतरा?'' मैं ने तीव्रता से पूछा. स्टेशन पर दूसरे टैक्सी वाले कह तो रहे थे कि रास्ता ठीक नहीं है. मुझे अधिक पूछताछ करनी चाहिए थी.

''आप को नहीं मालूम?''

''नहीं.''

''इस इलाके में तो हिंदूमुसलमान दंगा हो गया था. कितने लोग मारे गए. कल ही तो कर्फ्यू उठा है. यह गांव मुसलमानों का है इसलिए यहां रुकना ठीक नहीं है.''

''पर टीवी में तो कुछ नहीं दिखाया. अखबार में भी कुछ नहीं था.'' मैं ने आश्चर्य से कहा.

''छोटी जगह है न? यहां कौन आता है?''

''तुम अगर स्टेशन पर बता देते तो हम दिन में चलते.'' मैं ने शिकायत की.

''पर साहब,'' ड्राइवर ने कहा, ''मुझे दवा भी तो पहुंचानी थी. मकान मालिक को कुछ हो गया तो मेरी मां माफ नहीं करेगी. बड़ा गुस्सा करती है.''

शोभा ने क्रोध से कहा, ''जो भी हो, तुम्हें बता देना था. मैं कभी नहीं आती.''

''मां आप चिंता क्यों करती हैं? रोज आताजाता हूं, यहां सब मुझे जानते हैं.''

''अच्छा फंसा दिया.'' शोभा जितनी क्रुद्ध थी उतनी ही डर भी रही थी. उस का डर थोड़ाथोड़ा मेरे दिल में भी उतर रहा था. चार सौ रुपए किराया मांग कर उस ने जरूर कोई चाल चली है. यहां कोई पुलिस वाला भी तो नहीं.

''चलिए साहब, अब फटाफट पहुंचा

" ड्राइवर ने मेरा ध्यान आकर्षित करते कहा.

मैं ने घड़ी देखी. साढ़े तीन बजे थे. सड़क भी सुनसान थी. न कोई ठौर, न ठिकाना. के मन में है क्या?

"साहब बैठ जाइए. यह जगह ठीक नहीं जल्दी से निकल चलेंगे."

"राम जाने हिंदू है या मुसलमान." शोभा रे से बड़बड़ाई, "और न मानो मेरा ना."

मैं ने खिसिया कर कहा, "दंगा करने ों की न जात होती है, न धर्म. अब चलो देखा जाएगा."

"पता नहीं, कहां ले जाएगा."

"टैक्सी नंबर याद है. कहां जाएगा भाग ?"

"मेरे पीछे कौन बताएगा. टैक्सी नंबर?" भा ने व्यंग्य से पूछा.

मेरा दिल स्वयं धड़क रहा था तेजी से. निश्चितता से अंदर बैठ गया. बैठते ही इवर ने पूरे जोर से चाबी घुमा कर क्सीलेरेटर दबा दिया. गाड़ी एक झटके से ल पड़ी. हवा से बातें करने लगी. क्या करेगा ? इतनी तेजी से क्यों भगा रहा है? इस का थी अवश्य कहीं खड़ा प्रतीक्षा कर रहा होगा ने शोभा का हाथ कस कर पकड़ लिया.

मैं ने पूछा, "यहां कहीं आसपास में लिस स्टेशन है?"

"है तो साहब, पर रास्ते में नहीं. क्यों, छ रह गया सामान आप का?"

"नहीं ऐसे ही पूछ लिया." मैं ने गहरी सांस ले कर कहा.

"छः बजे से पहले पहुंचा दूंगा. गाड़ी एकदम ठीक है. यह जब्बार बहुत अच्छा ती है."

"जब्बार... जब्बार कौन?" शोभा ने दीवानगी से कहा.

"वही मां. जिस ने अभी गाड़ी ठीक की थी."

शोभा ने शिकायत भरी आंखों से मुझे घूरा. देखा, उस का धर्म भ्रष्ट होतेहोते रह गया. मैं ने सोचा, 'यह ड्राइवर मुसलमानों के गांव नहीं गया. अवश्य ही हिंदू होगा. आखिर उसे भी तो अपनी जान प्यारी है.' शंका और आशंका से दिल बैठ रहा था.

ठीक छः बजे उस ने कंपनी के स्वागत कक्ष में हमारा सामान उतरवा दिया. मुझ से अधिक शोभा ने गहरी सांस ली. जान बची लाखों पाए. सामान गिन कर मैं ने ड्राइवर को चार सौ रुपए दे दिए. सुरक्षित ले आया, इस कारण मन में आया कि उसे पचास रुपए और दे दूं. आखिर कम रुपए में भी तो आया था. सोचा तो, पर मैं ने रुपए नहीं दिए. इतने साल से सरकारी नौकरी की थी. इनाम देना हमारी नौकरशाही संहिता के विरुद्ध था.

"सुनो." मैं ने उस से कहा.

"जी साहब," वह शोभा को देख कर मुसकराया.

"मुझे चार सौ रुपए की रसीद चाहिए. कंपनी से किराया जो लेना है. अपना नाम और टैक्सी नंबर भी लिख देना." मैं ने अपना पैड और पेन उसे दे दिया.

उस ने लिख कर पैड मुझे वापिस कर दिया. मैं पढ़ रहा था. हिंदी में लिखा था: 'विजयवाड़ा से भद्राचलम तक आने का भाड़ा केवल 400 रुपए प्राप्त हुए.

इसलाम

टैक्सी नं.ए.पी.यू.8508

जब तक मैं ने निगाह उठाई वह जा चुका था, पर मेरे मन में एक प्रश्न छोड़ गया था. ●

महिलाओं खुश हो जाओ

अब उन महिलाओं को चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है, जिन के बाल छोटे हैं. बालों की लंबाई बढ़ाने के लिए हेयर वेल्डिंग का इस्तेमाल किया जा सकता है.

हेयर वेल्डिंग अर्थात बालों को जोड़ने की प्रक्रिया में प्राकृतिक और कृत्रिम बालों को एक्रिलिक फाइबर द्वारा जोड़ा जाता है. हेयर वेल्डिंग के लिए आवश्यक है कि प्राकृतिक बालों की लंबाई कम से कम एक सेंटीमीटर हो.

यह प्रक्रिया पूरी तरह से सुरक्षित है. इस विधि द्वारा बढ़ाए गए बालों को धोने में कोई दिक्कत नहीं आती. ●

अनेक शैक्षणिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक अधिकारों से सुसज्जित आधुनिक भारतीय नारी वैदिक कालीन नारी से बेहतर स्थिति में तो है परंतु इन अधिकारों के अविवेकपूर्ण प्रयोग के प्रलोभन ने उसे समाज की मूल इकाई परिवार से दूर ला कर दोराहे पर खड़ा कर दिया है. एक ओर उसे परिवार के बाहर सामाजिक, राजनीतिक तथा व्यावसायिक दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है और दूसरी ओर अपनी शारीरिक रचना के कारण संतान की उत्पत्ति और उस के सम्यक लालनपालन का उत्तरदायित्व भी उस के ऊपर होता है. इसलिए परिवार से जुड़े रहना उस की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है. परिवार के बिना उस का व्यक्तित्व और जीवन दोनों ही उसे अर्थहीन लगते हैं.

पुरुष ही महिलाओं को नशेड़ी न

लेख • भीमसेन

का निर्वाह
ौर अपनी
संतान की
लनपालन
र होता है.
उस की
वश्यकता
त्तत्व और
ते हैं.

ओं ड़ी नाते हैं

न

...रुषों के साथ ...धे से कंधा मिला ...र चलने की प्रवृत्ति ...र समान अधिकारों की उत्कंठा में महिलाओं के कदम आज इतने ...गे बढ़ चुके हैं कि वे उन्मुक्तता की डगर पर बढ़ने लगी हैं और ...श्चात्य सभ्यता की दीवानी हो कर मादक द्रव्यों का सेवन करने में ...नंद सा महसूस करने लगी हैं. महिलाओं की ऐसी दिग्भ्रमित ...वधारणा और भटकती मानसिकता के लिए अंततः किसे दोषी ...हराया जा सकता है?

स्त्रियों की इस मानसिकता का शोषण ...ते हुए कानून द्वारा लैंगिक असमानता ...माप्त किए जाने पर भी पुरुष न तो अपनी ...रिवारिक सार्वभौमिकता छोड़ने के लिए ...यार है और न ही स्त्री को परिवार में ...मान दर्जा देने के लिए.

पारिवारिक तथा व्यावसायिक दायित्वों ...दोहरा बोझ ढोता हुआ सेकंड सेक्स ...तीय लिंग) फर्स्ट सेक्स (प्रथम लिंग) ...था ईक्वल सेक्स (समान लिंग) बनने के ...ए जूझ रहा है. इस रस्साकशी के कारण ...रिवार में प्रायः तनाव बना रहता है जिस से मुक्ति पाने के लिए 40 वर्षीय सुनीता रोजाना नींद की गोलियां लेती है. सुनीता जैसी अनेक प्रौढ़ महिलाएं नियमित रूप से नींद की गोलियों का प्रयोग करते देखी गई हैं और ये हलके नशीले पदार्थ इन के लिए नियमित भोजन बन गए हैं.

वैवाहिक एवं व्यावसायिक जीवन से अप्रसन्न इस वर्ग की महिलाएं धीरेधीरे अधिक शक्तिशाली मादक द्रव्यों का प्रयोग स्वतः सीख लेती हैं, जबकि कुछ महिलाएं पतियों द्वारा उत्साहित किए जाने पर नशा करना सीखती हैं. सप्ताह में तीनचार बार

शराब पीने वाली तीन बच्चों की मां 30-32 वर्षीय एक रूपवती ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उस के पति ने ही उसे शराब पीना सिखाया है. उसे तो बचपन से ही शराब और सिगरेट से नफरत थी.

शादी के बाद वह अपने नवधनाढ्य पति के साथ पार्टियों में जाया करती थी. जहां उसे शराबियों की बदतमीजियां सहनी पड़तीं तथा उस के पति और उन के कुछ अंतरंग मित्र उसे रूढ़िवादी होने के ताने सुनाते रहते. पार्टियों में पति महोदय शराब में मस्त दूसरी युवतियों से प्यार जताते रहते और वह अकेली बैठी कुढ़ा करती. पार्टियों में ही नहीं घर में भी पति की उदासीनता कभीकभी असहनीय हो जाती.

''बस साथ देने के बहाने, हिम्मत कर के एक दिन मैं ने 'जहर' को गले से उतार ही लिया. उस दिन मेरे पति बहुत खुश हुए थे. उन की प्रसन्नता के लिए कभीकभी शराब पीना, रोजाना जाम टकराने में बदल गया और अब यह जीवन भर का रोग बन गया है. अब मेरे पति मुझे अपने साथ इसलिए नहीं ले जाते क्योंकि शराब पी कर मैं अपना आपा खो बैठती हूं और दूसरे पुरुषों के साथ बड़ी रसीली बातें करती हूं.

''इन पुरुषों का दोहरा व्यक्तित्व भी विचित्र है. शराब में मदहोश दूसरों की स्त्री से प्यार जताना, उन से घुलमिल कर बातें करना तो इन्हें बहुत अच्छा लगता है परंतु जब इन की अपनी पत्नियां दूसरे पुरुषों के साथ उन्मुक्त भाव से बातचीत करती हैं तो इन्हें यह सब सहन नहीं होता. रोमांस चाहने वाले ये पति अपनी स्त्रियों को निर्लज्ज कहते हैं. पर कोई बात नहीं. यह सब अब मेरे लिए 'रूटीन' बन गया है. मैं या तो घर पर बैठ कर शराब पी लेती हूं या जब कभी मन करता है, होटल वगैरह में चली जाती हूं. इस तरह जीवन गुजर रहा है.''

ऐसा लगता है कि इस रूपवती ने अपने जीवन और शराब के साथ समझौता कर लिया है परंतु जिस परिवार में पतिपत्नी दोनों शराब के व्यसनी हों वहां बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कैसा होगा, इस का सहज अनुमान लगाया जा सकता है.

कालिजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाली कुछ छात्राएं अपनी मित्र मंडली में स्वीकृति पाने के लिए पुरुष अथवा महिला मित्रों के प्रत्यक्ष प्रभाव एवं संपर्क के कारण मादक द्रव्यों का सेवन आरंभ करती हैं. दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफन कालिज में बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा ने लेखक को बताया कि ''स्कूली परीक्षा में अच्छे अंक होने के कारण इस कालिज में दाखिला मिलने पर बहुत प्रसन्नता हुई. पर कुछ ही समय बाद स्कूलकालिज और घर के परिवेश का अंतर स्पष्ट झलकने लगा.

वातावरण का प्रभाव

''यहां का वातावरण स्कूली वातावरण से अधिक स्वच्छंद एवं उन्मुक्त था. परंतु घर पर अनेक बंधनों का पालन करना पड़ता था. खानेपीने, कपड़ों के चुनाव, उन के पहनने और यहां तक कि हंसने का भी एक तरीका निश्चित था. अन्य लड़कियों को आधुनिक पोशाकों में सजासंवरा देख कर अच्छा लगता, उन की बातचीत की उन्मुक्तता भी अच्छी लगती पर घर पहुंचते ही नाटक का दृश्य बिलकुल ही बदल जाता. निम्न मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित होने के कारण धन संबंधी कोई कठिनाई हो, ऐसी बात नहीं थी. परंतु फिर भी मनचाहा पहनने और खाने की स्वतंत्रता न होने के कारण मन दुखी रहता था.

''संकोचवश न मैं अपने मांबाप से कुछ कह सकी और न ही मेरे मातापिता ने मेरे बदले हुए परिवेश और उस से जुड़ी भौतिक तथा मानसिक आवश्यकताओं को जानने और समझने का प्रयास किया. इसलिए कालिज में मैं प्रायः अकेला रहना पसंद करती थी. अथवा यों कहा जाए कि अकेलापन मेरी व्यथा से उत्पन्न विवशता थी.

''मेरी इस मानसिकता का लाभ

पाश्चात्य सभ्यता की रंगीनियों में डूबा हुआ सभ्य पुरुष उन्मुक्तताओं से उन्मुक्त यौन की भी अपेक्षा करता है.

पढ़ाते हुए मेरे एक सहपाठी ने मुझे कुछ 'अल्ट्रा माड' छात्राओं से मिलवाया. कालिज की कैंटीन और काफी हाउस में मेरे भी कहकहे गूंजने लगे. कुछ ही दिनों में मुझे पता चल गया कि हमारे समूह में से तीन लड़कियां अपने पुरुष मित्रों के साथ सिगरेट भी पीती हैं और एक लड़की को तो चरस पीने की लत थी. मैं ने इस मंडली को छोड़ने का निश्चय कर लिया. परंतु मेरे एक मित्र ने मुझे समझाया-जैसा देश वैसा भेष. इन के साथ रहने के लिए मुझे इन जैसा तो बनना ही पड़ेगा वरना ये मुझे बुद्धू कहेंगे.

''मैं उस संगत को क्यों नहीं छोड़ पाई? क्या वही समूह कालिज में अंतिम समूह था? इन प्रश्नों का उत्तर तो मैं अब तक नहीं खोज पाई हूं. शायद मैं बुद्धू कहे जाने से डरती थी और अकेलेपन और घुटनमय घरेलू वातावरण से दुखी होने के कारण मित्रमंडली में आश्रय पाने के लिए मैं भी अपने मित्र सुरेश के साथ सिगरेट के कश लगाने शुरू कर दिए. मैं और सुरेश चरस भी पीने लगे थे.

''आर्थिक दृष्टि से संपन्न परिवार से संबंधित होने के कारण सुरेश को पैसों की चिंता तो थी नहीं इसलिए मेरे नशे का खर्च भी उसे वहन करना पड़ता और बदले में मैं अपनी पढ़ाई में ध्यान देने की बजाय, उस के साथ घूमती रहती. हम घंटों बातें करते. प्यार की पींगें बढ़ रही थीं. हम दोनों भोग और संभोग की दुनिया में लीन थे. सुरेश नशे की दलदल में फंसता चला गया. वह अब हेरोइन पीने लगा था.

''न जाने कैसे उस के मांबाप को उस के नशे के बारे में पता चल गया था और वे आ कर उसे होस्टल से निकलवा ले गए थे. उस के जाने के बाद मेरी व्याकुलता बढ़ गई. नशा पूरा करना एक समस्या बन गया. नशे की खुराक खरीदने के लिए मुझे कभीकभी दूसरे पुरुषों को प्रसन्न करना पड़ता.

''नशे से मैं परेशान तो हूं, पर क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आता और इस से

उत्तेजक मादक द्रव्यों के प्रयोग से किशोरियों की सेक्स ग्रंथि समय से पहले ही विकसित हो जाती है लिहाजा वह अपने पुरुष मित्रों के साथ यौन लालसा तृप्त करने के साधन तलाशने लगती है.

बड़ी परेशानी तो यह है, जिस दिन घर वालों को मेरी करतूतों का पता चलेगा उस दिन क्या होगा? यह सोच कर चिंता, विषाद और भी बढ़ जाते हैं.''

इस व्यसनी युवती को मांबाप की कुछ तो परवाह है. इस के विपरीत हमारे समाज में युवतियों का एक ऐसा वर्ग भी है जो समाज और प्रकृति द्वारा निर्धारित नियमों की अवहेलना करने में आनंद अनुभव करता है. अनेक सांस्कृतिक आंदोलनों के प्रभाव से उच्छृंखल और स्वच्छंद युवतियों का यह वर्ग नशे की रंगीन दुनिया में खो जाने के बाद स्वयं को पारिवारिक एवं सामाजिक बंधनों से मुक्त समझता है. यह वर्ग अपनेआप को पिता अथवा पति के रूप में पुरुषों की दासता से स्वतंत्र रखना चाहता है क्योंकि किसी प्रकार का अनुशासन, नियम इस वर्ग के लिए परिवार और समाज द्वारा थोपी गई गुलामी के सिवा कुछ नहीं. परंतु मित्र के रूप में उसे पुरुष स्वीकार है.

आश्चर्य तो यह है कि इसी पुरुष मित्र से वह नशा करना सीखती है और जब यही शुभचिंतक मित्र उसे दुत्कार कर, दूसरी युवती को अपने प्रेम जाल में फांस लेता है तो त्यक्ता को दूसरा पुरुष तलाशना पड़ता है क्योंकि पुरुष के सहारे के बिना वह अपनेआप को असहाय समझती है. निराश्रयता का भय उसे घेर लेता है और पुरुष यों ही उसे ठुकराता रहता है. क्यों?

पाश्चात्य सभ्यता की रंगीनियों में डूबा हुआ सभ्य पुरुष समाज मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाली 'उन्मुक्ताओं' से उन्मुक्त यौन की भी अपेक्षा करता है. इसी उन्मुक्त यौन के कारण पुरुष और महिला मित्रों का परिवर्तन प्रायः होता रहता है. परंतु आधुनिकाओं के इस व्यवहार से उन के स्त्रीत्व की परिभाषा प्रायः डगमगाने लगती है क्योंकि शारीरिक और मानसिक संरचना के कारण व्यसनी युवतियां न तो अपने आत्मसम्मान को सुरक्षित रख पाती हैं और न अपने शरीर को.

उत्तेजक मादक द्रव्यों के प्रयोग से किशोरियों की सेक्स ग्रंथी समय से पहले ही विकसित हो जाती है तथा उन में यौन लालसा तीव्र हो जाती है. उत्तेजना के इस तूफान को रोकने के लिए पुरुष मित्रों के साथ शारीरिक संबंध बनाना व्यसनी किशोरियों की विवशता बन जाता है और पुरुष इस से अधिक और चाहता ही क्या है? इस से अधिक ये किशोरियां दे भी क्या सकती हैं?

जो युवतियां किन्हीं कारणों से पुरुषों

साथ संबंध स्थापित नहीं कर पातीं
मपीड़ा से उत्पन्न तनाव को दूर करने के
लिए मादक द्रव्यों की मात्रा बढ़ाने पर
विवश हो जाती हैं. ताकि नशे की झोंक में
सब कुछ विस्मृतियों के अंधकार में डूब
जाए. पर क्या काम उद्वेग शांत हो पाता है?
क्या नशे से तनाव, चिंता मिटते अथवा कम
होते हैं?

चेतना लौटने पर फिर वही नशा, उसे
पाने के लिए कानूनी, गैरकानूनी काम और
फिर वही मित्र. मजे की बात तो यह है कि
उन्मुक्त यौन में विश्वास करने वाला तथा
ताजे फूलों का रस चूसने वाला मतवाला
भंवरा (भारतीय पुरुष) पत्नी के मामले में
बहुत आदर्शवादी बन जाता है. नशा करने
वाली युवती से वह कदापि विवाह करने के
लिए तैयार नहीं होता. विवाह के बाद भी
उस की पत्नी नशा करे, यह भी उसे पसंद
नहीं.

युवतियां पुरुषों के इस दोहरे व्यक्तित्व
को जानती हैं, समझती हैं. इसलिए कुछ
युवतियां फिसल कर चोट खाने से पहले ही
अपने डगमगाते कदमों को संभाल लेती हैं
और जो युवतियां नशे की खाई में गहरी
चली जाती हैं वे अंततः अपने शरीर को
मादक पदार्थ पाने का साधन बनाने पर
विवश होती हैं.

कुछ समय बाद जब उन का रूप और
यौवन ढलने लगता है तब वे मादक द्रव्यों
की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए
अन्य भोलीभाली युवतियों को अपने जाल
में फंसा लेती हैं. उन्हें नशे की दुनिया में
धकेल कर उन के शरीर को अपनी आय का
साधन बना लेती हैं. इस प्रकार यह विष
चक्र बढ़ता रहता है.

और पुरुष! नशे से शारीरिक तथा
मानसिक रूप से विकलांग हुई युवतियों को
चूसे हुए आम की गुठलियों की तरह फेंक
कर हमेशा नए शिकार की ताक में रहता
है. कभी उन्हें मादक द्रव्यों के वाहक के रूप
में प्रयोग करता है और कभी उस का शरीर
बेचने का धंधा करता है. 24 वर्षीय मीना

परिवार में बैठ कर शराब पीना समय की मांग नहीं, बरबादी का पैगाम है.

की कहानी का यही सार है.

जिस दिन उस ने मेंड्रेक्स की पहली
गोली ली थी वह दिन उस के जीवन का सब
से अधिक बुरा दिन था. कुछ ही महीनों में
वह सिगरेट और स्मैक का प्रयोग करने लगी
थी. क्या कुछ नहीं किया उस ने स्मैक पाने
के लिए? कालिज छूटा, अच्छी नौकरी पाने
और अपना परिवार बसाने के सपने टूटे.
पहले साथियों ने जिस्म नोचा, फिर पैसे के
लिए जिस्म नुचवाया.

एकदो बार पुलिस ने उसे वेश्यावृत्ति
के जुर्म में भी पकड़ा पर जमानत पर छुड़ा
लिया गया. पर कब तक? कब तक उसे घर
में कैद कर के रखा जा सकता था? नशे की
तड़प के कारण उसे हमेशाहमेशा के लिए
घर छोड़ना पड़ा.

मांबाप, भाईबहनों के लिए मीना अब
मर चुकी थी. पर उस की सचमुच मृत्यु उस
के जाने के लगभग दो मास बाद हुई. यह
खबर भी पुलिस वालों ने ही दी. शायद उस
ने आत्महत्या की थी, उस के पर्स से जो पत्र
मिला उस में आत्मग्लानि और पश्चात्ताप
की आहें थीं. पर अब क्या हो सकता था?
यह कहतेकहते मीना की मौसी सुबकसुबक
कर रोने लगी. ●

विश्व सुलभ साहित्य

वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर रहे युवकयुवतियों के लिए अनुपम पुस्तकें

युवकों से — रु. 15.00
युवकों को योग्य पति, सफल गृहपति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.

युवतियों से — रु. 15.00
युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाएं?

पति से — रु. 15.00
विवाहित जीवन में पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.

पत्नी से — रु. 20.00
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन हर पत्नी के लिए अनिवार्य.

कामकला भाग 1 — रु. 14.00
(विवाहित युवतियों के लिए)

कामकला भाग 2 — रु. 19.00
(विवाहित युवकों के लिए)
यौन जीवन को सुखमय बनाने में सहायक प्रस्तुत पुस्तक में सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण, साथ में काम समस्याओं का विस्तृत निवारण भी.

स्त्री और पुरुष — रु. 15.00
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान से ले कर आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा तथा आप के प्रश्नों के हल भी.

वात्स्यायन कामसूत्र — रु. 25.00
यौन विज्ञान के विषय में प्राचीन भारत का दृष्टिकोण महर्षि वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' से स्पष्ट हो सकता है. शिष्ट शैली एवं सरल भाषा में अनुवाद के साथ साथ विस्तृत टिप्पणियां दी गई हैं.

यौन मनोविकार — रु. 10.00
क्या आप सुखी हैं?
काश ! आप जान पाते, तो आप की जिन्दगी बहारों से, फूलों से और सुगन्धि से भर जाती.
आप की यौन समस्याओं और मानसिक उलझनों का इलाज आपको इस पुस्तक के पन्नों में मिलेगा.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:
दिल्ली बुक कंपनी एम- 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

सेट नं. 43

• मूल्य अग्रिम भेजने पर सेट न. 43 पूरा 129 रुपए का, डाक खर्च 2.00 रुपए वी.पी.पी. द्वारा. अग्रिम मूल्य न भेजने पर डाक खर्च 10 रुपए

अंटार्कटिका में गैस दुर्घटना

सात जनवरी 1990 की रात को भारतीय र्कटिका अभियान के चार सदस्य कार्बन-नोआक्साइड गैस के विषाक्तन से रनिद्रा में सो गए. पिछले नवंबर माह में र्कटिका अभियान पर गए 70 सदस्यीय भियान दल में ये लोग शामिल थे.

अंटार्कटिका में हंबोल्ट पहाड़ के पास का पड़ाव था और ये लोग रात में निर्मित टैंट में सो रहे थे. इन्होंने टैंट में जल इंजन जेनरेटर चला रखा था. टैंट के तर इंजन चलने से लगातार कार्बनमोनो-क्साइड की मात्रा बढ़ती गई, जिस के रिणामस्वरूप चार वैज्ञानिकों की मृत्यु हो ई. कार्बन मोनोआक्साइड एक प्रकार की ली गैस है, जो कार्बनिक ईंधन के जलने र बनती है. सांस लेने पर यह फेफड़ों के तर प्रवेश कर जाती है. वहां इसे तवाहिकाएं सोख लेती हैं. रक्त में पहुंच कर यह गैस हीमोग्लोबिन पर हावी हो जाती हैं और श्वसन क्रिया को प्रभावित करती है. इस के असर से रक्त हीमोग्लोबिन आक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता खो बैठता है और ज्यादा मात्रा में प्रभावित होने पर मृत्यु तक हो जाती है.

चार वैज्ञानिकों में से तीन भूविज्ञानी वी.के.श्रीवास्तव, ए.के.बेदी और बी.एल. शर्मा 'जियोलाजिकल' सर्वे आफ इंडिया' से तथा एक संचार इंजीनियर एन.सी. जोशी, भारतीय नौ सेना से थे. भारतीय वैज्ञानिक समुदाय सहित प्रमुख लोगों ने इस दुर्घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया है. किसी भारतीय वैज्ञानिक अभियान की अब तक की यह एक मात्र दुर्घटना है, तथापि यह वैज्ञानिक ज्ञान की बारीकियों को नजरअंदाज न करने तथा हर स्तर पर सतर्कता बरतने की ओर स्पष्ट संकेत है.

दुर्घटना में चिरनिद्रा में सोने वाले वैज्ञानिक : (बाएं से दाएं) बी.एल. शर्मा, भूविज्ञानी वी.के. श्रीवास्तव, संचार अभियंता एन.सी. जोशी और भूविज्ञानी ए.के. बेदी.
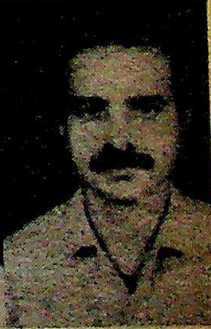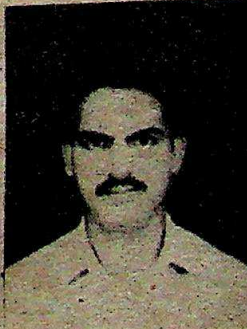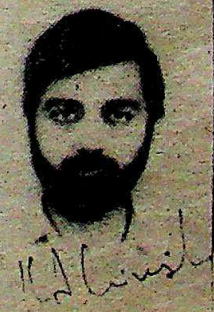
ऊर्जा और समाज

15 फरवरी 1990 को प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक डा. आत्माराम की स्मृति में, 'इंडियन एसोसिएशन फार द एडवांसमेंट आफ साइंस' के तत्त्वावधान में द्वितीय डा. आत्माराम स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया. संयुक्त राष्ट्र संघ की एक परियोजना के अंतर्गत भारत में गैर पारंपरिक ऊर्जा स्रोत विभाग से संबद्ध आस्ट्रेलिया के प्रो. डब्ल्यू.डब्ल्यू.एस. चार्टर्स ने ऊर्जा और समाज विषय पर व्याख्यान दिया.

उन्होंने कहा कि हमारा समाज प्राथमिक रूप से ऊर्जा पर निर्भर है. क्योंकि समाज के किसी भी कार्य के संचालन के लिए ऊर्जा चाहिए. आज तक ऊर्जा की पूर्ति के लिए बड़े पैमाने पर धरती के गर्भ में छिपी ईंधन संपदा का दोहन कर रहे हैं. लेकिन धरती का भूमिगत कोयला, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस के भंडार एक समय बाद समाप्त हो जाने वाले हैं. ऐसी स्थिति में समाज की ऊर्जा की पूर्ति के लिए जो प्रश्न खड़े होंगे, उन प्रश्नों के उत्तर हमें पहले से तैयार रखने हैं.

प्रो. चार्टर्स ने सामाजिक असंतुलन के लिए ऊर्जा के अनियमित दोहन की कुचेष्टा को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि यदि हम ने अभी भी इस ओर विशेष ध्यान न दिया तो आने वाले दिनों में हमें बहुत कुछ खोना पड़ेगा.

उन्होंने ऊर्जा के गैर पारंपरिक स्रोतों का उल्लेख करते हुए कहा कि हमें सौर ऊर्जा उपकरणों, कचरे ऊर्जा, समुद्र की लहरों से ऊर्जा तथा बायोगैस से ऊर्जा के व्यवहारोपयोगी तरीकों का ज्यादा से ज्यादा विकास और इस्तेमाल करना चाहिए.

पर्यावरण सेविका से बातचीत

डा. (श्रीमती) दुर्गेश शर्मा, जानीमानी पर्यावरण सेविका हैं. वह विभिन्न पर्यावरण विकास कार्यक्रमों से संबद्ध रही हैं. दूरदर्शन पर प्रदर्शित पर्यावरण कार्यक्रम शृंखला में उन का अभूतपूर्व योगदान रहा है. पिछले दिनों उन्होंने नई दिल्ली के विद्यालयों में एक विशेष पर्यावरण रक्षण कार्यक्रम चलाया था.

इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी विद्यालय के आसपास तथा उस के परिसर में एक पौधा रोपेगा और विद्यालय की शिक्षा समाप्त करने तक वह उस पौधे की परवरिश करेगा. विद्यालय छोड़ने के पूर्व वह विद्यार्थी अपने पौधे को नए विद्यार्थी को सौंप जाएगा. इस प्रकार विद्यार्थियों द्वारा पौधे गोद लेने की परंपरा की एक अच्छी शुरुआत की गई है.

डा. शर्मा कहती हैं, "इस कार्यक्रम से बालपन में ही बच्चों में पेड़पौधों के प्रति लगाव पैदा हो सकेगा तथा बड़े होने पर वे अपनी क्षमताओं का अधिकाधिक उपयोग पर्यावरण की सुरक्षा में कर पाएंगे."

युवाओं की पर्यावरण सुधार में क्या भूमिका हो सकती है?

"युवा शक्ति में बहुत ऊर्जा होती है. इस ऊर्जा का उपयोग कर के युवा अपने आसपास के वातावरण को गंदा होने से बचा सकते हैं. या तो वे इस के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकते हैं. अथवा पर्यावरण रक्षक के रूप में छोटी टोलियां बना कर काम कर सकते हैं. बहुत से व्यक्ति, उद्योग आदि आबादी के आसपास प्रदूषण फैलाते हैं, कुछ लोग खुले में मल विसर्जित करते हैं तथा सफाई कर्मचारी ढंग से सफाई नहीं करते हैं. इन सब बातों पर युवा वर्ग नजर रख कर इस समस्या का काफी हद तक समाधान कर सकता है.

आप में यह ऊर्जा कैसे प्रस्फुटित हुई?

"जनसेवा की दृढ़ इच्छाशक्ति से कठिन से कठिन कार्य भी सफल हो सकते हैं."

आलू भूनने की नई तकनीकी

देश में आलू बहुतायत से पैदा होता है. का उपयोग उस के प्रकार के व्यंजन ने में होता है. तरहतरह की सब्जियां खाते लोग ऊब कर कभीकभी आलू का ता काफी पसंद करते हैं. इस के लिए आलू एकसा भूनना होता है. आलू भूनने के लिए में एक नए प्रकार के तंदूर का विकास या गया है.

खानपान प्रतिष्ठानों, हस्पतालों, स्कूलों छात्रावासों और बड़े होटलों के उपयोग के बनाया गया यह तंदूर अनेक प्रकार से योगी है. इस में आलू के पोषक तत्त्व नष्ट होते हैं. जस्ते से बने इस तंदूर पर नलैस स्टील का आवरण चढ़ा होता है, से इन को साफ करने में आसानी होती इन तंदूरों को गैस के स्थान पर बिजली से चलाया जा सकता है. इस में काफी तेज र का ज्वलक लगाया गया है.

इस में एक बार में 90 आलुओं को भूना जा सकता है. इस तंदूर में भुने हुए आलुओं को इकट्ठा करने की भी व्यवस्था है. इन्हें उठा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखा जा सकता है. इन्हें आवश्यकतानुसार लंबा व संकरा भी किया जा सकता है.

अंतर्राष्ट्रीय आलू संस्थान, पेरू के पूर्व निदेशक डा. बी.बी.नगायच ने इस नए तंदूर को भारत के लिए उपयोगी बताते हुए कहा है कि इस में छिलके वाले आलुओं को दोषरहित तरीके से भूना जा सकता है. डा. नगायच केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान के निदेशक भी रहे हैं. उन के अनुसार आलू संपूर्ण आहार है और उस में भोजन के सभी पोषक तत्त्व तथा कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज, विटामिन और प्रोटीन अलगअलग अनुपातों में उपलब्ध होते हैं. लेकिन सर्वाधिक अनुपात कार्बोहाइड्रेट का होता है.

अब आलू को एक सा भूनने में दिक्कत नहीं होगी. पोषक तत्व भी बरकरार रहेंगे.

वैज्ञानिक संघर्ष की राह पर
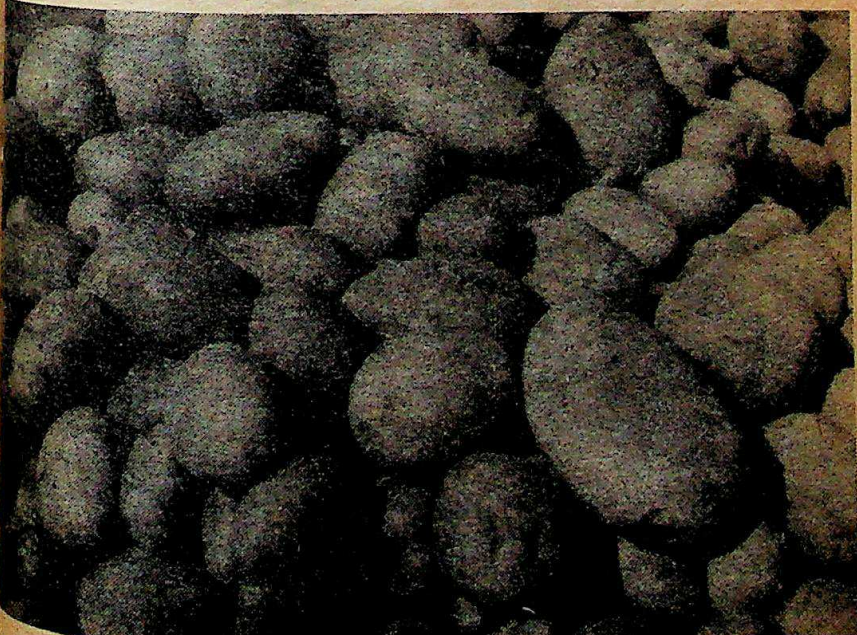
13 फरवरी 1990 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के कार्मिक संघ के आह्वान पर देश भर में फैली विभिन्न राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के हजारों वैज्ञानिकों और तकनीकी कार्मिकों ने नई दिल्ली में रफी मार्ग स्थित अनुसंधान भवन मुख्यालय पर घनघोर प्रदर्शन किया. ये वैज्ञानिक भरती व पदोन्नति की नई योजना का विरोध कर रहे थे.

यह आंदोलन परिषद की गलत नीतियों के विरोध में आरंभ हुआ. परिषद की गलत नीतियों का एक उदाहरण देखिए—दो अलगअलग व्यक्ति एम.एससी. प्रथम श्रेणी कर के आते हैं. एक वरिष्ठ तकनीकी सहायक चुना जाता है, जबकि दूसरा वैज्ञानिक 'बी' के पद पर. जबकि दोनों की योग्यता में कोई फर्क नहीं है. यदि पहला व्यक्ति वैज्ञानिक 'बी' के पद हेतु आवेदन करता तो वह भी 'बी' होता.

अब आती है, बारी पदोन्नति की. वैज्ञानिक 'बी' को पांच वर्ष बाद वैज्ञानिक 'सी' बनाया जाता है, जबकि वरिष्ठ तकनीकी सहायक को छह वर्ष बाद वैज्ञानिक 'ए' और उस के पांच वर्ष बाद वैज्ञानिक 'बी' बनाया जाता है. इस प्रकार एक ही संस्थान में एक समान योग्यता रखने वाले और एक जैसा काम करने वाले दो अलगअलग व्यक्तियों में सिर्फ गलत नीतियों के कारण 11 वर्ष का अंतर आ जाता है. इस के साथ ही पदोन्नतियों में प्रतिशतता आदि के समावेश से अनेक अच्छा काम करने वाले कर्मचारी पीछे रह जाते हैं, जबकि दूसरे आगे निकल जाते हैं. इसी कारण देश से प्रतिभा पलायन और प्रतिभा दमन होता है.

वैज्ञानिकों की मांग यह भी थी कि गोपनीय रिपोर्ट की परंपरा समाप्त कर के खुली रिपोर्ट परंपरा कायम की जाए तथा प्रबंधकों और एसोसिएशन के मध्य हुए समझौतों को लागू किया जाए. कैलाश चंद्र कमेटी की सिफारिशों को लागू किया जाए तथा भारत सरकार के आदेशों के अनुसार, संगठनात्मक ढांचे की समीक्षा व संशोधन किया जाए. ●

आज
...जानता था
...ग उत्प
...स की
...नवता
...ए प्रश्न
...ही हो
1978 में
...भावना
...क नहीं

निरोध की युक्ति एड्स से मुक्ति

लेख ● डा. अरविंद दुबे

आज से दस वर्ष पूर्व तक कोई नहीं जानता था कि एक ऐसा भी रोग उत्पन्न होने लगेगा जिस की भयावहता सारी मानवता के अस्तित्व के लिए प्रश्न चिह्न बन कर खड़ी हो जाएगी. सन 1978 में पहले अमरीकी [illegible] तो ऐसी संभावनाओं [illegible] तक नहीं किया जा सका

था. यद्यपि नवें दशक के पूर्वार्ध से ही वैज्ञानिकों ने आशंकाएं प्रारंभ कर दी थीं. तब लगा था कि व्यर्थ की बात को तूल दिया जा रहा है. परंतु समय के साथ ज्योंज्यों इस अभिशाप पर अनुसंधान हुए, इस की विकरालता स्पष्टतर होती चली गई. आज तो एड्स अकाल मृत्यु का पर्याय बन गया है. अकेले संयुक्त राज्य

अभी तक एड्स से बचाव के लिए कोई निश्चित तरीका वैज्ञानिकों के पास नहीं है. यह जानते हुए भी समलैंगिक समुदाय मौत से खेलने से अपने आप को नहीं रोक पा रहा है. इसी मूल तथ्य के आधार पर चिकित्सा वैज्ञानिकों को निरोध में रोग के बचाव की संभावनाएं नजर आने लगी हैं...

अमरीका में ही इस समय लगभग दस लाख व्यक्ति किसी न किसी रूप में एड्स के जीवाणु से प्रभावित है. वहां ऐसा भी अनुमान किया जाता है कि यदि परिस्थितियां ऐसी ही रहीं तो अगले पांच वर्षों में इस रोग से मरने वालों की संख्या दो लाख तक पहुंच जाएगी.

अब तक यह सोचा जाता था कि हमारा देश इस रोग के चंगुल से मुक्त है, पर पिछले वर्षों में लगातार एड्स रोगियों का पता चलने से यह सिद्ध हो गया है कि इस धीमी मौत का साया हमारे देश में भी गहराता जा रहा है.

एड्स रोग के जीवाणु शरीर में यौन संपर्क, विशेष कर अप्राकृतिक यौन संबंधों (गुदा मैथुन), रक्त पदार्थों द्वारा व गंदी सुइयों द्वारा पहुंचते हैं. यद्यपि इस रोग से ग्रस्त रोगी की लार में भी जीवाणु पाए गए हैं.

हाल में ही समलैंगिक समुदायों में 'सुरक्षित संभोग की युक्तियां' काफी चर्चा का विषय रही है. एड्स के रोगाणु शुक्र द्रव एवं स्त्री रजोधातु में प्रचुरता से मिलते हैं. इन्हीं के द्वारा अकसर रोग एक व्यक्ति से दूसरे में फैलता है. अतः यह सोचा गया कि यदि किसी प्रकार ऐसी व्यवस्था की जाए कि यह द्रव रोगी से संपर्क के समय निरोगी व्यक्ति के संपर्क में न आए तो एड्स से बचाव संभव हो सकता है. इस मूल तथ्य के आधार पर चिकित्सा वैज्ञानिकों को निरोध में रोग के प्रसारण के बचाव की संभावनाएं नजर आने लगीं.

यद्यपि यह तथ्य सैद्धांतिक रूप से इतने आशावादी लगते थे कि लगा यह उपलब्धि विश्व के चिकित्सा जगत में मील का पत्थर साबित होगी परंतु वास्तविकता इतनी आशापूर्ण न थी. एक तो इस विषय में प्रयोगशाला परीक्षणों का वैसे भी अभाव था दूसरे इस बात की भी कोई गारंटी नहीं है कि उपलब्ध निरोध युक्तियों की रबड़ अप्राकृतिक मैथुन में रगड़ से बिना फटे रह सकेगी. वैसे भी इस प्राकृतिक कृत्य की संवेदनाओं को प्रकृति के निकटतम बनाए रखने की होड़ में व्यापारिक प्रतिष्ठान पतले से पतले निरोधों का उत्पादन कर रहे हैं जिन के साथ मैथुन के समय फट जाने और शुक्रद्रव के बाहर निकल जाने के खतरे बढ़ते चले जा रहे हैं. तथाकथित डीलक्स व चिकनाई युक्त निरोधों में चिकनाई के लिए पेट्रोलियम पदार्थों का उपयोग किया जाता है. यह प्रयुक्त पदार्थ निरोध की रबड़ को और भी कमजोर बनाते हैं और रोग से बचाव की सफलताओं पर पानी फेर देते हैं.

प्रशिक्षण सामग्री का अभाव

वैसे भी परिवार नियोजन के लिए निरोध के प्रयोग में 10% तक लोगों को असफलता का सामना करना पड़ता है. यद्यपि ऐसा नहीं है कि हर बार यह निरोध की गड़बड़ी के कारण होता हो. एक सर्वेक्षण से पता चला है कि अधिकतर मामलों में यह गड़बड़ी निरोध के गलत तरीके से प्रयोग के कारण होती है. वस्तुतः निरोध के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण सामग्री का नितांत अभाव है. किसी भी निरोध के पैकेट पर इस के उपयोग संबंधी सुरक्षा उपायों की विस्तृत जानकारी नहीं होती है.

तथापि एड्स से बचाव के लिए निरोध के उपयोग के बारे में काफी प्रगति हुई है. पश्चिमी देशों की कुछ कंपनियों ने एड्स से बचाव के लिए कुछ विशेष प्रकार के निरोधों के निर्माण की ओर ध्यान दिया है. यह निरोध

त निरोधों की अपेक्षा कुछ मोटे रबर के
त, परिणामस्वरूप कम संवेदनशील
हैं. आगे चल कर क्षतिग्रस्त होने पर,
होने पर अपने आप तत्क्षण सील हो जाने
सुरक्षित निरोधों के उत्पादन की
जाएं भी प्रगति पर हैं. आगे चल कर ये
पूर्ण उपलब्धियां उपयोगी सिद्ध हो
गी या नहीं यह तो अभी भविष्य के गर्भ में
लेकिन परिवार नियोजन हेतु प्रयुक्त
णु मारक पदार्थ (स्पर्मीसाइड जैली) भी
निरोध के साथ प्रयोग किए जाएं तो
ग की एड्स के प्रति, प्रतिरोधक क्षमता
सकती है क्योंकि इस में प्रयुक्त
निक पदार्थ एड्स जीवाणु को 60
से कम समय के अंदर ही पूर्णतया
बनाने में समर्थ होता है.

चूंकि एड्स शतप्रतिशत जान लेवा रोग
: यहां कोई खतरा मोल लेना संभव नहीं
तः निरोध पर पूर्णरूपेण भरोसा करने से
यह आवश्यक है कि निरोध की खुले
र में उपलब्ध सारी किस्मों को भली
जांचपरख कर उन्हें उसी आधार पर
ता प्रमाण पत्र उपलब्ध कराए जाएं
जन साधारण को इन के प्रयोग की
त जानकारी दी जाए. इस के लिए
री गैरसरकारी सारे प्रसारणप्रकाशन
मों का भरपूर उपयोग किया जाए. सारी
स्था किसी केंद्रीय संस्था के हाथ में हो जो
राष्ट्र में इस के प्रतिपादन में एक
रूपता की स्थिति ला सके.

चूंकि निरोध ने एड्स की रोकथाम के
में नई संभावनाओं को जन्म दिया है.
लिए इस के प्रयोग के लिए जनसाधारण
प्रोत्साहित किया जाना चाहिए. पर इस
का अर्थ कदापि नहीं है कि इस बहाने उन्हें
परिचितों के साथ संभोग या अप्राकृतिक
की छूट मिल जाती है. जिसे वे सुदृढ़
की दीवार समझे बैठे हों. पता नहीं कब
भरभरा कर गिर पड़े और उन को विज्ञान
उपलब्धियों को कोसने व अपने किए पर
प्रकट करने के अतिरिक्त और कुछ

वास्तु शिल्प व गृह सज्जा

कहां और कैसे सीखें

लेख ● तनवीर अख्तर रूमानी

इस कला को सीखने के बाद आप न केवल बेरोजगारी की भीड़ से अलग होंगे बल्कि महानगरों की चकाचौंध रोशनी में कहीं खड़े होंगे.
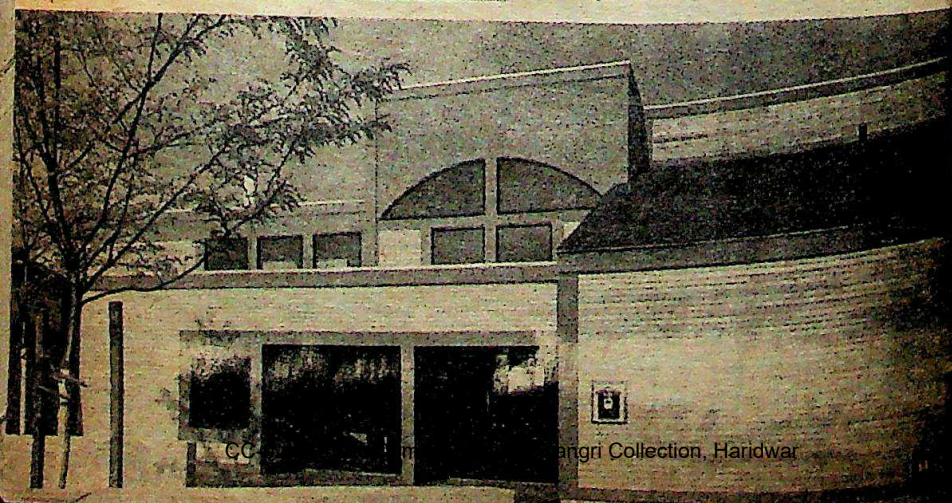
स्तुशिल्प (आरकिटेक्चर) और गृह सज्जा (इंटी-र डेकोरेशन) ऐसे काम हैं, जिन का त्व दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है. तुशिल्पी मकान आदि का नक्शा बनाता निर्माण की देखरेख करता है. उसे निर्माण धी नियमों का ज्ञान होता है. वास्तुशिल्पी देखरेख में बना हुआ मकान भव्य, मदायक और मजबूत होता है. वह ारों के काम की निगरानी करता है. ल, डाक्टर की तरह वास्तुशिल्पी अपनी स भी कर सकता है और नौकरी भी.

उसी से संबंध रखने वाला क्षेत्र सज्जा है. मकान का निर्माण पूर्ण होने के बाद उस ालिकों को उसे सजाने की चिंता होती है. मामले में लोग सामान्यतः अपनी पसंद राय पर भरोसा करते हैं, लेकिन नदार और होशियार लोग इस काम को लोमा प्राप्त और अनुभवी डेकोरेटर ाकार) के सुपुर्द करते हैं.

वह मकान की सजावट का नक्शा र करता है. दीवारों, दरवाजों और िकियों के नक्शे और डिजाइन बनाता है. फर्नीचर, परदों और सजावट के दूसरे सामान का चयन करता है. बड़ी फर्म, होटल, रेस्तरां और दफ्तर की सजावट के लिए आमतौर पर प्रसिद्ध और अनुभवी सज्जाकार की सेवाएं प्राप्त की जाती हैं.

वास्तुशिल्पी और भीतरी सज्जाकार की मांग देश के बड़े नगरों में अधिक है, लेकिन पेट्रोल के दाम बढ़ने के बाद अरब देशों में भी उन के लिए अच्छे रोजगार के अवसर हैं.

वास्तुशिल्प यानी भवन, पुल आदि बनाने की कला के लिए डिगरी और डिप्लोमा दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम मिलते हैं. डिप्लोमा कोर्स अंशकालिक भी होता है और पूर्णकालिक भी. डिप्लोमा कोर्स में भरती होने के लिए कम से कम शैक्षणिक योग्यता इंटरमीडिएट साइंस (आई.एस.सी.) या उस के बराबर की कोई परीक्षा पास होना अनिवार्य है. भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित और सामान्य विज्ञान की योग्यता इंटर तक होनी चाहिए.

अंशकालिक कोर्स सात वर्ष का और पूर्णकालिक कोर्स पांच वर्ष का होता है.

वास्तु शिल्पकार द्वारा बनाए गए नक्शे के अनुसार बना एक भवन.
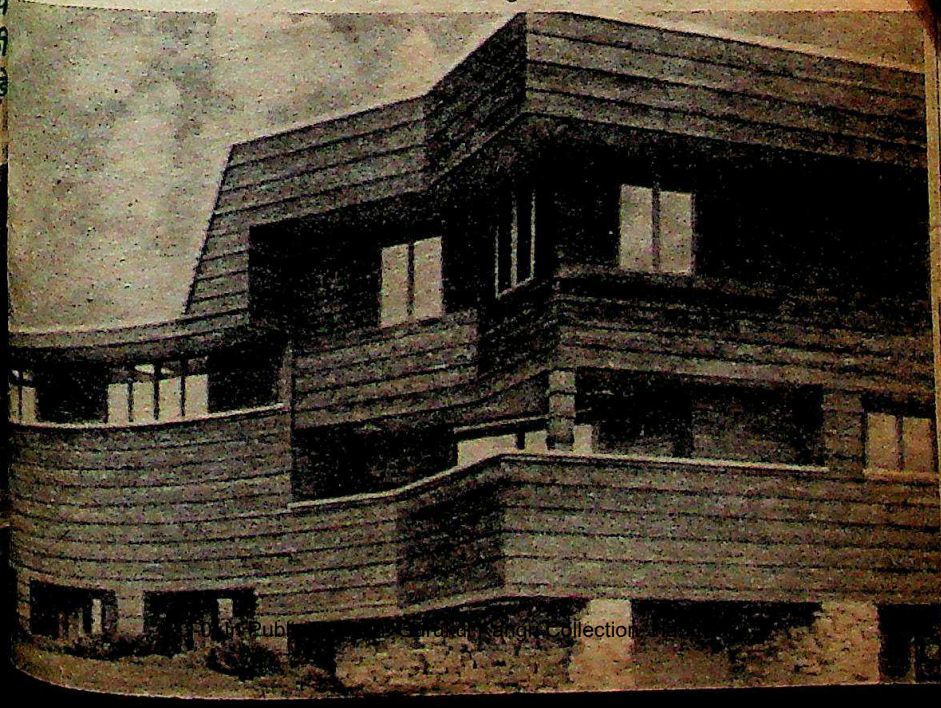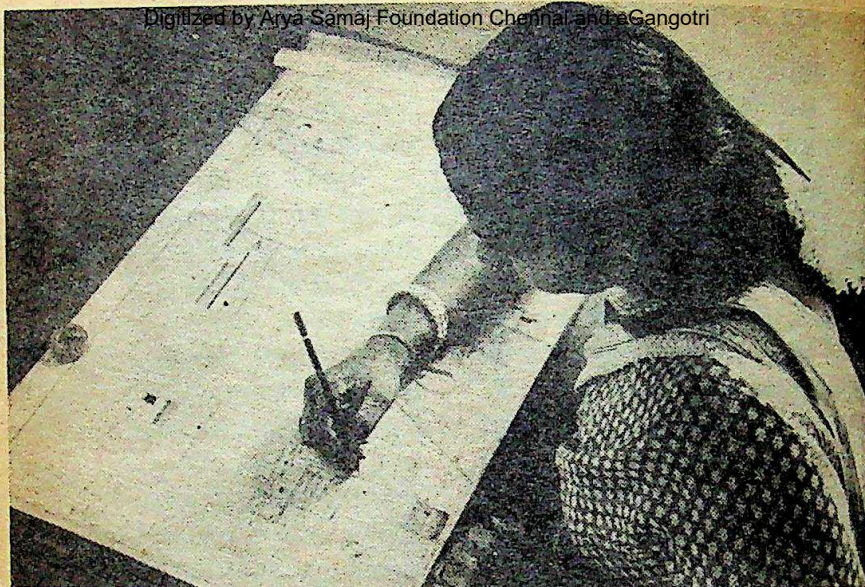
वास्तु शिल्प में डिग्री लेने के बाद आप किसी वकील या डाक्टर की तरह अपनी निजी प्रैक्टिस कर सकते हैं.

अंशकालिक कोर्स वही युवक कर सकते हैं जो किसी आर्किटेक्ट के साथ काम कर रहे हों.

पूर्णकालिक कोर्स पूरा करने के बाद जो उपाधि मिलती है वह स्नातक के बराबर होती है. इस क्षेत्र में भरती होने के लिए कम से कम शैक्षणिक योग्यता आई.टी.आई. या बनारस हिंदी विश्वविद्यालय के टेक्निकल इंस्टिट्यूट से बारहवीं कक्षा का पास होना अनिवार्य है.

इस के अतिरिक्त वास्तुशिल्प और टाउन प्लानिंग (नगर नियोजन) में स्नातकोत्तर डिगरी भी मिलती है, लेकिन ये डिगरियां अभी विदेशों में ही मिल सकती हैं.

वास्तुशिल्प पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने वालों को समाचारपत्रों में विज्ञापनों पर नजर रखनी चाहिए, जो प्रायः बड़े समाचारपत्रों में प्रकाशित होते हैं. निश्चित तारीख के अंदर आवेदनपत्र भेजने के बाद यदि कोई परीक्षा आदि हो तो उस की तैयारी करनी चाहिए. कुछ संस्थाएं इंटरमीडिएट या स्नातक स्तर पर उम्मीदवारों के प्राप्तांकों के आधार पर चयन करती हैं अर्थात अधिक से अधिक नंबर पाने वालों का चयन किया जाता है.

'डेकोरेशन' का प्रमाणपत्र प्राप्त कर के लिए भी उम्मीदवार को कम से क इंटरमीडिएट या उस के समान कोई परीक्षा पास होना चाहिए. इस का कोर्स एक वर्ष क या कहींकहीं डेढ़ वर्ष का भी होता है. इस को में डिगरी की अवधि तीन वर्ष है. पूर्णकालि और अंशकालिक दोनों प्रकार के कोर्स हो हैं.

आर्किटेक्चर के कोर्स में निम्न विष सम्मिलित हैं:

मकान का नक्शा बनाना (डिजाइन निर्माण, सामान का चुनाव, इंजीनियरिं सर्वेक्षण (सर्वे), स्तर की जांच, नग नियोजन, निर्माण से संबंधित सभी जानकारिय

इन विषयों पर हर सत्र में व्यावहारि काम भी कराया जाता है.

गृहसज्जा के कोर्स के पहले वर्ष बुनियादी नियम बताए जाते हैं. दूसरे औ तीसरे वर्ष में डिजाइन और नक्शे के निय और कार्यप्रणाली बताई जाती है. पहले वर्ष घरों की सजावट सिखाई जाती है. वास्तुशिल

र गृहसज्जा का प्रशिक्षण देने वाली चंद थाओं के नाम ये हैं:

वास्तुशिल्प (आर्किटेक्चर)

स्कूल आफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, स्थ इस्टेट, नई दिल्ली-110002.

गवर्नमेंट (राजकीय) स्कूल आफ र्किटेक्चर, लखनऊ-226007. (उ.प्र.)

बी.के.पी.एस. कालिज आफ आर्कि- र, तिलक रोड, पुणे-411030.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट, बंगाल इंजी- रिंग कालिज, बोटेनिकल गार्डन, शिव- हावड़ा–711103.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट, अशोससरया ल कालिज आफ इंजीनियरिंग, नागपुर- 011.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट (अंशकालिक), बांद्रा स्कूल आफ आर्ट, बांद्रा, -400050.

एकेडेमी आफ आर्किटेक्चर, प्लाट नं , शंकर गानेकर मार्ग, प्रभा देवी, -400025.

रुड़की स्कूल आफ आर्किटेक्चर, की (उ.प्र.).

स्कूल आफ आर्किटेक्चर, नवरंगपुरा, मदाबाद-721302.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट, यादवपुर वर्सिटी, कलकत्ता-700032.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट, फैकेल्टी आफ नालोजी एंड इंजीनियरिंग, एम.एस. वर्सिटी, बड़ौदा-390001.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट, कालिज आफ नियरिंग, त्रिवेंद्रम-695016.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट, एम.ए. कालिज टेक्नोलोजी, भोपाल-462007.

कालिज आफ फाइन आर्ट्स एंड र्किटेक्चर, जवाहर लाल नेहरू टेक्नालो- ल यूनिवर्सिटी, मासाब टैंक, हैदराबाद- 028.

स्कूल आफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग, . कालिज आफ टेक्नालोजी, गिंडी, स-600025.

गृह सज्जाकार के पाठ्यक्रम में भाग ले कर महिलाएं अपना कैरियर बना सकती हैं.

आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट, मनीपाल इंस्टि- ट्यूट आफ टेक्नालोजी, मनीपाल-576119.

गवर्नमेंट गर्ल्स पालीटेक्निक, आठवां गेट, सूरत-395001.

डेकोरेशन

एम.एम. साबू सिद्दीक पालीटेक्निक, 8, शेफर्ड रोड, बंबई-400001.

सर जे.जे. स्कूल आफ एप्लाइड आर्ट्स,, डी.एन. रोड, बंबई-400001.

निर्मला निकेतन पालीटेक्निक, न्यू मेरीन लाइंस, बंबई-400020.

इंडियन टेक्निकल इंस्टिट्यूट, 103, हिंद राजस्थान बिल्डिंग, दादा साहब फालके रोड, दादर, बंबई-400014.

इंटरनेशनल कारस्पोंडेंस कोर्स स्कूल, यूको बैंक बिल्डिंग, महात्मा चौक, पोस्ट बाक्स नं.1931, बंबई-400028.

ब्यूरो आफ टेक्निकल इनफारमेशन सर्विस (बूटिस), मद्रास-600002.

दिल्ली इंस्टिट्यूट आफ मैनेजमेंट एंड सर्विसिज, 301, आकाशदीप, तीसरी मंजिल, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली-110001.

श्रीमती राज इंस्टिट्यूट फार लेडीज, कामर्स सेंटर, तीसरी मंजिल, ताड़देव मेन रोड, बंबई-400024.

नई दिल्ली पालीटेक्निक फार वीमेन, एन-4, नई दिल्ली साउथ एक्सटेंशन, पार्ट-1, नई दिल्ली-110049.

अल अबीर पालीटेक्निक, जाकिर नगर, आजाद नगर, जमशेदपुर-832110. (बिहार) ●

कहानी ● सुरेशकुमार गोयल

परामर्श

कमल की मौत का समाचार सुन कर मैं सन्न रह गया. मुझे रहरह कर एक एहसास कचोट रहा था कि जिस बचत के लिए मैं ने कमल को परामर्श दिया था वह विपरीत परिस्थितियों में रजनी के लिए 2 लाख डालर के घाटे का कारण बना.

मैं उन के घर गया, परंतु रजनी से आंखें नहीं मिला सका. उस की आंखों में असीम वेदना थी. आने वाले समय की कल्पना से ही घबरा रही थी. बेचारी तीन बच्चों को किस तरह पालपोस कर बड़ा करेगी. अभी सब से छोटी बच्ची ने तो स्कूल जाना भी शुरू नहीं किया था.

कमल रजनी को अचानक छोड़ कर चला गया. सोमवार की सुबह अच्छाभला सो कर उठा था. दफ्तर जाने के लिए दाढ़ी बना रहा था कि अचानक दिल का दौरा पड़ा और रजनी को तीन बच्चों की अकेले परवरिश करने के लिए छोड़ गया. चार दिन पहले ही कमल के निधन होने पर मैं रजनी से मिला था. उस के घर में आनेजाने वालों का तांता लगा था. रजनी मुझे तो जानती भी नहीं थी. मेरी मुलाकात तो केवल कमल से ही हुई थी.

रजनी के घर से जब निकला तो यह निश्चय कर के ही कि अब इन के घर कभी नहीं आऊंगा क्योंकि मुझे हर समय कमल का ध्यान आएगा. बेचारी रजनी को अभी कमल की मृत्यु के धक्के के बाद और भी कठिनाइयों से गुजरना होगा. मुझे इस बात का जिंदगी भर एहसास रहेगा कि उस की कुछ कठिनाइयों का उत्तरदायित्व मुझ पर ही है. पर शायद उस बेचारी को इस बारे में कुछ पता भी न हो.

कमल से मेरी मुलाकात एक 'पूंजी निवेश गोष्ठी' में हुई थी. हमारा दफ्तर आम लोगों के लिए इस का आयोजन कर रहा था. यह आम होता ही है कि दो परिवारों की चाहे मासिक आय एक जैसी ही हो और परिवार में सदस्यों की संख्या भी समान ही हो, तब भी दोनों परिवारों में रहने के स्तर में बहुत फर्क हो सकता है. भारत में फलतेफूलते परिवारों को देख कर लोग ईर्ष्या से कहते हैं कि 'रिश्वत की आमदनी होगी या पुश्तैनी पैसा मिला होगा.'

वास्तव में जिन परिवारों ने अपनी आर्थिक व्यवस्था सुचारु रूप से नियंत्रण में की होती है, वे ही अधिक धनी होते हैं. जिन घरों में फटेहाली होती है, वहां आर्थिक अनुशासन और समझबूझ की कमी होती है. खुशहाली लाने के लिए समुचित आय होनी आवश्यक है लेकिन उस से भी अधिक जरूरी है बेकार के खर्च कम कर के बात करना और बचाए हुए धन को ढंग से कहीं लगाना, ताकि वह तेजी से बढ़ सके.

हमारी कंपनी लोगों की बचत को तेजी से बढ़ाने के लिए ही कायम की गई थी. हमारे ज्यादातर ग्राहक मध्यम वर्ग के ही परिवार होते थे. लगभग हर गोष्ठी में 40-50 लोग आते थे. पहले 40 मिनट का व्याख्यान होता था. फिर कंपनी के और विशेषज्ञ आ जाते थे और लोगों के निजी प्रश्नों का उत्तर देते थे. इन में से कुछ लोग बाद में विस्तार से सलाह लेने के लिए मिलते थे. उस सलाह की हमारी कंपनी उन से फीस लेती थी.

बताए? उस की सालाना आमदनी 40 हजार डालर थी. इतनी कम भी नहीं थी कि कुछ बचत ही न हो.

मैं ने कमल से कहा, "मैं आप की मदद कर सकता हूं, पर उस के लिए मुझे आप की सालाना आमदनी और खर्चे का कम से कम एक साल का पूरा विवरण चाहिए. अगर आप डाक से यह सूचना भेज दें तो मैं उस को अच्छी तरह देख कर आप को सलाह दे सकूंगा. इस से आप को मेरे साथ दफ्तर में भी कम समय व्यतीत करना पड़ेगा और कंपनी आप से परामर्श की फीस भी कम लेगी."

कमल को बात जंच गई. उस ने सातआठ दिन में ही अपनी सालाना आमदनी और खर्चे का विवरण भेजने का वादा किया. वह अपना कार्ड मुझे दे गया. मैं ने अपना कार्ड उसे पहले ही दे दिया था.

मुझे भारतीय देख कमल ...नी के और विशेषज्ञों को छोड़ मेरे पास ही आया. आपसी परिचय ...ाद मालूम हो गया कि वह कानपुर ...हने वाला है और पिछले 12 साल ...नाडा में रह रहा है. उस के तीन बच्चे ...े स्कूल जाते हैं और सब से छोटी ...ी अभी तीन साल की है. कमल की ...या भी यही थी कि ... कैसे करे और उस ... को कहां
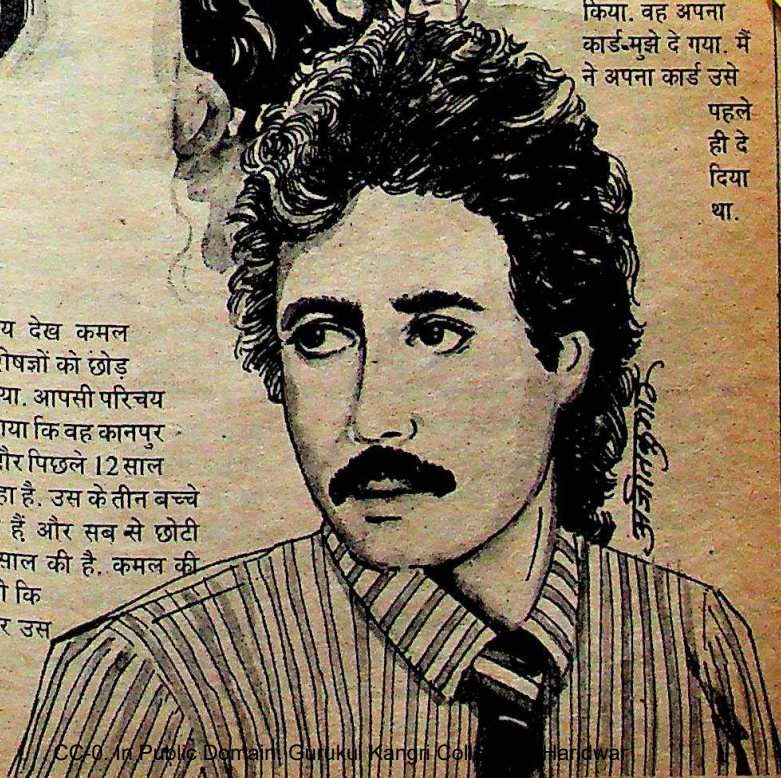
आफिस के बाद हम दफ्तर के पास वाले काफी हाउस में बैठे थे. मैं ने कमल को समझाया, "आप ने आवश्यकता से अधिक का बीमा करा रखा है."

दो हफ्ते तक कमल का कोई पत्र नहीं आया. मैं ने फोन कर के उसे याद दिलाया. वह घर की और काम की समस्याओं के बीच इस बात को भूल ही गया था. उस ने अगले इतवार को सब कुछ तैयार कर के सोमवार की डाक से मेरे पास भेजने का वादा किया. वह अपने वादे का पक्का निकला. बुधवार को सवेरे की डाक से कमल का पत्र दफ्तर में पहुंच गया.

कमल की आय पिछले साल 42 हजार डालर थी, परंतु पूरे साल की बचत दो हजार डालर भी नहीं थी. मैं ने सोचा कि कमल को किसी भी शाम को आखिर में आधे घंटे के लिए बुलाऊंगा. समय तो काफी लगेगा, पर उस से कंपनी वाले मेरे आधा घंटे समय की ही फीस लेंगे. पता नहीं क्यों, मेरा मन कमल की मदद करने को व्याकुल हो उठा था. उस के परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं अपना योगदान देना चाहता था. उसे फोन कर के मैं ने शुक्रवार साढ़े चार बजे का समय परामर्श लिए निश्चित कर लिया.

ठीक समय पर कमल मुझ से मिलने आया. उस के घर के ऊपर 20 हजार डालर की रकम अभी भी बाकी थी. इस रकम पर वह दो हजार डालर से अधिक का ब्याज दे रहा था. कमल के बैंक के बचत के खाते में 1 हजार डालर इकट्ठे हो गए थे. उस पर मुशकिल से पांच सौ डालर का ब्याज मिलता था, जिस पर उसे आय कर देना पड़ता था.

मैं ने कमल को सुझाव दिया कि कमल इन 12 हजार डालर में से पांच हजार डालर के कनाडा बचत पत्र खरीद लो. उन पर ब्याज भी कहीं अधिक होगा और उन को कभी भी

भुनाया जा सकता है. बाकी सात हजार डालर उसे मकान के ऋण के अदा कर देने चाहिए. आसानी से हर साल पांच सौ डालर से अधिक बचाए जा सकते हैं. कनाडा में कमाए हुए ब्याज पर आय कर लगता और मकान खरीदने पर उधार ली हुई रकम पर जो ब्याज देना होता है, उस पर आय कर में छूट नहीं मिलती, इसलिए मैं ने कमल को सुझाव दिया कि जल्दी से जल्दी अपने मकान के उधार की रकम का भुगतान कर दे.

कमल के पास दो कारें थीं. एक कार वह खुद अपने काम पर आनेजाने के लिए इस्तेमाल करता था, दूसरी रजनी घर के काम के लिए इस्तेमाल करती थी. मैं ने कमल को सुझाव दिया कि अगर वह अपनी एक कार बेच दे तो हर साल ढाई हजार डालर बचाए जा सकते हैं.

कमल ने बताया कि उस के दफ्तर तक बस से जाने पर तीन बसें बदलनी पड़ती हैं और समय भी काफी लगता है. मैं ने केलकुलेटर को निकाल कर कुछ ही मिनटों में बता दिया कि अगर कमल की पत्नी सुबहशाम उसे दफ्तर छोड़ आए और वापस ले कर आए, तब भी आसानी से दो हजार डालर बचाए जा सकते हैं.

कमल ने तीन जीवन बीमा पलिसियां ले रखी थीं. एक तो दो लाख डालर की थी. बाकी दो, एकएक लाख डालर की थीं. मेरे विचार से किसी का जीवन बीमा वार्षिक आय से पांच गुना से अधिक नहीं होना चाहिए. कमल ने अपनी आवश्यकता से अधिक का बीमा करा रखा था. जब मैं कमल को उस की बीमा पालिसियों के बारे में बता रहा था, तब सवा पांच बज गए थे. दफ्तर के लोग जाने लगे थे. मैं ने कमल से कहा कि बाकी बातें किसी रेस्तरां में काफी पीते हुए करेंगे.

कुछ ही देर में हम दफ्तर के पास वाले काफी हाउस में बैठे थे. मैं ने कमल को समझाया, "आप ने आवश्यकता से अधिक का बीमा करा रखा है. आप को अधिक से अधिक दो लाख डालर का बीमा कराना चाहिए. मेरे विचार से इन एकएक लाख की दोनों पालिसियों के पैसे इस बार से नहीं भेजना चाहिए. इस से आप साल के छः सौ डालर बचा सकते हैं. हां, अगर आप चाहते ही हैं कि आप को चार लाख डालर का बीमा कराना ही

"पैसे के मामले में वही करना चाहिए जो आप की परिस्थितियों के अनुकूल हो. अगर आप सावधानी नहीं बरतेंगे तो कनाडा में कोई भी आप की जेब साफ कर सकता है."

है, तब कम से कम इन तीन पालिसियों के बजाय एक चार लाख डालर की ही पालिसी ले लीजिए. हर पालिसी पर बीमा कंपनी फीस लेती है, जो सौ डालर से भी ऊपर हो सकती है. तीन पालिसी को एक करने से दो सौ डालर की बचत की जा सकती है. हां, थोड़ी सी शायद साल की बीमे की दर अधिक हो जाएगी."

चाय पीते हुए मैं ने आगे कहा, "मेरी समझ में एक बात नहीं आई कि आप ने तीन बीमे की पालिसियां क्यों लीं?"

"असल में मैं ने तो एक ही दो लाख डालर की पालिसी ली थी. दो एकएक लाख डालर की पालिसियां दोस्तों ने बेच दीं. दो दोस्त नौकरी छूट जाने पर जीवन बीमा की कंपनी के एजेंट बन गए. उन्होंने जबरदस्ती बेच दीं." कमल ने सहज ही उत्तर दिया.

"उन को तो थोड़ाबहुत कमीशन मिला होगा, पर आप तो हर साल अच्छीखासी रकम अदा किए जा रहे हैं. आप को अपने मित्रों को 'न' कहने में झिझकना नहीं चाहिए. पैसे के मामले में वही करना चाहिए, जो आप की परिस्थितियों के अनुकूल हो. देखिए, जैसे मैं एक सलाहकार की तरह आप को कुछ सुझाव दूं तो आप को मेरी सलाह को भी सोचसमझ कर स्वीकार करना चाहिए. अगर आप सावधानी नहीं बरतेंगे तो कनाडा में कोई भी आप की जेब सफा कर सकता है."

"आप ठीक ही कहते हैं. मैं अपनी दोनों एकएक लाख डालर वाली पालिसियों की सलाना किश्त नहीं भेजूंगा. उन के पैसे अभी दो महीने के अंदर ही भेजने थे. आप ने मेरे काफी पैसे बचा लिए. एक कार भी बेच दूंगा और सात हजार डालर अपने घर के लिए उधार ली रकम के भी वापस कर दूंगा."

कमल को मेरी बात जंच गई थी. शाम

फोन पर सधी हुई आवाज में कमल के कार्यालय की सचिव बोली, "कमल का निधन हो गया है. अब वह इस संसार में नहीं हैं."

के साढ़े छः बज गए थे. बातें करतेकरते लगभग दो घंटे हो चले थे. मैं ने कमल को आश्वासन देने के विचार से कहा, "आप फिक्र मत कीजिए, आप से मेरी कंपनी वाले केवल मेरे आधे घंटे के समय की ही फीस लेंगे."

कमल ने मुझे धन्यवाद दिया और हाथ मिला कर चला गया.

लगभग छः महीने बाद कमल से मेरी मुलाकात एक स्टोर में हुई. वह अकेला ही था. अपने लिए जूते खरीद रहा था. मुझे देख कर बहुत खुश हुआ. उस ने अपनी एक कार बेच दी थी. दोनों एकएक लाख डालर की पालिसियां भी खत्म कर दीं. मकान की उधार की रकम से आठ हजार डालर भी वापस कर दिए. उस ने मुझे उचित सलाह देने के लिए फिर से धन्यवाद दिया. उस ने अपनी नौकरी बदल ली थी. अब उस का दफ्तर शहर में ही था. वह काफी प्रसन्न नजर आ रहा था.

कुछ महीने यों ही बीत गए. एक दिन अचानक दफ्तर में कमल का फोन आया. वह अपने एक दोस्त के बारे में बातें कर रहा था, जिस को परामर्श की आवश्यकता थी. मैं ने कमल से उस के मित्र का नाम और फोन नंबर पूछा ताकि मैं ही उस से अच्छी तरह से बातें कर लूं. कमल ने अपने मित्र का नाम और फोन नंबर देने से इनकार कर दिया. परंतु अगले सोमवार उस ने फोन करने के लिए कहा. तब वह अपने मित्र का नाम और फोन नंबर देने वाला था.

सवेरे दो बार कमल के दफ्तर फोन किया. फोन किसी ने नहीं उठाया. फिर उस के घर में कई बार फोन किया. फोन हमेशा व्यस्त मिला या हो सकता है, किसी ने टेलीफोन रिसीवर उतार कर रख दिया हो, मेरे पास उस समय खास काम नहीं था. इसलिए 11 बजे कमल के दफ्तर में फिर फोन मिलाया. फोन शायद सचिव ने उठाया. मैं ने जब बताया कि मैं कमल से बात करना चाहता हूं तो वह कुछ क्षणों के लिए खामोश हो गई. फिर सधी हुई आवाज में बोली, "कमल का निधन हो गया

है. अब वह इस संसार में नहीं है."

सुनते ही मैं सन्न रह गया. बिना कुछ कहे मैं ने फोन रख दिया.

सारा दिन मन बहुत ही उदास रहा. मैं सोचता रहा कि यह क्या हो गया? बेचारा कमल इतने वर्षों तक उन दो एकएक लाख डालर वाली बीमे की पालिसियों के पैसा देता रहा.

मेरी सलाह पर उस ने वे पालिसियां खत्म कर दीं ओर बेचारा इस दुनिया से चला गया. काश, वह उस दिन 'पूंजी निवेश गोष्ठी' में नहीं आया होता तो उन दो पालिसियों के उस की पत्नी और बच्चों को दो लाख डालर और मिल जाते.

पता नहीं, कमल की पत्नी को पता था या नहीं कि कमल ने वे दो पालिसियां खत्म कर दी हैं. कुछ दिन बाद जब अपने छिन्नभिन्न जीवन के तिनके फिर से बटोरने शुरू करेगी, तब उसे मालूम होगा.

मालूम नहीं, कमल ने कभी रजनी को मेरे बारे में बताया हो. बहुत से पति अपनी पत्नियों को आय, खर्च, बचत, जीवनबीमा इत्यादि की समस्याओं से अछूता ही रखते हैं. काश, कमल भी ऐसा ही हो. मेरे ही परामर्श के कारण रजनी को कमल के जीवन बीमे के चार लाख डालर के बजाय अब दो लाख डालर ही मिलेंगे. उस ने अपने जीतेजी छः सौ डालर बचाए थे, पर उस की पत्नी के दो लाख डालर कम हो गए.

कमल की पत्नी और बच्चों को काफी आर्थिक संघर्ष से गुजरना पड़ेगा. उन की परेशानियां और आर्थिक कठिनाइयों का जिम्मेदार मेरा परामर्श था, इस का एहसास मुझे जीवनपर्यंत रहेगा. ●

"सर यह रही केस फाइल... और ये इस के रिमाइंडर."
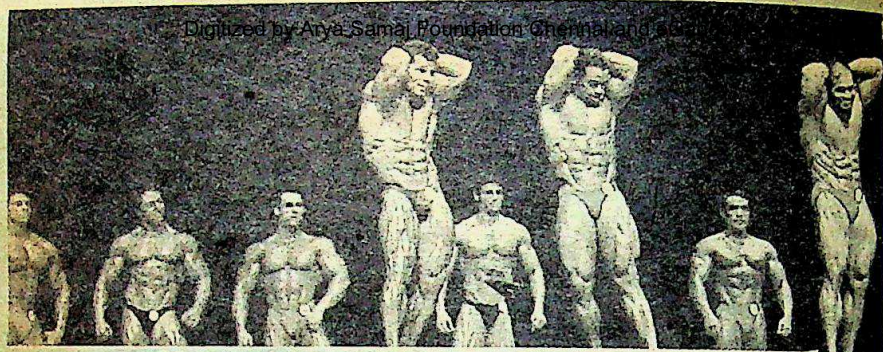
शरीर सौष्ठव का लौह पुरुष
प्रेमचंद्र डीगरा

लेख • रंदी सत्यनारायण राव

प्रेमचंद डीगरा एक ऐसा नाम है, जिस ने शरीरी सौष्ठव की दुनिया में भारत के नाम को नई ऊंचाई प्रदान की है. प्रेमचंद ने इस क्षेत्र में यूरोपीय देशों के एकाधिपत्य को न केवल धराशायी किया, बल्कि उन्हें यह सोचने को भी मजबूर कर दिया कि भारत भी एक चुनौती पेश कर सकता है. शरीर सौष्ठव में प्रेमचंद की उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए अभीअभी भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया है.

सर्वप्रथम पंजाब पुलिस में पुलिस सबइंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त होने वाले प्रेमचंद में शरीर सौष्ठव के प्रति दिलचस्पी पैदा करने का श्रेय उन के मित्र ब्रह्मदत्त भनोट को जाता है. प्रेमचंद अपने मित्र के आग्रह पर एक बार शरीर सौष्ठव प्रतियोगिता देखने गए. वहां उन के मित्र ने अचानक उन का नाम भी प्रस्तावित कर दिया. बेचारे प्रेमचंद बहुत घबराए. जब उन्हें मंच पर आ कर अपने शरीर की मछलियों (मांसपेशियों) को प्रदर्शित करने को कहा गया, वह डरेसहमे से मंच पर आए और अपने शरीर सौष्ठव का प्रदर्शन कर के चुपचाप अपनी सीट पर जा बैठे. जब परिणाम घोषित हुआ तो उन का हृदय बल्लियों उछलने लगा. इस तरह वह अपने प्रथम प्रदर्शन में प्रथम आए.

बस यहीं से 'शरीर सौष्ठव' के प्रति उन की रुचि पुष्पितपल्लवित और फलित होती गई. पंजाब पुलिस में जुलाई 1975 से ले कर जुलाई 1984 तक रहते हुए उन्होंने शरीर सौष्ठव प्रतियोगिताओं में कई पुरस्कार जीते.

एक दिसंबर 1955 को जिला गुरुदासपुर

पंजाब के बवरी नंगल गांव में निहायत गरीब परिवार में जन्म लेने वाले प्रेमचंद्र की प्रतिभा का यह आलम था कि शरीर सौष्ठव की लगभग सभी राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उन के मुकाबले में कोई नहीं ठहर सका.

प्रेमचंद्र ने 1981 से अब तक एक बार

शरीर सौष्ठव में बेहतर प्रदर्शन के आधार पर सरकार ने प्रेमचंद्र डीगरा को पद्मश्री से सम्मानित किया है. देश के लिए मानसम्मान व नाम प्राप्त करने वाला एक खिलाड़ी पद्मश्री पा कर भी इसलिए क्षुब्ध है क्योंकि आर्थिक अभावों का घेरा उस के चारों तरफ बना हुआ है.
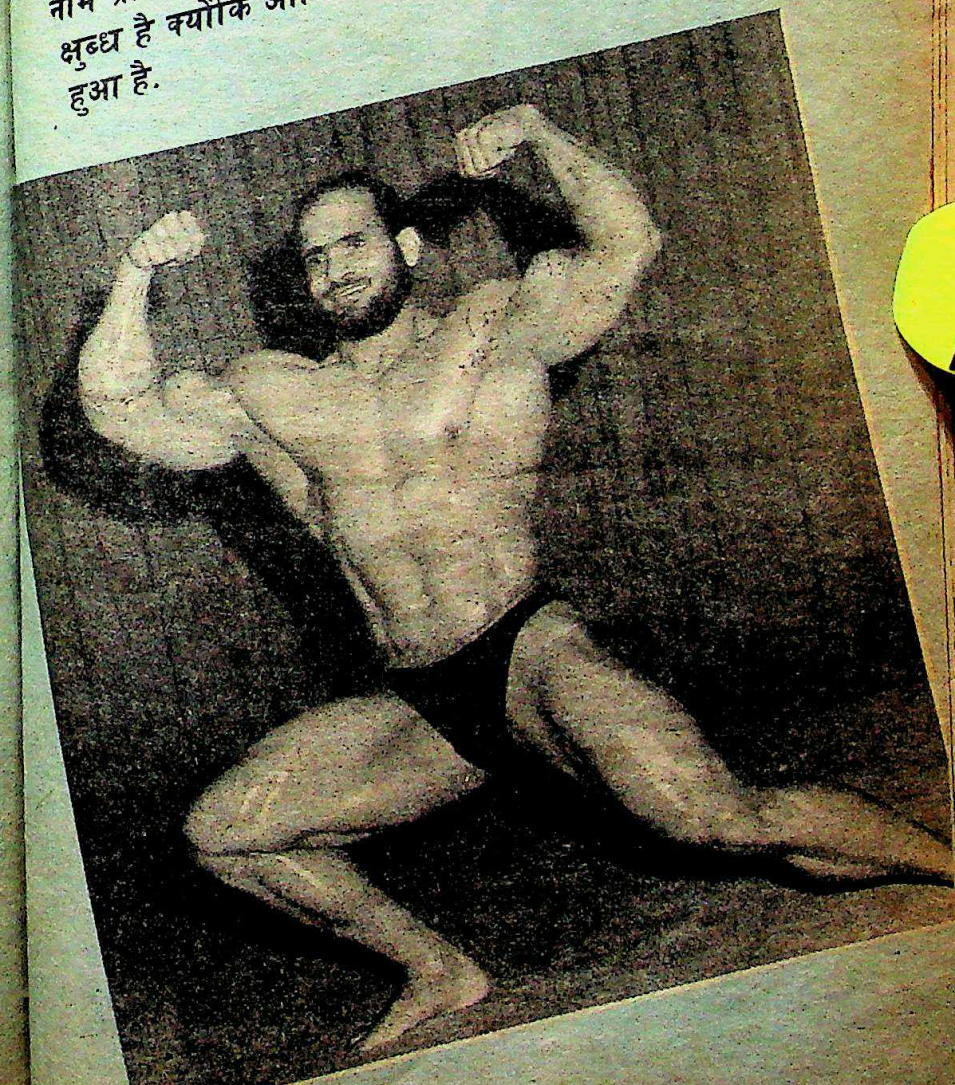
त्र के
ोगिता
क उन
बेचारे
र आ
शियों)
सहमे
व का
र जा
न का
ह वह

ों उन
होती
ले कर
शरीर
जीते.
सपुर

मुक्ता

प्रेमचंद डीगरा का छोटा परिवार : आर्थिक तंगी में भी खुश.

जूनियर वर्ग में तथा आठ बार सीनियर वर्ग में 'मिस्टर इंडिया' बन कर रिकार्ड तोड़ सफलता हासिल की. पंजाब पुलिस में रहते हुए प्रेमचंद्र ने 1981 में अगरतला में आयोजित जूनियर प्रतियोगिता में और इसी वर्ष मद्रास में आयोजित सीनियर वर्ग की प्रतियोगिता में 'मिस्टर इंडिया' का खिताब जीता. 1983 में वह फिर कोयंबटूर में मिस्टर इंडिया चुने गए.

प्रेमचंद की इन सफलताओं से प्रभावित हो कर जब 'टाटा स्टील' कंपनी ने उन्हें अपने यहां अच्छी नौकरी देने का प्रस्ताव किया तो वह पुलिस की नौकरी छोड़ कर 4 अगस्त 1984 को टाटा स्टील में चले आए. यहां आना प्रेमचंद के लिए बहुत अच्छा रहा. क्योंकि टाटा स्टील में आते ही सफलताओं के अंबार लग गए. अगले ही महीने सितंबर 1984 में प्रेमचंद अगरतला में मिस्टर इंडिया चुने गए. फिर सितंबर 1985 में राजमहेंद्री में, अगस्त 1986 में म्रदास में, जून 1987 में इंदौर में, मई 1988 में और पुनः मार्च 1989 में मद्रास शहर में आयोजित प्रतियोगिताओं में वह बारबार मिस्टर इंडिया चुने गए.

अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धि

राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के अलावा एशियाई और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी प्रेमचंद का रेकार्ड अच्छा रहा, 1983 के अक्तूबर माह में पाकिस्तान के कराची शहर में आयोजित एशियाई प्रतियोगिता में प्रेमचंद ने एशिया श्री (मिस्टर एशिया) का खिताब हासिल कर भारत के नाम को चार चांद लगा दिया. फिर 1984 के अक्तूबर माह में सोल (दक्षिण कोरिया) में आयोजित एशियाई प्रतियोगिता में उन्होंने पुनः एशिया श्री का सम्मान प्राप्त किया. तत्पश्चात सितंबर 1985 में कोलंबो (श्रीलंका) में और 1986 में ताईपेई तथा मलका में आयोजित प्रतियोगिताओं में वह एशिया श्री से सम्मानित हुए. इस प्रकार वह पांच बार 'एशिया श्री' का गौरव हासिल करने वाले प्रथम भारतीय थे.

अपनी इन्हीं सफलताओं के बीच प्रेमचंद 'विश्वश्री' के लिए भी प्रयत्नशील रहे और इस के लिए उन्हें लंबी प्रतीक्षा भी करनी पड़ी. किंतु अंत में 1988 में आस्ट्रेलिया के ब्रिसबेन नगर में आयोजित 'विश्व प्रतियोगिता' में उन्होंने मिस्टर यूनिवर्स यानी 'विश्वश्री' का ताज हासिल कर ही लिया. अब तो आप इतने उत्साहित हैं कि भविष्य में 'शौकिया' प्रदर्शनों को छोड़ कर व्यावसायिक प्रदर्शनों पर ध्यान केंद्रित करने की सोच रहे हैं. इस का एक कारण यह भी है कि इतनी सफलता प्राप्त करने के बावजूद उन की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है.

1986 में 'टाटा स्पोर्ट्स अवार्ड' 1988 में 'चार मीनार चैलेंज ट्राफी' एवं इसी वर्ष 1988 में 'तमिलनाडु जर्नलिस्ट एसोसियेशन

अवार्ड' तथा [illegible] 'पद्मश्री' आदि पुरस्कारों से सम्मानित प्रेमचंद का अपने उपयोग के लिए 'टाटा स्टील' से एक पुरानी गाड़ी देने की याचना करना यही दर्शाता है कि भारत में खिलाड़ी अपने स्वयं के बलबूते पर ही बनते हैं, उन्हें बनाने, प्रोत्साहित करने तथा उन की सुविधाओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता.

खिलाड़ियों के प्रति जनता में भी अपेक्षित सम्मान तथा स्नेह देखने को नहीं मिलता.

यह तथ्य उन की इस शिकायत में उजागर होता है. वह कहते हैं, "लोग जानते हैं कि प्रेमचंद यहीं रहता है, वे मुझे देखते भी हैं. लेकिन नौजवान लोग देख कर भी अनदेखा कर जाते हैं. कभीकभी कुछ लोग मेरा कुशलक्षेम भी पूछ जाते हैं, लेकिन किसी को 'बाडी बिल्डिंग' में रुचि ही नहीं है."

जिस ने 'शरीर सौष्ठव' में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की. 'भारतश्री', 'एशियाश्री', 'विश्वश्री' और अंत में 'पद्मश्री' बनने का गौरव हासिल किया, ऐसे व्यक्ति की उपेक्षा करना कहां तक उचित है. फिर भी प्रेमचंद निराश नहीं है. उन्होंने अपने ही बलबूते पर एक व्यायामशाला (हेल्थ सेंटर) चलाने का प्रण किया है. इस केंद्र में वह जमशेदपुर के इच्छुक युवकों को शरीर सौष्ठव का प्रशिक्षण देंगे.

वर्तमान में टाटा स्टील में सहायक खेल अधिकारी के पद पर कार्यरत, पांच फुट साढ़े छह इंच ऊंचाई वाले प्रेमचंद डीगरा के हौंसले बुलंद प्रतीत होते हैं. शायद यही वजह है कि वह 'मिस्टर ओलंपिक' प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए कटिबद्ध हैं.

प्रेमचंद ने बताया कि वह 'शरीर सौष्ठव' पर एक किताब लिख रहे हैं. वह टाटा स्टील की प्रशंसा करते हुए कहते हैं, "मुझे अब तक जितनी भी सफलता मिली है सब टाटा कंपनी की मेहरबानियों से. कंपनी ने मेरी हर तरह से मदद की, जबकि केंद्र तथा राज्य सरकारों से उपेक्षा के सिवा कुछ भी नहीं मिला."

सोच सोच कर आती लाज

कैसे कह दूं कल की बात?
सखियां पूछ रही सब बात
कैसाकैसा होता है?
दिल में क्या क्या होता है?
कैसे आंख मिलाई थी?
क्या तुम भी शरमाई थीं?
कैसा था साजन का प्यार?

पिया संग जो रात कटी,
आज उसी की बात उठी,
कैसे कह दूं वो सब बात,
सोच सोच कर आती लाज.
अधर अभी तक मीठे हैं.

नयन लाज से भींगे हैं
हंर बातें बड़ी प्यारी थीं
रात बड़ी मतवाली थी,
सुध बुध खोने वाली थी.

'प्रियतम आए मेरे पास
मैं घबड़ाई हुई उदास
मिली आंख जब साजन से
तब मन झूमा मस्ती से
नयनों में हुई जो भी बात
समझ गई मैं वो सब बात
कैसे कहं दूं वो सब बात
सोच सोच कर आती लाज.

—सुबोध 'कानपुरी'

सपने
रंग बन कर
बिखर गए हैं.

रच गई है मेंहदी
तुम्हारी हथेलियों पर
पावों में
उगा है महावर.

टेसू खेल गया है
वस्त्रों में होली
और सुकोमल तन तुम्हारा
हुआ हल्दी के रंग का.

पलकें उठा नहीं पाईं
प्यार से भीगी भार लज्जा का
बैठ गई हो तुम
इंद्रधनुष की डोली में

और मन मेरा हो गया है
पंखों वाला कहार
तुम
उड़ कर आ रही हो.

—दीपंकर झा 'दीप'

करूं क्या

छिपा तो लूंगी आंखों के आंसू
दिल रोए कभी, तो करूं क्या
मैं तेरा नाम न लूंगी कभी
याद आए तेरी कभी, तो करूं क्या.

यों तो पूछेंगे लोग बातें कई,
बहाने बना लूंगी मैं कई,
चुप रह कर सह लूंगी दर्दे दिल,
खामोशियां जबान बन जाए, तो करूं क्या.

आवाज़ दे सकती नहीं,
[illegible]

[illegible]

सपने जोड़ रही जिंदगी

भीड़ भरे रस्तों पर दौड़ रही जिंदगी,
सुखदुख के सपने निचोड़ रही जिंदगी.

मुट्ठी भर इच्छाएं होंठों पर मुसकाने,
मेंहदी ओर रंगों को जोड़ रही जिंदगी.

कस्तूरी हिरणों सी खुशबू से भरमायी,
परछाइयों के पीछे दौड़ रही जिंदगी.

नींदों के जंगल में अलसाई लेटी है,
यादों को कब से झिझोड़ रही जिंदगी.

पानी के ऊपर ये पानी की रेखाएं,
आंसू को आंसू से जोड़ रही जिंदगी.

[illegible]
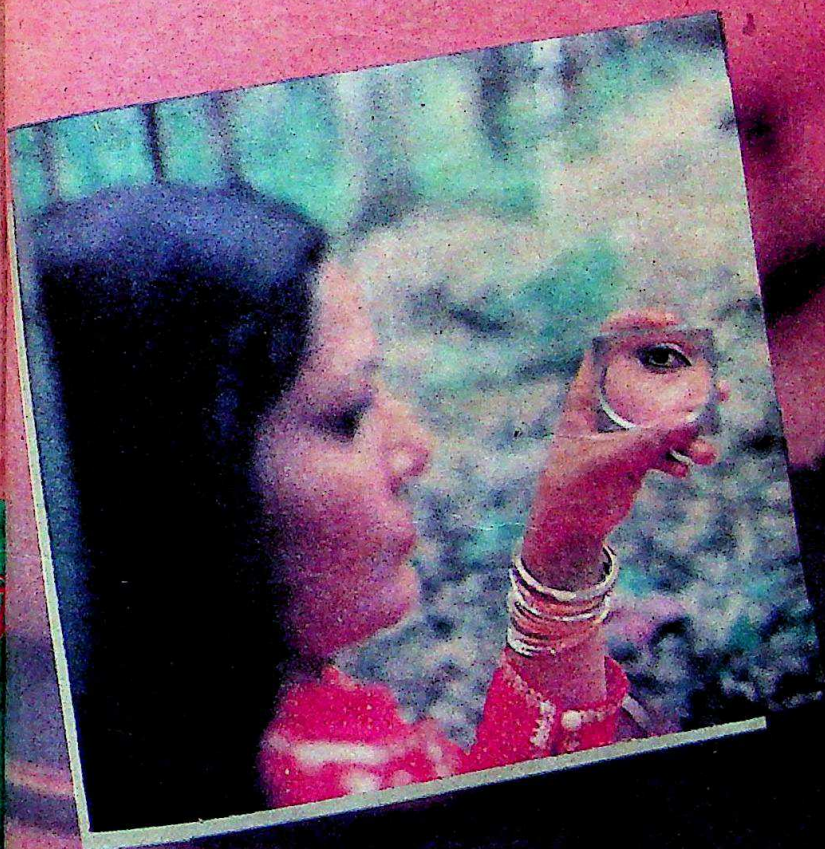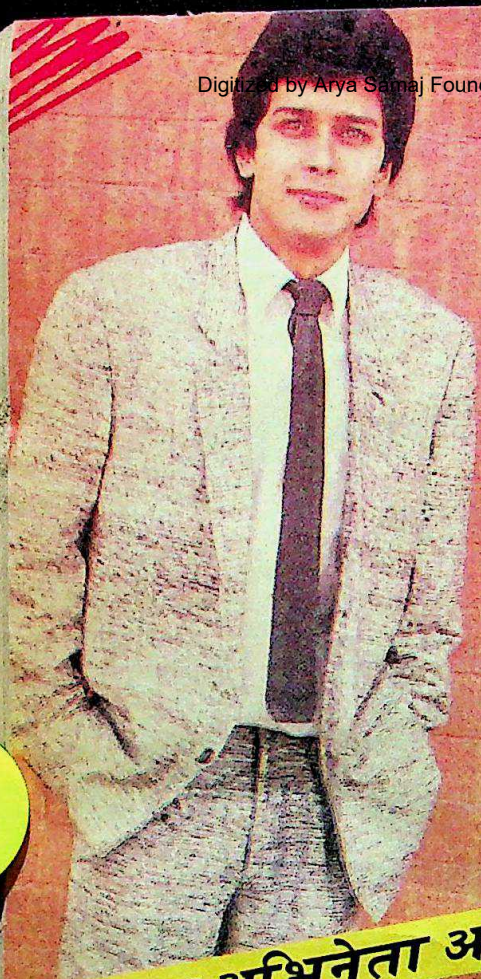
फिल्म अभिनेता अभिनव चतुर्वेदी का
फैशन और उस के प्रति दृष्टिकोण.

'हम लोग' धारावाहिक ने अभिनव को लोकप्रियता के साथसाथ एक नया नाम भी दिया, 'नन्हे'. आज भी अधिकांश लोगों के लिए वह वही भोलाभाला सा दिखने वाला नन्हे ही है. 'बुनियाद' से सफलता दोगुनी हो गई. 'पर्वत के उस पार' और 'भ्रष्टाचार' में अपने अभिनय से फिल्म नगरी में भी थोड़ी धाक जमा ली.

अभिनव फैशनेबुल हैं, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, पर फिर भी उस के कपड़े आकर्षक होते हैं.

वह खुद भी कहता है, "मुझे सादा चीजें ही अधिक आकर्षित करती हैं. मेरी अलमारी में तड़कभड़क की कोई जगह नहीं है."

उस के पसंदीदा रंग?

नीला. कुछ समुद्री हरा, नीले से.

वह मानता है कि "रोजरोज बदलते फैशन का अंधाधुंध पीछा करने में वह कतई विश्वास नहीं करता. ऐसा करना तो निहायत ही बेवकूफी है. माना कि फैशन के अनुरूप स्वयं को ढालना एक अनिवार्यता बन गई है, पर सभी कुछ अपनाना, चाहे वह आप पर फबे या नहीं, इस में तो कोई अकलमंदी नहीं. अब जरूरी तो नहीं कि जो कुछ आप पर अच्छा लग रहा है, मुझ पर भी जंचे. बिना कुछ
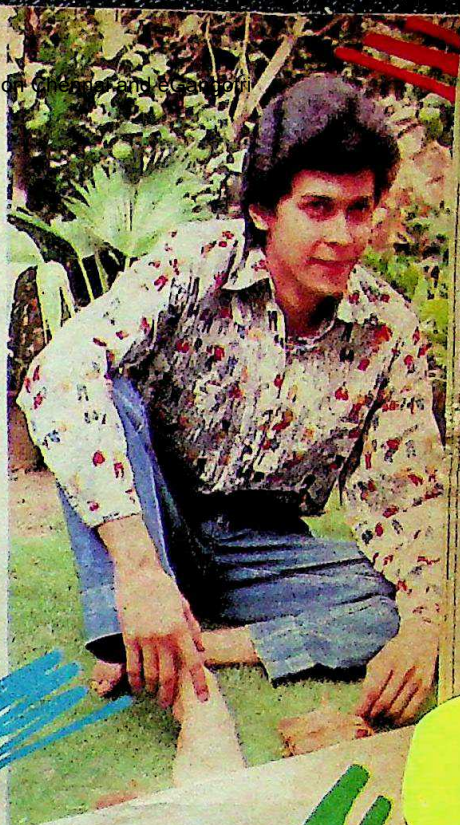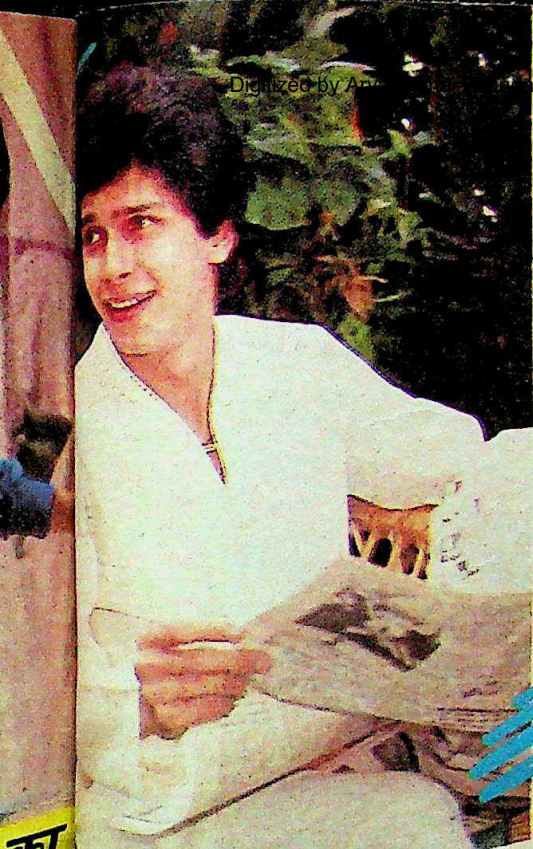
निपरखे, फैशन के पीछे भागना फैशन का ही अर्थ खो बैठता है.''

कोई भी पोशाक खरीदने से पहले वह बातों का ध्यान रखता है. उस तरह को कितने लोग अपना चुके हैं और क्या वह सूट करेगा. वह फैशन के मामले में पहल करने में विश्वास नहीं करता. उस के अच्छी तरह प्रचलित हो जाने का इंतजार करता है, फिर अपनाता है.

अपनी पत्नी की पोशाकों के बारे में आप कुछ कहना चाहेंगे?

''मैं तो चाहूंगा कि मेरी पत्नी भी सदा भारतीय पोशाकें ही पहने. जैसे, साड़ी, सलवारकमीज आदि. आप मुझे पुराने विचारों का कह सकते हैं, पर वाकई मुझे उस का स्कर्ट पहनना अच्छा नहीं लगेगा.''

''मान लीजिए, यदि आप से आप की पसंदीदा पोशाकें चुनने को कहें तो आप क्या चुनेंगे?'' उस से पूछा गया.

''यदि मेरी प्रिय पोशाकों की सूची बनाई जाए तो सब से पहले रहेगा, कुरतापाजामा. इस से अधिक आरामदायक शायद ही कोई दूसरी पोशाक हो. इस के बाद नंबर आता है, डेनिम जींस का. काम और आराम दोनों ही समय यह जंचती है. बाहर घूमने जाते के लिए मैं मेल खाते पैंटकमीज ही पसंद करता हूं. रंगों के बदलाव और उचित तालमेल से इस में कोई एकरसता नहीं आ पाती और सर्दियों में तो मैं टाई और सूट के बिना बाहर ही नहीं निकलता. कालिज में भी मैं यही पहनता था. (आप को याद होगा 'बुनियाद' में तो मैं आधे से भी अधिक समय यही पहने रहा था. तब बाहर गजब की गरमी पड़ रही होती थी और...) अरे हां, अपने ट्रैक सूट को मैं कैसे भूल सकता हूं. (बहुत कम लोगों को मालूम है कि अभिनव क्रिकेट और टेनिस खेलने के भी शौकीन हैं).''

—आभा सेठ

संगीता बिजलानी : तू नहीं और सही और...

संगीता बिजलानी : कपड़ों की तरह बदलते प्रेमी.

फिल्म 'मैं ने प्यार किया' की सफलता के बाद उस के हीरो सलमान खान के भाव बढ़ गए हैं. उस के तथा उस की प्रेमिका संगीता बिजलानी के संबंधों में अब खिचाव आ गया है.

अब सलमान प्रसिद्ध माडल मेहर जेस्सिया के साथ नजर आने लगा है. ज्ञातव्य हो कि संगीता बिजलानी और मेहर जेस्सिया ने मार्डलिंग की साथसाथ शुरुआत की थी.

संगीता ने भी झुंझला कर अब सन्नी देओल का हाथ थाम लिया है. यों वह उस की एक फिल्म की हीरोइन भी है. इस तरह सन्नी देओल के पौ बारह हैं. एक तरफ डिंपल और दूसरी ओर संगीता. पर वह दुखी लगता है. उस की पत्नी पूजा इन्हीं हरकतों के कारण उसे छोड़ कर लंदन चली गई है और शीघ्र ही तलाक की अर्जी दाखिल करने जा रही है. सन्नी देओल दुविधा में है कि क्या करे?

जूही चावला : अंगरेजी चोचले.

जूही चावला : ढलती उम्र और घटते कपड़े.

जूही चावला की उम्र ढलने लगी है. 'कयामत से कयामत तक' की सफलता के बाद उस की सारी फिल्में असफल हुई हैं.

फिल्म 'दो भाई' की शूटिंग पर मिली. फिल्म में ऋषि कपूर के साथ गाने का दृश्य था. काफी भड़कीली पोशाक में थी. पूछा, "क्या अब यह देह प्रदर्शन जमता है?"
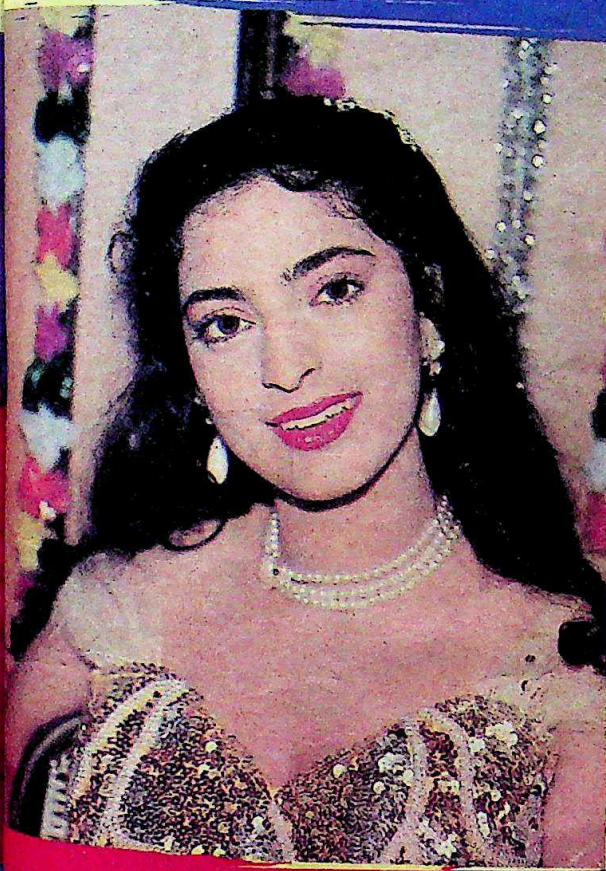
प्रतिवाद करते हुए वह बोली, "कहानी की मांग हो तो क्या हर्ज है."

फिर जूही व्यावहारिक स्वर में बोली, "फिल्मों में काम करना है तो थोड़ेबहुत कपड़े तो उघाड़ने ही पड़ेंगे."

"आप अंगरेजी प्रेस की बनाई छवि को भुना रही हैं."

बोली जूही, "यह सरासर अन्याय है. मेरे अंदर प्रतिभा है, तभी तो मुझे फिल्में मिली हैं." मेरी आने वाली 'दो भाई,' 'स्वर्ग' तथा 'जहरीले' आदि फिल्में देख कर आप अपनी राय बदल देंगे.

"अच्छा, यह ऋषि कपूर के साथ क्या चक्कर है?"

सामने बैठे ऋषि कपूर को आंख मारते हुए वह बोली, "इन्हें बताओ, अपना क्या चक्कर है?"
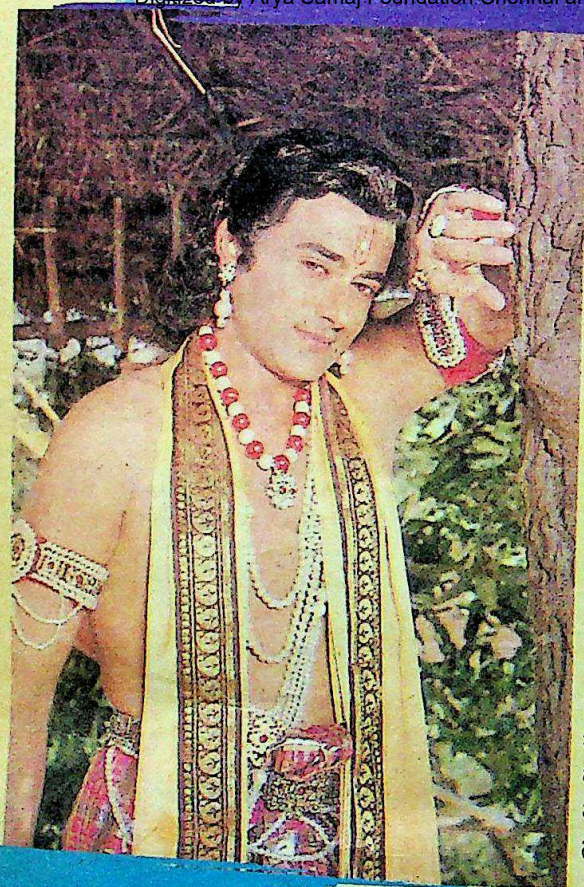
नितीश भारद्वाज : फिल्मी अभिनेत्रियों में बढ़ती लोकप्रियता

कृष्ण की भूमिका में नितीश भारद्वाज : कथित भगवान की बनी छवि को तोड़ने की बेचैनी.

'महाभारत' धारावाहिक के कृष्ण कन्हैया यानी नितीश भारद्वाज अपना यह रोल असली जिंदगी में भी बखूबी निभा रहे हैं.

पिछले दिनों सावन कुमार के यहां मिले. वह उन की फिल्म 'प्रेमदान' के नायक हैं. फिल्म नेत्रदान के विषय पर है.

मैं ने पूछा, ''महाभारत के 'भगवान' की छवि को कैसे तोड़ेंगे?''

''कभीकभी तो मुझे भी अटपटा लगता है, पर इस के साथसाथ मैं मराठी और हिंदी फिल्मों में भी नायक की भूमिकाएं कर रहा हूं. फिल्म 'नाचे नागिन गलीगली' में मीनाक्षी है, 'प्रेमदान' में खुशबू मेरे साथ है.'' नितीश बोले.

''आप की हिंदी कभीकभी अटपटी लगती है?''

''सचमुच? नहीं, मैं तो हिंदी का अभ्यास करता रहता हूं.''

''आप अभी कुंआरे हैं, आप की राधा कब आ रही है?''

हंसते हुए नितीश बोले, ''जल्दी ही आएगी और गाएगी. 'रसिया रे मन बसिया रे...''

'खतरनाक' संजय दत्त की व्यथा.

संजय दत्त : फिल्म उद्योग में एक और 'एंग्री यंग मैन'.
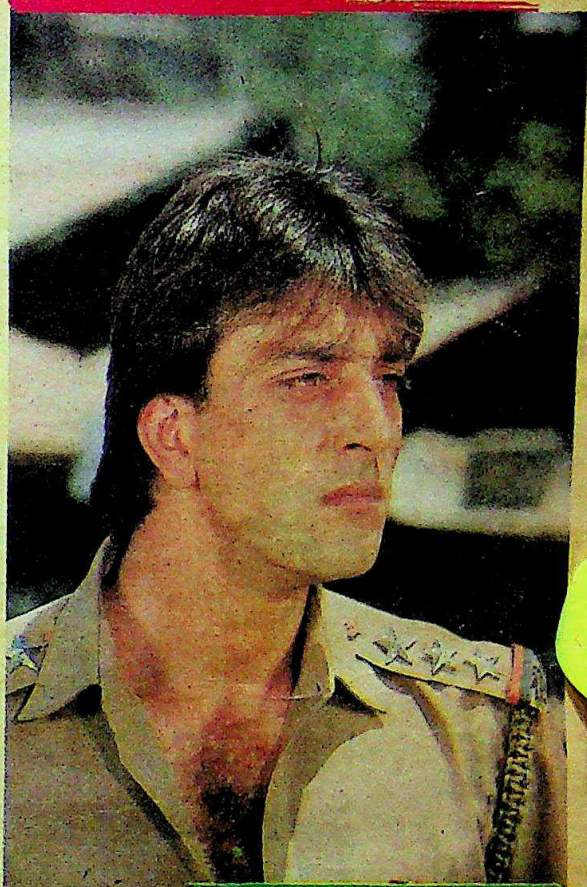
फिल्मों में संजय दत्त 'एंग्री यंग मैन' का र्याय बन गया है. पिछले दिन उस की फिल्म खतरनाक' का 'अजंता आर्ट' में एक प्रेस शो ा. वही मुलाकात होने पर पूछा, "यह 'एंग्री ग मैन' वाली भूमिका ही दोहराते रहेंगे या?"

संजय दत्त बोला, "आम लोग यही संद करते हैं और चलता भी है तो मैं क्यों पना दिमाग खपाऊं?"

"आप की पत्नी कैसी हैं?"

वह भावुक हो कर बोला, "मौत से लड़ ही है. अभी खतरे से बाहर नहीं है."

"क्या आप भोगी हुई त्रासदी को परदे पर दिखाते हैं?"

संजय दत्त चौंका, फिर गंभीर आवाज में बोला, "शायद यही मेरी जिंदगी है."

वहीं फिल्म के निर्माता राम शेट्टी मिले. कहने लगे, "मैं तकनीशियन हूं यानी 'फाइट मास्टर' तथा अपनी तरफ से फिल्म में जान डालने की पूरी कोशिश की है."

फिल्म देख कर लगता है कि उन्होंने मेहनत की है. किरन कुमार भी वहीं थे. बोले, "पहली बार पूरबिया का रोल किया है. यह भूमिका मेरी पसंद की है."

नीता पुरी न इधर की न उधर की

नीतापुरी : फिल्मी असफलता के बाद माडलिंग व नाटकों की ओर.

नीता पुरी अभी तक फिल्मों में स्थापित नहीं हो पाई है. कभी तो वह यौन फिल्म 'खुली खिड़की' में कपड़े उतारती नजर आती है और कभी पत्रिकाओं में अर्धनग्न कपड़ों में विज्ञापन करती है.

एक फिल्म शो में मिली तो पूछा, ''इतनी बेबाकी से देह प्रदर्शन के बाद भी अपेक्षित सफलता नहीं मिली तो आगे क्या सोचा है?''

वह बोली, ''कई गतिविधियां हैं. माडलिंग से नाटकों में अभिनय तक.''

''पर यह जिंदगी ऐसे ही गुजार देंगी? मेरा मतलब सीमित सफलता और अकेले?''

नीता व्यथित हृदय से बोली, ''अमरीका से हीरोइन बनने आई थी. इस में कुछ सफलता भी मिली है, वीडियो फिल्मों की नायिका बन कर या 'बी ग्रेड' की फिल्मों की नायिका बन कर. पर शिखर पर जाने की इच्छा जरूर है, तभी शादी के बारे में सोचूंगी.

जीने की सजा बनाम सतही जीवन दर्शन
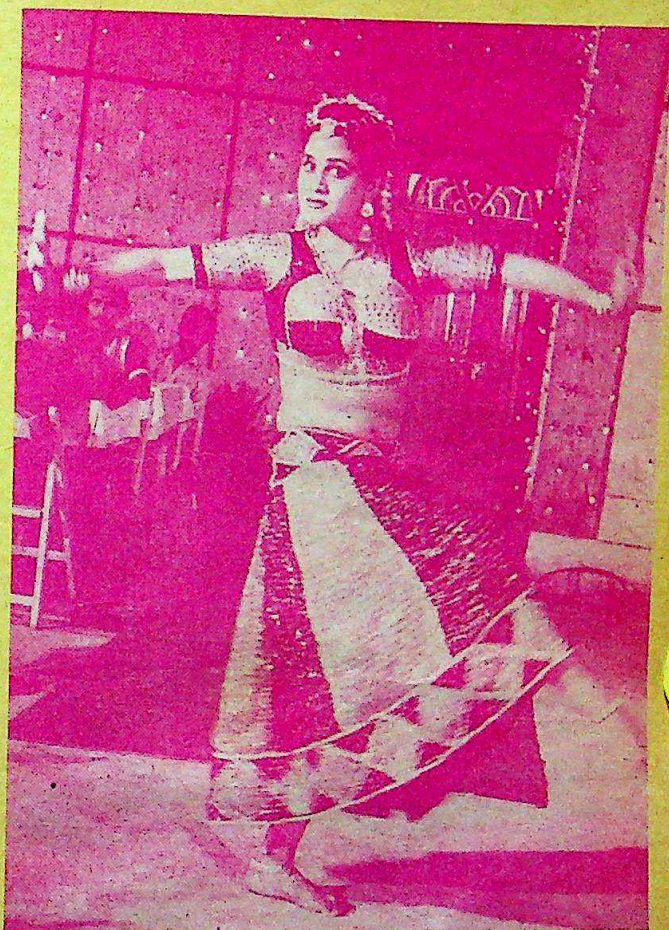
'जीने की सजा' के कार्यक्रम में सुधा चंदन का नृत्य : दोहरा लाभ.

नाजिर हीरेकर जुगाड़ू व्यक्तित्व हैं. एक तरफ तो वह फिल्म 'जीने की सजा' के निर्माता हैं और दूसरी ओर एक राजनीतिक पार्टी के पदाधिकारी.

फिल्म का प्रदर्शन तेजपाल सभागृह में था. जहां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म सोसाइटी द्वारा फिल्म के कलाकारों को पुरस्कृत किया जाना था. फिल्म नशीली दवाओं की पृष्ठभूमि पर है पर उस का चित्रण सतही है.

इस समारोह में सुरेश ओबेराय, नीता पुरी, साहिला चड्ढा आदि मौजूद थे.

नाजिर हीरेकर से पूछा, "इस फिल्म के निर्माण की प्रेरणा क्या है?".

वह बोले, "यह तो आज ज्वलंत समस्या है. मैं ने युवा पीढ़ी की मानसिकता को चित्रित किया है."

"पर जगहजगह नृत्य और बेवजह देह प्रदर्शन? क्या यह भी कहानी की मांग है या कुछ और?"

इस का नाजिर के पास कोई उत्तर नहीं था: सुरेश ओबेराय भी उखड़ेउखड़े थे बोले, "फिल्म एक अच्छी विषयवस्तु को ले कर है, पर मेरी आशा के अनुरूप नहीं बन पाई." ●

पंजाब में मौजमस्ती भरी शादियों पर आतंकवाद का कसता शिकंजा

लेख ● अशोककुमार सहगल

अमूमन हर स्थान पर शादी ब्याह के खुशगवार मौके पर धूमधड़ाके और उमंगउत्साह की बहार तो होती ही है किंतु पंजाब में शादीब्याह के अवसर पर जैसा जश्न मनाया जाता है वह अपने आप में अनूठा ही होता है. वैसे आजकल वहां छाए हुए आतंकवाद के काले बादलों ने इस चहलपहल वाले मौके को भी अपनी छाया से ढक रखा है किंतु फिर भी वहां के लोग इस हसीन मौके को विशिष्ट बनाने का तरीका ढूंढ ही लेते हैं.

विवाह जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अवसर है. यह मनुष्य जीवन को संपूर्णता प्रदान करता है. यद्यपि विवाह करने के अपनेअपने तरीके होते हैं, फिर भी शादी का माहौल सब जगह हंसीखुशी से भरा होता है, जिस में उल्लास के साथसाथ शोरगुल भी होता है. मगर विवाह के अवसर पर जितना शोरगुल व मौजमस्ती पंजाब में देखने को मिलती है वैसी और कहीं नहीं. और यह मौजमस्ती विवाह से कई दिन पहले ही शुरू हो जाती है.

जहां इस अवसर पर वरवधू के मन में आनंद का सागर ठाठें मार रहा होता है, वहीं एक असीम आनंद की अनुभूति घरातियों और बरातियों में भी देखी जा सकती है जो नाच कर, भंगड़े डाल कर सब को अपनी ओर आकर्षित कर रहे होते हैं.

वधू पक्ष में चूड़ा चढ़ाने के बाद औरतों का गाना बजाना शुरू हो जाता है और जब तक सभी थक कर चूर न हो जाएं, यह देर रात तक जारी रहता है. इस में सभी औरतें मिल कर गाती हैं और नाचती भी हैं.

घोड़ी के अवसर पर वर पक्ष में भी सेहरा बंधी के साथसाथ शोरगुल का वातावरण बनना शुरू हो जाता है जो धीरेधीरे द्वारचार के समय तक अपने पूर्ण यौवन पर आ जाता है. इस अवसर पर खानेपीने का दौर भी खूब चलता है. ढोल की थाप पर भंगड़ा करते बरातियों के समूह को देख कर लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं.

कभीकभी तो यह शोर इतना बढ़ जाता है कि शराब और खुशी की मस्ती में, कोई भंगड़ा डाल रहा होता है तो कहीं शादी में शामिल कुछ अन्य लोग बैंड बाजों की धुन पर नएनए नृत्य कर रहे होते हैं. नाचने गाने में औरतें भी पीछे नहीं रहती हैं. सड़कों पर नाचतेनाचते लोग कई बार सड़कों का यातायात तक ठप कर देते हैं.

विवाह में शामिल होने के लिए पंजाब के बाहर से आए बरातियों के लिए ऐसा शोरगुल भरा विवाह एक नई चीज होती है, मगर पंजाब में रहने वालों के लिए यह एक आम परंपरा की तरह जिस शादी में ऐसा शोरगुल नजर न आए उस में उन्हें मजा भी नहीं आता.

पंजाब में विवाह के अवसर पर शराब पानी की तरह बहाई जाती है. पीने वालों के लिए जैसे प्यास बुझाने का यही दिन होता है. शराब पी कर होश कम रहने के बावजूद वे सब के साथ नाचते रहते हैं, चाहे अस्तव्यस्त हालत में टेढ़ासीधा नाच कर ही उन्हें अपनी ख्वाहिश पूरी क्यों न करनी पड़े.

(शेष पृष्ठ 157 पर)

किन्नर प्रदेश

दुर्गम पहाड़ों की गोद में कुछ दिन

लेख • एस.आर. हरनोट

कल्पकल्पांतर तक जिन दुर्गम पहाड़ों पर कल्पनाओं में मनुष्य भ्रमण करता रहा, वहां युग के परिवर्तन के साथसाथ एक सभ्यता कायम होती रही. प्रकृति के मनोहारी और अविस्मरणीय परिदृश्य उसी मानिंद बनते बिगड़ते रहे जिस तरह से किसी कुंआरी यौवना के मन में किसी अदृश्य परछाईं के स्नेहिल प्रतिबिंब आतेजाते रहे हों लेकिन उस यौवना के उस अछूते रूप सागर का किसी ने भी परिरंभन न किया हो. बस यही कुछ सदियों तक हिमालय के उन शिखरों के साथ भी होता रहा जिन्हें देख कर कोई भी आज आश्चर्यचकित रह जाता है—वह सोच नहीं पाता कि इस प्रकृति के पास इतने दक्ष कलाकार आखिर हैं तो कहां से.

यही वह जगह है जहां हर एक को विश्वास करना पड़ता है कि कोई अदृश्य शक्ति है जो इस संसार की नियंता है. अब यह कल्पना नहीं रही है बल्कि वास्तविकता है कि इन दुर्गम पहाड़ों पर आप खुद घूम सकते हैं. यहां की सभ्यता, संस्कृति और जनजीवन को करीब से पकड़ सकते हैं—जहां जिंदगी जीने का मतलब कड़ा संघर्ष होता है और अपना आनंद भी. इन शिखरों की तमाम शृंखलाएं

किस का नीरस मन होगा जो प्रकृति के स्नेहिल गोद में जा कर कुछ समय के लिए अपनी व्यस्त जिंदगी की थकान एवं ऊब को भुलाना न चाहता हो. आइए, हम आप को भी लिए चलते हैं हिमाचल की हरीभरी वादियों में, जहां प्रकृति ने कुछ अधिक ही मेहरबानी कर के इस की धरती को बड़ी खूबसूरती से तराशा है, सजाया है.

मुकुट के मानिंद हैं. पर्वत की लंबी अजीबोगरीब तहरीरें और सीढ़ीनुमा खेतों का अनुपम सौंदर्य हमें अपनी ओर खींचता है. बर्फ की सफेद चादर ओढ़े गगनचुंबी शिखर जहां सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं वहीं इन के हृदय से निकलती नदियां और असंख्य झरने निरंतर मंजिल का रास्ता दिखलाते हैं.

यहां की नैसर्गिक छटा ही हमें आज के शहरी जीवन की होड़ और आपाधापी से दूर पहाड़ों की ओर आकर्षित करती है, उस ओर जहां शांति है. सुख है, मनुष्यता है और हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है जो आज एक खतरे की घाटी में पड़ी है. यहां का मनोहारी सौंदर्य आंतरिक प्रफुल्लता का दरवाजा खोलता लगता है. पर यह जितना आनंदमय है उतना ही मौत के करीब भी क्योंकि जिस तरह पहाड़ों को काटकाट कर रास्ते बनाए गए हैं, वह आश्चर्यजनक होने के साथ ही खतरनाक भी हैं.

इन पहाड़ों की यात्रा अब दुर्गम नहीं रही है लेकिन इतना अवश्य है कि एकाधिक का समूह इन पहाड़ों का भ्रमण करने की दृष्टि से सुविधाजनक है. वैसे हिमाचल पर्यटन विकास निगम ने इन जनजातीय क्षेत्रों में सैलानियों को ले जाने हेतु पहल की है और इसी वर्ष 10-10 दिनों के पैकेज टूअरों का आयोजन कर के एक कठिन और आनंदमय यात्रा की शुरुआत की है. इस वर्ष केवल पैकेज टूअर ही चलाए गए. इन
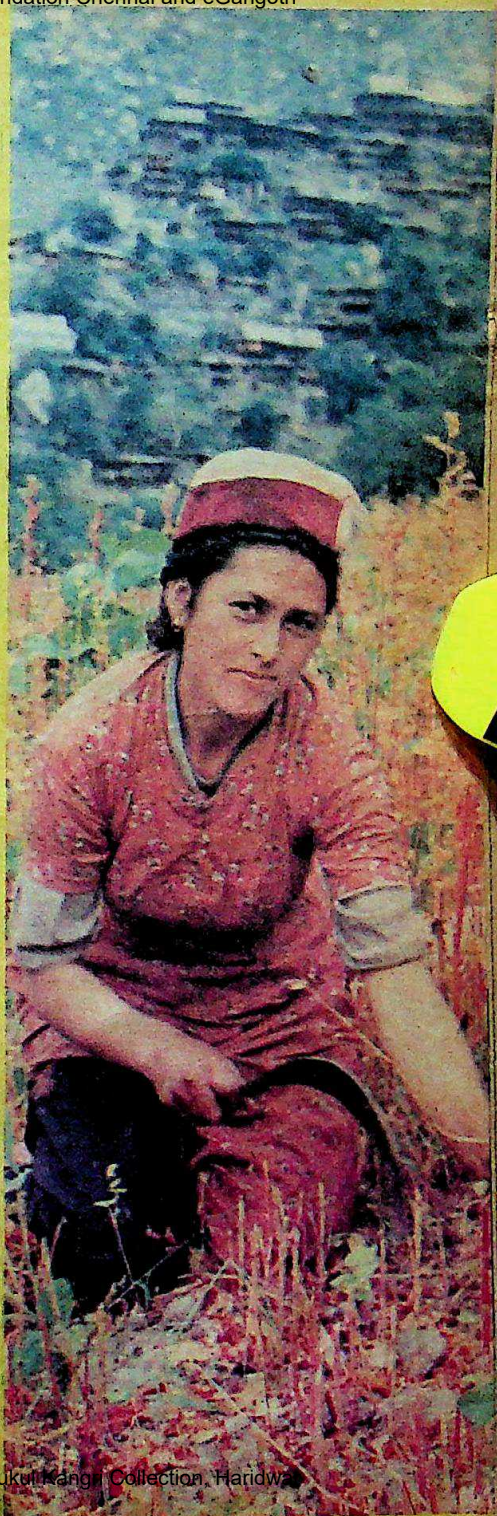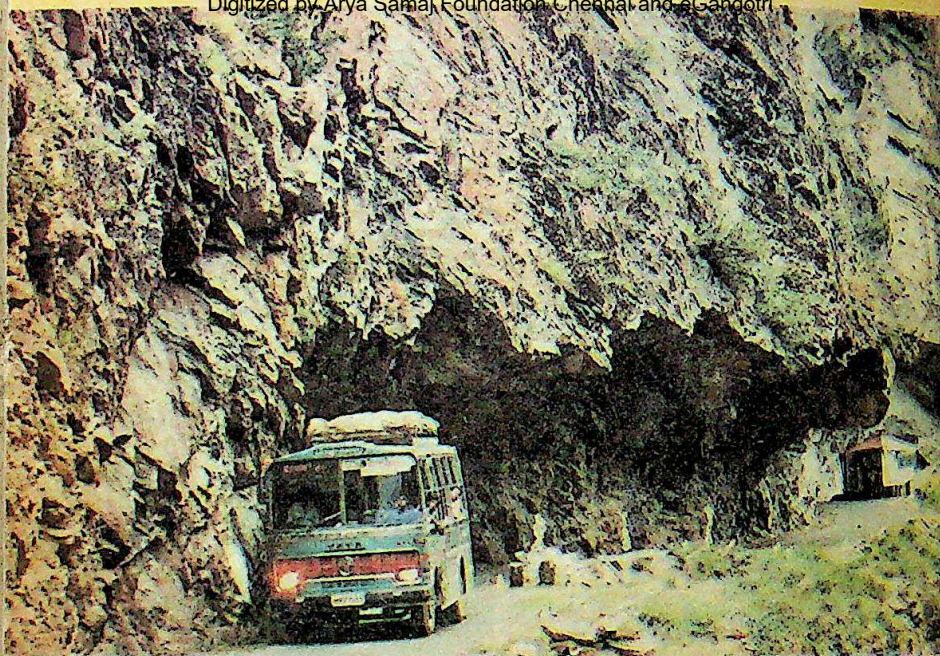
दुर्गम पहाड़ियों के मध्य से गुजरती एक पर्यटन बस

वर्ष केवल दो 'पैकेज टूअर' ही चलाए गए. इन पैकेज टूअर के नाम हैं 'किन्नौर, लाहौल स्थित पैकेज टूअर. इस में प्रति व्यक्ति तीन हजार रुपए ले कर उन्हें आवास तथा जलपान सुविधा भी परिवहन के साथ ही निगम प्रदान करता है. 23 और 18 के दो समूहों में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से पर्यटक इस में आए, जिन में कलकत्ता, मद्रास, महाराष्ट्र, दिल्ली और अन्य महानगर शामिल थे. आरामदेय कोच के साथ एक जीप सदैव जलपान व्यवस्था हेतु आगे रहती थी जो रात्रि विश्राम के स्थान पर ग्रुप के पहुंचने तक आवास तथा जलपान व्यवस्था कर लिया करती. यह दोनों पैकेज 13 सितंबर को शिमला से मनाली और 26 को मनाली से काजा होते हुए शिमला के लिए आयोजित किए गए. एक तरफ का रास्ता 1100 किलोमीटर लंबा रहता है.

इस पैकेज टूअर का जनजातीय क्षेत्र में प्रारंभिक चरण किन्नौर था. इसलिए इस आलेख में इसी जिले के कुछ ऐसे स्थानों को लिया गया है जो न केवल पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं बल्कि ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से भी प्रसिद्ध हैं.

किन्नौर :

वह प्रदेश जो कालांतर में वाणासुर के अधीन राजपूर्ण के नाम से रहा, जिसे कनौर कनावर, कुनावर, कनोरिंग इत्यादि नामों से अलंकृत किया जाता रहा, चीनी के नाम से जो 1980 तक महासु जिले की एक तहसील रही, लामा लोग जिसे खुनू प्रदेश के नाम से भी पुकारते रहे, कुरपा और माऊत नाम से भी जाना जाता रहा, पौराणिक नदी शोणित अर्थात वर्तमान सतलज जिस के बीचोबीच बह रही है बास्पा व स्पिति नदियां जिस की धरा को सींचती हुई विशालकाय पर्वतों की गोद में बहती हुई एक अदभुत परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं. जिस की चोटियां 750 मीटर से बढ़तीबढ़ती 7000 मीटर तक की ऊंचाई तक चली गई हैं, जिस भूमि पर अनेक पापों से छुटकारा पाने की दृष्टि से किन्नरकैलाश जैसी धार्मिक परिक्रमा का आयोजन किया जाता है

और जिस नैसर्गिक छटा से परिपूर्ण क्षेत्र को महान पंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने किन्नर प्रदेश से अलंकृत किया वही आज हिमाचल प्रदेश का सीमावर्ती जिला किन्नौर है जो पूर्ण जिले के रूप में 1 मई 1960 को अस्तित्व में आया.

किन्नौर के पूर्व में तिब्बत, दक्षिण में उत्तर प्रदेश का उत्तरकाशी क्षेत्र और शिमला जिला की रोहड़ू तहसील, दक्षिणपश्चिम में शिमला पश्चिम में कुल्लू तथा लाहुल स्पिति के क्षेत्र हैं. इस जिले के अधिकतर गांव सतलज बास्पा और स्पिति नदियों के आरपार हैं. लोग अपनी संस्कृति, कथित देवी देवताओं के प्रति समर्पित हैं. यही कारण है. बाहर से आया कोई भी अनजान अतिथि भी इन के लिए आदरणीय है. यहां के लोक नृत्य लोगों की जिंदगी के जैसे साथी बन गए हैं. मेले और त्योहारों में पुरानी परंपराओं और संस्कृति की झलक देखने को मिलती है.

इस दुर्गम सीमावर्ती क्षेत्र के भ्रमण के लिए सब से पहले आप को 'इनर लाइन परमिट' की आवश्यकता पड़ेगी. जो शिमला स्थित जिलाधीश कार्यालय में आवेदन दे कर प्राप्त किया जा सकता है. इस के लिए आवेदन के साथ अपने दो छाया चित्र और पुलिस सत्यापन आवश्यक है.

'इनर लाइन परमिट' प्राप्त करने के बाद आप किन्नौर के लिए अपनी यात्रा प्रारंभ कर सकते हैं. पहले दिन का सफर शिमला से सराहन तक का है. इस 184 किलोमीटर के सफर में आप को कई सुंदर पर्यटन स्थल देखने को मिलेंगे जिन में 13 किलोमीटर चलने के बाद वाएल्डफ्लावर हाल, कुफरी, नागुंऔर फिर कई सुंदर छोटेछोटे गांवों के बीच से प्रकृति के मनोहारी दृश्यों को देखते हुए आप दोपहर के भोजन तक नरकंडा पहुंच सकते हैं. यहां जलपान तथा आवासीय सुविधा उपलब्ध है.

दोपहर का भोजन लेने के बाद आप राः हिंदुस्तानतिब्बत मार्ग पर चलना प्रारंभ करते हुए कुमारसैन, सैंज से होते हुए नीरथ में पहुंचते हैं. सैंज से सतलज नदी आप के चारों ओर बहती हुई साथ हो जाती है. नीरथ गांव जहां अपने सूर्य मंदिर के लिए प्रसिद्ध है वहीं 5 किलोमीटर आगे चल कर दत्त नगर दत्तात्रेय मंदिर के लिए. आगे चल कर रामपुर का ऐतिहासिक कस्बा यहां निर्मित काष्ठकला के प्रख्यात महल के लिए प्रसिद्ध है. रामपुर से पूर्व और रामपुर बाजार के मध्य निगम की ओर से चलाए जा रहे कैफेटेरिया और कैंटीन में जलपान सुविधाएं उपलब्ध हैं.

रामपुर के बाद फिर कई गांवों के बीचोबीच हो कर ज्यूरी पहुंचते हैं जहां से सराहन के लिए संपर्क मार्ग है. यह रास्ता 17 कि.मी. का है जिसे तय करने के बाद आप ऐतिहासिक और प्रसिद्ध धार्मिक स्थल सराहन में प्रवेश करते हैं. सराहन को प्राचीन शोणितपुर के लिए पहचाना जाता है. यहां स्थित सदियों पुराना भीमाकाली मंदिर अति प्रसिद्ध है. यह मंदिर शक्तिपीठ के साथसाथ उत्कृष्ट नक्काशी के लिए भी प्रख्यात है. लोक निर्माण विभाग के सरकिट हाउस के अतिरिक्त निगम के परिसर में भी आवासीय व्यवस्था है. पुराने होटल के साथ हाल ही में होटल श्रीखंड पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है.

रात्रि विश्राम करने के उपरांत सुबह

किन्नर के लोकनृत्य लोगों की जिंदगी के जैसे साथी बन गए हैं.

चंडिका का मंदिर : मेले के अवसर पर वहां किन्नर प्रदेश की पुरानी संस्कृति देखने को मिलती है.

दूसरे दिन की यात्रा वापस ज्यूरी से आप को हिंदुस्तानतिब्बत मार्ग पर ले आती है. लगभग आठ किलोमीटर बाद चोरा गांव की सीमा से किन्नौर घाटी प्रारंभ हो जाती है. चोरा से कुछ दूरी पर त्रांडा ढांक हैं जहां बाईं ओर स्थित त्रांडा देवी का मंदिर आप को कुछ पल रुकने के लिए विवश कर देता है. यह मंदिर सतलुज नदी के ऊपर ढांक पर स्थित है. सड़क त्रांडा ढांक को काट कर बनाई गई है जो स्वयं में एक आश्चर्य है.

निगुलसरी होते हुए भावानगर आता है जिस से कुछ आगे सतलज के पार विशाल संजय गांधी विद्युत परियोजना है. यह एशिया में अपनी तरह की पूर्णतया भूमिगत परियोजना है. भावानगर के ऊपर सड़क के दाहिनी ओर लगभग 18 कि.मी. दूर सुंगरा गांव है. यहां का मेसुर मंदिर अति प्राचीन है. यह मंदिर लकड़ी की उत्कृष्ट नक्काशी का अभूतपूर्व नमूना है. भावानगर के कुछ दूर आगे से निचार गांव के लिए संपर्क मार्ग चला गया है. यह रास्ता 9 कि.मी. का है. यहां प्राचीन उषा मंदिर स्थित है. अब मुख्य मार्ग से आप आगे की यात्रा आरंभ कर सकते हैं. यदि भावा की प्रसिद्ध विद्युत परियोजना देखना चाहते हों तो यहीं से सतलज नदी पर पुल पार कर के वहां पहुंच सकते हैं.

वांगतू से पुल पार करने के बाद सतलज आप के दाईं ओर आ जाती है. आगे चल कर टापरी और तदोपरांत करछम आता है. करछम में लोक निर्माण विभाग का विश्रामगृह है. यहीं से सांगला में स्थित विश्रामगृह का भी आरक्षण होता है. यहां से मुख्य मार्ग छोड़ने के साथ आप सतलज का सान्निध्य छोड़ कर संपर्क मार्ग से बास्पा नदी के छोर से सांगला के लिए चढ़ना प्रारंभ कर देते हैं. धीरेधीरे सड़क की कैंचियां आप को घुमाती हुई बहुत ऊपर ले जाती हैं और आप काफी ऊंचाई पर ढांक को काट कर निर्मित की गई सड़क से चलते हुए ढांक पर निर्मित देवी मंदिर पहुंच जाते हैं. यहां ठहर कर सांगला के लिए यात्रा पुनः प्रारंभ हो जाती है और 18 किलोमीटर बाद आप एक अत्यंत सुंदरघाटी के मध्य होते हैं, जिसे छोटा कशमीर कह कर भी पुकारा जाता है. लोक निर्माण विभाग के विश्रामगृह के साथ यहां वन विभाग तथा विद्युत परिषद का नवनिर्मित विश्रामगृह भी स्थित है.
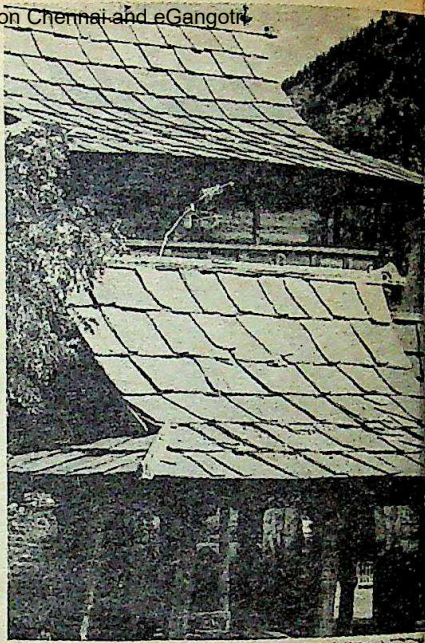
सांगला किन्नौर का सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं रमणीक स्थल है. समुद्रतल से यह स्थान लगभग 2621 मीटर ऊंचाई पर स्थित है. यहां के गांव बास्पा नदी के दोनों ओर बास्पा घाटी की गोद में बसे हैं. सांगला गांव बेरिंग नाग मंदिर तथा बौद्धमठ के लिए प्रसिद्ध है. सांगला के कुछ ऊपर चढ़ कर कामरू एक ऐतिहासिक गांव के रूप में प्रसिद्ध है. यहां का कामरू किला अति प्राचीन है जो कभी रामपुर रियासत के राजाओं के राज्याभिषेक के लिए प्रसिद्ध था. अब इस पांच मंजिले किले में कामाख्या का वास है. गांव के मध्य बौद्धमठ और बद्रीनाथ का प्राचीन मंदिर भी हैं.
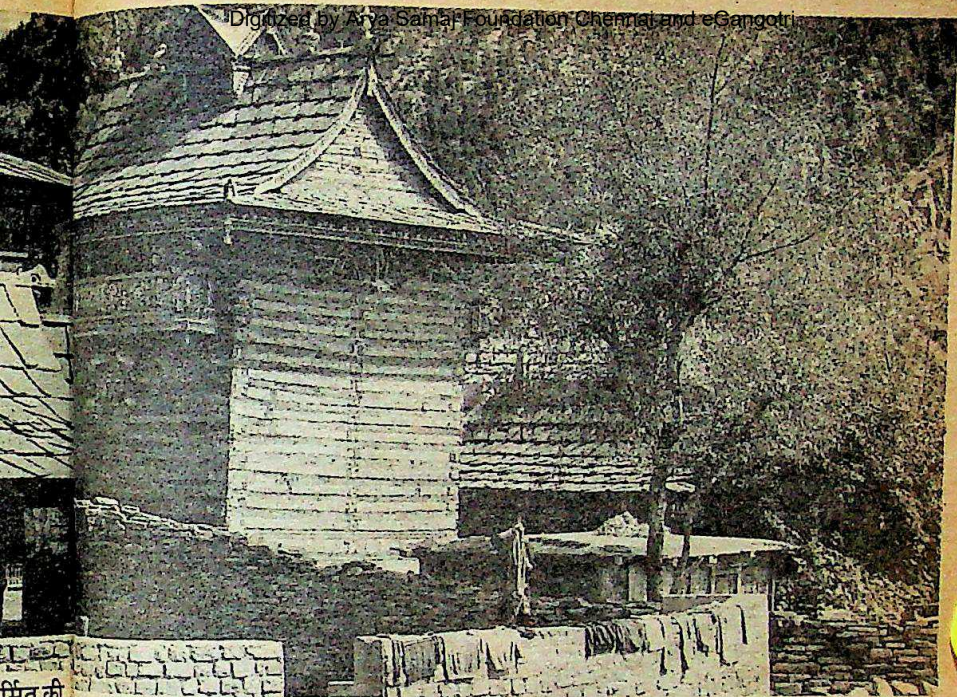
इस घाटी में लोग फफरा, ओगला और बथ्थू की फसलें उगाते हैं. सेब, चूली और नेमी यहां के मुख्य फल हैं. फसलें जब यौवन में होती हैं तो उन के रंगबिरंगे फूलों से सजे खेत इस घाटी को स्वर्ग से भी सुंदर बना देते हैं. सांगला में मछलियों का फार्म भी दर्शनीय है. सांगला में हिमाचल पर्यटन विकास निगम का पर्यटक भवन भी निर्माणाधीन है.

सांगला गांव से कुछ दूरी पर सेफरन फार्म है. सेफरन अर्थात केसर और काला जीरा इस फार्म के प्रमुख उत्पादन हैं. सांगला से 14 किलोमीटर दूर आगे 3050 मीटर की ऊंचाई पर रकछम गांव है. यहां भी लोक निर्माण विभाग का विश्रामगृह है. यहीं से 12 किलोमीटर आगे छितकुल गांव है जो सांगला का आखिरी गांव है. यहां भी विश्रामगृह है. इस गांव में माथी का प्राचीन मंदिर है. यहां का रमणीक परिदृश्य देखते ही बनता है.

सांगला से तीसरे दिन की यात्रा रिकांगपिओ और कल्पा तक की है. 12 किलोमीटर वापस सतलुज और बास्पा नदियों के संगम पर स्थित करछम पहुंच कर पुनः मुख्य मार्ग लेना पड़ता है. करछम से आप सापनी और किल्बा गांव भी जा सकते हैं.

सापनी करछम से लगभग 12 किलोमीटर दूर है जहां पोरी नाग का मंदिर स्थित है. मुख्य मार्ग पर चलते हुए आप सतलुज के साथसाथ चिलगोजों के जंगलों के मध्य से पवारी पहुंचते हैं. पवारी से कुछ दूर आगे काशंग वाटर फाल है जहां पुल पर खड़े हो कर आप इस में बनतेबिगड़ते इंद्रधनुष को देख सकते हैं.

रिकांगपिओ के लिए बाईं ओर से ऊपर संपर्क मार्ग है और इसी रास्ते कई सुंदर गांवों को देखते हुए रिकांगपिओ पहुंच जाते हैं. करछम से पवारी 12 किलोमीटर और पवारी से पिओ 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. रिकांगपिओ पहुंच कर आप इसी दिन कल्पा का भ्रमण भी कर सकते हैं. कल्पा यहां से 13 किलोमीटर ऊपर लगभग 2900 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यहां पहुंच कर आप को चारों तरफ के रमणीय परिदृश्य देखने को मिलेंगे. बिलकुल सामने सतलुज के पार किन्नर कैलाश पर्वत श्रृंखलाएं हैं.

हिमाचल की महिलाएं : प्रकृति की ही तरह छलकपट से कोसों दूर.

किन्नर कैलाश शिव जी का वास स्थल माना जाता है. अगस्त मास में हजारों यात्री इस की परिक्रमा करते हैं. यहां 6050 मीटर की ऊंचाई पर शिवलिंग है जो दिन में सात रंग बदलता है. इस के साथ पारवती कुंड भी है लेकिन यहां जाना संभव नहीं है. ये चोटियां वर्ष भर बर्फ से ढकी रहती हैं.

पिओ और कल्पा के मध्य तेलंगी और कोठी गांव हैं. तेलंगी सड़क के नीचे की ओर बसा है. यहां का बौद्ध मंदिर अति प्रसिद्ध है. पिओ बाजार से कोठी गांव एक किलोमीटर ऊपर है जहां पैदल पहुंचा जा सकता है. यह गांव प्राचीन स्थित चंडिका मंदिर में रखी मूर्ति सोने के आभूषणों से लदी रहती है जो मंदिर की लोकप्रियता की चुगली करती है. इसी मंदिर के साथ पांडव मंदिर है और इस मंदिर के सामने ही एक प्राचीन तालाब. इस तालाब में विचित्र रंगीन मछलियां सदैव कल्लोल करती रहती हैं. किंवदंती के अनुसार यह मछलियां पांडवों ने अपने वनवास के दौरान यहां पाली थीं.

रिकांगपिओ में लोक निर्माण विभाग के दो विश्रामगृह भवन बने हैं. इन में आवास की बेहतरीन व्यवस्था है. यहां भी निगम का पर्यटक भवन बन रहा है. यहां रात्रि विश्राम के बाद आप चौथे दिन का भ्रमण पूह तक कर सकते हैं. यहां आवास के लिए लोक निर्माण विभाग का विश्रामगृह है. पिओ से पवारी पहुंच कर मुख्यमार्ग से पूह के रास्ते सब से पहले 18 किलोमीटर बाद अकपा गांव आता है और आगे 6 किलोमीटर बाद मोरंग. मोरंग प्रसिद्ध ओरमिग, बौद्ध मठ और पांडवों द्वारा निर्मित किले के कारण विख्यात है. लोगों की मान्यता है कि पांडव इस गांव में बहुत अधिक समय तक रहे हैं.

यहां से 8 किलोमीटर बाद स्पीलो गांव आता है. यहां से ऊपर बाईं ओर कानम गांव के लिए संपर्क मार्ग गया है. यह गांव बौद्ध मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है यहां कई बौद्ध मठ और कथित स्थानीय मुख्य देवता का प्राचीन मंदिर है. ये बौद्ध मठ अति प्राचीन माने जाते हैं. मुख्य मार्ग से यह गांव आठ किलोमीटर की दूरी पर श्रीमती ढांक के ऊपर स्थित हैं. श्रीमती ढांक स्पीलो से आगे हैं जहां दुर्गा और शिव के मंदिर सड़क के बाईं ओर निर्मित हैं.

स्पीलो से 24 किलोमीटर की दूरी पर पूह गांव हिंदुस्तानतिब्बत मार्ग के दोनों ओर बसा है. सड़क के ऊपर पहाड़ी की गोद में लोक निर्माण विभाग का विश्रामगृह है जहां आप रात्रि विश्राम कर सकते हैं. यहां प्राचीन बौद्ध मंदिरों के साथ हिंदुओं के मंदिर भी दर्शनीय हैं. डबला इस गांव का भी मुख्य देवता है. पांचवें दिन आप के लिए किन्नौर जिले के भ्रमण का अंतिम दिन होगा. पूह से आप समदू तक भ्रमण कर सकते हैं. यहां भी विश्रामगृह है. पूह से समदू 59 किलोमीटर है. रास्ते में अब 11 किलोमीटर बाद कई छोटेछोटे गांव के बीच चलते हुए खाब जगह है जहां एक ओर से सतलज और दूसरी ओर से स्पिति नदी आ कर मिलती है. सतलज का साथ छोड़ कर अब स्पिति आप की इस यात्रा

संगिनी बन जाती है. अब पहले जैसी रियाली नहीं है. सुनसान पहाड़ों के बीच से आप 'का' गांव की ओर चढ़ रहे हैं. खाब 837 मीटर की ऊंचाई पर है और 10 किलोमीटर बाद आप 'का' पहुंचते हैं जो 598 मीटर की ऊंचाई पर छोटा सा गांव है. के बाद 12 किलोमीटर की दूरी पर थंग है. इस स्थान से नाको के लिए 7 लोमीटर का संपर्क मार्ग है.

नाको समुद्रतल से 3662 मीटर की चाई पर बसा अति सुंदर गांव है जिस के य सुंदर लंबी नाको झील है. ऐसा लगता है प्रकृति ने इस गांव का निर्माण अपने हाथों तराश कर किया हो. यह झील सर्दियों में तरह जम जाती है जिस पर दूरदूर से आ लोग 'आइस स्केटिंग' करते हैं. ये गांव रंग घाटी में बसे हैं. नाको के बाद वापस थंग आ कर फिर मुख्य मार्ग से मालिंग और तदोपरांत 3058 मीटर की ऊंचाई बसे चागों गांव पहुंचा जाता है. यंगथंग से गांव 10 किलोमीटर है. इस के बाद छोटा गांव शलखर है और 13 किलोमीटर बाद ओर का आखिरी स्थान समदू है जो समुद्रतल 232 मीटर की ऊंचाई पर बाउंडरी लाइन ढ़ किलोमीटर पीछे रह जाता है. कोरिक से 16 किलोमीटर दूर है. यहां पर तीय तिब्बत सीमा पुलिस बल और चल प्रदेश पुलिस के दफ्तर हैं. आप यहां स्वीकृति ले कर सीमा तक का भ्रमण कर ते हैं. समदू में दाईं तरफ पारिचू नदी जो से आ रही है और बाईं तरफ से स्पिति का म दर्शनीय है. इस के बाद स्पिति घाटी भ हो जाती है.

इस तरह पांच दिनों की इस यात्रा में किन्नौर जिले के अनेक प्राचीन और द्ध धार्मिक पर्यटक स्थलों और गांवों का न कर सकते हैं. यह यात्रा इस जनजातीय की प्राचीन संस्कृति को जहां अत्यंत य से देखने का सुअवसर प्रदान करती है यहां के भोलेभाले लोगों के रहनसहन उन की परंपराओं से भी आप वाकिफ हैं.

इस के अतिरिक्त पहाड़ों के साथसाथ रह कर आप नदियों के संगीत से आनंदित हो कर प्राकृतिक दृश्यों का भरपूर आनंद ले सकते हैं. ●

तभी तो आप

● हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंगरेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंगरेजी का बोलते हैं.

● अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंगरेजी अक्षरों में करते हैं.
बी.पी.शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एस.गुप्ता, आई.एम.दास...

● अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण पत्र अंगरेजी, में छपवाते हैं, चाहे आप और आप के आमंत्रित अंगरेजी के चार वाक्य भी सही रूप से न लिख सकें और न समझ सकें.

● अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंगरेजी में करते हैं.

अंगरेजी साहबों की भाषा है आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

रंगकर्म की समृद्ध परंपरा से हमारे अतीत के इतिहास का जो पृष्ठ भराभरा सा और प्रेरणादायक महसूस होता है, वह आज इस क्षेत्र में फैली हुई गंदी राजनीति और अवसरवादिता के भंवरजाल में डूब कर धुंधला और मलीन स्वरूप धारण करता चला जा रहा है. शायद यही कारण है कि अच्छी प्रतिभाओं के बावजूद हम विश्व स्तरीय रंगमंचीय प्रतिस्पर्द्धा में बौने से महसूस होने लगे हैं. रंगमंच में व्याप्त समस्याओं के बारे में यहां प्रस्तुत कुछ महिला रंगकर्मियों के विचार इसी अवधारणा की पुष्टि करते हैं.

लेख ● आरिफ रिजवी

रंगमंचीय अभिनेत्रियां समस्याएं व कठिनाइयां
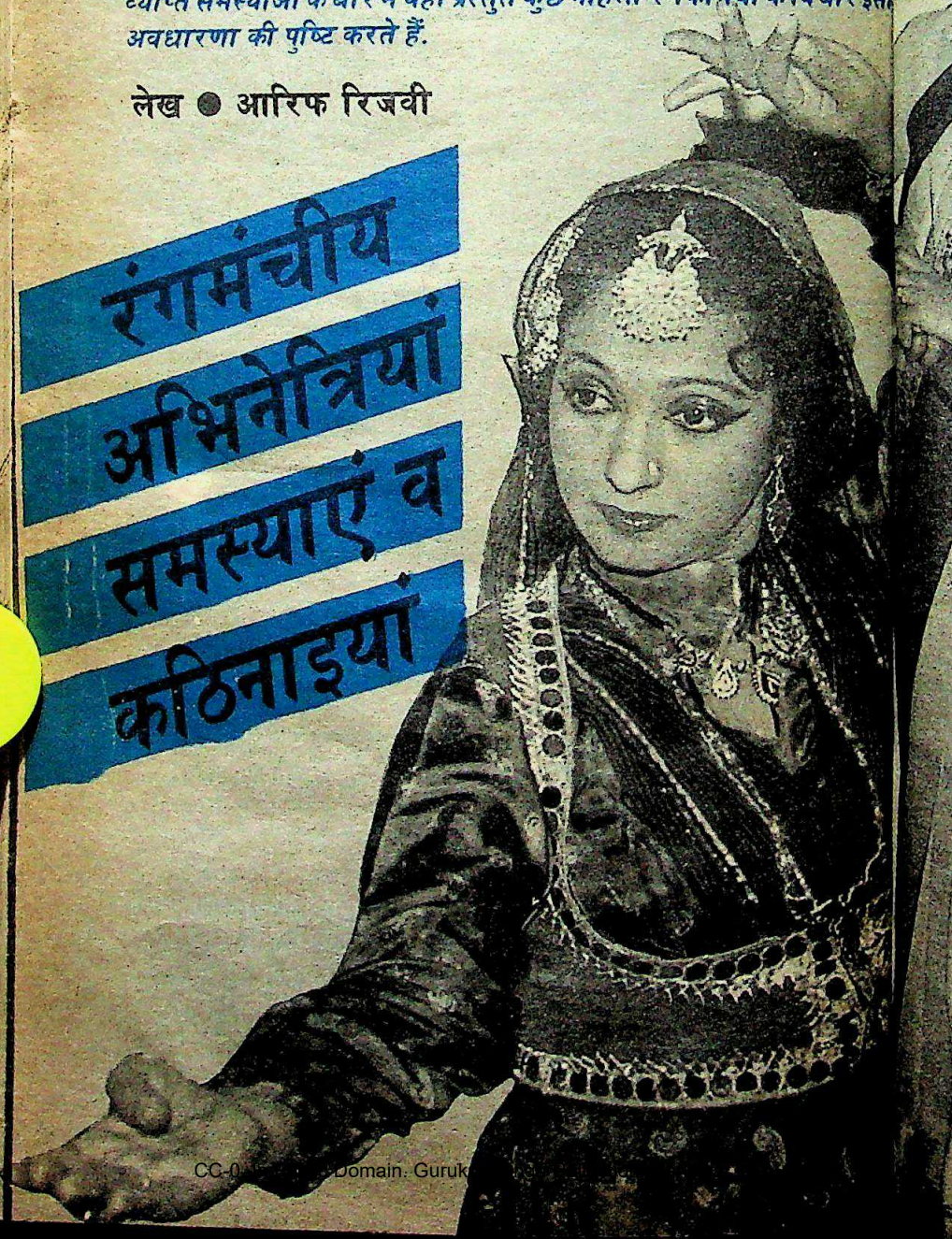
कैसी विडंबना है कि भरत मुनि के नाट्य शास्त्र के संसार में रंगकर्म की सुगंध फैली और आज जबकि संसार के अनेक देश रंगमंचीय गतिविधियों में शीर्षस्थ स्थान पर पहुंच चुके हैं, रंगकर्म की उद्गम स्थली भारत देश में रंगकर्म सिसकियां ले रहा है. महाराष्ट्र, बंगाल व गुजरात के रंगकर्म को यदि कुछ समय के लिए अलग कर लें तो भारत की रंगमंचीय प्रक्रिया शिथिल व जर्जर स्थिति में दृष्टिगोचर होती है.

इस जर्जरता के कारणों में प्रमुखत: नाट्य संस्थाओं की बढ़ती संख्या व कुछ प्रतिस्थापित संस्थाओं के कुछ व्यक्तियों का एक छत्र राज्य सामने आता है. आज रंगकर्म से संबद्ध प्रत्येक कलाकार, पार्श्व कलाकार अपनीअपनी समस्याओं से स्वयं ही जूझ रहे हैं. 25 व 30 वर्षों से रंगकर्म से संबंधित कलाकार को जब रंगमंच के मठाधीश अपनी राजनीति के चक्रव्यूह में फंसा लेते हैं तो कलाकार के सामने रंग के इस उपहार को आंखों में आंसुओं के बीच रंगकर्म को तिलांजलि दे कर स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रहता. रंगमंच के मठाधीश एक ओर अपने को रंगकर्म के लिए समर्पित मानते हैं तो दूसरी ओर दूरदर्शनीय धारावाहिकों की ओर ललचाई दृष्टि से देखते रहते हैं. अवसर मिलते ही अपनी समर्पित भावना एक ओर रख कर व्यस्त हो जाते हैं इन व्यावसायिक कार्यक्रमों में.

'विश्व रंगमंच दिवस' प्रत्येक वर्ष 27 मार्च को मनाया जाता है. अनेक गोष्ठियां परिचर्चाएं होती हैं. समाचार पत्रों में विशेष लेख छपते हैं, इसी प्रकार के अनेक आयोजन भी होते हैं. परंतु 27 मार्च के बाद फिर वही शोषण की प्रक्रिया संपूर्ण वर्ष भर चलती रहती है. इन परिस्थितियों के तहत क्या औचित्य है इस प्रकार के आयोजनों का?

नृत्यांगना तथा अभिनेत्री आरती सक्सेना और धारावाहिक 'मुझको क्या देखे दर्पण' की नई अभिनेत्री करुणा अपनीअपनी बात.
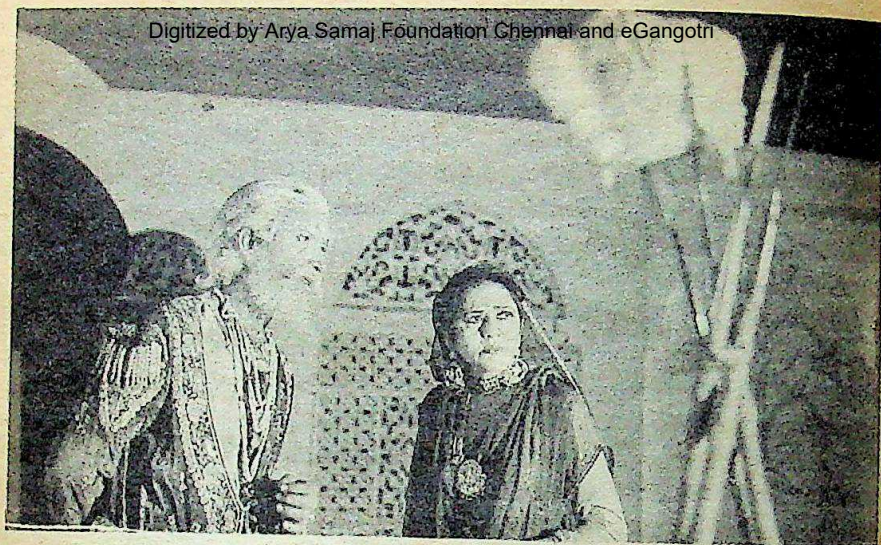
विलायत जाफरी द्वारा निर्देशित नाटक 'शाहजहां' के एक दृश्य में नीरजा गुप्ता व प्रयाग वर्मा : रंगकर्म से दिल टूटा.

इन्हीं समस्याओं व कठिनाइयों के विषय में रंगमंच से जुड़ी कुछ अभिनेत्रियों के विचार जब यह प्रतिनिधि जानने गया तो पता चला कि एक ज्वाला धधक रही है इन अनुभवी प्रतिभावान कलाकारों के हृदयों में.

रंगमंच की वरिष्ठ अभिनेत्री नीरजा गुप्ता ने बताया कि ''18 वर्ष तक रंगकर्म को पूजा, समझा है मैं ने. अनेक कठिनाइयों को सह कर भी मैं ने रंगमंच से अलग होने का कभी विचार नहीं किया था, परंतु इतने वर्षों के परिश्रम के पश्चात रंगमंच में व्याप्त भ्रष्टाचार, असमानताएं व अन्याय ने मुझे रंगकर्म से फिलहाल अलग होने पर मजबूर ही कर दिया.

''उत्तर प्रदेश के रंगकर्म को आज रंगकर्म से जुड़े कुछ लोगों ने अपनी स्वार्थपरता से दयनीय स्थिति में पहुंचा दिया है. स्वयं तो वे दूरदर्शन, आकाशवाणी द्वारा अपने संबंधों के दम पर कार्यक्रम प्राप्त कर लेते हैं तथा सहयोगी कलाकारों को वे पूर्ण रूप से शोषित करते रहते हैं.

''मैं 1964 से आकाशवाणी तथा 1985 से दूरदर्शन पर सक्रिय हूं. भविष्य में लेखन व पेंटिंग के क्षेत्र से जुड़ने का विचार है. कम से कम अपने कार्य को साकार रूप में देख तो सकूंगी.

''रंगमंच के मठाधीशों के अन्याय को यदि इसी प्रकार सहा जाता रहा तो रंगकर्म, विशेषकर उत्तर प्रदेश का, कभी सार्थक रंगकर्म न बन पाएगा.''

अभिनेत्री नाहीद जमाल के अनुभव कुछ दूसरी ही तरह के रहे, ''मैं ने 1979 से नाटकों में भाग लेना शुरू किया. घर वालों को शुरू से ही एतराज रहा. अनेक प्रकार की बातें सुननी पड़तीं, लेकिन तब से आज तक मैं अपने को रंगमंच से अलग न कर सकी. समस्याएं अनेक रहीं जैसे महीनों नाटक का पूर्वाभ्यास, शाम 6 बजे जाना और रात 10 बजें लौटना. कभी 7 बजे लोग आते हैं तो कभी समय से आ जाते हैं. सब से ज्यादा कठिनाई तो हम महिला कलाकारों को ही होती है. रात में लौटने पर महल्ले के लोग अलगअलग अर्थ लगाते हैं. अब मैं किसकिस को समझाऊं कि मैं नाटकों में काम करती हूं.

''मुसलिम संस्कृति के कारण मेरा उच्चारण उर्दू, हिंदी, अंगरेजी भाषाओं में
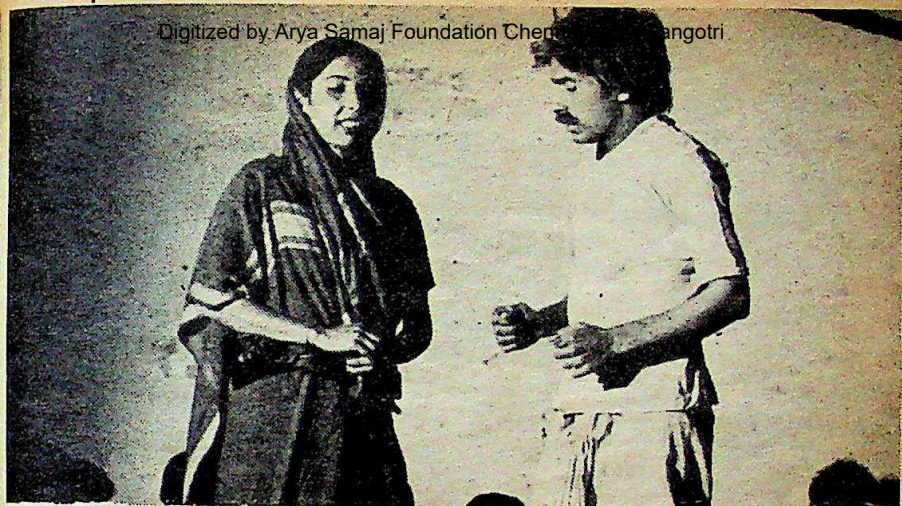
नाटक 'लोककथा' में जितेंद्र के साथ अभिनेत्री नाहीद जमाल : सब के अलगअलग अर्थ.

लगभग ठीक है. परंतु कुछ निर्देशक यह सोच कर कि मुसलिम महिला होने के कारण मैं हिंदी के संवाद नहीं बोल पाऊंगी, हमें अपने नाटक में अवसर नहीं देते जबकि यह पूर्णतया निराधार तथ्य है. हम जितनी भी मेहनत करें परंतु बड़े लोगों की कूटनीति के कारण हम सदा ही उपेक्षित किए जाते हैं."

और जब प्रतिनिधि नृत्य से अभिनय की ओर मुड़ी कलाकार आशा सक्सेना के पास पहुंचा तो वहां भी कुछ उत्तेजक विचारों का सामना करना पड़ा, "चलिए, कम से कम किसी को तो हम कलाकारों की समस्याएं व कठिनाइयां सुनने का वक्त मिला. वैसे तो यही होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थवश हम लोगों के पास आता है और महीनों रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) कराने के बाद एक दिन नाटक का शो करा दिया. उस के बाद उस की वह मधुरता, वह अपनापन, वह समीपता सब स्वप्न हो जाती है. महीना भर रिकशा से गए और हमें भाड़े के रूप में सौ दो सौ रुपए दे कर यह कह कर टाल दिया जाता है कि आप के सहयोग से ही तो हम इस नाटक का मंचन कर सके.

"मूलरूप से मैं कत्थक कलाकार हूं परंतु जब राजनीति बढ़ती गई तो यहां पर गजानन जागीरदार द्वारा स्थापित 'फिल्म एंड टेलीविजन संस्थान' से अभिनय में प्रशिक्षण प्राप्त किया. यह सोच कर कि अभिनय में राजनीति कम होगी. परंतु अब ज्ञात हुआ कि कला के सभी क्षेत्रों को स्थापित लोगों द्वारा निरंतर दिशाहीन करने की प्रक्रिया चल रही है. दूरदर्शन, आकाशवाणी कार्यक्रमों को अब मैं प्राथमिकता देती हूं. कब तक रंगमंच के इन राजनीतिज्ञों के मध्य स्वयं का शोषण कराती रहूं?"

रंगमंच, दूरदर्शन, आकाशवाणी और ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के लिए मशहूर कृष्णा जाफरी से जब मैं मिला तो ज्ञात हुआ, समस्याओं को अनुभव कर के उन्हें सहने से अच्छा यह है कि हम उस का विकल्प ढूंढ़ें. कृष्णा ने बताया, "देखिए, आज के इस व्यस्त युग में प्रत्येक क्षेत्र में समस्याएं हैं. हम रंगमंच की समस्याओं को ही प्रमुखता क्यों दें? मैं ने 1967 से आकाशवाणी व बाद में दूरदर्शन कार्यक्रमों में भाग लिया. 1972 से रंगमंच से जुड़ी अधिकतर कार्य मैं ने ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रमों में ही किया, साथ ही रंगमंच पर भी सक्रिय रही. रंगमंच पर सब से
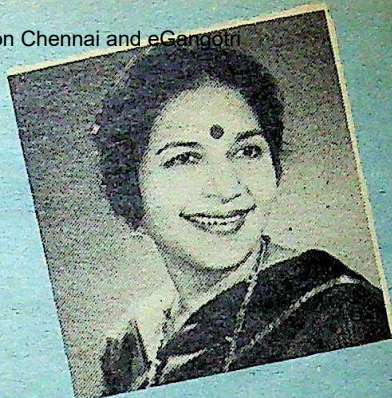
↑रंगमंच, दूरदर्शन व आकाशवाणी से जुड़ी अभिनेत्री नीरजा गुप्ता : "उत्तर प्रदेश के रंगकर्म को आज रंगकर्म से जुड़े कुछ लोगों ने अपनी स्वार्थपरता से दयनीय स्थिति में पहुंचा दिया है."

←अभिनेत्री गायिका कृष्णा जाफरी "रंगमंच पर सभी कलाकारों में एकता की भावना का होना भी आवश्यक है."

बड़ी समस्या हम महिला कलाकारों को अनियमित पूर्वाभ्यास से होती है, जिस में कुछ कलाकार तो समय से आते हैं, कुछ अपनेअपने समय से आते हैं जिन के कारण रात में देर तक पूर्वाभ्यास होता रहता है. घर में बच्चे अपने को काफी अकेला महसूस करते हैं तथा पूरे परिवार को केवल एक महिला के कारण समस्याओं से जूझना पड़ता है. रंगमंच पर सभी कलाकारों में एकता की भावना का होना भी आवश्यक है. विशेषकर कार्यरत महिला कलाकारों के लिए दिन भर आफिस के बाद रंगमंच के लिए समय निकालना काफी मुशकिल होता है. इन समस्याओं के बाद भी मुझे रंगमंच से प्रेम है और मैं अच्छे निर्देशक व अच्छी भूमिका होने पर रंगमंच से सदा जुड़ी रहूंगी."

सच ही तो है, मानिए तो समस्याएं हैं अन्यथा कोई समस्या नहीं. वरिष्ठ अभिनेत्रियों के बाद जब मैं रंगमंच व दूरदर्शन की नई अभिनेत्री करुणा से मिला तो कुछ अलग ही अनुभवों का सामना करना पड़ा. करुणा ने कुछ ही दिन पूर्व लखनऊ दूरदर्शन द्वारा निर्माणाधीन धारावाहिक 'मुखड़ा क्या देखे दर्पण में' में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अभिनीत की है.

करुणा के अनुसार, "देखिए, अभी तो मैं अभिनय के क्षेत्र में नई ही हूं. इसलिए समस्याओं और कठिनाइयों का फिलहाल तो सामना नहीं करना पड़ा. मेरे विचार से यदि हम सहयोगी प्रवृत्ति के हैं तो दूसरे कलाकारों का भी पूर्णरूप से सहयोग हमें प्राप्त होगा. यदि हम दूसरे कलाकारों के लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे तो हमें भी समस्याओं से जूझना पड़ेगा."

"रंगमंच पर अभिनय करने से पढ़ाई पर प्रभाव तो पड़ता ही है, क्योंकि हम जिस चरित्र को मंच पर अभिनीत कर रहे होते हैं उसे प्रतिदिन के पूर्वाभ्यास के कारण अपने अस्तित्व में अनुभव करने लगते हैं, जिस से पढ़ाई में मन लगना कम हो जाता है. पूर्वाभ्यास की अधिकता महिला कलाकारों की सब से बड़ी कठिनाई है." ●

इलाज में छिपा रोग

आज के वैज्ञानिक युग में सुख की चाह में ही दुख की आह है. मनुष्य ने जब भी प्रकृति के प्रतिकूल आचरण करने की चेष्टा की, तभी उसे मुंह की खानी पड़ी. उदाहरणार्थ मनुष्य ने महिलाओं को गर्भवती बन जाने के झंझट से छुटकारा दिलाने के लिए गर्भनिरोधक गोलियों का आविष्कार किया.

परिणामस्वरूप ब्रिटेन में किए गए व्यापक सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ है कि जो महिलाएं 36 वर्ष से कम आयु की हैं एवं कम से कम चार वर्ष से इन गोलियों का सेवन कर रही हैं, उन में अन्य महिलाओं की तुलना में स्तन कैंसर होने की संभावना काफी अधिक होती है.

*

गुमराह करने वाला इतिहास

भारत में पढ़ाई जाने वाली किताबें शिक्षा की दृष्टि से कम दोषपूर्ण नहीं हैं. भाषा, वर्तनी और व्याकरण संबंधी त्रुटियां तो प्रायः सभी पुस्तकों में देखी जा सकती हैं, किंतु तथ्यात्मक भूलें भी कम खतरनाक नहीं हैं.

तमिल स्कूल की एक पुस्तक 'हमारे द्वीप' भी ऐसी ही एक पुस्तक है. इस के लेखक हैं एक राजकीय महाविद्यालय के प्राध्यापक. इस पुस्तक में अबरडीन की लड़ाई में कैदी दूधनाथ तिवारी को आदिवासियों का नेता बता कर द्वीपों के इतिहास के साथ मजाक किया गया है. यही नहीं, इस के साथ 'अडंमानी होम' तथा युद्ध की तिथि का भी गलत उल्लेख है.

अबरडीन स्कूल के एक अध्यापक के.पी.पी.के. नायडू ने द्वीपों के शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों को पत्र लिख कर पुस्तक का पृष्ठ बदलने की सलाह दी है.

*

धूम्रपान का पीढ़ीगत असर

धूम्रपान करना आप के अपने स्वास्थ्य के लिए ही नहीं आप की संतानों के लिए भी घातक हो सकता है. इस तथ्य का पता उस समय चला जब न्यूयार्क की 31 वर्षीया एलिस के फेफड़ों में कैंसर हो गया. वह पूर्णतः स्वस्थ और धूम्रपान से कोसों दूर थी. मगर एक दिन थूक के साथ खून निकलने पर चिकित्सकों को कैंसर का संदेह हुआ.

परीक्षण के बाद पता चला कि एलिस के फेफड़े में जो कैंसर है, वह सिगरेट पीने वालों को ही होता है. एलिस से पूछताछ और परीक्षणों से चिकित्सकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि यह कैंसर उस के धूम्रपान के आदी मातापिता की देन है.

—विश्वमित्र, कलकत्ता

त्रिपाठी
कला निर्देशक
फिल्मों की

फिल्म 'नेक परवीन' के सेट पर ताजमहल का सेट बनाते हुए सैयद दाऊद सैयद.

एक फिल्म को तैयार कर दर्शकों तक पहुंचाने से पहले का एक चरण होता है, दृश्यों का कथानक से सामंजस्य स्थापित कर उन का खूबसूरत चित्रण करना. निर्माता, निर्देशक व कलाकारों के अलावा और भी कई लोगों का योगदान और श्रम फिल्म को खूबसूरती और पूर्णता प्रदान करता है.

लेकिन दर्शक उन्हें परदे पर नहीं देख पाने के कारण उन से कम परिचित होते हैं. ऐसे लोगों में एक व्यक्ति होता है, 'बैक ग्राउंड पेंटर' यानी पृष्ठभूमि चित्रकार. यही व्यक्ति दृश्यकल्पना को सार्थकता प्रदान करता है. कला निर्देशक द्वारा बनाए गए सेट पर मांग के अनुसार माहौल पैदा करना, पृष्ठभूमि चित्रकार का काम है.

यदि पृष्ठभूमि चित्रकार और कला निर्देशक को सुंदर इमारत की नींव का पत्थर कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी. नींव के पत्थर की तरह कला निर्देशक और पृष्ठभूमि चित्रकार की तरफ भी किसी का ध्यान नहीं जाता. हां, 'फिलमफेयर' और गुजरात राज्य सरकार द्वारा दिए जा रहे पुरस्कारों में कुछ वर्षों से कला निर्देशकों को अवश्य न्याय मिलता रहा है.

सैयद दाऊद सैयद आज के व्यस्त और सर्वाधिक चर्चित कला निर्देशक हैं. बंगलोर के एक छोटे से गांव चकबालापुर में जन्मे 44 वर्षीय सैयद दाऊद सैयद की फिल्मों में काम करने की तमन्ना बचपन से ही थी. लेकिन फिल्मों में 'बैक ग्राउंड पेंटर' या 'कला

सैयद दाऊद सैयद एक ऐसे कलाकार का नाम है, जिस ने परदे के पीछे रह कर परदे पर चमकदमक बिखेरने वाली बहुतेरी फिल्मों में अपनी कला का उपयोग किया है और 25 साल का फिल्मी सफर पूरा कर के अपनी योग्यता का परिचय दे दिया है. संप्रति फिल्मों में कला निर्देशक के रूप में अपना योगदान देने वाले सैयद दाऊद की अपने और अपनी फिल्मों के बारे में क्या अवधारणा है?

निर्देशक' बनने के बारे में तो उन्होंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था.

1960 में सिर्फ 15 वर्ष की उम्र में वह बंबई चले गए. बंबई आने के बाद उन्हें आटेदाल का भाव मालूम पड़ा. दो वक्त की रोटी के लिए उन्हें होटलों में बैरे के रूप में काम करने से ले कर फुटपाथ पर केले तक बेचने पड़े. केले बेचने के चक्कर में एक दिन हवालात में भी बंद रहे.

फिल्मों से जुड़ने की दिलचस्प दास्तान बताते हुए सैयद कहते हैं, ''मैं अकसर रूपतारा स्टूडियो के बाहर फुटपाथ पर केले बेचता था. एक दिन स्टूडिओ में जाय मुखर्जी और सायरा बानो की एक फिल्म 'साज और आवाज' का मुहूर्त होने वाला था. मुहूर्त में दिलीप कुमार आने वाले थे, इसलिए स्टूडिओ की सफाई करने के लिए बाहर से मजदूर बुलवाए गए थे. मैं भी उन्हीं मजदूरों में शामिल हो गया था. उस दिन मुझे मजदूरी के रूप में दो रुपए मिले थे. यह 1964-65 की बात है.

''उस के बाद मैं ने स्टूडिओ में लगातार तीन वर्ष तक 45 रुपए प्रति माह पर नौकरी की. इसी बीच सेट पर 'डिजाइन पेपर' चिपकाने का काम सीखा. 1966 में प्रदर्शित ओ.पी. रल्हन की फिल्म 'फूल और पत्थर' में 'डिजाइन पेपर' चिपकाने का पूरा काम मैं ने ही किया था

''इसी दौरान मेरी मुलाकात मशहूर 'बैक ग्राउंड पेंटर' यूसुफ भाई से हुई. मैं ने उन से पृष्ठभूमि चित्रकला सीखी. मैं उन को अपना गुरु मानता हूं. धीरेधीरे मुझे भी फिल्में मिलने लगीं. मैं ने कई फिल्में बतौर 'बैक ग्राउंड पेंटर' कीं. इन दिनों तो कला निर्देशक के रूप में व्यस्त हूं. बहरहाल, आज मैं जो कुछ भी हूं यूसुफ भाई के कारण ही हूं.''

बतौर 'बैक ग्राउंड पेंटर' सैयद दाऊद सैयद अब तक लगभग 30 गुजराती और 25 हिंदी फिल्में कर चुके हैं, जिन में 'बैराग', 'देस परदेस', 'चोर मंडली', 'उल्फत', 'सुहाग', 'फिफ्टीफिफ्टी', 'खून का रिश्ता', 'गीता मेरा नाम', 'धड़कन', 'हादसा', 'राहुकेतु', 'कहानी किस्मत की', 'अब क्या होगा', 'जवानी दीवानी', 'नेकपरवीन', 'कातिलों के

संजय दत्त : सैयद दाऊद सैयद द्वारा बनाए गए 'अन्नदाता' के सेट पर.
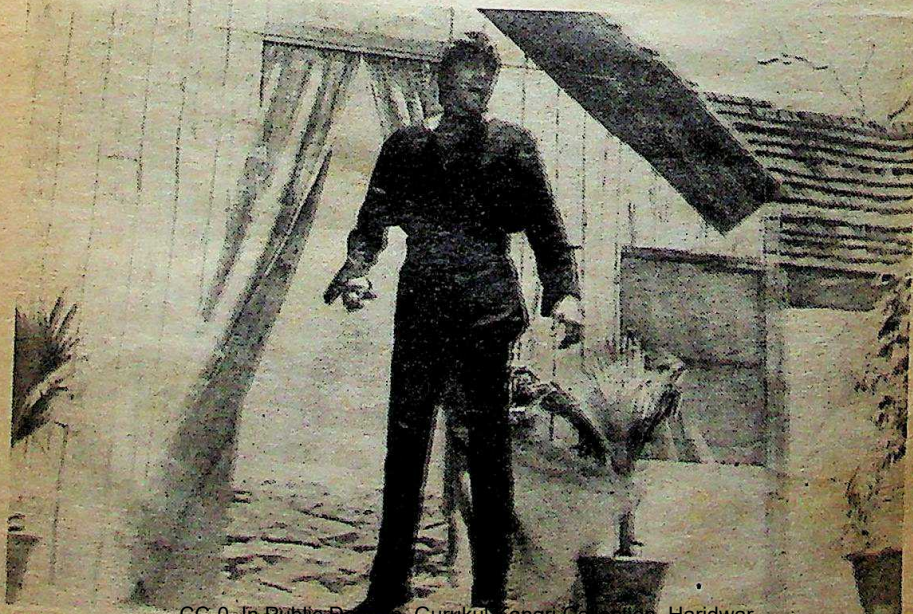
सैयद ...
आदर्मि...
करता ...

कातिल'...
हीरा प...
मे...
मा बिन...
ने बतौर...
की और...
गुजरात...
निर्देशक...
बतौर क...
'लव मै...
'जुल्म ...
हिंदी फि...
है. ये स...
दिनों ब...
'गरीब'...
आदि क...
कर रहे...
य...
भेंटवार्त्...
'...
चित्रका...
कुछ रो...

सैयद दाऊद सैयद : "मैं तो हमेशा हर आदमी को काम सिखाने की कोशिश करता हूं."

कातिल', 'बुलेट', 'दुश्मन दोस्त', 'लूटमार', 'हीरा पन्ना', 'इश्क इश्क इश्क' प्रमुख हैं.

मेहुल कुमार निर्देशित गुजराती फिल्म 'मा बिना सुनो संसार' से उन्होंने स्वतंत्र रूप से बतौर कला निदेशक कैरियर की शुरुआत की और पहली ही फिल्म के लिए उन्हें गुजरात राज्य सरकार का श्रेष्ठ कला निर्देशक का पुरस्कार मिला. तब से उन्होंने बतौर कला निर्देशक चारपांच गुजराती तथा 'लव मैरिज', 'छोटा आदमी', 'कर्मदाता', 'जुल्म को जला दूंगा', 'लश्कर' सहित कई हिंदी फिल्मों के परदों को खूबसूरत रंग दिया है. ये सभी फिल्में प्रदर्शित हो चुकी हैं. इन दिनों बतौर कला निर्देशक वह 'लाल परी', 'गरीब', 'तेजा', 'बहादुर', 'सुलगती सांसें' आदि कई हिंदी और दोतीन गुजराती फिल्में कर रहे हैं.

यहां प्रस्तुत हैं, सैयद दाऊद सैयद से भेंटवार्त्ता के कुछ अंशः

'बैक ग्राउंड पेंटर' यानी पृष्ठभूमि चित्रकार और कला निर्देशक के काम पर कुछ रोशनी डालेंगे?

कला निर्देशक सिर्फ दृश्य का खाका तैयार कर के लगा देता है. बाकी काम पृष्ठभूमि चित्रकार को उस खाके के आधार पर पूरा करना होता है. उस की कल्पना में रंग भरने पड़ते हैं. जब वह चित्रों के जरिए उस में 'माहौल' उभारता है तब वह सेट असली लगता है, एक कल्पना जीवित हो जाती है. इस तरह पृष्ठभूमि चित्रकार का काम कला निर्देशक से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है. आज जितने भी सफल कला निर्देशक हैं, वे किसी न किसी जमाने में 'बैक ग्राउंड पेंटर' रहे हैं.

आप ने प्रशिक्षण भी लिया होगा?

मेरे पास देव आनंद द्वारा दिया गया एक प्रमाणपत्र है. इस के अलावा मेरे पास कोई डिप्लोमा या डिगरी नहीं है. कला निर्देशन की डिगरी मेरे पास भले ही न हो, लेकिन मैं ने शातिदास और सुधेंदु राय के साथ बैक ग्राउंड पेंटिंग का काम करते हुए उन से प्रेरणा ली और उन को काम करते हुए देख कर बहुत कुछ सीखा.

आजकल स्टूडियो में सेट लगाने के बदले बंगले या फ्लैट में शूटिंग करने की प्रथा जोरों पर है. ऐसी अवस्था में कला निर्देशक की क्या आवश्यकता है?

कला निर्देशक और पृष्ठभूमि चित्रकार की जरूरत तो हमेशा रहती है. मैं एक उदाहरण से स्पष्ट करूंगा. फिल्म 'दोस्त दुश्मन' की बात है. कशमीर में शूटिंग हो रही थी. झील में पानी के ऊपर शिकारे का सेट था. वहां पर इमारतें नहीं हैं. दृश्य में इमारतों की जरूरत थी. ऐसी अवस्था में कला निर्देशक के रूप में इमारतों का ढांचा खड़ा करना पड़ा.

वैसे आप की बातों में भी सचाई है. बंगलों या फ्लैट के तैयार वातावरण में शूटिंग करने की प्रथा चलने से कला निर्देशकों का काम कम होता जा रहा है. इस से सैकड़ों मजदूर बेरोजगार हो रहे हैं. हमारे जैसे पुराने लोगों को तो थोड़ा बहुत महत्त्व और काम मिल जाता है. लेकिन नए लोगों को काफी परेशानी है. हमें बंगले या फ्लैट में दृश्य के

अनुसार बैठक बनाने का काम मिल जाता है. इस के अलावा अधिकतर गुजराती फिल्में ऐतिहासिक, धार्मिक और दंत कथाओं जैसे प्राचीन विषयों पर बनती हैं. इसलिए प्राचीन काल के मंदिर, गुफा वगैरह का सेट लगाने का काम मिलता ही है.

अधिकांश गुजराती फिल्मों में मद्रास में बनी हिंदी फिल्मों की नकल करते हुए सिर्फ गानों के लिए ही भव्य सेट लगाए जाते हैं?

आप की बात पूरी तरह सच नहीं है. हां, एकदो फिल्मों के साथ ऐसा भले ही हुआ हो. विषयवस्तु के अनुसार दृश्यों को असरदार बनाने के लिए भव्य और खर्चीले सेट गुजराती फिल्मों के लिए भी लगाए जाते हैं. अशोक पटेल की फिल्म 'लोही भीनी चूंदडी' के लिए साढ़े तीन लाख रुपए खर्च कर के शीशमहल का सेट लगाया गया. यह गुजराती फिल्मों के इतिहास में पहली बार हुआ था. इस सेट को देख कर लोगों ने इस की तुलना 'मुगले आजम' के शीशमहल के साथ की थी और मेरे कैरियर का यह सर्वश्रेष्ठ काम था.

कला निर्देशक के रूप में आप भी कुछ पृष्ठभूमि चित्रकारों से काम करवाते होंगे. उन के साथ आप का व्यवहार कैसा होता है?

मैं तो हमेशा हर आदमी को काम सिखाने की कोशिश करता हूं. वैसे आजकल अच्छे लोगों का अभाव है.

वैसे अधिकांश काम मैं स्वयं कर लेता हूं अथवा अपने गुरु यसुफ भाई से करवा लेता हूं.

जब किसी फिल्म के लिए सेट लगाना होता है तो उस की कल्पना कैसे करते हैं?

सब कुछ कल्पना पर ही आधारित है. निर्माता, निर्देशक और लेखक दृश्य की मांग समझा देता है. फिर मैं अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा एक अच्छा सा सेट तैयार करता हूं.

फिल्म 'बैराग' के समय की बात है. इस की शूटिंग राजकमल स्टूडियों में होने वाली थी. दिलीप कुमार ने मुझे बुला कर पूछा, "क्या आप कभी कशमीर या गुलमर्ग गए हैं?"

मैं ने कहा, "नहीं."

फिर उन्होंने गुलमर्ग में होने वाले फूलों के पौधों के बारे में बताया, जिस की पृष्ठभूमि में जरूरत थी. मैं ने उन की बताई हुई बातों के आधार पर कल्पना द्वारा एक घंटे में फूलों के पौधे बना दिए. दिलीप कुमार देख कर दंग रह गए और मुझे शाबाशी दी.

'छैला बाबू' में राजेश खन्ना का टैक्सी वाला गाना आप को याद होगा. उस सेट की पृष्ठभूमि में प्लाईवुड के छोटेछोटे टुकड़ों से मैं ने बहुत सी इमारतें दिखाई थीं. गाने के एक अंतरे में जुहू का जिक्र था. उस के लिए मैं ने पृष्ठभूमि में जुहू का समंदर बनाया और जिलेटिंग पेपर लगा कर बिजली का पंखा लगा दिया. हवा से जिलेटिंग पेपर हिलता तो ऐसा लगता जैसे समंदर के पानी में से लहरें उठ रही हों.

पशुओं के अंग इनसानों को

मनुष्य का हृदय या गुरदे खराब हो जाने पर उन की जगह किसी दूसरे व्यक्ति के अंग लगाए जाते हैं. लेकिन अब वह दिन दूर नहीं जब एक व्यक्ति को स्वस्थ करने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को शारीरिक रूप से कष्ट सहन नहीं करना पड़ेगा और प्रत्यारोपण के लिए पशुओं के अंगों का इस्तेमाल किया जाने लगेगा.

लंदन के अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार, इस नई विधि में पशु के अंग में मौजूद खून से वे रसायन हटा दिए जाते हैं जो मनुष्य के शरीर में प्रत्यारोपण के बाद हानिकारक सिद्ध होते हैं. सूअरों के हृदय की झिल्लियों का इस्तेमाल हृदय प्रत्यारोपण आपरेशनों में पहले से ही किया जा रहा है. इस नई विधि द्वारा सूअर के गुरदों का प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक किया जा चुका है.

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. : निर्देशक

स : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु.पा. : मुख्य पात्र

किशन कन्हैया : जुड़वां भाइयों या जुड़वां बहनों र अब तक कई फिल्में बन चुकी हैं. हर फिल्म की कहानी क जैसी ही होती है. पर इस रह की फिल्मों की पटकथा । फिल्म की सफलता सफलता की गारंटी होती । इस फिल्म की पटकथा क ढंग से लिखी गई है, तः फिल्म के सफल होने ो संभावना बढ़ती है.

फिल्म के गीत भी अच्छे हैं. अभिनय की दृष्टि से अनिल पूर कभी राजकपूर नजर आते हैं तो कभी देवानंद. ादर खान के हलकेफुलके संवाद केवल सड़क छाप र्शकों के लिए लिखे गए हैं. **नि.** : राकेश रोशन, **मु.पा.** : निल कपूर, माधुरी दीक्षित, शिल्पा शिरोडकर, बिंदू, मरीश पुरी, रंजीत, डा. श्रीराम लागू, दिलीप ताहिल ौर कादर खान **अ.**

इज्जतदार : इस फिल्म को देखने के बाद यही हसास होता है कि अगर निर्देशन व पटकथा कमजोर हो ो बड़े कलाकारों की भीड़ भी फिल्म की सफलता की ारंटी नहीं दे सकती. बिखरी पटकथा के कारण न केवल ात्र बिखरे नजर आते रहे बल्कि दिलीप कुमार जैसा मंजा कलाकार भी वह काम नहीं कर सका, जिस की दर्शकों को उम्मीद होती है. यद्यपि के. बापय्या की गणना अच्छे निर्देशकों में होती है, पर कुछ नया करने के प्रयास में वह अपनी साख भी गंवा बैठे. रघुबरन के रूप में दक्षिण भारत के एक और कलाकार ने हिंदी फिल्मों में प्रवेश किया है. मगर वह केवल आंखें ही झपकता रहा. **नि.** : के. बापय्या, मु.पा. : दिलीप कुमार, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, अनुपम खेर, शफी इनामदार, शक्ति कपूर, भारती, असरानी, स्वप्ना, टीना घई और रघुबरन. **अ.**

शानदार : इस फिल्म में कहानी नाम की कोई चीज नहीं है. बेतरतीब घटनाओं का सिलसिला जोड़ कर निर्देशक ने एक लंबी फिल्म बना डाली है. फिल्म में गरीबों द्वारा अमीरों को जी भर कर कोसा गया है. ठाकर के रूप में मिथुन चक्रवर्ती गला फाड़फाड़ कर चिल्लाता रहा है या फिर मारपीट करता रहा है. अंत में मारा जाता है. जूही चावला की भूमिका छोटी जरूर है पर उतने समय में वह फिल्म का आकर्षण बन गई है. **नि.** : विनोद दीवान, **मु.पा.** : मिथुन चक्रवर्ती, सुमित महगल, मीनाक्षी शेषाद्रि, जूही चावला, कादर खान, डैनी, मंदाकिनी व तनूजा. **अ.**

जीने दो : गांव की समस्या और गांव की पृष्ठभूमि पर फिल्म बनाने वाले निर्मातानिर्देशक बंबई की भागती जिंदगी में शायद यह जताने की कोशिश ही नहीं करते कि आज का गांव कैसा है, अगर उन्हें जानकारी होती तो किसानों पर साहूकारों के अत्याचार नहीं बल्कि बैंक द्वारा भ्रष्टाचार या सरकारी कर्मचारियों द्वारा शोषण पर फिल्म बनाते. 'जीने दो' की कहानी आजादी से भी दो दशक पहले की कहानी लगती है जबकि नायिकाओं का पहनावा आधुनिक. फिल्म की पटकथा सशक्त होने के कारण बोझिल नहीं हुई है. साथ ही नए निर्देशक ने सभी चालू मसालों को अपना कर फिल्म की गति को बनाए रखा है. **नि.** : राजेश सेठी **मु.पा.** : जैकी श्राफ, संजय दत्त, फरहा, सोनम, अमरीश पुरी, शक्ति कपूर, अनुपम खेर **अ.**

प्यार का कर्ज : प्यार का कर्ज औसत मसाला फिल्म है जिस में दो बड़े नायक और तीन बड़ी नायिकाएं हैं. पूरी फिल्म फ्लैश बैक में चलती है. ढेर सारे मसाले होने के बावजूद फिल्म दर्शकों को प्रभावित नहीं कर पाती फिल्म में दो गीत, थोड़ीबहुत कामेडी और आऊटडोर शूटिंग में अच्छी फोटोग्राफी के अलावा कुछ भी नहीं है. निर्देशन सामान्य है तथा संवाद चालू किस्म के. **नि.** : के. बापय्या **मु.पा.** : मिथुन चक्रवर्ती, मीनाक्षी शेषाद्रि, नीलम, सोनम, कादर खान, विनोद मेहरा, शक्तिकपूर व धर्मेंद्र (विशेष भूमिका में), **अ.**

बहूरानी : आज का दौर तेज गति से भागती फिल्मों का है. ऐसे में निर्माता निर्देशक ने पुरानी फिल्मों की तरह धीमी गति से 'बहूरानी' फिल्म बना कर दर्शकों को उबासी के अलावा कुछ नहीं दिया है.

फिल्म की कहानी गांव से शुरू होती है और शहर में समाप्त होती है. माधुरी (रेखा) गांव की पढ़ीलिखी लड़की है. उस की शादी शहर के एक अमीर लड़के अमित (राकेश रोशन) से होती है जो आधुनिक लड़की की चाह में शादी के तुरंत बाद रेखा को छोड़ देता है. बाद में माधुरी मालती बन कर शहर पहुंचती है और

अपने पति को प्रेम जाल में फंसाती है. मालती से जब अमित शादी का [illegible] है. बहू व बीवी की भूमिका के साथ रेखा ने न्याय किया है. **नि.** : मानिक चटर्जी **मु.पा.** : रेखा, राकेश रोशन, उत्पल दत्त, उषा किरण, राकेश बेदी, अरुणा ईरानी. **अ.**

बाप नंबरी बेटा दस नंबरी : पूरी फिल्म कादरखान पर टिकी है. जिस ने अपने लटकोंझटकों से दर्शकों को बांधे रखा है. फिल्म में कई प्रसंग ऐसे हैं, जिस से दर्शक हंसने से अपनेआप को रोक नहीं पाते. फिल्म में हास्य लाने के लिए चालू शब्दों के साथ कार्टून का भी सहारा लिया गया है. रमण (कादरखान) एक नंबरी धोखेबाज है. वह अपने लड़के प्रसाद (शक्ति कपूर) को बचपन से ही धोखाधड़ी में माहिर बनाता है. रमण अपनी बहन गायत्री (अंजना मुमताज) को पागल करार कर पागल खाने में डाल देता है तथा उस के बेटे रवि को ट्रेन में बैठा देता है. थोड़ी नाटकीयता के बाद अनिल नामक एक नौजवान रमण से गायत्री का हक मांगता है तो वह बौखला जाता है तथा उसे जान से मारने के लिए रवि का सहारा लेता है जो बस्ती का दादा है. रवि अनिल को मारने जाता है, जहां वह अपनी मां से मिलता है. रवि व अनिल दोनों मिल कर रमण व प्रसाद को कानून के हवाले कर देते हैं तथा गल्लू बादशाह के आतंक को समाप्त करते हैं. **नि.** : अमीज सजावल **मु.पा.** : जैकी श्राफ, फरहा, आदित्य पंचौली, साबिहा, अंजना मुमताज, असरानी, गुलशन ग्रोवर, शक्ति कपूर और क़ादर खान. **अ.** :

जहरीले : कहानी का आधार है बुराई पर अच्छाई की जीत. इसे दिखाने के लिए निर्देशक ने न केवल फिल्म को तेज गति दी है बल्कि फिल्म का समूचा तानाबाना पश्चिम की फिल्मों के तर्ज पर तैयार किया है. फिल्म की कहानी बासी है. एक हाथ से लाचार जीतेंद्र से इतनी मारपीट करवाई गई है तथा कुछ ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं जो हकीकत में संभव नहीं है. अभिनय की दृष्टि से केवल संजय दत्त का काम अच्छा रहा. **नि.** : ज्योति गोयल **मु.पा.** : जीतेंद्र, भानुप्रिया, संजय दत्त, चंकी पांडे, जूही चावला, विनीता, शफी इनामदार, शरत सक्सेना **अ.**

अग्निपथ : फिल्म की कहानी एक आदर्शवादी अध्यापक मास्टर दीनानाथ (आलोकनाथ) के बेटे विजय (अमिताभ) पर केंद्रित है. काया (डैनी) गांव के जमींदार के साथ मिल कर उस के मांबाप की हत्या कर देता है. विजय अकेला ही अपनी बहन दीक्षा (नीलम) को पालतापोसता है. वक्त बदलता है और विजय एक

माफिया गिरोह का सरगना बन जाता है. वह एकएक कर सभी से अपना बदला लेता है. अंत में खुद भी गोलियों से छलनी हो जाता है. विजय के साथ जंग में उस का साथ देने वाला मिथुन चक्रवर्ती दीक्षा से शादी कर लेता है. **नि.** : मुकुल आनंद **मु.पा.** : अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती, माधवी, नीलम, आलोकनाथ, रोहिणी हट्टंगड़ी, शक्ति कपूर व डैनी **अ**

वफा : जिस तरह की क़हानी पर यह फिल्म बनाई गई है उस तरह की कहानी पर टीवी का नाटक तो चल सकता है पर लंबाई की फिल्में नहीं. यही वजह है कि फिल्म की लंबाई को पूरा करने के लिए निर्देशक को फूहड़ हास्य का सहारा लेना पड़ा.

फिल्म की कहानी में राधिका (विजेता पंडित) शादी वाले दिन ही विधवा हो जाती है. काफी समय बाद राधिका पर गर्भावस्था के लक्षण प्रकट होते हैं. वह घबरा जाती है तथा सोचती है कि घर में रह रहे युवक शेखर (फारुखशेख) ने ही बेहोशी की दवा खिला कर उस की यह दशा बनाई है. खानदान की इज्जत बचाने के लिए वह शेखर से प्यार का नाटक करती है तथा चुपचाप विवाह कर लेती है. अंत में पता चलता है कि वह कभी गर्भवती थी ही नहीं. वह शेखर से सब कुछ भूलने के लिए कहती है, पर वह उस की बात नहीं मानता और राधिका मर जाती है तथा शेखर पागल हो जाता है. **नि.** : एस.एम. अब्बास **मु.पा.** : फारुख शेख, करण शाह, विजेयता पंडित, जगदीप, मुकरी आदि. **अ.**

रिहाई : इस फिल्म का उद्देश्य पैसा कमाना नहीं, बल्कि विवाहेत्तर संबंधों की नई व्याख्या करना है. फिल्म में यह साबित करने की कोशिश की गई है कि शारीरिक भूख नैसर्गिक है और यह पति के प्रति बेवफाई का कोई प्रमाण नहीं है. फिल्म की कहानी गुजरात के एक गांव की है, जहां अमरजी अपने पांचछः साथियों के साथ बंबई काम करने जाता है.

गांव में औरतें व बूढ़े खेतीबाड़ी करने के लिए रह जाते हैं. एक दिन गांव में मनसुख (नसीरुद्दीनशाह) नाम का एक युवक दुबई से वापस आता है, जो गांव की औरतों में चर्चित होता है. कुछ औरतों के साथ उस का शारीरिक संबंध होता है, जिस से वे गर्भवती होती हैं. अमरजी की पत्नी टकूबाई (हेमामालिनी) भी मनसुख के जाल में फंस कर गर्भवती हो जाती है. अमरजी जब बंबई से वापस आता है तो उसे पता चलता है कि उस की पत्नी के पेट में पराए पुरुष का बच्चा है. वह उसे स्वीकारने से मना करता है. अंत में गांव की महिलाएं एकजुट हो कर अपनेअपने पतियों को लताड़ती हैं. कुछ भाषणबाजी के बाद सभी पुरुष अपनीअपनी पत्नियों को माफ कर देते हैं. **नि.** : अरुणा राजे **मु.पा.** : विनोद खन्ना, हेमा मालिनी, नसीरुद्दीन शाह, नीना गुप्ता, रीमा लागू व इला अरुण. **अ.**

महासंग्राम : हिंसा पर आधारित फिल्म है. फिल्म की सब से बड़ी कमजोरी उस की कहानी है. एक तरफ लगता है कि फिल्म आपसी रंजिश पर आधारित है तो दूसरी ओर प्रेम कहानी भी समानांतर चलती है. गोदा (अमजद खान) व विश्वराज (किरन कुमार) तसकरों के गिरोह के मुखिया हैं. दोनों आपसी दुश्मनी को समाप्त करने के लिए अपने लड़केलड़कियों की शादी आपस में

करते हैं. पर गोदा की बेटी पूजा (शाहीन) अर्जुन (गोविंदा) से प्यार करती है. पूजा का खूंखार भाई अर्जुन को जान से मारने की योजना बनाता है. उधर अर्जुन के भाई विशाल (विनोद खन्ना) को जब यह पता चलता है कि उस का भाई मारा गया तो वह बदले की आग बुझाने शहर आता है.

विशाल बदला लेने के लिए सूरज के घर में घुस जाता है जहां सूरज व उस के आदमी उस को मारमार कर अधमरा कर देते हैं. माधुरी दीक्षित विशाल को बचाती है तथा अर्जुन के जिंदा होने की खबर देती है. अर्जुन व विशाल मिल कर बदला लेते हैं. जिस में सभी खलनायक मारे जाते हैं. **नि.** : मुकुल एस. आनंद **मु.पा.** : विनोद खन्ना, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, शाहीन, आदित्य पंचोली, सोनू वालिया, सुमित सहगल, अमजद खान व किरण कुमार. अ.

आवारगी : फिल्म की कहानी दो भागों में बटी है. पहले भाग में प्रेम का त्रिकोण है तो दूसरे भाग में गिरोह युद्ध. आजाद (अनिल कपूर) अनुपम खेर के गिरोह में काम करता है. वह मीना (मीनाक्षी शेषाद्रि) को कोठे से छुड़ाता है तथा उसे गायिका बनाने का प्रयास करता है. मीना को ले कर दूसरे गिरोह के सरगना भाऊ (परेश रावल) से आजाद की ठन जाती है. उधर मीना को गायक धीरेन (गोविंदा) से प्यार हो जाता है. अंत में मीना को बचाने के लिए आजाद भाऊ को मार देता है तथा मीना का हाथ धीरेन के हाथ में दे कर खुद भी मर जाता है. फिल्म का गीतसंगीत अच्छा है. **नि.** : महेश भट्ट, **मु.पा.** : अनिल कपूर, गोविंदा, मीनाक्षी शेषाद्रि, अनुपम खेर, परेश रावल, अवतार गिल व सतीश कौशिक. अ.

खतरनाक : इस फिल्म का निर्माता स्वयं मारधाड़ निर्देशक है, इसी लिए अपनी इस फिल्म में उस ने ज्यादा से ज्यादा मारधाड़ ही दिखाने की कोशिश की है. मारधाड़ के अलावा फिल्म में जो कुछ है, सब लचर है. फिल्म की कहानी एक आवारा लड़के सूरज (संजय दत्त) की कहानी है जो संगीता (फरहा) के लिए खूंखार अपराधियों से टकराता है तथा उन्हें समाप्त कर संगीता का हाथ थाम लेता है. फिल्म का निर्देशन बेकार है व संवादों में भी कोई दम नहीं है. **नि.** : भारत रंगाचारी **मु.पा.** : संजय दत्त, फरहा, अनिता राज, किरन कुमार, अनुपम खेर तथा गोविंदा (मेहमान कलाकार) अ.

तकदीर का तमाशा : सत्यदेव (जीतेंद्र) एक ईमानदार व्यक्ति है. एक तसकर शेषनाग (सदाशिव अमरापुरकर) के जुल्मों से तंग आ कर वह भी तसकर बन जाता है. सत्यदेव की पत्नी अपने दो बच्चों को ले कर घर छोड़ कर चली जाती है. दोनों बच्चों के बड़े होने के बाद उन में से एक पुलिस निरीक्षक सत्यप्रकाश बनता है तथा दूसरा गरीबों का मसीहा. देव तथा शेषनाग में टक्कर होती है. देवा तथा सत्य प्रकाश में टक्कर होती है. टक्कर में ही फिल्म समाप्त हो जाती है. अंत में परिवार के सभी सदस्य मिल जाते हैं. **नि.** : आनंद **मु.पा.** : जीतेंद्र, गोविंदा, आदित्य पंचोली, किमी काटकर, मौसमी चटर्जी, सदाशिव अमरापुरकर, सतीश कौशिक, गुलशन ग्रोवर, मंदाकिनी (मेहमान कलाकार). अ.

आग का गोला : फिल्म में सिवा नाटकीयता के और कुछ भी नहीं है. नाटकीयता भी कुछ ऐसी जो अविश्वसनीय लगे. राजा (प्रेम चोपड़ा) शंकर (सनी) को चोरी करने में माहिर बना कर अपने हाथ की कठपुतली बना लेता है पर अंत में शंकर न केवल खुद मर जाता है बल्कि राजा भी मारा जाता है. शंकर का बेटा बड़ा हो कर एक ईमानदार पुलिस इंस्पेक्टर बनता है. बारबार घटनाएं बदल कर निर्देशक ने अपनी अदूरदर्शिता का ही परिचय दिया है. अर्चना पूरनसिंह की उत्तेजक अदाएं भी टिकट खिड़की पर भीड़ नहीं जुटा सकी. **नि.** : डेविड धवन, **मु.पा.** : सनी देओल, डिंपल कपाड़िया, अर्चना पूरनसिंह, शक्ति कपूर, रजा मुराद. अ.

पाप का अंत : पुरानी कहानी पर मसालों से भरी एक फिल्म है. फिल्म की कहानी दो हिस्सों में बंटी है. पहले हिस्से में राजेश खन्ना है तो दूसरे हिस्से में गोविंदा व हेमा मालिनी हैं. पहले नायक की हत्या होती है, दूसरा नायक बदला लेता है और पाप का अंत करता है. फिल्म की रफ्तार तेज करने के लिए तेजाब की तर्ज पर एक डिस्कोडांस भी है. अभिनय में केवल गोविंदा ही प्रभावित कर पाता है. राजेश खन्ना अब नायक की भूमिका में बेकार लगता है. हेमा मालिनी अधेड़ उम्र में मारधाड़ करते हुए ठीक नहीं लगती. **नि.** विजय रेड्डी, **मु.पा.** राजेश खन्ना, हेमा मालिनी, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, रंजीत, अनुपम खेर, महावीर शाह, तेज सप्रू. अ.

चालबाज : वर्षों पहले हेमा मालिनी की एक फिल्म आई थी, 'सीता और गीता', जिस में दो जुड़वां बहनों की कहानी थी. चालबाज बहुत कुछ उसी फिल्म की नकल है. इस फिल्म में श्रीदेवी की दोहरी भूमिका है. दोनों भूमिकाओं को श्रीदेवी ने बखूबी जिया है. श्रीदेवी ने फिल्म में जितना बढ़िया नृत्य किया है, उतना ही सुंदर हास्य अभिनय किया है. यद्यपि फिल्म में आगे क्या होगा, जैसी कोई बात नहीं है. फिर भी दर्शक अगर सीटों पर बैठा रहता है तो इस का सारा श्रेय निर्देशक को जाता है. **नि.** : पंकज पराशर, **मु.पा.** : श्रीदेवी, सनी देओल, रजनीकांत, शक्ति कपूर, अन्नू कपूर. म.

मैं ने प्यार किया : किशोर अवस्था के प्रेम पर आधारित इस फिल्म की कहानी में नवीनता नहीं है. फिर भी फिल्म का निर्देशन व पटकथा इतनी मंजी हुई है कि दर्शक पूरी फिल्म में बंधा रहता है. नाचगाने से भरपूर फिल्म में पार्श्व से 'आई लव यू' की गूंज दर्शकों को मदहोश कर देने वाली है. सलमान खान व भाग्यश्री अपनीअपनी भूमिकाओं के साथ न्याय करने में सफल रहे हैं. फिल्म की लोकप्रियता एक बार यही साबित कर रही है कि दर्शकों के लिए बड़े सितारों का नाम भीड़ जुटाने के लिए पर्याप्त नहीं है. **नि.** : सूरज बड़जात्या **मु.पा.** : सलमान खान, भाग्यश्री, राजीव वर्मा, आलोक नाथ, रीमा लागू, अजीत वाच्छानी, मोहनीश बहल तथा हरीश पटेल. म.

एक टिकटार्थी की व्यथा कथा

व्यंग्य • ब्रजेश कुलश्रेष्ठ

मास्टर रामसेवक को पता चल गया था कि उन का नाम सूची में मौजूद है. अतः वह मूंछों पर ताव देते हुए निश्चित हो कर घूम रहे थे. फिर पता नहीं कैसे यह खबर उड़ गई कि उन का नाम सूची में से कट गया है. वह चिंतित हो उठे. फिर दूसरे दिन खबर लगी कि वह खबर निराधार थी. अतः रामसेवक फिर निश्चिंत हो मूंछों को बल देने लगे.

पार्टी के दफ्तर में कई दिनों से 'वह काटा' और 'वह मारा' का माहौल चल रहा था. सो एक दिन फिर सनसनी फैल गई. एक अखबार वाले ने लिखा 'रामसेवक का पत्ता साफ.' दूसरे ने लिखा 'रामसेवक की पतंग कटी.' तीसरे ने लिखा
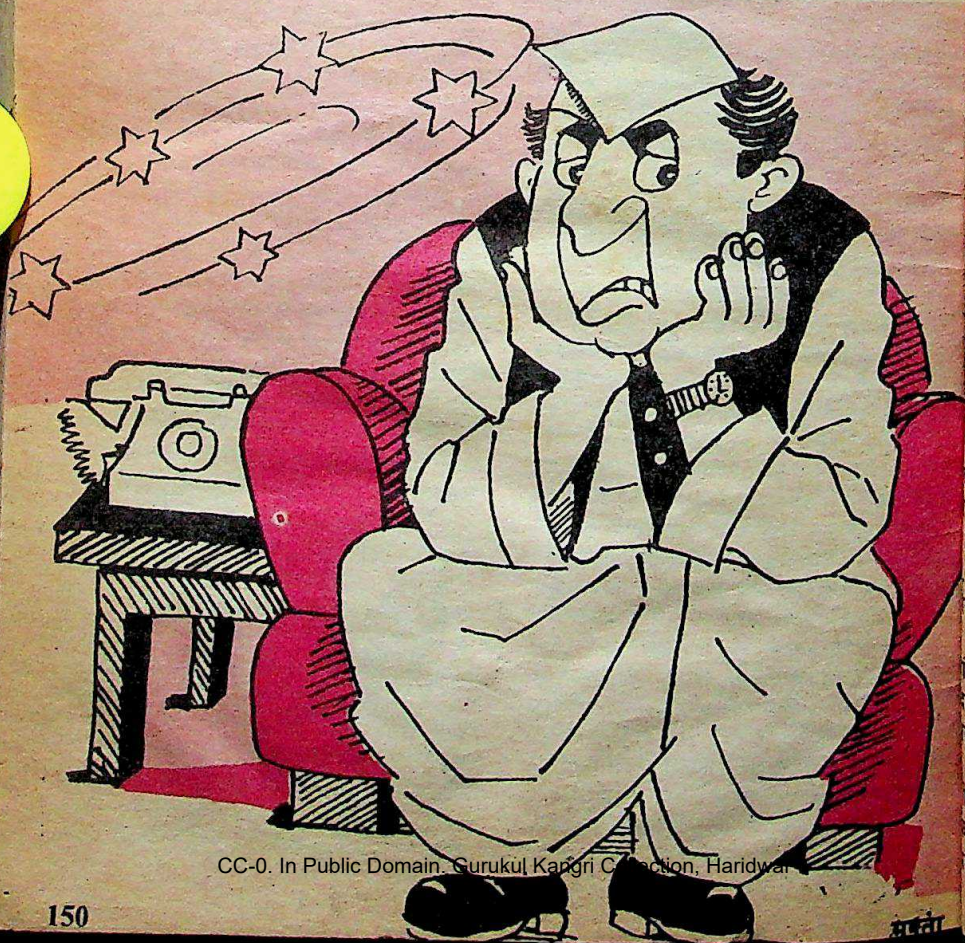
मास्टर रामसेवक ने अब तक देश सेवा करने में कोई कसर बाकी न रखी थी किंतु जब देश सेवा करने का लाइसेंस देने वाले चुनाव का सुहाना मौसम आया तो पता नहीं दल के ही किस दिलजले ने उन का टिकट काट कर उन्हें देश सेवा जैसे धर्म से अलग रखने का षडयंत्र रच दिया. आखिर ऐसा जुल्म किए लिए? क्या रामसेवक जी अब देश सेवा करने के काबिल नहीं रह गए थे?

फिर

ह काटा'
. सो एक
र वाले ने
ने लिखा
खा

मसेवक की स्थिति डांवाडोल' और चौथे ने खा 'भविष्य अंधकारमय.'

रामसेवक डगमगा उठे. उन्हें टिकट की नी चिंता नहीं थी जितनी कि देश सेवा की. कट नहीं मिला तो देश सेवा कैसे करेंगे? त्रिमंडल से अलग रह कर वह देश सेवा कर ही हीं सकते थे. देश सेवा के लिए उन का धायक बनना भी बहुत जरूरी था.

एक बार मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किए ए तो सारा मंत्रिमंडल अधर में उठा दिया था. यतोबा मचाने लगे, "मैं पार्टी से इस्तीफा दे गा." "मैं सारे मंत्रियों की पोल खोल दूंगा." र भी न जाने क्याक्या मंत्र पढ़ने लगे. हार कर ख्य मंत्री को उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल करना पड़ा. देश और पार्टी बदनाम होने से बच गई.

सो सूची में नाम आना तो बहुत जरूरी था.

एक शुभचिंतक बोला, "तुम्हारी जगह ाली लाल को टिकट दिया जा रहा है."

रामसेवक तमतमा उठे, "क्या उन का माग खराब हो गया है? टिकट और तस्कर ?"

"मैं ने तो यही सुना है." शुभचिंतक ला.

"ईंट से ईंट बजा दूंगा. मुझे समझ क्या ा है." रामसेवक की भृकुटी तन गई. मुद्रा रौद्र उठी. करंट की तरह झटके खाने लगे.

दूसरा बोला, "यहां तमतमाने से क्या होता राजधानी चले जाओ वहीं तुम्हारा कल्याण गा."

रामसेवक के हट्टेकट्टे अंगरक्षक की ांसपेशियां फड़कने लगीं. बोला, "एक बार हमें बाय देओ, कौन ससुर ने नाम काटा है. हम सुरे को अभी नापे लेते हैं."

दूसरा अंगरक्षक बोला, "ई दुष्ट ख्याली को हम जीतन नाहि देई. हम बूथ केप्चरिंग रवाय देंगे. बकसवे में एक कागद तक नहीं ड़ने देंगे."

रामसेवक का हौसला बुलंद हो गया. दूसरे दिन उन्होंने अपने छह दर्जन हिमायतियों के साथ राजधानी की ओर कूच किया. हिमायतियों में सरपंच, पंच, प्रधान, पटवारी, मास्टर, वैद्य, सिपाही, दादा सब मेल के स्वयंसेवक थे. इन पेशेवर जनतंत्रियों से चाहे अब 'जय' बुलवा लो और चाहे जब 'हायहाय' करवा लो. ये लोग भूख हड़ताल पर भी बैठने में माहिर थे. कुछ लोगों के पास लाठी, छुरी, बंदूक सब थे और वे उन सब का बखूबी इस्तेमाल करना भी जानते थे.

राजधानी में पहुंचते ही रामसेवक ने अपना ट्रक मुख्य मंत्री के बंगले के फाटक में अड़ा दिया 'मुख्य मंत्री हायहाय' और 'ख्याली लाल हायहाय' के नारे लगने लगे.

मुख्य मंत्री ने रामसेवक को बुला कर समझाया, "यहां हायहाय करने से कुछ नहीं होगा. पार्टी के अध्यक्ष के पास जाओ. सूची को अंतिम रूप अध्यक्ष ने ही दिया है."

ट्रक अध्यक्षजी के फाटक के पास अड़ गया. फिर वही 'हायहाय.' यहां तो ख्याली लाल का पुतला भी जला दिया गया.

मालूम हुआ कि अध्यक्षजी आजकल भूमिगत हैं. कितने दिन तक अंतर्ध्यान रहेंगे, किसी को कुछ पता नहीं था.

बस फिर क्या था, फुटपाथ पर तंबू तन गया. पार्टी के झंडे लग गए. राष्ट्रपिता का चित्र लटक गया और भजन होने लगे, 'सब को सन्मति दे भगवान...'

शाम तक चीखनेचिल्लाने से लोगों के गले बैठ गए. अतः रात होते ही ठर्रे की बोतलें खुलने लगीं. फिर किसी ने बकरा खाया तो किसी ने बटेर. किसी ने मुर्गा खाया तो किसी ने तीतर. इन मूक प्राणियों को ठिकाने लगाने के बाद सारे जनतंत्री एकदूसरे को औंधे पड़ कर खुद भी मूक हो गए.

सुबह होते ही सिर पर टोपियां फिर फिट हो गईं. राष्ट्रपिता के चित्र पर ताजा फूलों की

माला टंग गई. फिर वही 'हायहाय' फिर वही राम धुन. उधर रामसेवक ने चरखा कातते हुए फोटो खिंचवा लिया.

तीन दिन तक यही क्रम चलता रहा.

चौथे दिन कहीं जा कर अध्यक्षजी प्रकट हुए. प्रकट क्या हुए, प्रकट कराए गए.

रामसेवक को अंदर बुलाया गया. अध्यक्षजी बोले, ''क्यों, परेशान हो रहे हो. तुम्हारा नाम तो किसी ने नहीं काटा.''

सुनते ही रामसेवक गदगद हो उठे और तुरंत अध्यक्षजी के चरणों में लेट गए. बोले ''तभी तो हम कहें कि उस तस्कर का नाम सूची में कैसे आ गया. वह तो साहब, औरतों का धंधा भी करता है. अगर उसे टिकट मिल गया तो पार्टी की छवि खराब हो जाएगी. मैं ने तो लाखों रुपए पार्टी को दिलवाए हैं. मुझे कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है.''

अध्यक्षजी बोले, ''तो क्या हुआ. चंदा तो सभी मंत्रियों ने दिया है.''

''मैं ने तो आप की भी सेवा की है. आप के घर का सारा खर्च मैं ने उठाया है. कभी कोई अमरीका जा रहा है तो कभी कोई लंदन और कभी कोई होनोलूलू. सरकार, सारा खर्च तो मैं ही किया है.''

''ठीक है, ठीक है. अब एक काम कीजिए. पार्टी को चार लाख का चंदा दे दीजिए. पार्टी की माली हालत बहुत नाजुक चल रही है.''

रामसेवक ने सटाक से नोटों से भरा ब्रीफकेस सरका दिया. बोले, ''गिन लीजिए, पूरे पांच लाख हैं.''

ब्रीफकेस क्षण भर में अंतर्ध्यान हो गया.

अध्यक्षजी बाहर आए और अशांत भीड़ को शांत करते हुए बोले, ''हम ने किसी का नाम नहीं काटा. सारी खबरें गलत हैं.''
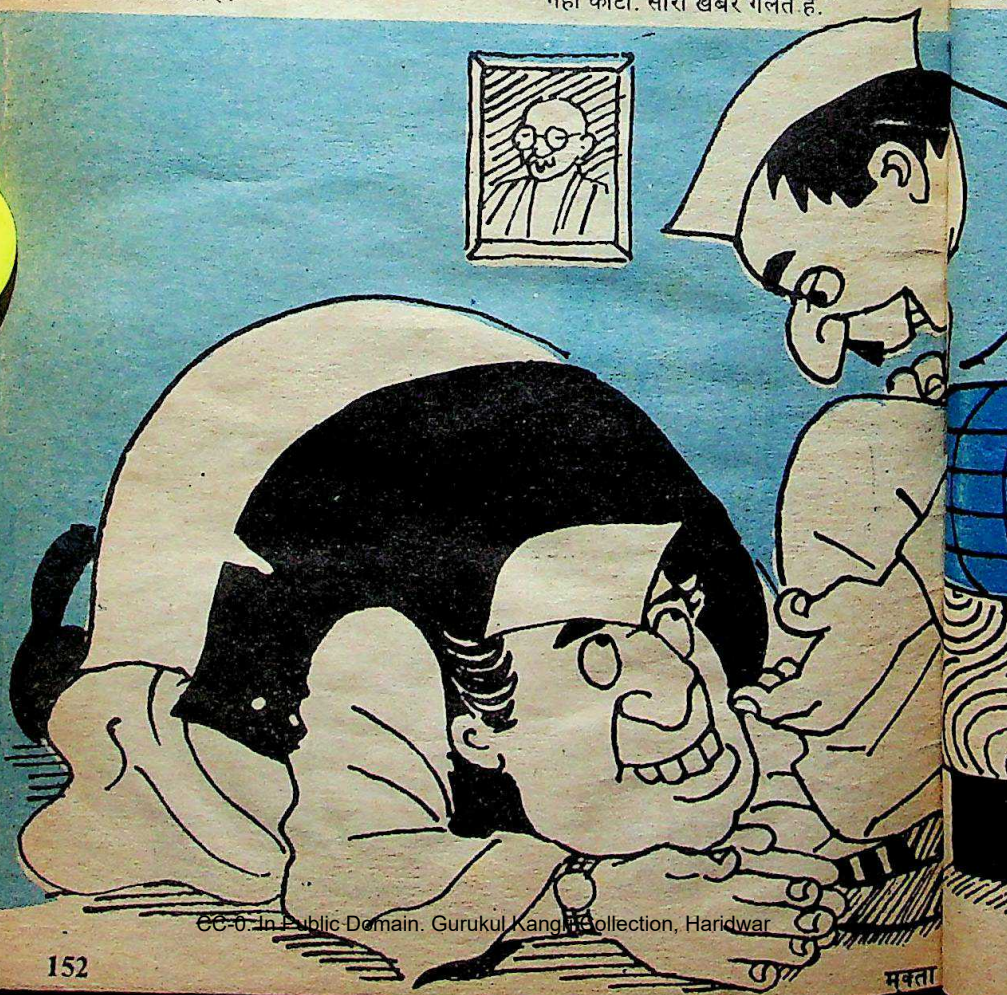
'हायहाय' करने वाली भीड़ 'जयजयकार' करने लगी.

रामसेवक ने सोचा पांच लाख में सौदा बुरा नहीं है. राजनीति के धंधे में पांच लाख के पचास लाख बनाए जा सकते हैं.

प्रांत की सीढ़ी तो पार हो गई है. अब दिल्ली वाली पार करनी है. उद्धार वहीं पर होना है. अतः रामसेवक अपने लठैतों को ले कर दिल्ली जा पहुंचे.

दिल्ली का हाल बड़ा अजीब था. जिसे देखो वही सूची के पीछे साए की तरह लगा हुआ था. सब बदहवास से भागेभागे फिर रहे थे. एक प्रदेश का मुख्य मंत्री घास पर औंधा पड़ा था. कल तक जो राज्यपाल था वह भी टांग पर टांग धरे आसमान को देख रहा था. कई मंत्री सड़क के किनारे फुटपाथ पर बैठेबैठे मूंगफली कुटक रहे थे. हवाई जहाज और कारों में दौड़ने वाले
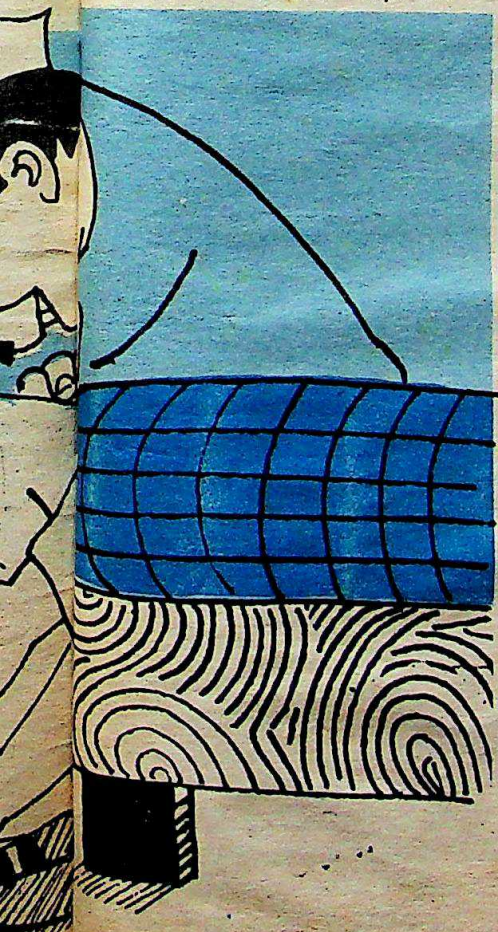
रिकशे और आटो में घूम रहे थे. बेचारे करें भी क्या, देश सेवा जो करनी है. पल्लेदारी तो करने से रहे. सरकारी नौकरी करने की उम्र भी निकल गई थी. चायचने की दुकान जब करते थे तब करते थे. अब आदतें भी तो खराब हो गई हैं. 'देश सेवा' के अलावा और धंधा कर भी क्या सकते थे.

रामसेवक सहमेसहमे लान का चक्कर काटने लगे. लगता जैसे उन की आंखें किसी को खोज रही हों. पर रामसेवक को 'कहिए क्या हुआ,' 'कैसी स्थिति चल रही है.' 'टिकट मिल गया क्या' इस के सिवाय और कुछ सुनाई ही नहीं पड़ रहा था. कभी कोई परिचित मिल जाता तो वह उन के कान में कुछ कह जाता और कभी वह किसी के कान में कुछ फूंक देते.

सारे देश सेवक संशय के घने जंगल में भटक रहे थे.

इतने में रामसेवक को एक परिचित मिल गए. बोले, ''कहिए क्या स्थिति चल रही है.'' जैसे पार्टी के दफ्तर में नहीं किसी शेयर बाजार में घूम रहे हों.

रामसेवक बोले, ''ठीक है. काफी ठीक है.'' फिर उन के कान में फुसफुसाए, ''पूरे पांच लाख दे कर आया हूं.''

पांच लाख का नाम सुनते ही वह ऐसे मुंह बिसूरने लगे जैसे रामसेवक पांच पैसे दे कर आए हों. बोले, ''यार यह भी कोई रकम है, मैं तो पूरे 20 लाख दे चुका हूं. फिर भी सूची में नाम नहीं आ पा रहा है. बड़ा कड़ा मुकाबला है.''

सुनते ही रामसेवक का कलेजा मुंह में अटक गया. आंखें फटी की फटी रह गईं, 'यहां तो एक से एक दानी महात्मा घूम रहे हैं.'

तभी रामसेवक को पार्टी का महा सचिव दिखाई दे गया. रामसेवक को उन्हीं की तलाश थी. वह तुरंत उधर लपके, ''सर... सर...''

रामसेवक को देखते ही महासचिव खिल उठा. वह भी रामसेवक की ही तलाश में था. बोला, ''यार कहां थे तुम इतने दिनों तक?''

रामसेवकजी का दिल धड़कने लगा. बोले, ''सर सब ठीक तो चल रहा है?''

''हां, ठीक ही है.''

सुनते ही रामसेवक गदगद हो उठे और अध्यक्षजी के चरणों में लेट गए.

"जरूर मिलेगा...सिर्फ इन को ही मिलेगा." महासचिव उस के गाल पर निशान बनाते हुए बोले.

"सूची में मेरा नाम तो है?"

"अभी सूची को अंतिम रूप कहां दिया गया है. लेकिन यार, तुम्हारी छवि तो बड़ी खराब है." उन्होंने झटका दिया.

"यह कैसे हो सकता है?"

"अध्यक्षजी के पास जो कंप्यूटर है न, उस में तुम्हारी सारी जन्मपत्री मौजूद है. चोरी, जारी, तस्करी. तुम ने तो उन की पत्नी के खिलाफ न जाने क्याक्या बक दिया. अध्यक्षजी के खिलाफ भी काफी कुछ कह डाला." महासचिव बोला.

रामसेवक बंदूक की गोली की तरह बोल पड़े, "गलत... एकदम गलत. किसी ने कंप्यूटर को गलत 'फीड' कर दिया है. लगता है जानबूझ कर मेरी छवि बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है."

"अरे यार, दाई से पेट छिपाने की कोशिश मत करो."

रामसेवक कुछ नरम पड़ गए. बोले, "मैं ने न् उन के खिलाफ कुछ कहा और न उन की पत्नी के. आप के चुनाव में मैं ने पूरे 10 लाख खर्च किए थे. क्या समझे. नाक चाहे यों पकड़ लो चाहे यों. पकड़ी तो नाक ही जानी है."

महासचिव होहो कर हंस उठे. बोले, "ठीक है, ठीक है. उबाल मत खाओ. जोश संभाल कर रखो... अच्छा, यह तो बताओ, रात का क्या प्रोग्राम है?"

रामसेवक संभल गए बोले, "मेरा क्या प्रोग्राम हो सकता है. 'हायात' में ठहरा हूं. प्रोग्राम तो आप आएंगे तब बनेगा."

"अकेले ही हो क्या?" उस ने आंख मारी.

"हम कभी अकेले होते हैं क्या! अकेले यह क्या झक मारनी है."

उन्होंने रामसेवक के कंधे पर अपना पूरा बोझ डाल दिया. रामसेवक निहाल हो गए और अपने को गौरवान्वित हुआ समझने लगे. पार्टी का महा सचिव जिस पर हाथ रख दे और उसे टिकट न मिले यह कैसे हो सकता है.

देश का भार उठाने वाले कंधे फिलहाल महासचिव का भार उठा रहे थे.

रात हुई. दोनों मधुशाला में जम गए. देश

की राजनीति प्याले पर थिरकने लगी. थोड़ी देर बाद देश के दो[illegible] देश का भार उठाने वालों का भार होटल के बैरे ने अपने कंधों पर उठाया और घसीटते हुए उन के कमरे में ले गया जहां एक महिला शुरू से ही बाट देख रही थी.

सुबह होते ही दोनों ने फिर देश सेवक की पोशाक पहन ली. महिला उन्हें देख कर मुसकराने लगी और फिर तुरंत महासचिव के गले में बांहें डाल कर इठलाती हुई बोली, ''इन्हें टिकट मिल जाएगा न?''

''जरूर मिलेगा... सिर्फ इन को ही मिलेगा.'' वह गाल पर निशान बनाते हुए बोले.

कुछ देर बाद दोनों देशभक्त कार में सवार हो देश सेवा के लिए निकल पड़े. दोनों चिंतित थे. पर दोनों की चिंताएं अलगअलग थीं. एक टिकट के लिए चिंतित थे तो दूसर चिंतित थे कि आज राज को किसे पटाया जाएगा.

राजनीति आदमी में कितना परिवर्तन ला देती है. वे दोनों जैसे थे वैसे दीख नहीं रहे थे और जैसे दीख रहे थे वैसे थे नहीं. उन के होने और दीखने में जमीन आसमान का अंतर था.

दूसरे दिन अखबार में छपा 'मास्टर रामसेवक का टिकट कटा.' पढ़ते ही एक अंगरक्षक खुशी के मारे उछल पड़ा, बोला, 'सरकार टिकट मिल गया. यह देखो अखबार में क्या निकला है.'

शेष तीनों अंगरक्षकों ने भी हां में हां मिलाई. बोले, ''हां सरकार. जैसे रेल का टिकट कटता है कि नहीं. टिकट कट गया. अब बैठो रेल में और आराम से सफर करो.''

रामसेवक न जाने क्या सोचने लगे. वह सीधे पार्टी के दफ्तर में पहुंचे और महासचिव को तलाशने लगे. शाम तक बैठे रहे पर वह दिखाई नहीं दिया. अब रात को तो वह क्यों दिखाई देगा?

रामसेवक निराश हो कर घर लौट आए. यहां के अखबार वालों ने तो साफ ही लिख दिया, ''रामसेवक का पत्ता साफ.''

अब खिसियानी बिल्ली खंभा नोचने में लगी हुई है. अंगरक्षक साथ छोड़ चुके हैं. पेशेवर जनतंत्रियों ने दूसरे उगते हुए नेता का दामन थाम लिया है. वे उस के चुनाव प्रसार में व्यस्त हो गए हैं.

पर रामसेवक ने हार नहीं मानी है. देश सेवा की हिलोरें रहरह कर उफान मार रही हैं. चुनाव तो लड़ना ही है. वह स्वतंत्र हो कर अपने बलबूते पर चुनाव लड़ेंगे. अब वह विदेशी खातों और पनडुब्बी के सौदों की बातें करने लगे हैं. अब वह कहने लगे हैं कि जिस पार्टी में तानाशाही हो वह पार्टी इस देश में नहीं चल सकती. टिकट न मिलने से उन की सारी मान्यताएं बदल गई हैं. उन का सारा गणित बदल गया है.

पार्टी के लोग कहने लगे हैं कि लुढ़कता लोटा है, दूसरी पार्टी में जा मिलेगा. अब रामसेवक को बागी घोषित कर दिया गया. अब तक तो भिंड और मुरैना में ही बागी हुआ करते थे, अब पार्टी में भी बागी होने लगे हैं. अब ये ही बागी देश की बागडोर संभालेंगे. उन बागियों ने तो विनोबा और जयप्रकाश बाबू के सामने आत्मसमर्पण तब भी कर दिया था. अब तो देश में न विनोबा रहे और न जयप्रकाश. वैसे ये बागी इतने पक्के हो चुके हैं कि साक्षात गांधीजी भी उतर आएं तो भी आत्मसमर्पण नहीं कर सकते. ●

पीने से ज्यादा सूंघना खतरनाक

सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए जितना नुकसानदेह है, उस का धुआं सूंघना भी प्रायः उतना ही खतरनाक है. अमरीका में हुए शोध के आधार पर वैज्ञानिकों ने यह रहस्योद्घाटन किया है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को यह खतरा अधिक रहता है.

30 वर्ष से कम उम्र वाली महिलाओं में गले के कैंसर का मुख्य कारण धूम्रपान होता है. लेकिन सिगरेट पीने वाली महिला के फेफड़े जिस धुएं को ग्रहण नहीं कर पाते, वह पास बैठी महिला की नासिका द्वारा उस के शरीर में चला जाता है, जो ज्यादा हानिकारक होता है. इस का यह मतलब बिलकुल नहीं है कि सिगरेट पीने वाले के पास बैठे पुरुष को धुआं छोड़ देगा. उन्हें भी सिगरेट के धुएं से बराबर सावधान रहना चाहिए. ●

भोजन नली का कैंसर

अत्यधिक मात्रा में सिगरेट व शराब पीने के कारण भोजन नली के कैंसर की व्याधि भारत में ही नहीं, आसपास के देशों में भी फैल रही है.

यह जानकारी जानेमाने गैस्ट्रोएंथोलाजिस्ट एवं स्नातकोत्तर चिकित्सा संस्था, चंडीगढ़ के भूतपूर्व निदेशक डा.पी.एन. चुटानी ने पिछले दिनों एक सम्मेलन में दी. उन के अनुसार, अधिक मात्रा में मसाले व मिर्चों का सेवन इस व्याधि को जन्म देता है.

*

तरंगों द्वारा उपचार

सोवियत संघ की एक विज्ञान अकादमी ने एक ऐसा उपकरण तैयार किया है, जिस की तरंगों से कई रोगों का उपचार हो सकेगा.

वैज्ञानिक आतग गसूकी के अनुसार, "इस तरंग के इलाज से अल्सर, पेट की बीमारियां, संक्रमण, अति तनाव, हृदय रोग आदि का उपचार हो सकता है." **—विश्वमित्र कलकत्ता**

*

एक्यूपंक्चर से गर्भ धारण

आरिक्यूलर थेरापी (कान में सूई चुभोना) के द्वारा अब वे महिलाएं भी मां बन सकेंगी, जो हारमोन की गड़बड़ी के कारण गर्भ धारण नहीं कर सकती हैं. पश्चिम जरमनी में 24 से 38 वर्ष तक की 27 महिलाओं पर इस चिकित्सा का प्रयोग किया गया. तीन महीने के इलाज के बाद इन में से 47% महिलाएं गर्भवती हो गईं. **—विश्वमित्र कलकत्ता**

*

लापता पायलट का पता लगाना आसान

लापता लड़ाकू विमान के पायलटों का पता लगाने के लिए इजराइल की एक कंपनी द्वारा एक छोटा सा ट्रांसमीटर बनाया गया है. इस ट्रांसमीटर को पायलट अपने कपड़ों में रखता है. यह ट्रांसमीटर पायलट के विमान से कूदने के साथ अपना काम शुरू कर देता है.

साढ़े छः हजार मीटर की ऊंचाई और दो किलोमीटर के दायरे तक पायलट की उपस्थिति बताने में यह उपयोगी साबित होगा. **—विज्ञान प्रगति,**

*

निदानकारी प्लेट

सोवियत डाक्टरों ने एक ऐसी तकनीक विकसित करने का दावा किया है जिस के द्वारा व्यक्ति के हाथ पर केवल सूक्ष्मजीवों की परत वाली प्लेट लगा कर बीमारी के आक्रमण का पहले से ही पता लगाया जा सकता है. 'स्किन ओटोमाइक्रोफ्लोरा' नामक इस पद्धति में बहुत साधारण सी तकनीक का प्रयोग किया जाता है. इस प्लेट को कुछ सेकंड के लिए त्वचा के संपर्क में लाया जाता है और फिर इसे थरमोस्टैट में रख दिया जाता है. लगभग 24 घंटे बाद इस माध्यम में सूक्ष्मजीव बढ़ने लगते हैं, जिस से भावी बीमारी का पता लग जाता है. ●

मनोरंजन के लिए आरकेस्ट्रा वालों को भी बुलाने से नहीं चूका जाता.

पृष्ठ 127 का शेष

ऐसे मौकों पर बड़ेबुजुर्गों को भी नाचने के लिए आग्रह करते कुछ लोग आप को नजर आएंगे. कुछ बुजुर्ग तो पहले से ही तैयार रहते हैं पर कुछ को न न करने के बावजूद पकड़ कर नचाया जाता है.

शादी निस्संदेह एक यादगारी पर्व होता है, जो एक बार होने के बाद हर वर्षगांठ के अवसर पर याद किया जाता है. यहां के शोरगुल और मौजमस्ती को देख कर ऐसा लगता है कि शादी में शामिल होने वाले लोग भी इस माहौल को यादगारी बनाना जानते हैं. इसलिए ऐसे मौकों पर उन की मस्ती खुल कर सामने आती है.

आजकल ऐसे मौकों पर लोग आरकेस्ट्रा वालों को बुलाना भी नहीं भूलते. अमीर घरानों में ऐसे मौकों पर फिल्मी हस्तियों तक को मनोरंजन के कार्यक्रम पेश करने के लिए बुलाया जाता है. इन में फिल्मों के पार्श्व गायक भी भाग लेते हैं. कहींकहीं अच्छे कव्वालों को भी बुलाया जाता है.

ऐसे मौकों पर शादी के पंडाल में खूब सजावट की जाती है. शादी में शामिल होने वालों के स्वागत और मनोरंजन के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाती. और जो कसर रह जाए उसे बराती खुद ही नाच गा कर पूरी कर देते हैं.

शादी में शामिल होने वालों के खानेपीने का विशेष ध्यान रखा जाता है. मांसाहारी और शाकाहारी लोगों के लिए अलगअलग व्यंजन तैयार किए जाते हैं. फिर पंजाबी तो खानेपीने के खास तौर पर शौकीन होते हैं.

अपनी जेब के भार के मुताबिक हर कोई ऐसे मौकों को ज्यादा से ज्यादा रंगीन बना लेना चाहता है. शहरों की तो बात ही क्या, देहात के रहने वाले भी ऐसे अवसरों को यों ही हाथ से जाने नहीं देना चाहते. ढोल पर थाप लगते ही भंगड़ा शुरू हो जाता है. पीने पिलाने का दौर भी अपनी चरम सीमा पर होता है.

गांवों में शादियों के अवसर पर पंजाबी
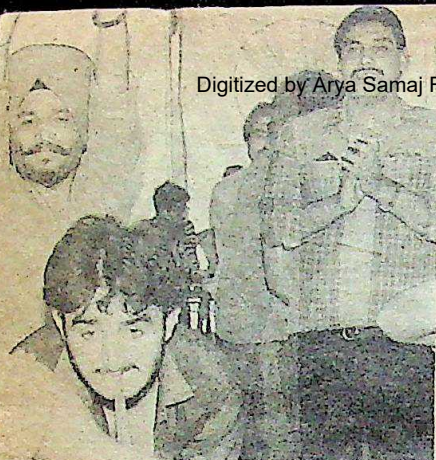
शादी के मौके पर भांगड़ा करते लोग. खुशी व्यक्त करने का रंगीन तरीका.

गीत गायक भी बुलाए जाते हैं जिन का कार्यक्रम काफी देर तक जारी रहता है. कभीकभी तो यह सारी रात चलता है. इसे अखाड़ा लगाना कहते हैं, जिस का अपना ही आनंद होता है. इस में बड़ेबूढ़े नौजवान सब मिल कर नाचते हैं, और गायकों से अपने मनपसंद गीत भी सुनते हैं.

मगर इन वर्षों में आतंकवाद के माहौल ने शादियों पर भी अपना असर डाला है और उस पर 'फेडरेशन' आदि धड़ों की घोषणाओं ने (जैसे कि 'बरातियों की संख्या 11 से अधिक नहीं होनी चाहिए' आदि) लोगों को इतना भयभीत कर दिया है कि वे खुले स्थान में टैंट लगा कर विवाह करने में कतराते हैं. अब ज्यादातर विवाह रात की बजाए दिन में होने लगे हैं.

निरंतर होने वाली आतंकवादी वारदातों के कारण और सरकार द्वारा आतंकवाद पर काबू न पा सकने के कारण लोग खुले में शामियाने लगाने की बजाय विवाह का आयोजन धर्मशाला या होटलों में करने लगे हैं. नाचगाना या भंगड़ा जैसे सहम गया हो. ऐसे अवसरों पर लोग अब लाऊडस्पीकरों पर ऊंचेऊंचे गाने नहीं बजाते. बहुत से लोग तो अकसर विवाह का आयोजन पंजाब से बाहर ज्यादातर दिल्ली जैसे शहरों में करते हैं. जो लोग बाहर जा कर विवाह रचाने की सामर्थ्य नहीं रखते वे किसी धर्मशाला आदि बंद स्थान में अत्यंत सादे ढंग से कम बराती ले जा कर कम से कम समय में काम निबटा लेना चाहते हैं.

गत वर्ष मुझे एक शादी में जिला रोपड़ के गांव बेला बहिराम पुर जाने का अवसर मिला जिस में आतंकवादियों के भय के कारण दूल्हे समेत केवल 10 बरातियों को बुलाया गया था. और हुआ भी वही जिस का डर था. कुछ नौजवानों ने गाड़ियों को रोक कर पूछा कि कितने आदमी बरात में जा रहे हैं. गिनती सही होने पर उन्होंने हमें जाने दिया. यह पूछने पर कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं, उन्होंने कहा कि 'यह सब की भलाई के लिए ही हो रहा है. अगर यहां से आप निकल भी जाएं तो आगे आप को कोई और रोक लेगा.' उन के अनुसार, कुछ दिन पहले ज्यादा बरातियों वाली एक बरात की उन्होंने बुरी गत बनाई थी और 11 बरातियों को छोड़ कर शेष को वापस लौटा दिया था. ऐसे किस्से और भी कई जगह घटित हो चुके हैं.

लुधियाना में हो रही एक अन्य शादी में बंबई से एक उभरते हुए पार्श्व गायक को बुलाया गया था. चूंकि शादी खुले पंडाल में हो रही थी, लोगों ने 7.30 बजे से ही वहां जाना शुरू कर दिया था. पर पार्श्व गायक का सुरीला स्वर लोगों के हृदय पर जमी भय की परत को कुछ देर के लिए भी उतार न सका.

फिर भी ऐसा नहीं कि लोगों ने शोरगुल और मस्ती का आलम बिलकुल छोड़ दिया है. वह अब भी जैसेतैसे होटलों की चारदीवारी के भीतर रह कर भी अपनी पूरी जान शादी को रंगीन बनाने में लगाते हैं. मगर तनाव का वातावरण कुछ तो अपना असर डालता ही है.

जब तक आतंकवाद का माहौल बना रहेगा तब तक तो कोई ऐसे नाजुक मौकों पर खुल कर मौजमस्ती करने में हिचकिचाएगा ही. मगर लोगों को अब भी उम्मीद है कि जैसे ही यहां शांति स्थापित होगी यहां के विवाह पहले की तरह भड़कीले और मौजमस्ती से भरपूर हो जाएंगे. ●

विश्व बाल साहित्य
मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, प्रेरक पुस्तकें
इन पुस्तकों की मनोरंजक व ज्ञानवर्धक पाठ्य सामग्री बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन और विकास करती है.
सैट नं. 26
भलाई का बदला रु. 3.00
राजा का आज्ञापत्र रु. 1.50
पप्पू का दोस्त रु. 2.00
मां का कर्ज रु. 2.00
गैंडे की समझ रु. 4.50
भागने की सजा रु. 2.50
भूत की अंगूठी रु. 2.50
पिंटू मोती-नकली फल रु. 5.00
गूंगों का देश रु. 2.50
दुष्ट का अंत रु. 5.00
भटक गया रु. 1.50
बूटल रु. 3.00
पूरा सैट केवल 28 रु. में
भूत की अंगूठी
भागने की सजा
मां का कर्ज
गैंडे की समझ
गूंगों का देश
बूटल
दुष्ट का अंत
पप्पू का दोस्त
नकली फल
आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें.
दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
पूरे सैट का मूल्य 28 रुपए अग्रिम भेज कर वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक खर्च केवल दो रुपए • यही सैट वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक व्यय सहित मूल्य 34 रुपए • सैट के बजाए चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 15 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें, बकाया वी.पी.पी. से, डाक व्यय अतिरिक्त • अग्रिम राशि चैक द्वारा नहीं, केवल ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनी आर्डर से भेजें.
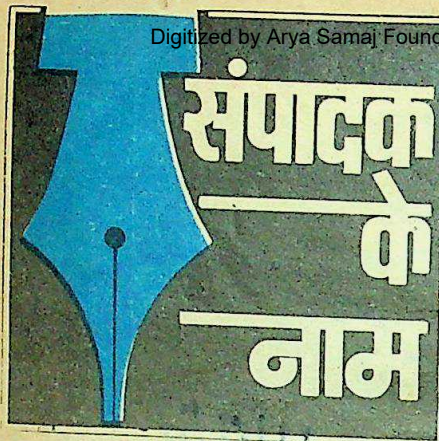
समयानुकूल मार्ग निर्देशन

लेख, 'स्टेनोग्राफी सीखें अपना कैरियर बनाएं' (मार्च/द्वितीय) बेरोजगारों में एक नई आशा का संचार करेगा. आज किसी भी संस्थान में एकदो पदों के लिए विज्ञापन प्रसारित होने पर हजारों आवेदकों की कतारें लग जाती हैं, जब कि आशुलिपि (शार्ट हैंड) में इतनी कड़ी प्रतियोगिता का सामना नहीं करना पड़ता है.

आशुलिपि सीखने के लिए विद्यार्थी में संबंधित भाषाओं पर पूर्ण अधिकार तथा उत्तम सामान्य ज्ञान का होना आवश्यक है. हिंदी आशुलिपिक को तो हिंदी के साथसाथ प्रचलित सामान्य उर्दू व अंगरेजी शब्दों का ज्ञान भी वांछनीय है. आशुलिपि में नियमित अध्ययन की भी जरूरत है.

—कामेश राजपूत 'नालायक'

*

प्रतिष्ठा पर आंच

लेख, 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' (मार्च/द्वितीय) के जरिए आज की एक गंभीर समस्या की तरफ ध्यान आकृष्ट किया गया है. निर्देशकों, प्रबंधकों द्वारा बेवजह हस्तक्षेप तथा आपसी टकराहट ने शिक्षा के उच्च संस्थानों को बदनाम कर के रख दिया है. फलतः अब इस की प्रतिष्ठा पर उंगली उठने लगी है.

आंखों में भविष्य का सुनहरा सपना लिए छात्र इन संस्थानों में प्रवेश लेते हैं. लेकिन राजनीतिक षड्यंत्रों, भाईभतीजावाद तथा नौकरशाही की शिकार इन संस्थाओं में जब उन का भविष्य अंधेरे में हो जाता है तब उन में आक्रोश का आना स्वाभाविक ही है.

सिर्फ नाट्य विद्यालय में ही नहीं, हर शिक्षण संस्थान में कोड़ा जमाल... समाप्त होने वाला घिनौना खेल जारी है. हर व्यक्ति इसे आंख बंद कर देख... मजबूर है.

सवाल यह है कि जब ये संस्थान... नहीं सकते, अपने कर्तव्यों का निर्वाह नह... सकते तो ऐसे भारीभरकम खर्चे से च... इन संस्थानों का औचित्य ही क्या है?

शिक्षा बनाम व्यावसायिक केंद्र... तक युवा वर्ग के समय तथा धन का शो... कर अपना स्वार्थ पूरा करते रहेंगे? आ... कौन लगाएगा लगाम इन सरपट द... खिलाड़ियों पर?

अगर ऐसा ही घिनौना खेल जारी... तो वह दिन दूर नहीं, जब राजनी... गतिविधियों के केंद्र बन कर ये संस्थान अ... अस्तित्व खो देंगे.

—राजेंद्र मा...

*

भ्रामक तथ्य

'संकल्प, संघर्ष और सफलता' ... अंतर्गत लेख 'महा लेखाकार बनने का सपन... जो पूरा न...' (मार्च/द्वितीय) पढ़ा, इस लेख... कई भ्रामक तथ्य दिए गए हैं.

सर्वप्रथम, क्रेवल उच्च श्रेणी लिपि... पद पर सीधी नियुक्ति के लिए ही स्नात... होना आवश्यक है. यदि एक निम्न श्रे... लिपिक ने अधीनस्थ लेखा परीक्षा (दो... भाग) पास कर ली है तो वह अपनी वार्षिक... रिपोर्ट तथा वरिष्ठता के आधार प... लेखाधिकारी के पद के लिए पदोन्नति क... हकदार बन जाता है, चाहे वह स्नातक न भ... हो.

राजपत्रित ग्रुप 'ए' में पदोन्नति कोटा... 20% होता था, न कि 40%. फिर यह कहन... कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक... (कैग) किन्हीं 30-40 पदों की संघ लोकसे...

की सला... उदाहरण... लगभग 6,... में थे. इन... महालेख... ट के ब... और मात्र... या. जहां तक... ी' से 'ए... पड़ती है... न होना... हूं. यह... है, जि... है. यहां... श्रेणी व... ीय सेव... ा का प्र... खुद मेरे... 'गोपन... यहां ध्या... कारों द्व... नति हेतु... ा विभ... तथापि... लूसी के... करता... कई... ना ने... तो हे... टिप्प... तावच... वस्था... तर्राष्ट्रीय... ब डर... कबर... लोकतंत्र... मुक...

की सलाह पर पद.
उदाहरणार्थ, 1968
भग 6,000 लेखा अ
में थे. इन में से करीब 100
महालेखाकारों ने सिफारिश की
ंट के बाद केवल 50 का साक्षात्कार
और मात्र चार लोगों को अंतिम रूप से
गया.

जहां तक लेखक का यह कहना है कि
'बी' से 'ए' में जाने के लिए 'मस्केबाजी'
पड़ती है अतः विभागीय परीक्षाओं का
न होना चाहिए, मैं इस बात से सहमत
हूं. यह केवल उन्हें ही प्रभावित कर
है, जिन्हें इस बारे में कोई जानकारी
है. यहां भी चयन का वही तरीका है जो
श्रेणी की केंद्रीय सेवाओं तथा अखिल
ीय सेवाओं में प्रचलित है, कहीं भी
ा का प्रावधान नहीं है.

खुद मेरी पदोन्नति लगन, उत्साह और
'गोपनीय रिपोर्ट' के आधार पर हुई
यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि महा-
कारों द्वारा उन्हीं लेखा अधिकारियों की
न्नति हेतु सिफारिश की जाती है जो लेखा
ा विभाग की 'क्रीम' समझे जाते है.

तथापि, थोड़ी बहुत खुशामद और
लूसी के प्रचलन से मैं सर्वथा इनकार भी
करता. जैसा कि मेरे पास खुशामद के
कई मौके थे, पर आत्मसम्मान की
ना ने मुझे यह नहीं करने दिया. यदि
तो हो सकता है एकदो साल पहले ही
मिल जाती.

निवृत्त)
एस.)

अपनों से डरे राजीव'
टिप्... (विचार/मार्च/प्रथम) पढ़ी. अपनी सुरक्षा
व्यवस्था तथा शाही खर्चों के लिए राष्ट्रीय
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध राजीव गांधी यदि
ब डर रहे हैं तो यह स्वाभाविक ही है.
अकबर और अशोक से भी बड़े भूखंड पर
लोकतंत्रात्मक तानाशाही' से उपजा यह डर

...
समस्याएं उ...
देन हैं. जवाहर...
को कशमीर में हस्त...
में राजनीतिक स्वार्थ ...
भिंडरावाला को जन्म देना भी
तथा बूटा सिंह की राजनीतिक लोलु...
द्योतक है. फिर किस मुंह से कांग्रेसी अप...
नेता को इन समस्याओं के समाधान तथा
नियंत्रण में सक्षम मानते हैं.

राजीव गांधी की सुरक्षा व्यवस्था
मानवीय दृष्टिकोण से उचित है, किंतु करोड़ों
नंगेभूखों के इस गरीब देश में एक व्यक्ति
विशेष पर सुरक्षा के नाम पर करोड़ों का
अपव्यय किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं
है.

—राजेश नेमा

*

पूर्ण विरेचन

होली अंक (मार्च/प्रथम) की लगभग
सभी रचनाएं अच्छी लगीं, पर कहानी 'इंद्र

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो, पत्र इस पते पर भेजिए.

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

...हुए
...मिलन
...बधाई.

—इंद्र लता

होलिका दहन और हमारा समयान... (मार्च प्रथम) पढ़ कर बड़ा दुख हुआ. धार्मिक रूढ़िवादिता के कारण होलिका दहन में उन हजारों पेड़ों की आहुति दे दी जाती है, जो हमारे लिए जीवनदायक होने की वजह से बेहद जरूरी हैं. इस तरह तो हम धर्म के नाम पर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं. वास्तव में यह समस्या हमारे पर्यावरण के लिए अत्यंत हानिकारक है.

—ब्रजेश कुमार 'प्रजापति'

*

एक से बढ़ कर एक

रंगबिरंगा होली अंक रंगों से सराबोर कर गया. यह अंक इतना अच्छा लगा कि पत्र लिखने को विवश होना पड़ा. कथा साहित्य, कविताएं, स्तंभ, लेख आदि सभी कुछ एक से बढ़ कर एक थे. किसी एक रचना की तारीफ करना दूसरी के साथ अन्याय करना होगा. पूरा अंक ही काबिल ए तारीफ रहा. इस सतरंगे अंक के लिए मेरी ओर से कोटिशः धन्यवाद.

—कविता शर्मा

*

खूबसूरत होली अंक अपने रंगों से सराबोर कर गया. कहानी 'होली का हादसा' अत्यंत संवेदनशील रही. जिंदगी के सारे गमों को खुशीखुशी पी जाने वाली लड़की की करुण गाथा प्रेरक होने के साथसाथ यथार्थ को झकझोर कर रख देती है.

लेख 'उपयुक्त पात्र का चयन तथा सुखी वैवाहिक जीवन' सफल दांपत्य जीवन

लेकिन राजनीति... सफल रहा. वैवाहि... तथा नौकरशा... और खुशहाल हो सक... संस्थाओं में ज... एकदूसरे के पूरक हों. हो जा...

—योगेश गुला...

...
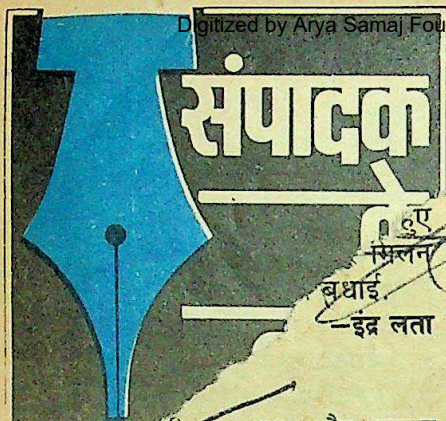
फरवरी (द्वितीय) अंक काफी ज्ञानवर्धक, रोचक, विचारोत्तेजक रहा, लेख 'फिजी की फजीहत' ने विशेष प्रभावित किया. वहां रह रहे भारतीयों पर हो रहे अत्याचारों के लिए भारत की पंगु विदेश नीति ही जिम्मेदार है.

होना तो यह चाहिए कि जिन देशों में भारतीय संस्कृति से जुड़े लोग रहते हों, उन से भारत के कुछ इस प्रकार के संबंध हों, जैसे कि अपने देश के किसी प्रांत से केंद्र के संबंध होते हैं. किसी देश पर प्रतिबंध लगाने या उस से संबंध तोड़ने से वहां रह रहे भारतीय मूल के लोग अलगअलग से पड़ जाते हैं.

कुछ ऐसा ही फिजी के साथ भी होना चाहिए ताकि भारत और वहां बसे भारतीयों के हितों की रक्षा हो सके.

इसी अंक का लेख 'पंजाब समस्या की उलझती गुत्थी' तथा इसी प्रकार के अन्य लेख इस दिशा में सोचने को बाध्य करते हैं. देश के अन्य राज्यों में बढ़ रही स्वायत्तता की अधिक मांग का मूल कारण धारा 360 है, जिसे समाप्त कर देना चाहिए.

—चरणदास 'अनजान'

*

प्रेम और वासना :

लेख 'प्रेम और यौन संबंध' (... प्रथम) ...वश्यक है. यदि एक निम्न श्रे... लगा... ने अधीनस्थ लेखा परीक्षा (दो... होत... पास कर ली है तो वह अपनी वार्षिक...

...ण वरिष्ठता के आधार ... शरीर की दहलीज ... रखा जाता है, अतः युवा वर्ग प्यार की उस दुनिया में विचरने लगता है, जिस का मतलब केवल वासनात्मक प्यार होता है.

लेखक का यह तर्क पूर्णतया न्यायोचित है कि विवाह से पूर्व के यौन संबंध किसी भी दृष्टि से उचित नहीं हैं.

—राकेश जैन